Terran Williams

परमेश्वर स्त्रियों को कैसे देखते हैं

पितृसत्ता का अंत

परमेश्वर स्त्रियों को कैसे देखते हैं

पितृसत्ता का अंत

Terran Williams



The Spiritual Bakery Publications

केप टाउन, दक्षिण अफ़्रीका

Copyright © Terran Williams, 2022

अंग्रेज़ी से अनुवाद, 2026, लेखक की अनुमति से – www.hans-joerg-ronsdorf.de पर निःशुल्क उपलब्ध

सर्वाधिकार सुरक्षित। कॉपीराइट स्वामी की पूर्व लिखित अनुमति के बिना इस प्रकाशन के किसी भी अंश को किसी भी रूप में या किसी भी माध्यम से – इलेक्ट्रॉनिक, यांत्रिक, फ़ोटोकॉपी, रिकॉर्डिंग या किसी अन्य प्रकार से – पुनः प्रस्तुत, किसी पुनर्प्राप्ति प्रणाली में संग्रहीत या प्रसारित नहीं किया जा सकता।

पवित्रशास्त्र के उद्धरण, जहाँ अन्यथा न बताया गया हो, The Holy Bible, New International Version® NIV® से लिए गए हैं

Copyright © 1973, 1978, 1984, 2011 – Biblica, Inc. TM

अनुमति से प्रयुक्त। विश्व भर में सर्वाधिकार सुरक्षित।

पादटिप्पणियों में दिए गए सभी वेबसाइट पते, जो प्रायः www.bit.ly के रूप में छोटे किए गए हैं, नवंबर 2021 में उपलब्ध पाए गए थे।

Amazon पेपरबैक ISBN: 9798401047878

“परमेश्वर स्त्रियों को कैसे देखते हैं” के बारे में

Terran Williams इस बात पर एक ईमानदार और ठोस दृष्टि डालता है कि परमेश्वर बाइबल में स्त्रियों के बारे में, और स्त्री-पुरुष के आपसी संबंध के बारे में, वास्तव में क्या कहते हैं। यह पुस्तक कुछ लोगों को असहज करेगी, पर शायद ऐसा होना ही चाहिए, क्योंकि Williams बड़ी बारीकी से यह तर्क प्रस्तुत करता है कि परमेश्वर का नैतिक कुतुबनुमा सदा पुरुषों और स्त्रियों की एकता की ओर संकेत करता है – सृष्टि में, कलीसिया में और मसीह में। जो कोई भी इस विषय से जूझ रहा है, उसके लिए यह एक उत्कृष्ट संसाधन है।

—डॉ. Michael Bird, Ridley College, मेलबर्न, ऑस्ट्रेलिया में अकादमिक डीन और नए नियम के व्याख्याता; लेखक: Evangelical Theology

स्त्रियों और सेवकाई के विषय में केवल अपना पक्ष बताने और उसके पक्ष में तर्क देने के बजाय, Terran Williams हमें अपनी यात्रा पर साथ ले चलता है – अपने धर्मवैज्ञानिक, व्याख्यात्मक, सामुदायिक और व्यक्तिगत परिवर्तन की कहानी के साथ, जिसमें पैनी दृष्टि, अंतर्दृष्टि और सावधानी है। उसकी कहानी विशेष रूप से सहायक है, क्योंकि वह दिखाती है कि उसने व्यापक शोध की आलोचनात्मक समीक्षा कैसे की और उसे कैसे आत्मसात किया – और साथ ही पवित्रशास्त्र के अधिकार के प्रति उसकी प्रतिबद्धता में कोई समझौता नहीं हुआ। फिर भी, उसकी बातचीत जैसी और रोचक शैली जटिल शोध और व्याख्या को सुलभ बना देती है।

—डॉ. Cynthia Westfall, McMaster Divinity College, ओन्टारियो, कनाडा में शोध प्रोफ़ेसर; लेखिका: Paul and Gender: Reclaiming the Apostle's Vision for Men and Women in Christ

अथक और ईमानदार तर्क के साथ, और दोनों पक्षों को भीतर से जानने वाले व्यक्ति की समझ के साथ, Terran Williams स्त्री-पुरुष परस्परता (अर्थात स्त्री और पुरुष की परस्पर साझेदारी) के पक्ष में एक रोचक ढंग से लिखा गया और सुव्यवस्थित तर्क प्रस्तुत करता है। जब मैंने वे प्रमाण पढ़े जिन्होंने – जैसा वह दिखाता है – उसे अपना दृष्टिकोण बदलने के लिए विवश किया, तो मुझे नई अंतर्दृष्टियाँ मिलीं।

—डॉ. Craig Keener, Asbury Theological Seminary, केंटकी, अमेरिका में बाइबल अध्ययन के प्रोफ़ेसर; संपादक: The NIV Cultural Backgrounds Study Bible; 2018–2020 में The Evangelical Theological Society के अध्यक्ष

हमारी पीढ़ी के लिए मील का पत्थर बनने वाली इस पुस्तक में Terran Williams पवित्रशास्त्र की गहराइयों में उतरता है, ताकि उन ऊँचाइयों को फिर से पा सके जिनके लिए स्त्रियाँ (और पुरुष) बुलाए गए हैं।

—Starla और Daniel Webster, City Lights Church, दुबई के पास्टर

यह एक समयोचित पुस्तक है और इसे बहुत से पाठक मिलने चाहिए। समाज ने बड़ी हद तक जोश के साथ चर्चा करने और शालीनता से बहस करने की अपनी क्षमता खो दी है, विशेषकर जब लिंग, समावेश, समानता और जातीय पृष्ठभूमि जैसे संवेदनशील मुद्दों की बात आती है। इसलिए अनुग्रह और गरिमा के साथ लिखी गई पुस्तक पढ़ना ताज़गी देता है। इसके अध्याय पढ़कर साफ़ लगता है कि इन्हें न केवल एक सचमुच भले व्यक्ति ने लिखा है, बल्कि एक स्पष्ट विचारक ने भी, जो बाइबल के पाठ को ठीक-ठीक प्रस्तुत करने के लिए दृढ़ संकल्पित है। Terran Williams ऐसा ही व्यक्ति है – व्यापक अध्ययन वाला, अपनी बात साफ़ कहने वाला, किसी विचार को सावधानी से गढ़ने वाला और अनुग्रह से भरा हुआ। मेरी विशेष आशा है कि भाई इसके संदेश को आत्मसात करेंगे और विश्वास के समुदाय में अनुग्रह से भरा वह जीवन जिएँगे जिसकी इच्छा परमेश्वर ने सदा उनके लिए की है।

—डॉ. Paul Alexander, Trinity Bible College and Graduate School, नॉर्थ डकोटा, अमेरिका के अध्यक्ष; World Alliance for Pentecostal Theological Education के अध्यक्ष (चेयर)

यह पुस्तक ईमानदार, विनम्र, विद्वत्तापूर्ण और चुनौतीपूर्ण है। पढ़ते समय मैं यह सोचे बिना न रह सकी कि Lee Strobel ने The Case for Christ लिखकर नास्तिकता के साथ जो करना चाहा था, वही Terran Williams यहाँ पूरकतावादी धर्मविज्ञान के साथ करता है (पूरकतावाद: यह दृष्टिकोण कि परमेश्वर ने पुरुष और स्त्री को अलग-अलग भूमिकाएँ दी हैं, जिनमें अगुवाई पुरुष की है): जो भी प्रमाणों से अपने को ढलने देना चाहता है, उसके लिए वह इसे एक ऐसा पक्ष बना देता है जिसका बचाव करना और भी कठिन होता जाता है। मैं इसके लिए हृदय से आभारी हूँ – यह हमारी कलीसियाओं के परिदृश्य को अद्भुत ढंग से नया आकार देगी। इसे पढ़िए, इसका अनुभव कीजिए, इसे जीइए और देखिए कि इसके द्वारा परमेश्वर का राज्य कैसे आता है।

—डॉ. Katia Adams, The Table, बॉस्टन, अमेरिका की पास्टर; लेखिका: Equal

इस विषय पर यह व्यापक कृति, जिसमें प्रमुख विद्वानों के विश्लेषण और आलोचना का अच्छा संतुलन है, यीशु के एक समर्पित अनुयायी का परिश्रमपूर्ण प्रयास है, ताकि एक ऐसे विषय का ईमानदार मूल्यांकन हो सके जिसने मसीहियों, कलीसिया और समाज में इतना विभाजन और इतनी पीड़ा पैदा की है। अच्छा होगा कि हम इस पर ध्यान दें!

—डॉ. Quinton Howitt, South African Theological Seminary और The School of Leadership के सह-संस्थापक

पास्टरीय संवेदनशीलता और धर्मवैज्ञानिक सूझ-बूझ के साथ लिखी गई यह पुस्तक मुझे प्रेरित करती है कि मैं किसी संस्था की अगुवाई पुरुष बनकर नहीं, बल्कि सुसमाचार में एक पूर्ण सहभागी के रूप में करूँ। मैं मूल रूप से एक ऐसे कलीसियाई संप्रदाय से आती हूँ जिसमें स्त्रियों को प्रचार करने और अगुवाई करने से रोका जाता था, इसलिए यह पुस्तक मुझे और मेरे पति को, नई कलीसिया स्थापित करने वालों के रूप में, एक नई शुरुआत देती है।

—Minah Koela, Beautiful Gates, केप टाउन, दक्षिण अफ़्रीका की CEO

यह पुस्तक हर उस विश्वासी के लिए अवश्य पढ़ने योग्य है जो यह समझ बढ़ाना चाहता है कि परमेश्वर ने पुरुषों और स्त्रियों को अपने राज्य में साथ-साथ सेवा करने के लिए कैसे रचा है। Terran Williams ने वह किया है जिसकी मैं आशा करती हूँ कि हर मसीही (और निश्चय ही हर पास्टर) करेगा – स्वयं अध्ययन करना कि पवित्रशास्त्र लिंग और स्त्रियों की अगुवाई के बारे में क्या कहता है, और इसमें सभी पक्षों के दृष्टिकोणों को समझना भी शामिल है। परमेश्वर स्त्रियों को कैसे देखते हैं एक समर्पित धर्मविज्ञानी की सत्य की विनम्र खोज की प्रभावशाली कहानी है, और साथ ही पूरकतावादी और समानतावादी (समानतावाद: यह दृष्टिकोण कि स्त्री और पुरुष समान हैं और सेवकाई व अगुवाई के सभी पद दोनों के लिए खुले हैं) धर्मविज्ञानों और व्यवहारों का पूरा अध्ययन भी।

—Kadi Cole, Kadi Cole and Company, फ़्लोरिडा, अमेरिका की CEO; अगुवाई सलाहकार; एक्ज़ीक्यूटिव कोच; लेखिका: Developing Female Leaders

आप पहचान सकते हैं कि कब कोई पवित्रशास्त्र से प्रेम करता है। मैंने Terran को पहली बार 20 वर्ष पहले युवा सर्फ़रों के एक समूह से बात करते सुना था। जब वह बड़ी स्पष्टता से समझा रहा था कि परमेश्वर का राज्य कैसे हमारे संसार में फूट पड़ रहा था और उनके लिए उपलब्ध था, तो उसकी आँखें चमक उठीं और वह और भी अधिक जोश में आता गया। यह पुस्तक पढ़कर लगता है कि बदला केवल इतना है कि Terran परमेश्वर के वचन से पहले से भी अधिक प्रेम करने लगा है। मुझे इसका हर पृष्ठ अच्छा लगा और मैं बार-बार कहता रहा: हाँ! हाँ! हाँ! यदि आप सत्य, स्वतंत्रता और उस सब के लिए उत्साही हैं जो होने के लिए परमेश्वर ने कलीसिया को बुलाया है, तो मेरा अनुमान है कि आपकी प्रतिक्रिया भी वैसी ही होगी। मैं यह पुस्तक हर किसी को पढ़ने की सलाह देता हूँ, चाहे आप अभी बाड़ के किसी भी ओर बैठे हों।

—Paul Van Coller, Hope Church, जॉर्ज, Association of Related Churches in Southern Africa और Zambia Project के अगुवे

यह पुस्तक मिशन की दृष्टि से अत्यावश्यक है – हमने कई बार कलीसिया के सबसे बड़े हिस्से को चुप कराया है और उसे संसार को बदलते देखने की अपनी पूरी बुलाहट जीने से रोका है। रंगभेद (Apartheid) वाले दक्षिण अफ़्रीका में बड़े होने के कारण, मैं स्वयं जानता हूँ कि गलत धर्मविज्ञान से समर्थित विचारधारा ने कैसे एक ऐसा समाज बनाया जो समानता की बात तो ज़बान से करता था, पर मुझ जैसे अश्वेत लोगों पर अत्याचार करता रहा। इसी प्रकार, मैंने "व्यक्ति के रूप में समान, भूमिकाओं में भिन्न" वाले धर्मविज्ञान को टूटी हुई स्त्रियाँ और टूटे हुए पुरुष पैदा करते देखा है। Terran की पुस्तक एक धर्मवैज्ञानिक और विद्वत्तापूर्ण तर्क प्रस्तुत करती है, जिसने मुझे इसमें और भी गहराई तक जाने में मदद की है कि मुझे अपनी पत्नी और दूसरी स्त्रियों को कैसे देखना और उनसे कैसे प्रेम करना है।

—Julian Adams, The Table, बॉस्टन, अमेरिका के पास्टर; Frequentsee के निदेशक; लेखक: Terra Nova

यह जगाने वाली एक स्पष्ट पुकार है। यदि आप पवित्रशास्त्र का ऊँचा आदर करते हैं, आपका मन गहराई से और कड़ाई से सोचता है, और आप कुछ गहरा परिश्रम करने को तैयार हैं, तो यह पुस्तक आपके मन को छुएगी। सत्य के लिए Terran की खोज बहुतों को परिचित लगेगी, पर बाइबल के ये सत्य हमें जहाँ ले जाते हैं, वह अपरिचित क्षेत्र हो सकता है। अपनी ज़िद पर अड़े रहने का प्रलोभन चाहे जितना बड़ा हो, हमारा मन बदलने के लिए शायद इसी की ज़रूरत है।

—Jess और Tom Basson, Grace Family Church, डरबन, दक्षिण अफ़्रीका के पास्टर

अपनी पिछली पुस्तक की तरह, Terran सहज और सुलभ ढंग से लिखता है और तकनीकी बारीकियों का सहारा लिए बिना महत्वपूर्ण तर्कों से निपटता है। उसने भली-भाँति शोध किया है और पूरकतावादी तथा समानतावादी तर्कों के पूरे दायरे की पड़ताल की है। अपनी पत्नी Julie के साथ एक सह-समान विवाह और सेवकाई की ओर उसकी यात्रा की जो कहानी वह बताता है, वह उसके तर्क को वास्तविकता की ज़मीन देती है। पूरकतावादियों को इस विषय पर पुनर्विचार करने में मदद करने वाली जितनी कृतियाँ मैंने पढ़ी हैं, उनमें यह अधिक विश्वास दिलाने वाली कृतियों में से एक है।

—डॉ. Derek Morphew, अंतरराष्ट्रीय Vineyard Bible Institute के संस्थापक; लेखक: The Kingdom Reformation

परमेश्वर स्त्रियों को कैसे देखते हैं शक्तिशाली और अद्भुत है! यह पवित्रशास्त्र के अधिकार का आदर करती है और इस धारणा की एक निर्णायक आलोचना प्रस्तुत करती है कि अगुवाई पुरुषों को करनी चाहिए। Terran Williams अनेक विषयों का – उदाहरण के लिए धर्मविज्ञान, विकास-अध्ययन और सामाजिक विज्ञान का – उपयोग करके उस बाधा को चुनौती देता है जो पूरकतावादी धर्मविज्ञान मनुष्यों के फलने-फूलने के मार्ग में डालता है। उसका कार्य जितना तर्कसंगत है, उतना ही समग्र भी। यह अद्भुत रूप से सुलभ है और जटिल मुद्दों को अनुग्रह और कौशल के साथ संबोधित करता है।

—डॉ. Mimi Haddad, CBE International की अध्यक्ष और CEO; World Relief और World Vision International के लिए धर्मविज्ञान और लिंग विषय की सलाहकार

मेरी राय में, पूरकतावादी/सुसमाचारवादी समानतावादी बहस पर यह सबसे अच्छी पुस्तक है। यह एक उत्कृष्ट और उच्च कोटि की पुस्तक है, जिसे सुसमाचारवादियों (इवैन्जेलिकल) द्वारा व्यापक रूप से पढ़ा जाना चाहिए। मित्रों के लिए इसकी प्रतियाँ खरीदिए, इसे खुलकर उधार दीजिए। यह इस सत्य को उजागर करती है कि सुसमाचार उत्पीड़ितों को स्वतंत्र करता है। बाइबल आरंभ से अंत तक पुरुषों और स्त्रियों के लिए शुभ समाचार है।

—डॉ. Kevin Giles, लेखक: What the Bible Actually Teaches on Women

समर्पण

मैं यह पुस्तक सबसे पहले Julie को समर्पित करता हूँ – मेरी आत्मा की साथी और जीवन में, बच्चों के पालन-पोषण में और संसार को बदलने में संघर्षों में परखी हुई मेरी सहभागिनी।

साथ ही हमारी बेटी Ivy को, जो स्त्रीसुलभ भी है और निर्भीक भी, जो अभी छोटी है पर अभी से परमेश्वर की बुलाहट के बोध से भरी हुई है। तुम उस दौड़ को, जिसके लिए तुम्हें बुलाया गया है, आनंद और आत्मविश्वास के साथ दौड़ो – उस बार-बार के आत्म-संदेह के बिना, जिसे तुमसे पहले इतनी सारी स्त्रियों को सहना पड़ा।

हमारे महाद्वीप के घास के मैदानों में शेर और शेरनियाँ झुंड की शक्ति दिखाने के लिए साथ मिलकर दहाड़ते हैं। जैसा जंगल में, वैसा ही हमारे परिवार में, वैसा ही हमारी कलीसिया में – और वैसा ही हमारे संसार में।

अंत में, मैं यह पुस्तक हर उस व्यक्ति को अर्पित करता हूँ जो लूका 7:44 में यीशु के हृदय को टटोलने वाले प्रश्न का नए सिरे से उत्तर देना चाहता है:

“क्या तू इस स्त्री को देखता है?”

विषय-सूची

भूमिका 10

प्रस्तावना: परमेश्वर स्त्रियों को कैसे देखते हैं 13

1 अपनी राय बदलना 16

पहला भाग – स्त्रियों का पतन और उत्थान 22

2 हीन लिंग 23

3 पूरकतावाद का उदय (और उसकी खामियाँ) 40

4 स्वर्गलोक में बनी साझेदारी 61

5 छुड़ाए गए स्त्री-पुरुष संबंध 83

दूसरा भाग – (अ)सीमित स्त्रियाँ 99

6 कुरिन्थुस की स्त्रियाँ 100

7 1 तीमुथियुस 2:11-15 125

8 पत्नियो, अधीन रहो 161

9 हमारे स्तर पर उतरने वाले परमेश्वर 192

तीसरा भाग – स्त्रियों की सेवकाई 208

10 पुराने नियम में शक्तिशाली स्त्रियाँ 209

11 सुसमाचारों में शक्तिशाली स्त्रियाँ 224

12 आरंभिक कलीसिया में शक्तिशाली स्त्रियाँ 239

13 वरदान (रोमियों 12) बनाम लिंग (1 तीमुथियुस 3) 267

चौथा भाग – स्त्रियों को मुक्त करना 283

14 बाइबल के अनुसार स्त्रीत्व और पुरुषत्व 284

15 हव्वा को चारदीवारी से मुक्त करना 298

16 कलीसियाओं के लिए व्यावहारिक निहितार्थ 308

17 लोग बनाम पितृसत्ता 319

उपसंहार: यीशु स्त्रियों को कैसे देखते हैं 336
परिशिष्ट 1: क्या परमेश्वर पुरुष हैं? 338
परिशिष्ट 2: पतन से पहले आदम और हव्वा (जारी) 345
परिशिष्ट 3: Kephalē का अर्थ क्या है 350
परिशिष्ट 4: क्या स्त्रियाँ शिक्षा दे सकती हैं? 355
परिशिष्ट 5: 1 तीमुथियुस 3 से दो और तर्क 360
परिशिष्ट 6: तथ्य शायद हमारा मन क्यों न बदलें 367
बहुत-बहुत धन्यवाद 376
चुनी हुई ग्रंथ-सूची 377
Terran Williams की अन्य पुस्तकें 380



भूमिका

अपने जीवन के अधिकांश समय से मैं मसीह की अनुयायी रही हूँ।

अपने पूरे जीवन से मैं एक स्त्री रही हूँ।

जिस स्थान पर ये दोनों पहचानें एक-दूसरे से मिलती हैं, वह छोड़ने और फिर से उठाने की एक यात्रा रहा है ... परिवार की, स्वयं की, समाज की और यहाँ तक कि कलीसिया की भी उन अपेक्षाओं को छोड़ने की यात्रा कि मैं कौन हूँ। और अपनी (कभी-कभी भूली हुई) स्वतंत्र कर्तृत्व-क्षमता को, अपने उद्देश्य और अधिकार को, और इस बोध को फिर से पाने की यात्रा कि परमेश्वर कौन हैं, और बदले में वे मुझे क्या कहते हैं कि मैं कौन हूँ।

इस पुस्तक ने, और विशेष रूप से इसके लेखक ने, उस यात्रा में निर्णायक भूमिका निभाई है। हम पहली बार तब मिले जब मैं केवल 17 वर्ष की थी – मैं, आश्चर्य से भरी आँखों वाली एक नवागंतुक, और वह, बेतरतीब बालों वाला उस कलीसिया का अगुवा, जिसे हम दोनों अगले दो दशकों तक अपना घर कहने वाले थे।

पाँच बच्चे, 4 घर, विवाह के 18 वर्ष और 1 बर्नआउट के बाद, मेरी आँखें आज भी उतनी ही आश्चर्य से भरी हैं, और अब हम दोनों के बाल बेतरतीब हैं! फिर भी इन शारीरिक लक्षणों के नीचे दो ऐसे हृदय हैं जिन पर संघर्षों के घाव हैं, और जिन्होंने एक-दूसरे को अधिक से अधिक वैसे देखना सीखा है – और पुराना देखना भुलाया है – जैसे परमेश्वर हम में से हर एक को देखते हैं।

दिलचस्प बात यह है कि जब मेरे पति ने स्त्रियों के विषय में अपना धर्मविज्ञान बदलने की इस यात्रा की शुरुआत की, तो मैं उसकी सबसे कड़ी आलोचक थी। हम दोनों पहले धर्मविज्ञान पढ़ चुके थे, और मैं स्वयं कई वर्ष पहले इसी विषय से व्यक्तिगत रूप से जूझ चुकी थी – मैंने तो यह गवाही भी दी थी कि मेरे विश्वास के उस उथल-पुथल भरे समय में परमेश्वर ने मुझसे कैसे बात की थी और मेरे थके हुए हृदय से धीरे से फुसफुसाकर कहा था: "जब तुम पहले से ही मेरी गोद में बैठी हो, तो स्थान के लिए छीना-झपटी क्यों करती हो?"

उस क्षण मैंने स्वयं को वैसा देखा था जैसी मैं वास्तव में थी।

मैं कोई कम आँकी गई सेविका नहीं थी जिसे अपने अधिकारों की माँग करनी पड़े। मैं परमप्रधान की प्यारी बेटी थी। मुझे अपने भाइयों के बराबर पहुँचने के लिए धक्का-मुक्की करने की ज़रूरत नहीं थी; मैं तो पहले से

ही परमेश्वर के साथ बैठी थी, उनके हृदय के निकट, ठीक वहीं जहाँ होने की मेरी सबसे गहरी लालसा थी – भूमिकाओं और प्रतिबंधों की परवाह किए बिना।

उस अनुभव के बाद मैंने खुशी-खुशी सहायक की उस भूमिका को स्वीकार कर लिया था जो कथित रूप से परमेश्वर ने मुझे दी थी। सच कहूँ तो, कलीसिया में अपने स्थान को लेकर वर्षों के संघर्ष के बाद यह एक राहत थी।

और उत्पीड़ित महसूस करने के बजाय, सेवकाई के अवसर एक के बाद एक आते गए। मैंने प्रचार किया, सभाओं की अगुवाई की, अगुवाई के महत्वपूर्ण निर्णयों में भाग लिया, कलीसियाएँ स्थापित करने में अपने पति की सहभागी रही, और स्त्रियों के ऐसे कार्यक्रमों की सह-मेज़बानी की जो हज़ारों लोगों तक पहुँचे।

और फिर भी यहाँ मेरा पति था – इतने वर्षों बाद – मुझसे कह रहा था कि उसे लगता है कि हमने इसे गलत समझा था! कि किसी तरह हम अपने धर्मविज्ञान से स्त्रियों के साथ और कलीसिया की गवाही के साथ अन्याय कर रहे थे।

मैंने विरोध किया। लंबे समय तक।

एक बात तो यह थी कि मैं स्वयं को विशेष रूप से अन्याय की शिकार महसूस नहीं करती थी। और यदि मैं अपना पक्ष बदल लेती, तो क्या यह विडंबना से यही नहीं दिखाता कि मेरा पति अब भी हमारे घर का सिर है, और उसकी पत्नी बस उसके विश्वासों की परछाईं है? Terran ने ज़्यादा ज़ोर नहीं डाला, पर समय के साथ और अधिक मनन करने पर मैं धीरे-धीरे यह समझने लगी कि हमारा संबंध (या हमारी कलीसिया) शुरू से ही कभी एक सामान्य पूरकतावादी संबंध नहीं था।

मेरा पालन-पोषण ऐसे घर में हुआ जहाँ मेरी माँ भी मेरे पिता जितनी ही सक्षम और परिश्रमी थीं। मैं लड़कियों के एक अद्भुत स्कूल में पढ़ी – जहाँ हमें यह बताने की ज़रूरत भी नहीं पड़ती थी कि हम अपने जीवन और अपनी क्षमता के साथ कुछ भी कर सकती हैं; हम यह पहले से ही मानकर चलती थीं! इसके बाद मुझे अपनी उच्च शिक्षा, करियर और सेवकाई में जल्दी सफलता मिली – और जिन पुरुषों के साथ मैंने काम किया, सेवा की और जीवन बिताया, उनके सामने मैंने स्वयं को कभी हीन महसूस नहीं किया।

विडंबना यह है कि अपने पूरकतावादी धर्मविज्ञान को थामे रहने का मेरा आग्रह (जो मेरे इस विश्वास से निकला था कि मुझे अपना मत स्वयं बनाना चाहिए), और इस पर Terran की सहज, बेफ़िक्र प्रतिक्रिया, यह सिद्ध करती थी कि हमारी साझेदारी वास्तव में उससे कहीं अधिक समानतावादी थी जितना मैं पहले स्वीकार करना चाहती थी।

न केवल मेरे साथ खड़ा यह पुरुष, बल्कि यह पुस्तक भी, परमेश्वर द्वारा मुझे दिए गए सबसे बड़े उपहारों में से एक रही है। परमेश्वर ने इसके द्वारा यह नया आकार दिया है कि मैं एक स्त्री के रूप में स्वयं को कैसे देखती हूँ, और ऐसा करते हुए यह भी कि मैं परमेश्वर को कैसे देखती हूँ।

यद्यपि अपनी पिछली पूरकतावादी कलीसिया में मैंने कभी महसूस नहीं किया कि दूसरे मुझे हाशिए पर धकेल रहे हैं, पर अब मैं पहचानती हूँ कि मैंने सूक्ष्म ढंग से स्वयं को हाशिए पर रखा था – दूसरों की बात को ज़रूरत

से ज़्यादा मानकर, बड़े सपने देखने से रुककर, और अपनी आवाज़ और क्षमता को छोटा करके। पर शायद इससे भी अधिक पीड़ादायक यह है कि अब मैं देखती हूँ: जबकि मुझे मेज़ पर स्थान से कभी वंचित नहीं किया गया, मेरी जैसी ही वरदानों वाली मेरी कई बहनों को किया गया – केवल इसलिए कि वे अविवाहित थीं, या उनका विवाह ऐसे पुरुषों से हुआ था जो अगुवे नहीं थे। यह विचार अब मुझे दुखी करता है कि मैं इतने लंबे समय तक अपने धर्मविज्ञान से इसलिए संतुष्ट थी क्योंकि इससे मुझे लाभ होता था, जबकि वह बहुत-सी दूसरी स्त्रियों को चोट पहुँचाता था। फिर भी, आभारी होने और आशा रखने के लिए बहुत कुछ है। परमेश्वर ने अभी हम में से किसी के साथ अपना काम पूरा नहीं किया है!

यद्यपि मेरे मन और हृदय के बहुत से भाग को अब भी नया होने की ज़रूरत है, दशकों पहले परमेश्वर की वह फुसफुसाहट आज भी उतनी ही सच है जितनी तब थी। मैं सचमुच परमेश्वर की गोद में बैठी हूँ, और मुझे स्थान के लिए कभी छीना-झपटी करने की ज़रूरत नहीं है। परमेश्वर के राज्य में मैं हर अर्थ में अपने भाइयों के बराबर हूँ। बस अब मेरा धर्मविज्ञान मेरे व्यवहार और मेरे जीवन के अनुभव से मेल खाता है।

प्रिय पाठक, मैं प्रार्थना करती हूँ कि यह पुस्तक आपके लिए भी ऐसा ही अनुग्रह बने। उस वचन की तरह जिससे हम सब प्रेम करते हैं, इसके शब्द आपके मन को प्रकाशित करें और आपको न केवल स्वयं को अधिक स्पष्ट रूप से देखने दें, बल्कि परमेश्वर को भी – जिनकी आँखों में आपका प्रतिबिंब प्रचंड, मुक्त करने वाले प्रेम से दहकता है।

—Julie Williams



प्रस्तावना: परमेश्वर स्त्रियों को कैसे देखते हैं

कलीसिया के इतिहास के अधिकांश समय में लोग यह मानते आए हैं कि स्त्रियाँ और चाहे जो कुछ भी हों, वे पुरुषों से हीन हैं। बाइबल में पुरुषों की तुलना में स्त्रियों का उल्लेख कहीं कम है (उसके 3,000 नामित पात्रों में से केवल 200 स्त्रियाँ हैं), और यह बात कुछ हद तक उस सदियों पुरानी, निर्विवाद धारणा का कारण है कि स्त्रियाँ पुरुषों से कम महत्वपूर्ण हैं। पर जिन परमेश्वर ने अपने संसार में आने के लिए एक स्त्री के गर्भ को चुना, उनके लिए आँकड़े या आकार कभी मायने नहीं रखते। बाइबल के उन भागों में भी जहाँ मुख्य भूमिका किसी पुरुष की है, ऐसी स्त्रियाँ हैं जो अपनी छोटी भूमिकाओं के बावजूद स्त्री-पुरुष साझेदारी के लिए परमेश्वर के दर्शन को उससे कहीं अधिक प्रकट करती हैं जितना हम पहली नज़र में समझ पाते हैं।

उदाहरण के लिए अब्राहम को लीजिए। वह सबसे पहला यहूदी है – एक पुरुष, एक स्वतंत्र व्यक्ति, और सामाजिक व आर्थिक साधनों वाला मनुष्य। परमेश्वर उससे प्रतिज्ञा करते हैं कि उसकी संतान की संतान बड़ा प्रभाव डालेगी। फिर भी वह अपने समय का ही मनुष्य है: उसका चुना जाना उसकी मिस्री दासी हाजिरा के साथ उसके भयानक व्यवहार को मिटा नहीं देता। अपनी बाँझ पत्नी के कहने पर वह हाजिरा का उपयोग एक संतान पाने के लिए करता है। जब वह गर्भवती हो जाती है, तो वह अपनी ईर्ष्यालु पत्नी को उसके साथ बुरा व्यवहार करने देता है, यहाँ तक कि हाजिरा जंगल में भाग जाती है।

उसकी कहानी हृदय-विदारक है: यदि कोई उसे और उसके अजन्मे बच्चे को न बचाए, तो दोनों मर जाएँगे। और तब परमेश्वर आते हैं। वे उसे बचाने के लिए हस्तक्षेप करते हैं और उसे इस आश्वासन के साथ वापस भेजते हैं कि वे उसकी और उसके पुत्र दोनों की रक्षा करेंगे। यह प्रतिज्ञा उस प्रतिज्ञा की गूँज है जो उन्होंने पहले अब्राहम से की थी: "मैं तेरे वंश को बहुत बढ़ाऊँगा, यहाँ तक कि बहुतायत के कारण उसकी गिनती न हो सकेगी।"[1]

आइए, इसके महत्व पर विचार करें: पुरुष-प्रधान संसार में परमेश्वर उद्धार की अपनी महान योजना को बाइबल के पहले कुलपिता अब्राहम पर प्रकट करना आरंभ करते हैं। फिर भी, ऐसा करते हुए वे एक स्त्री के साथ भी खड़े होते हैं। और वह कोई भी स्त्री नहीं, बल्कि सामाजिक सीढ़ी के बिल्कुल निचले पायदान पर खड़ी एक स्त्री – एक दासी। रेगिस्तानी जंगल में भटकी हुई, टूटे हृदय, निराश आत्मा और अपमानित देह के साथ – परमेश्वर हाजिरा को देखते हैं और उसके द्वारा एक ऐसी भावी महानता को पुकारकर बुलाते हैं जिसे उस समय की सामाजिक परिस्थितियों ने लगभग असंभव बना दिया होता।

1. उत्पत्ति 16:10

वह परमेश्वर की इस पुष्टि का उत्तर ऐसे देती है कि पूरे पवित्रशास्त्र में वही अकेली व्यक्ति है जो अपने सृष्टिकर्ता को यह नाम देती है: "मुझे देखने वाला परमेश्वर।"[2] उसके जीवन का निर्णायक मोड़ बेहतर धर्मविज्ञान से आता है। पहली बार वह स्वयं को उस तरह नहीं देखती जैसे अब्राहम या सारा या उस समय का समाज उसे देखता है, बल्कि वैसे देखती है जैसे परमेश्वर उसे देखते हैं। वह बाइबल की लंबी कहानी में आरंभ में ही बोया गया एक बीज है, जो एक दिन मसीह में फल लाएगा – जो अपने राज्य में न केवल यहूदियों को बल्कि अन्यजातियों को भी, न केवल स्वतंत्र लोगों को बल्कि दासों को भी, न केवल धनवानों को बल्कि निर्धनों को भी, और न केवल पुरुषों को बल्कि स्त्रियों को भी महानता तक उठाएँगे।

मैं क्यों (और किसके लिए) लिखता हूँ

मैं स्त्रियों के लिए लिखता हूँ। क्या आप पवित्रशास्त्र का आदर करना और परमेश्वर तथा उनकी कलीसिया के लिए अपना सब कुछ देना चाहती हैं? तो आइए, सीमित करने वाली, अस्वस्थ शिक्षा के दरवाज़ों को तोड़कर खोल दें; काँच की छतों को चकनाचूर कर दें; और आत्म-संदेह के उन पिंजरों के ताले खोल दें जिनमें बहुत-सी स्त्रियाँ बहुत लंबे समय से रहती आई हैं। आइए, यह हम पवित्रशास्त्र की ओर देखकर करें, ताकि फिर से जान सकें कि परमेश्वर आपको वास्तव में कैसे देखते हैं।

मैं पुरुषों के लिए लिखता हूँ। चाहे आप इसके प्रति सचेत हों या नहीं, स्त्रियों के बारे में आपका एक धर्मविज्ञान पहले से है। वही यह तय करता है कि आप आधी मानवजाति को, और मसीह की दुल्हन के आधे से अधिक भाग को, कैसे देखते हैं। इसलिए उसे आपकी अपनी मानवता और आपके शिष्यत्व से अलग नहीं किया जा सकता। स्त्रियों को वैसे देखना जैसे परमेश्वर उन्हें देखते हैं, न केवल उन स्त्रियों के लिए एक उपहार होगा जिनके साथ आप काम करते हैं, सेवा करते हैं और जीवन बिताते हैं, बल्कि यह आपकी अपनी स्वतंत्रता और पवित्रीकरण के अनुभव का भी एक अभिन्न अंग होगा। कम से कम मेरा अनुभव तो यही रहा है।

मैं सच्चे संशयवादियों के लिए लिखता हूँ। क्या आपको सचमुच संदेह है कि स्त्रियाँ पूरी तरह पुरुषों के बराबर हो सकती हैं और उन्हें ऐसा होने की अनुमति है या नहीं, विशेषकर जब कलीसिया की अगुवाई की बात आती है? मेरी आशा है कि मैं विनम्रता से पवित्रशास्त्र को इस तरह खोलूँ जिससे आप अपने पूर्वाग्रहों और विरासत में मिली मान्यताओं पर ध्यान दे सकें। इसके लिए पवित्रशास्त्र की उन अनेक व्याख्याओं का विस्तृत, बिंदुवार विश्लेषण आवश्यक है जो वेबसाइटों, संगठनों, पुस्तकों और यहाँ तक कि एक स्टडी बाइबल की मानो कभी न समाप्त होने वाली श्रृंखला के द्वारा फैलाई गई हैं।

मैं कलीसिया के अगुवों के लिए लिखता हूँ। यदि आप कलीसिया के एक पूरकतावादी अगुवे हैं, जैसा मैं अपने वयस्क जीवन के अधिकांश समय तक रहा, तो आपको यह सुनिश्चित करना होगा कि आप अपनी कलीसिया में स्त्रियों के विषय में जो मानते हैं, जो व्यवहार में लाते हैं और जिसकी मनाही करते हैं, वह पूरी बाइबल पर आधारित, सावधानी से सोचे-समझे धर्मविज्ञान पर टिका हो। आख़िरकार, आपका धर्मवैज्ञानिक पक्ष केवल

2. उत्पत्ति 16:13

आपको प्रभावित नहीं करता – वह अनगिनत दूसरों को प्रभावित करता है, और कुछ मामलों में पूरे-पूरे जीवनों की दिशा बदल देता है।

यद्यपि मुझे बहुत-सी पुरानी मान्यताओं को चुनौती देनी ही होगी, कलीसिया को बाँटने की मेरी कोई इच्छा नहीं है। कुरिन्थियों को लिखते हुए पौलुस की तरह, यह पुस्तक भी "बड़े क्लेश और मन के कष्ट से, और बहुत आँसू बहा बहाकर – इसलिए नहीं कि आप उदास हों, परन्तु कलीसिया के प्रति मेरे गहरे प्रेम के कारण" जन्मी है।[3] मेरी आशा है कि इसे पढ़ते हुए आप भी कुछ वैसा अनुभव करें जैसा मैंने किया – थकी हुई आँखों से छिलके गिरने का रोमांच और अनर्जित अनुग्रह।

मैं कोई क्रांतिकारी नहीं हूँ जो स्त्रियों की रक्षा के लिए उठ खड़ा हुआ हो। सच कहूँ तो, मुझे खेद है कि मैं इस महफ़िल में बहुत देर से पहुँचा हूँ – ढोल बजाने वाला एक लड़का, जो युद्ध के लगभग अंत में अपना योगदान जोड़ रहा है – जब मेरी बहनों की स्वतंत्रता पहले से ही दिखाई दे रही है। फिर भी मैंने अपनी आवाज़ उठाने और अपना ढोल बजाने की एक लगभग पवित्र विवशता महसूस की है, इस घड़ी में भी। क्योंकि हाल के वर्षों में, जबकि बहुत-सी कलीसियाओं ने बड़ी प्रगति की है, मैंने पितृसत्तात्मक धर्मविज्ञान को थामे रहने वाली नेकनीयत कलीसियाओं के कारण होने वाले गहरे चिंताजनक परिणाम और बढ़ती हुई (फिर भी अनकही) "हताहतों की संख्या" देखी है। उनके पीछे हाजिरा जैसी स्त्रियाँ पड़ी हैं। वे अनगिनत स्त्रियाँ हैं जिन्हें टूटी आत्माओं, अजन्मी क्षमताओं और गर्भ में ही नष्ट हो गए सपनों के साथ जंगल में धकेल दिया गया है। एक अर्थ में, यह पुस्तक उसी जंगल में मेरी यात्रा है – पीड़ित के रूप में नहीं, बल्कि एक भूतपूर्व अपराधी के रूप में। यह कुंद, उद्दंड आत्मविश्वास से, भ्रमित करने वाली जटिलता से होते हुए, विनम्र श्रद्धा तक की एक तीर्थयात्रा रही है, जब मैं वह देखता हूँ जो सदा से पवित्रशास्त्र में था: परमेश्वर एक स्त्री को देखते समय क्या देखते हैं।

यद्यपि मैं मुख्य रूप से भविष्य की एक अधिक प्रभावी, मसीह का आदर करने वाली कलीसिया की आशा भरी दृष्टि के साथ लिखता हूँ, मैं भारी मन से पीछे मुड़कर भी देखता हूँ, क्योंकि मैं स्वीकार करता हूँ कि मैंने अनजाने में उन्हीं कलीसियाओं को किन-किन तरीकों से कमज़ोर किया जिनकी अगुवाई में मैंने सहायता की। इसलिए यह पुस्तक उन सभी स्त्रियों से मेरी क्षमा-याचना है जिनकी दुनिया को मैंने शायद अनजाने में छोटा कर दिया, और उन गलतियों को सुधारने का मेरा प्रयास है जिनमें मेरा भी हाथ रहा है।

3. 2 कुरिन्थियों 2:4



1

अपनी राय बदलना

"अपनी राय बदलने का अर्थ यह नहीं कि हमने अपने सिद्धांत छोड़ दिए हैं। इसका अर्थ यह हो सकता है कि हमने कुछ सीखा है।" Adam Grant

Oxford Dictionary पितृसत्ता की परिभाषा इस प्रकार देती है: "सामाजिक संगठन का कोई भी रूप जिसमें प्रधान शक्ति पुरुषों के पास हो।" इस परिभाषा के अनुसार, मैं अपनी कलीसिया में एक पितृसत्तात्मक सिद्धांत का मुख्य प्रवक्ता हुआ करता था।[4] मुख्य शिक्षक पास्टर के रूप में, वर्ष में कई बार मैं सैकड़ों नए सदस्यों के सामने खड़ा होता और समझाता कि परमेश्वर की इच्छा के अनुसार यह बाइबल-सम्मत क्यों है कि कलीसिया और विवाह में पुरुष अधिक ज़िम्मेदारी उठाएँ। मैं समझाता:

बाइबल के अनुसार, परमेश्वर ने आदम और हव्वा को इसलिए बनाया कि वे समान परन्तु विशिष्ट भूमिकाओं में एक-दूसरे के पूरक हों। इससे भी बढ़कर, परमेश्वर उस पूरकता को कलीसिया में ले आए हैं, ताकि यद्यपि अधिकांश भूमिकाएँ स्त्रियों के लिए खुली हैं, परमेश्वर ने केवल पुरुषों को प्राचीन और पास्टर होने के लिए ठहराया है। यद्यपि इसे बदलने के लिए संस्कृति का भारी दबाव है, हम संस्कृति से नहीं, बाइबल से दिशा लेने के लिए प्रतिबद्ध हैं।

और बस, अधिकांश लोग हमारे पक्ष को स्वीकार कर लेते। जब कुछ लोग स्वीकार नहीं करते और छोड़कर चले जाते, तो मैं स्वयं को यह कहकर सांत्वना देता कि यीशु के प्रति विश्वासयोग्यता ही सबसे महत्वपूर्ण है।

फिर कुछ वर्ष पहले, जब यह मुद्दा एक बार फिर उठा और हमें एहसास हुआ कि हमारे पिछले प्रमाण कुछ कमज़ोर थे, तो हमारी मुख्य अगुवाई टीम ने इस सिद्धांत पर फिर से विचार करने और उसके लिए एक विस्तृत विवरण और बचाव तैयार करने का निर्णय लिया। यद्यपि हमने इस मुद्दे पर खुले मन से बात की, हम में से किसी को सचमुच यह संदेह नहीं था कि पवित्रशास्त्र की हमारी पिछली व्याख्या गलत हो सकती है। आख़िरकार, हमारे पास John Piper और Timothy Keller जैसे सम्मानित मसीही अगुवे थे, जिन्होंने हर प्रकार के विषयों पर – लिंग और अगुवाई सहित – बाइबल पढ़ने के हमारे तरीके का समर्थन किया था। और जब तक यह सिद्धांत लागू था, परमेश्वर ने हमारी कलीसिया को संख्या में आशीष दी थी।

4. यद्यपि मैंने अपने पहले के पक्ष को परिभाषित करने के लिए कभी पितृसत्ता शब्द का प्रयोग नहीं किया, मुझे अंग्रेज़ी भाषा में ऐसा कोई दूसरा शब्द नहीं मिलता जो उस बात के अधिक निकट हो जो मैं सिखाता था।

सबसे अधिक धर्मवैज्ञानिक योग्यता वाले अगुवों में से एक होने के कारण, मुझे दूसरों के साथ इस विषय पर एक लेख लिखने का काम सौंपा गया। मैंने उत्साह और पूरी लगन से इस विषय में डुबकी लगाई – अपने पक्ष का एक सुस्पष्ट और सुविचारित बचाव प्रस्तुत करने के लिए तैयार। अपनी धर्मवैज्ञानिक शिक्षा के बावजूद, यह पहली बार था जब मैंने कलीसिया में स्त्रियों की अगुवाई के विरुद्ध और पक्ष में दिए जाने वाले तर्कों की गहराई से पड़ताल की। तथ्यों से कभी न डरते हुए, मैंने इस विषय पर जो कुछ मिल सका, सब पढ़ा।

ऐसा करते हुए – और मैंने कभी नहीं सोचा था कि ऐसा हो सकता है – मेरा आत्मविश्वास धूल में मिल गया। मैं जितना अधिक समझता गया कि मैं क्या मानता हूँ, और इस मान्यता के सबसे प्रसिद्ध और मुखर समर्थकों में से कितनों ने अपने पक्ष का बचाव कैसे किया है, उतना ही मुझ पर यह स्पष्ट होता गया कि यह मान लेना कितना गलत था कि मेरे विश्वास चट्टान जैसी ठोस बाइबल-व्याख्या पर बने हैं।[5] यह कैसे हो सकता था? मैं जिन लेखकों और विद्वानों का सम्मान करता था, और जिन्हें मैं संस्कृति के फंदों से सुरक्षित समझता था, उनमें से इतने सारे स्वयं एक पुरानी और उतनी ही बाइबल-विरोधी संस्कृति की पकड़ में कैसे आ गए? इस प्रश्न का उत्तर खोजने की मेरी यात्रा इस पुस्तक में खोलकर रखी गई है।

मैंने अपनी राय लापरवाही से नहीं बदली। मैंने विशेष रूप से नीतिवचन की इस सलाह को लागू किया: "मुक़दमे में जो पहले बोलता, वही धर्मी जान पड़ता है, परन्तु पीछे दूसरा पक्षवाला आकर उसे खोज लेता है।"[6] दो बार और तीन बार पक्का करने के लिए, मैंने हर पत्थर पलटा – हर पाठ और हर तर्क – और उसे हर ओर से, बार-बार, बार-बार देखा। पीछे मुड़कर देखने पर, यह सबसे अधिक मुक्त करने वाली यात्राओं में से एक सिद्ध हुई है।

परिभाषाएँ और निर्णायक क्षण

आइए, मैं इस पुस्तक में प्रयुक्त कुछ शब्दों की परिभाषा दूँ। पितृसत्ता या लैंगिक पदानुक्रम से मेरा अर्थ यह धारणा है कि जिस भी क्षेत्र की बात हो रही हो – चाहे घर, कलीसिया या समाज – उसमें सर्वोच्च अधिकार रखने का दायित्व पुरुषों को सौंपा गया है। हमारी धर्मनिरपेक्ष संस्कृति के उस स्वर के विपरीत, जो पुरुषों को धौंस जमाने वाले, शिकारी, ज़िम्मेदारी से भागने वाले और सत्ता के भूखे के रूप में चित्रित करता है, जब मैं इन शब्दों का प्रयोग करता हूँ, तो मेरा अर्थ यह नहीं है कि पुरुष सदा अत्याचारी होते हैं, या उनका पुरुषत्व अनिवार्य रूप से विषैला है। उत्साहजनक बात यह है कि अधिक से अधिक पितृसत्तात्मक कलीसियाएँ स्त्रियों की आवाज़ सुनने की बुद्धिमानी को पहचान रही हैं। फिर भी, जबकि ये कलीसियाएँ स्त्रियों को अपनी बात कहने का अवसर देती हैं, तब भी यही समझा जाता है कि अंतिम निर्णय पुरुषों का होता है।

5. यह अनुभव आम है। उदाहरण के लिए, Andrew Bartlett "Men and Women in Christ" में कहता है: "जब मैंने लिखना शुरू किया, तो मुझे निश्चित नहीं था कि मैं कहाँ पहुँचूँगा। ... स्त्रियों की सेवकाई के विषय में मैंने सोचा था कि मुझे दोनों पक्षों में काफ़ी मज़बूत और बारीकी से संतुलित तर्क मिलेंगे, जिसका अर्थ यह होता कि उस विषय पर कोई भी निष्कर्ष केवल अस्थायी हो सकता है। मैं गलत था ..." (पृ. 15)
6. नीतिवचन 18:17

इस पुस्तक में मैं मुख्य रूप से पितृसत्ता के एक विशेष रूप का उल्लेख करूँगा, जिसे पूरकतावाद कहा जाता है। यह संशोधित पितृसत्ता का एक नया और अत्यंत प्रभावशाली रूप है, जिसे पिछली सदी की अंतिम चौथाई में अमेरिकी कलीसिया में गढ़ा गया। यद्यपि यह दोनों लिंगों को बराबर ठहराने का दावा करता है, यह स्त्रियों को कलीसियाओं में प्रचार करने और पास्टरीय अगुवाई से वंचित रखता है; विवाह में पत्नी की अधीनता पर बल देता है; और कुछ कम मात्रा में, समाज में स्त्रियों की अगुवाई पर भी संदेह प्रकट करता है। यह स्त्रियों की घरेलू भूमिका को – पति की सहायक, गृहिणी और बच्चों का पालन-पोषण करने वाली के रूप में – सबसे अधिक महत्व देने की प्रवृत्ति भी रखता है।

पूरकतावाद के इस छोटे-से इतिहास को कुछ और जटिल बनाते हुए, कलीसियाओं के एक छोटे प्रतिशत ने हाल में इसके कठोर परिणामों को नरम करने का प्रयास किया है – वे स्त्रियों को प्रचार करने देती हैं (पर अधिकार के साथ नहीं)। स्त्रियाँ कलीसिया में पुरुषों की अगुवाई भी कर सकती हैं (पर केवल अगुवाई के निचले स्तरों पर)। वे समाज में शीर्ष स्तर की अगुवा हो सकती हैं (पर कलीसिया में वरिष्ठ अगुवा नहीं)। वे अपने पतियों के साथ मिलकर निर्णय ले सकती हैं (पर जहाँ असहमति हो, वहाँ अंतिम निर्णय पति का होता है)। इसे नरम पूरकतावाद कहा जाता है।

दो दशकों तक मैं स्वयं को एक नरम पूरकतावादी कहता। ऐसी ही कलीसियाई मंडलियों में रहने वाले कई दूसरे अगुवों की तरह, मैंने वरदानों से भरी बहुत-सी स्त्रियों को महत्व दिया और उनके साथ काम किया – आभारी होकर कि मैं एक स्वस्थ कलीसिया का हिस्सा हूँ जो उनकी बुलाहट या उनके योगदान को सीमित करती, चुप कराती या दबाती हुई नहीं दिखती थी।

फिर भी, जब मैंने नए सिरे से पवित्रशास्त्र का अध्ययन किया, तो मुझे स्वीकार करना पड़ा कि यदि पवित्रशास्त्र की व्याख्या के मूल पूरकतावादी तरीके सही हैं, तो नरम पूरकतावाद का बचाव उससे कहीं कम किया जा सकता है जितनी मुझे आशा थी। उसके अधिक समावेशी व्यवहारों के लिए अब उसके पास कोई ठोस बाइबल-आधारित तर्क ही नहीं बचता। मैं इस निष्कर्ष पर पहुँचा कि या तो हम जो मानते हैं उसी पर चलें – और स्त्रियों को प्रचार करने, अगुवाई करने या पुरुषों के साथ सह-अगुवाई करने तक न दें – या फिर हम और निकट से देखें कि हम क्या मानते हैं, और क्यों। (आख़िरकार, यदि पूरकतावाद गलत है, तो उसका नरम रूप भी उससे अधिक स्वीकार्य नहीं है जितना नस्लवाद का केवल एक नरम रूप होता।)

ठीक यही करते हुए, जब मैं हर प्राथमिक और द्वितीयक स्रोत में और गहराई से उतरा, तो जो मैंने पाया उसने मुझे भीतर तक विचलित कर दिया। निकट से जाँच करने पर मैं यह देखकर चकित रह गया कि सम्मानित धर्मविज्ञानियों (जैसे Wayne Grudem, Tom Schreiner और Andreas Köstenberger) ने, और साथ ही प्रिय पास्टरों (जैसे John Piper और Timothy Keller) ने भी, स्त्रियों को अनेक अत्यंत प्रभावशाली भूमिकाओं से वंचित रखने के अपने निष्कर्षों तक पहुँचने के लिए गंभीर रूप से त्रुटिपूर्ण बाइबल-विश्लेषण और असंतुलित तर्क प्रस्तुत किए हैं। वास्तव में, स्त्रियों को वरिष्ठ अगुवाई से वंचित रखने के लिए मुझे एक भी ऐसा बाइबल-आधारित तर्क नहीं मिला जिसमें कोई दरार न हो। चाहे जितने भी तर्क दिए जाएँ, हर एक में गंभीर दोष है। और उन्हें केवल एक साथ जोड़ देने से वे उससे अधिक ठोस नहीं हो जाते, जितना कई कमज़ोर पत्तों को एक के ऊपर एक रखकर बनाया गया ताश का घर ठोस होता है।

इसके विपरीत, मैं यह देखकर भी उतना ही चकित हुआ कि स्त्रियों को क्यों शामिल किया जाना चाहिए, इसके लिए ठोस, बल्कि विश्वास दिलाने वाले, बाइबल-आधारित तर्क मौजूद हैं। इस विषय में पूरी बाइबल को ध्यान में रखने वाले दृष्टिकोण के प्रति मेरी प्रतिबद्धता ही वह कारण है जिससे मैं अंततः स्त्री-पुरुष परस्परता के धर्मविज्ञान पर स्थिर हुआ।[7] मैं इसके समानार्थी शब्द समानतावाद की सराहना करता हूँ, और उन अधिकांश बाइबल-विद्वानों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर खड़ा हूँ जिन्होंने खुलकर इस पक्ष का झंडा उठाया है – वे यह कहने में सही हैं कि पवित्रशास्त्र इस धारणा का समर्थन करता है कि पुरुष और स्त्रियाँ समान हैं और समान अधिकारों और अवसरों के योग्य हैं। फिर भी, मैं इस पुस्तक में इस शब्द का प्रयोग न करना तीन कारणों से पसंद करता हूँ: पहला, पूरकतावादी भी लैंगिक समानता में विश्वास करने का दावा करते हैं; दूसरा, जब यह शब्द लिंग पर लागू होता है, तो कभी-कभी इसे पुरुषों और स्त्रियों के बीच सभी भेदों को नकारने से जोड़ा जाता है; और तीसरा, समानता ही एकमात्र महत्वपूर्ण विचार नहीं है – परस्पर साझेदारी और सहयोगपूर्ण एकता भी उतनी ही महत्वपूर्ण हैं। इसे ध्यान में रखते हुए, यह रही मेरी कार्यकारी परिभाषा, और वह पक्ष जिसे मैं इस पुस्तक में आगे विस्तार से समझाऊँगा:

स्त्री-पुरुष परस्परता वह धर्मवैज्ञानिक पक्ष है, जो पवित्रशास्त्र से निकलता है, कि पुरुष और स्त्रियाँ भिन्न होते हुए भी समान हैं, और जीवन के सभी क्षेत्रों में एक-दूसरे के साथ मिलकर सेवा करने और साझेदारी करने के लिए रचे गए हैं। प्रत्येक व्यक्ति के परमेश्वर-प्रदत्त अधिकार, वरदानों और विशेषज्ञता को, उसके लिंग की परवाह किए बिना, पहचाना और सराहा जा सकता है और जाना चाहिए।

और अंत में, धर्मविज्ञान शब्द के बारे में एक टिप्पणी। अपने सबसे सरल और शुद्ध रूप में, हमारा धर्मविज्ञान इस निरंतर प्रयास से आकार लेना चाहिए कि हम किसी भी और हर विषय पर परमेश्वर के दृष्टिकोण के यथासंभव निकट पहुँचें। इसलिए परमेश्वर स्त्रियों को कैसे देखते हैं स्त्रियों का एक धर्मविज्ञान है – अर्थात बाइबल, जब उसे समग्र रूप में लिया जाए और ठीक से जोड़कर समझा जाए, स्त्रियों के बारे में क्या सिखाती है।

निरंतर सुधार

1500 के दशक के प्रोटेस्टेंट धर्मसुधार ने कलीसिया की शिक्षाओं की एक अत्यंत आवश्यक समीक्षा का आरंभ किया। फिर भी, इसी धर्मसुधार ने "कलीसिया सदा सुधरती रहे" के सिद्धांत की वकालत की (लैटिन वाक्यांश ecclesia semper reformanda से)। उदाहरण के लिए, कैल्विन (Calvin) और लूथर (Luther) ने यह कल्पना नहीं की थी कि बाइबल से जुड़े किसी भी विषय पर अंतिम शब्द उन्हीं के हैं, बल्कि उन्होंने आने वाली पीढ़ियों को यह निरंतर कार्य सौंपा कि वे परिश्रम से हमारी शिक्षाओं पर और पवित्रशास्त्र के साथ उनके मेल पर विचार करती रहें। वे भली-भाँति जानते थे कि सदियों पुरानी कलीसिया में अजीब

7. आरंभ में मैंने "gender mutualism" (लैंगिक परस्परता) चुना था, पर फिर मुझे एहसास हुआ कि पश्चिमी संस्कृति में "gender" शब्द जब विशेषण के रूप में प्रयुक्त होता है, तो अब केवल पुरुष और स्त्री की ओर संकेत नहीं करता। "Sex mutualism" (यौन परस्परता) भी विकल्प नहीं लगा, इसलिए मैंने बिल्कुल आकर्षणहीन नाम "male–female mutualism" (स्त्री-पुरुष परस्परता) चुन लिया।

चीज़ें – बीते युगों के पुराने, अप्रासंगिक अवशेष – उठा लेना आसान है, जिन्हें गले लगाने के बजाय त्याग देना आवश्यक है, यदि कलीसिया को स्वतंत्रता से एक तेज से दूसरे तेज तक बढ़ते जाना है।

मेरा विश्वास है कि यह हमारी पीढ़ी के निर्णायक सुधारों में से एक है। कलीसिया का इतिहास पढ़ते हुए मैं इस पर चकित हुआ हूँ कि पवित्र आत्मा कैसे कलीसिया को अनेक प्रकार के विषयों पर उसकी शिक्षाओं और व्यवहारों के बारे में निरंतर बढ़ती स्पष्टता की ओर ले जाते रहते हैं। यदि पहले धर्मसुधार ने परमेश्वर का वचन उन साधारण लोगों को लौटाने का प्रयास किया था जो लंबे समय से उसकी जीवन बदलने वाली सामर्थ्य से वंचित थे, तो उसके बाद के सुधार धीरे-धीरे पर स्थिरता से परमेश्वर का काम परमेश्वर के सभी लोगों को लौटाते आ रहे हैं – चाहे उनकी आयु, नस्ल, वर्ग या लिंग कुछ भी हो।

सुधार परिश्रम माँगते हैं। कलीसिया के इतिहास के अधिकांश समय में मसीहियों ने यह काम कुछ चुने हुए विद्वान लोगों पर छोड़ दिया कि वे तय करें कि हम सब क्या मानते हैं। वास्तव में, प्रोटेस्टेंट धर्मसुधार और 1436 में छापेखाने के आगमन से पहले, अधिकांश लोग धर्मविज्ञान को, और बाइबल के बड़े भाग को, ऊँची-ऊँची अबूझ बातें समझते थे – जिन्हें केवल वे पुरोहित समझ सकते थे जो लैटिन पढ़ते और बोलते थे, और जिनके पास बाइबल की कोई दुर्लभ प्रति होती थी। यद्यपि तब से बहुत कुछ बदल गया है, बहुत-से विश्वासी (और वास्तव में कलीसिया के बहुत-से अगुवे) अब भी इस महत्वपूर्ण विषय का मूल्यांकन दूसरों को सौंप देते हैं और कठिन व्याख्यात्मक परिश्रम के लिए उन्हीं पर निर्भर रहते हैं। जब मैंने एक साथी पास्टर को अपने बदले हुए पक्ष के बारे में बताया, तो उसने अफ़सोस से कहा, "एक व्यस्त पास्टर के रूप में मुझे नहीं पता कि मैं अपने धर्मविज्ञान पर विचार करने के लिए समय कब निकालूँ।" वह सही है: समय और परिश्रम की ज़रूरत है! फिर भी यह ऐसा प्रयास है जो इतने निवेश के योग्य है।

सुधार का अर्थ अनादर नहीं है। बाँटने वाले खेमों और एक-दूसरे के अपमानजनक व्यंग्य-चित्रों से परे – एक बेहतर मार्ग है। मैं केवल इस बहस के दो स्पष्ट "पक्षों" की बात नहीं कर रहा, बल्कि हमारे दोनों लिंगों की भी, जिन्हें अक्सर एक-दूसरे के विरुद्ध ऐसे खड़ा कर दिया जाता है मानो या तो सभी पुरुष कचरा हैं, या सभी स्त्रियाँ ईज़ेबेल हैं। इसी संदर्भ में, मुझे उन बहुत-से पुरुषों और स्त्रियों पर बड़ा गर्व है जिन्हें मैं जानता हूँ (इस बातचीत के दोनों पक्षों में), जो मसीह की देह को उन्नत करने और एक-दूसरे का आदर करने के लिए अपनी ओर से सब कुछ करते हैं। एक स्त्री पास्टर ने मुझसे कहा, "मैं यीशु के मार्ग पर चलती हूँ, जिन्होंने पुरुषों को नीचा दिखाए बिना स्त्रियों को ऊपर उठाया।" इसी भावना में, मैं उन अगुवों और धर्मविज्ञानियों का भी आदर करना चाहता हूँ (फिर से, दोनों खेमों में) जिन्होंने ईमानदारी से सत्य और न्याय की खोज में अपना जीवन लगा दिया है। यद्यपि इस विशेष मुद्दे पर मैं Tim Keller और John Piper जैसे लोगों से सहमत नहीं हूँ, मैं उन्हें पितृसत्ता के सपाट, दो-आयामी पोस्टर-बॉय के रूप में नहीं देखता। आज मैं जो कुछ हूँ, उसका बहुत-सा भाग उन्हीं ने गढ़ा है, और मैं अनेक प्रकार से अब भी उनसे सीखता हूँ।

अपने धर्मविज्ञान का मूल्यांकन करने वाली कलीसियाओं को पिछले दशकों के "सांस्कृतिक युद्धों" को, और मूल्यों में परिवर्तन लाने के लिए लोगों को व्यक्तिगत रूप से लज्जित करने के तरीकों को भी, ना कहना चाहिए। समाज की आवाज़ों और स्त्रियों द्वारा सही गई पीड़ा को सहानुभूति से सुनते हुए भी, इस बातचीत में

हमारी मुख्य प्रेरक शक्ति पवित्रशास्त्र के धर्मविज्ञान की सही समझ और उसका छुटकारा देने वाला प्रयोग होना चाहिए।

सुधार नम्रता माँगते हैं। यह संभव है कि हम सही काम करें, पर उसे ऐसे ढंग से करें कि भलाई से अधिक हानि हो। आप जहाँ भी पहुँचें, अपने विश्वासों के साथ दया, कोमलता और धीरज अवश्य जोड़ें।

मुझे विवाद में कोई आनंद नहीं आता, और न आपको आना चाहिए। यद्यपि अब मैं भिन्न विश्वास रखता हूँ, मैं आज भी बहुत-से पूरकतावादी अगुवों और उनकी कलीसियाओं को मसीह में अपने भाई-बहनों के रूप में सर्वोच्च सम्मान देता हूँ – हमारी समझ में चाहे जो अंतर हों, जो हम में साझा है वह उससे कहीं बड़ा है। मसीही अगुवाई में अपने कार्यकाल के अधिकांश समय तक स्वयं पूरकतावादी रहने के बाद, यह संकेत देना मेरी भूल होगी कि जो लोग अब भी इसे मानते हैं, वे किसी प्रकार आत्मिक या बौद्धिक रूप से कमतर हैं।

जैसा मैं आगे और विस्तार से बताऊँगा, शायद स्त्री-समानता की अपेक्षाकृत नई सांस्कृतिक घटना से कलीसिया का सामना वह सबसे बड़ा उदाहरण-अध्ययन है जिसकी ठीक से जाँच करने का अवसर हमें कभी मिला है: कि ऐतिहासिक कलीसिया ने अपने ही ग्रंथों को पढ़ते हुए कैसे सांस्कृतिक धारणाओं को आत्मसात कर लिया। Tim Keller इसे बड़े कौशल से कहता है:

बाइबल के बारे में [हमारी] समझ निश्चय ही गलत हो सकती है – वास्तव में, वह सदा आंशिक रूप से गलत होती है – और इसलिए उसे सदा सुधारे जाने के लिए खुला रहना चाहिए। ... अपनी सांस्कृतिक आँखों पर पड़ी पट्टियों के कारण, हमें [किसी नई संस्कृति] से केवल बात ही नहीं करनी है; हमें [उसके लोगों] की बात भी सुननी है। हमें सुनना है कि वे क्या कह रहे हैं, और उनके प्रश्नों को, हमारी बातों पर उनकी आपत्तियों को, और उनकी आशाओं और आकांक्षाओं को गंभीरता से लेना है। अक्सर किसी नई संस्कृति के साथ यह संवाद हमें बाइबल में सिखाई गई बहुत-सी बातें दिखाता है – ऐसी बातें जिन्हें हम या तो पूरी तरह चूक गए थे या महत्वहीन समझते थे, और संभवतः वे तरीके भी जिनसे हमने अपनी ही सांस्कृतिक धारणाओं के चश्मे से बाइबल को गलत पढ़ा।[8]

इफिसियों 5 में प्रेरित पौलुस के अनुसार, यीशु निरंतर "वचन के द्वारा जल के स्नान" से अपनी कलीसिया को सुंदर बना रहे हैं, और उसे और अधिक तेजस्वी और निष्कलंक बना रहे हैं। उनके इसी अनुग्रह के प्रकाश में मैं यह पुस्तक प्रस्तुत करता हूँ; यद्यपि निःसंदेह इसमें कई ऐसे स्थानों पर दोष हैं जिनसे मैं अभी अनजान हूँ, मैं प्रार्थना करता हूँ कि यह फिर भी यीशु की कलीसिया को सुंदर बनाने के लिए पवित्र आत्मा के नवीकरण के कार्य में एक छोटी-सी भूमिका निभाए।

8. Timothy Keller, Center Church, अध्याय 8.

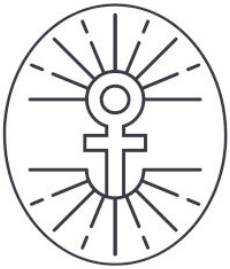

पहला भाग

स्त्रियों का पतन और उत्थान



2

हीन लिंग

"मनुष्य के पतन की कर्ता स्त्री थी ... अपनी उँगलियों के सिरों से भी, हम गोबर के ऐसे बोरे को गले लगाने की इच्छा कैसे कर सकते हैं?" क्लूनी के ओडो (Odo of Cluny), 936 ई.[9]

हम भोलेपन से यह मान लेते हैं कि आज कलीसिया स्त्रियों के बारे में जो मानती है, वही वह सदा से मानती आई है। जैसा आप अभी जानेंगे, ऐसा नहीं है! इस अध्याय में आइए यह जानें कि "परमेश्वर स्त्रियों को कैसे देखते हैं?" इस प्रश्न का हमारा आज का उत्तर उस उत्तर से कहीं बेहतर क्यों है जो इतिहास के अधिकांश मसीहियों ने दिया होता।

यद्यपि इस पूरी पुस्तक में हम मुख्य रूप से पवित्रशास्त्र का अध्ययन करेंगे, इस अध्याय और अगले अध्याय में मैं उस स्थिति की पड़ताल करना चाहता हूँ जिसमें हम स्वयं को पाते हैं। यह जानना कि कलीसिया के इतिहास में – बहुत पहले और हाल ही में – हम पितृसत्ता को नासमझी से "परमेश्वर की अच्छी रचना" मानकर गले लगाते हुए कहाँ भटक गए, रोचक भी है और डरावना भी।

इतिहास में बहुत हाल तक यह एक सार्वभौमिक रूप से स्वीकृत और निर्विवाद सिद्धांत था कि पुरुषों को स्त्रियों पर "उन्हीं की भलाई के लिए" शासन करना चाहिए। सभी सबसे बड़े धर्म यही सिखाते थे, और अधिकांश अब भी सिखाते हैं। किसी धर्म की व्याख्या जितनी अधिक रूढ़िवादी रही, पुरुष उतना ही अधिक स्त्रियों को केवल कुछ क्षेत्रों तक सीमित रखने की ओर झुके। दुख की बात है कि ऐसे उत्पीड़न को उखाड़ फेंकने के अपने भीतरी संसाधनों और सोई हुई क्षमता के बावजूद, मसीही जगत ने बड़ी हद तक पुरुष-श्रेष्ठता के विचार को थामे रखा है – अपने ही पवित्रशास्त्र की व्याख्या इस तरह करते हुए कि "मसीही" पितृसत्ता के विचार का बचाव हो सके।

इसका कारण यह है कि अपने इतिहास के अधिकांश समय में कलीसिया स्त्रियों की जन्मजात हीनता में विश्वास करती आई है। बाइबल जैसी विशाल और जटिल पुस्तक से, मोटे तौर पर कहें तो, वास्तविकता के बारे में किसी के भी पहले से तय निष्कर्षों का समर्थन करवाया जा सकता है। एक श्वेत दक्षिण अफ़्रीकी मसीही होने के नाते, मुझे यह पता होना चाहिए। मेरे देश में, बस कुछ दशक पहले, हमारे कुछ सबसे विद्वान "बाइबल-आधारित" धर्मविज्ञानियों ने बाइबल को अपने नस्लवाद को उजागर करने देने के बजाय, अपना

9. Patralogia Latina से उद्धृत: Christine Klapish-Zuber (ed), A History of Women, अध्याय 1.

नस्लवाद बाइबल में पढ़ डाला। उन्होंने पाठों का प्रयोग इस तरह किया कि उनका अर्थ तोड़-मरोड़ दिया गया – और नस्लों के बारे में "अलग-अलग पर बराबर" का एक दृष्टिकोण गढ़ा, जिसे रंगभेद (Apartheid) कहा गया। अमेरिकी मसीहियों ने बीसवीं सदी के आरंभ की अपनी पृथक्करण नीतियों में कुछ ऐसा ही समर्थन किया, जबकि John Marshall Harlan जैसे असहमत लोगों ने स्पष्ट और ठोस तर्क दिए थे – Harlan स्वयं पहले दासों का मालिक रह चुका था और अपनी गलती पहचान चुका था। उस समय अपने धर्मवैज्ञानिक दायरे में अकेली आवाज़ के रूप में उसने ज़ोर देकर कहा, "नस्ल के आधार पर नागरिकों का मनमाना पृथक्करण दासता का एक ऐसा बिल्ला है जो समानता से मेल नहीं खाता।"[10] यद्यपि उस समय के मसीहियों ने अश्वेत और श्वेत की समानता के विचार को ऊपरी तौर पर सलाम किया हो, पर अश्वेत लोगों को निर्धारित क्षेत्रों तक अलग करके और उन्हें मतदान का अधिकार न देकर, वे उनकी समानता को खोखला कर रहे थे और उनकी मानवीय गरिमा छीन रहे थे।

आज एक मसीही के रूप में मैं कलीसिया में लैंगिक भेदभाव के बारे में भी कुछ ऐसा ही कह सकता हूँ, जिसकी जड़ें शायद और भी गहरी रही हैं। लगभग सभी महाद्वीपों और सभी सदियों में लगभग पूरी कलीसिया ने अपने अगुवों की यह शिक्षा स्वीकार की कि स्त्री "भिन्न और हीन" है। पूरकतावादी कलीसिया के हाल के प्रयास, इसे बदलकर "व्यक्ति के रूप में समान, भूमिकाओं में भिन्न" कर देने के, चाहे जितने भी नेक हों, मैं Harlan की भावना को दोहराना और उसे लिंग पर लागू करना चाहूँगा: लिंग के आधार पर कलीसिया के सदस्यों का पृथक्करण दासता का एक ऐसा बिल्ला है जो समानता से मेल नहीं खाता।

यद्यपि मैं यह बात अगले अध्याय में और विस्तार से रखूँगा, पूरकतावादियों का यह दावा कि उनका पक्ष ही कलीसिया का ऐतिहासिक पक्ष है, गंभीर ऐतिहासिक विस्मृति को दर्शाता है। यद्यपि आज सभी मसीही और कलीसियाएँ स्पष्ट शब्दों में कहेंगी कि स्त्रियाँ पुरुषों के बराबर हैं, शायद ही किसी को याद हो कि बहुत हाल में ही स्त्री-पुरुष समानता का विचार कलीसिया में स्वीकृत शिक्षा बना।[11]

शायद यही ऐतिहासिक कलीसिया का सबसे व्यापक और सबसे स्थायी पाप है: कि 1960 के दशक तक यह विश्वास बड़ी हद तक बिना चुनौती के रहा कि स्त्रियाँ मूल रूप से पुरुषों से हीन हैं। तभी जाकर, स्त्री-मुक्ति आंदोलन (Women's Liberation Movement) की सफलता के बाद, समाज ने यह "खोजा" कि स्त्रियों में सचमुच पुरुषों के बराबर बुद्धि होती है और वे भी उतनी ही सक्षमता से महत्वपूर्ण अगुवाई दे सकती हैं। केवल इसी समय विश्वव्यापी कलीसिया ने स्त्रियों के बारे में अपनी शिक्षाओं को तेज़ी से बदलना शुरू किया। लगभग दो सहस्राब्दियों तक कलीसिया के लगभग सभी प्रमुख शिक्षक स्त्रियों के बारे में निम्न और प्रतिबंधात्मक दृष्टिकोण रखते थे। जैसा मैं आपको दिखाऊँगा, उन्हें यह दृष्टिकोण अपनी आसपास की संस्कृतियों से विरासत में मिला था, और पवित्रशास्त्र के द्वारा इस दृष्टिकोण को चुनौती देने के बजाय, उन्होंने अपनी संस्कृति के स्त्री-द्वेष को पवित्रशास्त्र के पढ़ने पर हावी होने दिया।

10. https://bit.ly/3mzfAEq
11. इसका श्रेय William Witt को जाता है, जिसने "Icons of Christ" (अध्याय 3) में पहली बार मुझे यह ठीक से देखने में मदद की – कलीसिया के इतिहास के अधिकांश समय तक कलीसिया की शिक्षा रहे स्त्री-हीनता के धर्मविज्ञान का उसका अध्ययन इस अध्याय को लिखने में मेरा प्रारंभिक बिंदु बना।

मुझे इस बात पर इतना ज़ोर इसलिए देना पड़ रहा है ताकि यह स्पष्ट हो सके कि पूरकतावाद, अपनी "व्यक्ति के रूप में समान, भूमिकाओं में भिन्न" की शिक्षा के साथ, कलीसिया के ऐतिहासिक पक्ष से ठीक उतना ही हटा हुआ है जितना स्त्री-पुरुष परस्परता।[12] दोनों पक्ष केवल 60 वर्ष पहले अस्तित्व में ही नहीं थे! बाइबल-व्याख्या के इतिहास में वे अभी शिशु मात्र हैं, और इसलिए पहले से विद्यमान होने का दावा करने का अधिकार पूरकतावाद को स्त्री-पुरुष परस्परता से अधिक नहीं है। वास्तव में, मेरा पूर्व पक्ष, नरम पूरकतावाद, इन दोनों से कहीं अधिक नया है – इन सभी पक्षों में उसका ऐतिहासिक आधार सबसे कम है।

कलीसिया की मानक शिक्षा के रूप में स्त्री की हीनता

यह सच है कि मसीही विश्वास ने अपने अस्तित्व की पहली सदियों में स्त्रियों की भीड़ की भीड़ को अपनी कलीसियाओं में खींचा। स्त्रियों के प्रति यीशु का क्रांतिकारी व्यवहार, आरंभिक कलीसियाओं में अगुवाई की भूमिकाएँ निभाने वाली स्त्रियाँ, पौलुस की पत्रियों के अनुसार मसीह में पुरुषों और स्त्रियों का समान स्थान – इन सब ने कलीसिया को ऐसी दिशा में आगे बढ़ाया जिसने स्त्रियों को ऐसा नया दर्जा दिया जो उन्होंने कहीं और, या सभ्यता के किसी पिछले युग में, नहीं जाना था। फिर भी, आरंभिक कलीसिया के स्त्रियों के प्रति ऊँचे दृष्टिकोण और व्यवहार के बावजूद, प्रेरितों के बाद की कलीसिया में सब कुछ ठीक नहीं था। यद्यपि वह स्त्रियों को अपने यूनानी-रोमी पड़ोसियों की तुलना में (थोड़ी) अधिक सकारात्मक दृष्टि से देखती थी, स्त्री की हीनता का विचार जल्दी ही जड़ पकड़ गया।

आगे इतिहास के कुछ "महान" कलीसियाई अगुवों और विचारकों के लेखों का एक चयन है, जो इस व्यापक रूप से प्रचलित दृष्टिकोण की झलक देता है।

कलीसियाई पिता (चर्च फ़ादर) ओरिजेन (Origen) (184–253 ई.) ने पौलुस की इस शिक्षा को कि "स्त्री का कलीसिया में बातें करना लज्जा की बात है"[13] इस तरह लागू किया कि उसने स्त्रियों से पूर्ण मौन की माँग की, चाहे वे कोई उत्तम या पवित्र बात ही क्यों न कहना चाहें, केवल इसलिए कि उनके शब्द "एक स्त्री के मुँह से निकलते हैं।"[14] इसी प्रकार, कलीसियाई पिता यूहन्ना क्रिसोस्टम (John Chrysostom) (347–407 ई.) ने स्त्रियों को कुछ भी सिखाने से मना किया, क्योंकि "उसने एक बार आदम को सिखाया था और बुरा सिखाया था। ... इसलिए उसे शिक्षक की कुर्सी से उतर जाने दो! अब वह पाप के कारण पुरुष के अधीन कर दी गई है।"[15] उसने विशेष रूप से पुरुष पास्टरों को स्त्री की लुभाने की क्षमता से सावधान किया, और इन पुरुषों को सलाह दी कि वे "अधिक विशेष सावधानी बरतें, क्योंकि स्त्री का स्वभाव पापों की ओर झुका है ... क्योंकि केवल अपवित्र स्त्री की ही नहीं, शालीन स्त्री की आँख भी मन को भेदती और विचलित करती है।"[16]

12. Andrew Bartlett "Men and Women in Christ" (पृ. 6–10) में भी यही निष्कर्ष निकालता है: "जब पूरकतावादी दावा करते हैं कि उनका पक्ष 'ऐतिहासिक' है, तो यह एक भ्रांति है।"
13. 1 कुरिन्थियों 14:35
14. उद्धृत: Patricia Cox Miller (ed), Women in Early Christianity
15. उद्धृत: Elizabeth A. Clark, Women in the Early Church
16. उद्धृत: Philip Schaff (ed), St. Chrysostom

लैटिन मसीहियत के पिता तर्तुलियन (Tertullian) (160-225 ई.) तो और भी कठोर था: "स्त्री गंदे नाले के ऊपर बना एक मंदिर है।" उसने स्त्रियों को सीधे संबोधित किया:

क्या तुम नहीं जानतीं कि तुम (प्रत्येक) एक हव्वा हो? तुम्हारे इस लिंग पर परमेश्वर का दंड-वचन इस युग में भी जीवित है: तो दोष भी अनिवार्य रूप से जीवित रहना चाहिए। तुम शैतान का द्वार हो। तुम ईश्वरीय व्यवस्था को सबसे पहले छोड़ने वाली हो। तुम ही वह हो जिसने उसे बहकाया जिस पर आक्रमण करने का साहस शैतान में भी नहीं था। तुमने इतनी आसानी से परमेश्वर के स्वरूप, पुरुष, को नष्ट कर दिया। तुम्हारे दोष के कारण परमेश्वर के पुत्र को भी मरना पड़ा।[17]

उसकी इन विषैली निंदाओं के पीछे वे स्त्रियाँ थीं जो उसकी जानी-पहचानी मंडलियों में दूसरों को सिखाती और बपतिस्मा देती थीं। वह इससे बिल्कुल प्रसन्न नहीं था: "स्त्री को कलीसिया में बोलने की अनुमति नहीं है, पर न ही उसे सिखाने, न बपतिस्मा देने, न भेंट चढ़ाने, न ही किसी पुरुषोचित कार्य [या] याजकीय पद में अपने लिए कोई भाग माँगने की अनुमति है।"[18] तर्तुलियन ने रोमी राजनीतिक तरीकों को कलीसिया की संरचनाओं में लाकर अपने समय की कलीसिया को एक जीवंत समुदाय से एक राजनीतिक निकाय में बदल दिया, जिसमें केवल पुरुष ही किसी भी प्रकार की अगुवाई में पूरा योगदान दे सकते थे। उसने स्त्रियों के यौन संयम पर भी ज़ोर दिया। उसके अनुसार स्त्रियाँ केवल अपनी यौन पवित्रता के लिए ही नहीं, बल्कि पुरुषों की यौन पवित्रता के लिए भी ज़िम्मेदार थीं। उसने इस पर लंबे-लंबे ग्रंथ लिखे कि स्त्रियाँ आकर्षक दिखने से बचें – उन्हें अपनी गंदी देहों को नहलाना नहीं था, बल्कि उन्हें सिर से पाँव तक गहरे रंग के, बेडौल वस्त्रों से ढकना था, और सार्वजनिक स्थानों से दूर रहना था, ताकि कोई पुरुष परीक्षा में न पड़े। यद्यपि मसीह उन्हें छुड़ा सकते थे, फिर भी वे विशेष रूप से पाप में जकड़ी हुई थीं, और उन्हें अलग रखना और अधीन करना ही सबसे अच्छा था।

इसी प्रकार कलीसियाई पिता ऑगस्टीन (Augustine) (354–430 ई.) का मानना था कि पुरुष के बिना स्त्री की कोई अंतर्निहित गरिमा नहीं है: "सहायक के रूप में – जो कार्य केवल उसी से संबंधित है – वह परमेश्वर का स्वरूप नहीं है। परन्तु [पुरुष] अकेले अपने आप में परमेश्वर का स्वरूप उतना ही पूर्ण और संपूर्ण रूप से है जितना तब, जब वह और स्त्री मिलकर एक हो जाते हैं।"[19] सदियाँ बीतती गईं, पर स्त्रियों के प्रति यह निम्न दृष्टिकोण नहीं सुधरा। ऑगस्टीन के बाद कलीसिया के अगले महान बुद्धिजीवी के रूप में अपनी ख्याति के बावजूद, थॉमस एक्विनास (Thomas Aquinas) (1225–1274 ई.) अपनी जान-पहचान की स्त्रियों में वैसी कोई बुद्धि नहीं देख पाया। उसने अरस्तू (Aristotle) के इस बेतुके विचार को फिर से जीवित करके कलीसिया के लिंग-संबंधी धर्मविज्ञान में योगदान दिया कि स्त्रियाँ दोषपूर्ण मनुष्य हैं – पुरुष के वीर्य के साथ हुई किसी दुर्घटना का परिणाम, जो सामान्य परिस्थितियों में एक और पुरुष उत्पन्न करता। इसका निहितार्थ यह है कि "स्त्रियाँ स्वभाव से पुरुषों के अधीन हैं, क्योंकि पुरुषों में विवेक प्रधान होता है।"[20]

17. उद्धृत: Alexander Roberts (ed), Tertullian, Minicius Felix, Commodian, Origen
18. उद्धृत: Karen Jo Torjesen, When Women Were Priests
19. Augustine, De Genesis ad litteram, vol. 9.
20. Aquinas, Summa Theologica, 1.92.1. www.bit.ly/3CD8B2V

एक्विनास ने स्वीकार किया कि स्त्री पुरुष के साथ मानव स्वभाव में सहभागी है (जो विचार के क्षेत्र में एक स्वागतयोग्य नवीनता थी) और वह पुरुष की "सहायक" है, पर फिर उसने तुरंत यह कहकर इसे सीमित कर दिया कि यौन प्रजनन के अतिरिक्त "दूसरा पुरुष सदा अधिक सहायक होता है।" पुरुष स्त्री से मिलने वाली थोड़ी-सी सहायता का बदला उसकी अगुवाई करके चुकाता है: "श्रेष्ठ व्यक्ति अपने अधीन लोगों का उपयोग उन्हीं के लाभ और भलाई के लिए करता है। ... क्योंकि यदि कुछ लोग अपने से अधिक बुद्धिमान लोगों द्वारा शासित न होते, तो मानव परिवार में अच्छी व्यवस्था का अभाव होता।"[21]

एक्विनास का मन परमेश्वर के विषय में चाहे जितना महान रहा हो, दुर्भाग्य से उसके शिक्षक, डोमिनिकन धर्मविज्ञानी अल्बर्ट महान (Albert the Great), ने उसे स्त्रियों के बारे में भयानक विचारों से भर दिया था। उसने लिखा:

स्त्री एक अधूरा बना पुरुष है, और पुरुष की तुलना में उसका स्वभाव त्रुटिपूर्ण और दोषपूर्ण है। इसलिए वह अपने आप में अनिश्चित रहती है। जो वह प्राप्त नहीं कर सकती, उसे वह झूठ और शैतानी छल से पाने का प्रयास करती है। और इसलिए हर स्त्री से ऐसे सावधान रहना चाहिए मानो वह कोई विषैला साँप और सींगों वाला शैतान हो ... बुरे और विकृत कामों में वह पुरुष से अधिक चतुर, अर्थात अधिक धूर्त, हो सकती है। उसकी भावनाएँ उसे हर बुराई की ओर धकेलती हैं, जैसे विवेक पुरुष को हर भलाई की ओर प्रेरित करता है।[22]

प्रोटेस्टेंट धर्मसुधारक मार्टिन लूथर (Martin Luther) (1483–1546 ई.) ने, जो सदा विवादप्रिय रहा, स्त्रियों को मानवीय गरिमा देने में कुछ सकारात्मक कदम उठाए। पर फिर भी पुराने विचार चिपके रहे: "परमेश्वर का वचन और उसके काम बिल्कुल स्पष्ट हैं कि स्त्रियाँ या तो पत्नियाँ बनने के लिए बनाई गईं या वेश्याएँ।" "बुद्धिमान होने की इच्छा से बुरा कोई वस्त्र स्त्री पर नहीं सजता।" "पुरुषों की छाती चौड़ी और बड़ी, और कूल्हे छोटे और संकरे होते हैं, और उनमें स्त्रियों से अधिक समझ होती है, जिनकी छाती छोटी और संकरी और कूल्हे चौड़े होते हैं, ताकि वे घर पर रहें, चुपचाप बैठें, घर सँभालें और बच्चों को जन्म दें और उनका पालन-पोषण करें।" व्यभिचारिणी स्त्रियों के विषय में चेतावनी देने वाले एक पद पर टिप्पणी करते हुए, लूथर ने उसे पुरुषों और स्त्रियों के बारे में अपने विचार प्रकट करने का अवसर बना लिया:

वह पुरुष के आसपास रहने, बच्चों की देखभाल करने और उनका पालन-पोषण करने ... और पुरुष के अधीन रहने के लिए रची गई थी। दूसरी ओर, पुरुषों को आज्ञा दी गई है कि वे स्त्रियों और घर के बाकी लोगों पर शासन करें और उन पर अधिकार रखें। पर यदि कोई स्त्री अपना पद छोड़कर अपने पति पर अधिकार जमा लेती है, तो वह ऐसा काम (कर रही) है जो उसके अपने दोष और बुराई से निकलता है। क्योंकि परमेश्वर ने इस लिंग को शासन करने के लिए नहीं रचा, और इसलिए वे कभी सफलतापूर्वक शासन नहीं करतीं।[23]

21. अन्यत्र एक्विनास इसी को इस बात का कारण बताता है कि स्त्री कलीसिया में पुरोहिताभिषेक क्यों नहीं पा सकती, या कोई महत्वपूर्ण भूमिका क्यों नहीं निभा सकती: "स्त्री अधीनता की अवस्था में है, इसलिए वह पुरोहिताभिषेक का संस्कार ग्रहण नहीं कर सकती।"
22. Filthaut Ephrem (ed), Albertus Magnus: Quaestiones Super De Animalibus, vol. 15, q. 11.
23. Luther's Works, vol. 15, सभोपदेशक 7:26 पर टीका, पृ. 130.

कलीसिया के इतिहास के प्रमुख अगुवों के ये विचार चाहे जितने विनाशकारी रहे हों, स्कॉटलैंड के धर्मसुधारक और प्रेस्बिटेरियनवाद (Presbyterianism) के संस्थापक जॉन नॉक्स (John Knox) कलीसिया के सबसे बड़े स्त्री-द्वेषी के रूप में बाज़ी मार ले जाता है। कैथोलिक रानियों – स्कॉटलैंड की मेरी ऑफ़ गीज़ (Mary of Guise) और इंग्लैंड की मेरी ट्यूडर (Mary Tudor) – के विरुद्ध अपने आक्रोश भरे लेख में उसने कहा कि उसके तर्क पवित्रशास्त्र पर आधारित हैं: "परमेश्वर ने प्रकट किया है कि किसी स्त्री का राज करना और पुरुषों के ऊपर साम्राज्य रखना प्रकृति में एक विकृति से भी बढ़कर है।"[24] नॉक्स के अनुसार, स्त्रियाँ स्वभाव से दुर्बल, कमज़ोर, अधीर, शक्तिहीन, अस्थिर, क्रूर और सलाह देने में अक्षम होती हैं। इसी कारण उन्हें अगुवाई नहीं करनी चाहिए, और वास्तव में जो पुरुष उनकी सलाह और अगुवाई के अधीन होते हैं, उन्हें स्वयं भी इसी कारण सार्वजनिक पद के अयोग्य ठहराया जाना चाहिए। पौलुस का हवाला देते हुए उसने कहा कि स्त्री, अपनी सबसे बड़ी पूर्णता में भी, पुरुष के अधीन रहने के लिए ही रची गई थी। प्रसव में और पुरुष के इस अधीनपन में कष्ट उठाने वाली स्त्रियों के प्रति कोई दया नहीं दिखाई जाती – हव्वा में यह उसका उचित दंड है। इसलिए उसे अपनी सारी इच्छाएँ और अपनी इच्छा-शक्ति अपने पति और उसकी इच्छा को सौंप देनी चाहिए। नॉक्स कहता है कि इन सब का प्रभाव स्त्रियों की भूमिका पर केवल घर और कलीसिया में ही नहीं, बल्कि समाज में भी पड़ता है: "पुरुष के ऊपर सिखाने, न्याय करने या राज करने के लिए उठाई गई स्त्री परमेश्वर की इच्छा और विधान के लिए अत्यंत घृणित बात है।"

उसके साथी धर्मसुधारक कैल्विन (Calvin) ने लिखा, "इसमें कोई बेतुकापन नहीं कि पुरुष दूसरे पुरुषों के साथ भिन्न-भिन्न संबंधों में एक ही समय आज्ञा दे और आज्ञा माने। पर यह बात स्त्रियों पर लागू नहीं होती, जो स्वभाव से (अर्थात परमेश्वर की सामान्य व्यवस्था से) केवल आज्ञा मानने के लिए जन्मी हैं, क्योंकि सभी बुद्धिमान पुरुषों ने सदा gynaikokratian, अर्थात स्त्रियों के शासन, को एक अस्वाभाविक विकृति मानकर ठुकराया है।"[25]

प्यूरिटन जॉन डॉड (John Dod) ने 1603 में दस आज्ञाओं की अपनी व्याख्या में लिखा: "जैसे कलीसिया को मसीह यीशु का भय मानना चाहिए, वैसे ही पत्नियों को अपने पतियों का भय मानना चाहिए। और यह भीतरी भय बाहरी नम्रता और दीनता से प्रकट होना चाहिए। क्योंकि यदि निम्न व्यक्ति में भय और श्रद्धा न हो, तो श्रेष्ठ व्यक्ति को कोई सच्चा और स्थायी आदर नहीं दिया जा सकता।"[26]

अग्रणी एंग्लिकन धर्मविज्ञानियों में से एक, रिचर्ड हूकर (Richard Hooker) (1554–1600 ई.) ने स्त्रियों को नीची दृष्टि से देखने की इस दयनीय और हठी परंपरा को जारी रखा। अपनी पुस्तक The Laws of Ecclesiastical Polity में उसने कहा कि स्त्रियों के "निर्णय प्रायः अपने लिंग के कारण सबसे कमज़ोर होते हैं।"[27] उसने समझाया कि विवाह-समारोहों में पिता दुल्हन को उसके पति को क्यों सौंपता है: "उसके स्वभाव और लिंग की दुर्बलता (imbecility) ही उसे इस बात से बाँधती है कि वह सदा दूसरों के द्वारा

24. John Knox, First Blast of the Trumpet Against the Monstrous Regiment of Women. www.bit.ly/3EG88xc
25. John Calvin, The Second Epistle of Paul the Apostle to the Corinthians and the Epistles to Timothy, Titus and Philemon. (1 तीमुथियुस 2:12 पर उसकी टीका में।)
26. John Dod, A Plaine and Familiar Exposition of the Ten Commandements
27. Richard Hooker, The Laws of Ecclesiastical Polity, Preface 3.13.

निर्देशित, मार्गदर्शित और नियंत्रित हो।"[28]

मेथोडिस्ट आंदोलन के संस्थापक जॉन वेस्ली (John Wesley) (1703–1791 ई.) ने अपनी कलीसियाओं में स्त्रियों को सेवा के कुछ महत्वपूर्ण अवसर दिए, फिर भी वह स्त्री की प्राथमिक सेवा घर में ही देखता था। अपनी तेज़ रफ़्तार सेवकाई-यात्राओं में से एक के दौरान अपनी पत्नी को लिखते हुए, उसने उसे सलाह दी कि वह घर तक सीमित स्त्री के रूप में अपना भाग स्वीकार करे: "अब प्रभुत्व के लिए, सत्ता, धन या प्रशंसा के लिए और संघर्ष मत करो। एक निजी, महत्वहीन व्यक्ति बनकर संतुष्ट रहो, जिसे परमेश्वर और मैं जानते और प्रेम करते हैं। ... यदि तुम्हें अभी दफ़ना दिया जाए, तो मानवजाति के लिए तुम्हारे चरित्र का क्या महत्व है? या यदि तुम कभी जीवित ही न रही होतीं, तो परमेश्वर के कार्य को क्या हानि होती?"[29]

मैं ये सब उद्धरण एक बात स्पष्ट करने के लिए दे रहा हूँ: कलीसिया का ऐतिहासिक पक्ष – चाहे कलीसियाई पिता हों, मध्ययुगीन, कैथोलिक, प्रोटेस्टेंट, प्यूरिटन, एंग्लिकन या मेथोडिस्ट – सदा यही रहा है कि स्त्रियाँ "भिन्न और हीन" हैं, और इसलिए यौन प्रजनन और गृहस्थी के अतिरिक्त किसी महत्वपूर्ण योगदान के लिए अधिकतर अनुपयुक्त हैं।

बाइबल का हर वह खंड जिसे स्त्रियों की हीनता और अधीनस्थता के समर्थन में किसी तरह तोड़ा-मरोड़ा जा सकता था, इसी काम के लिए प्रयोग किया गया। कलीसिया के इतिहास के अधिकांश समय में, यदि कोई स्त्री अपनी कलीसिया के अगुवों से पूछती कि परमेश्वर उसे कैसे देखते हैं, तो उसे अपमानजनक और लज्जित करने वाला उत्तर मिलता। पुरुषों के प्रति स्त्रियों की अधीनस्थता निर्विवाद थी, क्योंकि वह एक ऐसी धारणा पर आधारित थी जिस पर कभी प्रश्न नहीं उठाया गया: स्त्रियाँ स्वभाव से पुरुषों से हीन हैं। यह मान्यता कि स्त्रियाँ अपने स्वभाव और सार में कम बुद्धिमान, अधिक पापी, परीक्षा में अधिक आसानी से पड़ने वाली और भावनात्मक रूप से अधिक अस्थिर हैं, इस अकाट्य निष्कर्ष तक ले गई कि वे घर, कलीसिया और समाज में अगुवाई करने में भी असमर्थ हैं।

आख़िर ये भयानक विचार आए कहाँ से?

संस्कृति पवित्रशास्त्र पर भारी पड़ती है

कलीसिया आज भी जो सबसे आम गलतियाँ करती है, उनमें से एक यह है कि वह संस्कृति को पवित्रशास्त्र के चश्मे से पढ़ने के बजाय पवित्रशास्त्र को संस्कृति के चश्मे से पढ़ती है। यही कलीसिया के इतिहास में लिंगभेद और स्त्री-द्वेष की व्याख्या करता है। विशेष रूप से, अरस्तू (384–322 ई.पू.) के लेखों ने उन सांस्कृतिक धारणाओं को आकार दिया था जो यूनानी-रोमी संसार की जड़ में थीं, और जो आगे चलकर लैंगिक भेद की आरंभिक मसीही समझ में समा गईं। अरस्तू ने स्पष्ट रूप से कहा कि स्त्रियाँ विकृत पुरुष हैं, और इसी से समाज में उनकी भूमिकाएँ निर्धारित होती हैं। अरस्तू ने स्त्रियों को "अंधकारमय, गुप्त, सदा

28. Richard Hooker, The Laws of Ecclesiastical Polity, Book 5, 43.5. पुरानी अंग्रेज़ी में Imbecility शब्द किसी कमज़ोर या अविकसित व्यक्ति के लिए प्रयुक्त होता था।
29. www.bit.ly/3nQszRt

चलायमान, आत्म-संयमहीन और सीमाहीन" बताया, जबकि पुरुषों को "प्रकाशमय, ईमानदार, अच्छे, स्थिर, आत्म-संयमी और दृढ़ सीमाओं वाले"।[30]

ये विचार पूरी यूनानी-रोमी सभ्यता में सांस्कृतिक दृष्टिकोणों और कार्यों को नियंत्रित करते रहे। पितृसत्ता रोमी साम्राज्य के डीएनए में बसी हुई थी। आरंभिक कलीसियाई पिताओं ने स्त्रियों के बारे में कुछ सकारात्मक विचार व्यक्त किए, फिर भी उन्हें पुराने, कुरूप विचारों के साथ मिला दिया। जबकि कलीसिया के इतिहास की पाठ्यपुस्तकें कलीसियाई इतिहास के इस आरंभिक चरण को "सत्य की खोज" के रूप में वर्णित करती हैं, विशेषकर यीशु की पहचान और स्वभाव के विषय में, वे शायद ही कभी उन झूठों का उल्लेख करती हैं जो उसी समय चुपचाप स्त्री के स्वभाव के विषय में कलीसिया की शिक्षा में समाते जा रहे थे।

इसके अतिरिक्त, प्लेटो (Plato) के दर्शन का एक पहलू, जिसे द्वैतवाद कहा जाता है, कलीसिया के लिए एक आरंभिक चुनौती था और उसने स्त्रियों की निंदा को और पुष्ट किया। इस विधर्म में वास्तविकता को देह या पदार्थ (जिसे स्वभाव से बुरा माना जाता है) और आत्मा या मन (जो स्वभाव से अच्छा है) में बाँटा जाता है। संसार को देखने के इस भ्रामक तरीके पर लैंगिक श्रेणियाँ भी चढ़ा दी गईं: पुरुष, जिन्हें अधिक तर्कशील माना जाता था, स्वभाव से अच्छे थे और परमेश्वर के स्वरूप में बने थे, जबकि स्त्रियाँ, जिनकी पहचान उनके मस्तिष्क से नहीं बल्कि उनकी देह से होती थी, शारीरिक मानी जाती थीं और केवल पुरुष के स्वरूप में बनी हुई। जब यह बाइबल-विरोधी द्वैत मसीही चिंतन में आ गया, तो स्त्रियों को तर्कहीनता के साथ, शरीर के साथ और उसकी पापपूर्ण लालसाओं के साथ जोड़ा जाने लगा। स्त्री की यौनिकता के स्वाभाविक रूप से पापपूर्ण होने के इस विधर्मी विचार ने कलीसिया को एक भयानक मार्ग पर डाल दिया। अब यौन संबंध को ही पतन का परिणाम माना जाने लगा। यूहन्ना क्रिसोस्टम ने अपने पाठकों को पतन से पहले की अदन की वाटिका की ऐसी कल्पना करने के लिए प्रेरित किया जिसमें "यौन संबंधों की इच्छा ... उनकी आत्माओं से हटा दी गई थी।"[31] परन्तु पतन के बाद यौन संबंध एक आवश्यक बुराई बन गया। संतान उत्पन्न करने के लिए आवश्यक होते हुए भी, वह उन संतानों तक "मूल पाप" पहुँचाने का साधन बन गया। पाप मानो यौन संबंध से फैलने वाला एक रोग था। यौन संबंध की इस दुखद समझ ने – विशेषकर उन स्त्रियों के मामले में जिनकी पूरी पहचान यौन प्रजनन के इर्द-गिर्द घूमती थी – कौमार्य के अतिरंजित सम्मान, विवाह में तपस्वी ढंग से यौन संबंध से बचने, माता मरियम के कौमार्य के प्रति आसक्ति, और बाद में याजकों के ब्रह्मचर्य को जन्म दिया।

पुरुषों को स्त्रियों से बचना था, और स्त्रियों को स्वयं से। प्राचीन इतिहासकार पल्लाडियस (Palladius) (386–430 ई.) बताता है कि मिस्र के आसपास के रेगिस्तानों में 20,000 स्त्रियाँ संन्यासिनियों के रूप में निर्धनता, ब्रह्मचर्य और एकांत में रहती थीं – मानो अपने तिरस्कृत लिंग के बोझ तले संघर्ष करती हुई। संन्यासियों का यह जीवन, जिसे पुरुषों और स्त्रियों दोनों ने अपनाया, आगे चलकर पुरुषों और स्त्रियों के अलग-अलग मठवासी समुदायों में विकसित हुआ, जो मठों में ब्रह्मचर्य, निर्धनता और सेवा की प्रतिज्ञाओं के इर्द-गिर्द संगठित थे। इस संस्कृति में "सबसे भक्त" स्त्रियाँ विवाह से बचती थीं; यदि संभव हो तो विवाह में

30. Kayla Huber, "Everybody's a Little Bit Sexist." उद्धृत: Mathews, "Gender Roles and the People of God," अध्याय 10.
31. Elizabeth A. Clark, Women in the Early Church, पृ. 122–23.

यौन संबंध से भी; और स्वयं को यथासंभव अनाकर्षक बनाती थीं। इतिहासकार Elizabeth Clark कहती है:

स्त्रियों के प्रति कलीसियाई पिताओं के दृष्टिकोण का वर्णन करने के लिए सबसे उपयुक्त शब्द है द्वंद्वभाव (परस्पर विरोधी भावनाएँ)। स्त्रियाँ परमेश्वर की सृष्टि थीं, पुरुषों के लिए परमेश्वर का अच्छा उपहार – और संसार का अभिशाप। वे मन और चरित्र दोनों में दुर्बल थीं – और उन्होंने अदम्य साहस दिखाया, विद्वत्ता के अद्भुत कार्य किए। घमंडी, कपटी, वासना से भरी – उन्होंने पुरुषों को मसीह तक पहुँचाया, यौन संबंध से भागीं, जल्लाद की धमकियों के आगे डगमगाईं नहीं, टाट और राख से स्वयं को सजाया।[32]

जब रोमी साम्राज्य धीरे-धीरे ढह गया, तो ये यूनानी-रोमी विचार, जो अब कलीसिया के धर्मविज्ञान में घुल-मिल चुके थे, मध्ययुगीन कलीसिया तक पहुँचे। पहले की तरह, स्त्रियों के प्रति द्वंद्वभाव बना रहा: एक ओर स्त्रियों को बुरी और हीन के रूप में चित्रित किया जाता था, जबकि दूसरी ओर उन्हें सद्गुण और पवित्रता के आदर्शों के रूप में सराहा जाता था (यदि वे किसी तरह अपनी यौनिकता को मिटा सकें)।

और फिर आया डायनों के शिकार का दौर। स्त्रियों के प्रति द्वंद्वभाव के इतनी गहराई से जड़ जमा लेने के कारण, यह आश्चर्य की बात नहीं कि समाज और कलीसिया भूसे को गेहूँ से अलग करने निकल पड़े। किसी डायन की पहचान करने और उसे दोषी ठहराने के लिए बस इतना चाहिए था कि कोई ऐसी स्त्री मिल जाए जो विनम्रता से अपनी अधीनस्थ स्थिति को स्वीकार न करती हो; धर्म-न्यायालय के जाँचकर्ता उसे तब तक यातना दें जब तक वह उस बात को "स्वीकार" न कर ले जिसका उस पर आरोप लगाया गया था; और फिर बिना देर किए उसे जलाकर मार डाला जाए। पुरुषों के एक मठ के एक मठाधीश ने इतनी आसानी से राक्षसी ठहराई जाने वाली स्त्रियों के प्रति कोई सहानुभूति नहीं दिखाई: "स्त्रियों की दुष्टता संसार की अन्य सभी दुष्टताओं से बढ़कर है। अजगरों का विष स्त्रियों की निकटता की तुलना में अधिक ठीक होने योग्य है और पुरुषों के लिए कम ख़तरनाक है। अपनी आत्माओं की सुरक्षा के लिए हम उनसे विषैले जंतुओं की तरह दूर रहेंगे।"[33]

धर्मसुधार (Reformation) तक किसी स्त्री के लिए भक्त समझी जाने की सबसे बड़ी आशा यही थी कि वह यौन जीवन और घरेलू भूमिकाओं से पूरी तरह दूर रहे। नन बनकर वे शिक्षा पा सकती थीं और कुछ स्वतंत्रता का अनुभव कर सकती थीं। और कुछ को तो स्त्रियों के मठ की मठाधीश (abbess) के पद तक पहुँचाया जाता था। मध्ययुगीन इतिहास बताता है कि पुरुष आत्मिक बातों में ऐसी कुछ स्त्रियों की बात मानते थे। उदाहरण के लिए, मसीह के लिए घरेलू भूमिकाएँ छोड़ देने के बाद बिंगेन की हिल्डेगार्ड (Hildegard of Bingen) और सिएना की कैथरीन (Catherine of Siena) ने मसीह के पक्ष में ऐसी आवाज़ में बात की जिसमें वह आत्मिक अधिकार गूँजता था जो उससे पहले केवल पुरुषों के पास था।

स्त्रीत्व को त्याग देने वाली इन आत्मिक भूमिकाओं के बाहर केवल दासता और लज्जा थी। दूसरी शताब्दी में क्लेमेंट (Clement) ने कहा: "स्त्रियों के लिए तो अपने स्वभाव का बोध ही लज्जा की भावना जगाने वाला होना चाहिए"[34] – यह सब इसलिए कि कलीसियाई पिताओं ने इस प्रश्न का उत्तर गलत दिया था कि परमेश्वर

32. Elizabeth A. Clark, Women in the Early Church, पृ. 15.
33. उद्धृत: Karen Jo Torjesen, When Women Were Priests, पृ. 223.
34. St. Clement, Pedagogues II, 33, 2.

स्त्रियों को कैसे देखते हैं; उन्होंने अपनी संस्कृति की स्त्री-विरोधी धारणाओं को बाइबल के पाठों में पढ़ लिया था। फिर भी पंद्रहवीं शताब्दी में आशा की एक किरण दिखाई दी।

धर्मसुधार और प्रबोधन युग

धर्मसुधार ने, जो बाइबल के बोलचाल की भाषाओं में अनुवाद और छपाई से संभव हुआ, कलीसिया को यह अवसर दिया कि वह अपने सैद्धांतिक स्त्री-द्वेष से मन फिराए और नए सिरे से शुरुआत करे। इसके संस्थापक मार्टिन लूथर (Martin Luther) की आँखें न केवल पवित्रशास्त्र के सुसमाचार के लिए, बल्कि विवाह और यौन संबंध की भलाई के लिए भी खुलीं। ब्रह्मचर्य के तथाकथित आत्मिक मूल्य को कमज़ोर करते हुए और विवाह तथा यौन संबंध का उत्सव मनाते हुए, लूथर और कैल्विन (Calvin) ने कलीसिया की 1400 वर्षों की शिक्षा को उलट दिया, जिससे भूतपूर्व पुरोहितों और पास्टरों ने विवाह किया, और "पास्टर की पत्नी" आत्मिक गरिमा वाली एक नई बुलाहट बन गई। मसीही स्त्रियों को पत्नियों, माताओं और घर की अगुवों के रूप में नया सम्मान मिला। लूथर की पत्नी कैथरीना फ़ॉन बोरा (Katherine von Bora) ने उसके छह बच्चों का पालन-पोषण किया और "उस विशाल ऑगस्टीनी मठ में, जिसकी केवल पहली मंज़िल पर ही चालीस कमरे थे, खलिहान, मछली-तालाब, फलों के बाग़, बहुत से नौकरों, बच्चों, बीमार अतिथियों, किराये पर रहने वाले छात्रों और कलीसिया के अगुवों की देखरेख की।"[35]

इन सब उपलब्धियों के बावजूद, लूथर, कैल्विन और नॉक्स (Knox) की लगातार चलती स्त्री-विरोधी शिक्षाओं ने यह सुनिश्चित किया कि पितृसत्ता को कोई चुनौती न मिले। लूथर की सोच में हव्वा के पाप के कारण स्त्रियों की भूमिका अब भी अधीनस्थ ही थी। हर प्रोटेस्टेंट क्षेत्र ने विवाह-संबंधी एक अध्यादेश पारित किया जिसमें पत्नी की आज्ञाकारिता पर बल दिया गया।[36] इसके अलावा, लूथर ने स्त्रियों की बुलाहट को कसकर घर से बाँध दिया – न कलीसिया से, न व्यापक समाज से: "क्योंकि जैसे घोंघा अपना घर अपने साथ लिए फिरता है, वैसे ही पत्नी को घर पर रहना चाहिए और घर-गृहस्थी के कामकाज देखने चाहिए, ऐसी व्यक्ति के रूप में जिससे उन कामों को सँभालने की क्षमता छीन ली गई है जो बाहर के हैं और राज्य से संबंध रखते हैं।"[37]

"स्त्रियों के लिए प्रोटेस्टेंटवाद की विरासत गहराई से दुविधापूर्ण थी," Lyndal Roper लिखती है। "स्त्रीत्व में निहित लज्जा कुछ कम हुई, पर अधीनस्थता बनी रही और उन्हें घर तक सीमित करना और बढ़ गया। धर्मसुधार पुरुषों के साथ स्त्रियों की आत्मिक समानता की पुष्टि कर सकता था, पर इसके बजाय उसने एक 'नवीकृत पितृसत्तावाद' की शुरुआत की, जिसने विवाहित स्त्रियों को दृढ़ता से उनके पतियों के सिर होने (मुखियापन) के अधीन रख दिया।"[38] मरियम के स्थान पर, जिसे कैथोलिक स्त्रियाँ यीशु के चरणों में बैठने के कारण आदर देती थीं, लूथर रसोई में काम करने वाली मार्था की प्रशंसा करता प्रतीत होता था। लूथर और

35. Barbara MacHaffie, Her Story, पृ. 63.
36. Beth Allison Barr, The Making of Biblical Womanhood, अध्याय 4.
37. Susan C. Karant-Nunn और Merry E. Wiesner-Hanks, Luther on Women
38. Lyndal Roper, The Holy Household, पृ. 1–2, Barr में उद्धृत, अध्याय 4.

कैल्विन द्वारा मठों को बंद कर दिए जाने के बाद, इन स्थानों ने कभी कुछ स्त्रियों को स्वतंत्रता और सेवकाई के जो भी अवसर दिए थे, वे अब उपलब्ध नहीं रहे।

धर्मसुधार के बाद भी स्त्री की हीनता का विचार ज्यों का त्यों बना रहा: पंद्रहवीं से सत्रहवीं शताब्दी तक यूरोप और अमेरिका में फैले क्रूर डायन-शिकार इस बात का प्रमाण हैं कि कलीसिया ने स्त्रियों के प्रति अपनी हीन दृष्टि में सुधार नहीं किया। 1484 में पोप इनोसेंट अष्टम (Innocent VIII) ने डायनों पर मुकदमा चलाने का आदेश दिया, जिसके कारण आगे के दशकों में लगभग 200,000 झूठे आरोपों में फँसाई गई स्त्रियों को मृत्युदंड दिया गया। इस आदेश का समर्थन करने वाले धर्मविज्ञानियों ने एक ग्रंथ लिखा, Hammer of Witches ("डायनों का हथौड़ा"), यह समझाने के लिए कि स्त्रियाँ स्वयं को शैतान के हवाले करने की ओर इतनी प्रवृत्त क्यों होती हैं: वे आसानी से प्रभावित हो जाती हैं, उनकी ज़बान फिसलन भरी है, और आख़िरकार वे "एक टेढ़ी पसली" से बनाई गई हैं। हव्वा को सबसे पहले शैतान ने परीक्षा में डाला था, और क्योंकि यौन संबंध को मूल पाप का वाहक माना जाता था, यह कल्पना की गई कि हर डायन ने निर्दोषों को फुसलाकर पाप में डालने के लिए शैतान से नाता जोड़ा है। "इस दोष (टेढ़ी पसली) के कारण वह एक अपूर्ण पशु है, इसलिए वह सदा धोखा देती है ... स्त्रियाँ तरह-तरह के प्रतिशोध खोजती हैं, उन पर सोचती रहती हैं और उन्हें पूरा करती हैं, चाहे जादू-टोने से या किसी और उपाय से। इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि इस लिंग में इतनी बड़ी संख्या में डायनें पाई जाती हैं ... सारा जादू-टोना शारीरिक वासना से आता है, जो स्त्रियों में कभी तृप्त नहीं होती।"[39] इन मौतों में से केवल 6% स्पेन, इटली, पुर्तगाल और आयरलैंड जैसे कैथोलिक देशों में हुईं; इस प्रकार धर्मसुधार की संतान, जो अब भी दृढ़ता से स्त्री-द्वेषी थी, डायनों को जलाने में कैथोलिकों से आगे निकल गई – अकेले लूथर के जर्मनी में 40% मृत्युदंड हुए। स्विट्ज़रलैंड, इंग्लैंड और नीदरलैंड्स जैसे अन्य मुख्यतः प्रोटेस्टेंट देशों में 35% हुए।

कोई आशा करता कि जहाँ रिफ़ॉर्म्ड (Reformed) अगुवे कलीसिया में स्त्रियों का स्थान ऊँचा करने में असफल रहे, वहाँ प्रबोधन युग (Enlightenment) के विचारक व्यापक समाज में सफल हो जाते। परन्तु सब लोगों की सार्वभौमिक समानता का नया विचार रखते हुए भी प्रबोधन युग के बुद्धिजीवी अपनी स्त्री-विरोधी सोच से चिपके रहे।[40] ज़ाँ-ज़ाक रूसो (Jean-Jacques Rousseau) (1712–1778 ई.), जिसके समानता संबंधी विचारों ने आगे चलकर दासों की मुक्ति में योगदान दिया, स्त्रियों की दुर्दशा में कोई सहायता नहीं कर पाया: "स्त्रियों की पूरी शिक्षा पुरुषों को ध्यान में रखकर योजनाबद्ध की जानी चाहिए। पुरुषों को प्रसन्न करना, उनके लिए उपयोगी होना, उनका प्रेम और सम्मान जीतना ... यही हर युग में स्त्रियों के कर्तव्य हैं और यही उन्हें बचपन से सिखाया जाना चाहिए।" इसी प्रकार इमैनुएल कांट (Immanuel Kant) (1724–1804 ई.) के सार्वभौमिक अधिकारों और सामाजिक पदानुक्रमों के उन्मूलन संबंधी विचारों में स्त्रियाँ शामिल नहीं थीं। उसने स्पष्ट किया कि पति को "[अपनी पत्नी] पर अधिकार रखने का हक़ है, और पत्नी का अपने पति की आज्ञा मानने का कर्तव्य प्राकृतिक नियम की माँग भी है और नैतिक दायित्व भी।" यहाँ तक कि डेनी दिदरो (Denis Diderot) (1713–1778 ई.) के Encyclopédie ने, जो उस समय अपने प्रगतिशील विचारों के लिए जाना जाता था, स्त्रियों को "कमज़ोर, डरपोक, चालाक, दुष्ट, प्रतिशोधी,

39. H. Kramer और J. Sprenger, Malleus Maleficarum
40. प्रबोधन युग के विचारकों पर इस खंड के लिए मैं Alice Mathews, Gender Roles and the People of God, अध्याय 11 का आभारी हूँ।

सतही और धोखेबाज़" बताया – यानी मूलतः हीन, और अपने पुरुष समकक्षों की सेवा के लिए ही अस्तित्व में।[41]

इस अध्याय को लिखते हुए मेरा मन दुखी है। पूरे समय – जैसा यह पुस्तक दिखाएगी – कलीसिया अपने ही पवित्रशास्त्र में, ठीक वहीं, बराबरी देने वाली शक्ति की एक सोने की खान पर बैठी थी। अंततः, सदियों तक स्त्रियों को दबाए रखने के बाद, बाइबल के लैंगिक समानता देने वाले कुछ विचार व्यापक सांस्कृतिक चेतना तक पहुँचे हैं। फिर भी जब व्यापक संस्कृति इन परमेश्वर-प्रेरित विचारों के निहितार्थों को लागू करने लगी, तो कलीसिया के अधिकांश भाग ने पितृसत्तावाद को ऐसे पकड़े रखना चुना मानो उनका उद्धार उसी पर निर्भर हो – और विडंबना यह कि वह एक पुराने पड़ चुके, बाइबल-विरोधी सिद्धांत का अंतिम गढ़ बन गई।

स्त्रियों का उत्थान

जैसा कोई भी आधुनिक इतिहासकार प्रमाणित करेगा, पिछली दो शताब्दियों में संसार भर की स्त्रियों ने उस हीनता, अधीनस्थता और केवल घरेलू भूमिकाओं का विरोध किया है जो आरंभ से ही उनके भाग्य में रही हैं। यह प्रतिरोध धीमा पर स्थिर रहा है, और असफलताओं से रहित नहीं रहा। इसकी सफलता इस तथ्य से दिखती है कि आज समाज का अधिकांश भाग मानता है कि यौन शोषण, बलात्कार, स्त्रियों के विरुद्ध हिंसा, शिक्षा और काम में असमान अवसर, असमान वेतन, और लिंग के आधार पर भेदभाव करने वाले क़ानून ग़लत हैं।

यद्यपि ऐतिहासिक रूप से कलीसिया ने पवित्रशास्त्र के "स्वतंत्रता" के विचारों को व्यक्तिगत उद्धार तक सीमित रखा, पिछली शताब्दियों के धर्मवैज्ञानिक विकास ने इसे सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक स्वतंत्रता पर भी व्यापक रूप से लागू करना शुरू किया। बंधनों से मुक्ति के लिए परमेश्वर की चिन्ता की नई समझ से सुसज्जित होकर, बहुत से मसीही कुछ महान सामाजिक आंदोलनों में सबसे आगे रहे, जैसे लोकतंत्र, दास-प्रथा का उन्मूलन, मज़दूरों के अधिकार, सामाजिक कल्याण, नस्लीय समानता, सार्वभौमिक मताधिकार, और कार्यस्थल पर स्त्रियों की समानता। स्त्रियों को गरिमा देने में हुई प्रगति के एक नमूने के रूप में स्त्रियों के मतदान को लीजिए। सबसे पहली मताधिकार-आंदोलनकारी स्त्रियाँ (suffragettes) अधिकतर मसीही थीं। 1838 में पिटकेर्न द्वीपसमूह से पहले किसी भी लोकतांत्रिक देश ने स्त्रियों को मत देने नहीं दिया था; पर 2015 में जब सऊदी अरब ने भी अंततः स्त्रियों को नगरपालिका चुनावों में मतदान की अनुमति दे दी, तब से संसार का हर वह राष्ट्र जहाँ लोकतांत्रिक चुनाव होते हैं, स्त्रियों को मत देने देता है।

41. सौभाग्य से, स्त्रियों की बाद की मुक्ति के बीज बोए गए, यद्यपि वे बहुमत की आवाज़ के नीचे दबे रहे: मार्की द कोंदोर्से (Marquis de Condorcet) (1743–1794) ने एक पुस्तिका लिखी जिसमें सार्वजनिक जीवन में स्त्रियों के पूर्ण प्रवेश की वकालत की गई, जिसमें मत देने और सार्वजनिक पद धारण करने का अधिकार भी शामिल था। और ओलंप द गूज़ (Olympe de Gouges) (1748–1793) ने एक तथाकथित सार्वभौमिक समानतावादी व्यवस्था के भीतर लैंगिक पदानुक्रम की असंगति की ओर संकेत किया: "स्वतंत्रता और न्याय इसमें हैं कि जो कुछ दूसरों का है, वह सब उन्हें लौटा दिया जाए; इस प्रकार स्त्रियों के प्राकृतिक अधिकारों के प्रयोग पर एकमात्र सीमाएँ पुरुषों का सतत अत्याचार हैं; इन सीमाओं को प्रकृति और विवेक के नियमों द्वारा सुधारा जाना है।"

निस्संदेह, जहाँ इस क्रांति के मूल बीज स्त्रियों के प्रति यीशु के व्यवहार और गलातियों 3:28 में पौलुस के मानवता के मैग्ना कार्टा (Magna Carta for Humanity) तक जाते हैं, वहीं स्त्रियों की क्रमिक मुक्ति में और भी बहुत से कारकों की भूमिका रही। 1800 के दशक में स्त्रियों ने, जो अधिकतर मसीही थीं, हर प्रकार की सामाजिक बुराइयों से निपटने के लिए तरह-तरह के सामाजिक सक्रियता वाले संगठन बनाने और उनकी अगुवाई करने शुरू किए – जिसका रोमांच इससे पहले केवल स्त्रियों के मठों और धार्मिक संघों में ही अनुभव किया जाता था। स्त्रियों ने बच्चों को परमेश्वर के बारे में सिखाने और पढ़ना सिखाने के लिए संडे स्कूल शुरू किए। उन्होंने अनाथ बच्चों और विधवाओं की देखभाल की। उन्होंने दूसरी स्त्रियों को पढ़ना, लिखना, गणित और धर्म के बारे में सिखाया। उन्होंने शांति, मद्य-संयम, जेल-सुधार और वेश्यालयों को बंद कराने के लिए आवाज़ उठाई। इस सब में कुछ और गहरा घटित हो रहा था: स्त्रियाँ संसार को बदलने की अपनी शक्ति को पहचान रही थीं।

इसलिए उन्होंने स्त्रियों के अधिकारों के लिए भी आवाज़ उठानी शुरू की – एक ऐसा आंदोलन जिसमें हर पंथ, संस्कृति और नस्ल की स्त्रियाँ एक साथ जुड़ीं और यह प्रस्ताव रखा कि स्त्रियों के लिए अपने समाजों में दोयम दर्जे की नागरिक होने से आगे बढ़ने हेतु आर्थिक, मनोवैज्ञानिक और सामाजिक स्वतंत्रता आवश्यक है। उन्होंने यह बदलने का प्रयास किया कि उनकी संस्कृतियों में स्त्रियों को कैसे देखा जाता है, और ऐसा करके समाज में स्त्रियों की सामाजिक-आर्थिक और राजनीतिक भूमिकाओं को नए सिरे से परिभाषित करने का। इस आंदोलन के आरंभिक दिनों में बहुत से मसीही अगुवे और विद्वान सबसे आगे थे – इतना कि यह कहा जा सकता है कि "1960 के दशक में जो स्त्री-मुक्ति आंदोलन खिला, उसकी जड़ें गहराई से सुसमाचारवादी (इवैन्जेलिकल) और बाइबल-आधारित थीं।"[42]

विशेष रूप से 1960 और 1970 के दशकों में, अब तक की सबसे बड़ी सामाजिक क्रांतियों में से एक में, आख़िरकार स्त्रियों की बारी आई कि वे अपनी सबसे बड़ी स्वतंत्रताएँ प्राप्त करें। अन्य कारकों ने भी उनके उद्देश्य में सहायता की।

आधुनिक औद्योगीकरण के उदय का अर्थ था कि स्त्रियों को घर के बाहर काम मिलने लगा। यद्यपि सबसे अच्छी नौकरियाँ और वेतन पुरुषों के लिए आरक्षित थे, फिर भी स्त्रियाँ घर से बाहर के काम का स्वाद चखने लगीं। द्वितीय विश्वयुद्ध में स्त्रियों के झुंड के झुंड, मजबूरी में, अपने अनुपस्थित, युद्ध में लड़ रहे पुरुषों के कामों में झोंक दिए गए: उन्होंने कंपनियाँ सँभालीं, हुनर सीखे, कारखाने चलाए, ट्रक चलाए और हथियार बनाए। युद्ध के बाद काम का स्वरूप भी बदलने लगा। सफ़ेदपोश (white-collar) कामों का क्षेत्र बढ़ा, क्योंकि बाहुबल से अधिक बुद्धि महत्वपूर्ण होती गई। औसतन स्त्रियों को अधिक शारीरिक मेहनत वाले कामों में कठिनाई हुई हो, पर बौद्धिक काम वे निश्चय ही कर सकती थीं। आज विश्वविद्यालयों से पुरुषों की तुलना में अधिक स्त्रियाँ स्नातक होती हैं – यही इसका प्रमाण है।

42. Kevin Giles, What the Bible Actually Teaches on Women, पृ. 39: "यह एक ऐसा आंदोलन था जिसकी अगुवाई उन सुसमाचारवादियों ने की जो मानते थे कि पवित्रशास्त्र मसीह में पुरुषों और स्त्रियों की समानता स्पष्ट रूप से सिखाता है। वे दास-प्रथा और स्त्रियों के दमन – दोनों के विरोधी थे। 'पहली लहर की नारीवादियों' के अगुवों में सुसमाचारवादी William और Catherine Booth – उद्धार सेना (Salvation Army) के संस्थापक –, Sojourner Truth, Amanda Berry Smith, Katherine Bushnell, A. J. Gordon और Fredrik Franson थे।"

साथ ही, 1950 के दशक में गर्भनिरोधक गोली के आविष्कार ने स्त्रियों के हाथ में यह नियंत्रण दिया कि वे कब और कितने बच्चे पैदा करें – कम बच्चों के साथ उनके पास अधिक समय था। 1960 के दशक तक मुक्ति आंदोलन और सार्वजनिक विरोध-प्रदर्शन पूरे ग्रह पर फैल रहे थे। नागरिक अधिकार आंदोलनों ने बड़ी विजयें प्राप्त कीं, और अपने पीछे वह आदर्श समय ले आए जिसमें स्त्री-आंदोलन भी फल-फूल सके। 1860 के दशक में, जब दास-प्रथा समाप्त की जा रही थी, स्त्रियों ने, जो अधिकतर सुसमाचारवादी थीं, अपनी अधीनस्थ स्थिति को चुनौती देनी शुरू की। पहले उन्हें गंभीरता से नहीं लिया गया। समाज को बदल देने वाले विचारों को जड़ पकड़ने में प्रायः समय लगता है। पर अंततः, एक शताब्दी बाद, जब श्वेत-प्रधान देशों में गैर-श्वेत नस्लों के लिए नागरिक अधिकार जीते जा रहे थे, स्त्रियों ने उस सामाजिक गति का उपयोग करके अपनी हीन स्थिति को सफलतापूर्वक उखाड़ फेंका। हम पर उन साहसी स्त्रियों का बड़ा ऋण है जो हमसे पहले चली गई हैं। मुख्यतः उन्हीं के कारण आज स्त्रियों को समान दर्जा प्राप्त है।

यह परिवर्तन कितना गहरा है, इसे बढ़ा-चढ़ाकर कहना कठिन है। केवल कुछ दशकों में स्त्रियों की हीनता के विषय में हज़ारों वर्ष पुरानी, बिना प्रश्न के स्वीकार की गई मान्यताओं ने एक ऐसे संसार के लिए जगह छोड़ दी है जिसमें स्त्री न्यायाधीश, सॉफ़्टवेयर डेवलपर, शल्य-चिकित्सक, राजनेता, राष्ट्रपति, प्रोफ़ेसर, सेनापति और सीईओ सब बिलकुल सामान्य लगते हैं।

स्त्रियों के दमन और उनकी मुक्ति – दोनों में अपनी ऐतिहासिक भागीदारी को देखते हुए, कलीसिया अब इन भूकंप जैसे सामाजिक परिवर्तनों का कैसे उत्तर देगी?

मसीही जगत का स्त्री-मुक्ति से टकराव

कलीसिया की ऐतिहासिक स्थिति यह रही थी कि स्त्रियाँ कलीसिया, घर या काम में अगुवाई नहीं कर सकतीं, क्योंकि वे हीन हैं। 20वीं और 21वीं शताब्दी से पहले की हर शताब्दी में पितृसत्तात्मक संस्कृति इस विषय में कलीसिया से सहमत रही थी। अब एक नई संस्कृति आ गई थी जिसने इन मान्यताओं को चुनौती दी। कलीसिया ने पहले कैसा उत्तर दिया, यह इतिहास है – यद्यपि बहुत हाल का इतिहास – जिसके कई प्रमुख विचार-अगुवे और प्रभावशाली व्यक्ति आज भी जीवित हैं और उतने ही मुखर हैं।

दुःख की बात है कि स्त्री-मुक्ति आंदोलन की सफलता पर कलीसिया की आरंभिक प्रतिक्रिया अधिकतर प्रतिक्रियावादी रही। स्त्री की हीनता के विचार को पकड़े रहकर सबसे बड़ा कलीसियाई समूह – रोमन कैथोलिक – और साथ ही रूढ़िवादी सुसमाचारवादी और रिफ़ॉर्म्ड कलीसियाएँ परिवर्तन की सबसे अधिक विरोधी रहीं। स्त्रियों को न दबाए जाने और उनकी समानता की सबसे आरंभिक पुकारों के उत्तर में मसीहियों ने John Rice जैसे लेखकों के दिए उत्तर पढ़े और स्वीकार किए। Bobbed Hair, Bossy Wives, and Women Preachers (“कटे बाल, हुक्म चलाने वाली पत्नियाँ और स्त्री प्रचारक”, 1942) में उसने यह दावा करके स्त्रियों को शांत करने का प्रयास किया कि वह “परमेश्वर के वचन से उनके प्रश्नों का निपटारा” कर रहा है:

पुरुष परमेश्वर के स्वरूप में बनाया गया है। परमेश्वर पुरुषवाचक परमेश्वर है। बाइबल में हर जगह परमेश्वर के लिए पुल्लिंग सर्वनाम का प्रयोग होता है ... परमेश्वर स्त्रैण नहीं है। और पुरुष परमेश्वर के स्वरूप में बनाया गया है। दूसरी ओर, स्त्री पुरुष के स्वरूप में है और उसकी संगिनी है ... धन्य है वह स्त्री जो यह याद रखती है; उसकी महिमा यह है कि वह पुरुष की सहायक बने, और अपने पति या अपने पिता के अधीन रहे।[43]

कम लोकप्रिय पर अधिक विद्वत्तापूर्ण रूप में, 1957 तक भी, सुसमाचारवादी Donald Guthrie ने 1 तीमुथियुस पर अपनी टिंडेल (Tyndale) टीका में यह मत दिया: "पुरुष की सृष्टि का पहले होना उसे स्त्रियों से श्रेष्ठता के स्थान पर रखता है।"[44] प्रसिद्ध बाइबल विद्वान Charles Ryrie 1958 में ऐसे ही निष्कर्ष पर पहुँचा: "स्त्रियों के विषय में परमेश्वर के मन का ... अर्थ होगा घर में अधीनस्थता और आदर, और कलीसिया में चुप्पी और सहायता।"[45]

यद्यपि वे इन आरंभिक "धर्मवैज्ञानिक" बचावों से लैस थे, समाज में हो रहे परिवर्तनों के प्रति मसीहियों के प्रतिरोध का बड़ा भाग इस गलत धारणा से ऊर्जा पा रहा था कि "मसीही परिवार" पर हमला हो रहा है। यद्यपि बाद की नारीवादी शिक्षाएँ शायद मसीही परिवार के लिए वास्तविक ख़तरा रही हों, वास्तव में स्त्री-मुक्ति आंदोलन अपने आरंभिक रूप में केवल एक सामाजिक-धार्मिक परिघटना के लिए ख़तरा था, जिसमें औद्योगिक क्रांति के कारण पुरुष दिन भर घर के बाहर काम करते थे, जबकि पत्नियों से अपेक्षा थी कि वे घर पर रहकर घर और बच्चों की देखभाल करें। उस समय मसीही यह भूल गए प्रतीत होते थे कि पहले की मसीही संस्कृतियों में पिता भी अधिकतर घर पर ही रहता था: घर-परिवार अपने आप में एक आर्थिक इकाई था, जिसमें पूरा परिवार श्रमशक्ति था, जो पशुओं और खेतों की देखभाल करता था, और कताई, बुनाई और बढ़ईगीरी जैसे छोटे पैमाने के उद्योग करता था।

साथ ही, जिन नए "समानतावादी" विवाहों का समाज समर्थन कर रहा था – जिन्हें आज पश्चिम में स्वयं को पूरकतावादी कहने वाले मसीही भी आम तौर पर जीते हैं – वे उस समय "मसीही" विवाह को उलट देने जैसे लगते थे, क्योंकि लोग मानते थे कि विवाह के विषय में बाइबल की मुख्य शिक्षा अधिकार–अधीनता है।

एक सहमति, और एक दोराहा

पूरकतावादी विद्वान Daniel Doriani कहता है कि 1960 के दशक तक धर्मविज्ञानी स्त्री की "सत्तामूलक हीनता" (ontological inferiority) मानकर चलते थे।[46] इस समय तक धर्मविज्ञानी, पादरी और बाकी

43. John Rice, Bobbed Hair, Bossy Wives, and Women Preachers, पृ. 68.
44. Kevin Giles, What the Bible Actually Teaches on Women, पृ. 175.
45. Charles Ryrie, The Place of Women in the Church, पृ. 146. मुख्य पाठों की समीक्षा करते हुए उसने बिना किसी अपवाद के सबसे रूढ़िवादी व्याख्याएँ चुनीं। उदाहरण के लिए, 1 कुरिन्थियों के अपने अध्ययन में – जहाँ अध्याय 11 में स्त्रियाँ भविष्यद्वाणी और प्रार्थना करती दिखाई गई हैं, जबकि अध्याय 14 में उन्हें चुप रहने की आज्ञा दी गई है – उसने तर्क दिया कि चुप्पी ही नियम है, यद्यपि असाधारण परिस्थितियों में स्त्रियाँ पुरुषों के सामने कुछ कह या प्रार्थना कर सकती हैं। फिर भी, उसके पक्ष में यह कहना होगा कि उसने एक नई शिक्षा को शब्द देना शुरू किया, जिसे कलीसिया शीघ्र ही स्वीकार करने वाली थी। स्त्रियों के प्रति यीशु के दृष्टिकोण वाले अपने अध्याय में उसने बताया कि यीशु की दृष्टि में स्त्रियाँ आत्मिक और बौद्धिक रूप से सक्षम थीं, और सेवा करने में भी समर्थ थीं। उन पहले धर्मविज्ञानियों में से एक होने के नाते जिन्होंने स्वीकार किया कि पुरुष और स्त्री आत्मिक विशेषाधिकारों में और विवाह में "समान" हैं, उसने तुरंत यह शर्त जोड़ दी कि दोनों को अलग-अलग क्षेत्रों में काम करना है।
46. Kevin Giles, What the Bible Actually Teaches on Women, पृ. 176.

सब लोग सामान्यतः स्त्रियों को "हीन" और पुरुषों को "श्रेष्ठ" समझते थे। उनका तर्क था कि बाइबल भी यही कहती है।

पर फिर कलीसिया के सामने एक नया प्रश्न आ खड़ा हुआ: "समाज में स्त्रियों के इस अभूतपूर्व उत्थान के विषय में परमेश्वर क्या कहते हैं – एक ऐसे सामाजिक आंदोलन के विषय में जिसने पुरुषों के साथ स्त्रियों की पूर्ण समानता का दावा किया है?" कुछ समय के लिए कलीसिया ने अपने ऐतिहासिक सिद्धांत के चारों ओर मोर्चाबंदी कर ली। फिर भी लैंगिक समानता के प्रश्न पर संस्कृति के साथ आरंभिक टकराव के बावजूद, 1960 से 1990 के दशकों में कलीसिया के बड़े भाग पर एक अद्भुत अनुभूति छा गई: "रुको, हमसे गलती हुई ... स्त्रियाँ पुरुषों के समान हैं।"

यह आज भी मसीही धर्मविज्ञान के इतिहास के सबसे नाटकीय परिवर्तनों में से एक है। सदियों से कलीसिया पितृसत्तात्मक और स्त्री-द्वेषी संस्कृतियों की प्रतिध्वनि करती आई थी, और उन दृष्टिकोणों और विचारों को बाइबल के पाठ में पढ़ती रही थी। पर अब, एक बड़े सांस्कृतिक परिवर्तन और अपने बीच के अग्रणी, दृढ़ मसीहियों के कारण, कलीसिया बाइबल के पाठ की ओर लौटी और उसने पाया कि बाइबल में वास्तव में बहुत कुछ है जो स्त्रियों की मूलभूत समानता की पुष्टि करता है।

Tim Keller, जैसा मैंने पहले उद्धृत किया, कहता है: "प्रायः ... किसी नई संस्कृति के साथ संपर्क हमें बाइबल में सिखाई गई बहुत सी बातें दिखाता है – ऐसी बातें जिन्हें हमने या तो पूरी तरह अनदेखा कर दिया था या महत्वहीन समझा था, यहाँ तक कि शायद वे तरीके भी जिनसे हमने अपनी सांस्कृतिक धारणाओं के चश्मे से बाइबल को गलत पढ़ा।"[47] और इस प्रकार, अधिक ध्यान से पढ़ने पर पता चला कि बाइबल यह बिलकुल नहीं सिखाती कि स्त्रियाँ कम विवेकशील हैं, या पाप के प्रति अधिक कमज़ोर हैं, या अगुवाई करने में असमर्थ हैं, या घर के बाहर काम नहीं कर सकतीं। यद्यपि स्त्री की समानता के बीज पवित्रशास्त्र में थे, और कलीसिया के इतिहास में केवल क्षण भर के लिए सतह पर आए, कलीसिया ने हाल ही में जाकर अंततः और औपचारिक रूप से, व्यापक रूप में और गर्व के साथ, इस समानता को कलीसियाई सिद्धांत के रूप में अपनाना शुरू किया। जो कोई इसे आरंभ-बिंदु मानता था, वह अब स्त्रियों के विषय में मसीही धर्मविज्ञान के एक बिलकुल नए दिन का भाग था – कलीसिया के हज़ारों वर्ष पुराने धर्मविज्ञान से एक विच्छेद।

यदि आपको यह पढ़कर आश्चर्य हो कि कलीसिया अपनी शुरुआत के हज़ारों वर्ष बाद इस विषय में नई स्पष्टता पर पहुँची कि बाइबल क्या सिखाती है, तो निश्चिंत रहिए, ऐसा सदा से होता आया है। जब संस्कृति मानती थी कि पृथ्वी चपटी है, तब धर्मविज्ञानी बाइबल से यही सिखाते थे। जब लोग सोचते थे कि सूर्य पृथ्वी के चारों ओर घूमता है, तब बाइबल के पाठ भी यही सिद्ध करते थे। जब तक वैज्ञानिकों ने पृथ्वी की आयु निर्धारित करना नहीं सीखा, लोग मानते थे कि परमेश्वर ने इसे केवल कुछ हज़ार वर्ष पहले सात शाब्दिक दिनों में बनाया। इसी प्रकार, समाज द्वारा दास-प्रथा के उन्मूलन और यहूदी-विरोध पर विजय में यह भी शामिल रहा कि कलीसिया ने बाइबल के पाठों को एक नए (और बेहतर) ढंग से पढ़ा। संस्कृति में नई खोजें इस पर नया प्रकाश डाल सकती हैं कि बाइबल में वास्तव में क्या है (और क्या नहीं है)। यही बात व्यापक समाज की

47. Timothy Keller, Center Church, अध्याय 8.

इस खोज के विषय में कही जा सकती है कि स्त्रियाँ मूलतः पुरुषों के समान हैं। और देखिए, बाइबल सचमुच सृष्टि में और मसीह में दोनों लिंगों की मूलभूत समानता की बात करती थी! यह सदा से वहीं थी।

कैथोलिक कलीसिया ने भी, यद्यपि आरंभ में वह स्त्रियों की समानता के विरुद्ध एकजुट हुई थी, अपना धर्मविज्ञान बदल दिया। 1987 में पोप जॉन पॉल द्वितीय (John Paul II) ने उस समय के प्रमुख कैथोलिक धर्मविज्ञानियों के विचारों को स्वर देते हुए कलीसिया के लिए एक बाध्यकारी शिक्षा जारी की[48], जिसने सदियों से माने जा रहे इस दृष्टिकोण को अस्वीकार किया कि सृष्टि में परमेश्वर ने स्त्रियों को पुरुषों के अधीन किया, और इसके बजाय उनकी "मूलभूत समानता" पर बल दिया।

और सुसमाचारवादी कलीसियाएँ? कैथोलिक उदाहरण के समानांतर, कुछ साहसी लोग खुलकर स्त्री-मुक्ति के समर्थन में आगे आए, और तर्क दिया कि कलीसिया, घर और समाज में पुरुषों और स्त्रियों की पूर्ण समानता और परस्परता ही वह है जिसकी बाइबल ने सदा कल्पना की है। पर – और इसी कारण यह पुस्तक लिखी जानी आवश्यक है – उनका विरोध दूसरे सुसमाचारवादियों ने किया, जिन्होंने स्त्री की हीनता के विषय में कलीसिया की ऐतिहासिक शिक्षा को अस्वीकार करते हुए भी स्त्री की अधीनस्थता के किसी न किसी रूप को बनाए रखने का प्रयास किया।

इसके बाद इन दो समूहों – पदानुक्रमवादियों (hierarchists) और परस्परतावादियों (mutualists) – के बीच दशकों तक बहस चली; दोनों समान रूप से पवित्रशास्त्र के प्रति समर्पित थे, जैसा कि दोनों पक्षों के पुरुष और स्त्री लेखकों द्वारा एक-दूसरे के उत्तर में लिखी गई पुस्तकों की भरमार से प्रमाणित होता है। अपने सिद्धांतों से स्त्री की हीनता के विचार को निकाल फेंकने पर सहमत होने के बाद, ये दोनों समूह दो अलग रास्तों पर चल पड़े, इस प्रकार कि आज कुछ संप्रदाय एक दृष्टिकोण को मानते हैं जबकि दूसरे दूसरा दृष्टिकोण अपनाते हैं। मुख्य बात यह है: दोनों दृष्टिकोण कलीसिया के इतिहास में बिलकुल नए थे। पितृसत्तावादियों ने पहले के सिद्धांत "स्त्रियाँ हीन हैं और इसलिए पुरुषों के अधीनस्थ हैं" को बदलकर "स्त्रियाँ समान हैं, फिर भी पुरुषों के अधीनस्थ हैं" कर दिया, जबकि परस्परतावादियों ने इसके बजाय "स्त्रियाँ समान हैं और इसलिए पुरुषों के अधीनस्थ नहीं हैं" को चुना।

यह बातचीत, कभी गरमागरम और कभी सौहार्दपूर्ण, 1987 तक चलती रही। फिर अमेरिका में कुछ ऐसा हुआ जिसने, मेरे विचार में, अनुचित रूप से इस बातचीत को समय से पहले समाप्त कर दिया: डैनवर्स वक्तव्य (Danvers Statement) तैयार किया गया, और उसके साथ "पूरकतावाद" (complementarianism) नाम की नई शिक्षा आई। यह शिक्षा इतनी लोकप्रिय हो गई है कि बहुत से सुसमाचारवादियों ने इसे बहस का विजेता बताया है। निस्संदेह, हो सकता है कि यह दृष्टिकोण इसलिए जीता हो क्योंकि यह सही है। पर यदि हम कलीसिया के इतिहास के विषय में कुछ भी जानते हैं, तो यह भी संभव है कि कोई और कारणों से जीत जाए। मुझे पूरकतावाद की "विजय" के विषय में अपनी समझ आपके साथ बाँटने दीजिए।

48. John Paul II, Mulieris Dignitatem: On the Dignity and Vocation of Women.



3

पूरकतावाद का उदय (और उसकी खामियाँ)

"हमें विश्वास है कि [पुरुष के अधिकार और स्त्री की अधीनता] का इनकार या उनकी उपेक्षा हमारे परिवारों, हमारी कलीसियाओं और पूरी संस्कृति में अधिकाधिक विनाशकारी परिणामों की ओर ले जाएगी।" John Piper[49]

क्या आपने उस माँ की कहानी सुनी है जो रोटी का आटा गूँधती, उसे आकार देती, और फिर ओवन में रखने से पहले उसके दोनों सिरों के टुकड़े काटकर फेंक देती थी? जब उसके बच्चों ने पूछा कि ऐसा क्यों, तो उसने समझाया कि उसकी माँ ऐसा ही करती थी, और उससे पहले उसकी माँ की माँ भी। "हम रोटी ऐसे ही बनाते हैं – यह हमारी परंपरा है।" माँ के उत्तर से पूरी तरह संतुष्ट न होकर बच्चों ने फिर अपनी नानी से कारण पूछा। नानी ने अपनी स्मृति टटोली और याद किया कि उसकी अपनी नानी रोटी एक छोटे से साँचे में बनाती थी – इतना छोटा कि आटे को उसमें समाने के लिए उसे दोनों सिरों के टुकड़े काटने पड़ते थे। बच्चे दौड़कर अपनी माँ के पास लौटे: "माँ, अब जब हम वह छोटा साँचा इस्तेमाल ही नहीं करते, तो हमें सिरों के टुकड़े काटने की ज़रूरत नहीं है!"[50]

यह छोटी सी कहानी मुझे पूरकतावाद और परस्परता के बीच के अंतर की याद दिलाती है। पहला "कलीसिया के इतिहास से तर्क" को पकड़े रहता है और कहता है कि स्त्री की अधीनस्थता परमेश्वर की अच्छी योजना है, क्योंकि आख़िरकार "कलीसिया ने सदा यही सिखाया है और ऐसा ही किया है।" दूसरा उत्तर देता है कि स्त्रियों को अधीनस्थ रखने में अपने आप में कोई समझदारी या भलाई नहीं है, क्योंकि जिन ऐतिहासिक कारणों से कलीसिया ने यह सिद्धांत अपनाया था, वे अब लागू नहीं होते। उन हज़ारों वर्षों में, जब समाज और कलीसिया में स्त्री की हीनता को बिना प्रश्न के मान लिया जाता था, स्त्री की अधीनस्थता शायद समझ में आती रही हो। पर जिस संसार में हम अब रहते हैं, और ऐसी कलीसिया में जो अब स्त्री की हीनता के विचार को नहीं मानती, इसका कोई अर्थ नहीं बनता।

फिर भी, जब मैंने कलीसियाओं को पूरकतावाद का बचाव करते देखा, तो मैंने ध्यान दिया कि कितनी ही कलीसियाएँ "कलीसिया के इतिहास" के इस विचार की दुहाई देती हैं। उनका तर्क है कि क्योंकि यही कलीसिया की ऐतिहासिक शिक्षा है, इसलिए इससे हटना ख़तरनाक और फूट डालने वाला होगा। पर

49. The Danvers Statement, www.bit.ly/2Y6Xhgg
50. इस सुंदर दृष्टांत के लिए William Witt, "Icons of Christ", अध्याय 3 का आभार।

अधिकांश लोग यह नहीं समझते कि 1960 के दशक तक कलीसिया की ऐतिहासिक शिक्षा यह थी कि स्त्रियाँ पुरुषों के अधीनस्थ हैं क्योंकि वे पुरुषों से हीन हैं।

स्त्री-मुक्ति आंदोलन की बाद की सफलता एक बड़ा उत्प्रेरक बनी, जिसने कलीसिया को अपने इतिहास में पहली बार अपने पवित्रशास्त्र की ओर लौटने और स्त्री की हीनता के विचार पर प्रश्न उठाने में सहायता की। ऐसा करते हुए उसने ठीक ही अपना मन बदल लिया। उस क्षण कलीसिया ने अपना साँचा फेंक दिया! तब से अधिकांश कलीसियाएँ लिंग और अगुवाई के अपने सिद्धांत को एक ही आरंभिक धारणा के साथ पकाती हैं: कि स्त्रियाँ पुरुषों के समान हैं, उनसे हीन नहीं। ऐसा करके इन कलीसियाओं ने इस विषय पर एक बिलकुल नई शिक्षा अपना ली है – जो 50 या 60 वर्ष से अधिक पुरानी नहीं है।

फिर धर्मविज्ञानियों ने, जिनमें से बहुत से आज भी जीवित हैं, दो प्रतिस्पर्धी संशोधनवादी सिद्धांत गढ़े, और दोनों अब पुरुषों और स्त्रियों की अंतर्निहित समानता को मानकर चलते हैं। पहला, जिसे बाद में पूरकतावाद कहा गया, पितृसत्ता का एक संशोधित रूप है। यह स्त्री की अधीनस्थता को बनाए रखना चुनता है, पर ऐसा करने के वास्तविक ऐतिहासिक कारण को अस्वीकार करता है। इसके बजाय इसके संस्थापकों ने अपने दृष्टिकोण के समर्थन में पवित्रशास्त्र से नए तर्क ढूँढ़ लिए हैं। दूसरी स्थिति, जिसे आम तौर पर समानतावाद कहा जाता है, पर जिसे मैं परस्परता कहना पसंद करता हूँ, लैंगिक पदानुक्रम को पूरी तरह त्याग देती है। अब जब स्त्री की हीनता का विचार व्यापक रूप से अस्वीकार हो चुका था, इसके समर्थकों का तर्क था कि स्त्री की अधीनस्थता के विचार का भी अब कोई विश्वसनीय आधार नहीं रहा।

यहाँ विभिन्न दृष्टिकोणों का एक चित्रात्मक विवरण है:

	स्त्री की हीनता?	स्त्री की अधीनस्थता?
ऐतिहासिक पदानुक्रमवाद (100–1960 के दशक)	हाँ	हाँ, क्योंकि स्त्रियाँ हीन हैं
पूरकतावाद (1960 के दशक से)	नहीं	हाँ, नए कारणों से
परस्परता (1960 के दशक से)	नहीं	नहीं

इस अध्याय में मैं उस संशोधित लैंगिक पदानुक्रम के उदय (और उसकी खामियों) की पड़ताल करूँगा जो 1970 के दशक में गढ़ा गया, 1980 के दशक में अमेरिका में पूरकतावाद के रूप में प्रस्तुत किया गया, और जो संसार भर की इतनी सारी कलीसियाओं और संप्रदायों पर हावी हो गया है।

अफ़्रीका के निचले छोर पर रहने वाले व्यक्ति के रूप में मैं प्रमाणित कर सकता हूँ कि जब अमेरिका छींकता है, तो हम बाकी लोगों को ज़ुकाम हो जाता है। यह उसकी राजनीति और अर्थव्यवस्था के विषय में सच है, पर उसके सिद्धांतों के विषय में भी। वहाँ मसीहियों की भारी संख्या, उनके पास उपलब्ध संसाधनों, और मीडिया तथा इंटरनेट पर उनके प्रभुत्व के कारण, अमेरिका में जन्मे धर्मविज्ञान बाकी संसार में तेज़ी से पैर जमा लेते हैं। पवित्रशास्त्र के अधिकार के प्रति उसकी प्रतिबद्धता के कारण अधिकतर यह अच्छी बात है, पर कभी-कभी कुछ अधिक जोखिम भरी चीज़ भी निर्यात हो जाती है। उसके समृद्धि धर्मविज्ञान (Prosperity Theology) पर विचार कीजिए: मेरे महाद्वीप में बहुत सी कलीसियाएँ मानती हैं कि धन और स्वास्थ्य विश्वास के द्वारा, और "परमेश्वर के जन" को "आर्थिक बीज" बोकर, अपने नाम किए जा सकते हैं। परिणाम:

कुछ बहुत धनी पास्टर अफ़्रीका के कुछ सबसे गरीब समुदायों में कलीसियाओं की अगुवाई करते हैं। इसी तरह अमेरिका ने अपने पूरकतावाद के धर्मविज्ञान का भी प्रभावी ढंग से निर्यात किया है। समृद्धि धर्मविज्ञान तब उभरा जब "कलीसिया की वृद्धि" के पीछे लगे बाइबल शिक्षकों ने मसीही विश्वास का भौतिकवाद से विवाह कराने का प्रयास किया। पूरकतावादी, अपनी बारी में, तब उभरे जब "कलीसिया की शुद्धता" के पीछे लगे बाइबल शिक्षकों ने मसीही विश्वास का परोपकारी पितृसत्ता से विवाह कराने का प्रयास किया। पहले का बाइबल से खंडन करना काफ़ी आसान है; दूसरा बाइबल के तर्कों के एक परिष्कृत जाल से जुड़ा हुआ है – इसीलिए यह पुस्तक इतनी लंबी है।

इन दोनों धर्मविज्ञानों में यह बात समान है कि वे अपेक्षाकृत नए सिद्धांत हैं। पूरकतावाद एक सामाजिक-धार्मिक आंदोलन है, जिसे पिछली शताब्दी के अंत में अमेरिका में John Piper, Wayne Grudem और दूसरों ने शुरू किया, और जो चुने हुए पवित्रशास्त्र-वचनों को एक विशेष ढंग से पिरोने का समर्थन करता है। यह स्त्री की हीनता की ऐतिहासिक शिक्षा को अस्वीकार करता है, फिर भी विशेषकर घर और कलीसिया में पुरुष के मुखियापन और स्त्री की अधीनता को बनाए रखने के नए कारण ढूँढ़ लेता है। इसके शब्द-शिल्पियों ने लैंगिक पदानुक्रम का ऐसा पुनर्निर्माण किया है कि बहुत कम पूरकतावादी यह समझ पाते हैं कि उनके विश्वासों का सार वास्तव में यही है। पर निष्पक्ष रहें तो, इसके सभी समर्थक पूरकतावाद को आधुनिक कानों के लिए स्वीकार्य बनाने के प्रति एक समान प्रतिबद्ध नहीं हैं: उदाहरण के लिए, Russell Moore, जो पहले Southern Baptist Convention (दक्षिणी बैपटिस्ट सम्मेलन) के Ethics and Religious Liberty Commission के अध्यक्ष था, पूरकतावाद के बजाय पितृसत्ता शब्द को पसंद करता है।[51]

पूरकतावाद के रचयिता

हर सिद्धांत की तरह पितृसत्ता के इस संशोधित रूप के भी कुछ निश्चित जनक हैं। मूल रूप से, कुछ पवित्रशास्त्र-वचनों को एक साथ पिरोने का पूरकतावाद का यह विशिष्ट ढंग George Knight III ने अपनी 1977 की छोटी पुस्तक The New Testament Teaching on the Role Relationship of Men and Women में गढ़ा। इसमें उसने स्त्री की हीनता के विषय में कलीसिया के ऐतिहासिक दृष्टिकोण को त्याग दिया और "व्यक्ति के रूप में समान, भूमिकाओं में भिन्न" ("equal but different roles") वाक्यांश को चुना।

Knight ने कहा कि सृष्टि में परमेश्वर ने हर लिंग को भिन्न और स्थायी रूप से बाध्यकारी "भूमिकाएँ" सौंपीं। उसने स्वीकार किया कि गलातियों 3:28 मसीह में दोनों लिंगों की समानता की बात करता है, पर ज़ोर दिया कि समाज और कलीसिया में लैंगिक पदानुक्रमों के लिए इसके कोई सामाजिक निहितार्थ नहीं हैं। इस विषय पर उसने यीशु के बारे में या यीशु की कोई भी शिक्षा छोड़ दी। यह तर्क देने के बाद कि अधीनस्थता पतन से पहले ही विद्यमान थी, उसने तर्क दिया कि तीन पाठ (1 तीमुथियुस 2:11-14; 1 कुरिन्थियों 11:3; और 1

51. देखें www.bit.ly/2ZUrOPf

कुरिन्थियों 14:33-35) दिखाते हैं कि पौलुस कलीसियाओं में उस बात का समर्थन करता था जिसे Knight ने "सृष्टि की व्यवस्था" कहा।

उसने तर्क दिया कि 1 कुरिन्थियों 11:3 में पौलुस का यह कहना कि "स्त्री का सिर पुरुष है", पुरुष के "श्रेष्ठ पद" की ओर संकेत करता है, और 1 तीमुथियुस 2:12 में authentein शब्द (जिसका अनुवाद, उसके अनुसार, "अधिकार चलाना" होना चाहिए) एक सकारात्मक शब्द है जो उस अधिकार की ओर संकेत करता है जिसे पुरुष पास्टर चलाते हैं। उसने इस पद की भी एक रचनात्मक नई व्याख्या प्रस्तुत की: "आदम बहकाया न गया, पर स्त्री बहकाई गई" (पद 14), जिसे सदियों तक स्त्रियों की नैतिक और बौद्धिक हीनता का प्रमाण माना जाता रहा था। उसने कहा कि हव्वा ने "भूमिकाओं को उलटने" (role reversal) के एक कार्य में आदम के अधिकार की उपेक्षा की और उसे दरकिनार कर दिया, जिसके विनाशकारी परिणाम हुए। उसने इस सबको "पवित्रशास्त्र की स्पष्ट शिक्षा" कहा।

Knight के विचारों का दूसरे धर्मविज्ञानियों ने विरोध किया, और बहस तेज़ी से चलती रही; कुछ संप्रदायों ने स्त्री अगुवों को अभिषिक्त (ordain) करना शुरू कर दिया, जबकि अधिकांश इस विषय पर चर्चा करते रहे।

1980 के दशक के अंत में Knight ने दो उभरते हुए कलीसियाई और धर्मवैज्ञानिक सितारों, John Piper और Wayne Grudem, से आग्रह किया कि वे मैदान में उतरें और उस तथाकथित "झूठी शिक्षा" से निपटें जो कलीसिया में फैल रही थी। 1987 में दो बैठकों के दौरान उन्होंने दूसरे पास्टरों का एक छोटा समूह इकट्ठा किया, जो पहले डैलस (Dallas) में, फिर डैनवर्स (Danvers) में मिला, ताकि इस विषय पर चर्चा करें और लैंगिक भूमिकाओं के विषय में एक सैद्धांतिक वक्तव्य को स्वीकृति दें, जिसे उन्होंने डैनवर्स वक्तव्य नाम दिया। उन्होंने Council of Biblical Manhood and Womanhood (बाइबल-आधारित पुरुषत्व और स्त्रीत्व परिषद) नाम का एक संगठन भी बनाया। एक वर्ष बाद, नाश्ते के समय, परिषद ने डैनवर्स वक्तव्य में व्यक्त दृष्टिकोण के लिए एक नाम तय किया; उन्होंने पितृसत्ता या पदानुक्रम शब्दों का प्रयोग न करने का निर्णय लिया, और इसके बजाय पूरकतावाद शब्द चुना, क्योंकि वह "समानता और परस्पर लाभकारी भिन्नताओं" पर बल देता था।[52]

1989 में उन्होंने एक प्रेस कॉन्फ्रेंस करके, पर्चे बाँटकर, और Christianity Today में डैनवर्स वक्तव्य प्रकाशित करके अपनी पहल शुरू की – इस आशा में कि उसे "व्यापक सहमति" मिले। इस दृष्टिकोण को और फैलाने के लिए परिषद ने निश्चय किया कि वह "पुस्तकें, लेख और पुस्तिकाएँ प्रकाशित करेगी, विद्वानों के लिए संगोष्ठियाँ और आम विश्वासियों के लिए बड़े सम्मेलन आयोजित करेगी।"[53] इसके प्रयासों से निकली पहली प्रमुख कृति 1991 का निबंध-संग्रह Recovering Biblical Manhood and Womanhood था, जिसका संपादन John Piper और Wayne Grudem ने किया।[54]

उनके दृष्टिकोण को व्यापक स्वीकृति मिली, और बहुत से सांप्रदायिक अगुवों ने इसका उपयोग हर बहस को समाप्त करने के लिए किया। सहस्राब्दी के अंत में Presbyterian Church of America और सबसे

52. John Piper और Grudem, Wayne (eds), Recovering Biblical Manhood and Womanhood, पृ. 11.
53. जैसा Piper और Grudem ने Christianity Today में एक विज्ञापन में कहा, 13 जनवरी 1989.
54. Christianity Today ने इसे 1992 की वर्ष की पुस्तक घोषित किया।

बड़े संप्रदाय Southern Baptist Convention जैसे संप्रदायों ने डैनवर्स वक्तव्य पर अपनी स्वीकृति की मुहर लगा दी, इस दृढ़ निश्चय के साथ कि वे फिर कभी समानतावादी विवाहों, स्त्री पास्टरों के अभिषेक या मंच से प्रचार करती स्त्रियों के विचार से खिलवाड़ नहीं करेंगे।

क्योंकि पूरकतावाद के लिए सबसे निर्णायक पाठ 1 तीमुथियुस 2:12-15 था, इसलिए Southern Baptist सेमिनरियों के प्रतिष्ठित बाइबल विद्वानों Andreas Köstenberger और Thomas Schreiner ने इस खंड की हर गैर-पूरकतावादी व्याख्या का खंडन करने के लिए विद्वत्तापूर्ण कृति Women in the Church प्रकाशित की। पूरकतावाद के समर्थन में अन्य प्रमुख कृतियों में Wayne Grudem की लोकप्रिय पुस्तक Evangelical Feminism थी, जिसमें उसने गैर-पूरकतावादियों के सौ से अधिक प्रतितर्कों का खंडन करने का दावा किया। Andreas Köstenberger ने 2014 में अपनी पुस्तक God's Design for Man and Woman भी प्रकाशित की।

फिर भी पूरकतावादी खेमे की सबसे प्रभावशाली रचनाएँ हैं: 2001 का बाइबल का ESV अनुवाद, ESV Study Bible (जिसकी टिप्पणियों का संपादन Wayne Grudem ने किया), और ऑनलाइन सामग्री का पोर्टल the Gospel Coalition, जिसकी स्थापना John Piper, D.A. Carson और Tim Keller ने की। सब मसीही परंपराओं के लिए खुला मंच होने के बजाय, इस गठबंधन के विश्वास-वक्तव्य में ही पूरकतावाद समाया हुआ है। अपनी अकादमिक पत्रिका Themelios के साथ यह पूरकतावाद को चुनौती देने वाली लगभग हर बड़ी कृति की नियमित रूप से आलोचना करता है। विशाल प्रकाशक Crossway ने भी सहायता की है – लगभग हर बड़ी पूरकतावादी कृति वहीं से निकलती है।[55]

वास्तव में पूरकतावाद इतना शक्तिशाली और प्रभावी आंदोलन रहा है कि उससे प्रभावित अधिकांश कलीसियाओं को इस विषय पर दूसरे दृष्टिकोणों पर विचार करना भी स्पष्ट मूर्खता या विधर्म लगता है। मैं यह भली-भाँति जानता हूँ – धर्मविज्ञान में मैं स्वयं को जितना समझदार मानता था, फिर भी लगभग 20 वर्षों तक मुझे इस स्थिति की कड़ी जाँच करने का विचार तक नहीं आया। फिर भी, यदि यह एक दोषपूर्ण स्थिति है, तो इसे इतनी प्रबलता क्यों मिली?

समान, पर भिन्न "भूमिकाएँ"

George Knight का चतुर शब्द "व्यक्ति के रूप में समान, भूमिकाओं में भिन्न" आधुनिक कानों को तुरंत भा गया। यह "हीन, इसलिए अधीनस्थ" की युगों पुरानी धारणा से कहीं बेहतर है। "हीन" शब्द की जगह "समान" आ गया – एक ठोस सुधार – जबकि अधीनस्थता के विचार की जगह "भिन्न भूमिकाएँ" आ गईं। पर निकट से जाँचने पर यह वाक्यांश कुछ हद तक हाथ की सफ़ाई सिद्ध होता है। इसका कारण यह है कि अधिकांश मामलों में इसके प्रचारकों को यह समझाने की ज़रूरत भी नहीं पड़ती कि वे भिन्न भूमिकाएँ क्या हैं। केवल "व्यक्ति के रूप में समान, भूमिकाओं में भिन्न" शब्द कह देना ही उन अधिकांश लोगों को संतुष्ट

55. धर्मवैज्ञानिक कृतियों के विस्तृत, कालक्रमानुसार इतिहास और सिंहावलोकन के लिए Jamin Hübner के उत्कृष्ट PhD शोध-प्रबंध का अध्याय 2 देखें: www.bit.ly/3BNaSY8

कर देता है जो इस विचार को पहली बार सुनते हैं, विशेषकर यदि कोई यह शर्त जोड़ दे कि आख़िरकार परमेश्वर ने पुरुषों और स्त्रियों को अलग-अलग ढंग से बनाया है।

पर समस्या यह है कि पूरकतावादी डिब्बे पर जो लिखा है, वह डिब्बे के अंदर नहीं है! "भूमिकाओं" का विचार एक आधुनिक समाजशास्त्रीय अवधारणा है जो 1960 के दशक में ही लोकप्रिय हुई, जब स्त्रियों से अपेक्षित गतिविधि के क्षेत्र तेज़ी से बदलने लगे। यह शब्द श्रम-विभाजन को दर्शाता है, जिसमें एक व्यक्ति कुछ बातों का ध्यान रखता है और दूसरा व्यक्ति दूसरी बातों का। उदाहरण के लिए, यदि मैं घर के कामों वाले दिन अपने बच्चों से कहूँ कि मैं अलग-अलग भूमिकाएँ बाँटूँगा, तो वे सब यही अपेक्षा करेंगे कि मैं उन्हें अलग-अलग ज़िम्मेदारियाँ दूँगा।

परन्तु पूरकतावाद में, यदि आप यह प्रश्न पूछें (जिसे बहुत लोग पूछते नहीं दिखते) कि "वे भिन्न भूमिकाएँ ठीक-ठीक क्या हैं?", तो उत्तर (उसके सार तक घटाने पर) यह होगा कि घर और कलीसिया में पुरुष अगुवाई करते हैं, और दोनों जगह स्त्रियाँ अधीन रहती हैं और हाथ बँटाती हैं। पर देखिए, यह भूमिकाओं का बँटवारा नहीं है। यह सीधी-सादी आदेश-श्रृंखला है। अपने सहायक के साथ घूमता कबीले का मुखिया किसी "सुंदर परस्पर-निर्भरता" में नहीं है – वह दो व्यक्तियों के पदानुक्रम में है।

"भूमिकाओं" के विचार के साथ अदला-बदली की संभावना का विचार जुड़ा है। एक बच्चा पूल साफ़ कर सकता है और दूसरा बैठक, और अगले सप्ताह ये भूमिकाएँ बदल सकती हैं। इसके विपरीत, पूरकतावादी "भूमिका" किसी के लिंग पर आधारित एक स्थायी, न बदलने वाला शक्ति-संबंध है। पूरकतावाद में स्त्रियों को कलीसिया की कुछ भूमिकाओं से केवल इसलिए वंचित रखा जाता है कि वे स्त्रियाँ हैं, जबकि पुरुषों को किसी भी भूमिका से केवल इसलिए वंचित नहीं रखा जाता कि वे पुरुष हैं। इस व्यवस्था में कुछ भी पूरक नहीं है।

यद्यपि भूमिकाओं का विचार समानता के अनुकूल है, जन्म से सौंपे गए स्थायी शक्ति-संबंधों का विचार असमानता की घोषणा है। पूरकतावादियों के सामने सदा यह चुनौती रही है कि वे दिखाएँ कि दो लोग वास्तव में समान कैसे हो सकते हैं, जबकि केवल अपने गुणसूत्रों के आधार पर उनमें से एक अटल रूप से अगुवाई करने के लिए और दूसरा पीछे चलने के लिए नियत है। पूरकतावाद के पक्षधर इसका उत्तर त्रिएकता के संबंधों से तुलना करके देते हैं (जिस पर हम आगे विस्तार से विचार करेंगे)। वे सावधानी से उपमाएँ भी चुनते हैं, जैसे सेना में एक अधिकारी और एक सिपाही, एक प्रबंधक और एक कर्मचारी, एक राष्ट्रपति और एक नागरिक, या एक पास्टर और कलीसिया का एक सदस्य। वे तर्क देते हैं कि इनमें से कोई भी अंतर्निहित श्रेष्ठता का संकेत नहीं देता, और यह सच है। पर ये उचित या उपयुक्त उपमाएँ नहीं हैं[56] – इन सब मामलों में भूमिकाएँ बदल सकती हैं, और जिसके पास अधिकार है, उसके पास वह अधिकार विशेष योग्यता या अनुभव के आधार पर होता है। उनकी अगुवाई जन्म से उनके शरीर के आधार पर नहीं सौंपी जाती। उदाहरण के लिए, एक पास्टर अपने विशेष चरित्र, बुलाहट, प्रशिक्षण और वरदानों के कारण अगुवाई कर सकता है – पर यह संभव है कि वह पास्टर किसी दिन पद छोड़ दे, और कलीसिया का वह सदस्य पास्टर बन जाए।

56. आगे आने वाले प्रतितर्कों के लिए Kevin Giles, What the Bible Actually Teaches on Women, अध्याय 3 का आभार।

मुझे एक भी ऐसी स्वीकार्य उपमा नहीं मिली जो दिखाए कि अधिकार या अधीनस्थता किसी के गुणसूत्रों या शरीर में भरी हुई है। सबसे निकट की उपमाएँ हैं हिंदू जाति-व्यवस्था, जिसमें किसी की शक्ति-स्थिति इससे तय होती है कि वह किस वर्ग या परिवार में जन्मा, या रंगभेद (Apartheid), जिसमें किसी की त्वचा का रंग उसके राजनीतिक अधिकार तय करता था। जन्म से भूमिकाएँ और दर्जा तय करने वाली ये दोनों व्यवस्थाएँ – जैसा सब पूरकतावादी निश्चय ही मानेंगे – असमानता के उदाहरण हैं। तो फिर पूरकतावाद जाति-व्यवस्था या रंगभेद से ठीक-ठीक किस प्रकार भिन्न है?

समझौता और घुटने टेकना

पूरकतावादी प्रायः तर्क देते आए हैं कि परस्परतावादी पवित्रशास्त्र से समझौता करते हैं। वे यह नहीं समझते या स्वीकार नहीं करते कि यद्यपि वे ठीक ही पवित्रशास्त्र के ईश्वरीय अधिकार को थामे रहते हैं, फिर भी वे पवित्रशास्त्र की अपनी व्याख्या को स्वयं पवित्रशास्त्र के साथ मिला देते हैं। परमेश्वर का वचन सत्य है, पर हमें यह स्वीकार करने की नम्रता चाहिए कि उसके विषय में हमारी व्याख्याएँ सदा सही न भी हों। परमेश्वर का वचन सचमुच अचूक है। पर हम अचूक नहीं हैं।

एक वीडियो में,[57] जिसमें Piper, Grudem और Keller समझाते हैं कि पूरकतावाद उनके संगठन के सैद्धांतिक वक्तव्य का भाग क्यों है, Piper चेतावनी देता है कि बाइबल को इस तरह बरतना जो "मुखियापन और अधीनता से कतराता है ... सुसमाचार के लिए अशुभ संकेत है।" Carson बीच में कहता है: "पवित्रशास्त्र जो बात असंदिग्ध रूप से, बार-बार और स्पष्ट रूप से कहता है, उससे कतराकर निकल जाना ... परमेश्वर जो कहते हैं उसे सुनना नहीं है। यह परमेश्वर के वचन के सामने न काँपने का एक तरीका है।" Keller, अपने शब्दों में अधिक संयमी, फिर भी वही बात दोहराता है: समानतावाद "हमारे पवित्रशास्त्र पढ़ने के ढंग को प्रभावित करता है। यह पवित्रशास्त्र के विषय में हमारी समझ को ढीला कर देता है।"

सुसमाचारवादी परस्परतावादियों के लिए यह दावा बेतुका है। यह सुझाव देना पूरी तरह अनुचित है कि सैकड़ों आजीवन बाइबल विद्वान, जिनकी बुलाहट ही वर्ष-दर-वर्ष परमेश्वर के वचन की सही व्याख्या करना है, बाइबल को कम महत्व देते हैं। संसार के बहुत से सर्वश्रेष्ठ रूढ़िवादी बाइबल विद्वान – जो कभी पूरकतावादी थे और अब नहीं हैं – अपने नए निष्कर्षों तक परमेश्वर के वचन की उपेक्षा करके नहीं, बल्कि उसका और अधिक ध्यान से अध्ययन करके पहुँचे हैं। इनमें F.F. Bruce, Leon Morris, N.T. Wright, Gordon Fee, Richard Bauckham, Philip Payne, Walter Kaiser, Ben Witherington, Stanley Gundry, Kenneth Bailey, Aida Spencer, Walter Liefeld, Joel Green, Cynthia Westfall, Miriam Adney, Cornelius Plantinga, John Stackhouse, Michael Bird और बहुत से अन्य हैं।[58] वास्तव में, हाल के वर्षों में कम से कम सात परस्परतावादी Evangelical Theological Society (इवैन्जेलिकल धर्मवैज्ञानिक सोसाइटी) के अध्यक्ष चुने गए हैं – एक ऐसी सोसाइटी जिसमें केवल वही शामिल हो सकता है जो हर वर्ष पवित्रशास्त्र की त्रुटिहीनता में विश्वास की

57. www.vimeo.com/44525286
58. इस सूची के लिए Kevin Giles, What the Bible Actually Teaches on Women, अध्याय 2 का आभार।

घोषणा पर हस्ताक्षर करे।[59] मेरी बात बस इतनी है कि बहुत से पूरकतावादी दावों के विपरीत, यह बहस पवित्रशास्त्र की व्याख्या के विषय में है, पवित्रशास्त्र के अधिकार के विषय में नहीं।[60]

पूरकतावादी परस्परतावादियों को ऐसे लोगों के रूप में चित्रित करते आए हैं जो संस्कृति के आगे घुटने टेक देते हैं। नारीवाद के सामाजिक आंदोलनों को मसीही परिवार के लिए ख़तरा ठहराने के बाद, पूरकतावादी धर्मविज्ञानी दूसरे धर्मविज्ञानियों पर नियमित रूप से नारीवाद से साँठगाँठ का आरोप लगाते हैं। उन लोगों के प्रति, जिन्होंने कलीसिया में स्त्रियों की अधीनस्थता की शिक्षा (subordinationism) को समाप्त करने का प्रस्ताव रखा, J.I. Packer की प्रतिक्रिया यह है: "स्त्रियों को [पास्टर] बनाने का आज का दबाव बाइबल के अधिकार के प्रति किसी आदर से अधिक सांसारिक, व्यावहारिक और सामाजिक कारकों से उपजा है। आने वाली पीढ़ियाँ संभवतः उनके इस आंदोलन को सांसारिक संस्कृति को मसीह में बपतिस्मा देने का एक और प्रयास मानेंगी, जैसा उदारवादी कलीसिया सदा से करना चाहती रही है।"[61]

ये कड़े और भ्रामक शब्द हैं, पर उन लोगों के मन में गूँजते हैं जो "समझौता करने वालों" से थक चुके हैं। Andreas Köstenberger पूरकतावादियों को एक ऐसी बाइबल-विरोधी शिक्षा के सामने आज के नायकों के रूप में प्रस्तुत करता है, जो, उसकी चेतावनी के अनुसार, "अनिवार्य रूप से कलीसिया की प्रभावशीलता को घटाएगी और हमारे संसार में परमेश्वर के मिशन की प्रगति को धीरे-धीरे खोखला करेगी। पूरकतावाद, यानी सच्ची बाइबल-आधारित शिक्षा, गहराई से संस्कृति-विरोधी है, यदि सांस्कृतिक रूप से अस्वीकार्य नहीं। यदि हम सृष्टि की इस वास्तविकता का इनकार करते हैं, तो हम अनिवार्य रूप से परमेश्वर के वचन और उसे हमें देने वाले के अधिकार को कमज़ोर करने में भागीदार बन जाएँगे।"[62]

यद्यपि संस्कृति के आगे घुटने टेकने के विषय में उसकी चिन्ता पर हम सबको ध्यान देना चाहिए, Köstenberger के लिए अच्छा होगा कि वह अपने ही शब्द अपने ही विचारों पर लागू करे। इसके बजाय वह इस तथ्य से पूरी तरह अनजान प्रतीत होता है कि पूरकतावाद एक अपेक्षाकृत नया धर्मवैज्ञानिक दृष्टिकोण है, जो सीधे इस बात से उत्पन्न हुआ कि उसने स्त्री की हीनता को अस्वीकार करने में संस्कृति से सहमति जताई। इसके अतिरिक्त, वह इस संभावना से बेख़बर लगता है कि पूरकतावाद स्वयं एक सचमुच बाइबल-विरोधी संस्कृति के आगे घुटने टेकना हो सकता है: वह अति-रूढ़िवादी, पितृसत्तात्मक संस्कृति, जो युद्धोत्तर 1950 के दशक के अमेरिका की लैंगिक रूढ़ छवियों का गुणगान करती है – जहाँ स्त्रियाँ अपने सर्वोत्तम रूप में अधीन रहने वाली घर की रानियाँ थीं, जो अपने कामकाजी पतियों का साथ देते हुए बच्चों को पालती थीं। संक्षेप में, पूरकतावादी अपने धर्मवैज्ञानिक प्रतिद्वंद्वियों पर पवित्रशास्त्र से समझौता करने और संस्कृति के आगे घुटने टेकने का झूठा आरोप लगाते हैं। दुर्भाग्य से, उनका गलत चित्रण यहीं समाप्त नहीं होता।

59. Evangelical Theological Society के कम से कम सात अध्यक्ष – Roger Nicole, Kenneth Kantzer, Walter Kaiser, Stanley Gundry, Alan F. Johnson, Millard Erickson और Craig Keener – सभी परस्परतावादी हैं।
60. Kevin Giles, What the Bible Actually Teaches on Women, अध्याय 9.
61. J. I. Packer, "Let's Stop Making Women Presbyters," Christianity Today, 11 February 11, 1991
62. www.bit.ly/3bAU0ZG

"सुंदर" भिन्नता

लगभग एक दशक तक, साल में कई बार, मैं अपनी कलीसिया के सदस्यता-पाठ्यक्रम के लिए इकट्ठे हुए सैकड़ों लोगों को समझाता था कि धर्मविज्ञान में हम पूरकतावादी क्यों हैं। मैं समझाता था,

विवाह को जीने के चार तरीके हैं। पुरुष-अहंकारी (chauvinistic) विवाह में पुरुष हावी रहता है, जबकि पत्नी दासी की तरह पीछे चलती है। अति-नारीवादी विवाह में पत्नी हावी रहती है, और निष्क्रिय पति उसके हर आदेश का पालन करता है। इनमें से कोई भी विकल्प वास्तविक समानता को नहीं दर्शाता। समानतावादी विवाह में दोनों समान हैं, पर पुरुष और स्त्री के बीच कोई भिन्नता नहीं है। परन्तु पूरकतावादी विवाह में दोनों समान हैं, और उनकी परमेश्वर द्वारा ठहराई गई भिन्नताओं का उत्सव मनाया जाता है और उनका सम्मान किया जाता है।

श्रोताओं में लगभग हर व्यक्ति इस स्थिति को स्वीकार कर लेता था, जैसे मैंने भी किया था। पर जब मैंने अपने विश्वासों और अपनी स्थिति पर अधिक ध्यान से विचार करना शुरू किया, तो मुझे एहसास हुआ कि मैं समानतावादी स्थिति को गलत ढंग से प्रस्तुत करके लोगों को अपनी ओर कर रहा था। यह न्यायपूर्ण मुक़ाबला नहीं था। वास्तव में समानतावाद (या परस्परता) पूरे मन से पूरकतावाद से सहमत है कि पुरुष और स्त्री अलग-अलग ढंग से और एक-दूसरे के पूरक होने के लिए बनाए गए हैं। मुझे अभी तक ऐसा कोई परस्परतावादी धर्मविज्ञानी नहीं मिला जो यह सुझाव दे कि पुरुष और स्त्री, परमेश्वर की रचना के अनुसार या औसतन, शरीर या मनोवैज्ञानिक विशेषताओं में एक जैसे हैं। फिर भी बहुत से प्रमुख पूरकतावादी अपने धर्मवैज्ञानिक विरोधियों को इसी तरह गलत ढंग से चित्रित करते रहते हैं। पूरकतावाद पर अपनी पुस्तक में Köstenberger दंपति तर्क देते हैं कि परस्परतावादी "भिन्नता-रहित समानता" के विचार को मानते हैं।[63] वास्तव में, परस्परतावादी पुरुष और स्त्री की यौनिकता को परिवर्तनशील या अदला-बदली योग्य नहीं मानते। उदाहरण के लिए, वे इस समझ का विरोध नहीं करते कि केवल पुरुष ही पिता, पुत्र और भाई हो सकते हैं; और केवल स्त्रियाँ ही माताएँ, पुत्रियाँ और बहनें हो सकती हैं।

ब्रांडिंग की दृष्टि से, यदि Knight की प्रतिभा "व्यक्ति के रूप में समान, भूमिकाओं में भिन्न" शब्द गढ़ने में थी, तो Piper की प्रतिभा इस दृष्टिकोण के लिए "पूरकतावाद" (complementarianism) नाम निकालने में थी – जो, उसी के शब्दों में, "उत्पत्ति 2:18 की उस पूरकता से लिया गया है जहाँ परमेश्वर हव्वा को आदम के लिए उसकी उपयुक्त सहायक के रूप में देते हैं।" फिर भी, पूरकतावादी स्थिति और परस्परता के बीच के वास्तविक अंतर का अध्ययन करने के बाद मुझे लगता है कि पहली की अधिक न्यायसंगत परिभाषा होगी "पदानुक्रम सहित पूरकता", जबकि दूसरी की "पदानुक्रम रहित पूरकता"।[64] यदि मैंने अपने

63. Andreas और Margaret Köstenberger यह बात "God's Design for Man and Woman" में कहते हैं।
64. Groothuis, Pierce और Fee द्वारा संपादित "Discovering Biblical Equality" के 2005 के संस्करण ने "complementarity without hierarchy" (पदानुक्रम रहित पूरकता) को अपनी परिचय-पंक्ति बनाया था। मुझे यह देखकर दुःख होता है कि 2021 के संस्करण ने यह शब्द छोड़ दिया है, स्पष्टतः इसलिए कि पूरकतावाद ने इतने प्रभावी, यद्यपि भ्रामक, ढंग से पूरकता को ऐसी चीज़ के रूप में चित्रित किया है जो समानतावाद के साथ मेल नहीं खा सकती।

नए सदस्यों के पाठ्यक्रम में लोगों के सामने इसे ऐसे रखा होता, तो मेरा अनुमान है कि उनमें से अधिक लोग हमारी कलीसिया से जुड़ने से पहले रुककर सोचते।

परस्परतावादियों और पूरकतावादियों के बीच की बातचीत में मेरा प्रस्ताव है कि अपने मतभेदों पर बात करने का बेहतर तरीका यह है कि पहले हम इस पर सहमत हों कि परमेश्वर ने पुरुषों और स्त्रियों को उद्देश्यपूर्वक, समान रूप से और एक-दूसरे के पूरक के रूप में बनाया। इससे हमें आश्चर्यजनक रूप से बहुत सी साझा भूमि मिल जाती है। वास्तविक असहमति यह परिभाषित करने में है कि पुरुषों और स्त्रियों के बीच परमेश्वर द्वारा अभिप्रेत ये भिन्नताएँ ठीक-ठीक क्या हैं, और इसलिए उनसे कौन से निहितार्थ निकलते हैं। क्या हमारी भिन्नताएँ सचमुच इतनी बड़ी हैं कि उनके कारण पूरी तरह अलग-अलग क्षेत्र आवश्यक हों, जिनमें पुरुष सदा अधिकार में रहें? या क्या हम पूरकता को घर, समाज और कलीसिया में साथ मिलकर, कंधे से कंधा मिलाकर काम करने की बुलाहट के रूप में देख सकते हैं?

कलीसियाई सेवकाई में पूरकतावाद की पूरकता संबंधी शिक्षा यह सुझाती है कि अलग-अलग लिंगों को अलग-अलग भूमिकाएँ सौंपी जाती हैं, पर पूरकतावादी कलीसियाओं में वास्तव में ऐसा नहीं होता, जहाँ स्त्रियों को कुछ सेवकाइयों से वंचित रखा जाता है, जबकि पुरुषों को किसी से नहीं! कोई भी पुरुष संभवतः वह हर सेवकाई कर सकता है जो कोई स्त्री करती है, पर इसका उलटा नहीं। यह पूरकता नहीं – यह बहिष्कार है।

समाज का पतन

पूरकतावादी परस्परतावादियों को न केवल समझौता करने वालों, संस्कृति के आगे घुटने टेकने वालों और लिंगों का भेद मिटाने वालों के रूप में गलत ढंग से चित्रित करते हैं, बल्कि वे स्वयं संस्कृति के पतन का कुछ दोष भी उन पर डालते हैं।

यदि एक आम राजनीतिक रणनीति यह है कि समाज के पतन का दोष प्रतिस्पर्धी विचारों पर डाला जाए, तो Piper और Grudem इस युक्ति का बहुत प्रभावी उपयोग करते हैं। उदाहरण के लिए, बगल में बैठे Keller और Carson की सहमति में हिलते सिरों के साथ, Piper समझाता है कि The Gospel Coalition समानतावाद को क्यों अस्वीकार करता है: वह घर और समाज में पुरुषों को सेवक-अगुवे न बनाने की असफलता को "एक क्रूर मर्दाना समाज", "निष्क्रियता", "पुरुषत्व के विषय में भ्रम", "क्रोध के क्षणों में भड़क उठने वाले पुरुषों", "यह पूरा समलैंगिकता वाला मामला", "स्त्रियों के शोषण" और "बच्चों की उपेक्षा" से जोड़ता है।[65] निस्संदेह, इनमें से अधिकांश बातें परमेश्वर के आदर्श बिलकुल नहीं हैं। पर क्या Piper सचमुच सिद्ध कर सकता है कि पुरुषों से सेवक-अगुवे बनने और स्त्रियों से पुरुषों की अगुवाई स्वीकार करने को कहना ही समाज के सब दुखों का समाधान है?

इसी प्रकार Grudem उन विपत्तियों पर विलाप करता है जो तब आएँगी जब कलीसिया घर, कलीसिया और समाज में पुरुषों और स्त्रियों की सच्ची समानता की अनुमति देगी, और उस बात की भी जिसे वह

65. https://vimeo.com/44525286

"भिन्नताओं का उन्मूलन" कहता है।[66] वह कहता है कि विवाहों में यह "पतियों को डरपोक और पत्नियों को अधिकार हड़पने वाली" बना देगी। पालन-पोषण में "बच्चों को बहुत कम अनुशासन और अधिकार के प्रति बहुत कम आदर के साथ पाला जाएगा।" परिवार में "सारी ज़िम्मेदारियाँ वरदानों और रुचियों के अनुसार बाँटी जाएँगी, न कि पवित्रशास्त्र द्वारा निर्धारित भूमिकाओं के अनुसार।" मानव यौनिकता के क्षेत्र में पुरुष "पौरुषहीन और स्त्रियों के लिए अनाकर्षक" हो जाएँगे और स्त्रियाँ "स्त्रियोचित गुणों से रहित और पुरुषों के लिए अनाकर्षक", और दोनों "यौन संबंध के प्रति उदासीन" होंगे। खेलों में लोग "प्रतिस्पर्धा का विरोध करेंगे और उसे अच्छा नहीं, बल्कि बुरा समझेंगे।" अर्थव्यवस्था में "किसी को बहुत धनी होने की अनुमति नहीं होगी, और कल्याणकारी राज्य और सरकार पर बड़े पैमाने पर निर्भरता होगी।" शिक्षा में वे "लड़कों की कुछ प्रकार की गतिविधियों के प्रति और लड़कियों की कुछ प्रकार की गतिविधियों के प्रति स्वाभाविक पसंद और योग्यता के किसी भी स्वरूप को ज़बरदस्ती मिटा देंगे।"

मैं यह अपने मन से नहीं गढ़ रहा हूँ। ये Grudem के शब्द हैं, पूरकतावाद के उसके सबसे लोकप्रिय बचाव में। यद्यपि हमारा आधुनिक समाज निश्चय ही बहुत वास्तविक चुनौतियों का सामना कर रहा है, इन सबका दोष अपने विरोधी के विचारों पर डालना कपटपूर्ण और बेईमानी है। डैनवर्स वक्तव्य के राजनीतिक साहित्य होने का शायद सबसे बड़ा प्रमाण उसकी अंतिम पंक्ति है: "हमें विश्वास है कि इन सिद्धांतों का इनकार या उनकी उपेक्षा हमारे परिवारों, हमारी कलीसियाओं और पूरी संस्कृति में अधिकाधिक विनाशकारी परिणामों की ओर ले जाएगी।"[67]

सामाजिक-धार्मिक विश्लेषक Kristin Du Mez Jesus and John Wayne में बताती है कि नारीवाद, धर्मनिरपेक्षता और उत्तर-आधुनिकतावाद के उदय, अर्थ और पहचान के खो जाने, और यौन क्रांति की सफलता से चिह्नित एक शताब्दी के अंत में, इस प्रकार के दावों को सुसमाचारवादी अमेरिका में इतनी पकड़ क्यों मिली: "इन भयों को सुसमाचारवादी अगुवों ने सक्रिय रूप से भड़काया, जिनका अपनी शक्ति को मज़बूत करने के लिए भय भड़काने में सीधा स्वार्थ था, और हम इसे रूढ़िवादी सुसमाचारवाद के इतिहास में देखते हैं।"[68]

एक और कारण है कि इतने सारे विचारशील और समर्पित मसीही बिना प्रश्न किए पूरकतावाद को थामे रहते हैं। यह सब एक कुशल, पर अंततः भ्रामक, उपमा के कारण है।

त्रिएकता में अधीनस्थता

वर्षों पहले मेरी पत्नी से उन साथी पास्टर-पत्नियों के लिए कुछ लिखने का अनुरोध किया गया जिन्हें घर और कलीसिया में पुरुष की अगुवाई को स्वीकार करने में कठिनाई हो रही हो। जैसा मैं पहले कह चुका हूँ,

66. यह उद्धरण और इस अनुच्छेद में आगे आने वाले उद्धरण Wayne Grudem, Evangelical Feminism, अध्याय 1 से हैं।
67. www.bit.ly/3CFM0CC
68. "The Rise and Fall of Mars Hill" पॉडकास्ट के एपिसोड 5 (13 मिनट पर) से, जो यहाँ उपलब्ध है: www.bit.ly/3CEBjAm.

पूरकतावाद का मूल विचार समझना कठिन है: कोई समान और साथ ही अधीनस्थ कैसे हो सकता है। मेरी पत्नी हमारी तथाकथित भिन्न भूमिकाओं के पीछे का कारण समझने में संघर्ष करती रही, जब तक उसने Kathy Keller की कुशल उपमा नहीं पढ़ी, जिसे उसने फिर अपने लेख के शिखर-बिंदु के रूप में शामिल किया। Keller के अनुसार, पास्टर की वह पत्नी, जो घर और कलीसिया दोनों में अपने पति के अधीन रहना चुनती है, पिता के प्रति यीशु की अधीनस्थता के प्रकाश में दिखाई जाती है:

यीशु अपनी अधीनता भरी सेवकाई में, हमारा उद्धार सुनिश्चित करने के लिए सेवक की भूमिका अपनाकर (फिलिप्पियों 2:5-11), दिखाते हैं कि पिता के प्रति उनकी अधीनता एक उपहार थी, न कि कोई ऐसी चीज़ जो उनसे ज़बरदस्ती ली गई। किसी भी समय पिता के साथ उनकी समानता पर प्रश्न नहीं उठाया जाता ... पिता के साथ पुत्र की [मूलभूत] समानता, और फिर भी सेवक की भूमिका अपनाकर उद्धार के उद्देश्य से उनकी [कार्यात्मक] अधीनता, हमें त्रिएकता के रहस्य के हृदय में ले जाती है। ऐसे मानवीय पात्रों के बिना, जो उन्हीं सत्यों को, उन्हीं भूमिकाओं को निभाएँ, इसे व्यक्त करना आरंभ भी कैसे किया जा सकता है?[69]

Keller तर्क देती है कि यीशु पिता के समान हैं, और फिर भी उनके अधीन रहते हैं। यह पढ़कर मेरी पत्नी और बहुत सी साथी पास्टर-पत्नियाँ प्रसन्न थीं कि उनके मन में यह विषय सुलझ गया। उन्होंने ठान लिया कि अपने "समान" व्यक्ति के अधीन रहने की परमेश्वर-प्रदत्त भूमिका अपनाकर वे संसार को त्रिएकता का सुंदर और रहस्यमय जीवन दिखा रही हैं।

पर यह उपमा घातक रूप से दोषपूर्ण है। पवित्रशास्त्र कहीं भी हमें यह नहीं सिखाता कि हम किसी मनुष्य (चाहे पास्टर, राजा, जीवनसाथी या माता-पिता) के प्रति अपनी अधीनता को पिता के प्रति यीशु की अधीनता के नमूने पर ढालें। Keller जिस फिलिप्पियों 2 के पाठ का उल्लेख करती है, जिसमें मसीह परमेश्वर के समान होते हुए भी एक सेवक बनते हैं जो क्रूस पर मरते हैं, वह मुख्यतः यीशु की नम्रता और दूसरों की सेवा का वर्णन करता है – जिसका अनुकरण सब लोग सब लोगों के साथ अपने व्यवहार में कर सकते हैं।[70]

Keller का यह कथन ख़तरनाक है कि त्रिएकता तब तक समझ से परे है जब तक "मानवीय पात्र उन्हीं भूमिकाओं को न निभाएँ"। अपने आदर्श सामाजिक संबंधों को त्रिएकता में पढ़ने के लोगों के हाल के अनेक प्रयासों के बावजूद, ऐसा कोई सांसारिक संबंध नहीं है जो त्रिएकता के भीतर के संबंधों को ठीक से दर्शा सके। Michael Bird, जो यह बात बहुत मज़ाक में नहीं कहता, सुझाव देता है कि यदि हमें कोई संबंध ढूँढ़ना ही पड़े, तो वह एक वृद्ध पुरुष, एक युवा पुरुष और एक खोजे (eunuch) के बीच तीन व्यक्तियों का विवाह होगा। Bird की बात यह है कि पति–पत्नी की भूमिकाओं को पिता–पुत्र की भूमिकाओं से जोड़ना एक गंभीर भूल है।[71]

यदि Knight की कुशल चाल व्यक्ति के रूप में समान, भूमिकाओं में भिन्न शब्द था और Piper की पूरकतावादी शब्द, तो Grudem का योगदान त्रिएकता–विवाह की उपमा वाली यह शिक्षा थी। उसी ने

69. Kathy Keller, Jesus, Justice, and Gender Roles, अध्याय 2.
70. यह इसके आरंभिक कथन में स्पष्ट है, जो घोषणा करता है: "दीनता से दूसरों को अपने से अच्छा समझो; हर एक अपने ही हित की नहीं, वरन् दूसरों के हित की चिन्ता करे। एक दूसरे के साथ अपने सम्बन्धों में वैसा ही स्वभाव रखो जैसा मसीह यीशु का था..." (फिलिप्पियों 2:3-5)
71. अधिक जानकारी के लिए यह छोटा वीडियो देखें: www.bit.ly/3waFKAs

अपनी 1994 की Systematic Theology में Knight के 1977 के उस विचार को पहली बार मुख्यधारा में पहुँचाया कि त्रिएकता अनंत काल के लिए व्यक्तित्व की वास्तविक समानता और भूमिकाओं की भिन्नता का एक बाइबल-आधारित उदाहरण प्रस्तुत करती है।[72] उन लोगों की प्रतिक्रिया में, जो तर्क देते थे कि त्रिएकता उस प्रकार एक दूसरे के अधीन रहने का उत्कृष्ट उदाहरण है जिसकी वे पुरुषों और स्त्रियों के बीच कल्पना करते थे, Grudem पूरी ताकत से विपरीत दिशा में चला गया, और तर्क दिया कि विशिष्ट भूमिकाएँ वास्तव में त्रिएकता के भीतर के अनंत संबंधों के हृदय में हैं। उसने Eternal Functional Subordination (अनंत कार्यात्मक अधीनस्थता) शब्द प्रस्तुत किया, यह तर्क देने के लिए कि पुत्र के पृथ्वी पर अपने मिशन पर निकलने से युगों पहले भी वे पिता के अधीनस्थ थे। Grudem के लिए यह दिखाना महत्वपूर्ण था कि पिता के प्रति पुत्र की अधीनस्थता अस्थायी नहीं थी। उसने तर्क दिया: "क्या पुत्र पिता से कहते हैं, 'यह उचित नहीं कि आप केवल इसलिए प्रभारी हों कि आप पिता हैं'? क्या पुत्र पिता से कहते हैं, 'आप पंद्रह अरब वर्षों से प्रभारी रहे हैं, और अब अगले पंद्रह अरब वर्षों के लिए मेरी बारी है'? नहीं! बिलकुल नहीं!"[73]

Tim और Kathy Keller पुत्र की अनंत अधीनस्थता में विश्वास करने से कुछ पहले ही रुक जाते प्रतीत होते हैं, पर फिर भी वे इस विचार के सबसे लोकप्रिय प्रचारक बन गए कि त्रिएकता पूरकतावादी विवाह का आदर्श है; यहाँ तक कि एक बहुत बिकने वाली पुस्तक में उन्होंने तर्क दिया कि "क्योंकि हमारी सौंपी गई [विवाह की] भूमिकाएँ त्रिएकता के भीतर के संबंधों के स्वभाव में जड़ पकड़े हुए हैं, इसलिए विवाह के भीतर परमेश्वर द्वारा अभिप्रेत [अधिकार–अधीनता] से छेड़छाड़ करना निश्चय ही हमारा अधिकार नहीं है।"[74] पर Grudem के इस ऊपर से लादे गए तर्क के बिना कि पुत्र की अधीनस्थता अनंत है, Keller दंपति की त्रिएकता–विवाह उपमा टिकती नहीं। पुत्र के देहधारण में त्रिएकता के एक व्यक्ति 33 वर्षों के लिए मनुष्य बनते हैं, और उस अवधि में स्वेच्छा से पिता और आत्मा से आदेश लेते हैं। जब हम इसे उनकी अनंत समानता और परस्परता की पृष्ठभूमि में रखते हैं, तो हम देहधारण को वैसा ही देखते हैं जैसा वह है: समस्त वास्तविकता के इतिहास में एक न दोहराई जा सकने वाली घटना। परमेश्वर के अनंत अस्तित्व के इस क्षण को मानवीय विवाह में लैंगिक भूमिकाओं का स्थायी, अपरिवर्तनीय मानदंड बना लेना न तो उत्तरदायित्वपूर्ण है और न उचित। उस अवधि के विपरीत, जब पुत्र पृथ्वी पर थे और उनके पिता स्वर्ग में, पत्नी और पति दोनों के पाँव एक ही धरती पर हैं।

इसीलिए Grudem ने तर्क को और भारी-भरकम बनाया। उसके पीछे चलते हुए अधिकांश पूरकतावादी धर्मविज्ञानी त्रिएकता के भीतर के अनंत संबंधों को समानता और "भूमिकाओं" वाले संबंधों के रूप में बताने लगे। John Starke, Bruce Ware, Rodrick Durst, Malcolm Yarnell और Michael Ovey जैसे दूसरे पूरकतावादी धर्मविज्ञानियों ने त्रिएकता के ऐसे प्रतिरूप प्रस्तुत किए जिनमें समानता के बजाय पदानुक्रम को उसकी निर्णायक विशेषता के रूप में उभारा गया। "पिता मसीह का अधिकार हैं, और सदा से

72. George Knight III ने अपनी 1977 की छोटी पुस्तक "The New Testament Teaching on the Role of Women" में वास्तव में यह उपमा सबसे पहले प्रस्तुत की थी, पर Grudem ने इसे विकसित किया और अपनी "Systematic Theology" में औपचारिक धर्मविज्ञान के रूप में प्रचारित किया – वह पाठ्यपुस्तक जो संसार भर के बाइबल कॉलेजों में बाइबल की शिक्षा का सार प्रस्तुत करने के लिए सबसे अधिक प्रयोग होती है।
73. Wayne Grudem, Evangelical Feminism and Biblical Truth, अध्याय 1.
74. Timothy और Kathy Keller, The Meaning of Marriage, अध्याय 6.

रहे हैं ... अधिकार और अधीनता की व्यवस्था के बिना कोई त्रिएकता नहीं है,"[75] Owen Strachan ने अपनी 2016 की पुस्तक The Grand Design: Male and Female He Made Them में कहा, जिसे उसने "Wayne Grudem को ... जिन्होंने हमें और बहुत से दूसरों को मसीह में परमेश्वर की महान योजना दिखाई" समर्पित किया है।

स्त्री की अधीनस्थता के अपने इस नए तर्क पर भरोसा करके Grudem ने यहाँ तक कि उस पर सब कुछ दाँव पर लगा दिया, और कहा कि स्त्रियों की स्थिति और भूमिकाओं के विषय में "अंततः निर्णय लेने में त्रिएकता की सही समझ शायद सबसे निर्णायक कारक सिद्ध हो।"[76] परन्तु 2016 में दूसरे भरोसेमंद पूरकतावादी धर्मविज्ञानी Grudem के त्रिएकता-संस्करण की गंभीर खामियों का सामना करने के लिए एकजुट हुए। निष्पक्ष रहें तो, इसकी आलोचना करने वाले पहले धर्मविज्ञानी परस्परतावादी Kevin Giles था, अपनी 2002 की कृति The Trinity and Subordinationism में।[77] पर जब 2016 में पर्याप्त पूरकतावादी धर्मविज्ञानियों ने ब्लॉगों की एक श्रृंखला और उसके बाद हुई ऑनलाइन बहसों के द्वारा इस विधर्म को चुनौती दी, तभी यह सिद्धांत अंततः और निर्णायक रूप से गिरा। इसके परिणामस्वरूप उस विचार से व्यापक मन फिराव हुआ जो सही मसीही विश्वास (ऑर्थोडॉक्सी) के विरुद्ध था, और जिसका पूरकतावादियों ने इतने वर्षों तक लैंगिक पदानुक्रम पर अपनी स्थिति के बचाव में गलत ढंग से लाभ उठाया था। और इसके लिए सचमुच मन फिराव की आवश्यकता थी: Grudem का Eternal Functional Subordination उसी दिशा में मुड़ता है – यद्यपि उतना दूर नहीं जाता – जिस दिशा में प्राचीन विधर्म एरियसवाद (Arianism) जाता है, जिसमें पुत्र अपने अनंत सार में पिता से कम हैं।[78] इस विधर्म को आरंभिक कलीसिया ने पहली बार एक महासभा में ठुकराया, जिसने त्रिएकता के अनंत संबंधों में मूलभूत एकता और समानता की पुष्टि की। जैसा Liam Goligher ने बहस के दौरान एक पोस्ट में कहा: "यह कहना कि अनंत त्रिएकता के भीतर पिता की वास्तविक प्रधानता या पुत्र की अधीनस्थता है, सही मसीही

75. Owan Strachan और Gavin Peacock, The Grand Design: Male and Female He Made Them
76. Wayne Grudem, Evangelical Feminism and Biblical Truth, पृ. 411, टिप्पणी 12.
77. Kevin Giles, The Trinity and Subordinationism: The Doctrine of God and the Contemporary Gender Debate
78. "Eternal Functional Subordination" तीन बातों के कारण अर्ध-एरियसवाद (semi-Arianism) के एक प्रकार से मिलता-जुलता है, जिसे "homoianism" कहा जाता है: 1) अंतर्निहित (immanent) त्रिएकतावादी संबंधों को सूत्रबद्ध करने के लिए पवित्रशास्त्र में त्रिएकता के उद्धार-कार्य संबंधी (economic) रूप पर अत्यधिक निर्भरता, 2) जिससे ईश्वरत्व के भीतर पदानुक्रम वाला एक प्रबल अधीनस्थतावाद (subordinationism) बनता है, 3) और परिणामस्वरूप पुत्र को पिता से कम महिमा और प्रताप वाला ठहराना।" (Michael F. Bird और Scott Harrower, ed, 2009: "Trinity without Hierarchy: Reclaiming Nicene Orthodoxy in Evangelical Theology," अध्याय 1.) Matthew Tinkham इस विधर्म को "neo-subordinationism" (नव-अधीनस्थतावाद) कहता है – देखें www.bit.ly/3PXG1jT

विश्वास (ऑर्थोडॉक्सी) से बाहर चले जाना है।"[79] यहाँ तक कि Gospel Coalition ने भी फिर एक लेख प्रकाशित किया जिसने त्रिएकता के विषय में ऑगस्टीन (Augustine) की शिक्षा को फिर से देखा और दिखाया कि वह त्रिएकता के भीतर के अनंत संबंधों की विशेषता के रूप में अधिकार–अधीनता का इनकार करता था।[80] धर्मवैज्ञानिक जगत में मत का यह मोड़ इतना आमूल और अचानक था कि अब रूढ़िवादी पूरकतावादी हलकों में व्यापक रूप से स्वीकार किया जाता है कि विवाह सहित विशेष सामाजिक संबंधों को त्रिएकता के आंतरिक जीवन में नहीं पढ़ा जाना चाहिए।[81] Knight और Grudem द्वारा रास्ते से भटकाए जाने के बाद, बहुत से सुसमाचारवादी विद्वानों ने स्पष्ट किया कि वे "[त्रिएकता की] उस पूरकतावादी कथा को, जिसे धर्मविज्ञानियों के एक छोटे दल ने लैंगिक भूमिकाओं के विषय में अपने दावों को सहारा देने के लिए जोड़ दिया था," अस्वीकार करते हैं, और उन्होंने "उस प्रेरितिक और सुसमाचारी विश्वास के प्रति, जो एक परमेश्वर और तीन समान व्यक्तियों को स्वीकार करता है, [जिनमें] अधिकार की श्रेणियों से ... [कोई] भेद [नहीं] किया जाता," अपनी प्रतिज्ञा को नया किया।[82]

कितनी अद्भुत सफलता! वास्तव में, किसी मानवीय समुदाय पर त्रिएकता के संबंधों का एकमात्र वैध प्रयोग वही है जिसका उल्लेख यीशु ने अपनी प्रार्थना में किया, कि उनके अनुयायी आपस में उसी प्रकार एक हों जैसे वे और पिता एक हैं।[83] जब हम एक-दूसरे में पिता और पुत्र के असीम आनंद, एक-दूसरे के प्रति उनके आदर

79. स्रोत: www.bit.ly/3wdix0I दूसरे विद्वानों ने ध्यान दिलाया कि Grudem ने "भिन्न भूमिकाओं" की भाषा को अधिकार और अधीनता के साथ घालमेल कर दिया था। पर इस बार उसने "व्यक्ति के रूप में समान, (लैंगिक) भूमिकाओं में भिन्न" के अपने सिद्धांत को त्रिएकता में पढ़ लिया था। परन्तु यद्यपि नए नियम का अध्ययन यीशु, पवित्र आत्मा और पिता को "अलग-अलग काम करते" दिखाता है, इसे सीधे अधिकार और अधीनता के विचारों के साथ नहीं मिला देना चाहिए। Grudem के ये तर्क कि अनंत पदानुक्रम के बिना हमारे पास पिता, पुत्र और आत्मा में भेद करने का कोई उपाय नहीं, बहुत कमज़ोर लगने लगे। यह सच है कि छुटकारे की योजना बनाने में पिता अग्रणी हैं, जबकि उद्धार को पूरा करने में यीशु, और उद्धार को लागू करने में आत्मा अग्रणी हैं। फिर भी ये भिन्न "भूमिकाएँ" पदानुक्रम की बात नहीं करतीं, भले ही वे एक क्रम की बात करती हों। जब यीशु पृथ्वी पर थे, उन्होंने पिता और आत्मा से निर्देश लिए। जब यीशु स्वर्ग लौटे, तो आत्मा पिता और पुत्र द्वारा भेजे गए। पर एक का दूसरों के प्रति यह "अधीन होना" उनके बिलकुल अनोखे मिशन-सहयोग के कारण आवश्यक है; यह पिता, पुत्र और आत्मा के संबंधों में अनंत पदानुक्रम का चिह्न नहीं है। यद्यपि पिता कार्यों का निर्देशन करते हैं, पिता उसी समय – क्योंकि परमेश्वर एक ही इच्छा को साझा करते हुए एक साथ पिता, पुत्र और आत्मा हैं – पुत्र में और आत्मा में अपने ही कार्य कर रहे होते हैं। एक ही सार होने के कारण ईश्वरत्व की इच्छा एक ही है – एक ऐसा तथ्य जो अनंत अर्थ में अधिकार और अधीनता की किसी सार्थक बात को सहारा नहीं देता। पिता के प्रति यीशु की वर्तमान अधीनस्थता का शायद सबसे स्पष्ट इनकार पौलुस में मिलता है, जो 1 कुरिन्थियों 15:28 में कहता है कि "पुत्र आप भी उसके अधीन हो जाएगा जिसने सब कुछ उसके अधीन कर दिया, ताकि सब में परमेश्वर ही सब कुछ हो।" इस पद के अनुसार यीशु मसीह वर्तमान युग में पिता के अधीन नहीं हैं, इसलिए यह सच नहीं हो सकता कि वे अनंत रूप से अधीनस्थ हैं। युग के अंत में भविष्य का यह "अधीन होना" ठीक-ठीक क्या होगा, इस पर विद्वानों में मतभेद है। मेरा सुझाव है कि जब हम पद 24-27 के संदर्भ पर विचार करते हैं, जिसमें भजन संहिता 8 उद्धृत है, तो यह सच्चे आदम के रूप में यीशु की अनोखी भूमिका की ओर संकेत करता है, न कि परमेश्वर के अनंत पुत्र के रूप में उनके स्वभाव की ओर। परमेश्वर-मनुष्य के रूप में, जिनमें ईश्वरत्व ने मानवता को अपने भीतर ग्रहण कर लिया है, वे अंततः सब बातों की युगांत-कालीन एकता को पूरा करेंगे। तब, जिस छुड़ाई गई मानवता का वे प्रतिनिधित्व करते हैं, वह नवीकृत सृष्टि के राजाओं और रानियों के रूप में अपना स्थान पूरी तरह ग्रहण करेगी – अपने परमेश्वर के अधीन, और अब उनके विरुद्ध विद्रोह में नहीं – उस त्रिएक परमेश्वर के अधीन, जो इस समय अद्भुत रूप से स्वयं को प्रकट करेंगे, और तब पाप, शैतान या मृत्यु मानव जीवन के सारे क्षेत्रों में और पूरे ब्रह्मांड में उनके इस प्रकटीकरण में बाधा नहीं डाल पाएँगे।

80. देखें www.bit.ly/3x2GWX6

81. उस समय पुत्र की अनंत अधीनस्थता (Eternal Subordination of the Son) के सिद्धांत को अस्वीकार किए जाने के पाँच कारणों पर Wyatt Graham का सारांश देखें: www.bit.ly/3mCmusv

82. Michael F. Bird और Scott Harrower, ed, 2009: "Trinity without Hierarchy: Reclaiming Nicene Orthodoxy in Evangelical Theology," अध्याय 1, 2.

83. यूहन्ना 17:21-23

और प्रेम के उमड़ने का अनुभव करते हैं,[84] तो हमें एहसास होता है कि अपने सांसारिक समुदायों (और विवाहों) में पिता और पुत्र के संबंध को दर्शाने का सबसे अच्छा तरीका आदेश-श्रृंखलाएँ नहीं, बल्कि परस्पर आनंद, आदर और प्रेम के बंधन हैं।[85]

और फिर भी, यद्यपि मैं उन अगुवों की सराहना करता हूँ जिन्होंने सार्वजनिक रूप से अपनी गलतियाँ स्वीकार की हैं, बहुत सी हानि पहले ही हो चुकी है। बहुत से साधारण लोग, जिनमें मेरे परिचित बहुत से अगुवे भी हैं, Grudem और Keller दंपति की 2016 से पहले की उन पुस्तकों के द्वारा, जिन्होंने त्रिएकता और विवाह के बीच एक संदिग्ध समानता का प्रचार किया, अनुचित रूप से पूरकतावाद की ओर राज़ी किए गए।[86]

नरम पूरकतावाद का आकर्षण

कुछ कलीसियाएँ प्रतिबद्ध पूरकतावादी हैं क्योंकि वे Piper, Grudem और दूसरों द्वारा प्रस्तुत मूल और आधिकारिक पूरकतावाद को पूरी तरह समझती हैं और उससे सहमत हैं। शायद पूरकतावादी स्थिति-पत्रों, धर्मवैज्ञानिक सेमिनरियों और सांप्रदायिक निष्ठाओं ने उनके दृढ़ विश्वासों को पक्का किया है। परन्तु दूसरी कलीसियाएँ, जैसे वह जिसकी अगुवाई में मैंने सहायता की, पहले स्वयं को पूरकतावादी इसलिए कहती थीं क्योंकि, सच कहूँ तो, मुझे नहीं लगता कि हम इसे पूरी तरह समझते थे!

मैं यह सोचना पसंद करता हूँ कि मैं Grudem के पैकेज वाले उस पूरे पूरकतावाद को कभी स्वीकार न करता जिसके विरुद्ध मैं इस पुस्तक में तर्क देता हूँ। इस विषय की ठीक से जाँच करने से पहले, जब तक मैं मानता था कि मेरी कलीसिया का नरम पूरकतावाद कमोबेश मूल संस्करण जैसा ही है, मैं स्वयं को पूरकतावादी कहकर प्रसन्न था।

पर देखिए, यह नरम पूरकतावादियों को एक जोखिम भरी स्थिति में डालता है। उनकी व्यवहार-पद्धति परस्परतावादी है, फिर भी वे धर्मविज्ञान में पूरकतावादी होने का दावा करते हैं। कोई आश्चर्य नहीं कि पूरकतावाद के रचयिता – जैसे Piper, Grudem, Schreiner और Köstenberger – इन नरम रूपों को ठुकराते रहते हैं। उदाहरण के लिए, एक लेख में Russell Moore पूरकतावादी कलीसियाई समुदायों की उन प्रवृत्तियों पर विलाप करता है, जो कथित रूप से नारीवादी संस्कृति के फंदे में फँस गई हैं, जिससे "अधिकांश सुसमाचारवादी घरों में व्यावहारिक निर्णय मोल-भाव, एक दूसरे के अधीन रहने और आम सहमति की प्रक्रिया से लिए जाते हैं।" वह एक ऐसी कलीसिया के बारे में बताता है जिसमें उसकी एक परिचित स्त्री को "याद नहीं कि उसके पास्टर ने कभी पुरुष के मुखियापन पर शिक्षा दी हो।" उसे डर है कि "यह स्त्रैण बना दिया गया ज़मीनी धर्मविज्ञान शायद अकादमिक जगत और सांप्रदायिक नेतृत्व तक उबलकर

84. मत्ती 3:16-17, यूहन्ना 14:31, लूका 10:21, रोमियों 5:5
85. यूहन्ना 13:34
86. जैसे Grudem की "Systematic Theology" और Keller दंपति की पुस्तकें "The Meaning of Marriage" और "Jesus, Gender and Justice"।

पहुँच रहा है।"[87] इसी प्रकार Köstenberger कलीसिया की अगुवाई में भी यही होने के विरुद्ध चेतावनी देता है:

यह दिखाने को उत्सुक कि पूरकतावाद सांस्कृतिक रूप से आपत्तिजनक नहीं, बल्कि प्रासंगिक भी है, वे अपनी शिक्षा और व्यवहार को संस्कृति के अनुसार इतना ढालने का प्रयास कर सकते हैं कि वह समानतावाद से लगभग अलग पहचाना ही न जा सके। पूरकतावादी कम उग्र स्त्रियों को अगुवाई में रख सकते हैं, ताकि ऊँची आवाज़ वाली, आक्रामक, या शायद अधिक आपत्तिजनक नारीवादी स्त्री-शैली की अगुवाई का आभास न हो।[88]

इन कथनों को पढ़कर अब मुझे एहसास होता है कि मैं कितना घटिया पूरकतावादी था! वास्तव में, जब मैं स्वयं से पूछता हूँ कि जिस कलीसिया की अगुवाई में मैंने सहायता की, वहाँ मैंने इतने लंबे समय तक पूरकतावाद को कैसे स्वीकार किया, तो मुझे एहसास होता है कि इसका बड़ा कारण यह था कि हम वास्तव में बड़े असंगत पूरकतावादी थे। हम जो विश्वास करने की बात कहते थे, उस पर अमल नहीं करते थे। हम स्त्रियों को प्रचार करने देते थे। हम केवल प्राचीन नियुक्त नहीं करते थे: हम प्राचीन-दंपतियों की बात करते थे, और समझाते थे कि यद्यपि तकनीकी रूप से केवल पति ही प्राचीन है, पर क्योंकि वह और उसकी पत्नी एक तन हैं, इसलिए जब परमेश्वर किसी पति को बुलाते हैं, तो वे पत्नी को भी उसके अनुरूप अनुग्रह देते हैं। पत्नियाँ हमारी प्राचीनों की बैठकों में उपस्थित रहती थीं, और हमारे कुछ निर्णयों में उनकी आवाज़ का स्वागत होता था।

यद्यपि मैं दूसरे दंपतियों की ओर से नहीं बोल सकता, मेरा अपना विवाह भी उससे कहीं अधिक समानतावादी था जितना Grudem या Piper चाहता। सेविकाओं (डीकन) के विषय में हमारे धर्मविज्ञान का अर्थ था कि हम विभिन्न सेवकाइयों और छोटे समूहों में स्त्रियों द्वारा पुरुषों की अगुवाई किए जाने से सहज थे। अगुवाई करने वाली स्त्रियाँ विशेषकर हमारी सामाजिक न्याय की सेवकाइयों में खूब फलीं-फूलीं। (यदि आप एक पूरकतावादी कलीसिया हैं, और पूरकतावाद को छोड़ने के लिए तैयार नहीं हैं, पर भीतर से जानते हैं कि इसमें कुछ गड़बड़ हो सकती है, तो मैं पूरे मन से सलाह देता हूँ कि आप भी इनमें से कुछ तरीकों से "समझौता" करने पर विचार करें!)

और फिर भी, जब मैं अपनी यात्रा पर विचार करता हूँ, तो अपनी कथित स्थिति और वास्तविक व्यवहार के बीच इस प्रकार के द्वंद्व में जीना कभी आदर्श नहीं होता। यदि जो हम "भीतर से जानते हैं", वह उससे भिन्न है जिस पर हम विश्वास करने की बात कहते हैं, और वह फिर हमारे व्यवहार से भिन्न है, तो हमारे सामने समस्या है। हम पर स्वयं के प्रति यह दायित्व है कि हमारा धर्मविज्ञान और हमारा व्यवहार एक-दूसरे से मेल खाएँ।

मुझे संदेह है कि यदि तीन बातें न हुई होतीं, तो क्या मैं अपनी स्थिति की फिर से जाँच करने के लिए विवश महसूस करता: पहली यह कि हमारे बहुत से पास्टर और प्रचारक ESV और ESV Study Bible का प्रयोग करने लगे। यद्यपि मुझे उस अनुवाद का अधिकांश भाग प्रिय है, हर बार जब वे नए नियम के उन बहुत से खंडों में से कोई पढ़ते जिनमें कोई प्रेरित केवल "brothers" (भाइयों) से बात करता है, न कि NIV की

87. स्रोत: www.bit.ly/3GL5lom
88. स्रोत: www.bit.ly/3CIkVyG

तरह “brothers and sisters” (भाइयों और बहनों) से, तो मैं सिहर उठता। जब ESV पहली बार आई, तो मैंने उसकी Study Bible की सिफ़ारिश की – फिर उसके बहुत से पाठक मुझसे पूछने लगे कि हम स्त्रियों को प्रचार क्यों करने देते हैं, जबकि उसकी अध्ययन-टिप्पणियाँ इसे पूरे उग्र भाव से चुनौती देती हैं!

दूसरी यह कि कुछ युवा प्राचीन और उनकी पत्नियाँ अपनी धर्मवैज्ञानिक शिक्षा का बड़ा भाग Piper की निजी वेबसाइट और Gospel Coalition से प्राप्त कर रहे थे। उनमें से बहुतों ने, वरिष्ठ प्राचीनों का आदर करने का प्रयास करते हुए भी, यह स्वीकार करने का साहस किया कि अब वे नहीं मानते कि स्त्रियों को प्रचार करना चाहिए। वास्तव में, हमारी दस मंडलियों में से एक को यह अनुमति दी गई कि वह अपनी कलीसिया में स्त्रियों से प्रचार न कराए।

तीसरी और अंतिम बात यह कि कई वर्षों के दौरान हम कलीसियाओं के एक बढ़ते हुए आंदोलन से जुड़ गए और उसमें अधिकाधिक सक्रिय होते गए। इस आंदोलन ने अपने आरंभिक दिनों से ही पूरकतावाद को पूरी तरह अपना लिया था। परन्तु हमारी कलीसिया के विपरीत, इस आंदोलन की अधिकांश कलीसियाएँ जो प्रचार करती थीं, उस पर सचमुच अमल करती थीं। वहाँ कोई स्त्री प्रचारक नहीं थी। केवल पुरुष ही प्राचीन के रूप में अभिषिक्त किए जाते थे। “प्राचीन-दंपतियों” की कोई बात नहीं होती थी। इस आंदोलन के बहुत से अगुवों ने हमारी कलीसिया की ऊपर से समानतावादी दिखने वाली व्यवहार-पद्धति पर चिन्ता जताई – जो समझ में आने वाली बात थी: हमने पूरकतावादी होने का दावा किया था।

एक अवसर पर पूरे आंदोलन की सबसे वरिष्ठ पास्टर-पत्नियों में से एक हमारी कलीसिया में आईं और उन्होंने हमारी पास्टर-पत्नियों को अपनी सीमा में रहने के लिए प्रोत्साहित किया; उन्होंने अपना दृष्टिकोण समझाया: “वे कलीसिया की अगुवाई करने के लिए बुलाए गए हैं, मैं उनकी सेवा करने के लिए बुलाई गई हूँ।” यद्यपि मुझे निश्चय है कि उस बैठक में कुछ पत्नियों को इससे बड़ा प्रोत्साहन मिला, मैं जानता हूँ कि बहुत सी स्तब्ध रह गईं। दशकों तक हमारे साथ कंधे से कंधा मिलाकर खड़ी रहने के बाद, हमारी पत्नियों को पहले कभी केवल पति की सहायिका के रूप में नहीं देखा गया था। हर एक ने अपने-अपने ढंग से अपने जीवन के कुछ सबसे अच्छे वर्ष सेवकाई के अग्रिम मोर्चे पर हमारी कलीसिया को बनाने और मज़बूत करने में लगाए थे। साथ ही, मैं ऐसी आहत स्त्रियों से मिलता रहा जिन्होंने इस आंदोलन की अपनी कलीसियाएँ छोड़ दी थीं या छोड़ रही थीं, क्योंकि उन्हें लगता था कि सेवकाई में स्त्रियों पर रोक लगाई जाती है या उनके पुरुष अगुवे उनकी बात नहीं सुनते।

फिर इस सबके बीच हमारी कलीसिया ने लिंग और प्राचीन-पद के विषय में अपनी समझ की सैद्धांतिक नींव पर फिर से विचार करने का निर्णय लिया, और मैंने Piper, Grudem और Schreiner के धर्मवैज्ञानिक और बाइबल-आधारित तर्कों को नए सिरे से पढ़ना शुरू किया।

Scientology की उस अनुयायी की तरह, जो अपने धर्म का आनंद तब तक लेती है जब तक उसे वह गुप्त लिफ़ाफ़ा खोलने के लिए आमंत्रित नहीं किया जाता और वह यह नहीं जान लेती कि वह वास्तव में इस ब्रह्मांड में फँसी एक थेटन (Thetan) है, मुझे भी पूरकतावाद तब तक पसंद था जब तक मैंने उसकी कुछ भीतरी शिक्षाओं को सचमुच समझ नहीं लिया। पूरकतावाद संसार भर की कलीसियाओं में फैलने में चाहे जितना

सफल रहा हो, निकट से जाँचने पर वह ईश्वरीय प्रकाशन कम, और दमन के एक और रूप को छिपाने वाला एक परिष्कृत धर्मवैज्ञानिक ढाँचा कहीं अधिक लगता है।

बहिष्कार का भय

एक और कारण है कि मेरी अपनी कलीसिया जैसी इतनी सारी कलीसियाओं और संप्रदायों में पूरकतावाद की जीत हुई। व्यवहार-विज्ञान में पूर्वाग्रह (bias) पर हुए एक हाल के अध्ययन में यह दिखाया गया है कि अधिकतर मामलों में हम वह नहीं मानते जो सच है; हम वह मानते हैं जिससे हमारे गठबंधन न टूटें।[89] यह बात अशुभ लग सकती है, पर वास्तव में यह एक अवचेतन पूर्वाग्रह है। मनुष्य होने के नाते, चाहे मसीही हों या गैर-मसीही, हम हर नए विचार पर एक ही सहज प्रश्न के साथ प्रतिक्रिया करते हैं: "अगर मैं इसे मान लूँ, तो समाज में मेरी प्रतिष्ठा और इस दुनिया में मेरी जगह का क्या होगा?" यह नहीं कि "क्या यह सच है?" बल्कि यह कि "इससे मेरे जीवन पर क्या असर पड़ेगा?" (इस विषय पर मैंने परिशिष्ट 6: तथ्य शायद हमारा मन क्यों न बदलें में कहीं अधिक गहराई से विचार किया है।)

सोचिए कि यह उन कलीसियाओं में कैसे घटित हो सकता है जो स्त्रियों की अधीनस्थता के अपने सिद्धांत पर पुनर्विचार करने का निर्णय लें। 1960 के दशक से पहले कलीसियाओं और संप्रदायों की अगुवाई आम तौर पर वेतन पाने वाले पुरुष करते थे – उनका मानना था कि स्त्रियाँ इस काम के योग्य नहीं हैं। लगभग सभी कलीसियाओं का यही मत था। फिर अधिकांश कलीसियाओं और संप्रदायों ने काफ़ी अचानक अपना मत बदल लिया और कहने लगे कि स्त्रियाँ और पुरुष क्षमता में बराबर हैं। अब बहस इस बात पर थी कि हर कलीसिया या संप्रदाय कहाँ खड़ा होगा: स्त्रियों को अगुवाई और प्रचार-मंच में शामिल करेगा, या उन्हें बाहर रखेगा।

बेशक, इस सब के बीच सत्य की सच्ची खोज भी हुई, पर आइए मानव स्वभाव के बारे में भोले न बनें। इस विषय पर निर्णय मुख्य रूप से वेतन पाने वाले पादरियों को लेना था, बेंचों पर बैठे लोगों को नहीं। उस समय के किसी कलीसियाई अगुवे की जगह पर खुद को रखकर देखिए, जो निर्णय लेने की कोशिश कर रहा है। आपके हर विचार के पीछे छिपी बात क्या है? मुझे यह पता होना चाहिए, क्योंकि मैं सारी उम्र वेतन पाने वाला पादरी रहा हूँ: "मैं इस कलीसिया में अपना पद, या अपनी नौकरी, खोना नहीं चाहता।" फिर कहता हूँ, यह कोई आरोप नहीं है। अपने सामूहिक निर्णयों के व्यक्तिगत प्रभाव और परिणामों के बारे में बिल्कुल न सोचना बस असंभव है।

व्यवहार-विज्ञान के विशेषज्ञों के अनुसार, इसके बाद कुछ शुरुआती अपनाने वाले (early adopters) सामने आते हैं। इस मामले में वे लोग होंगे जो यह कहने लगते हैं कि पवित्रशास्त्र से उन्हें विश्वास हो गया है कि स्त्रियाँ भी अगुवाई कर सकती हैं। अब बाकी अगुवे क्या सोच रहे हैं? "मैं आपके साहस की प्रशंसा करता हूँ, पर जब तक मैं यह न देख लूँ कि बहुमत किधर जाता है, मैं पीछे ही रहूँगा।" बेशक, वे यह कहते नहीं – पर वे सहज रूप से समझते हैं कि अल्पसंख्यक अपनी जगह, और शायद अपनी नौकरी भी, खो देंगे।

89. मैंने परिशिष्ट 6 संज्ञानात्मक पूर्वाग्रह (cognitive bias) के विषय को समर्पित किया है।

इसी अनिश्चितता में, जिसमें अधिकतर लोग तब तक अपना मन नहीं बदल सकते थे जब तक उन्हें यह पता न हो कि बहुमत बदलेगा, सुसमाचारवादी (इवैन्जेलिकल) जगत के दो उभरते सितारों की ओर से एक स्पष्ट और निर्मल आवाज़ आई: "सुसमाचारवादी नारीवादियों की बात मत सुनिए। वे पवित्रशास्त्र से समझौता करने वाले, संस्कृति के आगे घुटने टेकने वाले, संस्कृति को नष्ट करने वाले, और स्त्री-पुरुष का भेद मिटाने वाले हैं। और इसके अलावा: हम बराबर हैं पर भिन्न हैं; हम स्त्री-पुरुष की पूरकता को मानते हैं; पुरुष का अधिकार और स्त्री की अधीनता त्रिएकता में झलकती है; हमारा मत ही ऐतिहासिक मत है; और यह रही एक वेबसाइट, और एक बाइबल अनुवाद, और एक परिषद्, और एक सम्मेलन, और शक्तिशाली, मनमोहक प्रचारक, और यदि अब भी आपको कोई संदेह हो, तो आधारभूत ग्रंथ।"

अविश्वसनीय बात यह है कि 1960 के दशक के मध्य से 1980 के दशक के अंत तक एक स्वस्थ और खुली बहस चली थी, जिसमें दोनों पक्ष उन थोड़े-से विवादित पाठों की सबसे संभावित व्याख्या पर तर्क करते थे। फिर वे लोग आए जिन्होंने डैनवर्स वक्तव्य के द्वारा यह दावा किया कि परस्परतावादी बाइबल के अधिकार को नकारते हैं और उसके बजाय अपने नारीवादी एजेंडे के अनुसार पवित्रशास्त्र को तोड़-मरोड़ देते हैं। जिन्होंने पूरकतावादी रुख का विरोध किया, वे कहते हैं: "यह इस बात पर हर बहस और संवाद का अंत था कि बाइबल वास्तव में क्या कहती है।"[90]

पूरकतावादियों के प्रयास और उनका संदेश राजनीतिक रूप से इतने चतुर और कुशल थे कि उन्होंने दुविधा में पड़े लोगों को आसानी से जीत लिया। इस बहस में, स्त्रियों को शामिल करने के कट्टर विरोधी अब पूरी तरह आश्वस्त हो गए। बीच वाले लोग, जो दुनिया में अपनी जगह बनाए रखने को उत्सुक थे – उनके लिए निर्णय पहले ही ले लिया गया। और जो पादरी पूरकतावादी नहीं थे, वे – यदि वे इतने भाग्यशाली नहीं थे कि किसी समानतावादी कलीसिया या संप्रदाय में हों – या तो छिपकर काम करने पर मजबूर हुए, या उन्हें छोड़कर कहीं और नए सिरे से शुरुआत करनी पड़ी। दोनों ही तरह से यह एक पीड़ादायक अनुभव था।

बहिष्कार का यह डर इतना शक्तिशाली है कि वह बहरा और अंधा कर सकता है। जब मैं उन बहुत थोड़े-से पूरकतावादी विद्वानों को पढ़ता हूँ, जिन्हें अपने खेमे से बाहर के लोगों की रचनाओं की समीक्षा का काम सौंपा जाता है, तो मैं बार-बार चकित होता हूँ कि उनका लहजा कितना उपेक्षापूर्ण है, जो कहा जा रहा है उसके प्रति वे कितने बहरे हैं, और उनके तर्क कितने दोषपूर्ण दिखाई देते हैं। फिर भी, यही लोग, जिन्हें अपने मत को चुनौती देने वाली रचनाओं की आलोचना का काम सौंपा जाता है, आम तौर पर अपने पूरकतावादी संप्रदायों, सेमिनरियों और संगठनों के सर्वोच्च अकादमिक नेतृत्व में होते हैं। अमेरिका की सभी छह सदर्न बैपटिस्ट (Southern Baptist) सेमिनरियों को लीजिए: हर साल शिक्षकों को अपनी नौकरी बचाए रखने के लिए डैनवर्स वक्तव्य पर हस्ताक्षर करने पड़ते हैं। हर। साल। इस विषय पर संदेह के लिए कोई जगह नहीं है। इसी तरह, अपने रचने वालों के जीते-जी ही, पूरकतावाद इतना ऊँचा उठ गया कि वह सुसमाचार जैसा अटल सत्य बन बैठा।

फिर भी, अगुवे और धर्मविज्ञानी पूरकतावादी खेमा छोड़ते जा रहे हैं। यदि मेज़ पर जगह पाने की कीमत चुप्पी है, तो यह कीमत शायद बहुत ऊँची है। Beth Moore, जो स्वयं लंबे समय तक सदर्न बैपटिस्ट

90. देखें Kevin Giles, What the Bible Actually Teaches on Women, अध्याय 2। Giles, जो 70 के दशक के मध्य से इस बहस में अग्रणी रहा है, यह कहानी बताता है।

संप्रदाय की सबसे प्रमुख महिला हस्ती रही, हाल ही में यह समझ गई कि उसके संप्रदाय में पूरकतावाद को किस दुर्भाग्यपूर्ण ढंग से बाइबल के अधिकार के साथ एक कर दिया गया है, और उसने सार्वजनिक रूप से उस संप्रदाय को छोड़ दिया। उसने हाल ही में उस व्यवस्था के रचने वालों को चुनौती दी: "हम एक व्यवस्था खड़ी करने में भागीदार होकर फिर अपनी मेज़ों पर बैठे-बैठे इस बात से अनजान नहीं रह सकते कि कई लोग उसके नाम पर क्या कर रहे हैं। अगर आपने कुछ ऐसा बनाने में मदद की जो फ्रैंकनस्टाइन का राक्षस बन गया, तो जाओ विक्टर, अपना फंदा उठाओ, और उस राक्षस को खींचकर वापस लाओ।"[91] अपने अकादमिक क्षेत्र के ऐसे विशेषज्ञों की, जो पहले पूरकतावादी थे, बेस्टसेलर पुस्तकें लगातार प्रकाशित हो रही हैं, जो यही बात कहती हैं।[92] यदि कभी इस पतित और विफल होते धर्मविज्ञान को छोड़ने का समय था, तो वह समय अभी है।

पूरकतावाद के इतिहास को एक ओर रखकर, अब समय है कि हम बाइबल के मुख्य पाठों में उतरें। अगले अध्याय में जब हम ऐसा करेंगे, तो हमें जल्दी ही पता चल जाएगा कि पूरकतावाद कहाँ गलत होता है – यह बिल्कुल शुरुआत से ही शुरू हो जाता है ...

91. देखें 8 अप्रैल 2020 को Beth Moore की ट्विटर फ़ीड।
92. सबसे हाल में ऐसी पुस्तकें हैं: Beth Allison Barr की "The Making of Biblical Womanhood" और Kristin Du Mez की "Jesus and John Wayne: How White Evangelicals Corrupted a Faith and Fractured a Nation"।



4

स्वर्गलोक में बनी साझेदारी

"हव्वा न तो आदम से श्रेष्ठ है, न हीन, बल्कि उसकी बराबर है। वह दो ध्रुवों की जोड़ी का आधा हिस्सा है, जैसे उत्तरी ध्रुव के सामने दक्षिणी ध्रुव। परमेश्वर के उद्देश्यों को पूरा करने में वह उसकी सबसे मज़बूत सहयोगी है, और जब वह रास्ते से भटकता है, तो उसकी पहली रुकावट।" Victor Hamilton[93]

Happy Feet फ़िल्म में जब पेंगुइन मम्बल (Mumble) भविष्यवक्ता लवलेस (Lovelace) से मिलता है, तो उसे लवलेस की गर्दन के चारों ओर प्लास्टिक का एक लपेटा हुआ टुकड़ा दिखाई देता है। लवलेस ज़ोर देकर कहता है कि यह उसका "पवित्र ताबीज़" है, जो उसे "रहस्यमय प्राणियों" ने दिया है,[94] और इसलिए वही उसकी शक्तियों का आधार है। बेशक, जिस बात का मम्बल को केवल संदेह है, वह हम जानते हैं: उसकी गर्दन पर कचरे का एक टुकड़ा है, जिसमें वह छोटा पेंगुइन रहते हुए तैरते-तैरते फँस गया होगा। जब मम्बल और उसके अनोखे दोस्त उसे फिर से ढूँढ़ते हैं, तो लवलेस को साँस लेने और बोलने में कठिनाई हो रही है।[95] मम्बल इस निष्कर्ष पर पहुँचता है: "उसकी गर्दन पर लगी चीज़ बहुत कसी हुई है। यह उसका गला घोंट रही है!" शुरू में लवलेस प्लास्टिक के उस टुकड़े से किसी तरह की शक्ति पाता है, पर जब वह मान लेता है कि वह कितना विनाशकारी है और उसे कितना सीमित करता है, तभी वह अंततः उससे मुक्त हो पाता है। वह आशीष नहीं, बल्कि श्राप है।

इसी तरह "मसीही" पितृसत्ता – जिसे पूरकतावाद उत्पत्ति 2-3 में "परमेश्वर की भली रचना" का परिणाम बताता है – सत्य का ताबीज़ होने का दावा करती है: पुरुष के अधिकार और स्त्री की अधीनता का एक ईश्वरीय सिद्धांत, जो घर और कलीसिया में लागू किया जाए, तो परमेश्वर की आशीष लाता है। जैसा कि मैं इस अध्याय में आपको दिखाऊँगा, यह स्त्री-पुरुष संबंधों के लिए परमेश्वर के सर्वोच्च उद्देश्य का बिल्कुल भी हिस्सा नहीं है – न घर में, न कलीसिया में, न कहीं और। बल्कि यह एक पतित संसार में बिगड़े और घुटे हुए स्त्री-पुरुष संबंधों का परिणाम है।

पवित्रशास्त्र की कहानी एक वाटिका में शुरू होती है, जिसमें मनुष्यजाति और सृष्टि के लिए परमेश्वर के उद्देश्य महिमामय ढंग से प्रकट होते हैं। फिर अराजकता छा जाती है। शैतान हव्वा और आदम को परीक्षा में डालता

93. Victor Hamilton, The Book of Genesis: Chapters 1–17, पृ. 181.
94. इस दृश्य का वीडियो क्लिप देखें: www.bit.ly/3BzJGvK
95. इस दृश्य का वीडियो क्लिप देखें: www.bit.ly/3mCpcyb

है, ताकि वे परमेश्वर के स्वरूप-धारकों के रूप में अपनी ऊँची गरिमा गँवा दें। धन्यवाद हो कि बाद में यीशु में छुटकारा आता है। वे परमेश्वर का सच्चा स्वरूप हैं; वे भी एक वाटिका में शैतान की परीक्षा का सामना करते हैं, पर इस बार उसके झूठ के सामने अडिग रहते हैं। कहानी तब समाप्त होती है जब जो काम यीशु ने अपने पहले आगमन पर शुरू किया था, उसे वे अपने दूसरे आगमन पर पूरा करते हैं – और एक अनुपम वाटिका-नगर लाते हैं, जिसमें मनुष्यजाति और सृष्टि के लिए उनके मूल उद्देश्य विजयी हो चुके हैं। मसीही धर्मविज्ञान को संसार की इस महान कहानी से अलग नहीं किया जा सकता। यदि अंतिम छुटकारा मूल सृष्टि की पुनर्स्थापना है, तो हमें चीज़ों की शुरुआत को सही ढंग से समझना होगा। इसी कारण धर्मविज्ञानीय अध्ययन बाइबल के शुरुआती (और अंतिम) अध्यायों को इतना महत्व देता है। इसी कारण डैनवर्स वक्तव्य, पूरकतावादियों का घोषणापत्र, वहीं से शुरू होता है जहाँ बाइबल शुरू होती है, और ये कथन प्रस्तुत करता है:

आदम और हव्वा दोनों परमेश्वर के स्वरूप में सृजे गए, व्यक्तियों के रूप में परमेश्वर के सामने बराबर, और अपने पुरुषत्व और स्त्रीत्व में भिन्न। ... पुरुष और स्त्री की भूमिकाओं में भेद परमेश्वर ने सृष्टि की व्यवस्था के अंग के रूप में ठहराए हैं, और हर मानव हृदय में इनकी गूँज होनी चाहिए। ... विवाह में आदम का सिर होना परमेश्वर ने पतन से पहले स्थापित किया था, और यह पाप का परिणाम नहीं था।

इनमें से हर वाक्य के बाद यह वक्तव्य प्रमाण-पद देता है, जिनमें सबसे बार-बार और सबसे प्रमुख रूप से उत्पत्ति 1-3 के पद हैं। वास्तव में, एक ही पद तीनों कथनों के समर्थन में प्रयोग किया गया है – यदि कभी कोई पद सिद्धांत का भार उठाने वाला था, तो यही है: "फिर यहोवा परमेश्वर ने कहा, 'आदम का अकेला रहना अच्छा नहीं; मैं उसके लिये एक ऐसा सहायक बनाऊँगा जो उससे मेल खाए।'" (उत्पत्ति 2:18)

उत्पत्ति 1-3, और विशेष रूप से 2:18, की इसी व्याख्या के आधार पर पूरकतावादियों ने आगे घर में, कलीसिया में, और व्यापक समाज में भी "पुरुष के सिर होने" (मुखियापन) के पक्ष में तर्क दिए हैं,[96] जिसमें स्त्रियाँ, यद्यपि "गरिमा और मूल्य में बराबर" हैं, फिर भी उन्हें अधिकार रखने वाले पुरुषों के अधीन रहना है।[97] वास्तव में, Recovering Biblical Manhood and Womanhood के बाईस लेखकों में से उन्नीस स्त्रियों की अधीनस्थता के अपने तर्क का आधार सृष्टि या सृष्टि की व्यवस्था को बनाते हैं।

यद्यपि आजकल हम में से थोड़े ही लोग इस बात का विरोध करेंगे कि बाइबल स्त्री और पुरुष की समान गरिमा सिखाती है, प्रश्न यह है कि क्या हमें इस विचार को चुनौती देनी चाहिए कि पुरुष का अधिकार और स्त्री की अधीनता पतन से पहले की सृष्टि का अंग है। इसका पता लगाने में हम यह पूरा अध्याय लगाएँगे।

96. सभी पूरकतावादी यह नहीं कहते कि पुरुष का अधिकार व्यापक समाज तक फैला है, यद्यपि John Piper और Andreas Köstenberger जैसे प्रमुख पूरकतावादी निश्चय ही ऐसा कहते हैं। Köstenberger के शब्दों में: "इस बात पर ज़ोर देना कि स्त्रियाँ घर के बाहर कोई भी गतिविधि कर सकती हैं, और हर लिंग के लिए परमेश्वर के विशिष्ट सृष्टि-उद्देश्य की लगभग कोई या बहुत कम परवाह न करना – यह बाइबल की शिक्षा के विपरीत है और अत्यंत समस्यापूर्ण है।" (स्रोत: www.bit.ly/3by3zsy)

97. Keller दंपति भी यही दावा करते हैं: "पति के सिर होने का कोमल, सेवा करने वाला अधिकार और पत्नी की अधीनता का दृढ़, अनुग्रहपूर्ण उपहार हमें फिर वैसा बना देते हैं, जैसा हमें सृष्टि के समय होना था।" (Tim और Kathy Keller, The Meaning of Marriage, अध्याय 6.)

उत्पत्ति 1 – सृष्टि के राजा और रानी

उत्पत्ति में सृष्टि के दो वृत्तांत हैं, एक उत्पत्ति 1 में और दूसरा उत्पत्ति 2 में। हर एक घटनाओं का अलग क्रम और अलग विषयगत ज़ोर प्रस्तुत करता है, फिर भी कुछ साझे विचार उन्हें एक साथ बाँधे रखते हैं। पहले अध्याय में मनुष्य परमेश्वर की छठे दिन की सृष्टि हैं: "फिर परमेश्वर ने कहा, 'हम मनुष्य को अपने स्वरूप के अनुसार अपनी समानता में बनाएँ। ...' तब परमेश्वर ने मनुष्य को अपने स्वरूप के अनुसार उत्पन्न किया, अपने ही स्वरूप के अनुसार परमेश्वर ने उसको उत्पन्न किया; नर और नारी करके उसने मनुष्यों की सृष्टि की।"

सृष्टि के पहले पाँच दिनों में परमेश्वर आज्ञा देते हैं, "... हो ...", पर यहाँ वे कहते हैं, "हम ... अपने स्वरूप के अनुसार ... बनाएँ।" इस अंतिम सृजनात्मक कार्य में मनुष्य निस्संदेह उनकी सृष्टि का शिखर हैं। न स्वर्गदूत, न आकाशगंगाएँ, न हमारे ग्रह पर विचरने वाले संवेदनशील प्राणियों में से कोई उनका स्वरूप धारण करता है। उसे धारण करने का अर्थ क्या है?

इसका अर्थ है कि हम परमेश्वर को दर्शाने के लिए बनाए गए हैं। क्योंकि परमेश्वर से हमारा एक अनोखा संबंध है, और उस अद्भुत संसार से भी, जिसमें हम स्वयं को पाते हैं, एक अनोखा संबंध है, इसलिए हम परमेश्वर और उनकी सृष्टि के बीच दोनों के प्रतिनिधि बनकर खड़े हैं। हम सृष्टि के याजकों के रूप में सृष्टि का प्रतिनिधित्व करते हैं: बाकी सृष्टि अपने रचयिता की आराधना शब्दों में नहीं कर सकती, और हम उसकी ओर से उस आराधना को आवाज़ देते हैं। हम सृष्टि पर परमेश्वर के प्रतिनिधि-शासकों के रूप में परमेश्वर का प्रतिनिधित्व करते हैं, और सारी सृष्टि के सामने परमेश्वर के भले चरित्र को प्रतिबिंबित करते हैं। केवल अकेले नहीं, बल्कि मनुष्यजाति के साथ और उसके द्वारा परमेश्वर सृष्टि की देखभाल और उसकी अगुवाई करना चाहते हैं। इसी कारण हमारा "शासन" परमेश्वर के चरित्र को प्रतिबिंबित करना चाहिए। जिस स्वरूप को हम धारण करते हैं, उसे हमारी गहरी आत्मा में छिपे किसी जन्मजात चिह्न के बजाय एक ऐसे कार्य के रूप में समझना अधिक उपयोगी है जो विशेष रूप से हमें सौंपा गया है। N.T. Wright इस विचार को बहुत अच्छी तरह व्यक्त करता है, जब वह कहता है कि हमें एक "तिरछा रखा हुआ दर्पण बनना है: कोण सही कीजिए, और आप वे चीज़ें देख सकते हैं जो अन्यथा आपको दिखाई नहीं देतीं। स्वरूप-धारकों के रूप में हमारी बुलाहट यह है कि हम अपने जीने और काम करने के ढंग से अपने आस-पास के लोगों तक परमेश्वर के विषय में जानकारी प्रतिबिंबित करें।"[98]

विशेष रूप से पुरुषों और स्त्रियों, नर और नारी, के बीच मूलभूत समानता पर ध्यान दीजिए। एक ऐसे संसार में, जहाँ पुरुषों ने स्त्रियों का मूल्य घटाया है, यह खंड सुधार का वचन देता है: वह उस परमेश्वर के मूल्य को, जिसके स्वरूप में स्त्री बनाई गई है, स्वयं स्त्री के मूल्य से जोड़ता है। केवल पुरुष ही नहीं, हम दोनों परमेश्वर के स्वरूप में सृजे गए हैं, ताकि दोनों उन सब के सामने, जो उनके हाथों ने बनाया है, परमेश्वर के प्रेम, बुद्धि और सामर्थ्य का प्रतिनिधित्व करें।

98. Alice Mathews, Gender Roles and the People of God, अध्याय 13 में उद्धृत।

फिर परमेश्वर ने कहा, “हम मनुष्य को अपने स्वरूप के अनुसार अपनी समानता में बनाएँ; और वे समुद्र की मछलियों, और आकाश के पक्षियों, और घरेलू पशुओं, और सब जंगली पशुओं पर अधिकार रखें। ...” और परमेश्वर ने उनको आशीष दी, और उनसे कहा, “फूलो-फलो, और पृथ्वी में भर जाओ, और उसको अपने वश में कर लो; और समुद्र की मछलियों, तथा आकाश के पक्षियों, और पृथ्वी पर रेंगनेवाले सब जन्तुओं पर अधिकार रखो।” (उत्पत्ति 1:26-28)

हम संसार को दो तरीकों से आशीष देते हैं: बच्चों को जन्म देकर और पृथ्वी की भंडारी के समान देखभाल करके। हम, नर और नारी दोनों, मिलकर परमेश्वर की समानता को प्रतिबिंबित करने के लिए सृजे गए हैं; हमें पशु-जगत पर अधिकार दिया गया है, और यह काम सौंपा गया है कि हम पृथ्वी को और लोगों से भर दें, जो हमारे साथ मिलकर परमेश्वर की भली सृष्टि के अधिक से अधिक हिस्से को अदन जैसा बनाएँ।

विशेष रूप से ध्यान दीजिए कि भले ही नर और नारी अलग दिखते हों, और उनमें से एक बच्चों को जन्म देने और स्तनपान कराने में सक्षम है और दूसरा नहीं, फिर भी यह खंड पुरुषों और स्त्रियों के लिए निर्देशों के दो अलग-अलग समूह नहीं बनाता। केवल पुरुषों को ही नहीं, बल्कि स्त्रियों को भी परमेश्वर के प्रतिनिधि-शासकों के रूप में अधिकार दिया गया है, जो हमारी पूर्ण मानवता का एक पहलू है। परमेश्वर के पूरे स्वरूप को प्रतिबिंबित करने के लिए पुरुष और स्त्री दोनों का साथ होना ज़रूरी है। यही एक गठबंधन की आशीष है। हर लिंग में जैविक या मनोवैज्ञानिक रूप से जो कुछ भी अनोखा हो, मुद्दा यह है कि मनुष्यजाति के रूप में परमेश्वर ने हमारे लिए जो पूरी बुलाहट रखी है, उसमें हम में से हर एक अपना पूरा अस्तित्व लगाता है। परमेश्वर मनुष्यजाति के लिए किसी “पुरुषोचित” शासन को अपने मानक और योजना के रूप में स्थापित नहीं करते। नहीं, नर और नारी मिलकर परमेश्वर का स्वरूप धारण करते हैं। “संसार के सामने परमेश्वर के राज्य का प्रतिनिधित्व करने में केवल इसी प्रकार की साझी भागीदारी उस परमेश्वर के साथ न्याय कर सकती है, जिसका स्वरूप हम धारण करते हैं।”[99]

वास्तव में, पुरुष और स्त्री का एक सिद्ध मिलन रचने का परमेश्वर का विचार इस अध्याय के प्रवाह में एक आश्चर्य के रूप में आता है। सृष्टि के पिछले दिनों में परमेश्वर आकाशमंडल, जल और पृथ्वी को अलग करके एक अव्यवस्थित संसार में व्यवस्था स्थापित करते हैं। तारे भी अलग-अलग समय, दिन और वर्ष निर्धारित करते हैं, और सूर्य दिन पर प्रभुता करता है, जबकि चंद्रमा रात का पहरेदार है। जब मनुष्यों को बाकी सृष्टि की अगुवाई सौंपी जाती है, तो हर कोई और हर चीज़ “अपनी जगह जानती है।” पर जब नर और नारी की सृष्टि की बात आती है, तो परमेश्वर सीमाएँ खींचना बंद कर देते हैं और उन्हें पूर्ण साझेदारों के रूप में एक साथ बाँध देते हैं, लिंग पर आधारित भूमिकाओं या पदानुक्रम के ज़रा-से भी संकेत के बिना। परमेश्वर आदम से कह सकते थे, “तू पृथ्वी को वश में कर,” और हव्वा से, “तू बच्चों का पालन-पोषण कर।” इसके बजाय वे सह-माता-पिता, सह-याजक और सह-शासक के रूप में उनके पूर्ण सहयोग पर ज़ोर देते हैं। बाद के इतिहास में हम मनुष्य कुछ चुने हुए लोगों को राजा और रानी नियुक्त करेंगे, पर परमेश्वर का मूल निर्धारण यह है कि हर स्त्री रानी हो और हर पुरुष राजा।

99. Sarah Bessey “Jesus Feminist”, अध्याय 5 में J. R. Daniel Kirk का यह कथन उद्धृत करती है।

परमेश्वर की इस उत्तम पुस्तक का यह आरंभिक अध्याय बाद के हर अध्याय और पूरी कहानी के लिए ढाँचा तय करता है। कम से कम अब तक परमेश्वर द्वारा प्रकट की गई कोई लैंगिक भूमिकाएँ नहीं हैं। एक लिंग का दूसरे पर अधिकार होने की कोई बात नहीं हुई है। पुरुष और स्त्री मिलकर परमेश्वर की पृथ्वी पर शासन करते हैं – एक ऐसा गठबंधन, जिसे C.S. Lewis ने बहुत सुंदर ढंग से तब चित्रित किया है, जब एडमंड, सूज़न, पीटर और लूसी नार्निया के चार सिंहासनों पर बैठते हैं।

पूरकतावादी कहता है, "अब तक सब बहुत अच्छा है। ज़रा दूसरे और तीसरे अध्याय तक, यानी दूसरे वृत्तांत तक, पहुँचने दीजिए।" पिछले कई दशकों में पूरकतावादियों ने पतन से पहले हव्वा पर आदम की कथित अगुवाई के पक्ष में तर्कों की काफ़ी लंबी सूची तैयार कर ली है। मैं इन तर्कों को स्पष्ट रूप से रखूँगा और बारी-बारी से हर एक का उत्तर दूँगा, और दिखाऊँगा कि इनमें से कोई भी पाठ में स्पष्ट रूप से नहीं लिखा है। फिर भी, यह सूची इसे पहली बार सुनने वाले को इतनी विश्वसनीय लगती है कि वह मान लेता है कि मामला बंद हो चुका है। मैं इस सूची की शक्ति जानता हूँ: उस समय के प्रसिद्ध पास्टर-धर्मविज्ञानी और मेगा-चर्च प्रचारक Mark Driscoll की एक उपदेश-शृंखला से प्रेरित होकर, मैंने एक बार इसी सूची के कुछ बिंदुओं का प्रचार भी किया था। एक बाइबल शिक्षक के रूप में, जो "सच, पूरा सच और सच के सिवा कुछ नहीं" सिखाने का दावा करता है, अब मैं पीछे मुड़कर काफ़ी पछतावे के साथ देखता हूँ कि मैं बाइबल के आरंभिक अध्यायों की इस खींचतान वाली व्याख्या में उलझ गया था।

इस अध्याय में मैं उन पाँच सबसे प्रमुख अनुमानों को सूचीबद्ध करूँगा, जिनका उपयोग विभिन्न पूरकतावादी प्रचारक और विद्वान पतन से पहले हव्वा पर आदम की अगुवाई सिद्ध करने के प्रयास में करते हैं। परिशिष्ट 2 में मैं छह अन्य तर्कों का खंडन करता हूँ।

पहला तर्क: पहले आदम रचा गया, फिर हव्वा

पूरकतावादी यह तर्क देता है कि उत्पत्ति 2 में आदम पहले सृजा गया और हव्वा बाद में, और इससे यह प्रकट होता है कि पुरुष स्त्री का अगुवा है। वास्तव में, पौलुस ने 1 तीमुथियुस 2:13 में इसी तथ्य की ओर ध्यान दिलाया: "क्योंकि आदम पहले, उसके बाद हव्वा बनाई गई।"

तीमुथियुस से कहे गए पौलुस के शब्दों पर मैं अध्याय 7 में पूरी तरह विचार करूँगा। अभी के लिए ध्यान दीजिए कि पौलुस यह नहीं कहता, "आदम हव्वा का अधिकारी था," जो पौलुस के आशय की केवल एक व्याख्या है। 1 तीमुथियुस 2 के सावधानीपूर्वक अध्ययन के आधार पर मैं अध्याय 7 में दो और व्याख्याएँ प्रस्तुत करूँगा। 1 तीमुथियुस 2 में पौलुस का आशय चाहे जो भी रहा हो, उत्पत्ति 2 को पहले उसके अपने प्रकाश में पढ़ा जाना चाहिए। यदि हम मान भी लें कि पौलुस ने स्त्रियों की अधीनस्थता के समर्थन में उत्पत्ति 2 का उपयोग किया (मुझे पूरा विश्वास है कि उसने ऐसा नहीं किया), तो भी इसका अनिवार्य अर्थ यह नहीं होगा कि उत्पत्ति 2 अपने आप में यह सिखाता है। Douglas Moo समझाता है कि नए नियम के लेखक कभी-कभी पुराने नियम के खंडों का उपयोग निर्णायक व्याख्याओं या प्रमाणों के रूप में नहीं, बल्कि प्रसंग-विशेष के तर्कों या अभिव्यक्ति के माध्यम के रूप में करते हैं, ताकि जो बात वे कह रहे हों, उसे सहारा मिले।[100]

100. D.A. Carson (ed) Hermeneutics, Authority and Canon, पृ. 188

परमेश्वर दोनों लिंगों को एक साथ सृज सकते थे, पर उन्होंने ऐसा नहीं किया। क्यों? एक उत्तर सबसे आगे है: आदम पहले रचा जाता है और फिर हव्वा, क्योंकि परमेश्वर आदम (और उसके पुत्रों) को यह दिखाना चाहते हैं कि हव्वा (और उसकी पुत्रियों) – परमेश्वर की अंतिम सृष्टि – के बिना वह कितना बुरी तरह अकेला, अधूरा और अपर्याप्त है। उत्पत्ति 1 में समुद्रों और बीजों, तारों और समुद्री जीवों, पक्षियों और पशुओं की उत्पत्ति के बाद परमेश्वर की मुकुट-रूपी सृष्टि आती है: "मनुष्य ... नर और नारी।" ध्यान दीजिए कि बढ़ती हुई प्रतीक्षा का यही भाव अगले अध्याय में भी दिखाई देता है, जब परमेश्वर की सृजनात्मक प्रतिभा का अंतिम कार्य अदन को – जिसमें उसकी सारी वनस्पतियाँ, जीव-जंतु और उसका एकमात्र पुरुष पहले से मौजूद हैं – एक अत्यंत सुंदर स्त्री देता है। उत्पत्ति 2 में सृष्टियों के इस चढ़ते हुए क्रम के साथ-साथ अपनी समकक्ष के लिए आदम की लालसा और गहरी होती जाती है। कोई भी पशु (और वह उन सब को देखते हुए गुज़रता है!) उसका जीवन-साथी नहीं निकलता। पर जब उसकी भेंट परमेश्वर के सबसे बड़े उपहार से होती है – उस एकमात्र प्राणी से, जो पहले से जीवित पदार्थ से बनाया गया – तो वह एक प्रेम-गीत में फूट पड़ता है, जिसके चरमोत्कर्ष वाले पहले शब्द हैं: "आख़िरकार यह ...!" (Zōt happa'am ... !)

इसलिए उत्पत्ति 2 का सीधा-सादा पाठ पुरुष के अधिकार से स्त्री की अधीनता की ओर नहीं, बल्कि मानवीय अधूरेपन से एक गहरे मिलन और साझेदारी की ओर बढ़ता है। फिर भी, ऐसा लगता है कि पूरकतावादी इस खंड में अधिक पढ़ने पर अड़े हुए हैं। उदाहरण के लिए James Hurley को लीजिए, जिसने 1981 में यह तर्क गढ़ा कि पहले पाठक आदम के पहले होने को उसका अधिकार समझे होंगे, क्योंकि प्राचीन काल में ज्येष्ठाधिकार (primogeniture) का विचार था, जिसके अनुसार परिवार के सबसे बड़े पुत्र को अपने भाइयों को मिलने वाले हिस्से से दुगुनी संपत्ति विरासत में मिलती थी, और वही परिवार की अगुवाई संभालता था।[101] पर आदम "जन्मा" नहीं था, और हव्वा उसकी बहन नहीं थी। और पवित्रशास्त्र में कहीं भी ज्येष्ठाधिकार को सृष्टि के क्रम या पति-पत्नी के संबंधों पर लागू नहीं किया गया है।

इस्राएल के आस-पास की अत्यधिक पितृसत्तात्मक संस्कृतियों की अपनी सृष्टि-कथाएँ थीं, जैसे अत्राहासिस (Atrahasis) की मेसोपोटामियाई सृष्टि-कथा, जिसमें तियामत (Tiamat) का वर्णन मर्दुक (Marduk) से पहले होता है और वह उससे पहले अस्तित्व में है, और फिर भी उस संस्कृति में पितृसत्ता का बचाव किया जाता था।[102] स्पष्ट है कि विभिन्न सृष्टि-कथाओं के प्राचीन पाठकों के लिए यह बात कि पुरुष पहले आया या स्त्री, पदानुक्रम के बारे में उनकी मान्यताओं पर कोई असर नहीं डालती थी। इसके अलावा, उत्पत्ति की बाकी पुस्तक दिखाती है कि परमेश्वर जान-बूझकर प्राचीन संस्कृति में मौजूद ज्येष्ठाधिकार को उलट देते हैं, और बाद में जन्मे लोगों को अगुवाई के अधिकार की आशीष देते हैं (एसाव के ऊपर याकूब, अपने भाइयों के ऊपर यूसुफ)।

101. Man and Woman in Biblical Perspective, Zondervan, पृ. 207
102. जैसा कि Richard Hess "Discovering Biblical Equality", अध्याय 4 में तर्क देता है।

दूसरा तर्क: स्त्री "पुरुष से" और "पुरुष के लिए" बनाई गई

पौलुस 1 कुरिन्थियों 11:8-9 में यही बात कहता है। यद्यपि हम 1 कुरिन्थियों 11 पर अध्याय 6 में गहराई से विचार करेंगे, अभी के लिए याद रखें कि वह पद 8-9 को पद 11-12 से संतुलित करता है: "तौभी प्रभु में न तो स्त्री पुरुष से स्वतंत्र है, और न पुरुष स्त्री से स्वतंत्र है। क्योंकि जैसे स्त्री पुरुष से निकली, वैसे ही अब पुरुष स्त्री के द्वारा उत्पन्न होता है।"

1 कुरिन्थियों 11 में, स्त्री और पुरुष की पूरकता को बनाए रखते हुए भी, पौलुस स्त्रियों को पुरुषों के अधीनस्थ करने के पक्ष में तर्क नहीं देता। बल्कि वह उस परस्पर आदर पर ज़ोर देता है, जो स्त्रियों और पुरुषों को एक दूसरे को देना चाहिए। और यह उचित भी है – हव्वा का आदम "से" होना पुरुष को स्त्री के आदर-योग्य स्रोत के रूप में दिखाता है; हव्वा का आदम "के लिए" होना यह दिखाता है कि स्त्री पुरुष की आदर-योग्य पूर्णता है। पुरुष और स्त्री दोनों पाठकों के लिए शिक्षा एक ही है: परमेश्वर ने हर लिंग को इसलिए बनाया कि वह दूसरे को प्रिय जाने और उस पर परस्पर निर्भर रहे।

हव्वा आदम "के लिए" बनाई गई, जो अकेले अपर्याप्त था। इसका अर्थ यह नहीं है कि आदम का उस पर अधिकार है – ठीक वैसे ही जैसे यदि मैं अपने बेटे "के लिए" एक शिक्षक रखूँ, तो इससे वह शिक्षक मेरे बेटे का मातहत नहीं बन जाता।[103]

जो सृष्टिकर्ता हव्वा को आदम "से" बनाते हैं, केवल उन्हीं का उस पर अधिकार है। हव्वा का बनाया जाना किसी बच्चे के बनाए जाने जैसा नहीं था। एक बच्चा हमारे शरीर से इस अर्थ में आ सकता है कि वह हमारा "होता" है और आरंभ में हमारे अधिकार के अधीन होता है। हव्वा की उत्पत्ति भिन्न है। उसका पहला संपर्क अपने रचयिता से होता है। वह अपने समकक्ष को जानने से पहले परमेश्वर को जानती है। पुरुष उसकी सृष्टि में न तो भाग लेता है, न सलाह देता है। जब वह रची जा रही होती है, तब वह सो रहा होता है। वह पूरी तरह बनी हुई उसके सामने लाई जाती है।

यदि पुरुष को केवल इसलिए उसका अधिकारी माना जाए कि वह उसके शरीर के एक भाग से बनाई गई, तो आदम को मिट्टी को अपना स्वामी कहना पड़ेगा, क्योंकि वह मिट्टी से बनाया गया था। साथ ही, यदि पुरुष और स्त्री दोनों ही सृष्टिकर्ता के प्रत्यक्ष, व्यक्तिगत और उद्देश्यपूर्ण कार्य हैं, तो हम पूछ सकते हैं कि उत्पत्ति 2 इस बात के कारण के विषय में कि वह मिट्टी से नहीं, बल्कि पुरुष से बनाई गई, क्या कहता है। इसी अध्याय में पहले परमेश्वर केवल आदम को ही नहीं, बल्कि पशुओं और पक्षियों को भी भूमि से रचते हैं। यदि परमेश्वर ने हव्वा को भी उसी तरह रचा होता, तो उसे विशेष रूप से आदम से कौन-सी चीज़ जोड़ती? हव्वा का उससे बनाया जाना ही वह बात है, जिसने आदम को हव्वा के विषय में चकित कर दिया, जब वह घोषणा करता है कि वह उसकी हड्डियों में की हड्डी और उसके मांस में का मांस है।

103. इस उपमा के लिए मैं अपने मित्र Andrew Bartlett का आभारी हूँ – वह इसका उपयोग Mike Winger की आलोचना में करता है।

उसकी बगल (side) की बात करें, तो जो अनुवादक "पसली" (rib) शब्द चुनते हैं, वे लगभग निश्चित रूप से गलत हैं। इब्रानी शब्द tsela के लगभग हर दूसरे प्रयोग में किसी चीज़ की "बगल" या "एक ओर" का अर्थ होता है, प्रायः उसका आधा भाग।[104] वह उसकी बगल से बनाई गई है। 1157 में, पेरिस का आर्चबिशप बनने से ठीक पहले, पीटर लोम्बार्ड (Peter Lombard) – जो प्राचीन पितृसत्ता से असहमत होने वाले अत्यंत दुर्लभ लोगों में से एक था – ने इस पद पर सही टिप्पणी की: "हव्वा आदम के पैरों से नहीं ली गई कि वह उसकी अधीनस्थ हो, न उसके सिर से कि वह उसकी स्वामिनी हो, बल्कि उसकी बगल से कि वह उसकी साझेदार हो।"[105]

तीसरा तर्क: "इसका नाम नारी होगा"

Grudem तर्क देता है कि जब आदम हव्वा से मिलता है और कहता है, "इसका नाम नारी होगा, क्योंकि यह नर में से निकाली गई है," तो वह उसे एक नाम दे रहा है। Grudem के अनुसार यह महत्वपूर्ण है, क्योंकि जैसे परमेश्वर सृष्टि का नाम रखकर उस पर शासन करते हैं, वैसे ही आदम पशुओं का नाम रखकर उन पर अपनी अगुवाई दिखाता है, और इस प्रकार स्त्री का नाम रखकर उस पर अपना अधिकार प्रदर्शित करता है।

इतनी जल्दी नहीं। यह सच है कि "पुकारना" या "नाम रखना" के लिए वही शब्द (kara) उत्पत्ति 1 में परमेश्वर द्वारा चीज़ों के नाम रखने के लिए ("दिन," "रात," "आकाश," "पृथ्वी" और "समुद्र"), और आदम द्वारा पशुओं और पक्षियों के नाम रखने के लिए (उत्पत्ति 2:19-20) प्रयुक्त हुआ है। पर किसी वस्तु या प्रजाति को वर्गीकृत करने का कार्य अपने आप में अधिकार की अभिव्यक्ति नहीं है – जब तक कि यह पहले से स्थापित न हो कि नाम रखने वाला उस पर अधिकार रखता है।[106] उदाहरण के लिए, केवल 13 अध्याय बाद,[107] हाजिरा, एक दासी, परमेश्वर के विषय में कुछ खोजते हुए उन्हें एक नाम देती है। निश्चय ही उसका परमेश्वर पर अधिकार नहीं है। इस प्रकार, आदम का स्त्री को "नारी" कहना आवश्यक रूप से पदानुक्रम का प्रमाण नहीं है।

यह जो प्रमाणित करता है, वह यह है कि आदम उसकी अनोखी श्रेणी को पहचानता है – कोई ऐसा जो उसके जैसा है। प्राचीन भाषाओं में नाम उस वस्तु, व्यक्ति या प्रजाति का वर्णन होते थे, जिसका नाम रखा जा रहा हो। उत्पत्ति 2 में पुरुष (ish) का उसे "नारी" (ishsha) कहना विशेष रूप से इस बात को असंभाव्य बनाता है कि वह अधिकार का प्रयोग कर रहा है। संज्ञाओं की समानता पर ध्यान दीजिए – आदम यह पहचान रहा है कि वह, पशुओं के विपरीत, उसके जैसी है और एक उपयुक्त साथी है। उसकी अधीनता पर नहीं, बल्कि

104. देखें www.bit.ly/3mH7w4E
105. Peter Lombard, The Sentences
106. "जब परमेश्वर किसी चीज़ को नाम देते हैं, तो वे संप्रभु शासक के रूप में ऐसा करते हैं, पर qārā' अपने आप में श्रेष्ठता का संकेत नहीं देता। इसलिए यह कहना बात को खींचना है कि पशुओं का नाम रखने में मनुष्य उन पर अपनी संप्रभुता का प्रयोग करता है। इसे स्पष्ट करने के लिए अध्याय 1 के "वश में कर लो" और "अधिकार रखो" जैसी किसी समानांतर बात की आवश्यकता होती। ... नाम रखने वाले के रूप में कार्य करते हुए पुरुष विवेक का गुण प्रकट करता है।" (Victor Hamilton, New International Commentary on the Old Testament)
107. उसने यहोवा को, जिसने उससे बातें की थीं, यह नाम दिया: "तू वह परमेश्वर है जो मुझे देखता है।" (उत्पत्ति 16:13)

उसकी समानता पर ज़ोर दिया गया है। यह कहना कि "तू वह है जो मेरे जैसी है, और तू मुझे पूरा करती है," इस कहने के समान बिल्कुल नहीं है कि "मैं तेरा अधिकारी हूँ।" इसकी संभावना कम है कि इस खंड में हमें स्त्री और पुरुष के बीच किसी आदेश-शृंखला पर ध्यान देना है, विशेषकर ठीक उसी क्षण, जब आदम आनंद से भर उठा है – पशुओं की लंबी सर्कस-परेड से गुज़रने के बाद उसे अब वह मिल गई है।

इसके अलावा, बहुत कम अनुवादक "नारी" शब्द को व्यक्तिवाचक नाम मानते भी हैं। बल्कि यह एक जातिवाचक संज्ञा है, जिसे सभी प्राचीन पाठक जानते थे – स्त्रीलिंग का एक सीधा-सादा नाम। केवल उत्पत्ति 3:20 में आदम ने अपनी पत्नी का "नाम" (एक अलग शब्द: vaiyokra) हव्वा रखा। यह नामकरण पतन के बाद होता है, इसलिए हम इससे पतन से पहले के संबंधों में किसी कथित पदानुक्रम के बारे में कोई निष्कर्ष नहीं निकाल सकते।

चौथा तर्क: "तू कहाँ है?"

जब वह दंपति वर्जित फल खा लेता है, तो वे वाटिका में छिप जाते हैं, और तब परमेश्वर पुरुष को पुकारकर पूछते हैं, "तू कहाँ है?" (उत्पत्ति 3:9) पर परमेश्वर केवल पुरुष के पास ही क्यों जाते हैं, स्त्री के पास भी क्यों नहीं? पूरकतावादी यह निष्कर्ष निकालते हैं कि परमेश्वर, पाप को जानते हुए, आदम को जवाबदेह ठहराते हैं। आख़िरकार, इस तर्क के अनुसार, परमेश्वर ने केवल आदम को ही ज़िम्मेदारी सौंपी थी।

पर बातचीत बिल्कुल इस तरह नहीं चलती। परमेश्वर यह नहीं कहते, "तू ने यह क्या किया!" बल्कि, "तू कहाँ है?" उत्पत्ति के दूसरे और तीसरे अध्याय में लेखक परमेश्वर को मानवीय रूप में प्रस्तुत करता है। परमेश्वर वाटिका में चलते-फिरते हैं। वे आदम को अपने हाथों से बनाते हैं। और यहाँ वे सचमुच जानना चाहते हैं कि वे उन्हें क्यों नहीं ढूँढ़ पा रहे। बेशक, धर्मविज्ञान की दृष्टि से हम कह सकते हैं कि परमेश्वर सबसे परे हैं और सब कुछ जानते हैं, पर इस वृत्तांत में हमारे साथ सच्चे संबंध की परमेश्वर की क्षमता को उभारा गया है, और इसके लिए आवश्यक है कि वे जिज्ञासा के साथ प्रश्न पूछ सकें। वास्तव में, आदम के उत्तर के बाद वे दो और प्रश्न पूछते हैं: "किसने तुझे चिताया कि तू नंगा है? जिस वृक्ष का फल खाने को मैं ने तुझे मना किया था, क्या तू ने उसका फल खाया है?" (पद 11)। तथ्य जानने का उनका यह अभियान जारी रहता है, जब वे हव्वा से भी कुछ पूछते हैं (पद 13)।

प्रश्न बना रहता है: परमेश्वर पहले आदम से, और केवल आदम से ही, क्यों बात करते हैं? उत्तर शायद उस साहित्यिक युक्ति को समझने में मिले, जिसका उपयोग कथाकार पूरे वाटिका-वृत्तांत में कुशलता से करता है: परमेश्वर आदम, हव्वा और शैतान से एक-एक करके ही बात करते हैं। उत्पत्ति 3 में इन सब बातचीतों का एक निश्चित क्रम है: साँप स्त्री को धोखा देता है, जो पुरुष को भटका देती है। बदले में परमेश्वर पुरुष से बात करते हैं, जो स्त्री पर दोष डालता है, फिर स्त्री से, जो साँप पर दोष डालती है। अंत में परमेश्वर पहले साँप के लिए, फिर स्त्री के लिए, और फिर पुरुष के लिए परिणामों की घोषणा करते हैं। क्रम यह है: साँप, स्त्री, पुरुष; पुरुष, स्त्री, साँप; और साँप, स्त्री, पुरुष। यदि परमेश्वर ने पहले स्त्री से, या पुरुष और स्त्री दोनों से एक साथ बात की होती, तो यह साहित्यिक युक्ति कमज़ोर पड़ जाती।

यह तथ्य कि परमेश्वर पहले आदम से और फिर हव्वा से प्रश्न करते हैं, एक-दूसरे पर उँगली उठाने की इस डोमिनो जैसी प्रतिक्रिया को भी सामने आने देता है – जिससे उनके पश्चाताप की कमी, और दंपति के संबंध पर पाप का हानिकारक प्रभाव, दोनों प्रकट होते हैं।

अंततः, यह तर्क कि परमेश्वर जिस क्रम में बात करते हैं, वह अधिकार की किसी शृंखला की उनकी मान्यता का संकेत है, तब अपने आप ढह जाता है, जब उन तीनों के साथ परमेश्वर की बातचीत के दोनों दौरों को साथ-साथ रखकर देखा जाए। पुरुष से, जो स्त्री की ओर इशारा करता है, और फिर स्त्री से, जो शैतान पर आरोप लगाती है, आरंभिक पूछताछ के बाद परमेश्वर तीनों में से हर एक के लिए परिणाम बताते हैं – पर इस बार वे क्रम उलट देते हैं और आदम से सबसे अंत में बात करते हैं। जो लोग यह तर्क देते हैं कि परमेश्वर का पहले (या अंत में) आदम से बात करना किसी कथित पदानुक्रम के बारे में कुछ अर्थ रखता है, उन्हें यह समझाना होगा कि जब वे उससे अंत में (या पहले) भी बात करते हैं, तो उसका ऐसा कोई अर्थ क्यों नहीं होता।

पाँचवाँ तर्क: Ezer Kenegdo

"फिर यहोवा परमेश्वर ने कहा, 'आदम का अकेला रहना अच्छा नहीं; मैं उसके लिये एक ऐसा सहायक बनाऊँगा जो उससे मेल खाए।'"[108] यह पद वह प्रमुख तर्क है, जिसका उपयोग बहुत से लोग यह सिद्ध करने के लिए करते हैं कि परमेश्वर की भली और मूल रचना के अंग के रूप में स्त्रियों को पुरुष की अगुवाई के अधीन रहना है। जैसा कि मैंने पहले कहा, डैनवर्स वक्तव्य – जिसका पहला संस्करण John Piper ने तैयार किया था – पुरुषों और स्त्रियों की भूमिका के बारे में दस "सैद्धांतिक" कथन करता है, और इसी एक पद को उनमें से कम से कम चार कथनों के प्रमाण-पद के रूप में प्रयोग करता है। John Piper इस पद की अपनी समझ यों समझाता है: "परमेश्वर हमें सिखाते हैं कि स्त्री पुरुष की 'सहायक' है, इस अर्थ में कि वह वाटिका के जीवन में एक वफ़ादार और उपयुक्त सहायिका है।"[109] इसी प्रकार George Knight कहता है: "यह मानना बिल्कुल उचित है ... कि यदि एक मनुष्य दूसरे मनुष्य के लिए सहायक होने के लिए सृजा गया है, तो जो उस सहायता को पाता है, उसका अपने सहायक पर एक निश्चित अधिकार होता है।"[110]

पर Knight और Piper का यह निष्कर्ष गलत है। बेशक एक सहायक किसी से निम्न हो सकता है, पर वह बराबर का, या उससे श्रेष्ठ भी हो सकता है। बच्चे अपनी माताओं की "सहायता" के बिना, या विद्यार्थी अपने शिक्षकों की "सहायता" के बिना कहाँ होते? पर विशेष रूप से रोचक बात यह है कि पुराने नियम में यह शब्द कभी भी अधीनस्थता का अर्थ नहीं देता। वास्तव में, जिस शब्द का अनुवाद "सहायक" किया गया है (इब्रानी: ezer), वह बाइबल में मुख्य रूप से परमेश्वर के लिए प्रयुक्त हुआ है, जो अपने लोगों की सहायता

108. उत्पत्ति 2:18
109. John Piper and Wayne Grudem (eds), Recovering Biblical Manhood and Womanhood, पृ. 79
110. George Knight, The New Testament Teaching on the Role Relationship of Men and Women, पृ. 43

करते हैं। उत्पत्ति 2 के बाहर पुराने नियम में ezer के 19 प्रयोगों में से 16 बार यह परमेश्वर[111] के लिए, इस्राएल के "सहायक" के रूप में उनके संबंध में, प्रयुक्त हुआ है, और तीन बार सैन्य सहायता के लिए – जैसे अतिरिक्त सेना, जिसके बिना युद्ध हार जाते। 19 में से 18 प्रयोगों में, जिसकी सहायता की जा रही है, वह सहायक का अगुवा नहीं है।[112] इनमें से आठ प्रयोगों में "सहायक" एक "उद्धारकर्ता," "रक्षक" या "छुड़ाने वाला" है। बाकी प्रयोगों में सहायता का स्वरूप शक्ति प्रदान करना है, प्रायः सैन्य प्रकार की। इसलिए किसी का ezer होने का अर्थ है अपनी शक्ति या हस्तक्षेप देकर उसकी कमी को पूरा करना।

इस कारण अंग्रेज़ी शब्द "helper" (सहायक) ezer शब्द का सही अर्थ व्यक्त करने के लिए बिल्कुल अपर्याप्त है। हमारे समय में "सहायक" का विचार आम तौर पर किसी कम योग्य मातहत की ओर संकेत करता है, जैसे किसी बिजली-मिस्त्री का प्रशिक्षु, जो उसे सही पेचकस थमा देता है। वह शायद यह काम अकेले भी कर लेती, पर छोटे-छोटे कामों में मदद करने वाला कोई हो, तो यह लाभदायक है। नहीं! Ezer का अनुवाद "शक्तिशाली सहायक" या इससे भी बेहतर "साझेदार" होना चाहिए – जैसा कि REB, NAB, NRSV और CEV जैसे कई अनुवाद करते हैं।

तो फिर हव्वा आदम की सहायता किस प्रकार करती है? कुछ पूरकतावादी इस पद का उपयोग यह कहने के लिए करते हैं कि वह उसके बच्चों की माँ और गृहिणी बनकर उसकी सहायता करती है। पर उत्पत्ति 2 में वह जिस मुख्य तरीके से आदम की सहायता करती है, उससे यह बात बहुत दूर है, क्योंकि वहाँ सबसे प्रमुख अर्थ दिया गया है: "आदम का अकेला रहना अच्छा नहीं; मैं उसके लिये एक ऐसा सहायक बनाऊँगा जो उससे मेल खाए।" वह उसे उसके अकेलेपन से छुड़ाकर उसकी सहायता करती है। वह उसकी साथी है। इसके अतिरिक्त, थोड़ा और व्यापक विचार यह संकेत देता है कि वह उसके साथ मिलकर वह काम करती है, जो हम उत्पत्ति 1 से पहले ही जानते हैं: दोनों स्वरूप-धारकों को संसार के सामने परमेश्वर को प्रतिबिंबित करने, और पृथ्वी को आबाद करने और उसे अदन जैसा बनाने का काम सौंपा गया था।[113] हव्वा को उस काम में भी आदम की साझेदार होना है, जो उसे वाटिका की देखभाल के लिए दिया गया था।

सार यह है कि वह उसकी सेवा करने के लिए नहीं, बल्कि उसके साथ-साथ सेवा करने के लिए सृजी गई है। यदि कोई संदेह हो, तो बस उस शब्द पर विचार कीजिए, जिसका अनुवाद "suitable" (उपयुक्त) किया गया है (इब्रानी: kenegdo)। वह केवल उसकी ezer नहीं है, वह उसकी ezer kenegdo है। इस शब्द का अर्थ क्या है? पता चलता है कि अंग्रेज़ी शब्द "suitable" भी kenegdo का उतना ही अपर्याप्त अनुवाद है, जितना "helper" ezer का। Kenegdo एक संयुक्त पद है, जिसका अर्थ है उसके जैसी, उसके सम्मुख। Kathy Keller कहती है: "नर और नारी एक पहेली के दो टुकड़ों के समान हैं, जो एक-दूसरे

111. देखें निर्गमन 18:4; व्यवस्थाविवरण 33:7, 26, 29; भजन संहिता 20:2; 33:20; 70:5; 89:19; 115:9, 10, 11; 121:1, 2; 124:8; 146:5; और होशे 13:9।

112. एकमात्र अपवाद शायद यहेजकेल 12:14 हो, जहाँ कसदियों के राजा की बात है कि युद्ध में उसकी सहायता के लिए उसके आस-पास कोई नहीं है। फिर भी, उस खंड में ज़ोर इन सहायकों पर राजा के अधिकार पर नहीं, बल्कि उनके बिना उसकी पूर्ण असहायता पर है।

113. कुछ विद्वान बताते हैं कि ezer शब्द उस अंतिम सहायता की ओर संकेत करता है, जो वह पुरुषों को देगी: अगले अध्याय में हमें बताया गया है कि हव्वा का "वंश" सारी मनुष्यजाति को, सब पुरुषों समेत, छुड़ाएगा। एक रोचक शब्द-क्रीड़ा में, उत्पत्ति 3:15 में "वंश" के लिए इब्रानी शब्द की ध्वनि ezer से मिलती-जुलती है। इस अर्थ में वह उसे बचाने वाली है, क्योंकि वह संसार के उद्धारकर्ता को जन्म देगी।

में ठीक बैठ जाते हैं, क्योंकि वे न तो बिल्कुल एक जैसे हैं और न बेतरतीब ढंग से भिन्न, बल्कि वे इस तरह भिन्न बनाए गए हैं कि मिलकर एक पूरी इकाई बना सकें।"[114]

वह उसकी अनिवार्य साझेदार और सहयोगी है। जो पुरुष में कम है, वह स्त्री के पास है, और वह उसे पूरा करती है। वह किसी स्वतंत्र, आत्मनिर्भर पुरुष के लिए बाद में सूझा हुआ कोई विचार या कोई वैकल्पिक सहायिका मात्र नहीं है। वह उसकी साथी, उसकी पूरक, उसकी समकक्ष और उसकी सहकर्मी है।

यदि वह युद्ध में है, तो वह उसकी सह-योद्धा है। यदि वह संसार को अदन जैसा बनाता है, तो वह उसकी सहकर्मी है। यदि वह बच्चों का पालन-पोषण करता है, तो वह उसके साथ माता-पिता की भूमिका निभाती है।[115] पहले पुरुष और स्त्री के बीच का यह संबंध परस्पर सहारे, परस्पर सराहना, एक-दूसरे को पूरा करने के लिए अपनी-अपनी शक्तियाँ बाँटने, और अपने सबसे निकट मित्र में समानता और भिन्नता दोनों को पहचानने से परिभाषित होता है। परमेश्वर जानते थे कि हम पुत्रों, भाइयों, पतियों और मित्रों का अकेला रहना अच्छा नहीं, इसलिए उन्होंने हमें पुत्रियाँ, बहनें, पत्नियाँ, महिला मित्र और सहकर्मी देकर हमारे सबसे अच्छे सहयोगी दिए। अब जब परमेश्वर का काम – हमारे घर में, कलीसिया में या संसार में – हमें अकेले नहीं करना पड़ता, तो मेरे जैसे पुरुष आनंद, नम्रता और कृतज्ञता के साथ अपनी साझेदारों और सह-योद्धाओं के साथ खड़े हो सकते हैं। यही उत्पत्ति 2:18 का अर्थ है।

क्या आप देख सकते हैं कि यह पूरकतावाद को कैसे कमज़ोर कर देता है? यदि डैनवर्स वक्तव्य के चार "सैद्धांतिक" कथन (जैसा कि मेरा मानना है) अपने बार-बार प्रयुक्त प्रमाण-पद के रूप में उत्पत्ति 2:18 की एक दोषपूर्ण व्याख्या पर खड़े किए गए हैं, तो वे डगमगाने लगते हैं। शायद उत्पत्ति 2:18 पूरकतावाद के लिए "एक अनुपयुक्त सहायक" है! व्याख्या से जुड़े फीके मज़ाक को एक ओर रखें, तो मुझे आशा है कि आप देख सकते हैं कि उत्पत्ति के पतन-पूर्व संसार में स्त्री पर पुरुष की अगुवाई के संकेत खोजना एक व्यर्थ की भाग-दौड़ साबित हो रहा है।

अर्थ-आरोपण (EISEGESIS) के उदाहरण

जहाँ व्याख्या की बात है, वहाँ अर्थ-आरोपण (eisegesis) से बचना चाहिए। हमें किसी खंड में ऐसा अर्थ नहीं डालना है, जिसे न तो मानवीय लेखक ने और न ईश्वरीय लेखक ने उसमें रखा है। बल्कि हमें अच्छा अर्थ-निरूपण (exegesis) करना चाहिए और उसका सही अर्थ पहचानना चाहिए।

जब मैंने किशोरावस्था में पहली बार उत्पत्ति पढ़ी, तो उत्पत्ति 3:16 तक मुझे हव्वा पर आदम के अधिकार के बारे में कुछ भी दिखाई नहीं दिया। पर जब मैंने उन पाँच अनुमानों में से कुछ सुने, जिनका उत्तर मैंने इस अध्याय में दिया है (और परिशिष्ट 2 वाले छह), तो मुझे अधिकाधिक स्पष्ट लगने लगा कि आदम ही अगुवा

114. Tim and Kathy Keller, The Meaning of Marriage, अध्याय 6.
115. वास्तव में, किसी का ezer kenegdo होना यह संकेत देता है कि वे भी आपके लिए वैसे ही हैं। जिसकी आपको सहायता करनी है, वह भी उतना ही आपका 'समान-सम्मुख' साथी है – पृथ्वी को अदन जैसा बनाने में आपका सहभागी, आपका सह-स्वरूप-धारक, सह-माता-पिता और सह-योद्धा – जितने आप उसके लिए हैं; वह अपनी वे सब शक्तियाँ लाता है, जिनकी स्त्री को भी अपनी पूर्णता के लिए आवश्यकता है।

था। फिर भी, Walter Brueggemann अपनी पुस्तक Genesis: A Bible Commentary for Teachers and Preachers में कहता है: "ऐसी व्याख्या पाठ के साथ विश्वासघात करती है, और इस बात का अच्छा उदाहरण है कि कैसे हमारी ... पूर्वधारणाएँ हमारी व्याख्या को नियंत्रित करती हैं।"

अनुमानों की संभावित भ्रामक शक्ति को स्पष्ट करने के लिए, कल्पना कीजिए कि मुझे यह सिखाया गया होता कि पतन से पहले हव्वा आदम से श्रेष्ठ और उसकी स्वामिनी थी, और इसके लिए ये तर्क दिए जाते: 1) उत्पत्ति 1 में जो अंत में सृजा गया, वह शासन करता है; इसलिए हव्वा भी, जो उत्पत्ति 2 में अंत में सृजी गई। 2) हव्वा को "सहायक" कहा गया है – एक ऐसा शब्द जो अधिकतर उन परमेश्वर के लिए प्रयुक्त होता है, जो निर्बलों को छुड़ाने आते हैं। 3) आदम मिट्टी से बनाया गया, हव्वा मांस से। 4) पितृस्थानीय संस्कृतियों में स्त्रियाँ अपने माता-पिता को छोड़कर अपने पति के परिवार में जुड़ जाती थीं, पर उत्पत्ति 2:24 कहता है कि पुरुष अपने परिवार को छोड़कर पत्नी से मिला रहता है। 5) शैतान जानता है कि भेड़ों को तितर-बितर करने के लिए उसे चरवाहे पर वार करना होगा – और वह यही करता है। 6) हव्वा को गिराने के लिए अलौकिक शक्ति चाहिए, और आदम को गिराने के लिए बस थोड़ा-सा मानवीय दबाव। 7) परमेश्वर दंड पहले हव्वा को सुनाते हैं, फिर आदम को, क्योंकि अगुवा होने के नाते वही सबसे अधिक ज़िम्मेदार है। 8) हव्वा के लिए पाप का परिणाम यह है कि अब वह शासन नहीं करेगी; अब वह उस पर शासन करेगा।

यदि लंबे समय से कलीसिया की यही शिक्षा रही होती, तो शायद पूरे के पूरे संप्रदाय इसे मानते। तर्कों का ढेर लगाना और उन्हें बार-बार दोहराना उन्हें वैध बनाता प्रतीत होता है। पर पूरकतावादी तर्कों की सूची और यह आठ-सूत्री सूची दोनों एक ही गलती के उदाहरण हैं: अर्थ-आरोपण। जब हम ऐसे बिंदुओं को जोड़ते हैं जिन्हें जोड़ा नहीं जाना था, तो एक विकृत चित्र उभरता है।

"सृष्टि की व्यवस्था" पूरी सृष्टि पर लागू होती है

यदि पूरकतावादी "सृष्टि की व्यवस्था" को कलीसिया और घर में स्त्रियों को पुरुषों की अगुवाई करने, या उनके साथ मिलकर अगुवाई करने से रोकने का आधार बनाता है – तो यह बात पूरे समाज पर भी लागू होती है। धर्मविज्ञान की दृष्टि से सृष्टि जीवन के हर क्षेत्र तक फैली है। आदम और हव्वा केवल पहला परिवार और पहली कलीसिया ही नहीं थे, वे मनुष्यों का पहला समुदाय, स्वयं समाज का बीज भी थे। 1 कुरिन्थियों 11 और 1 तीमुथियुस 2 पर अधिकांश विद्वानों का निष्कर्ष यह है कि पौलुस पतन से पहले के आदम और हव्वा को सामान्य रूप से स्त्री-पुरुष संबंधों के आदर्श-रूप के तौर पर प्रयोग करता है।

यद्यपि मैं John Piper के मत से सहमत नहीं हूँ, फिर भी मैं सुसंगत होने के लिए उसकी सराहना करता हूँ: उसके विचार में सृष्टि कलीसियाई और सामाजिक ढाँचों में स्त्रियों को सीमित करती है। वह सहमति के साथ एक अन्य धर्मविज्ञानी को उद्धृत करता है: "उत्पत्ति 2 ... मुझे विश्वास दिलाता है कि पुरुष-स्त्री का संबंध स्वभाव से ही उलटा नहीं जा सकता। ... [एक] महिला बॉस, [जिसका] सचिव पुरुष हो, ... दोनों पक्षों की

मानवता पर दबाव डालेगी ... यह ... सृष्टि का अंग है, एक दिया हुआ तथ्य, जिसे कोई बात नहीं बदलेगी।"[116]

एक लेख में, जिसका शीर्षक है How Should Women Lead?[117] (स्त्रियों को कैसे अगुवाई करनी चाहिए?), Piper तर्क देता है कि स्त्रियाँ पुरुषों की अगुवाई केवल "अव्यक्तिगत" रूप से कर सकती हैं। वे दूर से पुरुषों पर प्रभाव डाल सकती हैं – उदाहरण के लिए एक नगर-योजनाकार या वास्तुकार के रूप में, जो उन सड़कों या इमारतों को रूप देती है जिनसे पुरुष गुज़रते हैं – पर ड्रिल सार्जेंट के रूप में नहीं। वे पुरुषों की अगुवाई "बिना निर्देश दिए" कर सकती हैं, जैसे अबीगैल, जिसने "अद्भुत संयम और अधीनता" के साथ "दाऊद को नाबाल को मार डालने से रोक लिया।" (इसी प्रकार, कोई स्त्री किसी पुरुष को आमने-सामने सिद्धांत की शिक्षा नहीं दे सकती, केवल अपनी लिखी किसी पुस्तक के द्वारा, क्योंकि उस स्थिति में "वह मेरी ओर नहीं देख रही होती और ... एक स्त्री के रूप में अधिकारपूर्वक मुझे निर्देश नहीं दे रही होती।"[118])

इसी प्रकार Kevin De Young तर्क देता है कि सृष्टि की रचना समाज में पुरुष की अगुवाई के आदर्श का समर्थन करती है।[119] यदि उत्पत्ति 2-3 की पूरकतावादी व्याख्या सही है, तो हम अपनी बेटियों की इस आकांक्षा की सराहना करने का साहस नहीं कर सकते कि वे पुरुषों की प्रत्यक्ष और व्यक्तिगत अगुवाई तक पहुँचें – न केवल कलीसिया में, बल्कि कार्यस्थल और सरकार में भी। De Young अपनी बेटियों को, जो "किसी कंपनी के संगठन-चार्ट" के किसी भी स्तर पर हो सकती हैं, यह सलाह तक देता है कि वे स्वीकार करें कि परमेश्वर की योजना "पुरुष अगुवाई करे और स्त्री सहायता करे" है। उन्हें "स्त्रीत्व" को अपनाना है और पुरुषों को "प्रेम में अगुवाई" करने देना है, जबकि वे स्वयं "नम्रता से सहायता करें।"[120]

यह व्याख्या हमारी बेटियों के काम के विकल्पों पर कितना भारी प्रतिबंध लगाती है! राहत की बात है कि मुझे विश्वास है कि Piper और De Young उत्पत्ति 2 को गलत पढ़ते हैं। यदि केवल स्त्रियों की व्यावसायिक उन्नति के लिए ही सही, मैं अपने पूरकतावादी मित्रों से आग्रह करता हूँ कि वे कम से कम इस बात पर विचार करें कि उत्पत्ति 2 में शायद लैंगिक पदानुक्रम है ही नहीं। उत्पत्ति 3 की ओर मुड़ने से हम अंततः यही निष्कर्ष निकाल पाते हैं।

116. John Piper, Recovering Biblical Manhood and Womanhood, पृ. 37
117. www.bit.ly/3LPBXQV
118. John Piper इस प्रश्न का – "क्या आप स्त्रियों द्वारा लिखी बाइबल टीकाओं का उपयोग करते हैं?" ("Do You Use Bible Commentaries Written by Women?") – उत्तर यह कहकर देता है: "पुस्तक और लेखन नाम की इस घटना का बीच में आ जाना लेखिका स्त्री को पाठक की दृष्टि से ओझल कर देता है और, एक अर्थ में, उसके स्त्री-व्यक्तित्व के आयाम को हटा देता है।"
119. Kevin De Young के लेख "Death to the Patriarchy?" की मेरी आलोचना यहाँ है: www.bit.ly/3LQLN4W.
120. "Men and Women in the Church", अध्याय 9 में De Young बताता है कि वह अपने बच्चों को क्या सिखाता है: "पुरुष अगुवाई करे और स्त्री सहायता करे – यही वह बात है, जिसे पुरुषों और स्त्रियों को सोच-समझकर खोजना और उत्सुकता से स्वीकार करना चाहिए। कार्यस्थल में भी, जहाँ किसी कंपनी के संगठन-चार्ट में पुरुष और स्त्रियाँ हर स्तर पर हो सकते हैं, मैं मानता हूँ कि मसीहियों के लिए उचित तरीकों से पुरुषत्व और स्त्रीत्व को अपनाने का एक मार्ग अब भी है। ... प्रेम में अगुवाई करने वाला पुरुष स्त्री के लिए नम्रता से सहायता करना बहुत आसान बना देता है।" यह एक मिला-जुला संदेश है, जिसमें एक बात दूसरी बात से निष्प्रभावी हो जाती है: 1) स्त्रियाँ समाज में स्वयं को पुरुषों की अगुवाई करते हुए पा सकती हैं। 2) पर स्त्रियों को वास्तव में पुरुषों को अगुवाई करने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए। (इसके बाद वह दबोरा की कहानी को गंभीर रूप से गलत पढ़ता है, और सुझाता है कि वह अपनी अगुवाई बाराक को सौंपने का प्रयास कर रही थी – मैं अध्याय 10 में इस गलत व्याख्या का खंडन करूँगा।)

पितृसत्ता की उत्पत्ति

यदि पितृसत्ता परमेश्वर की अभिप्रेत रचना का अंग नहीं थी, तो इतिहास में लगभग सभी संस्कृतियों ने उसका पालन क्यों किया? उत्पत्ति 3 इसका धर्मविज्ञानीय उत्तर देता है।

जब आदम और हव्वा की ठोड़ियों से अभी रस टपक ही रहा है, परमेश्वर साँप, स्त्री और पुरुष से बात करते हैं। वे उन्हें उनके कामों के परिणामों के बारे में चेतावनी देते हैं, और उनके लिए उन्हें तैयार करते हैं। स्त्री से वे कहते हैं: "तेरी लालसा तेरे पति की ओर होगी, और वह तुझ पर प्रभुता करेगा।"[121] यहाँ क्या हो रहा है?

पूरकतावादी कहते हैं कि पतन के कारण पुरुष का अपनी पत्नी पर पतन-पूर्व का भला शासन अब अत्याचार में बदल जाता है। इस मत के अनुसार यहाँ "प्रभुता करना" (इब्रानी: mashal) शब्द का अर्थ दमनकारी शासन है। परमेश्वर-भक्त अगुवाई देने के बजाय वह उस पर हावी होगा। जो पहले भला था (उस पर उसकी प्रेमपूर्ण अगुवाई), वह अब क्रूर और शोषणकारी बन गया है।

पर क्या परमेश्वर सचमुच यही कह रहे हैं? जो बात स्पष्ट रूप से कही गई है, वह यह है कि पतन के परिणामस्वरूप आदम अब हव्वा पर अगुवाई अपने हाथ में ले लेगा (और, इसी से आगे निष्कर्ष निकालें तो, पुरुष स्त्रियों पर अगुवाई अपने हाथ में ले लेंगे)। उत्पत्ति 1:26-28 ने परमेश्वर का आदर्श यह प्रकट किया था कि पुरुष स्त्रियों के साथ-साथ शासन करें। तो यह कितना अंधकारमय है कि पतित सृष्टि में पुरुष स्त्री पर शासन करता है।

इब्रानी शब्द mashal का अर्थ, जैसा कि कुछ पूरकतावादी तर्क देते हैं, दमन करना नहीं है। बल्कि इसका अर्थ है राज्य करना, शासन करना, प्रशासन करना, स्वामी होना या अगुवाई करना। पुराने नियम में इसके 81 प्रयोगों में इसका अर्थ केवल अगुवाई या शासन है: पहले प्रयोग में सूर्य रात और दिन पर "प्रभुता करता" है; अंतिम प्रयोग में एक याजक-राजा परमेश्वर के लोगों पर "शासन करता" है।[122] बाइबल की इब्रानी भाषा के दोनों प्रमुख शब्दकोश, जो इस शब्द के पुराने नियम के हर प्रयोग का विश्लेषण करते हैं, इसका एक भी नकारात्मक अर्थ सूचीबद्ध नहीं करते। जब तक यह "कठोर" जैसे किसी विशेषक शब्द के साथ न जुड़ा हो, इसके मूल अर्थ में दमन या अत्याचार शामिल नहीं है। परमेश्वर कहते हैं कि संसार के बिगड़ जाने का एक लक्षण यह है कि पुरुष स्त्रियों पर केवल इसलिए शासन करने लगेंगे कि वे स्त्रियाँ हैं। यद्यपि अपमानजनक पुरुष-शासन भले पुरुष-शासन से बदतर है, पर दोनों में से कोई भी परमेश्वर का आदर्श नहीं है। केवल यह तथ्य कि पतन के परिणामस्वरूप पुरुष और स्त्री का संबंध असमान और शक्ति पर आधारित हो गया है, अपने आप में ही काफ़ी भयानक है।

इसके बाद के दो पदों में आदम को जिस परिणाम का सामना करना है, वह यह है कि जिस भूमि से वह मूल रूप से लिया गया था, वही अब केवल उसके काँटों से छिदे लहू और उसके माथे के पसीने की कीमत पर भोजन उपजाएगी। साथ-साथ रखकर देखें, तो हव्वा और आदम के परिणाम समानांतर हैं: आदम अब अपने

121. उत्पत्ति 3:16
122. स्वयं देखिए: www.bit.ly/3nVjfvA.

स्रोत (भूमि) के अधीन होगा, जबकि हव्वा अब अपने स्रोत (आदम) के अधीन होगी। यही पितृसत्ता की सच्ची उत्पत्ति है – एक विनाशकारी, स्वचालित स्थिति, जो हर उस पतित समाज में दिखाई देती है, जिसमें पुरुष स्त्रियों पर नियंत्रण अपने हाथ में ले लेते हैं।

हव्वा की "लालसा" क्या है?

इसका क्या अर्थ है कि हव्वा की "लालसा" (इब्रानी: teshuqah) आदम की ओर होगी? बाइबल विद्वान तीन मुख्य विकल्प प्रस्तुत करते हैं। आइए, हर एक पर विचार करें।

स्वाभाविक लालसा। यह मत अपने पुरुष के प्रति हव्वा की लालसा या समर्पण को स्वाभाविक, यहाँ तक कि परमेश्वर द्वारा ठहराया हुआ मानता है। पद 16-19 का संदर्भ यह सुझाता है कि यह एक स्वाभाविक लालसा है, यद्यपि कुंठित: स्त्री संसार में बच्चे लाती है, जो एक अच्छी बात है, पर पतन के बाद इसमें भयानक पीड़ा है। इसी प्रकार पुरुष पहले की तरह भूमि से भोजन निकालता है, पर अब उसके काँटे उसके मार्ग में बाधा डालते हैं – वास्तव में, अब भूमि मृत्यु में उसे निगल लेगी। इनमें से हर बात यह बताती है कि परमेश्वर का दिया हुआ एक प्रयास पटरी से उतर जाएगा। इसी तर्ज़ पर, अपने साथी के प्रति उसकी लालसा स्वाभाविक है, पर दुर्भाग्य से उस पर शासन करने के पुरुष के दृढ़ निश्चय से वह विफल हो जाती है।

अतिरंजित लालसा। यह मत पिछले मत में संशोधन करता है और सुझाता है कि अपने पुरुष के प्रति स्त्री की परमेश्वर-प्रदत्त लालसा या समर्पण पतन के बाद मूर्तिपूजा बन जाता है। उस डिज़्नी राजकुमारी की तरह, जो अपने हृदय के सच्चे प्रेमी द्वारा बचाए जाने की प्रतीक्षा करती है, यह मत सुझाता है कि इसी कारण स्त्री इतनी बार सामाजिक रूप से स्वयं को किसी पुरुष में उलझा लेती है, और अपनी मुख्य पहचान परमेश्वर की स्वीकृति और बाँहों के बजाय पुरुष की स्वीकृति और बाँहों में खोजती है। यह या तो उसे बहुत माँग करने वाली बना देगा, या – जैसा कैल्विन (Calvin) ने सुझाया – दास-वृत्ति वाली: अपने पति की हर इच्छा के आगे बिना रीढ़ के समर्पित।

विद्रोही लालसा। इस व्याख्या के अनुसार, वह उस पर हावी होना चाहती है और वह भी वैसा ही प्रत्युत्तर देता है – और स्त्री-पुरुष के बीच एक युद्ध शुरू हो जाता है। इस मत को मानने वाले गैर-पूरकतावादी कहते हैं कि "जो दोनों कभी एक होकर राज्य करते थे, [अब] एक-दूसरे पर शासन करने का प्रयास करते हैं,"[123] यद्यपि जीत पुरुष की होगी। पूरकतावादी इसे आदम के पहले से परमेश्वर द्वारा ठहराए गए शासन के विरुद्ध हव्वा का विद्रोह मानते हैं, जो शासन अब अत्याचारी बन जाता है। Grudem कहता है: "विकृति यह थी कि हव्वा अब अपने पति के अधिकार के विरुद्ध विद्रोह करेगी। उसके भीतर आदम का विरोध करने, आदम की अगुवाई का प्रतिरोध करने की प्रेरणा और आवेग है। उसका आवेग, लालसा और इच्छा अपने पति के विरुद्ध खड़े हैं।" जब Grudem स्वयं ESV की अनुवाद-समिति का सदस्य था, तो कोई आश्चर्य नहीं कि ESV इसका अनुवाद यों करता है: "तेरी लालसा तेरे पति के विरुद्ध होगी।"

123. Victor Hamilton, New International Commentary on the Old Testament.

कौन-सा मत सही है? मैं पहले और दूसरे मत के बीच झूलता रहा हूँ, पर तीसरे पर, विशेषकर उसके पूरकतावादी रूप पर, मुझे गंभीर संदेह है। इसके छह कारण हैं, जिन्हें मैंने मोटे तौर पर बढ़ते हुए महत्व के क्रम में रखा है:

पहला, इस व्याख्या के निहितार्थ सूक्ष्म रूप से हानिकारक हैं। यह सुझाती है कि आदम हव्वा पर इसलिए नियंत्रण रखता है, क्योंकि वह बार-बार उससे झगड़ा मोल लेती है। इस मत के अनुसार उसका शासन चाहे कठोर हो, पर समझ में आने वाला है – किसी विद्रोही अधीनस्थ से और कैसे निपटा जाए?

दूसरा, पिछले पद में, जहाँ प्रभुत्व के लिए दोतरफ़ा संघर्ष का वर्णन है, परमेश्वर इसे स्पष्ट कर देते हैं: "मैं [साँप] और इस स्त्री के बीच में बैर उत्पन्न करूँगा।" यदि उत्पत्ति 3:16 में भी उसी तरह के दोतरफ़ा "स्त्री-पुरुष युद्ध" का वर्णन है, तो परमेश्वर यह भी क्यों नहीं कहते, "स्त्री और पुरुष के बीच बैर होगा"? इस खंड में प्रभुत्व केवल एक ही दिशा में बहता प्रतीत होता है।

तीसरा, "नियंत्रण की लालसा" एक नया अनुवाद है। जिन थोड़े-से हाल के अनुवादों (जैसे NLT) ने "desire to control" (नियंत्रण की लालसा) चुना है, वे 1975 के एक लेख का अनुसरण करते हैं, जिसका शीर्षक है What is Woman's Desire?[124] यह लेख ध्यान दिलाता है कि उत्पत्ति 3:16 में लालसा के लिए जो दुर्लभ शब्द है, वही उत्पत्ति 4:7 में फिर आता है, जब कैन से कहा जाता है कि पाप द्वार पर घात लगाए बैठा है और उसकी लालसा कैन की ओर है, पर कैन को उस पर प्रभुता करनी है। लेख यह निष्कर्ष निकालता है कि दोनों जगह इस शब्द का अर्थ "नियंत्रण की लालसा" ही होना चाहिए। पर दोनों खंडों के संदर्भ काफ़ी भिन्न हैं।[125] उदाहरण के लिए, पहले खंड में हव्वा को चेतावनी दी जाती है कि उसके पाप के परिणामस्वरूप कोई दूसरा उस पर शासन करेगा। दूसरे में कैन को आज्ञा दी जाती है कि वह शासन करे, ताकि पाप रोका जा सके। संदर्भ के आधार पर एक खंड में किसी शब्द में कोई अर्थ डालना और फिर उस अर्थ को भिन्न संदर्भ वाले दूसरे खंड में ले जाना जोखिम भरा है।[126]

चौथा, ESV का "लालसा ... के विरुद्ध" चुनना न केवल अनोखा और शायद गलत है,[127] बल्कि यह अर्थ को उलट देता है: विरोध तो पुरुष में स्त्री के प्रति है। जैसे प्रसव-पीड़ा संसार में बच्चे लाने के उसके काम को कठिन बना देती है, वैसे ही उसका स्वामी बनने की पुरुष की स्वयं-आरोपित भूमिका पुरुष के प्रति उसकी लालसा या समर्पण के विरुद्ध है, चाहे वह स्वाभाविक हो या मूर्तिपूजक। दूसरी स्थिति में पीड़ा प्रसव-वेदना से नहीं, बल्कि उस पर थोपे गए उसके शासन से उत्पन्न होती है।

पाँचवाँ, यद्यपि यह संभव है, फिर भी इसकी संभावना कम है कि उत्पत्ति के लेखक के लिए इस शब्द का एक अर्थ हो और श्रेष्ठगीत के लेखक के लिए बिल्कुल दूसरा। यदि हम उत्पत्ति 4:7 और श्रेष्ठगीत 7:10 – "मैं

124. देखें www.bit.ly/3mHetTi
125. देखें www.bit.ly/2YguUMU
126. फिर भी Wayne Grudem यह जानता है: एक अन्य खंड के विषय में वह लिखता है कि "किसी एक प्रसंग में प्रयुक्त शब्द के संदर्भ को किसी दूसरे प्रसंग में उसी शब्द के प्रयोग में ले आना" "व्याख्या की एक मूलभूत भूल है।" (Evangelical Feminism, 5.10)
127. इस स्थान पर "for" (की ओर) शब्द की जगह "contrary" (के विरुद्ध) शब्द रखना इब्रानी पूर्वसर्ग el का गलत अनुवाद है। Mary Convoy और Matt Lynch इस गलती की अच्छी आलोचना करते हैं – देखें www.bit.ly/3T8fjGz और www.bit.ly/3MNDPdz

अपने प्रेमी की हूँ, और उसकी [teshuqah] मेरी ओर है" – में teshuqah के मूल अर्थ में सामंजस्य बिठाने का प्रयास करें, तो हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि इसका अर्थ शायद या तो प्रबल स्वाभाविक लालसा है या एकनिष्ठ समर्पण, न कि हावी होने की लालसा (जब तक हम यह न मानें कि श्रेष्ठगीत शक्ति पर आधारित किसी प्रकार के यौन संबंध या प्रेम का उत्सव मनाता है)। साथ ही, यद्यपि उत्पत्ति 3:16 और श्रेष्ठगीत 7:10 के संदर्भ भिन्न हैं, दोनों एक स्त्री-पुरुष संबंध की बात करते हैं।

छठा, अतीत और वर्तमान के लगभग सभी व्याख्याकार और अनुवादक teshuqah शब्द का अर्थ या तो "मुड़ना" या "लालसा" लेते हैं।[128] Walter Kaiser बताता है कि 1528 में इतालवी भिक्षु पान्यीनो (Pagnino) द्वारा इसका अनुवाद "लालसा" किए जाने से पहले सभी बारह ज्ञात प्राचीन अनुवादों ने "मुड़ना" अर्थ चुना था।[129] यद्यपि वर्तमान अनुवादों में पान्यीनो का प्रभाव हावी है, बाइबल की इब्रानी भाषा के एक प्रमुख विद्वान Andrew Macintosh तर्क देता है कि इसका अर्थ "समर्पित" है (जैसे ध्यान का एकनिष्ठ रूप से किसी की ओर मुड़ना)।[130] इससे उत्पत्ति 4:7 का अशुभ रूपक पूरा हो जाता है: पाप, घात लगाए बैठे किसी शिकारी पशु की तरह, "अपने निशाने पर नज़र गड़ाए है," और कैन को, जिसे अब चेतावनी मिल चुकी है, अपने इस संभावित आक्रमणकारी पर नियंत्रण पाना है। यह श्रेष्ठगीत के साथ भी ठीक बैठता है – "वह पूरी तरह मुझी को समर्पित है।" उत्पत्ति 3:16 के संबंध में, यह दूसरे मत को बल देता है: "तू [परमेश्वर से] मुड़कर अपने पति की ओर फिरेगी।"[131] इस प्रकार पढ़ने पर, इनमें से कोई भी खंड प्रभुत्व का संकेत नहीं देता।

क्या स्त्री-पुरुष संबंधों में पाप की शक्ति की असली त्रासदी यही नहीं है? दूसरे मत के अनुसार – जो मेरा चुनाव है – दंपति की पहली भेंट की सुंदरता एक भयानक उलटफेर में बदल गई है: पुरुष ने कभी उस बराबर की साझेदार के मिलने का उत्सव मनाया था, जिसकी वह खोज कर रहा था, परमेश्वर के उपहार के रूप में; अब स्त्री को पीड़ा के साथ उस पुरुष में एक स्वामी मिलेगा, जिसकी ओर वह परमेश्वर के विकल्प के रूप में देखती है। अपनी सह-स्वरूप-धारक के साथ मिलकर शासन करने (उत्पत्ति 1) और अपनी बराबर की समकक्ष के साथ सहयोग करने (उत्पत्ति 2) के बजाय, पतित पुरुष अब उस स्त्री को नियंत्रित करेगा, जो अपनी पूर्णता के लिए उसकी लालसा करती है (उत्पत्ति 3:16)। पाप से भ्रष्ट होकर, स्त्री और पुरुष दोनों उस घनिष्ठ साझेदारी के कुछ हिस्से को खो देंगे, जिसका परमेश्वर ने मूल रूप से इरादा किया था।

उत्पत्ति 3:16 के बारे में एक अंतिम प्रश्न। क्या यह श्राप है, आदेश है, या वर्णन? यह श्राप नहीं है। मनुष्य के पाप के कारण साँप और भूमि को श्राप मिलता है, पर पुरुष और स्त्री को नहीं। यह आदेश भी नहीं है। परमेश्वर पुरुषों को स्त्रियों पर अत्याचार करने की, या स्त्रियों को प्रसव में पीड़ा सहने की आज्ञा नहीं देते।

128. Marg Mowczko के दो लेख देखें: www.bit.ly/3ghuPAZ और www.bit.ly/3yW4kI3
129. Hard Sayings of the Bible, पृ. 98.
130. "The Meaning of Hebrew תְּשׁוּקָה," Journal of Semitic Studies LXI/2 (2016), पृ. 365-87.
131. Katharine Bushnell, जो बीसवीं सदी के आरंभ में चीन में एक महिला मिशनरी थी, यही मत रखती थी। "लालसा" के बजाय वह इस शब्द का अनुवाद "मुड़ना" करना पसंद करती थी। उसने इस पद का अनुवाद यों किया: "तू मुँह फेरकर अपने पति की ओर मुड़ रही है, और वह तुझ पर प्रभुता करेगा।" पतन से पहले आदम और हव्वा दोनों परमेश्वर के अधिकार के अधीन रहते थे। पतन के बाद, पाप के कारण, स्त्रियाँ अब सबसे पहले अपने पति की ओर मुड़ेंगी। (स्रोत: Kristen Du Mez, A New Gospel for Women, पृ. 121)

बल्कि यह एक वर्णन है। वाटिका में मनुष्यजाति और परमेश्वर के बीच संबंध के टूटने के परिणामस्वरूप, यह एक विशेष विकृति है, जो मानवीय संबंधों में आम हो जाएगी।

स्त्री-पुरुष के बीच का विफल संबंध चाहे कितना भी भयानक हो, उसका प्रतिरोध किया जा सकता है और किया जाना चाहिए। हमें अपने संबंधों से प्रभुत्व, कुचल देने वाली हीनता, ज़हरीली श्रेष्ठता और मूर्तिपूजा को दूर करने के लिए उतना ही करना चाहिए जितना हम कर सकते हैं – ठीक वैसे ही जैसे हम बच्चों के जन्म को कम ख़तरनाक और कम पीड़ादायक बनाने का प्रयास करते हैं, और जैसे खेती करते समय हम खाद डालते और खरपतवार नष्ट करते हैं।

पुरुष और स्त्री

अंततः स्त्री-पुरुष संबंधों को पुनर्स्थापित करने के लिए हव्वा के "वंश" की आवश्यकता होगी। उस पर हम अध्याय 5 में आएँगे। तब तक, आइए परमेश्वर के आदर्श को न भूलें: लैंगिक पदानुक्रम के विरुद्ध अपने संघर्ष में हमारे सामने एक प्रेरक उदाहरण है, जिस तक पहुँचने का हम प्रयास कर सकते हैं – आदम और हव्वा की वह शानदार पहली भेंट। Richard Davidson पुराने नियम में लिंग और यौनिकता पर अपने विशाल अध्ययन में कहता है:

वृत्तांत के आरंभ में पुरुष की सृष्टि और वृत्तांत के अंत में स्त्री की सृष्टि एक-दूसरे को पूरी तरह संतुलित करती हैं। कथाकार पुरुष की सृष्टि के वर्णन के लिए (इब्रानी में) ठीक उतने ही शब्दों का प्रयोग करता है, जितने स्त्री की सृष्टि के लिए। उत्पत्ति 2 में गति श्रेष्ठ से निम्न की ओर, या अगुवाई से अधीनता की ओर नहीं, बल्कि अधूरेपन से पूर्णता की ओर है। स्त्री कहानी के चरमोत्कर्ष, उसकी पराकाष्ठा के रूप में, और आदम की पूर्ण बराबर के रूप में सृजी गई है।[132]

उत्पत्ति 2 में कहीं भी पुरुष को स्त्री पर अधिकार नहीं दिया गया, न उसे उसकी अगुवाई करने को कहा गया, न स्त्री को उसकी आज्ञा मानने को कहा गया। जो स्पष्ट है, वह यह है कि उत्पत्ति 2 के अंत तक उसके पास एक साझेदार है, जो उसे अकेलेपन से मुक्त करती है और उसी बुलाहट में उसके साथ सहयोग करती है, जो उसे पहले मिली थी।

उत्पत्ति 2 के अंत में दिए गए धर्मविज्ञानीय निष्कर्ष-वाक्य पर विचार कीजिए। यदि इस अध्याय की पूरकतावादी व्याख्या सही होती, तो इसमें अधिक संभावना से यह लिखा होता: "इस कारण पुरुष ... अपनी पत्नी का अधिकारी होगा।" इसके बजाय इसका निचोड़ वह वाक्य है, जो हर मसीही विवाह में उद्धृत किया जाता है: "इस कारण पुरुष ... अपनी पत्नी से मिला रहेगा, और वे एक ही तन बने रहेंगे।" "मिला रहेगा" और "एक ही तन" शब्द पुष्टि करते हैं कि यह अध्याय पारस्परिकता और पूर्णता सिखाता है, शासन या कप्तानी नहीं।

132. Richard Davidson, Flame of Yahweh, अध्याय 2.

पौलुस इस अंतर्दृष्टि की पुष्टि करता प्रतीत होता है: 1 कुरिन्थियों 6 में उत्पत्ति 2:24 का उल्लेख करने के बाद, कुछ ही पद आगे, 1 कुरिन्थियों 7 में वह स्पष्ट करता है: "पत्नी को अपनी देह पर अधिकार नहीं, पर वह उसे अपने पति को सौंपती है। ... वैसे ही पति को भी अपनी देह पर अधिकार नहीं, पर वह उसे अपनी पत्नी को सौंपता है।" पौलुस के अनुसार उत्पत्ति 2 का अर्थ यह है कि क्योंकि पति-पत्नी एक ही तन हैं, इसलिए उस एक तन तक दोनों की समान पहुँच है और उस पर दोनों का समान अधिकार है।[133]

इसलिए उत्पत्ति 2 यह नहीं सिखाता कि अगुवाई पुरुषत्व में और अधीनता स्त्रीत्व में अंतर्निहित है। इसके बजाय यह पुरुषों और स्त्रियों के बीच एकता, परस्परता और समानता की पुष्टि करता है – पदानुक्रम की नहीं।

स्त्रियों के पुरुषों के अधीनस्थ होने का पहला उल्लेख उत्पत्ति 3:16 में आता है, जहाँ कहा गया है कि पुरुष पाप के परिणामस्वरूप स्त्री पर "प्रभुता करेगा"। यदि परमेश्वर ने यह योजना बनाई होती कि पुरुष स्त्रियों की अगुवाई करें, तो क्या वे इसे इन पाठों में कम से कम उस स्पष्टता के आधे के साथ नहीं डालते, जो स्पष्टता वे अधिकार के दो अन्य उल्लेखों को देते हैं: सृष्टि पर अपतित मनुष्यजाति का भला अधिकार, और स्त्रियों पर पतित पुरुषों का स्वयं-आरोपित अधिकार? अधिकार के विषय में और किसी बात का न होना यह स्पष्ट कर देता है कि परमेश्वर के आदर्श के अनुसार मनुष्यों पर केवल परमेश्वर का अधिकार है; और पुरुषों और स्त्रियों के पास परमेश्वर का दिया हुआ सह-अधिकार है, ताकि वे एक-दूसरे का शोषण नहीं, बल्कि एक-दूसरे की सेवा करें, और एक-दूसरे के साथ साझेदारी में बाकी सृष्टि की भी।

देखना छोड़ना, फिर सचमुच देखना

जब हम बाइबल के किसी पाठ में कुछ ऐसा देखने लगते हैं जो वहाँ है ही नहीं, तो उसे देखना छोड़ने के लिए हमें परमेश्वर की सहायता की आवश्यकता होती है। कलीसिया की इस ऐतिहासिक शिक्षा को देखते हुए कि "स्त्रियाँ अधीनस्थ हैं, क्योंकि वे हीन हैं," अधिकांश प्राचीन टीकाकारों ने पतन-पूर्व के इन वृत्तांतों में स्त्री की हीनता को पढ़ लिया, ताकि कलीसिया और समाज में स्त्रियों की अगुवाई के प्रति उनका इनकार पुष्ट हो सके। पर अपनी सुविधाजनक स्थिति से अब हम जानते हैं कि पिछली पीढ़ियाँ केवल अपनी पितृसत्तात्मक, स्त्री-द्वेषी संस्कृतियों की आँखों से पाठ को पढ़ रही थीं। अपने चारों ओर की प्रबल संस्कृति के विरुद्ध खड़े होने के बजाय, उन्होंने उसके आगे घुटने टेक दिए।

फिर भी परमेश्वर के अनुग्रह से, न केवल कलीसियाई पिता क्रिसोस्टम (Chrysostom)[134], बल्कि प्रोटेस्टेंटवाद के संस्थापक लूथर (Luther) ने भी उत्पत्ति 2-3 को पर्याप्त स्पष्टता से देखा। स्त्रियों के प्रति लूथर की सामान्य रूप से निम्न धारणा के बावजूद, समय के साथ वह उस बात को "देखना छोड़" सका जो उत्पत्ति 2-3 में नहीं थी, और जो वहाँ थी, उसकी पूरी कद्र कर सका। जब वह अभी अविवाहित और युवा था, उसने 1523 में उत्पत्ति पर उपदेश-माला दी और बिना प्रश्न किए इस पुराने मत को स्वीकार किया कि हव्वा

133. Andrew Bartlett का धन्यवाद, जिसने मुझसे सीधी बातचीत में 1 कुरिन्थियों 6:16 और 7:4 के बीच के इस संबंध को देखने में मेरी सहायता की।

134. उदाहरण के लिए क्रिसोस्टम उत्पत्ति 2 के विषय में कहता है कि "हव्वा बनाए जाते ही अधीन नहीं की गई; और न ही, जब परमेश्वर उसे पुरुष के पास लाए, तब उसने परमेश्वर से ऐसी कोई बात सुनी, न पुरुष ने उससे ऐसा कोई शब्द कहा: उसने तो यह कहा कि वह उसकी हड्डियों में की हड्डी और उसके मांस में का मांस है।" (1 Corinthians, Homily 26)

अपने पति के अधीन रहने के लिए सृजी गई थी। उसने आदम द्वारा हव्वा का नाम रखने को इस बात का चिह्न समझा कि वह उस पर निर्भर थी। उसने उसके बारे में ऐसे लिखा मानो वह "एक कमज़ोर छोटी-सी स्त्री" हो, जिस पर उसके पति की बुद्धि छाई हुई थी, और आदम के पतन का दोष शैतान की भ्रांत शिक्षा के प्रति उसकी कमज़ोरी पर डाला।

पर जब वह बहुत बड़ी उम्र का और विवाहित हो गया, तो उसने उसी खंड पर फिर से प्रचार किया। इस बार उसने उसे अलग ढंग से देखा। जैसा कि एक इतिहासकार उसके संदेश का सार बताता है: "हव्वा अब एक वीर स्त्री, एक उत्कृष्ट दार्शनिक बन चुकी थी, जो घर में बराबर की भूमिका निभाती थी, और अपने पति के साथ बराबर की साझेदारी में सृष्टि पर शासन करती थी। पतन से पहले हव्वा किन-किन बातों में आदम के बराबर थी, इस पर ज़ोर देते हुए लूथर के विचार उसके किसी भी धर्मविज्ञानी पूर्ववर्ती से आगे निकल गए।"[135]

परमेश्वर के अनुग्रह से, जो बात लूथर ने – जो अपनी स्त्री-द्वेषी संस्कृति में गले तक डूबा हुआ था – उत्पत्ति 2 में देख ली, वह मुझे भी देखने का अनुग्रह मिला है। मेरी कई धर्मविज्ञानीय यात्राओं में, पवित्रशास्त्र की मेरी समझ में सुधार तब आया, जब मैंने यह स्वीकार किया कि मैं पवित्रशास्त्र में कुछ ऐसा पढ़ रहा था, जो वहाँ था ही नहीं।

मुझे वह रात स्पष्ट रूप से याद है, जब मैंने अंततः उत्पत्ति 2 की वास्तविक शिक्षा देखी। मुझे पूरा यकीन था कि अपतित वाटिका में पुरुष की अगुवाई मौजूद थी, पर (पहली बार) मैं कम से कम यह सुनने को तैयार था कि ऐसा क्यों नहीं हो सकता। इस विषय पर अपनी कलीसिया के शोध-पत्र का एक भाग लिखना शुरू करने के बाद, मैं पक्ष और विपक्ष के तर्कों की एक तालिका बनाने बैठा – इस बात के लिए बिल्कुल तैयार न होते हुए कि आगे क्या होने वाला है। जब मैं हर तर्क पर विचार कर रहा था, तो धीरे-धीरे एक बोध आकार लेने लगा, और मैं ज़ोर से बोल उठा: "ओह, कमाल है – यह यहाँ है ही नहीं। हव्वा हर तरह से आदम के बराबर है!"[136] उसी क्षण मेरी पत्नी मेरे पास से गुज़री, मेरे अचानक के इस उद्गार से थोड़ी हैरान। मैं उसे बताना चाहता था कि मैं क्या अनुभव कर रहा हूँ, और मैंने पवित्रशास्त्र में अभी-अभी क्या देखना छोड़ा और क्या सचमुच देखा है, पर इससे पहले कि मेरे मुँह से शब्द निकल पाते, मेरे गालों पर आँसू बहने लगे। क्योंकि मेरे सामने वह खड़ी थी, जिसे मैंने अनगिनत बार देखा था, और फिर भी उसे ऐसे देख रहा था, मानो पहली बार देख रहा हूँ। मैंने उससे कहा: "तुम मेरी ezer kenegdo हो – मेरी शक्तिशाली सहायक और मेरी सिद्ध जोड़ी। तुम मेरी हड्डियों में की हड्डी और मेरे मांस में का मांस हो। जहाँ मैं कमज़ोर हूँ, वहाँ तुम मज़बूत हो।" परमेश्वर के आदर्श के विषय में गलतफ़हमी का एक लट्ठा मेरे मन की आँख से निकल गया, और मैंने अपनी पत्नी को एक झलक में वैसे देखा, जैसे परमेश्वर उसे देखते हैं।

135. Mickey Mattox, Defender of the Most Holy Matriarchs: Martin Luther's Interpretation of the Women of Genesis, पृ. 252-53 (Davidson द्वारा Flame of Yahweh, अध्याय 2, फ़ुटनोट 23 में उद्धृत।)
136. अत्यंत पितृसत्तात्मक संसार में उत्पत्ति 1-3 जैसा कोई दस्तावेज़ कैसे लिखा जा सका और फिर भी पितृसत्ता से मुक्त रहा – इस बात ने मुझे चकित कर दिया। उदाहरण के लिए इसकी तुलना लगभग उसी समय की अत्राहासिस (Atrahasis) की उत्पत्ति-कथा से कीजिए, जिसमें सृष्टि तब अस्तित्व में आती है, जब पुरुष देवता मर्दुक (Marduk) देवी तियामत (Tiamat) के टुकड़े-टुकड़े कर देता है, जिसके शरीर के अंग हमारा भौतिक ब्रह्मांड बन जाते हैं।

क्या मैं यहाँ उत्पत्ति 1-2 की कुछ ऐसी चौंकाने वाली व्याख्याओं के साथ जोखिम उठा रहा हूँ, जिन्हें क्रिसोस्टम, लूथर और अब मैंने अनुचित रूप से अपना लिया है? बिल्कुल नहीं – पुराने नियम में लिंग और यौनिकता पर किसी धर्मविज्ञानीय रूप से रूढ़िवादी विद्वान की शायद सबसे प्रामाणिक पुस्तक में Richard Davidson ठीक वही मत रखता है, जो मैंने इस अध्याय में प्रस्तुत किया है, और वह उत्पत्ति 2 पर ऐसे पचास प्रमुख विद्वत्तापूर्ण अध्ययनों का हवाला देता है, जो इसी निष्कर्ष पर पहुँचते हैं।[137] वास्तव में, "अधिकांश टीकाकार अब इस बात को अस्वीकार करते हैं कि उत्पत्ति 1-2 पतन से पहले स्त्री को अधीनस्थ बनाता है।"[138] उदाहरण के लिए, The Book of Genesis: New International Commentary On The Old Testament उत्पत्ति 3:16 तक दंपति के संबंध का वर्णन "सह-बराबरों के राज्य ..." के रूप में करती है, जो "एक होकर शासन करते हैं।" इसी प्रकार Genesis: NIV Application Commentary का निर्णय है कि "उत्पत्ति 2 ... लैंगिक भूमिकाओं की कोई स्थापना या व्याख्या प्रस्तुत नहीं करता। नए नियम के पाठों पर विचार करने के बाद इस पूरे विषय के बारे में चाहे जो भी निष्कर्ष निकाले जा सकें, यह पाठ मानवीय भूमिकाओं से संबंधित है, लैंगिक भूमिकाओं से नहीं। पुरुष और स्त्री साथ मिलकर सेवा करते हैं।"

यहाँ तक कि रोमन कैथोलिक कलीसिया भी, जो संसार में कलीसिया का सबसे बड़ा भाग है, अब स्त्री-पुरुष की "आवश्यक" और "मूलभूत" समानता सिखाती है, और स्त्रियों के पुरुषों के अधीनस्थ होने का कारण पूरी तरह पतन को ठहराती है। पोप जॉन पॉल द्वितीय (Pope John Paul II) कहता है: "इस बुरी विरासत पर विजय पाना," जिसकी बात उत्पत्ति 3:16 में है, "हर मसीही का कार्य है।"[139] पितृसत्ता सत्य का कोई ताबीज़ नहीं है; बल्कि वह मनुष्यजाति की गर्दन पर तब आ फँसी, जब वह दुष्ट पहली बार रेंगता हुआ हमारे बीच आया। पर परमेश्वर की स्तुति हो, जिन्होंने पतन के तुरंत बाद यह प्रतिज्ञा की कि हव्वा का एक वंश[140] एक दिन आकर परमेश्वर के लोगों का जुआ उतारेगा, और अत्याचार के उन बंधनों को हटाकर तोड़ डालेगा, जो संबंधों को नष्ट करते हैं, बहुतों को जकड़ते हैं, और एक-दूसरे को देखने के हमारे ढंग को विकृत कर देते हैं।

137. जब से उसने अपनी पुस्तक "Flame of Yahweh" लिखी, यह संख्या बढ़ गई है। पूरकतावादी बाइबल कॉलेजों के बाहर, अधिकांश पुराने नियम विद्वानों में यही स्वीकृत सहमति है।
138. Kevin Giles, What the Bible Actually Teaches on Women, अध्याय 2 में यह कहता है।
139. John Paul II, Mulieris Dignitatem, पृ. 36–41
140. देखें उत्पत्ति 3:15।



5

छुड़ाए गए स्त्री-पुरुष संबंध

"बिना किसी हो-हल्ले या प्रचार के यीशु ने पतन के शाप को समाप्त कर दिया, स्त्री को उसकी आंशिक रूप से खोई हुई कुलीनता फिर से लौटा दी, और अपने नए राज्य के समुदाय के लिए सृष्टि की मूल आशीष – स्त्री और पुरुष की समानता – को फिर से प्राप्त कर लिया।" John Stott[141]

मैं केप टाउन में रहता हूँ, जो अफ्रीका के दक्षिणी छोर पर बसा एक बड़ा बंदरगाह-नगर है। अब कल्पना कीजिए कि जहाज़ों को शहर के बंदरगाह से निकलते ही अपनी दिशा तय करनी पड़ती – उसके बाद उन्हें अपना मार्ग फिर कभी बदलने की अनुमति न होती, और वे वहीं पहुँचने को बँधे होते जहाँ उनकी शुरुआती दिशा उन्हें अंततः ले जाती। केवल कुछ डिग्री का अंतर यह तय कर सकता था कि वे रियो डी जनेरियो पहुँचेंगे या मियामी।

पिछले अध्याय में हमने उत्पत्ति 2 और 3 के पूरकतावादी और परस्परतावादी पाठों की तुलना की थी, और पाया था कि पूरकतावादी मानते हैं कि पुरुष का अधिकार और स्त्री की अधीनता हमेशा से परमेश्वर की अच्छी सृष्टि का हिस्सा थी, जबकि परस्परतावादी तर्क देते हैं कि इस प्रकार का पदानुक्रम पहली बार पतन के बाद ही प्रकट हुआ। जैसा कि आप निःसंदेह पहचानते हैं, ये बहुत अलग-अलग आरंभ-बिंदु हैं। आप इनमें से जिस भी दृष्टिकोण के साथ खड़े होना चुनें, उसी से बाइबल की पूरी महाकथा को देखने का आपका पूरा ढंग, और वास्तव में वे निष्कर्ष भी जिन पर आप अंततः पहुँचते हैं, बहुत गहराई से प्रभावित होंगे। यदि स्त्री-पुरुष संबंधों की शुरुआती दिशा ही गलत हो जाए, तो आप केवल रियो में नहीं, बल्कि दक्षिणी ध्रुव पर पहुँच जाएँगे (निःसंदेह, रूपक के अर्थ में)! पूरकतावाद के बारे में (मेरी दृष्टि में) यही बात इतनी दुखद है: जिस बात पर परमेश्वर शोक करते हैं, कलीसिया के बड़े-बड़े हिस्से उसी को आदर्श बना लेते हैं।

हम कैसे निश्चित हो सकते हैं कि स्त्री-पुरुष संबंधों के लिए परमेश्वर की अच्छी योजना उत्तर की ओर, परस्परता की ओर बढ़ने की है, न कि दक्षिण की ओर, पूरकतावाद की ओर? धन्यवाद की बात है कि बाइबल की कथा में, विशेषकर जब छुटकारा पूरी तरह दृष्टि में आता है, हमारे पास और भी बहुत कुछ है जो इस शुरुआती दिशा की पुष्टि करता है।

141. John Stott, Issues Facing Christians Today, अध्याय 13.

जब पवित्रशास्त्र से धर्मशिक्षा निकालने की बात आती है, तो मुख्य बात यह नहीं है कि कितने पाठ किसी विषय पर बात करते हैं, बल्कि यह पहचानना है कि बाइबल के कौन-से बड़े हिस्से भार उठाने वाले हैं (जैसे खंभे किसी भवन का भार उठाते हैं)। उदाहरण के लिए, हम पहले ही देख चुके हैं कि बाइबल के पहले तीन अध्याय कितने निर्णायक और धर्मविज्ञान से कितने समृद्ध हैं। इसी प्रकार, जब नए नियम से स्त्री-पुरुष के विषय में एक संपूर्ण धर्मविज्ञान निकालने की बात आती है, तो कुछ और बड़े खंड हैं जिनका वज़न बहुत भारी है।

मेरा प्रस्ताव है कि ऐसे खंडों में ये शामिल हैं: स्त्रियों के साथ यीशु का व्यवहार; पिन्तेकुस्त के दिन स्त्रियों पर आत्मा का उण्डेला जाना; गलातियों 3:28 में छुड़ाई गई मानवजाति के लिए पौलुस का दर्शन; और नई सृष्टि में स्त्रियों का स्थान।

स्त्रियों के मित्र

अध्याय 11 में हम सुसमाचारों में स्त्रियों की सेवकाई की जाँच करेंगे। अभी के लिए आइए विशेष रूप से देखें कि यीशु ने स्त्रियों के साथ कैसा व्यवहार किया। उनकी पार्थिव सेवकाई का सबसे चौंका देने वाला पहलू यह है कि उन्होंने किस प्रकार स्त्री-पुरुष के पदानुक्रमों को उलट दिया और लिंगभेद को भीतर से खोखला कर दिया। वास्तव में, प्राचीन संसार के किसी धार्मिक अगुवे के रूप में उन्होंने स्त्रियों को जो क्रांतिकारी गरिमा दी, उसकी कोई मिसाल नहीं थी। मेरी एक मित्र ने यीशु के बारे में यही बात जानकर विश्वास किया। वह एक कट्टर नारीवादी थी और इतिहास में पितृसत्ता का अध्ययन कर रही थी, और जानना चाहती थी कि हर धर्म-संस्थापक ने पुरुष-प्रभुत्व को किस प्रकार बढ़ावा दिया था – और जब उसने सुसमाचारों में पाया कि यीशु इतिहास में स्त्रियों के पहले बड़े और जाने-माने मुक्तिदाता हैं, तो वह दंग रह गई। यह मनुष्य कौन है? उसने सोचा, और अब वह कलीसिया में मेरे पास खड़ी होकर उनके लिए गीत गाती है, उनके प्रेम में गहराई से डूबी हुई।

यीशु के इस व्यवहार की तुलना पहली सदी के रब्बी एलीएज़र से कीजिए, जिसने चेतावनी दी थी, "तोरा के वचनों को किसी स्त्री को सौंपने से अच्छा है कि उन्हें जला दिया जाए। जो कोई अपनी बेटी को तोरा सिखाता है, वह मानो उसे कामुकता सिखाता है।"[142] आधुनिक लोगों के रूप में हम सोच सकते हैं कि यीशु स्त्रियों के प्रति केवल दयालु थे, परन्तु वे इससे कहीं बढ़कर थे – वे क्रांतिकारी थे। उत्पत्ति के उन पहले अध्यायों को गलत ढंग से पढ़ने के कारण, और साथ ही उसके बाद आई उस पितृसत्ता के कारण जिसने ज्ञात संसार के हर कोने को ढक लिया था, शास्त्री और फरीसी अधिकांशतः संसार की बुराई के लिए स्त्रियों को ज़िम्मेदार ठहराते थे, और उन्हें उस सामाजिक और धार्मिक जीवन के बड़े हिस्से से सख़्ती से अलग रखते थे जिसमें उनके पति, पिता और भाई खुलकर भाग लेते थे। बेन सिरा भी एलीएज़र की इस घृणा में सहभागी था: "स्त्रियों के साथ मत बैठ; क्योंकि जैसे कपड़ों में से कीड़ा निकलता है, वैसे ही स्त्री में से स्त्री की दुष्टता निकलती है। स्त्री की

142. मिश्नाह, सोटा 3:4, 19a; 21b

भलाई से पुरुष की दुष्टता अच्छी है; स्त्रियाँ लज्जा और निन्दा का कारण बनती हैं।"[143]

परन्तु सुसमाचारों में स्त्रियाँ यीशु के सबसे निकट के मित्रों और अनुयायियों में से हैं। कम से कम एक सेवकाई-यात्रा में उनके बारह चेलों के साथ योअन्ना, सूसन्नाह और मरियम मगदलीनी भी उनके साथ चलती हैं। मरियम मगदलीनी को उन्होंने उथल-पुथल भरे जीवन से छुड़ाया था। सुसमाचारों में उसका उल्लेख कम से कम 14 बार हुआ है, और वही पहली व्यक्ति है जिसकी भेंट नए-नए जी उठे यीशु से होती है। जब वे अपने पुनरुत्थान के दिन उससे मिलते हैं, तो वह जी उठे प्रभु के मुँह से निकला पहला शब्द सुनती है: "हे नारी ..." पहले तो उसे निश्चय नहीं होता कि यह वही हैं, परन्तु जब वे उसका नाम लेते हैं, उस ढंग से जैसे केवल वही ले सकते हैं, तो वह समझ जाती है कि मृत्यु अंत नहीं है, और यह भी कि वह निश्चय ही उनके सबसे निकट के मित्रों में से एक है।

नासरत के यीशु स्त्रियों को गरिमा देने में अग्रदूत थे। सुसमाचारों में, जैसा कभी एलिय्याह भविष्यद्वक्ता ने किया था, वे एक विधवा के इकलौते पुत्र को मृतकों में से जिलाते हैं, क्योंकि वे पुत्र को खोने पर उसकी टूटन को भी पहचानते हैं और उसके बाद आने वाली उसकी सामाजिक असुरक्षा को भी।[144] एक और अवसर पर उनकी भेंट एक ऐसी स्त्री से होती है जो 12 वर्षों से लगातार मासिक रक्तस्राव की पुरानी बीमारी से जूझ रही थी। पवित्रता के उन नियमों का उल्लंघन करते हुए जो उसे अशुद्ध ठहराते थे, वह चुपके से उनके वस्त्र का आँचल छू लेती है। यीशु इस धारणा को अनदेखा करते हैं कि इससे अब वे "अशुद्ध" हो गए हैं, और इसके बजाय उस साहसी विश्वास की सराहना करते हैं जिसने उन तक हाथ बढ़ाने और उनसे चंगाई की सामर्थ खींच लेने का साहस किया। फिर, उस सबसे भयानक शुक्रवार को, यीशु अपने सबसे प्रिय मित्र से अपनी माता की देखभाल करने को कहते हैं, ठीक उसी क्षण जब उसके पुत्र को मृत्युदंड दिया जा रहा है और उसका हृदय छिद रहा है।

रब्बी तो स्त्रियों का उल्लेख करने से भी बचते थे, परन्तु इसके विपरीत यीशु अपने उपदेशों को स्त्री पात्रों से भर देते हैं। चौंका देने वाली बात यह है कि वे हमारे उद्धार पर परमेश्वर के आनन्द की तुलना उस विधवा के आनन्द से करते हैं जिसे उसका खोया हुआ सिक्का मिल जाता है।[145] दूसरी जगह वे ज़ोर देकर कहते हैं कि प्रार्थना में हमें जिस साहस की आवश्यकता है, वह उस विधवा का साहस है जो न्याय पाने के लिए पीछे पड़ी रहती है।[146]

वे कुछ ऐसी स्त्रियों को भी सामने लाते हैं जिन्होंने उनके संदेश का उचित उत्तर देकर एक आदर्श प्रस्तुत किया। वे क्षमा पाई हुई एक वेश्या के प्रेम भरे काम के द्वारा एक फरीसी के अतिथि-सत्कार रहित व्यवहार को लज्जित करते हैं।[147] वे एक कंगाल विधवा की उदारता की ओर ध्यान दिलाते हैं[148] और उन माताओं की सराहना करते हैं जो अपने बच्चों को आशीष दिलाने के लिए लाती हैं, यद्यपि उनके अधीर चेले उन्हें रोकते हैं।

143. सिराख (Sirach) 42:12-14। अन्यत्र सिराख कहता है कि बेटी पूरी तरह से हानि है और लगातार लज्जा का संभावित कारण बनी रहती है।
144. लूका 7:11-15
145. लूका 15:3-10
146. लूका 18:1-8
147. लूका 7:36-50
148. मरकुस 12:41-44

यीशु उन रिवाज़ों और नियमों को भी चुनौती देते हैं जिन पर कोई प्रश्न नहीं उठाता था और जो स्त्रियों को पुरुषों की मनमानी के आगे असुरक्षित छोड़ देते थे। एक कट्टर धार्मिक समूह यीशु को फँसाने का प्रयास करता है: "क्या यह उचित है कि पुरुष किसी भी और हर कारण से अपनी पत्नी को त्याग दे?" यीशु पुरुषों के पक्ष में झुके इस नियम का उत्तर विवाह के लिए परमेश्वर के मूल अभिप्राय को उद्धृत करके देते हैं: "पुरुष अपनी पत्नी के साथ मिला रहेगा और वे दोनों एक तन होंगे।" वे पूछते हैं कि फिर मूसा ने यह आज्ञा क्यों दी कि पुरुष अपनी पत्नी को त्यागपत्र देकर उसे छोड़ सकता है। यीशु का उत्तर बिजली की तरह कौंधता है: "मूसा ने तुम्हारे मन की कठोरता के कारण तुम्हें अपनी पत्नियों को त्यागने की अनुमति दी। परन्तु आरम्भ से ऐसा नहीं था।"[149] एक ऐसी स्थिति में जहाँ पत्नियों को पुरुष की संपत्ति माना जाता था, और पुरुष अपनी पत्नियों को खाना बिगाड़ देने के कारण या पर्याप्त सुंदर न होने के कारण त्याग सकते थे, और जहाँ त्यागी हुई पत्नियों की समाज में बहुत बुरी दशा होती थी, यीशु पुरुषों को चुनौती देते हैं कि वे अपनी पत्नियों को वैसे देखें जैसे वे स्वयं उन्हें देखते हैं: ऐसे व्यक्तियों के रूप में जिनका मूल्य जन्मजात है, जो उनसे अलग नहीं किया जा सकता और जिसकी भरपाई नहीं हो सकती। पतन से पहले हव्वा आदम के लिए जो थी – एक प्रिय समकक्ष और बराबर की साथी – वही उनकी पत्नियों को उनके लिए होना चाहिए। इन सब में यीशु उस पतित संस्कृति को, जिसमें वे लोग जी रहे हैं, न तो विवाह की परिभाषा बदलने देते हैं और न पुरुषों को यह विशेष अधिकार देते हैं कि वे अपनी ezer kenegdos को यूँ ही त्याग दें।

स्त्रियाँ भी मनुष्य हैं

स्त्रियाँ मूल रूप से पुरुषों से "भिन्न प्राणी" नहीं हैं। वे पुरुषों की पूरी मनुष्यता में सहभागी हैं। उन्हें विशेष व्यवहार नहीं, बल्कि मनुष्योचित व्यवहार मिलना चाहिए। स्त्रियों से व्यवहार करते समय हर प्रकार का दिखावा और आडंबर कम करके यीशु ने यही करके दिखाया। सुसमाचारों में स्त्रियाँ बस वहाँ मौजूद हैं। कभी उनके नाम बताए जाते हैं, कभी वे पृष्ठभूमि में होती हैं। कभी वे पाती हैं। कभी वे देती हैं। यीशु उन्हें पुरुषों के बराबर मानते हैं। उनके समय के लिए अविश्वसनीय बात यह है कि सुसमाचारों में कहीं भी यीशु पुरुषों को पुरुष होने के नाते या स्त्रियों को स्त्री होने के नाते संबोधित नहीं करते। न ही वे लैंगिक भूमिकाओं के विषय में या लिंग के अनुसार "उचित" दायरों में बने रहने के विषय में कोई भी शिक्षा देते हैं। कनाडा की लेखिका Sarah Bessey कहती है:

सुसमाचारों के सारे वृत्तांतों में मैंने देखा कि यीशु ने स्त्रियों के साथ पुरुषों से कोई अलग व्यवहार नहीं किया, और यह मुझे अच्छा लगा। हम ऐसी नाज़ुक चीज़ नहीं थीं जिसका वर्णन शब्दों में न हो सके, बढ़िया चीनी मिट्टी के बर्तनों जैसी कोमल। हमें न कोई मुफ़्त छूट मिली, न समझने, योगदान देने या काम करने की हमारी क्षमता के बारे में कोई नाज़ुक चिंता की गई। स्त्रियाँ न तो पवित्र आत्मा के द्वारा पाप का बोध कराए जाने के लिए बहुत मधुर या बहुत कमज़ोर थीं, और न अंधकार के राज्य को पीछे धकेलने के लिए बहुत चालबाज़, या

149. मत्ती 19:1-8

ईर्ष्या, असुरक्षा और छल की ओर बहुत झुकी हुई। यीशु ने न तो संरक्षक बनकर हमें छोटा समझा, और न ऊपर से कृपा जताई।[150]

Bessey की बातों में Oxford की एक विदुषी, Dorothy Sayers, की कुछ भावनाएँ गूँजती हैं:

शायद इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि स्त्रियाँ पालने के पास सबसे पहले थीं और क्रूस के पास सबसे अंत तक। उन्होंने इस मनुष्य जैसा कोई पुरुष कभी नहीं देखा था – ऐसा दूसरा कोई कभी हुआ ही नहीं था। एक भविष्यद्वक्ता और शिक्षक जो उन पर कभी नहीं झुँझलाए, जिन्होंने कभी उनकी चापलूसी नहीं की, न उन्हें फुसलाया, न संरक्षक बनकर उन्हें छोटा समझा ... जिन्होंने उनके प्रश्नों और तर्कों को गंभीरता से लिया, जिन्होंने कभी उनके लिए उनका दायरा तय नहीं किया, कभी उनसे स्त्रियोचित बनने का आग्रह नहीं किया और न स्त्री होने के कारण उनका उपहास किया; जिनका कोई निजी स्वार्थ नहीं था और न बचाने के लिए कोई बेचैन पुरुष-प्रतिष्ठा; जिन्होंने उन्हें वैसा ही स्वीकार किया जैसा उन्हें पाया, और जो अपने बारे में बिल्कुल भी सचेत नहीं थे।[151]

सुसमाचारों के लेखक न केवल समाज और सेवकाई में स्त्रियों की उपस्थिति को सामान्य बात के रूप में दिखाते हैं, बल्कि उन्हें यथासंभव सबसे सकारात्मक रूप में भी प्रस्तुत करते हैं। यूहन्ना रचित सुसमाचार को लीजिए। जब हम उसके अध्यायों में स्त्रियों के साथ यीशु के व्यवहार का सर्वेक्षण करते हैं, तो केवल एक स्त्री (मार्था) उनसे निराश दिखाई देती है, परन्तु उसके प्रति उनका व्यवहार बहुत कोमल है, और जैसा हम अध्याय 11 में देखेंगे, उसके बाद आए उसके हृदय-विदारक दुःख का उत्तर वे सर्वोच्च आदर से देते हैं। उस समाज के विपरीत जिसमें वे डूबे हुए थे और जो स्त्रियों को कोसता और उन पर दोष मढ़ता था, यहाँ किसी भी स्त्री को यीशु की पहल का विरोध करते, या विश्वास करने में असफल होते, या उन्हें छोड़ते या उनसे विश्वासघात करते हुए नहीं दिखाया गया है। इसकी तुलना उस ढंग से कीजिए जिससे यूहन्ना यीशु के पुरुष चेलों में कपट, घमंड, चंचलता, मंदबुद्धि, जानबूझकर किए गए अविश्वास और पूरी दुष्टता को प्रस्तुत करता है।[152]

या लूका रचित सुसमाचार को लीजिए। लूका द्वारा लिखी यीशु की इस जीवनी में 27 स्थान हैं जहाँ पुरुषों और स्त्रियों को जोड़ों में रखा गया है – स्वर्गदूत के पुरुष जकरयाह को और फिर मरियम को दर्शन देने से लेकर, उन पुरुषों और स्त्रियों की उपस्थिति तक, जो यीशु की मृत्यु और पुनरुत्थान के साक्षी बनते और उनसे जुड़ते हैं। लूका अपनी इस उत्कृष्ट रचना की संरचना में जितना परिश्रम करता है, उसे देखते हुए उसकी बात को चूक जाना दुर्भाग्यपूर्ण होगा: यीशु के आने के साथ स्त्रियों की पूरी गरिमा भी आती है। शायद यह बात सबसे अच्छी तरह तब समझ में आती है जब हम विशेष रूप से तीन स्त्रियों के साथ यीशु के व्यवहार को देखते हैं:

कुएँ पर मिली स्त्री। एक ऐसे संसार में जहाँ किसी स्त्री को धर्मविज्ञान सिखाना न केवल अनावश्यक बल्कि अनैतिक माना जाता था, यूहन्ना 4 में हम पाते हैं कि यीशु जानबूझकर अपनी यात्रा ऐसे बनाते हैं कि सामरिया के एक कुएँ पर एक तिरस्कृत स्त्री से उनकी भेंट हो। क्योंकि रब्बी अपने ही परिवार की स्त्रियों से भी सार्वजनिक रूप से बात नहीं करते थे, अनजान स्त्रियों की तो बात ही क्या, इसलिए उनका खुलकर उससे

150. Sarah Bessey, Jesus Feminist, अध्याय 1.
151. Dorothy Sayers, Are Women Human? Essays on the Role of Women in Society, पृ. 68.
152. देखें यूहन्ना 12:4-5; 13:2, 27-40, 37-38; 9:24-35; और 16:18, 31-32।

सहायता माँगना और उससे बातचीत करना उसे हैरान कर देता है। यह जल्दी ही इस स्त्री के संबंधों के इतिहास और परमेश्वर की उसकी आवश्यकता के विषय में एक व्यक्तिगत और धर्मवैज्ञानिक चर्चा में बदल जाता है। बहुत से पुरुषों ने उसके साथ दुर्व्यवहार किया था, और उसकी कहानी से पता चलता है कि किसी पुरुष ने उसके साथ पहले कभी ऐसा व्यवहार नहीं किया था। उनकी बातचीत में – जो यीशु और किसी भी एक व्यक्ति के बीच दर्ज की गई सबसे लंबी बातचीत है – वे उसके धर्मवैज्ञानिक प्रश्नों को गंभीरता से लेते हैं। जब वे उससे कहते हैं कि जाकर अपने पति को बुला ला, तो हम उनमें उस समय की इस धारणा की एक प्रत्यक्ष, सूक्ष्म-सी उपेक्षा देखते हैं कि पत्नी को अपने पति के पीछे चलना चाहिए, उसकी अगुवाई नहीं करनी चाहिए। इस बातचीत का परिणाम यह होता है कि वह यूहन्ना रचित सुसमाचार में पहली व्यक्ति बनती है जो यह खोज लेती है कि यीशु ही मसीह हैं, और वह उनकी पहली बड़े पैमाने की सुसमाचार-प्रचारक बन जाती है।

व्यभिचार में पकड़ी गई स्त्री। पुरुषों का एक समूह एक स्त्री को, जो अपने पति के अलावा किसी और के साथ बिस्तर पर पकड़ी गई थी, यीशु के पाँवों के सामने पटक देता है। यद्यपि मूसा की व्यवस्था व्यभिचारी पुरुष को भी दोषी ठहराती थी, वह इस कहानी से गायब है – संभवतः उसे छोड़ दिया गया था। भीड़ उसकी लज्जा और स्पष्ट दोष का उपयोग करके यीशु को फँसाना चाहती है। वह वहाँ पड़ी है, चेहरा धूल में, उघाड़ी गई और अपमानित, पहले पत्थर के लगने की प्रतीक्षा करती हुई। परन्तु यीशु उसके चारों ओर सुरक्षा का एक घेरा खींच देते हैं।[153] सन्नाटा छा जाता है, तनाव चरम पर पहुँच जाता है। और फिर वे बोलते हैं। परन्तु बाकी सब आवाज़ों के विपरीत, उनकी आवाज़ में क्रोध और घृणा भरी नहीं है। उनकी चुनौती – कि जिसने पाप न किया हो वही पहला पत्थर मारे – स्त्री को नहीं, बल्कि पुरुषों को ठीक आँखों के बीच जाकर लगती है। एक-एक करके भिंची हुई मुट्ठियाँ भारी पत्थरों को छोड़ देती हैं। सिमटी हुई स्त्री धीरे-धीरे उठती है, और वे प्रतीक्षा कर रहे हैं – उसे बदल देने वाले, अनसुने अनुग्रह से उसे कोमलता से ढकते हुए।

बैतनिय्याह की मरियम। मध्य पूर्व में पुरुष और स्त्रियाँ आपस में मेलजोल नहीं रखते थे। यरूशलेम के योसे बेन योहानान ने सिखाया था, "जो किसी स्त्री से बहुत बातें करता है, वह अपने ऊपर बुराई लाता है और अंत में नरक का वारिस होगा।"[154] परन्तु यीशु मरियम को "अपने पाँवों के पास बैठने" देकर अपने अनुयायियों को चौंका देते हैं – यह किसी का चेला होने के लिए एक पारिभाषिक शब्द था। ऐसा करने वाले पहले रब्बी के रूप में यीशु एक बार फिर स्त्री-पुरुष के रिवाज़ों का उल्लंघन करते हैं। घरेलू काम करना स्त्रियों की भूमिका थी, और अतिथि रब्बी से बातचीत करना और उसकी शिक्षा के नीचे बैठना पुरुषों की भूमिका थी। इसके अतिरिक्त, किसी रब्बी का शिष्य होना व्यक्ति को ऐसे प्रशिक्षण-मार्ग पर रख देता था जिसका परिणाम संभवतः स्वयं रब्बी बनना हो सकता था। फिर भी जब मरियम को आदर का यह स्थान देने के लिए यीशु को चुनौती दी जाती है, तो वे दिखाते हैं कि वे अपने पाँवों के पास उसके स्थान को केवल सहन ही नहीं कर रहे हैं। वे उसे प्रोत्साहित कर रहे हैं। वे बर्तन माँजती मार्था को हल्की-सी झिड़की भी देते हैं: "तू बहुत बातों के लिए चिन्ता करती और घबराती है, परन्तु थोड़ी ही बातें आवश्यक हैं – या वास्तव में केवल एक। मरियम ने उत्तम भाग चुन लिया है।"[155]

153. इस वाक्य के लिए Sarah Bessey का धन्यवाद, जो एक कुशल लेखिका है।
154. Perkei Avot 1:5
155. लूका 10:42

सुसमाचारों में बैतनिय्याह की मरियम से हमारी भेंट एक बार और होती है। यीशु की गिरफ़्तारी से केवल छह दिन पहले, जब क्रूस की छाया उनके सिर पर मँडरा रही है, यीशु एक भोज में अतिथि हैं, तभी वह, जो पहले उनके पाँवों के पास बैठी थी, बहुमूल्य इत्र से भरा संगमरमर का एक पात्र लेकर भीतर आती है। वह चुपचाप कमरे में घूमती हुई यीशु के पीछे आकर खड़ी होती है, पात्र को तोड़ती है, और उसका अनमोल इत्र उनके सिर और पाँवों पर उण्डेल देती है।

पुरुष अतिथियों को न यह काम अच्छा लगता है, न वह सुन्दर सुगंध जो अब पूरे कमरे में फैल गई है। इसके बजाय वे मरियम के बलिदान को मूर्खतापूर्ण बर्बादी कहकर उसकी निन्दा करते हैं: "उसे छोड़ दो!" यीशु कहते हैं, "तुम उसे क्यों सताते हो? उसने मेरे साथ एक सुन्दर काम किया है! उसने पहले से ही मेरी देह पर इत्र उण्डेलकर मेरे गाड़े जाने की तैयारी की है। ... सारे जगत में जहाँ कहीं सुसमाचार का प्रचार किया जाएगा, वहाँ उसके इस काम की चर्चा भी की जाएगी।"[156] मरकुस रचित सुसमाचार में किसी भी व्यक्ति को इससे बड़ा आदर नहीं मिलता, और यीशु यह आदर अपनी प्रतिष्ठा को जोखिम में डालकर देते हैं, क्योंकि वे मेज़ पर बैठे पुरुषों के क्रोध को अनदेखा कर देते हैं। और अभी, इन पदों को पढ़ते हुए, हम में से हर एक के लिए कैसा पवित्र क्षण है: हम यीशु की प्रतिज्ञा की पूर्ति बन जाते हैं – उसी स्त्री को पहचानते और आदर देते हुए जिसे यीशु ने आदर दिया।

स्त्रियाँ और मिशन का आत्मा

पिन्तेकुस्त के दिन पतरस चकित भीड़ को 120 पुरुषों और स्त्रियों पर आत्मा के उण्डेले जाने का अर्थ समझाता है। वह कहता है कि इससे योएल की वह भविष्यद्वाणी पूरी होती है जो सदियों पहले की गई थी: "परमेश्वर कहता है, कि अन्त के दिनों में ऐसा होगा, कि मैं अपना आत्मा सब लोगों पर उण्डेलूँगा। तुम्हारे बेटे और तुम्हारी बेटियाँ भविष्यद्वाणी करेंगी, तुम्हारे जवान दर्शन देखेंगे, और तुम्हारे पुरनिए स्वप्न देखेंगे। वरन् अपने दासों पर भी, पुरुषों और स्त्रियों दोनों पर, मैं उन दिनों में अपना आत्मा उण्डेलूँगा, और वे भविष्यद्वाणी करेंगे।"[157]

पूरी इब्रानी बाइबल में किसी दास, किसी अन्यजाति व्यक्ति या किसी स्त्री पर आत्मा के उण्डेले जाने का कोई वर्णन नहीं है – केवल स्वतंत्र यहूदी पुरुषों पर। और अधिक ठीक कहें तो, केवल राजाओं और भविष्यद्वक्ताओं को ही इस प्रकार की आशीष मिलती है। फिर भी योएल की भविष्यद्वाणी, जो किसी यहूदी भविष्यद्वक्ता द्वारा की गई शायद सबसे चौंका देने वाली भविष्यवाणी है, घोषणा करती है कि एक समय आएगा जब आत्मा न केवल यहूदी राजाओं और भविष्यद्वक्ताओं को, बल्कि "सब लोगों" को दिया जाएगा, जिनमें अन्यजाति, निम्न दर्जे के "दास" या सेवक, और यहाँ तक कि "बेटियाँ" और "स्त्रियाँ" भी शामिल हैं।

इसके बाद प्रेरितों के काम की पुस्तक यरूशलेम के उस ऊपरी कमरे से बाहर की ओर जंगल की आग की तरह फैलते परमेश्वर के आत्मा का वर्णन करती है, जब वे वही करते हैं जिसकी उन्होंने प्रतिज्ञा की थी: स्त्रियों,

156. मरकुस 14:1-9
157. प्रेरितों के काम 2:17-18; योएल 2:28-29

दासों और अन्यजातियों को भी भरते और सामर्थ देते हैं। यहाँ तक कि पतरस भी, जो अपने पालन-पोषण से मिले यहूदी जातीय-अहंकार (केवल अपनी जाति को श्रेष्ठ मानने की प्रवृत्ति) से ग्रस्त था, बाद में कुरनेलियुस के घर में अन्यजातियों पर आत्मा को उण्डेला जाता देखकर चकित रह जाता है। केवल तभी वह अंततः यह विश्वास कर पाता है कि अन्यजाति भी परमेश्वर के लोगों में शामिल किए जा सकते हैं।[158] जब हम बाइबल को आरम्भ से अंत तक पढ़ते हैं, तो जो कभी केवल पुरुषों को दिया जाता था, उसे पिन्तेकुस्त के दिन स्त्रियों को भी दिया जाता देखकर हमें भी वैसा ही विस्मय अनुभव होना चाहिए जैसा पतरस ने कुरनेलियुस के घर में अनुभव किया था!

फिर भी यीशु ठीक इसी दिशा में चीज़ों को ले जा रहे थे। उदाहरण के लिए, अपने पार्थिव जीवन में स्त्रियों के साथ उनका क्रांतिकारी व्यवहार क्रूस पर उनकी मृत्यु में अपनी पूर्णता तक पहुँचा, जो वही क्षण भी था जब मन्दिर का परदा फटकर दो टुकड़े हो गया,[159] और परमेश्वर की पवित्र उपस्थिति, जो कभी परम पवित्र स्थान में निवास करती थी, बाहर सड़कों पर उमड़ आई। उनकी मृत्यु के समय यहूदी मन्दिर का परिसर एक-दूसरे को घेरे हुए क्षेत्रों से बना था, जिनमें सबसे भीतर से सबसे बाहर की ओर क्रमशः केवल यहूदी पुरुषों को भीतरी आँगन में, अन्यजातियों को अन्यजातियों के आँगन में, और उसके बाद स्त्रियों को स्त्रियों के आँगन में जाने की अनुमति थी। प्रतीक काफ़ी स्पष्ट है: ये आँगन दिखाते हैं कि विभिन्न प्रकार के लोग परमेश्वर की उपस्थिति के अधिक से अधिक कितने निकट जा सकते थे। केवल इब्रानी पुरुषों को ही मन्दिर के मुख्य भवन में जाने की अनुमति थी, और परम पवित्र स्थान के भीतर वर्ष में केवल एक बार, केवल एक यहूदी पुरुष जा सकता था।

तो फिर उस आश्चर्य को अनुभव कीजिए कि जब यीशु की पसली से लहू बहा, तब परमेश्वर का आत्मा परम पवित्र स्थान से उमड़ पड़े – अपने किनारों को तोड़ते हुए, बीच के परदे को चीरकर दो टुकड़े करते हुए, और संभवतः हर किसी को ठीक बीचों-बीच ले आते हुए! अब परमेश्वर के लोगों की संरचनाओं में कोई भी क्षेत्र "केवल पुरुषों के लिए" या "केवल यहूदियों के लिए" नहीं रहेगा।

आत्मा का वरदान केवल व्यक्ति के पूर्ण उद्धार और परमेश्वर के लोगों में उसके सम्मिलित किए जाने के एक पहलू के रूप में ही नहीं दिया जाता, बल्कि परमेश्वर के मिशन में उसकी पूरी सहभागिता के लिए भी दिया जाता है। योएल अपनी भविष्यद्वाणी में और पतरस अपने प्रचार में, दोनों ही आत्मा को उस निमंत्रण से जोड़ते हैं जो संसार के पास जाता है: "जो कोई प्रभु का नाम लेगा, वह उद्धार पाएगा।"[160] योएल और पतरस की बात यह है कि जब मसीह आएँगे, तो स्वतंत्र और दास, बूढ़े और जवान, धनी और कंगाल, यहूदी और अन्यजाति, और पुरुष और स्त्री, सब समान रूप से उद्धार पाएँगे और समान रूप से आत्मा की सामर्थ में मिशन करने के लिए भेजे जाएँगे। मसीह में हम सब, पुरुष और स्त्रियाँ दोनों, राजा, भविष्यद्वक्ता, याजक, संदेशवाहक और मिशनरी होंगे।

पहली कलीसिया के आरम्भ होते ही योएल की भविष्यद्वाणी फल लाने लगती है। प्रेरितों के काम 1 में, आत्मा दिए जाने से पहले, हमें बताया जाता है कि "ये सब स्त्रियों और यीशु की माता मरियम और उसके भाइयों के

158. प्रेरितों के काम 10:44-48
159. मत्ती 27:5
160. प्रेरितों के काम 2:21, योएल 2:32

साथ एक चित्त होकर लगातार प्रार्थना में लगे रहे। उन्हीं दिनों में पतरस विश्वासियों के बीच में (जो लगभग एक सौ बीस लोगों का समूह था) खड़ा होकर कहने लगा, 'हे भाइयो और बहनो ...'"[161] केवल पुरुष ही नहीं, बल्कि स्त्रियाँ भी तैयारी क्यों कर रही थीं? उत्तर बहुत सरल है: जी उठे यीशु ने उन्हें भी यह काम सौंपा था। प्रेरितों के काम 1 ठीक लूका 24 के बाद आता है, जिसमें स्वर्ग पर उठाए जाने से कुछ दिन पहले यीशु अपने चेलों के साथ भोजन करते हैं – जिनमें प्रेरित "और उनके साथी" शामिल हैं[162] – और उन्हें आज्ञा देते हैं कि वे सब जातियों के बीच यीशु के गवाह बनें, परन्तु तभी जब वे ऊपर से सामर्थ पा लें। ये "उनके साथी" कौन हैं? इनमें बहुत सी स्त्रियाँ शामिल हैं – पद 10 में "वे" स्त्रियाँ हैं, और यही "वे" पद 33, 50-53 में और प्रेरितों के काम 1:14 में फिर से आती हैं। जब "वे" (जिनमें बहुत सी स्त्रियाँ शामिल हैं) आत्मा पाते हैं, तब क्या होता है? वे "सब" देखने वालों के सामने "परमेश्वर के बड़े-बड़े कामों की चर्चा" करने लगते हैं[163] – केवल पुरुष ही नहीं, बल्कि परमेश्वर के मिशन में सबसे आगे स्त्रियाँ भी।[164]

यदि कलीसिया को दी गई सबसे बड़ी आशीष आत्मा है, और कलीसिया का सबसे महत्त्वपूर्ण काम एक खोए हुए और मरते हुए संसार में यीशु का प्रचार करना है, तो हमें इस पर ध्यान देना चाहिए कि आरम्भिक कलीसिया में स्त्रियों ने – पुराने नियम की प्रवृत्ति के बिल्कुल विपरीत – पुरुषों के साथ सामर्थ और मिशन में पूरी तरह भाग लिया। आइए इस निर्णायक बात को न चूकें: यद्यपि बाइबल की कथा के क्षितिज पर यहूदी, पुरुष और स्वामी छाए हुए हैं, फिर भी योएल की भविष्यद्वाणी और पतरस द्वारा उसका उद्धरण यह दिखाते हैं कि परमेश्वर की योजना में अन्यजातियों, दासों और स्त्रियों को बराबर का स्थान दिया जा रहा है। यह रहा एक और छोटा परन्तु भार उठाने वाला खंड, जो कुछ ऐसा ही कहता है।

न यहूदी न अन्यजाति

यीशु से मिलने से पहले, सब यहूदियों की तरह, पौलुस भी संभवतः वह प्रातःकालीन प्रार्थना करता रहा होगा जिसमें वह परमेश्वर की स्तुति करता था कि उसे अन्यजाति, दास या स्त्री नहीं बनाया गया। जब यह प्रार्थना किसी आराधनालय में स्त्रियों की उपस्थिति में की जाती थी, तो स्त्रियाँ उत्तर में परमेश्वर का धन्यवाद करती थीं "कि तूने मुझे अपनी इच्छा के अनुसार बनाया है" – और ऐसा करके वे परमेश्वर की दृष्टि में अपनी हीनता स्वीकार करती थीं, और प्राचीन यहूदी जीवन में अपने कम विशेषाधिकारों को मान लेती थीं।

161. प्रेरितों के काम 1:15-16
162. लूका 24:33
163. प्रेरितों के काम 2:11
164. इसी प्रकार, प्रेरितों के काम 4 में, उसी यरूशलेम की कलीसिया में, हम एक बार फिर स्त्रियों को सुसमाचार के मिशन की अगली पंक्ति में पाते हैं। जब पतरस और यूहन्ना बंदीगृह से छोड़े जाते हैं, तो वे अपने साथियों के पास जाते हैं और उन्हें प्रार्थना में ले चलते हैं। "जब वे प्रार्थना कर चुके, तो वह स्थान जहाँ वे इकट्ठे थे हिल गया, और वे सब पवित्र आत्मा से परिपूर्ण हो गए, और परमेश्वर का वचन हियाव से सुनाते रहे।" (प्रेरितों के काम 4:31) प्रार्थना और प्रचार करने वाले ये "वे" कौन हैं? यह मानने का कोई कारण नहीं है कि प्रेरितों के काम 1 और 2 में उल्लिखित स्त्रियों को इससे बाहर रखा गया होगा। यह तब स्पष्ट हो जाता है जब हम पुरुषों और स्त्रियों द्वारा परमेश्वर की भलाई की घोषणा का परिणाम देखते हैं: "और विश्वास करने वाले पहले से भी अधिक प्रभु में आ मिलते गए, बहुत से पुरुष और स्त्रियाँ भी।" (प्रेरितों के काम 5:14)

हम पुराने नियम में वाचा के चिह्न, अर्थात् खतने, के बारे में सोच सकते हैं कि यहूदी पुरुषों के लिए उसे सहना बहुत पीड़ादायक रहा होगा। वास्तव में, यह एक प्रतिष्ठा-चिह्न था जिसे वे अपनी देह में धारण करते थे, और जो उन्हें सबसे ऊँचे धार्मिक वर्ग का ठहराता था – ऐसा वर्ग जिससे अन्यजाति और स्त्रियाँ दोनों बाहर थे। अब कल्पना कीजिए कि नए नियम में वाचा के चिह्न ने समानता का कैसा रोमांच पैदा किया होगा। अब पुरुषों का खतना नहीं (जो अपने स्वभाव से ही कुछ लोगों को बाहर रखता था), बल्कि बपतिस्मा हर विश्वासी की विधि है, जो यहूदी और अन्यजाति, पुरुष और स्त्री, सबके लिए है।

बहुत से विद्वान बताते हैं कि गलातियों 3:28 के निम्नलिखित शब्द, जो पौलुस की मन-परिवर्तन से पहले की उस प्रातःकालीन प्रार्थना का ठीक-ठीक उत्तर देते हैं, बपतिस्मा के समय बोले जाने वाले एक सूत्र के रूप में प्रयोग किए जाते थे: "अब न कोई यहूदी है न अन्यजाति, न दास न स्वतंत्र, न नर और नारी; क्योंकि तुम सब मसीह यीशु में एक हो।"[165] इसका मुख्य वाक्यांश है "मसीह यीशु में"। यद्यपि नासरत के यीशु उस व्यक्ति का प्रतिनिधित्व करते हैं जिसे यहूदी परमेश्वर के लोगों में सबसे ऊँचा स्थान रखने वाला मानते थे – अर्थात् स्वतंत्र यहूदी पुरुष – फिर भी जो कोई उनके नाम से बपतिस्मा लेता है, वह उनमें वही बहुमूल्य स्थान विरासत में पाता है। यह पद सारी मानवजाति को नीचे खींचकर एक ही स्तर पर नहीं लाता। बल्कि यह छुड़ाई गई मानवजाति को उठाकर एक ही ऊँचाई पर ले जाता है। कोई आश्चर्य नहीं कि इस पद को बाइबल का सामाजिक रूप से सबसे विस्फोटक पाठ और मानवजाति के लिए पौलुस का मैग्ना कार्टा (अर्थात् अधिकारों और स्वतंत्रता का महान घोषणापत्र) कहा गया है। यदि हम गलातियों 3:28 को पूरी पत्री के संदर्भ में पढ़ें, तो देखते हैं कि पौलुस की बात यह है कि परमेश्वर का एक ही परिवार है, दो नहीं। जिस परिवार की प्रतिज्ञा परमेश्वर ने अब्राहम से की थी, उसमें वे सब हैं जो यीशु पर विश्वास करते हैं – अब्राहम के बेटे भी और बेटियाँ भी; वे भी जो उसके वंश में जन्मे, अर्थात् विश्वासी यहूदी, और वे भी जिन्होंने उसके विश्वास का अनुकरण किया, अर्थात् विश्वासी अन्यजाति। पौलुस यह यहूदियों और अन्यजातियों के बीच के समस्याग्रस्त संबंधों को सुलझाने के लिए लिखता है। यहूदी लंबे समय से अपने को अन्यजातियों से श्रेष्ठ मानते आए थे, और यद्यपि अब उनका उद्धारकर्ता एक ही था, फिर भी वे मानते थे कि वे परमेश्वर के चहेते हैं। बहुत से यहूदी मसीही मानते थे कि यदि अन्यजाति परमेश्वर की दृष्टि में उनके सच्चे बराबर के रूप में खड़े होना चाहते हैं, तो पहले उन्हें खतना कराना होगा। पौलुस इसमें से कुछ भी स्वीकार नहीं करता। वह खतना वालों और खतनारहितों के भेद को महत्त्वहीन घोषित करता है। यहूदी और अन्यजाति, दोनों की अब्राहम के भीतरी घेरे तक पूरी पहुँच है: "अब न कोई यहूदी है न अन्यजाति," वह कहता है। पौलुस के अनुसार, "बाहर संसार में" जातीय पृष्ठभूमि और सामाजिक स्थिति के जो भी भेद हैं, उनका "यहाँ कलीसिया में" कोई महत्त्व नहीं है।

यद्यपि गलातियों की पत्री का केन्द्र यह है कि यहूदी अन्यजातियों को हीन समझते थे, फिर भी पौलुस प्रसंगवश बताता है कि यही सिद्धांत "स्वतंत्र और दास" तथा "पुरुष और स्त्री" के पदानुक्रमों पर भी लागू होता है। उसकी मुख्य बात यह है कि सुसमाचार मूल्य और विशेषाधिकार की उन पदानुक्रमित व्यवस्थाओं को मिटा देता है जिनकी जड़ें जातीय पृष्ठभूमि, सामाजिक दर्जे और लिंग में हैं।

165. तुरंत का संदर्भ यह संबंध स्पष्ट कर देता है: "तुम में से जितनों ने मसीह में बपतिस्मा लिया है, उन्होंने मसीह को पहिन लिया है" (गलातियों 3:27)। नए विश्वासियों के रूप में, बपतिस्मा के जल में उतरते हुए, वे मसीह में अपनी नई पहचान और एकता को शब्दों में व्यक्त करते थे।

न दास न स्वतंत्र

गलातियों में पौलुस एक क्रांतिकारी धर्मविज्ञान बताता है जो एक प्रकार के सांस्कृतिक भूकंप की शुरुआत करता है, यद्यपि पहले वह केवल एक हल्के आरम्भिक झटके के रूप में ही महसूस हुआ। इसी प्रकार फिलेमोन को लिखी उसकी पत्री भी एक मसीही स्वामी को सिखाती है कि वह अपने लौटते हुए दास के साथ अपने व्यवहार को कैसे बदले। पौलुस कुलुस्से की इस घरेलू कलीसिया के अगुवे को प्रोत्साहित करता है कि वह अपने भागे हुए दास उनेसिमुस का फिर से स्वागत करे। भाग जाने के बाद उनेसिमुस ने विश्वास कर लिया था, और इसलिए अब पौलुस उसे इस पत्री के साथ उसके "स्वामी" के पास वापस भेज रहा है, परन्तु इस समझ के साथ कि उनके संबंध की पुरानी स्थिति अब टूट जाएगी। वह फिलेमोन को चुनौती देता है कि वह उनेसिमुस को ग्रहण करे "अब दास के समान नहीं, बल्कि दास से भी बढ़कर, एक प्रिय भाई के समान। वह मुझे बहुत प्रिय है, परन्तु तुझे तो उससे भी अधिक प्रिय है, मनुष्य के नाते भी और प्रभु में भाई के नाते भी।"[166] गलातियों और फिलेमोन को साथ-साथ रखकर देखें तो हम पाते हैं कि पौलुस यहूदी–अन्यजाति और स्वतंत्र–दास के तनावों से एक ही ढंग से निपटता है: सामाजिक भेदों को नकारे बिना, वह सुसमाचार की जोड़ने वाली और बराबर करने वाली सामर्थ को लागू करके जहाँ तक संभव हो पदानुक्रम को घोल देना चाहता है।[167]

इन सभी उदाहरणों में पौलुस सामाजिक पदानुक्रमों को क्रांतिकारी रूप से उलट देता है – उस ढंग में जिससे विश्वासी एक-दूसरे को देखते हैं और एक-दूसरे से व्यवहार करते हैं: गलातिया की कलीसिया में यहूदी यूनानियों के प्रति, और कुलुस्से की कलीसिया में स्वामी दास के प्रति। हो सकता है कि पौलुस उनके सामाजिक भेदों को मिटा नहीं रहा,[168] परन्तु मसीह के क्रूस और आत्मा के वरदान ने उन भेदभावों, शत्रुताओं, बहिष्कारों और पदानुक्रमित मान्यताओं को घोलना आरम्भ कर दिया है जिन्हें इतने लंबे समय से स्वीकार किया जाता और सम्मान दिया जाता रहा था।

अपनी सभी पत्रियों में पौलुस विशेष रूप से इस बात की चिंता करता है कि सुसमाचार समुदाय के व्यावहारिक जीवन में वास्तव में क्या अंतर लाता है। कलीसिया का उद्देश्य केवल सुसमाचार पर विश्वास करना नहीं है। कलीसिया इसलिए है कि वह अपने समुदाय में और उसके द्वारा यह व्यवहार में उतारे कि लोग एक-

166. फिलेमोन 1:16

167. इसी प्रकार, कुरिन्थुस की कलीसिया में धनी और कंगाल के तनावों से निपटते हुए, 1 कुरिन्थियों 11:17-34 में पौलुस उस पापपूर्ण ढंग का सामना करता है जिससे उनके समुदाय के धनी लोग कंगालों के साथ व्यवहार कर रहे थे। वह उन्हें इस बात के लिए डाँटता है कि वे प्रभु भोज की मेज़ पर ठूँस-ठूँसकर खाते और मतवाले हो जाते हैं, जबकि कंगालों को भूखा छोड़ देते हैं। वह उनसे पूछता है, "क्या तुम परमेश्वर की कलीसिया को तुच्छ जानते हो, और जिनके पास कुछ नहीं है उन्हें लज्जित करते हो?" सुसमाचार में, जहाँ धनी और कंगाल मसीह की एक देह के रूप में जुड़े हुए हैं, एक बेहतर मार्ग यह है कि "भाई और बहनें, जब (वे) खाने के लिए इकट्ठे हों, तो एक-दूसरे की प्रतीक्षा करें।"

168. इसीलिए पास्टरीय और मिशन के स्तर पर पौलुस अब भी यहूदियों और अन्यजातियों में सुसमाचार प्रचार करने में, और मूसा की व्यवस्था के प्रश्न पर – जिसे यहूदी थामे हुए थे – उनकी पास्टरीय देखभाल करने में अलग-अलग तरीका अपनाता है। (देखें 1 कुरिन्थियों 9:17-23, रोमियों 14-15) यहूदी और अन्यजाति "एक ही मंज़िल पर पहुँचे होंगे, परन्तु वे बहुत अलग-अलग मार्गों से आए हैं और उनकी सांस्कृतिक स्मृतियाँ और कल्पनाएँ बहुत अलग-अलग बनी रहती हैं।" (N.T. Wright – स्रोत: www.bit.ly/3q7vQid)

दूसरे से संबंध रखने और एक-दूसरे के साथ मिलकर काम करने का सबसे अच्छा ढंग क्या है। यह संसार में वह एक स्थान है जहाँ सबको बराबरी के आधार पर भाग लेना है।

इस बात को पूरी तरह चूकते हुए, बहुत से पूरकतावादी विद्वान गलातियों 3:28 को केवल परमेश्वर के सामने व्यक्ति के दर्जे के बारे में एक सामान्य कथन के रूप में पढ़ते हैं, और इस तथ्य को नकारते हैं कि पौलुस को विशेष रूप से इस निर्णायक धर्मविज्ञान के व्यावहारिक और सामुदायिक परिणामों की चिंता है। परन्तु पौलुस के मन में, परमेश्वर के सामने हमारा दर्जा हमारे ठोस संबंधों को और कलीसिया के स्वरूप को आकार देगा। मसीह का सुसमाचार न केवल परमेश्वर से, बल्कि एक-दूसरे से भी संबंध रखने का एक नया मार्ग खोलता है। जिस यहूदी, अत्यधिक पदानुक्रमित संसार में पौलुस पला-बढ़ा था, वह मसीह में उलट दिया गया है। गलातियों 3:28 कहता है कि मसीह में यह नया जीवन समुदाय के एक नए अनुभव की ओर ले जाना चाहिए।

स्त्री-पुरुष के लिए इसका क्या अर्थ है?

न नर न नारी

“यहूदी और अन्यजाति” तथा “स्वतंत्र और दास” के बीच एकता और समानता की सूची देने के बाद पौलुस एक तीसरा जोड़ा जोड़ता है: “नर और नारी”। इसका अर्थ यह नहीं कि पौलुस कह रहा है कि बपतिस्मा लेने पर हम लिंगहीन प्राणी बन जाते हैं, जिनमें स्त्री-पुरुष का कोई भेद नहीं रहता। बल्कि जो जाना चाहिए, वह है शक्ति के तनाव भरे संबंध – “बाहर संसार में” पुरुष और स्त्री के बीच पदानुक्रम और पुरानी व्यवस्था चाहे कितनी ही कठोर हो, परन्तु “यहाँ कलीसिया में” एक नई व्यवस्था प्रकट होने लगी है।

कलीसिया में अगुवाई के बारे में क्या? इस विषय पर हम आगे और विस्तार से आएँगे, परन्तु अभी के लिए नए नियम के विद्वान F.F. Bruce के इस सूझ-बूझ भरे अवलोकन पर ध्यान दीजिए:

मसीह में पुरुष और स्त्री का दर्जा बराबर करने में पौलुस उससे अधिक कोई प्रतिबंध नहीं मानता जितना यहूदी और अन्यजाति का, या दास और स्वतंत्र व्यक्ति का दर्जा बराबर करने में मानता है। यदि साधारण जीवन में मसीह में जीवन कलीसिया की संगति में खुले रूप से प्रकट होता है, तो यदि कोई अन्यजाति कलीसिया में उतनी ही स्वतंत्रता से आत्मिक अगुवाई कर सकता है जितनी कोई यहूदी, या कोई दास उतनी ही स्वतंत्रता से जितनी कोई नागरिक, तो कोई स्त्री उतनी ही स्वतंत्रता से क्यों नहीं जितनी कोई पुरुष?[169]

यद्यपि हम में से कुछ को Bruce की बात स्वीकार करना कठिन लग सकता है, मेरी समझ में यह पौलुस के उस अवलोकन से मेल खाती है जो लिंग, सामाजिक दर्जे या जातीय पृष्ठभूमि के तर्क से विशेषाधिकार, शक्ति या पद को बनाए रखने के हर प्रयास को रद्द कर देता है। Bruce उस असंगति को उजागर करने का प्रयास करता है जो बहुत से बाइबल-विद्वानों में दिखाई देती है, जो जातीय (यहूदी–अन्यजाति) और सामाजिक-आर्थिक (दास–स्वतंत्र) संबंधों के संदर्भ में पौलुस के धर्मविज्ञान के परिणामों पर तो खुशी से बात करते हैं,

169. F.F. Bruce. The Epistle to the Galatians

परन्तु उसे पुरुष–स्त्री संबंधों पर लागू करने से चूक जाते हैं। परन्तु पौलुस के इस संक्षिप्त धर्मवैज्ञानिक कथन में तीनों समानांतर हैं।

कम से कम हम यह कह सकते हैं कि यद्यपि गलातियों में पौलुस यह विस्तार से नहीं बताता कि इन सब का स्त्रियों और दासों के लिए क्या अर्थ है, जैसा वह अन्यजातियों के लिए बताता है, फिर भी पौलुस स्पष्ट रूप से उन बाधाओं को गिरा रहा है जो कुछ लोगों को विशेषाधिकार देती हैं और दूसरों को अनुचित रूप से दंडित करती हैं। उसके दर्शन में स्त्रियाँ, दास और अन्यजाति सांस्कृतिक पदानुक्रमों से स्वतंत्रता का, और मसीह की देह में एकता और समानता का अनुभव करते हैं, जहाँ भेद, यद्यपि पूरी तरह मिटाए नहीं गए, बहुत गहराई तक कम किए जाने हैं। यह सचमुच एक क्रांतिकारी विचार है।

परन्तु यह सब किस ओर जा रहा है? आरम्भिक कलीसिया में स्त्रियों की सेवकाई की भूमिकाओं की खोज हम अध्याय 12 में करेंगे, परन्तु आइए अब कहानी के अंत पर छलांग लगाएँ।

जैसा स्वर्ग में है

अभी के लिए हम एक ऐसे समय में जी रहे हैं जिसमें उत्पत्ति 3:16 की अंधकारपूर्ण भविष्यवाणियाँ पूरी हो रही हैं, और पुरुष तत्परता से स्त्रियों पर प्रभुता करते हैं, परन्तु अंत में पितृसत्ता यीशु के Parousia (अर्थात् उनके पुनरागमन) में निगल ली जाएगी। गलातियों को लिखी अपनी पत्री के अंत में, जिसमें पौलुस ने यह दिखाने का प्रयास किया है कि सुसमाचार परमेश्वर के लोगों में विभाजनों और पदानुक्रमों को कैसे मिटा देता है, वह कहता है, "न खतना कुछ है, न खतनारहित होना; महत्त्व की बात नई सृष्टि है।"[170] नई सृष्टि का अर्थ है परमेश्वर की यह प्रतिज्ञा कि वे मानवजाति और ब्रह्माण्ड को नए सिरे से गढ़ेंगे। परमेश्वर द्वारा संसार के भावी नवनिर्माण में विभाजन और पदानुक्रम फिर नहीं रहेंगे, परन्तु यह भविष्य अभी से कलीसिया में मसीह के कार्य और आत्मा की उपस्थिति के द्वारा प्रकट हो रहा है, जो सब को अगुवाई और शिक्षा के वरदान देते हैं, ताकि पुरुष और स्त्रियाँ एक बार फिर साथ-साथ राज्य करें (लूका 22:30)।[171]

परन्तु कुछ पूरकतावादी विद्वान दावा करते हैं कि आने वाले संसार में भी स्त्रियाँ नहीं, बल्कि पुरुष राज्य करेंगे। यह सच है कि यीशु ने अपने पुरुष प्रेरितों से भविष्य में बारह सिंहासनों की प्रतिज्ञा की, और कहा कि एक दिन उनके बलिदानों के लिए उन्हें बड़े आदर का प्रतिफल मिलेगा,[172] परन्तु जब हम उन खंडों को पढ़ते हैं जिनमें ये प्रतिज्ञाएँ की गई हैं, तो पाते हैं कि यीशु ऐसी ही प्रतिज्ञा केवल बारहों से नहीं, बल्कि अपने सब

170. गलातियों 6:15
171. आने वाले राज्य के विषय में योएल की भविष्यद्वाणी के अनुसार, जब आत्मा बाढ़ की तरह उण्डेला जाएगा और हर जाति के असंख्य लोग मसीह-प्रभु का नाम पुकारने लगेंगे, तब पुरुष और स्त्रियाँ दोनों उसके मुख्य सहभागी होंगे।
172. मत्ती 19:28 और लूका 22:30

अनुयायियों से करते हैं।[173] जहाँ तक यूहन्ना के प्रकाशनात्मक दर्शन (अंत के समय के बारे में प्रतीकों से भरा दर्शन) में 24 प्राचीनों की बात है, हमें ऐसे प्रतीकों को बहुत दूर तक नहीं खींचना चाहिए – यदि 24 प्राचीन इस्राएल के 12 पुत्रों और 12 प्रेरितों से मिलकर बने हों, तब भी वे परमेश्वर के सभी लोगों का प्रतिनिधित्व करते हैं। इसके अतिरिक्त, यह दावा करने में कि सर्वोच्च आदर सदा के लिए 24 स्वतंत्र यहूदी पुरुषों के लिए सुरक्षित है, समस्या यह है कि इसके परिणाम केवल स्त्रियों के लिए ही नहीं, बल्कि दासों और अन्यजातियों के लिए भी हैं: क्या वे सदा के लिए सबसे नीचे पड़े रहेंगे? निश्चय ही नहीं – हम ऐसा निष्कर्ष तभी निकालेंगे जब हम व्याख्या की वह बहुत आम गलती करें कि पवित्रशास्त्र के प्रतीकात्मक कथनों को शाब्दिक रूप से पढ़ें।

यीशु की शिक्षा में जो बात स्पष्ट है, वह यह है कि जो पतित संसार में सबसे निचली सीढ़ी पर हैं, उन्हें छुड़ाए गए संसार में सबसे ऊँचे स्थान दिए जाएँगे। तोड़ों के दृष्टान्त में यीशु यहाँ की विश्वासयोग्यता को स्वर्गीय प्रतिफल और स्वर्ग में अधिकार से जोड़ते हैं। चौथी सदी की मसीही शहीद ब्लैंडिना (Blandina), "एक दुबली-पतली, कमज़ोर, तिरस्कृत दासी," का यह विश्वास करना सही था कि मृत्यु तक उसकी विश्वासयोग्यता का अर्थ यह हो सकता है कि वह "स्वर्ग के श्रेष्ठ जनों के बीच रखी जाएगी, परमेश्वर के दीप्तिमान महल के वैभव के ठीक भीतर बैठाई जाएगी, उनसे भी आगे जो पतित संसार में उससे कहीं अधिक ऊँचे थे।"[174]

हम कैसे जानते हैं कि नए आकाश और नई पृथ्वी में पुरुष और स्त्रियाँ दोनों बराबर के सह-वारिस होंगे? पुराने नियम में "अगुवाई" के तीन काम थे जिन्हें परमेश्वर ने विशेष अभिषेक के लिए अलग किया था: भविष्यद्वक्ता, याजक और राजा। नया नियम इन तीन भूमिकाओं को लेकर उन्हें – यद्यपि एक विकसित रूप में – अनन्तकाल तक आगे ले जाता है।

स्त्रियाँ भविष्यद्वक्तिन हैं और रहेंगी। हम पहले ही देख चुके हैं कि पिन्तेकुस्त के दिन स्त्रियाँ पुरुषों के साथ भविष्यद्वाणी कर रही थीं। यद्यपि भविष्यद्वाणी, जैसी हम उसे जानते हैं, समाप्त हो जाएगी, फिर भी संभव है कि परमेश्वर के लोग अनन्तकाल तक परमेश्वर के वचनों की घोषणा करते रहें। इसी प्रकार, स्त्रियाँ भी राजा और याजक हैं और रहेंगी। पतरस जिस कलीसिया को लिखता है, उसकी स्त्रियों को भी शामिल करता है, जब वह उनसे कहता है कि वे "एक चुना हुआ वंश, और राजकीय याजकों का समाज हैं।"[175] यूहन्ना भी स्त्रियों को शामिल करते हुए परमेश्वर की स्तुति करता है कि ये भूमिकाएँ सदा तक बनी रहेंगी: "तूने उन्हें हमारे परमेश्वर की सेवा के लिए एक राज्य और याजक बनाया है, और वे पृथ्वी पर राज्य करेंगे।"[176]

अपनी कल्पना को समय के सबसे दूर के क्षितिज तक फैलाइए, और आप देखेंगे कि जब हम नए आकाश और नई पृथ्वी में गलातियों 3:28 की परिपूर्ण पूर्ति देखेंगे, तब वे लैंगिक पदानुक्रम, जो अब तक हमारे

173. मत्ती 19 में, बारहों से की गई अपनी स्पष्ट रूप से रूपकात्मक प्रतिज्ञा के बाद – कि उनके लिए किए गए उनके बलिदानों के बदले वे बारह सिंहासनों पर बैठेंगे – यीशु तुरंत बताते हैं कि "हर एक" जो उनके लिए बलिदान करता है, इस जीवन में और आने वाले जीवन में प्रतिफल पाएगा, यहाँ तक कि बहुत से जो पृथ्वी पर पिछले हैं, स्वर्ग में पहले होंगे। इसी प्रकार लूका 22 में, अपने चेलों के इस्राएल का न्याय करने वाले बारह सिंहासनों पर बैठने का उल्लेख करने से ठीक पहले (फिर से, अत्यधिक प्रतीकात्मक), यीशु कहते हैं कि उनके राज्य में जो सबका सेवक है, वही सबसे बड़ा होगा – यह केवल बारहों के लिए नहीं, बल्कि संभवतः किसी के भी लिए है। दोनों ही स्थितियों में बारह सिंहासन प्रतीकात्मक हैं, और यह विचार मौजूद है कि स्वर्ग में ऐसे लोग भी हो सकते हैं जिन्हें प्रेरितों से भी ऊँचा आदर मिले।
174. Tom Holland, Dominion: The Making of the Western Mind, अध्याय 4
175. 1 पतरस 2:9
176. प्रकाशितवाक्य 5:10

मानवीय इतिहास पर हावी रहे हैं, अंततः पूरी तरह लुप्त हो जाएँगे। स्त्री और पुरुष के बीच की हर प्रतिस्पर्धा, एक के द्वारा दूसरे का हर अपमान, अंततः एक-दूसरे की पूरी सराहना और एक-दूसरे के साथ पूरे सहयोग को स्थान दे देगा।

इससे हमें आश्चर्य नहीं होना चाहिए: नई सृष्टि मूल सृष्टि की पुनर्स्थापना और उसका पूर्ण रूप से खिल उठना है। परमेश्वर की आरम्भिक योजना यह थी कि आदम और हव्वा दोनों परमेश्वर के वचन के संरक्षक हों, दोनों राजा और रानी के रूप में पृथ्वी पर राज्य करें, और दोनों याजकों के रूप में वाटिका-मन्दिर में सेवा करें। अनन्तकाल तक छुड़ाए गए पुरुष और स्त्रियाँ पहली सृष्टि की अंतिम परिपूर्णता में सह-भविष्यद्वक्ताओं, सह-शासकों और सह-याजकों के रूप में कंधे से कंधा मिलाकर परिश्रम करेंगे। यदि यीशु की कलीसिया के लिए सब कुछ इसी ओर जा रहा है, तो हम अभी इससे कम किसी बात से संतुष्ट क्यों हों?

छोटे पदों में बड़ी बातें होती हैं

बाइबल में नाम से उल्लिखित हज़ारों लोगों में से अधिकांश स्वतंत्र यहूदी पुरुष हैं – वास्तव में पूरे पवित्रशास्त्र में केवल 200 स्त्रियों के नाम आते हैं। बाइबल की कथा में और मानवजाति की कथा में स्त्रियों की इतनी शानदार शुरुआत के बाद, हमारे पहले माता-पिता का पतन हमें एक विनाशकारी दिशा में भेज देता है। बाइबल के अधिकांश मुख्य पात्र स्वतंत्र हैं, दास नहीं; यहूदी हैं, अन्यजाति नहीं; और पुरुष हैं, स्त्रियाँ नहीं। हम इसका क्या अर्थ समझें? क्या हम केवल बाइबल के आँकड़ों के आधार पर यह निष्कर्ष निकालें कि परमेश्वर स्वतंत्र यहूदी पुरुषों को अधिक पसंद करते हैं?

निश्चय ही नहीं। हमें मुख्यतः यहूदियों की कहानियाँ इसलिए मिलती हैं क्योंकि वही वे लोग थे जिन्हें परमेश्वर ने विशेष रूप से इसलिए बुलाया था कि वे मसीह की प्रतीक्षा करें, उन्हें अपने बीच ठहराएँ और संसार के साथ बाँटें। इसी प्रकार, स्वतंत्र पुरुष हर कदम पर इसलिए मिलते हैं क्योंकि भूमध्यसागरीय संसार की प्राचीन सामाजिक परिस्थितियों ने दासों और स्त्रियों को व्यावहारिक रूप से अदृश्य बनाए रखा था, सार्वजनिक जीवन से बाहर – और वही वह क्षेत्र है जहाँ बाइबल की कथा का इतना बड़ा हिस्सा घटित होता है।

इसलिए पवित्रशास्त्र में दिखाई देने वाला यह आँकड़ों का असंतुलन इस बात का परिणाम नहीं है कि परमेश्वर ने अपने राज्य में विशेष व्यवहार या कामों के लिए पुरुषों को प्राथमिकता देकर चुना, बल्कि यह एक पतित, पुरुष-प्रधान संसार का परिणाम है (जैसी परमेश्वर ने उत्पत्ति 3 में भविष्यवाणी की थी), जिसके स्तर पर उतरकर परमेश्वर ने दया और धीरज के साथ अपने प्रकाशन और छुटकारे के उद्देश्यों को ढाला है।

इसके अतिरिक्त, यदि हम केवल पुराने नियम में ही नहीं, बल्कि नए नियम में भी यहूदियों पर दिए गए भारी ज़ोर को देखें, तब भी हम यह निष्कर्ष नहीं निकाल सकते कि परमेश्वर की व्यवस्था में यहूदी ऊँचे हैं, यदि हम बाइबल के उन निर्णायक कथनों को ध्यान में रखें जिनका धर्मवैज्ञानिक महत्त्व बहुत बड़ा है – जैसे अब्राहम से की गई यह प्रतिज्ञा कि उसके वंशज "जगत की जातियों को आशीष देंगे", या कलीसिया के विषय में यह

घोषणा कि "मसीह में न कोई यहूदी है न अन्यजाति"। यद्यपि ऐसे कथन कम और दूर-दूर हैं, फिर भी बाइबल की व्याख्या में और कलीसिया के स्वीकृत विश्वास और व्यवहार में यही निर्णायक कारक बनते हैं।

बाइबल की कथा पर यद्यपि स्वतंत्र यहूदी पुरुष छाए हुए हैं, फिर भी वह केवल स्वतंत्र यहूदी पुरुषों के बारे में नहीं है। धर्मवैज्ञानिक रूप से कहें तो, छोटे पदों में बड़ी बातें होती हैं। सब पाठों का वज़न बराबर नहीं है। यद्यपि बहुमूल्य रत्न पूरी पृथ्वी पर बिखरे हो सकते हैं, फिर भी कुछ स्थान ऐसे हैं जहाँ वे बड़ी मात्रा में पाए जाते हैं। यद्यपि सारा पवित्रशास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा से रचा गया है, फिर भी हम देखते हैं कि महत्त्वपूर्ण शिक्षा की बड़ी मात्रा कुछ विशेष स्थानों पर इकट्ठी है: जब परमेश्वर के हृदय में, कलीसिया में, और संसार के भविष्य और इतिहास की परिणति में स्त्री का स्थान खोजने की बात आती है, तो पवित्रशास्त्र के जो भाग सबसे ऊँचे स्वर में बोलते हैं, वे प्रायः ये हैं: बाइबल की कथा का बिल्कुल आरम्भ और बिल्कुल अंत, और उनके बीच, स्त्रियों के साथ यीशु का व्यवहार, योएल 2 की पूर्ति में स्त्री-पुरुष का भेद न करने वाले आत्मा का उण्डेला जाना, और गलातियों 3:28 में पौलुस का आत्मिक समानता का वह क्रांतिकारी दर्शन जो धीरे-धीरे परन्तु निश्चित रूप से कलीसिया में सामाजिक और कार्यात्मक समानता के रूप में प्रकट होने लगता है – एक ऐसा तथ्य जो विशेष रूप से रोमियों 16 में (जिसे हम अध्याय 12 में खोलकर देखेंगे) और रोमियों 12 में (जिसकी खोज हम अध्याय 13 में करेंगे) स्पष्ट दिखाई देता है।

इन दिशा-बिंदुओं के अपनी जगह पर होने से हम स्त्रियों के मूल्यांकन में दक्षिण के बजाय उत्तर की ओर बढ़ने में कहीं अधिक सक्षम हैं, और विशेष रूप से बाइबल के उन तीन खंडों को भी समझ सकते हैं जो तिरछी हवा की तरह हमारे मार्ग को काटते हैं और ऊपरी तौर पर पढ़ने पर स्त्रियों की हीनता या अधीनस्थता का संकेत देते प्रतीत होते हैं। आगे हम इन्हीं बहुत विवादित खंडों की ओर मुड़ते हैं।

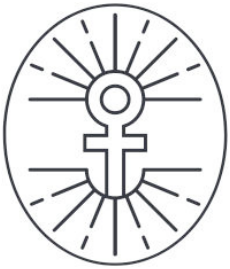

दूसरा भाग

(अ)सीमित स्त्रियाँ



6

कुरिन्थुस की स्त्रियाँ

"तौभी प्रभु में न तो स्त्री पुरुष से स्वतंत्र है, और न पुरुष स्त्री से स्वतंत्र है।" 1 कुरिन्थियों 11:11

एक सलाह: यदि कठिन बाइबल-खंडों को समझने का तकनीकी काम सचमुच आपकी रुचि का नहीं है, तो इस और अगले अध्याय को छोड़कर आगे बढ़ जाइए, और अंत में इनके पास लौट आइए। मेरी पत्नी ने, जो मेरे पहले मसौदे की पहली पाठक थीं, मुझसे कहा, "इस पुस्तक का हर अध्याय पढ़ने में आनन्द देता है," सिवाय इस और अगले अध्याय के, जो "बहुत कठिन परिश्रम" हैं। पाठक के लिए मैं चाहता हूँ कि ये दो अध्याय कम जटिल होते – परन्तु क्योंकि पूरकतावाद "बाइबल-आधारित" तर्कों का एक बहुत परिष्कृत जाल है, इसलिए यदि हम लोगों और कलीसियाओं को इससे मुक्त होते देखना चाहते हैं, तो हमें इस जाल को एक-एक धागा करके खोलना होगा।

संक्षिप्त रूपरेखा के रूप में, इस और अगले अध्याय में रखी गई मुख्य बात, साफ़-साफ़ कहें तो, यह है कि पूरकतावादियों ने पौलुस की पत्रियों के तीन खंडों (1 कुरिन्थियों 11:3-16, 1 कुरिन्थियों 14:33-35 और 1 तीमुथियुस 2:11-15) को गलत पढ़ा है। वे यह निष्कर्ष निकालते हैं कि पौलुस सभी कलीसियाओं में सदा के लिए स्त्रियों की अधीनस्थता सिखाता है। परन्तु इन खंडों में पौलुस एक विशेष ऐतिहासिक स्थिति या किसी संस्कृति-विशेष की संवेदनशीलता से निपट रहा है। यद्यपि इनमें स्त्री-पुरुष के विषय में धर्मविज्ञान के ऐसे अंश भरे हैं जो आज हमारी सहायता कर सकते हैं, फिर भी इनमें से कोई भी पाठ सार्वभौमिक बना दिए गए लैंगिक पदानुक्रम का समर्थन नहीं करता।

पहले दो खंडों पर हम इस अध्याय में और तीसरे पर अगले अध्याय में विचार करेंगे, और हर बार पूरकतावादी व्याख्या को समझने और उसकी समीक्षा करने का प्रयास करेंगे, फिर एक बेहतर व्याख्या की ओर बढ़ेंगे। पतरस कहता है कि पौलुस की पत्रियों में "कुछ बातें ऐसी हैं, जिनका समझना कठिन है।"[177] ये तीन खंड निश्चय ही इस सूची में सबसे ऊपर होंगे। (डुबकी लगाने से पहले एक और बात: इस और अगले अध्याय को बोझिल होने से बचाने के लिए मैंने बहुत सी अत्यंत महत्त्वपूर्ण सामग्री टिप्पणियों में रख दी है, इसलिए वहाँ भी खोजबीन करने में संकोच न करें।)

177. 2 पतरस 3:16

1 कुरिन्थियों 11:3-16

पहला खंड सिर ढाँकने से संबंधित है – तो इसके लिए अपनी सोच की टोपी पहन लीजिए। अपने जीवन में कई बार, हर बार कई-कई दिनों तक, मैंने इसका सिर-पैर समझने का प्रयास किया है, और हर बार थोड़ी अधिक समझ लेकर, परन्तु शुरुआत से भी अधिक प्रश्नों के साथ लौटा हूँ। आइए मैं आपको बताऊँ कि इस खंड के विषय में मैं कहाँ तक पहुँचा हूँ।

इस खंड को एक बार जल्दी से पढ़ लीजिए (अध्याय के आगे बढ़ने के साथ आपको बार-बार इसकी ओर लौटना पड़ सकता है), और यदि पढ़ते-पढ़ते आपका सिर चकराने लगे तो आश्चर्य न कीजिए:

3 परन्तु मैं चाहता हूँ कि तुम यह जान लो कि हर एक पुरुष का सिर मसीह है, और स्त्री का सिर पुरुष है, और मसीह का सिर परमेश्वर है। 4 जो पुरुष सिर ढाँके हुए प्रार्थना या भविष्यद्वाणी करता है, वह अपने सिर का अपमान करता है। 5 परन्तु जो स्त्री उघाड़े सिर प्रार्थना या भविष्यद्वाणी करती है, वह अपने सिर का अपमान करती है – यह सिर मुँडाने के बराबर है। 6 यदि स्त्री अपना सिर न ढाँके, तो अपने बाल भी कटा ले; परन्तु यदि स्त्री के लिए बाल कटाना या सिर मुँडाना लज्जा की बात है, तो वह अपना सिर ढाँके।

7 पुरुष को अपना सिर ढाँकना उचित नहीं, क्योंकि वह परमेश्वर का स्वरूप और महिमा है; परन्तु स्त्री पुरुष की महिमा है। 8 क्योंकि पुरुष स्त्री से नहीं हुआ, परन्तु स्त्री पुरुष से हुई; 9 और न पुरुष स्त्री के लिए सिरजा गया, परन्तु स्त्री पुरुष के लिए। 10 इसी कारण स्त्री को स्वर्गदूतों के कारण अपने ही सिर पर अधिकार रखना चाहिए। 11 तौभी प्रभु में न तो स्त्री पुरुष से स्वतंत्र है, और न पुरुष स्त्री से स्वतंत्र है। 12 क्योंकि जैसे स्त्री पुरुष से हुई, वैसे ही पुरुष स्त्री से जन्म लेता है। परन्तु सब कुछ परमेश्वर से है।

13 तुम आप ही विचार करो: क्या स्त्री को उघाड़े सिर परमेश्वर से प्रार्थना करना उचित है? 14 क्या वस्तुओं का स्वभाव ही तुम्हें नहीं सिखाता कि यदि पुरुष लम्बे बाल रखे, तो यह उसके लिए लज्जा की बात है, 15 परन्तु यदि स्त्री लम्बे बाल रखे, तो यह उसकी महिमा है? क्योंकि लम्बे बाल उसे ओढ़नी के रूप में दिए गए हैं। 16 यदि कोई इस विषय में विवाद करना चाहे, तो हमारी कोई दूसरी रीति नहीं है – और न परमेश्वर की कलीसियाओं की।

आइए मैं सबसे पहले अपनी सबसे विवादास्पद बात खुलकर कह दूँ: यदि इस खंड की पूरकतावादी व्याख्या सही है, तो – यद्यपि कुछ पूरकतावादी इसका इनकार करते हैं – इसका अर्थ है कि, पहला, हर वयस्क स्त्री को किसी पुरुष के, सामान्यतः अपने पिता या पति के, अधिकार के अधीन जीना है; दूसरा, स्त्रियों को कलीसिया में और समाज में भी पुरुषों के ऊपर सर्वोच्च स्तर की अगुवा नहीं होना है, और काफ़ी संभव है कि निचले स्तर पर भी पुरुषों की अगुवा नहीं होना है; और, तीसरा, सब स्त्रियों को, सामान्य रूप से कहें तो, सब पुरुषों के अधीन रहना है, चाहे बहनें भाइयों के, या महिला सहकर्मी पुरुष सहकर्मियों के। जब मैं स्वयं पूरकतावादी था, तब भी मैंने ऐसा दावा नहीं किया, परन्तु अधिक बारीकी से जाँचने पर मुझे समझ आया कि वास्तव में इस खंड की सुसंगत पूरकतावादी व्याख्या का परिणाम यही है। इसलिए यदि परमेश्वर इस खंड में

सचमुच यही कह रहे हैं, तो हमें यह निश्चित रूप से जानना चाहिए। परन्तु यदि वे यह नहीं कह रहे, तो मुझे निश्चय है कि हम यह भी निश्चित रूप से जानना चाहेंगे। आइए इसमें उतरें।

बाइबल में सिर ढाँकने के विषय में इस एकमात्र शिक्षा में पौलुस उन स्त्रियों के बारे में चिंतित है जो सार्वजनिक आराधना के समय अपने बाल खुले लटका देती हैं या ओढ़नी नहीं ओढ़तीं,[178] और उन पुरुषों के बारे में भी जो अपने बाल लंबे बढ़ाते हैं। आधुनिक पश्चिमी संस्कृति में इनमें से कोई भी बात समस्या नहीं होती, परन्तु उस संस्कृति में इससे एक ऐसा संदेश जाता था जिसे पौलुस बुद्धिमानी नहीं समझता था। इसलिए वह अपनी पत्री का एक लंबा भाग इसी विषय को देता है। जैसा वह अपनी पत्री में अन्य स्थानों पर भी करता है, केवल बेहतर व्यवहार की आज्ञा देने के बजाय पौलुस कई कारण एक के ऊपर एक रखता है। परन्तु ठीक जब हम व्याख्या के हवाई जहाज़ को रनवे से उठाने ही वाले होते हैं, हमें कई ऐसे स्पीड-ब्रेकर मिलते हैं जिन पर सबसे अच्छे विद्वान भी बँटे हुए हैं।[179] आइए इस बात से शुरू करें कि पौलुस किस स्थिति को संबोधित कर रहा है।

स्थिति, और पौलुस को उसकी चिंता क्यों थी

ऐसा लगता है कि कुछ स्त्रियाँ अपनी कलीसिया की सभाओं में ओढ़नी नहीं ओढ़ रही थीं, बल्कि अपने बाल सबके सामने खुले रख रही थीं, और कुछ पुरुष अपने बाल लंबे बढ़ा रहे थे। इसलिए पौलुस स्त्रियों से कहता है कि वे कलीसिया की आराधना-सभाओं में प्रार्थना और भविष्यद्वाणी में भाग लेते समय ओढ़नी से अपना सिर ढाँकें, और पुरुषों से कहता है कि वे अपने बाल छोटे रखें। पौलुस कोई आज्ञा देने तक नहीं जाता – वह बहुत से तर्कों पर, जिनमें सांस्कृतिक संवेदनशीलता भी शामिल है, आधारित एक निवेदन करता है।

स्त्रियाँ अपनी ओढ़नी क्यों उतारतीं, और पुरुष अपने बाल लंबे क्यों बढ़ाते? हो सकता है कि वे विद्रोह कर रहे हों, यद्यपि अधिक संभावना यह है कि उन्होंने मान लिया था कि स्त्री-पुरुष के बीच की जिस मसीही समानता का प्रचार पौलुस करता था (जैसा गलातियों 3:28 में), उसका अर्थ यह है कि पुरुषों और स्त्रियों में कोई भेद नहीं है, और इसलिए उन्होंने अपनी संस्कृति के स्त्री-पुरुष संबंधी शिष्टाचार की उपेक्षा की। स्त्रियों का एक और संभावित उद्देश्य यह हो सकता है कि वे पुरुषों जैसा व्यवहार करके समाज में अपने दूसरे दर्जे की स्थिति

178. इस विषय पर विद्वानों की बहस उबाऊ है कि पौलुस 1) हुड (सिर ढकने वाले कपड़े) या ओढ़नी से ढँके सिर की बात कर रहा है, या 2) लंबे या खुले बालों से ढँके सिर की। Anthony Thiselton की 1 कुरिन्थियों पर उत्कृष्ट टीका दोनों पक्षों के तर्कों का सर्वेक्षण करती है और थोड़े अंतर से इस पक्ष में जाती है कि यह सिर का आवरण, ओढ़नी या हुड था। मैं भी उसी का अनुसरण करता हूँ।

179. William Witt, Icons of Christ, अध्याय 8 में, उन प्रश्नों की सूची देता है जिनके विद्वान अलग-अलग उत्तर देते हैं: क्या पौलुस किसी प्रकार के सिर के आवरण या सिर के पहनावे (शॉल, हुड, अंगरखा या ओढ़नी) की बात कर रहा है, या बालों की शैली (लंबे या खुले बाल) की? "सिर" के लिए यूनानी शब्द (kephalē) का क्या अर्थ है? पौलुस इतने अलग-अलग जोड़ों के बीच समानता कैसे दिखा सकता है: परमेश्वर मसीह के सिर के रूप में; मसीह पुरुष के सिर के रूप में; और पुरुष स्त्री के सिर के रूप में? क्या "पुरुष" और "स्त्री" का अर्थ सामान्य रूप से पुरुष और स्त्रियाँ हैं, या विशेष रूप से पति और पत्नियाँ? पुरुषों के परमेश्वर की महिमा होने का, और स्त्री के पुरुष की महिमा होने का क्या अर्थ है? जब पौलुस लिखता है कि स्त्री को अपने सिर पर "अधिकार" रखना है, तो उसका क्या अर्थ है? स्वर्गदूतों के उल्लेख का क्या अर्थ है? पौलुस के इस कथन का क्या अर्थ समझें कि "स्वभाव सिखाता है" कि पुरुषों को लंबे बाल नहीं रखने चाहिए? जब पौलुस कहता है कि "हमारी ऐसी कोई रीति नहीं है", तो वह किस रीति की बात कर रहा है?

से ऊपर उठना चाहती थीं। जहाँ तक स्त्रियों के ओढ़नी उतारने की बात है, क्या इसके पीछे पुरुष थे या स्त्रियाँ? अधिकांश टीकाकार कहते हैं कि स्त्रियाँ अपनी ही पहल पर ओढ़नी उतार रही थीं। हाल ही में Cynthia Westfall ने पद 10 के आधार पर, जिस पर हम जल्दी ही आएँगे, यह तर्क दिया है कि वास्तव में स्त्रियों पर ऐसा करने के लिए पुरुषों का दबाव था। हम चाहे जो भी दृष्टिकोण अपनाएँ, पौलुस इस खंड में पापपूर्ण मनोभावों से नहीं निपटता – वह केवल उस समय की सांस्कृतिक संवेदनशीलताओं को बनाए रखने के लिए तर्क प्रस्तुत करता है। उनका उद्देश्य चाहे जो भी रहा हो, पौलुस नहीं समझता कि स्त्रियों का ओढ़नी उतारना या पुरुषों का लंबे बाल बढ़ाना अच्छा विचार है। उसकी कई चिंताएँ हैं।

उसकी पहली चिंता, उत्पत्ति 1 और 2 के वृत्तांत के आधार पर, यह है कि परमेश्वर ने पुरुषों और स्त्रियों को बराबर मूल्य का बनाया, परन्तु उन्हें एक-दूसरे जैसा एकदम समान नहीं बनाया। क्योंकि "परमेश्वर ने उन्हें नर और नारी करके बनाया", इसलिए पौलुस उन्हें एक आकारहीन इकाई में मिला देना बुद्धिमानी नहीं समझता।

दूसरी चिंता यह है कि उनकी संस्कृति में जब कोई स्त्री घर के बाहर अपने लंबे बाल खुले लटकने देती थी, तो इससे निम्न दर्जे और यौन रूप से उपलब्ध होने का संदेश जाता था। Cynthia Westfall इस तथ्य को प्रमाणों के साथ दिखाती है कि यूनानी-रोमी संसार में दासियों और वेश्याओं को ओढ़नी ओढ़ने की मनाही थी।[180] विवाहित स्त्रियाँ अपने आदरणीय विवाहित दर्जे, शालीनता और पवित्रता के प्रतीक के रूप में अपना सिर ढाँकती थीं। उनका सिर ढाँकना उनके आदरणीय दर्जे को प्रकट करता था।[181] इसलिए पौलुस के मन में, जब कलीसिया की सभा में सब स्त्रियाँ अपना सिर ढाँकती थीं, तो इससे सुन्दर रूप में यह संदेश जाता था कि सब स्त्रियाँ – चाहे अविवाहित हों या विवाहित, दासी हों या स्वतंत्र – मसीह में और कलीसिया में आदर पाती हैं, वे भी जिन्हें कलीसिया के बाहर आदर नहीं मिलता था। यह ध्यान में रखते हुए कि कुरिन्थुस की कलीसिया में अधिकतर समाज में निम्न दर्जे की स्त्रियाँ थीं – "न बहुत ज्ञानवान, न बहुत सामर्थी, और न बहुत कुलीन"[182] – हम समझ पाते हैं कि सिर ढाँकने पर पौलुस के आग्रह ने वास्तव में मसीह में सब स्त्रियों के प्रति संस्कृति की धारा के विपरीत एक ऊँचा दृष्टिकोण प्रदान किया।

तीसरी चिंता, जो पिछली चिंता से जुड़ी है, यह है कि उस संस्कृति में किसी स्त्री का सार्वजनिक रूप से अपने बाल उघाड़ना लज्जा की बात थी। वास्तव में, पद 4-6 में पौलुस "अपमान" शब्द का दो बार और "लज्जा की बात" का एक बार प्रयोग करता है – और इन दोनों का अनुवाद "शर्म" भी किया जा सकता है। लज्जा और सम्मान की संस्कृति में उघाड़ा सिर स्त्री की ओर इस ढंग से ध्यान खींचता था कि इससे उसका अपना आत्म-सम्मान, उसके प्रति समुदाय का सम्मान, और – देखने वालों की दृष्टि में – उस परमेश्वर का सम्मान भी घटता था जिसकी आराधना की जा रही थी।

अंतिम चिंता यह है कि ऊपर की सारी बातें कलीसिया की "सुव्यवस्था" को कमज़ोर करतीं। शिक्षा का यह भाग कुरिन्थियों को लिखी पत्री के एक बड़े भाग का हिस्सा है, जो विशेष रूप से एक अव्यवस्थित हो चुकी कलीसिया को व्यवस्थित करने के लिए समर्पित है,[183] और यह भाग इन शब्दों के साथ समाप्त होता है,

180. Cynthia Westfall, Paul and Gender, 25.
181. Cynthia Westfall, Paul and Gender, 27.
182. 1 कुरिन्थियों 1:26
183. 1 कुरिन्थियों 11-14

"सारी बातें सभ्यता और क्रम के अनुसार की जाएँ।"[184] कुरिन्थुस की कलीसिया के स्वतंत्रता और आत्म-अभिव्यक्ति की ओर प्रतीत होने वाले झुकाव के सामने, पौलुस उनकी सहायता करना चाहता है कि वे कुछ बातों को करने के अपने ढंग (जिनमें सिर का पहनावा, प्रभु भोज और आत्मिक वरदान शामिल हैं) पर फिर से विचार करें, ताकि सब विश्वासियों की उन्नति हो; सब आगंतुक आकर्षक ढंग से जुड़ें; और सबसे बढ़कर, मसीह की महिमा हो।

कालातीत सत्य

आज शायद ही कोई कलीसिया सिर ढाँकने पर ज़ोर देती है। विद्वान सहमत हैं कि पौलुस की सलाह एक ऐसी संस्कृति पर लागू होती थी जो अब अस्तित्व में नहीं है। तो क्या इस खंड में कुछ ऐसा है जिसे हम हर जगह की सब कलीसियाओं के लिए कालातीत सत्य मान सकें?

इसका उत्तर देते हुए हमें पहले यह स्वीकार करना होगा कि इस खंड में पौलुस की मुख्य चिंता हमें स्त्री-पुरुष का एक अत्यंत विकसित धर्मविज्ञान देना नहीं है। बल्कि उसका ध्यान एक संस्कृति-विशेष के व्यवहार को संबोधित करने पर है। फिर भी स्त्री-पुरुष के धर्मविज्ञान के कुछ संकेत इसमें से झलकते हैं। यहाँ सत्य-कथनों की एक छोटी सूची है जिन्हें हम आज भी थाम सकते हैं।

स्त्रियों और पुरुषों दोनों को परमेश्वर के प्रति (जब वे "प्रार्थना" करते हैं) और एक-दूसरे के प्रति (जब वे "भविष्यद्वाणी" करते हैं) बोलकर की जाने वाली सेवकाइयों में भाग लेना है। इस खंड में पौलुस आनन्दित है कि कलीसिया में यही व्यवहार है, यद्यपि वह साथ ही चेतावनी भी देता है कि ऐसा करते समय स्त्रियाँ और पुरुष अपने को अनुचित ढंग से प्रस्तुत न करें। यदि आज कोई कलीसिया वह सब बनना चाहती है जो वह बन सकती है, तो उसे स्त्रियों और पुरुषों दोनों के सक्रिय और बराबर के बोलने वाले योगदान की आवश्यकता है।

पुरुष और स्त्रियाँ, यद्यपि मसीह में बराबर हैं, फिर भी सृष्टि में भिन्न हैं। परमेश्वर ने दो लिंग बनाए हैं: नर और नारी। वे एक जैसे नहीं हैं; वे एक-दूसरे के पूरक होने के लिए बनाए गए हैं। परमेश्वर के स्वरूप को पूरी तरह प्रकट करने के लिए दोनों की आवश्यकता है।

स्त्रियों को यथासंभव सबसे ऊँचा दर्जा दिया जाना चाहिए। यदि समाज का स्त्रियों के प्रति दृष्टिकोण नीचा या विकृत है, तो कलीसिया वह स्थान होनी चाहिए जहाँ उन्हें सर्वोच्च गरिमा दी जाए, चाहे व्यापक समाज में उनका पिछला या वर्तमान दर्जा कुछ भी हो।

हमें इस बात पर ध्यान देना चाहिए कि हमारे कामों से कौन-सा संदेश जा रहा है। किसी भी संस्कृति और पीढ़ी में कुछ ऐसे व्यवहार हो सकते हैं जिन्हें अपनाने या छोड़ने के हमारे अपने उचित कारण हों, फिर भी वे दूसरों तक गलत संदेश पहुँचाएँ और कलीसिया की गवाही में सहायक न हों।

184. 1 कुरिन्थियों 14:40

पूरकतावादी मत

पूरकतावादी इस खंड को कैसे देखते हैं? सभी पूरकतावादी इस खंड को अपनी शिक्षा का आधार नहीं बनाते। जब Village Church के पूरकतावादी धर्मविज्ञानी स्त्री-पुरुष विषयक पाठों के अपने सर्वेक्षण के भाग के रूप में इस खंड (और अगले) का अध्ययन करते हैं, तो वे ऐसा इस ढंग से करते हैं जो पुरुष के अधिकार की किसी शिक्षा का समर्थन नहीं करता।[185] और यह ठीक ही है – 1 कुरिन्थियों पर सबसे ऊँचे दर्जे की टीकाएँ 1 कुरिन्थियों 11 में पुरुष का अधिकार नहीं देखतीं।[186]

परन्तु बहुत से पूरकतावादी तर्क देते हैं कि यह खंड सिखाता है कि स्त्रियाँ, परमेश्वर की रचना के अनुसार, पुरुषों के अधिकार के अधीन हैं। यद्यपि मैंने अभी इस खंड के अर्थ को सरल बनाने का प्रयास किया है, फिर भी मैं दोहराता हूँ कि यह खंड बहुत जटिल है और आधुनिक व्याख्याकारों को लगातार उलझाता रहता है। इसकी जटिलता और बढ़ जाती है जब व्याख्याकार अपनी बातें डालने वाले बन जाते हैं–और खंड में अतिरिक्त अर्थ पढ़ने लगते हैं। मेरा मानना है कि पूरकतावादी विद्वानों ने यही किया है जब वे दावा करते हैं: "1 कुरिन्थियों 11:2-16 का स्थायी सिद्धांत पुरुष के अधिकार के प्रति स्त्री की अधीनता है। यह सिखाता है कि स्त्री पुरुष की आत्मिक अगुवाई और अधिकार के अधीन रहते हुए कलीसिया में प्रार्थना और भविष्यद्वाणी में भाग ले सकती है।"[187] वे इसका आधार इन चार दावों में से कुछ या सब पर रखते हैं: 1) सिर शब्द का अर्थ है ऊपर का सिर (मुखिया), अर्थात् अधिकार; 2) पौलुस ने पतन से पहले के आदम और हव्वा के विवाह में पदानुक्रम देखा; 3) स्त्रियाँ किसी न किसी रूप में पुरुषों की तुलना में कम मात्रा में परमेश्वर का स्वरूप हैं; और 4) कुरिन्थुस की स्त्रियों को अपने सिर पर पुरुष के अधिकार का एक चिह्न पहनना था। मैं अब इनमें से हर दावे का उत्तर दूँगा, यद्यपि सबसे अधिक समय पहले दावे पर लगाऊँगा।

क्या "सिर" का अर्थ अधिकार है?

क्या "सिर" का अर्थ "ऊपर का मुखिया" है? आधुनिक अंग्रेज़ी में "head" (सिर) शब्द रूपक के रूप में बॉस के लिए, अर्थात् किसी ऐसे व्यक्ति के लिए प्रयोग होता है जो प्रभारी हो। परन्तु क्या पौलुस की पत्री पाने वाले यूनानी-भाषी लोगों ने "सिर" के रूपक को इसी अर्थ में समझा होगा? अधिकांश पूरकतावादी कहते हैं,

185. www.bit.ly/3CFKgJO. देखें पृष्ठ 33-37।
186. www.bestcommentaries.com 1 कुरिन्थियों पर Gordon Fee (NICNT), Anthony Thiselton (NIGTC) और David Garland (BECNT) की टीकाओं को सबसे अच्छा ठहराती है, और उन्हें 5.0 में से क्रमशः 4,91, 4,88 और 4,88 अंक देती है। "11:3 के रूपक को प्रायः अधिकार की संरचनाएँ स्थापित करने वाला समझा जाता है। परन्तु इस खंड में कुछ भी ऐसा संकेत नहीं देता" (Fee) "Grudem के विपरीत, यह 'अधीनस्थता' या 'ऊपर अधिकार' के संबंध को सूचित करता प्रतीत नहीं होता।" (Thiselton) "पौलुस ऐसा लैंगिक पदानुक्रम स्थापित करने का प्रयास नहीं कर रहा जो स्त्रियों को अधीनस्थ भूमिका में रखे।"(Garland)
187. Köstenberger and Köstenberger, God's Design for Man and Woman, पृ. 160.

हाँ। उनका कहना है कि परमेश्वर चाहते हैं कि सब स्त्रियाँ एक पुरुष सिर के अधीन रहें – और इसलिए पत्नियों को अपने पतियों के अधीन रहना चाहिए, और स्त्रियाँ कलीसिया में अगुवाई नहीं कर सकतीं।

पूरकतावादी व्याख्या के लिए पद 3 धुरी है। तो पौलुस का इससे क्या अर्थ है: "हर एक पुरुष का सिर मसीह है, और स्त्री का सिर पुरुष है, और मसीह का सिर परमेश्वर है"?

बहुत से पूरकतावादी "सिर" (kephalē) का अर्थ "ऊपर का मुखिया" (अर्थात् "ऊपर अधिकार रखने वाला") लेते हुए इसका यह अर्थ निकालते हैं कि पुरुषों को ("सिर" के रूप में) स्त्रियों पर उसी प्रकार अधिकार चलाना चाहिए जिस प्रकार परमेश्वर ("सिर" के रूप में) मसीह पर अधिकार चलाते हैं, और मसीह ("सिर" के रूप में) पुरुषों पर अधिकार चलाते हैं। इस ढंग से पढ़ने पर ऐसा लगता है कि पौलुस परमेश्वर पिता के मसीह पर अधिकार को स्त्रियों पर पुरुष के अधिकार के बराबर ठहराता है। इस तुलना को त्रिएक परमेश्वर के भीतरी जीवन के वर्णन से जोड़कर वे यह निष्कर्ष निकालते हैं कि लैंगिक पदानुक्रम सार्वभौमिक होना चाहिए, न कि केवल सांस्कृतिक, या पतन का परिणाम।

परन्तु जैसा मैं आपको दिखाऊँगा, जब आगे के पदों के संदर्भ से अर्थ तय किया जाए, तो इस स्थान पर "सिर" का अर्थ अधिकार नहीं, बल्कि कुछ ऐसा है जैसे सम्मान-योग्य जीवन-स्रोत – वह व्यक्ति जिससे किसी को अपना जीवन या अपनी पहचान मिलती है। वास्तव में, पौलुस के समय में यह विचार कि kephalē का अर्थ अधिकार है, बहुत दुर्लभ था, यदि बिल्कुल अनुपस्थित न हो – मैं आपसे आग्रह करता हूँ कि "परिशिष्ट 3: Kephalē का अर्थ क्या है" पढ़ें, जिसमें मैं इसके पक्ष में तर्क देता हूँ।

पूरकतावादी विद्वान प्रायः इफिसियों 5 ("पति पत्नी का सिर है") का हवाला देते हैं, जो एकमात्र दूसरा स्थान है जहाँ पौलुस पुरुष–स्त्री संबंधों के लिए kephalē शब्द का प्रयोग करता है। फिर वे तर्क देते हैं कि क्योंकि इफिसियों 5 में सिर का अर्थ अधिकार है, इसलिए 1 कुरिन्थियों 11 में भी इसका अर्थ अधिकार ही होना चाहिए।[188] परन्तु जैसा हम अध्याय 8 में खोलकर देखेंगे, संभवतः वहाँ भी इसका अर्थ अधिकार नहीं है।[189] पूरकतावादियों का आरोप है कि kephalē का अर्थ जीवन-स्रोत लेना शब्द-अध्ययन में एक नया आविष्कार है, परन्तु इसके विपरीत यूनानी-भाषी कलीसियाई पिता – अलेक्ज़ान्द्रिया के सिरिल (Cyril), मोप्सुएस्तिया के थियोडोर (Theodore), अथानासियुस (Athanasius) और यूसेबियुस (Eusebius) – सब यहाँ

188. उदाहरण के लिए, Schreiner कहता है, "क्योंकि इफिसियों 5:22-24 में पतियों और पत्नियों की बात करते हुए पौलुस 'kephalē' का प्रयोग अधिकार को सूचित करने के लिए करता है, इसलिए संभवतः 1 कुरिन्थियों 11:3 में भी उसके मन में यही विचार है।" (स्रोत: www.bit.ly/31rylBA)

189. पूरकतावादियों के जो तर्क मैंने पढ़े हैं और जो दावा करते हैं कि इफिसियों 5 में "सिर" का अर्थ "अधिकार" है, उनमें से बहुत से यह दावा इस आधार पर करते हैं कि 1 कुरिन्थियों 11:3 में इसके अर्थ की उनकी व्याख्या क्या है। "मुर्गी पहले या अंडा" के एक क्लासिक उदाहरण की तरह, एक कमज़ोर व्याख्या का प्रयोग दूसरी को सहारा देने के लिए किया जाता है, यहाँ तक कि हम निश्चित नहीं हो पाते कि पहले कौन-सी आई। अर्थों को एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाने में सावधान रहने का एक कारण यह है कि पौलुस "सिर" शब्द का प्रयोग काफ़ी अलग ढंग से करता है: 1 कुरिन्थियों 11 में वह आदम को हव्वा का सिर बताता है, और हव्वा को आदम की देह नहीं बताया गया है, जबकि इफिसियों 5 में वह पति को अपनी पत्नी का सिर बताता है, जो उसकी देह है।

kephalē का अर्थ स्रोत लेते थे।[190] इसलिए इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि इतने सारे विद्वान यह निष्कर्ष निकालते हैं कि 1 कुरिन्थियों 11:3 में पौलुस का अर्थ स्रोत था, अधिकार नहीं।[191]

फिर भी, चाहे इसकी संभावना कितनी ही कम हो, यह कल्पना की जा सकती है कि पौलुस का अर्थ यहाँ अधिकार रहा हो। हम निश्चित रूप से कैसे जान सकते हैं? हर स्थिति में पौलुस का अर्थ पहचानने का मार्ग संदर्भ है।[192] हम पद 4-16 को ध्यान से देखेंगे, परन्तु पहले आइए 1 कुरिन्थियों 11:3 के तीन समानांतर "सिर" वाले कथनों को समझें।

तीन सिरों की कहानी

पौलुस लिखता है कि "हर एक पुरुष का सिर मसीह है, और स्त्री का सिर पुरुष है, और मसीह का सिर परमेश्वर है।" इन तीन पंक्तियों को सही समझने की कुंजी उस क्रम में है जिसमें पौलुस इन्हें कहता है। पहली दृष्टि में कोई सोच सकता है कि पौलुस को अंतिम पंक्ति पहले रखनी चाहिए थी, ताकि वह इस प्रकार पढ़ी जाती: "परमेश्वर मसीह का सिर है, जो पुरुष का सिर है, जो स्त्री का सिर है।" परन्तु वह ऐसा नहीं करता। तो फिर यह क्रम क्यों? उत्तर यह है कि पौलुस एक समय-रेखा का अनुसरण कर रहा है।

यद्यपि "हर एक पुरुष का kephalē मसीह है" का अर्थ हमारी चर्चा के लिए निर्णायक नहीं है, फिर भी ऐसा लगता है कि यह पौलुस के उस धर्मविज्ञान से जुड़ता है जिसमें मसीह सारी सृष्टि का माध्यम हैं। इस अर्थ में, उत्पत्ति 2 में परमेश्वर ने मसीह के द्वारा आदम को रचा, और उसी से निकले अर्थ में, उसके बाद के हर पुरुष को भी।

अगला वाक्यांश, "स्त्री का kephalē पुरुष है", उस बात की ओर संकेत करता है जो अदन की वाटिका में आगे हुई: आदम की पसली से परमेश्वर ने हव्वा को बनाया। हम जानते हैं कि पौलुस आदम और हव्वा की बात कर रहा है, क्योंकि वह एकवचन "स्त्री" का प्रयोग करता है, "स्त्रियाँ" का नहीं, और "पुरुष" का, "पुरुषों" का नहीं, और फिर पद 8 और पद 12क में लौटकर बताता है कि हव्वा (जिसे वह "स्त्री" कहता है) आदम ("पुरुष") से आई। इस व्याख्या की पुष्टि करते हुए कि पद 3 आदम को हव्वा के स्रोत के रूप में

190. Payne, Man and Woman, One in Christ, अध्याय 7. उदाहरण के लिए, अलेक्ज़ान्द्रिया के सिरिल (Cyril of Alexandria, जिसकी मृत्यु सन् 444 ई. में हुई) ने लिखा, "लूका [3:38, 'आदम परमेश्वर का'] ... मनुष्य के स्रोत, अर्थात् सृष्टिकर्ता परमेश्वर, को समझाता है। इसलिए हम कहते हैं कि 'हर एक पुरुष का सिर (kephalē) मसीह है,' क्योंकि मनुष्य उसके द्वारा बनाया गया और अस्तित्व में लाया गया ... 'और स्त्री का सिर (kephalē) पुरुष है,' क्योंकि वह उसके मांस में से ली गई और इसलिए सचमुच वही उसका स्रोत है। इसी प्रकार, 'मसीह का सिर (kephalē) परमेश्वर है,' क्योंकि वह स्वभाव के अनुसार उसी से है: क्योंकि वचन परमेश्वर पिता से उत्पन्न हुआ।"

191. Payne, Man and Woman, One in Christ, अध्याय 7, टिप्पणी 7, ऐसी चालीस विद्वत्तापूर्ण रचनाओं की सूची देता है जो तर्क देती हैं कि 1 कुरिन्थियों 11:3 में kephalē का अर्थ "स्रोत" है। यह पुस्तक 2009 में प्रकाशित हुई थी; अब यह सूची कहीं अधिक लंबी है।

192. उदाहरण के लिए, Alan Johnson ने kephalē शब्द पर सभी पक्षों के 17 बड़े अध्ययनों का एक मेटा-अध्ययन किया है और यह निष्कर्ष निकाला है, "ऐसा लगता है कि इस बात पर सहमति बढ़ रही है कि रूपक के रूप में kephalē का अलग संदर्भ में अलग अर्थ हो सकता है।" (स्रोत: www.bit.ly/3GJ9Vnc)

बताता है, पौलुस अंत में यह कहता है कि एक और अर्थ में आदम का हर पुत्र हव्वा की किसी पुत्री से – अपनी माता से – आया (पद 12ख), और एक और अर्थ में हर कोई अपने सृष्टिकर्ता से आया (पद 12ग)।

अंतिम वाक्यांश, "मसीह का kephalē परमेश्वर है", बहुत संभवतः मसीह के देहधारण की ओर संकेत करता है। अपनी पार्थिव सेवकाई में वे "अदृश्य परमेश्वर का प्रतिरूप" थे, और देखते हुए संसार के सामने पिता को अपने स्रोत के रूप में प्रकट करते थे।[193]

हम पूछ सकते हैं कि पौलुस यह क्यों नहीं कहता कि मसीह हर स्त्री के भी kephalē हैं? इसका उत्तर एक और प्रश्न में छिपा है: पौलुस इन अजीब और ऊपर से असंबद्ध लगने वाले धर्मवैज्ञानिक कथनों को आरम्भ में ही एक साथ क्यों रखता है? पद 4-5 कुछ ठोस उत्तर देते हैं: शिक्षा देने की एक रचनात्मक युक्ति का प्रयोग करते हुए, पौलुस स्त्री और पुरुष द्वारा अपने-अपने शारीरिक सिर के साथ किए जाने वाले व्यवहार को उस ढंग से जोड़ रहा है जिससे वे अपने-अपने रूपकात्मक सिर के साथ व्यवहार करते हैं। दूसरे शब्दों में, पद 3 में पौलुस यह आधार स्थापित करता है कि हर किसी का एक रूपकात्मक सिर है, ताकि पद 4-5 में यह तर्क दे सके कि आराधना में पुरुष और स्त्रियाँ अपने शारीरिक सिर के साथ जो करते हैं, उसका प्रभाव पद 3 में बताए गए उनके रूपकात्मक kephalē पर पड़ता है – "हर एक पुरुष" (पद 4) के लिए वह "मसीह" (पद 3) है; "हर एक स्त्री" (पद 5) के लिए वह "पुरुष" (पद 3) है।

आधुनिक कानों को यह चाहे कितना ही अजीब लगे, पौलुस kephalē शब्द के शाब्दिक और रूपकात्मक प्रयोग के बीच आता-जाता है। हव्वा ने आदम को अपने kephalē के रूप में सम्मान दिया, और इसलिए हव्वा की हर पुत्री को अपने शारीरिक सिर का सम्मान करके (जो सिर ढाँकने से प्रकट होता है) आदम के पुत्रों का सम्मान करना चाहिए। इसी प्रकार, आदम ने मसीह को अपने kephalē के रूप में सम्मान दिया, इसलिए आदम के हर पुत्र को अपने शारीरिक सिर का सम्मान करके (जो अपने बाल छोटे रखने से प्रकट होता है) मसीह का सम्मान करना चाहिए।

पद 3 के तीन कथन चाहे कितने ही प्रभावशाली हों, पद 4-5 स्पष्ट रूप से कोई परिष्कृत धर्मविज्ञान नहीं हैं। यहाँ पौलुस एक प्रतिभाशाली, मौलिक विचारक के रूप में अपने तर्क को बल देने के लिए संबंध जोड़ रहा है। वह मुख्य रूप से उन्हें (या हमें) स्त्री-पुरुष का कोई विकसित धर्मविज्ञान सिखाने का प्रयास नहीं कर रहा, बल्कि अपने इस तर्क को सहारा देने का प्रयास कर रहा है कि स्त्रियाँ आराधना में अपना सिर ढाँकें।

193. कुलुस्सियों 1:15 और इब्रानियों 1:3। इस तीसरी पंक्ति को समझने के लिए हमें यह समझना होगा कि पद 3 की तीनों पंक्तियाँ मोटे तौर पर समानांतर उपमाएँ हैं। वे सटीक समतुल्य नहीं हैं। उत्पत्ति 2 में परमेश्वर ने सचमुच आदम को रचा। कहा जा सकता है कि आदम परमेश्वर से "आया"। हव्वा भी आदम से "आई", परन्तु उस प्रकार नहीं जिस प्रकार आदम परमेश्वर से आया। अंत में, पुत्र पिता से "आए" (या "आते हैं")। जैसा पौलुस कुरिन्थियों को लिखी अपनी पत्री में पहले कहता है, "मसीह ... हमारे लिए परमेश्वर की ओर से ज्ञान ठहरा ... हमारा छुटकारा" (1 कुरिन्थियों 1:30)। परन्तु इसका पिता के द्वारा उनके रचे जाने से कोई संबंध नहीं है – बल्कि यह संभवतः उस ढंग की ओर संकेत करता है जिससे वे अपना जीवन और अपनी पहचान पिता से पाते हैं। यीशु ने घोषणा की, "जैसे पिता अपने आप में जीवन रखता है, वैसे ही उसने पुत्र को भी यह दिया है कि वह अपने आप में जीवन रखे" (यूहन्ना 5:26 NIV)। जो विद्वान मानते हैं कि पौलुस की अंतिम पंक्ति पिता के साथ पुत्र के केवल देहधारण-संबंधी संबंध की नहीं, बल्कि अनन्त संबंध की ओर संकेत कर सकती है, वे सही हो सकते हैं। परन्तु किसी भी ढंग से लें, पिता–पुत्र संबंध पर लागू kephalē अधिकार को सूचित नहीं करता। एक उपमा देकर कहूँ, चाहे अनन्तकाल में हो या देहधारण में, पिता पुत्र के kephalē हैं – उसी प्रकार जैसे सूर्य किसी सूर्य-किरण का kephalē है। कभी ऐसा सूर्य नहीं हुआ जिसकी किरण न हो, और न कभी ऐसी किरण हुई जिसका सूर्य न हो। मसीह (सूर्य-किरण) कार्य के आधार पर परमेश्वर (सूर्य) से भिन्न हो सकते हैं, परन्तु इसका अर्थ यह नहीं कि वे अनन्तकाल से पिता के अधीनस्थ हैं।

अब, जब हम पद 3 के बाद आने वाले पदों पर विचार करते हैं, तो हमें समझ आएगा कि पद 3 में पौलुस का अर्थ "अधिकार" नहीं हो सकता – हम यह इसलिए जानते हैं क्योंकि पूरे खंड में जोड़ने वाला विचार अपने स्रोत का सम्मान करना है, किसी अगुवे के अधीन रहना नहीं: उदाहरण के लिए, "पुरुष स्त्री का kephalē है" (पद 3) कहने के बाद, ऐसा लगता है कि पौलुस पद 8 में यही बात दूसरे शब्दों में कहता है: "स्त्री पुरुष से हुई" – यह आदम को हव्वा के स्रोत के रूप में बताता है, उसके अधिकारी के रूप में नहीं।[194] इसके अतिरिक्त, मसीह को सृष्टिकर्ता के रूप में बताने ("हर एक पुरुष का kephalē मसीह है") से आगे बढ़कर, पौलुस पद 12 में परमेश्वर को सृष्टिकर्ता के रूप में बताता है, जब वह कहता है, "सब कुछ [या सब व्यक्ति] परमेश्वर से है।" यहाँ फिर पौलुस परमेश्वर को अधिकारी के रूप में नहीं, बल्कि उनके द्वारा रचे गए लोगों के स्रोत के रूप में सामने रखता है।[195] इससे हमें यह समझने में भी सहायता मिलती है कि पद 3 में मसीह को "हर एक पुरुष" का kephalē क्यों कहा गया है – सब पुरुष उन्हें अपना अधिकारी नहीं मानते, परन्तु सबके लिए वे सृष्टिकर्ता-स्रोत अवश्य हैं।

इस बात को और भी बल इससे मिलता है कि "परमेश्वर मसीह का kephalē है" – इस भाषा का अर्थ कलीसिया के सही विश्वास (ऑर्थोडॉक्सी) में कभी यह नहीं लिया गया कि पिता मसीह के ऊपर अधिकार रखते हैं। जैसा मैंने अध्याय 3 में दिखाया, ये पूरकतावादी धर्मविज्ञानी ही रहे हैं जिन्होंने बार-बार त्रिएकता के अनन्त संबंधों में एक कथित पदानुक्रम जोड़ देने की कोशिश की है, ताकि स्त्री-पुरुष संबंधों में स्थायी पदानुक्रम के अपने विचार को सहारा दे सकें। पुत्र और पिता के संबंध का सही (ऑर्थोडॉक्स) वर्णन – उस समय का भी, जब पुत्र पृथ्वी पर थे – यह नहीं बताता कि पिता पुत्र पर अपना "अधिकार" जताते हैं; वह तो यह कहता है कि पुत्र आत्म-त्यागी प्रेम में पिता की इच्छा के अधीन होते हैं, और वह इच्छा वास्तव में उनकी अपनी ही इच्छा है।[196]

Kathy Keller स्वीकार करती है कि यद्यपि "[विवाह में] सिर होने (मुखियापन) और अधीनता के विचारों से उसका पहला सामना बौद्धिक और नैतिक, दोनों रूपों में एक गहरा आघात था," फिर भी जब कुछ "वरदान-

194. Cynthia Westfall "Paul and Gender" (अध्याय 1) में कहती है: "इस खंड में सृष्टि-वृत्तांत के संदर्भों का, और विशेष रूप से 11:8 जैसे संदर्भों का, प्रयोग पौलुस 11:3 के अपने धर्मवैज्ञानिक कथन को फिर से उठाने, समझाने और विस्तार देने के लिए करता है। निकट संदर्भ में, यह कथन कि स्त्री पुरुष से आई और स्त्री पुरुष के लिए रची गई, यह संकेत देता है कि 11:3 में पुरुष और स्त्री के जीवन का उद्गम दृष्टि में है।"

195. 1 कुरिन्थियों 8:6 की तुलना 1 कुरिन्थियों 11:12 से करने पर इसकी पुष्टि होती है। "एक ही परमेश्वर है, अर्थात् पिता, जिससे सब वस्तुएँ आईं ... और एक ही प्रभु है, अर्थात् यीशु मसीह, जिसके द्वारा सब वस्तुएँ आईं।" (1 कुरिन्थियों 8:6)। "क्योंकि जैसे स्त्री पुरुष से हुई ... परन्तु सब कुछ परमेश्वर से है।" (1 कुरिन्थियों 11:12) पहले कथन में परमेश्वर मूल सृष्टिकर्ता हैं और यीशु वे हैं जिनके द्वारा परमेश्वर सब कुछ रचते हैं। दूसरे में परमेश्वर मूल सृष्टिकर्ता हैं और आदम वह है जिसके द्वारा परमेश्वर हव्वा को रचते हैं। इस अर्थ में, परमेश्वर और वह जिसके द्वारा परमेश्वर रचते हैं, दोनों को kephale कहा जा सकता है। दोनों स्रोत का काम करते हैं, यद्यपि प्रकार में भिन्न: परमेश्वर मूल स्रोत हैं, जबकि यीशु या आदम बीच के (माध्यम बनने वाले) स्रोत हैं। दोनों प्रकार के स्रोत सम्मान के योग्य हैं।

196. कलीसियाई पिता यूहन्ना क्रिसोस्टम (John Chrysostom) ने इस खंड पर त्रिएकता के अधीनस्थतावादी दृष्टिकोण (पुत्र को पिता के अधीनस्थ मानने वाले दृष्टिकोण) का खंडन करते हुए कहा: "पिता ने पुत्र को उत्पन्न किया, अपनी आज्ञा के अधीन दास के रूप में नहीं, बल्कि स्वतंत्र के रूप में, जो स्वेच्छा से आज्ञा मानता है। [पुत्र] दास नहीं है; उसका वही आदर है जो उसके उत्पन्न करने वाले का है।" परम्परागत रूप से समझी गई त्रिएकता परस्पर प्रेम के संबंधों पर ज़ोर देती है, अधिकार के संबंधों पर नहीं। आरम्भिक पूर्वी धर्मविज्ञानी पिता को "ईश्वरत्व का मूल स्रोत" कहते हैं। पिता अनन्तकाल से पुत्र को उत्पन्न करते हैं, और आत्मा पिता से निकलते हैं। पश्चिमी धर्मविज्ञानी लोगोस (वचन) की भाषा पसंद करते हैं, जिसे पिता उत्पन्न करते हैं, और पवित्र आत्मा को वह परस्पर प्रेम मानते हैं जो पिता और पुत्र दोनों से निकलता है।

प्राप्त शिक्षकों ने [उसे यह देखने की] दिशा दी [कि कैसे] परमेश्वरत्व के दूसरे व्यक्ति ने अपने आप को [अधीन किया] और दास की भूमिका अपनाई," तब उसने यह स्वीकार कर लिया कि वह अपने विवाह में "यीशु वाली भूमिका" निभा सकती है। वह इस संबंध के लिए पवित्रशास्त्र का आधार भी देती है: "1 कुरिन्थियों 11:3 में पौलुस कहता है ... कि पिता और पुत्र का संबंध पति और पत्नी के संबंध का नमूना है," जिसमें "पुरुष और स्त्री को आमंत्रित किया गया है कि वे ... प्रेमपूर्ण अधिकार और प्रेमपूर्ण अधीनता को प्रतिबिंबित करें और दर्शाएँ।"[197] दुर्भाग्य से, Keller दम्पति की विवाह पर लिखी यह बहुत बिकने वाली पुस्तक बहुत हद तक शानदार होने के बावजूद, 1 कुरिन्थियों 11:3 की न केवल ग़लत व्याख्या, बल्कि उसका ग़लत प्रयोग भी फैलाने में सहायक रही है, जिससे पत्नियाँ यह सोचने लगती हैं कि उन्हें ख़ास तौर पर यह काम सौंपा गया है कि वे अपने पति के अधीन रहकर पिता के प्रति पुत्र की अधीनता को प्रतिबिंबित करें।

ऐसा कोई पद नहीं है जो हमारी "सौंपी गई भूमिकाओं" की जड़ त्रिएकता में बताता हो – और 1 कुरिन्थियों 11:3 तो निश्चय ही नहीं। यह इस बात से सबसे साफ़ दिखता है कि पौलुस केवल दो समानांतर पंक्तियाँ नहीं, बल्कि एक तीसरी पंक्ति भी देता है। जो पूरकतावादी पुरुष को स्त्री का सिर कहने की तुलना परमेश्वर को मसीह का सिर कहने से करना पसंद करते हैं, वे पहली पंक्ति को भूल जाते प्रतीत होते हैं: मसीह पुरुष का सिर है। हो सकता है कि कोई खींच-तानकर परमेश्वर और मसीह के बीच, और पुरुष और स्त्री के बीच कुछ समानता निकाल ले ("सार में समान, परन्तु कार्य में अधीनस्थ" – यही पूरकतावादियों का प्रस्ताव है), परन्तु यदि पौलुस यही सिखाना चाहता, तो वह मसीह और पुरुष के बारे में पहली पंक्ति न जोड़ता, क्योंकि कोई भी पुरुष मसीह के बराबर नहीं है।

हव्वा के सिर के बारे में इस बिन्दु पर एक प्रश्न अब भी बाकी है। पद 5 में पौलुस कहता है कि जो स्त्री अपने शारीरिक सिर का अपमान करती है, वह अपने लाक्षणिक सिर का भी अपमान करती है, जो पद 3 के अनुसार "पुरुष" है। तो प्रश्न यह है कि पौलुस किस पुरुष या किन पुरुषों की बात कर रहा होगा? Köstenberger जैसे पूरकतावादी आमतौर पर यह उत्तर देते हैं कि इसका अर्थ पुरुषों की आत्मिक अगुवाई है। बहुत-से पूरकतावादी पास्टर इसे और बढ़ाकर कहते हैं कि हर स्त्री को किसी पुरुष सिर के अधीन रहना है – चाहे वह उसका पति हो, उसका पिता हो, या पुरुषों की पास्टरीय टीम।

परन्तु अधिक ठोस उत्तर का सुराग पिछले पद में है: "हर एक पुरुष" को "अपने सिर" का आदर करना है (पद 4)। यह शब्द-रचना हमें वापस पद 3 पर ले जाती है, जहाँ उत्तर पहले से दिया हुआ है: "मसीह" हर एक पुरुष का सिर है। इसी प्रकार "हर एक स्त्री" को अपने सिर का आदर करना है (पद 5), जो हमें फिर पद 3 की ओर ले जाता है, जहाँ हम पाते हैं कि जिस "पुरुष" की बात है, वह आदम है, जो प्रतिरूप (टाइप) के रूप में सब पुरुषों की ओर संकेत करता है। दूसरे शब्दों में, इसकी संभावना कम है कि पौलुस किसी विशेष पुरुष की बात कर रहा है; वह तो आदम के सब पुत्रों की बात कर रहा है।

सम्मान की यह सारी बात शायद हम में से उन लोगों को बहुत गहराई से न छुए जो अब लज्जा और सम्मान वाली संस्कृति में नहीं रहते, परन्तु पौलुस की पत्री के पाठक इसे पूरी तरह समझते थे। इस खंड में पौलुस kephalē और सम्मान की अवधारणाओं को एक साथ जोड़ता है। दूसरे शब्दों में, पद 3 में kephalē का

197. Tim और Kathy Keller, The Meaning of Marriage, अध्याय 6।

पौलुस का प्रयोग उन दो अवधारणाओं – स्रोत और सम्मान – को एक साथ पिरोता प्रतीत होता है, जो इस पूरे खंड में चलती हैं।

तो आइए, पहले उठाए गए निर्णायक प्रश्न का उत्तर दें: पद 3 का अर्थ क्या है? इसका अर्थ है कि मसीह पुरुष के सम्मान-योग्य स्रोत हैं (उसके सृष्टिकर्ता के रूप में); पुरुष (आदम) स्त्री (हव्वा) का सम्मान-योग्य स्रोत है; और परमेश्वर मसीह के सम्मान-योग्य स्रोत हैं (उनके देहधारण में)।[198]

मेरा निष्कर्ष यह है: पद 3 मसीह की या स्त्री की अधीनस्थता के बारे में कुछ भी नहीं कहता।

क्या पौलुस अदन की वाटिका में पदानुक्रम देखता है?

अध्याय 4 में मैंने तर्क दिया था कि उत्पत्ति 1-3 का सावधान अध्ययन दिखाता है कि लैंगिक पदानुक्रम पतन के कारण आया, सृष्टि में परमेश्वर की भली रचना के द्वारा नहीं। इस दृष्टिकोण के विपरीत, पूरकतावादी निम्नलिखित पदों के आधार पर यह तर्क देते हैं कि पौलुस ने पतन से पहले ही पदानुक्रम देखा: "क्योंकि पुरुष स्त्री से नहीं हुआ, परन्तु स्त्री पुरुष से हुई; और न पुरुष स्त्री के लिए सिरजा गया, परन्तु स्त्री पुरुष के लिए" (पद 8-9)। इन पदों पर बोलते हुए Schreiner कहता है, "पौलुस ने स्पष्ट रूप से उत्पत्ति 2 को पुरुषों और स्त्रियों के बीच भूमिकाओं के भेद को प्रकट करने वाला समझा" – और इससे उसका अर्थ अधिकार और अधीनता की भूमिकाएँ हैं।[199]

परन्तु क्या आप देख सकते हैं कि यह बिल्कुल भी स्पष्ट क्यों नहीं है? केवल तभी, जब हम यह मान लें कि पौलुस पद 3 में स्त्री की अधीनस्थता की बात कर रहा है, हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि पौलुस ने पतन से पहले पदानुक्रम देखा। परन्तु इन पदों में वह केवल उसी बात को आगे खोलता है जो वह पद 3 में उत्पत्ति 2 के बारे में कह चुका है: "[हव्वा] का kephalē [आदम] है" – और वह दो सबसे प्रमुख बातें बताता है। पहली, हव्वा आदम से बनाई गई, शब्दशः उसकी बगल (पसली) से रची गई – इसलिए कुरिन्थुस की स्त्रियों को कलीसिया के उन पुरुषों का आदर करना चाहिए जो, अदन की वाटिका तक लौटकर देखें तो, उनका स्रोत हैं।[200] दूसरी, हव्वा आदम के लिए बनाई गई, ताकि वह उसकी सहायक-साथी, उसकी ezer

198. एक लम्बा उत्तर यह हो सकता है कि पद 3 का अर्थ है: उत्पत्ति 2 में आदम (और हर पुरुष) ने अपनी पहचान या अपना अस्तित्व मसीह से पाया, जो इसलिए उसके आदर के योग्य हैं। उत्पत्ति 2 में आगे हव्वा (और हर स्त्री) ने अपनी पहचान या अपना अस्तित्व आदम से पाया, इसलिए वह (और हर पुरुष) उसके आदर के योग्य है। अन्त में, देहधारण में (या शायद अनन्तकाल में) मसीह अपनी पहचान या अपना अस्तित्व पिता से पाते हैं/पाया, जो इसलिए उनके आदर के योग्य हैं। हम यह भी पूछ सकते हैं: यदि व्यक्ति A व्यक्ति B का kephale है, तो व्यक्ति B व्यक्ति A के लिए क्या है? यदि व्यक्ति B अपना अस्तित्व या अपनी पहचान व्यक्ति A से पाता है, तो इसे दूसरे शब्दों में यों कहा जा सकता है कि व्यक्ति B व्यक्ति A का स्वरूप है। पौलुस शीघ्र ही यह कहता है कि "पुरुष परमेश्वर का स्वरूप और महिमा है; परन्तु स्त्री पुरुष की महिमा है" (1 कुरिन्थियों 11:7) – इससे यह निष्कर्ष निकल सकता है कि पौलुस का आशय यही था। दूसरे शब्दों में, पद 3 से निकलने वाला एक सुन्दर धर्मवैज्ञानिक परिणाम यह कहना है कि पुरुष मसीह के स्वरूप और समानता में बनाया गया; हव्वा आदम के स्वरूप और समानता में बनाई गई; और मसीह परमेश्वर का स्वरूप और समानता हैं। फिर से, इनमें से कुछ भी न तो स्त्री की और न मसीह की अधीनस्थता की ओर संकेत करता है।

199. Tom Schreiner, "Recovering Biblical Manhood and Womanhood" में, पृ. 133।

200. "पुरुष स्त्री से नहीं हुआ" (पद 8) – उत्पत्ति 2 के आधार पर यह तर्क दिया जा सकता है कि आदम को भी हव्वा का आदर करना है, परन्तु पौलुस बताता है कि यह नहीं कहा जा सकता कि वह उसका स्रोत थी।

kenegdo हो, उसे पूरा करे और उसके साथ खड़ी हो – इसलिए कुरिन्थुस की स्त्रियों को, वाटिका को याद करते हुए, उन पुरुषों का अपमान नहीं करना चाहिए जिनके साथ साझेदारी के लिए वे बनाई गई हैं। (और फिर, कुरिन्थुस के पुरुषों को भी उन स्त्रियों का अपमान नहीं करना चाहिए, जिनके बिना वे अधूरे हैं।)

संक्षेप में, उत्पत्ति और पौलुस दोनों ही लिंगों के बीच भेद को भी और एक दूसरे का आदर करने वाली परस्पर-निर्भरता की आवश्यकता को भी उजागर करते हैं – परन्तु दोनों में से कोई भी उन पदानुक्रमित "भूमिकाओं" के बारे में कुछ नहीं कहता, जिन्हें Schreiner इस खंड में पाने का दावा करता है।

क्या स्त्रियाँ भी समान रूप से परमेश्वर का स्वरूप धारण करती हैं?

और इस पद के बारे में क्या: "पुरुष ... परमेश्वर का स्वरूप और महिमा है; परन्तु स्त्री पुरुष की महिमा है" (पद 7)? निष्पक्ष होकर कहें तो, शायद ही कोई पूरकतावादी अपने तर्क को मज़बूत करने के लिए इस पद का प्रयोग करता है। Grudem स्त्री की अधीनस्थता के पक्ष में इस पद का प्रयोग इसलिए नहीं करता कि ऊपरी तौर पर यह हमारे साझा विश्वास के विरुद्ध जाता प्रतीत होता है कि लिंग न केवल भिन्न हैं, बल्कि "समान" भी हैं। वास्तव में, कलीसिया के अधिकांश इतिहास में यही वह प्रमाण-पद था जिससे इस निर्विरोध शिक्षा का बचाव किया जाता था कि स्त्रियाँ स्वभाव से ही पुरुषों से हीन हैं।

क्या पौलुस यह कह रहा है कि स्त्रियाँ पुरुषों की तुलना में कम मात्रा में परमेश्वर के स्वरूप में बनाई गई हैं? नहीं।[201] यह कहना – जैसा कलीसिया ने अपने इतिहास के बड़े भाग में कहा – कि हव्वा परमेश्वर के स्वरूप का केवल कुछ अंश आदम से पाती है, उत्पत्ति 1 का खंडन करता है, जो दोनों लिंगों में परमेश्वर के स्वरूप को समान रूप से पहचानता है। पौलुस, जो उत्पत्ति 1 को अच्छी तरह जानता है, ऐसा प्रतीत होता है कि अपना यह तर्क जारी रख रहा है कि परमेश्वर/मसीह आदम के सम्मानित स्रोत हैं, और आदम हव्वा का सम्मानित स्रोत है। हव्वा अपना अस्तित्व और अपनी पहचान न केवल परमेश्वर से, बल्कि आदम से भी पाती है। आराधना में वह ओढ़नी पहनकर स्त्रियाँ पुरुषों का आदर करती हैं।

पौलुस शायद सम्मान की दिशा के उलट जाने का संकेत भी देता है – आदम परमेश्वर की महिमा और स्वरूप है (अर्थात् उसका महिमामय स्वरूप)। इसी प्रकार हव्वा आदम का महिमामय स्वरूप है। यह आदम के उन आनन्द भरे शब्दों से अच्छी तरह मेल खाता है जो उसने तब कहे, जब उसने पहली बार स्वयं को हव्वा में प्रतिबिंबित देखा: "आख़िरकार! यह मेरी हड्डियों में की हड्डी और मेरे मांस में का मांस है।" यदि स्त्रियों को आदम में अपने स्रोत का आदर करना है, तो पुरुषों को स्त्रियों में अपने स्वरूप का आदर करना है।

पौलुस के शब्दों को मूल्य के घटते क्रम (आदम से हव्वा तक) के रूप में पढ़ने के बजाय, शायद हमें उन्हें महिमा के चढ़ते हुए स्वर के रूप में पढ़ना चाहिए। आदम केवल परमेश्वर का स्वरूप और महिमा है, जबकि हव्वा परमेश्वर और आदम दोनों का स्वरूप और महिमा है। क्या उत्पत्ति 1 और 2 भी इसी तरह नहीं पढ़े

201. Lucy Peppiatt ("Women and Worship at Corinth" में) और दूसरे बाइबल-विद्वान यह मत रखते हैं कि पौलुस लिखता तो यही है, परन्तु वास्तव में इस स्थान पर वह कलीसिया के झूठे शिक्षकों को उद्धृत कर रहा है, जैसा वह 1 कुरिन्थियों में अन्य स्थानों पर भी करता है। इस अध्याय की लम्बाई सँभालने योग्य रखने के लिए मैंने इसे समझाने के बजाय Cynthia Westfall की व्याख्या पर भरोसा करने का निर्णय लिया, जो मुझे अधिक विश्वसनीय लगती है।

जाते? दोनों अध्यायों में परमेश्वर की सृष्टि का मुकुट अन्त में आता है। अध्याय 1 में वह मानवजाति है। अध्याय 2 में वह स्त्री है। आदम धूल से बनाया गया, परन्तु हव्वा मांस से बनाई गई।[202] एक ऐसे संसार में, जहाँ स्त्रियों का मूल्य इतना गिराया गया है, उत्पत्ति और पौलुस के ये शब्द अपनी संस्कृति के विरुद्ध जाने वाले सबसे साहसी शब्दों में से हैं।

क्या स्त्रियों को अधिकार का "चिह्न" पहनना है?

अब इस खंड का मेरा सबसे प्रिय पद: "इसी कारण स्त्री को स्वर्गदूतों के कारण अपने ही सिर पर अधिकार रखना चाहिए" (पद 10)। 1881 के RV के नए-निराले अनुवाद का अनुसरण करते हुए ESV इस पद का अनुवाद यों करता है: "इसी कारण पत्नी को स्वर्गदूतों के कारण अपने सिर पर अधिकार का चिह्न रखना चाहिए।" ESV यह दावा करता है कि वह शब्दशः अनुवाद है, न कि पहले उद्धृत NIV की तरह भावानुवाद; इसलिए आप मान लेंगे कि दोनों में से ESV का अनुवाद अधिक शब्दशः होगा। परन्तु आप ग़लत होंगे। मूल यूनानी पाठ में किसी चिह्न या प्रतीक का उल्लेख ही नहीं है।

ESV ऐसा क्यों करेगा? पूरकतावादियों के लिए यह तर्क देना सुविधाजनक है कि स्त्री का सिर ढँकना उस पर पुरुषों के, या शायद उसके पति के, "अधिकार" (यूनानी: exousia) का चिह्न है। परन्तु पौलुस ने ऐसा कभी नहीं कहा। यद्यपि बाइबल के विद्वान इस पद के विभिन्न पहलुओं पर बहस करते हैं, परन्तु जो निर्णायक प्रश्न हमें पूछना है, वह यह है: जिस "अधिकार" की बात पौलुस यहाँ करता है, वह किसके पास है? यदि स्त्री के पास केवल "अधिकार का चिह्न" है, तो इसका अर्थ है कि सामान्य रूप से पुरुषों का, या शायद कुछ विशेष पुरुषों का, उस पर अधिकार है। परन्तु यूनानी पाठ कहता है कि स्त्री स्वयं अपने सिर "पर अधिकार रखती है"। यही शब्द-रचना वहाँ भी मिलती है, जहाँ यीशु अपने चेलों को शैतान "पर अधिकार" (exousian ... epi) देते हैं। नए नियम में exousia शब्द के बाकी सभी 102 प्रयोगों में, जिनमें 1 कुरिन्थियों में इसके नौ प्रयोग भी शामिल हैं, इसका अर्थ वह अधिकार है जो व्यक्ति का अपना है।[203] पौलुस का कहना यह है कि यदि परमेश्वर ने सृष्टि में हव्वा और उसकी बेटियों को किसी प्रकार का अधिकार दिया है, तो किसी पुरुष को (और न ही बाइबल के अनुवादकों को) यह अधिकार उससे छीनने का हक़ नहीं है। परन्तु ESV का अनुवाद ठीक इसका उल्टा सुझाता है। 1 कुरिन्थियों 11 की पूरकतावादी व्याख्या की सबसे बड़ी कमज़ोरी यहीं है: एकमात्र स्थान, जहाँ वास्तव में किसी प्रकार के अधिकार का उल्लेख है, स्त्री के अधिकार की बात करता है। यह सच है कि उसके अधिकार का उसके सिर ढँकने से कुछ संबंध है, परन्तु जिस बात पर ज़ोर दिया गया प्रतीत होता है, वह यह है कि ओढ़नी पहनना सबसे पहले उसका अपना, बिना किसी दबाव का विशेषाधिकार है। पौलुस ओढ़नी पहनने के उसके अधिकार के बारे में यह बात क्यों जोड़ता? विद्वान निश्चित नहीं हैं, यद्यपि Cynthia Westfall का तर्क है कि स्वयं स्त्रियाँ नहीं, बल्कि कुछ पुरुष कुरिन्थुस की स्त्रियों पर ओढ़नी उतारने का दबाव डाल रहे थे। हम निश्चित तो नहीं हो सकते, परन्तु यदि बात यही है, तो पौलुस स्त्रियों को उन

202. यहाँ पौलुस के तर्क का ध्यान से अनुसरण करें, तो हमें यह कहने की ओर अधिक झुकना चाहिए कि आदम हव्वा से हीन है, न कि इसका उल्टा। निश्चय ही, कलीसिया के स्त्री-द्वेषी इतिहास के बड़े भाग की उल्टी ग़लती से बचने के लिए हम ऐसा नहीं करेंगे।

203. Philip Payne, Man and Woman, One in Christ, अध्याय 10।

पुरुषों की बात ठुकराने के लिए प्रोत्साहित कर रहा है जो उन्हें एक असहज स्थिति में डालने की कोशिश कर रहे हैं।

पौलुस स्त्री के अपने अधिकार के लिए दो कारण देता है। पहला, जिसका संकेत पद 10 के आरम्भ के शब्द ("इसी कारण") देते हैं, हमें पद 8 और 9 की ओर वापस ले जाता है, जिनमें वह – सृष्टि का शिखर – आदम के साथ उसकी साथी बनकर आती है, और इसलिए उसे उसको लज्जित नहीं करना चाहिए। पौलुस का तर्क मानो यह है: जो सृष्टि का शिखर और आदम की बराबर की साथी है, क्या वह निश्चय ही अपने पैरों पर खड़ी नहीं हो सकती? दूसरा कारण है "स्वर्गदूतों के कारण"। इसका क्या अर्थ है? विद्वान बहुत-से सुझाव देते हैं। दो मुझे सबसे अधिक विश्वसनीय लगते हैं: या तो यह उन स्वर्गदूतों का संदर्भ है जो सृष्टि के समय उपस्थित थे (जो वहाँ थे जब हव्वा अपनी पूरी महिमा के साथ आई), या – जो शायद अधिक संभव है – यह उसी पत्री में स्वर्गदूतों के बारे में पौलुस के पहले के कथन से जुड़ा है, एक ऐसे खंड से जिसमें वह कहता है कि पवित्र लोग एक दिन स्वर्गदूतों का न्याय करेंगे[204] – उस स्थिति में यह पूरी तरह समझ में आता है कि स्त्रियाँ अपने पहनावे का निर्णय स्वयं करें, क्योंकि हव्वा और उसकी बेटियाँ राजकुल की हैं, जो पुरुषों के साथ-साथ एक दिन सारे ब्रह्माण्ड पर राज्य करेंगी।

परमेश्वर का दिया हुआ यही अधिकार ठीक वह कारण है कि केवल पुरुष ही नहीं, बल्कि स्त्रियाँ भी प्रार्थना और भविष्यद्वाणी में योगदान दे सकती थीं, जैसा पद 4-5 चलते-चलते बताते हैं।

तौभी प्रभु में

इस खंड में अब तक पौलुस ने ऐसी बातें कही हैं जिनकी व्याख्या इस तरह की जा सकती है – और की भी गई है – कि वह पुरुषों को ऊँचा उठा रहा है (पद 3-6) और स्त्रियों को भी (पद 7, 10)। परन्तु अन्त में वह बिल्कुल स्पष्ट कर देता है कि सुसमाचार में और कलीसिया में दोनों लिंग समान हैं और एक दूसरे पर समान रूप से निर्भर हैं: "तौभी प्रभु में न तो स्त्री पुरुष से स्वतंत्र है, और न पुरुष स्त्री से स्वतंत्र है" (पद 11)। पद 3 में उसने कहा था कि आदम हव्वा का जैविक स्रोत था (और इसलिए सब स्त्रियों को सब पुरुषों का आदर करना चाहिए), परन्तु अब वह यह भी उजागर करता है कि हर पुरुष की जैविक उत्पत्ति एक माँ से होती है: "क्योंकि जैसे स्त्री पुरुष से हुई, वैसे ही पुरुष स्त्री से जन्म लेता है" (पद 12), और इसलिए सब पुरुषों को सब स्त्रियों का आदर करना चाहिए। उत्पत्ति 2 में हव्वा के अस्तित्व में आने के तरीके के अवलोकन को इस अवलोकन के साथ मिलाकर कि इस संसार में हर पुरुष कैसे अस्तित्व में आता है, पौलुस यह स्पष्ट करता है कि सम्मान दोनों दिशाओं में बहना चाहिए – जिससे सृष्टि की व्यवस्था के आधार पर लैंगिक पदानुक्रम का समर्थन करने की गुंजाइश और भी कम रह जाती है। परस्परता, समानता, एकता – और साथ ही लिंगों के बीच भेद बनाए रखना: ऐसा लगता है कि परमेश्वर ने आरम्भ से यही सोचा था।

कुछ विद्वानों का तर्क है कि इस खंड में पौलुस केवल पतियों और पत्नियों की बात कर रहा है, सामान्य स्त्री-पुरुष संबंधों की नहीं। यह संभव है, यद्यपि इसकी संभावना बहुत कम है। "पुरुष" और "स्त्री" के यूनानी

204. 1 कुरिन्थियों 6:1-2

शब्दों का अनुवाद “पति” और “पत्नी” भी किया जा सकता है, यदि खंड उन्हीं की बात करता हो। परन्तु अधिकांश विद्वानों का तर्क है कि यदि हम पूरा खंड पढ़ें, तो पौलुस उस ढंग की बात कर रहा है जिससे सब पुरुष और सब स्त्रियाँ एक दूसरे से संबंध रखते हैं – इसमें विवाहित दम्पति शामिल हैं, परन्तु बात उनसे आगे भी जाती है।[205]

फिर भी, यदि विद्वानों का अल्पसंख्यक वर्ग सही है कि पौलुस केवल विवाहित दम्पतियों से बात कर रहा है, तो हम यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि पद 5 में स्त्री का लाक्षणिक सिर शायद उसका paterfamilias (घर का मुखिया) है – वह पुरुष जो यूनानी-रोमी संस्कृति के अनुसार उसका “प्रभारी” था। यदि ऐसा है, तो पौलुस स्त्री से उसका आदर करने को कहता है, परन्तु इस बात का कोई समर्थन नहीं करता कि वह उसके अधीनस्थ हो – वास्तव में पूरा खंड लिंगों को बराबरी पर लाने की ओर बढ़ता है। ध्यान देने योग्य बात यह है कि दूसरे स्थान पर, जहाँ पौलुस पति को kephalē कहता है (इफिसियों 5 में), वहाँ वह पति-पत्नी के संबंध को एक दूसरे के अधीन रहने की व्यापक अवधारणा के भीतर रखता है। इसी प्रकार यहाँ 1 कुरिन्थियों 11 में वह परस्पर-निर्भरता की शिक्षा के साथ समाप्त करता है।

चाहे यह खंड सब पुरुषों और स्त्रियों के संबंधों की बात करता हो, या (जिसकी संभावना कम है) केवल पतियों और पत्नियों के संबंधों की, मुझे लगता है कि हम पूरे विश्वास के साथ पूरकतावादियों के इस दावे को ठुकरा सकते हैं कि “पौलुस चाहता है कि स्त्रियाँ सिर ढँकें, ताकि यह दिखे कि वे पुरुष के सिर होने (मुखियापन) के अधीन हैं।”[206] हम में से अधिकांश के लिए यह शानदार समाचार है! कल्पना कीजिए कि परमेश्वर चाहते कि सब स्त्रियाँ सब पुरुषों के अधीन रहें – और यदि पौलुस अपने तर्क की जड़ सृष्टि में रखकर यही कह रहा होता, तो उसका आशय यही होता। इसमें विवाह में, पारिवारिक संबंधों में, मित्र-मंडलियों में, काम के संबंधों में, समाज में और कलीसिया में पुरुषों के प्रति स्त्री की अधीनता शामिल होती। मैं यह सोचकर ही काँप उठता हूँ कि इस ग़लत शिक्षा का युगों से उन स्त्रियों पर कितना अपंग कर देने वाला प्रभाव पड़ा है, जिन्होंने इस खंड का ग़लत अर्थ लगाकर यह समझा कि यह उन्हें पुरुषों के प्रति अधीनता का स्वभाव रखना सिखाता है। दुख की बात है कि Piper आज भी Recovering Biblical Manhood and Womanhood के आरम्भिक अध्याय में यही सिखाता है: “परिपक्व स्त्री ... योग्य पुरुषों के साथ अपने सब संबंधों में किसी न किसी रूप में पुरुषों की शक्ति और अगुवाई की पुष्टि करेगी।”[207] धन्यवाद हो कि यीशु, और इस खंड का एक ठीक-ठाक अध्ययन, इस ग़लत व्याख्या के द्वारा स्त्रियों को अपंग किए जाने का निर्णायक अन्त कर देते हैं।

पूरकतावादी इस खंड की अधिकार-अधीनता वाली व्याख्या के लिए जो भी तर्क आगे रखते हैं, हम उनमें से हर एक को जितना ध्यान से देखते हैं, उतना ही अधिक यह दिखता है कि हर तर्क को क्यों ठुकराना चाहिए:

205. जब तक कि हम यह कल्पना न करें कि अविवाहित स्त्रियाँ और विधवाएँ अब अपनी ओढ़नी उतार दें – वही चीज़ जो उन्हें गरिमा देती है। परन्तु सबसे मज़बूत तर्क यह है कि पौलुस पद 12 में कहता है, “हर पुरुष स्त्री से जन्म लेता है” – यदि इसे यों पढ़ा जाए: “हर पति अपनी पत्नी से जन्म लेता है”, तो इसका कोई अर्थ नहीं बनता। Thiselton टिप्पणी करता है कि “लेखकों का भारी बहुमत विश्वसनीय ढंग से यह तर्क देता है कि विषय सम्पूर्ण स्त्री-पुरुष संबंधों का है, न कि केवल परिवार के अधिक सीमित दायरे के भीतर के संबंधों का” – “1 Corinthians (NIGTC)” में।
206. Schreiner, “Recovering Biblical Manhood and Womanhood” में, पृ. 132, 135।
207. John Piper, “Recovering Biblical Manhood and Womanhood” में, पृ. 21।

वह उस खंड का एक निराशाजनक विकृत रूप है, जो वास्तव में स्त्रियों को अद्भुत रूप से ऊँचा उठाता है – न कि उन्हें घटाता या अधीन करता है।

आइए अब पौलुस के उन तीन खंडों में से दूसरे को देखें, जो पहली नज़र में पूरकतावादी निष्कर्षों का समर्थन करते प्रतीत होते हैं।

1 कुरिन्थियों 14:33-35

जैसा हमने अभी 1 कुरिन्थियों 11 में देखा, पौलुस स्त्रियों को बड़ी गरिमा प्रदान करता है। वह न केवल प्रार्थना और भविष्यद्वाणी में स्त्रियों की भागीदारी की सराहना करता है, बल्कि सिर ढँकने के बारे में उसकी टिप्पणियों की जड़ भी उसकी इस इच्छा में है कि सब स्त्रियों को उचित आदर मिले। उसी पत्री में आगे एक और खंड है, जो – कम से कम पहली बार पढ़ने पर तो निश्चय ही – पहले खंड का खंडन करता प्रतीत होता है:

33 क्योंकि परमेश्वर गड़बड़ी का नहीं, परन्तु शान्ति का परमेश्वर है – जैसा पवित्र लोगों की सब कलीसियाओं में है। 34 स्त्रियाँ कलीसियाओं में चुप रहें, क्योंकि उन्हें बातें करने की अनुमति नहीं, परन्तु वे अधीन रहें, जैसा व्यवस्था भी कहती है। 35 और यदि वे कुछ पूछना चाहें, तो घर में अपने अपने पति से पूछें; क्योंकि स्त्री का कलीसिया में बातें करना लज्जा की बात है।

चूँकि विद्वान इस खंड पर अन्तहीन बहस करते हैं, मैं वे पाँच मुख्य दृष्टिकोण प्रस्तुत करूँगा जो विभिन्न विद्वानों ने रखे हैं। (वास्तव में दृष्टिकोण छह हैं, परन्तु मैं दिखाऊँगा कि उनमें से एक दूसरे का ही विकसित रूप है, इसलिए मैं उसे एक उप-दृष्टिकोण मानूँगा।) तर्कों को स्वयं तौलने के आधार पर मैं यह स्वतंत्रता भी लेता हूँ कि उन्हें उस क्रम में रखूँ जिसे मैं सबसे कमज़ोर से सबसे मज़बूत मानता हूँ।

दृष्टिकोण 1: आराधना-सभाओं में स्त्रियों को चुप रहना ही है

विद्वानों को यह समझने में कठिनाई हुई है कि पौलुस अध्याय 11 में स्त्रियों को कलीसिया की सभाओं में बोलने की अनुमति कैसे दे सकता है, और फिर अध्याय 14 में उसी काम को मना करता कैसे प्रतीत होता है। 1960 के दशक तक, जब स्त्रियों की हीनता और अधीनस्थता पर सामान्यतः कोई प्रश्न नहीं उठाया जाता था, ओरिजेन (Origen) जैसे प्राचीन कलीसियाई पिता से लेकर टीकाकार Charles Ryrie तक के विद्वान यह मानते थे कि पौलुस चाहता था कि स्त्रियाँ सामान्य नियम के रूप में चुप रहें। Ryrie ने 1958 में कम से कम इतना जोड़ा कि कुछ अपवाद हो सकते हैं, जब स्त्रियाँ बोल सकती हैं।

परन्तु यदि बाकी पवित्रशास्त्र ही किसी विशेष पवित्रशास्त्र-वचन का सबसे अच्छा व्याख्याकार है, तो इस ऐतिहासिक दृष्टिकोण को ठुकराना ही होगा। पौलुस ने अध्याय 11 में, और अध्याय 14 के अधिकांश भाग में,

कलीसिया में स्त्रियों के बोलने की पुष्टि की है। इसलिए हम इन पदों में उसके निर्देशों का यह अर्थ नहीं ले सकते कि सब कलीसियाओं में सब स्त्रियों को चुप रहना चाहिए।

इस दृष्टिकोण की असंभाव्यता ने, जो 1960 के दशक के बाद स्त्रियों की समानता की खोज से और बढ़ गई, इस खंड को समझने के कई और प्रयासों को जन्म दिया है।

दृष्टिकोण 2: स्त्रियाँ भविष्यद्वाणियों को न परखें

यह दृष्टिकोण स्त्रियों को चुप कराने की पौलुस की बात को कुछ पद पहले दिए उसके इस निर्देश से जोड़ता है: "भविष्यद्वक्ताओं में से दो या तीन बोलें, और शेष लोग जो कहा गया है उसे ध्यान से परखें" (पद 29)। इसका तर्क है कि पौलुस स्त्रियों को केवल आंशिक रूप से चुप करा रहा है। यद्यपि पुरुष और स्त्री दोनों भविष्यद्वक्ता बोल सकते हैं, यह दृष्टिकोण इस निष्कर्ष पर पहुँचता है कि स्त्रियों को भविष्यद्वाणी के संदेशों को परखना नहीं है।[208]

पतियों के उल्लेख (पद 35) के आधार पर यह दृष्टिकोण सुझाता है कि प्राचीन संसार में किसी स्त्री के लिए अपने ही पति की या अन्य पुरुषों की भविष्यद्वाणियों को सबके सामने परखना सांस्कृतिक रूप से अटपटा होता, और इस प्रकार उस "सुव्यवस्था" का उल्लंघन होता जिसकी ओर पौलुस संकेत करता है।

इस दृष्टिकोण में कई कमज़ोरियाँ हैं। पहली, पद 29 में जिन "शेष लोगों" का उल्लेख है, वे वहाँ उपस्थित वे सब लोग हैं जो किसी व्यक्ति की भविष्यद्वाणी सुनते हैं। परखने का काम इन्हीं लोगों को करना है, और इस समूह में दूसरी स्त्रियाँ भी शामिल हैं। दूसरी, पद 29 पद 34 और 35 से कुछ दूरी पर है। बीच के पद विषय को भविष्यद्वाणियों को परखने से हटाकर इस बात पर ले जाते हैं कि भविष्यद्वक्ता अपनी बारी की प्रतीक्षा करके स्वयं पर नियंत्रण रखें (पद 30-32)। पद 29 के वाक्यांश की कोई भी बात पद 34-35 में दोहराई नहीं गई है, और भविष्यद्वाणी को परखने वाले वाक्यांश तथा स्त्रियों के चुप रहने के बारे में पौलुस के निर्देशों के बीच कोई कड़ी नहीं है। स्त्रियों के घर पर सीखने और प्रश्न पूछने का पौलुस का सुझाव भी भविष्यद्वाणियों को परखने से संबंधित नहीं है। अन्त में, भविष्यद्वाणियों को परखने के लिए परख (विवेक) के आत्मिक वरदान की आवश्यकता होती, जो परमेश्वर पुरुषों और स्त्रियों दोनों को देते हैं (12:10)।

यह दृष्टिकोण चाहे कितना ही असंभाव्य हो, बहुत-से पूरकतावादी विद्वान अब भी इसका प्रचार करते हैं और इसे आगे विकसित करते हैं।

208. भविष्यद्वाणियों को "परखने" से पौलुस का ठीक-ठीक क्या अर्थ था, यह अनिश्चित है। क्या इसका अर्थ किसी भविष्यद्वाणी के स्रोत को आत्मिक रूप से परखना है, या धर्मसिद्धान्त की दृष्टि से उसकी विषय-वस्तु की जाँच करना, या शायद इस पर विचार करना कि परमेश्वर कई भविष्यद्वाणियों के मेल से क्या कह रहे होंगे, या यह तय करना कि जो कहा जा रहा है उसे कैसे लागू किया जाए?

दृष्टिकोण 2A: स्त्रियाँ पुरुष प्राचीनों की भूमिका न हथियाएँ

मैंने इस दृष्टिकोण को 2a नाम दिया है, क्योंकि यह पिछले दृष्टिकोण की एक अधिक हाल की शाखा है। यही प्रमुख पूरकतावादी दृष्टिकोण भी है, जिसे Grudem, Carson और Keller दम्पति मानते हैं। यह दृष्टिकोण स्त्रियों को चुप तो नहीं कराता, परन्तु उन्हें सार्वभौमिक रूप से अधीनस्थ करने का एक रास्ता ढूँढ लेता है। यह दृष्टिकोण 2 से सहमत है कि पौलुस स्त्रियों द्वारा भविष्यद्वाणियों को परखने को मना कर रहा है, और फिर यह अतिरिक्त कारण देता है: भविष्यद्वाणियों को केवल कलीसिया के प्राचीन ही परख सकते हैं, और इसीलिए पौलुस नहीं चाहता कि स्त्रियाँ ऐसा करें।

मेरी राय में यह दृष्टिकोण मूल दृष्टिकोण से भी कमज़ोर है, क्योंकि यह दोहरी छलाँग लगाता है। यह न केवल पद 30-32 को लाँघकर सीधे पद 29 पर पहुँच जाता है, बल्कि एक ऐसे कारण पर छलाँग लगाता है जो पूरी पत्री में कहीं भी नहीं दिया गया। Grudem जो तर्क देता है, वह यह है कि स्त्रियाँ भविष्यद्वाणी कर सकती हैं, यानी कोई अचानक मिला प्रकाशन बता सकती हैं, परन्तु भविष्यद्वाणियों को परखने के लिए धर्मसिद्धान्त संबंधी अधिकार चाहिए, और वह केवल पुरुष प्राचीनों का क्षेत्र है। फिर यह दृष्टिकोण दोबारा छलाँग लगाता है, सीधे 1 तीमुथियुस 2:12 तक, जो कहता है कि स्त्रियों को पुरुषों को शिक्षा देने की अनुमति नहीं है। इस पद को पहले वाले पद से जोड़कर, स्त्रियों के "अधीन रहने, जैसा व्यवस्था भी कहती है" वाले उल्लेख का यह अर्थ लिया जाता है कि वे पुरुष प्राचीनों के अधीन रहें, जैसा उत्पत्ति 2 की लैंगिक भूमिकाएँ सिखाती हैं।

दृष्टिकोण 2 के बारे में बताई गई सारी कमज़ोरियाँ यहाँ भी लागू होती हैं, परन्तु इस दृष्टिकोण की कई कारणों से और भी अधिक आलोचना हुई है। पौलुस इस पूरी पत्री में कहीं भी प्राचीनों का उल्लेख नहीं करता। पूरकतावादी कलाबाज़ी के गंभीर करतब दिखाए बिना 1 कुरिन्थियों में कुछ भी पुरुष के अधिकार का संकेत नहीं देता, और न ही शिक्षा देने को केवल पुरुषों का काम बताता है।

यद्यपि आज की करिश्माई कलीसियाएँ शायद केवल प्राचीनों को भविष्यद्वाणियाँ परखने की अनुमति दें, परन्तु 1 कुरिन्थियों 14 में पौलुस पूरी कलीसिया की परिपक्वता पर भरोसा करता है कि वह भविष्यद्वाणी के वचन लाए भी और उन्हें परखे भी। वास्तव में, पत्री में किसी ऐसी अगुवाई का, जिसके अधीन रहना चाहिए, एकमात्र संभावित उल्लेख पूरे "स्तिफनास के घराने" के बारे में है – जिसके कुरिन्थवासियों को "अधीन रहना" चाहिए। सचमुच, इस घराने में, सब घरानों की तरह, कुछ स्त्रियाँ भी रही होंगी; इसलिए इस बात के पक्ष में कहीं अधिक मज़बूत तर्क बन सकता है कि कुरिन्थुस के पुरुषों से स्तिफनास के घराने की स्त्रियों के अधीन रहने का आग्रह किया गया, बजाय इस बात के कि केवल प्राचीनों को भविष्यद्वाणियाँ परखने की अनुमति थी![209]

209. फिर भी 1 कुरिन्थियों 16:15-16 में पौलुस शायद स्तिफनास के घराने को प्राचीनों के रूप में नहीं, बल्कि केवल प्रेरणादायक सेवकों (diakonia) और सहकर्मियों (sunergeo) के रूप में प्रस्तुत कर रहा है, जो इस योग्य हैं कि परमेश्वर के लोग स्वयं नम्रता से उनकी सेवा करें।

जहाँ तक 1 कुरिन्थियों 14 को 1 तीमुथियुस 2:12 से जोड़ने की बात है, बाद वाला पद बहुत बाद में लिखा गया, और इसलिए इस पत्री के किसी भी पाठक को उसका पता तक नहीं था। उस समय उसका अस्तित्व ही नहीं था। इसके अलावा, पूरकतावादी 1 तीमुथियुस 2:12 की ग़लत व्याख्या करते हैं (जैसा मैं अगले अध्याय में दिखाऊँगा), और इससे यह निश्चित हो जाता है कि ऐसा कोई भी जोड़ इस खंड की व्याख्या में प्रकाश नहीं, बल्कि और अँधेरा ही जोड़ेगा।

जहाँ तक "अधीन रहने" शब्द की बात है, ध्यान दें कि यहाँ यह नहीं बताया गया कि किस व्यक्ति के अधीन रहना है। यह मान लेना कि इसका अर्थ है कि स्त्रियाँ पुरुष प्राचीनों के अधीन रहें, पाठ में वह बात पढ़ लेना है जो उसमें है ही नहीं। बेहतर यह है कि बड़े खंड को देखें और फिर यह मानें कि अधीनता उस "सुव्यवस्था" के सिद्धान्त के प्रति है जो अध्याय 11-14 में पौलुस के सब निर्देशों का मार्गदर्शन करता है। और यदि "व्यवस्था" का अर्थ उत्पत्ति 2 हो भी (जिसकी संभावना कम है, क्योंकि उत्पत्ति 2 स्त्री की अधीनता नहीं सिखाता), तो उत्पत्ति 2 में एकमात्र व्यवस्था यह आज्ञा है कि वह फल न खाया जाए। फिर से, किसी दूसरे खंड की ग़लत व्याख्या का उपयोग इस खंड के पठन को विकृत करने के लिए किया जाता है।

दृष्टिकोण 2 और दृष्टिकोण 2a की शायद सबसे स्पष्ट कमी यह है कि पद 35 में न भविष्यद्वाणी करने का उल्लेख है और न भविष्यद्वाणियों को परखने का। बल्कि वह स्त्रियों को सीखने की इच्छा से प्रश्न पूछने से मना करता है – जो बिल्कुल अलग विषय है।[210]

दृष्टिकोण 3: पौलुस उनका खंडन करता है जो कहते हैं कि स्त्रियाँ बोल नहीं सकतीं

बहुत-से विद्वानों का तर्क है कि कुरिन्थुस में एक व्यवस्थावादी समूह (ऐसे लोग जो नियमों और रीतियों पर कठोरता से ज़ोर देते थे) पौलुस का विरोध करता था, और पौलुस वास्तव में पद 34-35 में उसी को उद्धृत कर रहा है और फिर पद 36-38 में उसका खंडन करता है। ऐसा करके पौलुस उस ढंग को चुनौती दे रहा है जिससे यह कलीसिया स्त्रियों पर अपनी सांस्कृतिक पाबंदियाँ थोप रही थी। दूसरे शब्दों में, हमें यह कल्पना करनी है कि पद 34-35 के दोनों ओर उद्धरण-चिह्न लगे हैं, क्योंकि यहाँ पौलुस इस व्यवस्थावादी समूह के शब्द रखता है।

इस दृष्टिकोण को विश्वसनीय बनाने वाली बात यह है कि पौलुस इस पत्री में अन्य स्थानों पर भी वास्तव में अपने विरोधियों को उद्धृत करता है और फिर उन्हें सुधारता है। उदाहरण के लिए, 1 कुरिन्थियों 6 में वह लिखता है, "'मुझे सब कुछ करने का अधिकार है,' तुम कहते हो – परन्तु सब बातें लाभ की नहीं। 'मुझे सब कुछ करने का अधिकार है' – परन्तु मैं किसी बात का दास न बनूँगा।"[211]

इस दृष्टिकोण के अनुसार, इन व्यवस्थावादियों को उद्धृत करने के तुरन्त बाद पौलुस का सुधार आता है। इसे ध्यान में रखते हुए, पद 36 का एक संभावित अनुवाद यह हो सकता है: "क्या! क्या परमेश्वर का वचन तुम्हीं

210. इस दृष्टिकोण की अधिक विस्तृत आलोचना के लिए देखें J. Greenbury, "1 Corinthians 14:34-35: Evaluation of Prophecy Revisited," Journal of the Evangelical Theological Society 51 (2008): 721–31

211. 1 कुरिन्थियों 6:12। 1 कुरिन्थियों 6:13 और 7:1 भी देखें।

से निकला? या केवल तुम्हीं तक पहुँचा है?" इस खंडन करने वाले प्रश्न के बाद वह स्पष्ट कर देता है कि केवल पुरुष ही नहीं, बल्कि हर कोई अन्य भाषाओं में प्रार्थना कर सकता है और भविष्यद्वाणी कर सकता है (इसलिए "बोल" सकता है), बशर्ते यह सुव्यवस्थित ढंग से किया जाए (पद 37-40)।

यह बात भी इस दृष्टिकोण को विश्वसनीयता देती है कि पद 34-35 रोमी साम्राज्य में स्त्रियों के साथ किए जाने वाले प्रचलित व्यवहार से बहुत मिलते-जुलते हैं। उदाहरण के लिए, पहली सदी के रोमी इतिहासकार लिवी (Livy) सिसरो (Cicero) के एक भाषण का उल्लेख करता है: "मैं लज्जा से लाल हो गया, जब कुछ ही समय पहले मैं स्त्रियों के एक झुंड के बीच से होकर गुज़रा ... जो सबके सामने इधर-उधर दौड़ रही थीं, सड़कें रोक रही थीं, और दूसरी स्त्रियों के पतियों से बातें कर रही थीं! क्या तुम यही बात घर पर अपने ही पतियों से नहीं पूछ सकती थीं? क्या तुम घर पर अपने पतियों के साथ होने की अपेक्षा सबके सामने दूसरों के पतियों के साथ अधिक मनमोहक लगती हो?"[212]

यह दृष्टिकोण चाहे जितना संभव हो, इसकी मुख्य कमज़ोरी यह है कि पत्री में इन व्यवस्थावादियों या झूठे शिक्षकों का कोई भी दूसरा उद्धरण इतना लम्बा नहीं है।

दृष्टिकोण 4: पौलुस ने यह कभी लिखा ही नहीं

पाठ-आलोचना के बहुत-से विद्वानों का तर्क है कि स्त्री के अनिवार्य रूप से चुप रहने के बारे में ये पद पौलुस की मूल पत्री में नहीं थे।[213] बल्कि किसी आरम्भिक पाठक या प्रतिलिपिकार ने – जिसका दृष्टिकोण शायद स्त्रियों को अधीनस्थ करने वाला था – इन्हें हाशिये में लिख दिया। बाद के प्रतिलिपिकारों ने फिर इन्हें वास्तविक पत्री में डाल दिया।

सबसे पुरानी प्रतियों का अध्ययन करने वाले विद्वानों ने कई बार हस्तलिपियों के बीच ऐसे अन्तर पहचाने हैं जिनके कारण उन्होंने विभिन्न पाठों की प्रामाणिकता पर प्रश्न उठाया है और उन्हें प्रक्षेप (बाद में जोड़ा गया अंश) कहा है। यदि आपने इनके बारे में कभी नहीं सुना, तो शायद यह बात आपको बेचैन कर दे। आप सोच सकते हैं कि क्या हम उस बाइबल पर भरोसा कर सकते हैं जो हमारे पास है। फिर भी, पाठ-आलोचकों के सदियों लम्बे काम के कारण हम 99.9% निश्चितता के साथ जान सकते हैं कि हमारे पास हमारे बाइबल-पाठों के 99.9% का मूल शब्द-रूप है। परन्तु यह खंड शायद उसी 0.1% अनिश्चितता में आता है।

इसके समर्थन में तीन प्रमाणों पर विचार कीजिए। पहला, कोई निश्चित रूप से नहीं जानता कि यह खंड वास्तव में पत्री में कहाँ आता है – वास्तव में पद 34-35 अध्याय में अपने वर्तमान स्थान पर केवल पूर्वी हस्तलिपियों में मिलते हैं। सबसे पुरानी पश्चिमी हस्तलिपियों में यही पद पद 40 के बाद आते हैं। इस पर विचार कीजिए: जब तक जेरोम (Jerome) ने चौथी सदी में इसे बदला नहीं, तब तक लातीनी भाषी कलीसिया आज के पद 33 से सीधे पद 36 पर पहुँचती थी। इस दृष्टिकोण के अनुसार, जब एक आरम्भिक

212. M. Lefkowitz और M. Fant, Women's Life in Greece and Rome, पृ. 171 में उद्धृत।
213. Gordon Fee ("The First Epistle to the Corinthians" में), Richard Hays ("First Corinthians, Interpretation" में) और Philip Payne ("Man and Woman: One in Christ" में) जैसे विद्वान, सभी इस दृष्टिकोण को मानते हैं।

लिपिक ने आज के पद 34-35 को हाशिये में लिख दिया, तो बाद के दो प्रतिलिपिकारों ने, जो उस प्रति की नकल कर रहे थे, इसे पौलुस के शब्दों में डाल दिया – एक ने एक स्थान पर, और दूसरे ने दूसरे स्थान पर।

दूसरा, इससे विरोधाभासों का स्पष्टीकरण मिलता है। पौलुस सिर ढँकने वाले उस खंड में कही अपनी बात का सीधा खंडन क्यों करता, जहाँ स्त्रियाँ पुरुषों के साथ आनन्द से प्रार्थना और भविष्यद्वाणी कर रही हैं? वह वही शब्द "चुप रहना" क्यों प्रयोग करता, जो अध्याय में पहले आता है, और फिर अचानक उसमें बिल्कुल अलग अर्थ भर देता? पद 28 और 30 में चुप रहना क्षणिक है और किसी को वरदानों के उपयोग से नहीं रोकता, जबकि पद 34 में चुप रहना ज़ोरदार और स्थायी प्रतीत होता है। जैसा पहले बताया जा चुका है, पौलुस "हर कोई" और "तुम में से हर एक" कहता है[214] और ऐसा करके स्त्रियों को भी बोलने का निमंत्रण देता है। साथ ही, ऐसा लगता है कि अध्याय के विचारों का प्रवाह पद 34-35 के बिना कहीं अधिक अच्छा चलता है। हाँ, यह भी ध्यान रहे कि वे पद 40 के बाद भी कुछ बेहतर नहीं बैठते।

तीसरा, "जैसा व्यवस्था भी कहती है" वाक्यांश का प्रयोग पौलुस की शैली जैसा नहीं है। पुराने नियम की कोई भी व्यवस्था स्त्री को चुप रहने या अधीन रहने की आज्ञा नहीं देती। और पौलुस विशेष पवित्रशास्त्र-वचनों का हवाला देने के लिए प्रायः "लिखा है" कहता है। जिन दो स्थानों पर वह किसी व्यवस्था का हवाला देने के लिए "जैसा व्यवस्था कहती है" का प्रयोग करता है, वहाँ वह एक दूसरी क्रिया (legō) का प्रयोग करता है और उस व्यवस्था को उद्धृत भी करता है।

इन और दूसरे वज़नदार तर्कों के बावजूद[215] सब विद्वान इस दृष्टिकोण को स्वीकार नहीं करते। "बोलना" और "चुप रहना" शब्द अध्याय 14 में प्रयोग होते हैं (भले ही उनका प्रयोग अलग ढंग से हुआ हो), और ये पद हमारे पास उपलब्ध सब आरम्भिक हस्तलिपियों में मिलते हैं, भले ही उनका स्थान अनिश्चित हो। हम में से कौन ऐसी किसी बात को एक ओर फेंक देने का दोषी बनना चाहेगा जिसे शायद परमेश्वर ने प्रेरित किया हो? यद्यपि मेरा झुकाव इसी दृष्टिकोण की ओर है, फिर भी मुझे यह पूछना ही होगा कि क्या इसमें हमें मिलने वाली कठिनाइयों का कोई और समाधान हो सकता है।

दृष्टिकोण 5: बाधा डालने वाले सीखने वाले सुव्यवस्था को कमज़ोर करते हैं

यह दृष्टिकोण मानता है कि पौलुस कुरिन्थुस की कलीसिया की एक अनोखी और बहुत विशिष्ट समस्या को संबोधित कर रहा है, और इसलिए यह सब कलीसियाओं के लिए आज्ञा नहीं है, भले ही इसमें सब

214. देखें पद 23-24, 36 और 31।

215. उदाहरण के लिए, पौलुस कहीं और मसीही आराधना के लिए कोई नियम स्थापित करने हेतु व्यवस्था का हवाला नहीं देता – और आराधना तो इस बात की अभिव्यक्ति है कि हम आत्मा में हैं, व्यवस्था के अधीन नहीं। साथ ही, पत्री की बाकी सब आज्ञाएँ कुरिन्थुस की कलीसिया को संबोधित हैं। परन्तु पद 34 एक आज्ञा "कलीसियाओं में स्त्रियों" को देता है, और चूँकि यह "पवित्र लोगों की सब कलीसियाओं" के तुरन्त बाद आता है, इसका अर्थ सब कलीसियाओं की स्त्रियाँ हो सकता है। ऐसा प्रतीत होता है कि यह आज्ञा अपने स्थान पर बेमेल है। इसके अलावा, ऐसा कोई दूसरा लम्बा खंड नहीं है जो विभिन्न आरम्भिक हस्तलिपियों में बिना किसी स्पष्ट कारण के दो बिल्कुल अलग स्थानों पर आता हो। यह सब इस बात को विश्वसनीयता देता है कि यह बाद में जोड़ा गया अंश है।

कलीसियाओं के लिए कुछ स्थायी शिक्षाएँ हों।[216]

इस दृष्टिकोण की कुंजी यह है कि अध्याय 11-14 आराधना में उचित सुव्यवस्था पर केन्द्रित हैं। 11:3-16 में पौलुस उचित पहनावे पर ध्यान देता है। 11:17-34 में वह प्रभु भोज से जुड़ी ग़लत प्रथाओं को सुधारता है। 14:11-32 में वह करिश्माई वरदानों के अव्यवस्थित उपयोग से निपटता है – विशेष रूप से, वह लोगों के तीन समूहों को सुधारता है जो ग़लत समय पर बोल रहे हैं: वह व्यक्ति जो सबके सामने अन्य भाषा में बोलता है जबकि अनुवाद करने वाला कोई उपस्थित नहीं (पद 28), वह व्यक्ति जिसके पास भविष्यद्वाणी का वचन है परन्तु जो अपनी बारी की प्रतीक्षा नहीं करता (पद 30-32), और अन्त में वे स्त्रियाँ जो ग़लत समय पर या ग़लत ढंग से बातें करती हैं (पद 34-35)। तीनों स्थितियों में पौलुस की चिन्ता शब्दों की विषय-वस्तु से उतनी नहीं है, जितनी उस अव्यवस्थित ढंग से है जिसमें वे बोले जाते हैं।

यद्यपि हम निश्चित रूप से नहीं जान सकते कि आराधना-सभाओं में इकट्ठी कुरिन्थुस की स्त्रियों के किस व्यवहार को पौलुस सुधार रहा था, फिर भी प्राचीन संस्कृतियों के ज्ञान के आधार पर हम अनुमान लगा सकते हैं कि स्त्रियाँ बाधा डालने वाले ढंग से "कलीसिया में गपशप" कर रही थीं। एक ऐसी व्यापक संस्कृति में, जहाँ लगभग कोई स्त्री शिक्षित नहीं थी, जहाँ सीखना पढ़ने से नहीं, बल्कि मौखिक रूप से होता था, और जहाँ स्त्रियों को सामान्यतः धार्मिक सभाओं में भाग लेने की अनुमति नहीं थी, ये मसीही स्त्रियाँ – जिन्हें शायद भविष्यद्वाणी बताने की अपनी बारी पहले ही मिल चुकी थी – अब बिना बारी के बोल रही थीं। सुनने के बजाय वे उत्साह में अपने आसपास के लोगों से पूछतीं कि क्या कहा जा रहा है या उसका क्या अर्थ है। इसलिए पौलुस उनसे कहता है कि सभा में बाधा डालना बंद करें और यह बातचीत घर पर अपने पतियों के लिए रख छोड़ें। पौलुस कहता है, "यदि वे कुछ पूछना चाहें, तो घर में अपने अपने पति से पूछें" – उनके पति, जो लगभग सभी मामलों में शायद उनसे अधिक शिक्षित थे, उनके बहुत-से प्रश्नों का उत्तर दे सकते थे।

दूसरे शब्दों में, चुप रहने का यह निर्देश स्त्रियों की किसी अन्तर्निहित "सृष्टि की व्यवस्था" पर या पुरुष-स्त्री के बीच अधिकार-अधीनता के किसी सिद्धान्त पर आधारित नहीं है, बल्कि इसका उद्देश्य एक ऐसी कलीसियाई सभा में सुव्यवस्था बहाल करना है जो अन्यथा अराजक और बाधाओं से भरी होती। इस दृष्टिकोण के अनुसार, पूरकतावादी तर्कों के विपरीत, पौलुस की चिन्ता यह नहीं है कि स्त्रियाँ शिक्षा दे रही हैं, बल्कि यह है कि वे ऐसे ढंग से सीख रही हैं जो सभा की सुव्यवस्था के लिए सहायक नहीं है।[217] Eugene Peterson की The Message अपने भावानुवाद में इसी भाव को पकड़ती है: "पत्नियाँ आराधना में बाधा न डालें – जब उन्हें सुनना चाहिए तब बातें करते हुए, ऐसे प्रश्न पूछते हुए जो घर पर अपने पतियों से पूछना अधिक उचित होगा।"

216. यद्यपि कुछ अनुवाद "जैसा पवित्र लोगों की सब कलीसियाओं में है" शब्दों को स्त्रियों को चुप कराने वाले इस निर्देश के आरम्भ से जोड़ते हैं, यह दृष्टिकोण मानता है कि ये शब्द सुव्यवस्था की प्राथमिकता के बारे में पिछले कथन के अन्त के साथ अधिक अच्छी तरह बैठते हैं। उनतीस अंग्रेज़ी अनुवाद इस पर लगभग बीच से बँटे हुए हैं। देखें www.bit.ly/3mGpFPT

217. यूहन्ना क्रिसोस्टम (John Chrysostom) सदियों बाद पौलुस के दृष्टिकोण 3 से सहमत था: "तब तो स्त्रियाँ ऐसी शिक्षा के कारण चुप रहती थीं; परन्तु अब उनके बीच बड़ा शोर, बहुत कोलाहल और बातचीत होने लगती है, और कहीं भी उतनी नहीं जितनी इस स्थान [महागिरजाघर] में ... इस प्रकार सब कुछ गड़बड़ है, और वे यह समझती प्रतीत नहीं होतीं कि जब तक वे शान्त न रहें, वे वह नहीं सीख सकतीं जो उपयोगी है। क्योंकि जब हमारा प्रवचन [उपदेश] बातचीत के विरुद्ध संघर्ष करता है, और कोई ध्यान नहीं देता कि क्या कहा जा रहा है, तो उससे उन्हें क्या लाभ हो सकता है?" (Homily IX, Nicene and Post-Nicene Fathers में उद्धृत।)

पौलुस के लिए कलीसिया की सुव्यवस्था बनाए रखने में स्थानीय सांस्कृतिक संवेदनशीलताओं का ध्यान रखना भी शामिल है। जिस प्रकार स्त्रियों का सिर न ढँकना "लज्जा की बात" (11:6) थी, उसी प्रकार उस संस्कृति में लोगों का, विशेषकर स्त्रियों का, सीखने के वातावरण में बाधा डालना शायद "लज्जा की बात" (14:35) थी।

हम में से जो यहाँ पौलुस पर लिंगभेदी होने का आरोप लगा सकते हैं, आइए हम याद रखें कि पौलुस ऐसी कलीसियाएँ स्थापित करने का प्रयास कर रहा था जो सुसमाचार के मूल्यों को थामे रहें, और साथ ही वह "सब मनुष्यों के लिये सब कुछ बन" रहा था, ताकि कुछ को जीत सके।[218] पौलुस उस संस्कृति को आदर्श नहीं बना रहा था जिस तक कलीसिया पहुँचने का प्रयास कर रही थी, बल्कि सुसमाचार प्रचार के उद्देश्य से, मुख्य मूल्यों से समझौता किए बिना, उसकी सामाजिक मर्यादाओं के अनुसार ढलने का प्रयास कर रहा था। और निश्चय ही वह जानता था कि जहाँ सीखना निर्णायक था, वहाँ सबकी भलाई के लिए बाधा डालने वाले सीखने वालों को कुछ दिशानिर्देशों की आवश्यकता होगी।

दिलचस्प बात यह है कि यदि हम सांस्कृतिक संवेदनशीलता की इसी चिन्ता को आज के पश्चिमी संदर्भ में लागू करें, तो हमारे लिए यह सुनिश्चित करना बुद्धिमानी होगी कि स्त्रियाँ पुरुषों की ही तरह योगदान दें और सीखें। वास्तव में ऐसा न करना "लज्जा की बात" होगी।

क्या यही दृष्टिकोण सही है? मुझे लगता है कि हो सकता है।[219] परन्तु हम पूरी तरह निश्चित नहीं हो सकते, और इससे एक अन्तिम अवलोकन सामने आता है।

एक अस्पष्ट खंड

यद्यपि कलीसिया को पवित्रशास्त्र की अपनी व्याख्याओं की लगातार जाँच करते रहना चाहिए और स्पष्टता तथा दृढ़ विश्वास के और भी ऊँचे स्तरों की ओर बढ़ते रहना चाहिए, फिर भी यह स्वीकार करना महत्त्वपूर्ण है कि यह खंड अब भी उत्तरों से अधिक प्रश्न खड़े करता है। अधिक मज़बूत दृष्टिकोण भी अनिश्चित हैं। इसलिए नम्रता आवश्यक है।

यदि हम परमेश्वर के वचन की अवज्ञा के डर से सबसे रूढ़िवादी व्याख्या (दृष्टिकोण 1) चुनें, तो स्त्रियों को पूरी तरह चुप कराने में यह भी शामिल होना चाहिए कि वे गाएँ भी नहीं, क्योंकि पौलुस गाने को भी एक प्रकार का बोलना बताता है।[220] रूढ़िवादी होने का दावा करना, परन्तु फिर स्त्रियों को केवल भविष्यद्वाणियाँ परखने या प्रचार करने से रोकना मुझे बिल्कुल मनमाना और असंगत लगता है। और संगति की बात करें, तो यदि हम रूढ़िवादी दृष्टिकोण अपना रहे हैं, तो आइए सचमुच संगत बनें और सब स्त्रियों को निर्देश दें कि वे अगली कलीसियाई सभा के लिए अपनी ओढ़नियाँ तैयार रखें! जब सम्मानित विद्वान इस खंड के अध्ययन में इतने

218. 1 कुरिन्थियों 9:23
219. यद्यपि मुझे, उन लोगों के साथ जो इसकी तुलना में दृष्टिकोण 4 को पसंद करते हैं, यह मानना होगा कि स्त्रियों के चुप रहने की माँग, जिसका उल्लेख बिना किसी शर्त के कम से कम तीन बार हुआ है, सभाओं में स्त्रियों के सब मौखिक योगदानों पर एक पूर्ण (और केवल परिस्थिति-विशेष नहीं) प्रतिबंध हो सकती है।
220. देखें कुलुस्सियों 3:16-17

अलग-अलग निष्कर्षों पर पहुँचते हैं, तो एक बात पर हम सब निश्चय ही सहमत हो सकते हैं: यह खंड एक अस्पष्ट खंड है। परिणामस्वरूप – व्याख्या की किसी भी अच्छी पद्धति के अनुसार – इसे न तो किसी धर्मसिद्धान्त संबंधी निष्कर्ष का आधार बनना चाहिए, और न हर जगह की हर कलीसिया के व्यवहार के लिए किसी सार्वभौमिक आज्ञा का।

न 1 कुरिन्थियों 11 और न 1 कुरिन्थियों 14 इस संभावना को नकारते हैं कि स्त्रियाँ कलीसिया और समाज में अगुवाई करें, या साझेदार के रूप में अपने पतियों के साथ खड़ी हों, या पुरुषों को उपदेश सुनाएँ। और यह सब इसके बावजूद है कि पूरकतावादियों ने इन्हीं पदों को अपनी स्थिति के बचाव के रूप में प्रस्तुत किया है। अब जाँचने के लिए एक और निर्णायक खंड बचता है।



7

1 तीमुथियुस 2:11-15

"सेवकाई में स्त्रियों का विरोध अक्सर लगभग केवल पौलुस के एक पाठ – 1 तीमुथियुस 2:11-12 – के आधार पर किया जाता है। यह कठिन पाठ और इसका संदर्भ जो भी अर्थ रखता हो, इसे उन सब दूसरे बाइबल-पाठों के साथ संतुलन में रखना ही होगा जो इसी विषय से संबंध रखते हैं। मेरी समझ में इससे यह दिखता है कि 1 तीमुथियुस का यह पाठ एक सीमित परिस्थिति के बारे में बोलता है।" David Scholer[221]

हैरी पॉटर और हाफ़-ब्लड प्रिंस (Harry Potter and the Half-Blood Prince) के अन्त के निकट डंबलडोर (Dumbledore) शत्रुओं से घिरा हुआ है। वह प्रोफ़ेसर स्नेप (Snape) से विनती करता है, "सेवेरस (Severus) ... कृपया!" हमारा दिल तोड़ते हुए स्नेप डंबलडोर को मार डालता है, और हम यह निष्कर्ष निकालते हैं कि स्नेप आरम्भ से ही वोल्डेमॉर्ट (Voldemort) का विश्वासघाती एजेंट था।

परन्तु ठहरिए। केवल अन्तिम पुस्तक में ही हमें (हैरी के साथ) पता चलता है कि सब कुछ वैसा नहीं था जैसा दिखता था। जब हैरी स्नेप की यादें खोलता है (जो यादें देखने के एक जादुई पात्र, पेन्सीव, में उँडेली गई थीं), तो पता चलता है कि स्नेप जवानी में हैरी की माँ से प्रेम करता था, और चाहे वह कितना ही अप्रिय रहा हो, वह आरम्भ से ही डंबलडोर और हैरी के प्रति समर्पित था।

वास्तव में डंबलडोर, जो जानता था कि वह एक ऐसे शाप से मर रहा है जिसे पलटा नहीं जा सकता, पहले ही सेवेरस से आग्रह कर चुका था कि वह उसकी जान ले ले, ताकि वोल्डेमॉर्ट के साथ स्नेप का भरोसा पक्का हो जाए, जिसका उपयोग वह फिर हैरी के लाभ के लिए कर सके।

अब जब हम कहानी जानते हैं, तो "सेवेरस ... कृपया!" शब्दों का अर्थ बिल्कुल बदल जाता है। जैसा हमने पहले सोचा था, ये स्नेप से अपनी जान बख़्शने की डंबलडोर की हताश विनती नहीं हैं, बल्कि यह विनती है कि वह उसे मार डाले। यह क्षण बुराई की विजय होना तो दूर, वास्तव में अन्धकार पर अन्तिम विजय की ओर ले जाएगा।

मैं यह उदाहरण[222] यह दिखाने के लिए देता हूँ कि किसी पंक्ति या किसी पद को, जो संदर्भ से अलग करके पूरी तरह ग़लत समझा जा सकता है, ठीक से समझने का प्रयास करने से पहले पूरी कहानी में डूबे रहना

221. https://www.fuller.edu/womeninministry/
222. इस उदाहरण का श्रेय Rebecca McLaughlin को जाता है, "Confronting Christianity" (अध्याय 8) में।

कितना महत्त्वपूर्ण है।

पूरकतावादी विद्वान यह ग़लती करते हैं कि वे एक बहुत लम्बी कहानी की तीन छोटी पंक्तियाँ (वे तीन बाइबल-खंड जिन पर हम इस समय काम कर रहे हैं) लेकर उन्हें संदर्भ से उखाड़ देते हैं। बाइबल के अधिकार के प्रति समर्पित होकर (जो अच्छी बात है), वे किसी खंड की ऐसी व्याख्या को पकड़ लेने के लिए तैयार रहते हैं जिसका समर्थन पूरी बाइबल नहीं करती। परमेश्वर की पुनर्स्थापना की योजना की मुख्य कहानी का खंडन करते हुए, वे उस पितृसत्ता को आदर्श बनाते हैं और उसे अमर करना चाहते हैं, जिसे बड़ी कहानी में उसके रचयिता मिटा देने की योजना बना रहे हैं।

सचमुच, यह सिद्ध करने के लिए कि पदानुक्रमित व्यवस्था परमेश्वर की इच्छा है, कोई दूसरा खंड इतनी नियमितता और इतने ज़ोर से उद्धृत नहीं किया जाता, जितना 1 तीमुथियुस 2:8-15 में अपने शिष्य से कहे गए पौलुस के शब्द। जब बाकी सब बाइबलीय तर्क विफल हो जाते हैं, तो यही वह खंड है जिसका सहारा पूरकतावादी अन्त में लेते हैं। कुछ पूरकतावादी विद्वान तो इसे एकमात्र विश्वसनीय खंड मानते हैं जो स्त्रियों और कलीसियाई अगुवाई के पद पर उनके अभिषेक (नियुक्ति) के बीच खड़ा है।[223]

आगे बढ़ने से पहले एक छोटी चेतावनी: इस अध्याय का शेष भाग इस पुस्तक का सबसे तकनीकी और सबसे लम्बा भाग है। यदि आप व्याख्या की इतनी जटिलता नहीं सँभाल सकते, तो बेझिझक सीधे अगले अध्याय पर चले जाइए, परन्तु यह जान लीजिए कि मैं दिखाऊँगा कि 1 तीमुथियुस 2:11-15, जो पूरकतावाद का मुख्य गढ़ माना जाने वाला पाठ है, वास्तव में पूरकतावाद का समर्थन नहीं करता।

यह रहा वह खंड, अपने आसपास के पदों के साथ, जो इसे कुछ संदर्भ देते हैं:

8 इसलिए मैं चाहता हूँ कि हर जगह पुरुष बिना क्रोध और विवाद के पवित्र हाथों को उठाकर प्रार्थना किया करें। 9 वैसे ही मैं यह भी चाहता हूँ कि स्त्रियाँ संकोच और संयम के साथ शालीन वस्त्रों से अपने आप को सँवारें; न कि बाल गूँथने, और सोने, और मोतियों, और बहुमूल्य कपड़ों से, 10 पर भले कामों से, जैसा परमेश्वर की भक्ति का अंगीकार करने वाली स्त्रियों को उचित है।

11 स्त्री को चुपचाप और पूरी अधीनता के साथ सीखना चाहिए। 12 मैं अनुमति नहीं देता कि स्त्री शिक्षा दे या पुरुष पर अधिकार अपने हाथ में ले; वह चुपचाप रहे। 13 क्योंकि आदम पहले, उसके बाद हव्वा बनाई गई। 14 और आदम बहकाया न गया, पर स्त्री बहकाने में आकर अपराधिनी हुई। 15 परन्तु स्त्रियाँ बच्चे जनने के द्वारा उद्धार पाएँगी – यदि वे संयम सहित विश्वास, प्रेम और पवित्रता में बनी रहें।

3:1 यह बात सत्य है कि जो अध्यक्ष होना चाहता है, वह भले काम की इच्छा करता है।

223. “स्त्रियों के अभिषेक (नियुक्ति) के विरुद्ध केवल एक ही वैध तर्क है ... 1 तीमुथियुस 2:12 में मिलने वाला निषेध,” Susan Foh कहती है, “Women in Ministry: Four Views” (1989), अध्याय 2 में।

पूरकतावादी दृष्टिकोण

पूरकतावादी धर्मविज्ञान के समर्थन में मुख्य पद ये हैं: "मैं अनुमति नहीं देता कि स्त्री शिक्षा दे या पुरुष पर अधिकार [चलाए] ... क्योंकि आदम पहले, उसके बाद हव्वा बनाई गई।" पूरकतावादी इन पदों का मूल अर्थ यह लगाते हैं:

एक प्रेरित के रूप में मैं यह आदेश देता हूँ कि सब कलीसियाओं में सब परिस्थितियों में कोई स्त्री किसी पुरुष को शिक्षा नहीं दे सकती और न उस पर पास्टरीय अधिकार चला सकती है, क्योंकि केवल पुरुष के लिए ही दूसरे पुरुष को शिक्षा देना या उस पर अधिकार चलाना उचित है। कारण यह है कि आदम हव्वा से पहले बनाया गया था, और इसलिए उचित रूप से हव्वा की अगुवाई करता है। यह "सृष्टि की व्यवस्था" भविष्य के सब भक्त समुदायों पर लागू होती है – पुरुष का आत्मिक अधिकार परमेश्वर का पसंदीदा मानदंड है।

दूसरे शब्दों में, जब कोई स्त्री कलीसिया में पुरुषों को शिक्षा देती है या किसी पुरुष के ऊपर अधिकार रखती है, तो वह एक स्थायी, सार्वभौमिक प्रेरितीय निर्देश की भी अवहेलना करती है और "सृष्टि की व्यवस्था" की भी।

यह ध्यान देना महत्त्वपूर्ण है कि पूरकतावादी तीन बातों पर बँटे हुए हैं: क्या यह पदानुक्रमित सिद्धान्त केवल घर और कलीसिया में लागू होता है या समाज में भी; क्या "शिक्षा देना या अधिकार चलाना" दो गतिविधियों (शिक्षा देना और अगुवाई करना) की बात करता है या एक की (अगुवे की तरह शिक्षा देना); और क्या स्त्रियों को कलीसिया में केवल सर्वोच्च अगुवाई से बाहर रखा गया है, या उस कलीसिया में अगुवाई के सब स्तरों से, जहाँ पुरुष अनुयायी हों। इन तीनों बातों पर अधिकांश वरिष्ठ पूरकतावादी (जैसे Köstenberger और Schreiner) अधिक कठोर व्याख्याओं पर पहुँचते हैं। उदाहरण के लिए, Köstenberger लिखता है: "पौलुस आसानी से कह सकता था, 'मैं स्त्री को प्राचीन बनने की अनुमति नहीं देता,' परन्तु इसके बजाय उसने कहा, 'मैं स्त्री को पुरुष को शिक्षा देने या उस पर अधिकार चलाने की अनुमति नहीं देता,' जिससे पता चलता है कि यही वे कार्य हैं जो उसे नहीं करने चाहिए, न कि केवल वह पद जिसमें ऐसी शिक्षा दी जाती है और ऐसा अधिकार चलाया जाता है।"[224]

शिक्षा देना (यूनानी: didaskein) का अर्थ क्या है? Schreiner कहता है कि यह "अधिकारपूर्ण सामग्री का संचार" है। इसलिए पौलुस की चिन्ता केवल यह नहीं है कि स्त्रियाँ पुरुषों को ग़लत बातें सिखाएँगी, बल्कि यह है कि वे पुरुषों को कुछ भी सिखाएँ। स्त्रियों का पुरुषों को सत्य सिखाना भी अनुचित है। कलीसिया में स्त्रियाँ दूसरी स्त्रियों और बच्चों को सिखा सकती हैं,[225] परन्तु वयस्क पुरुषों को नहीं। एक पद, प्रेरितों के काम 18:26, की व्याख्या इस तरह की जाती है कि स्त्रियों द्वारा पुरुषों को सिखाने का एक अपवाद बन सके: औपचारिक कलीसियाई सभा के बाहर, और आमने-सामने अकेले में, किसी स्त्री को किसी पुरुष को सिखाने की अनुमति दी जा सकती है।

224. स्रोत: www.bit.ly/3mG7n13
225. इसके उदाहरणों के लिए देखें तीतुस 2:3-4 और 2 तीमुथियुस 1:5; 3:15।

पूरकतावादी तर्क के अनुसार, 1 तीमुथियुस 2:12 में अधिकार चलाना (यूनानी: authentein) अधिकार के किसी नकारात्मक उपयोग की नहीं, बल्कि एक सकारात्मक प्रकार के अधिकार की बात करता है, जिसे कलीसिया में पुरुष पास्टर चलाते हैं।

पौलुस अपने प्रेरितीय निर्देश का औचित्य देता है: "क्योंकि आदम ..." पूरकतावादी विद्वान कहते हैं कि संयोजक "क्योंकि" (यूनानी: gar) का अर्थ है इस कारण से कि। पौलुस का कारण है: "आदम पहले, उसके बाद हव्वा बनाई गई।" "पहले" और "उसके बाद" शब्द दर्जे का संकेत देते हैं। वे कहते हैं कि इससे सिद्ध होता है कि पौलुस उत्पत्ति 2 को पतन से पहले हव्वा पर आदम के अधिकार की शिक्षा के रूप में पढ़ता था।

पौलुस आगे कहता है: "और आदम बहकाया न गया, पर स्त्री बहकाने में आकर अपराधिनी हुई" (पद 14)। पूरकतावादी आमतौर पर इसकी व्याख्या यह करते हैं कि यह सृष्टि की व्यवस्था को उलटने के शैतान के प्रयासों में हव्वा के सहयोग की बात करता है (क्योंकि, आदम के प्रभारी होने के बावजूद, शैतान ने हव्वा से बात करके आदम के अधिकार को लाँघ दिया, और हव्वा ने आदम के अधिकार को लाँघकर, आदम से पूछे बिना, परीक्षा का सामना किया)।

पूरकतावादी उचित ही हमें याद दिलाते हैं कि अध्यायों का विभाजन, जैसा आज हमारे पास है, पौलुस की मूल पत्री में नहीं है। वास्तव में विचारों का प्रवाह आगे चलता रहता है। पौलुस तुरन्त इस विषय पर आ जाता है कि कलीसिया में अध्यक्ष कौन हो सकता है (3:1)। पूरकतावादी कल्पना करते हैं कि पौलुस इस प्रकार यह संकेत दे रहा है: "मैंने बताया है कि स्त्रियाँ पुरुषों को शिक्षा नहीं दे सकतीं और न उन पर अधिकार चला सकती हैं, इसलिए तुम सोच रहे होगे कि यह काम कौन कर सकता है। उत्तर है ... पुरुष अध्यक्ष।"

इस तथ्य के अलावा कि यह लगभग पूरी तरह एक नई व्याख्या है, जिसे 1970 के दशक से टुकड़ा-टुकड़ा करके गढ़ा गया है,[226] मुझे पूरकतावादी व्याख्या (जैसी ऊपर बताई गई) के बारे में अपनी कई चिन्ताएँ रखने

226. 1 तीमुथियुस 2:11-14 की परस्परतावादी व्याख्याओं (जो स्त्री-पुरुष की परस्पर साझेदारी मानती हैं) को पूरकतावादी नियमित रूप से यह कहकर चुनौती देते हैं कि वे नई हैं। परन्तु यह आरोप दोनों ओर लागू होता है। चूँकि बीसवीं सदी के उत्तरार्ध तक कलीसिया के इतिहास के अधिकांश बाइबल-शिक्षक स्त्रियों के बारे में बाइबल-पाठों को अपने आप अपनी संस्कृति की पितृसत्ता या स्त्री-द्वेष के चश्मे से पढ़ते थे, इसलिए यह समझ में आता है कि वे ऐसे खंड को ग़लत समझते। संक्षेप में, वे इसे स्त्री की गुणात्मक हीनता के आधार पर समाज के हर भाग में स्त्रियों की सार्वभौमिक अधीनस्थता के रूप में पढ़ते थे। पुरुषों को शिक्षा देनी और अगुवाई करनी है, क्योंकि स्त्रियाँ ऐसा करने में असमर्थ हैं। इसलिए जब पूरकतावादी दावा करते हैं कि उनका दृष्टिकोण ऐतिहासिक दृष्टिकोण है, तो वे इस बात से अपनी अनभिज्ञता दिखाते हैं कि उनकी व्याख्या कितनी नई है। खंड को एक-एक वाक्यांश करके देखें, तो पूरकतावादी और (सामान्य) ऐतिहासिक दृष्टिकोण के बीच अन्तर यह है: "मैं अनुमति नहीं देता कि स्त्री शिक्षा दे।" पूरकतावादी इसे ऐसा मानते हैं कि पौलुस केवल बाइबलीय शिक्षा देने या मसीही पुरुषों को शिक्षा देने से मना कर रहा है। परन्तु ऐतिहासिक रूप से इसे सामान्यतः किसी भी प्रकार की शिक्षा के रूप में समझा जाता था। समाज में स्त्रियों को किसी को भी शिक्षा नहीं देनी चाहिए, पुरुषों को भी नहीं। "या पुरुष पर अधिकार अपने हाथ में ले।" पूरकतावादी अधिकतर कहते हैं कि इसका अर्थ वह पास्टरीय अगुवाई है जो केवल पुरुष प्राचीनों के लिए उपयुक्त है। परन्तु ऐतिहासिक रूप से इसे यों समझा जाता था कि स्त्रियों को उन पुरुषों से अधिकार "हड़पने" (या बलपूर्वक छीनने) से मना किया गया है, जिन्हें अकेले ही समाज में हर जगह अगुवाई करनी चाहिए, न कि केवल कलीसिया में। "स्त्री शिक्षा दे ... पुरुष को।" पूरकतावादी, प्रिस्किल्ला द्वारा अपुल्लोस को दी गई उचित शिक्षा के साथ इस खंड की अपनी व्याख्या का अटपटा मेल बैठाने का प्रयास करते हुए, इसका अर्थ यह लगाते हैं कि कोई स्त्री अनौपचारिक रूप से किसी अकेले पुरुष को सिखा सकती है, परन्तु पुरुषों को सामूहिक रूप से या औपचारिक रूप से नहीं। परन्तु ऐतिहासिक रूप से इसे यों समझा जाता था कि यह स्त्री को पुरुषों के किसी समूह को, और साथ ही किसी अकेले पुरुष को भी, सिखाने से रोकता है। "क्योंकि आदम पहले, उसके बाद हव्वा बनाई गई।" पूरकतावादी इसे हव्वा पर आदम के ऐसे अधिकार के रूप में देखते हैं जो केवल कलीसिया और मसीही विवाह में पुरुष की आत्मिक अगुवाई पर लागू होता है। परन्तु ऐतिहासिक रूप से इसे सृष्टि पर आधारित उस सार्वभौमिक नियम के रूप में

दीजिए।

बुरी तरह क्षतिग्रस्त एक कलीसिया

यह पत्री हमें नहीं लिखी गई थी, परन्तु हमारे लिए लिखी गई थी। निश्चय ही यह प्रेरित पवित्रशास्त्र है, और इसलिए इसमें सब कलीसियाओं के लिए कालातीत सत्य हैं, परन्तु इन सत्यों को उस अनोखी परिस्थिति के आधार पर सावधानी से खोदकर निकालना होगा, जिसे यह संबोधित कर रही थी। जब हम इस विशेष ऐतिहासिक परिस्थिति पर विचार नहीं करते और केवल यह मान लेते हैं कि ये शब्द हमें संबोधित कर रहे हैं, तो हम उनके अर्थ और उनके प्रयोग की ग़लत व्याख्या की ओर अधिक झुक जाते हैं। तो 2:11-15 में पौलुस किस परिस्थिति को संबोधित कर रहा होगा?

हमें बस अपने खंड को उससे पहले आने वाले सब पदों के प्रकाश में पढ़ना है। आरम्भिक नमस्कार के बाद पौलुस सीधे अपनी पत्री में उतरते हुए तीमुथियुस को आदेश देता है: "इफिसुस में ही रहो, ताकि तुम कुछ लोगों को आज्ञा दो कि वे आगे झूठी शिक्षा न दें और न कहानियों और अनन्त वंशावलियों में मन लगाएँ" (1:3-4)। फिर ये "कुछ लोग" पूरी पत्री में ध्यान में बने रहते हैं, जब पौलुस लिखता है कि "कुछ लोग" "शुद्ध मन और अच्छे विवेक और निष्कपट विश्वास" से "भटक गए हैं" और "व्यर्थ बकवाद की ओर मुड़ गए हैं" (1:5-6)। "हुमिनयुस और सिकन्दर" जैसे पुरुषों के "विश्वास रूपी जहाज़ डूब गए हैं।" ये पुरुष इतने भटक चुके हैं कि पौलुस ने उन्हें "शैतान को सौंप दिया है, कि वे निन्दा करना न सीखें" (1:19-20)।

झूठे शिक्षकों के इस वर्णन के तुरन्त बाद पौलुस कहता है, "तो मैं आग्रह करता हूँ ..." (2:1) – यहाँ "तो" का अर्थ है "इसलिए" – और फिर ये निर्देश देता है: कलीसिया के रूप में प्रार्थना के द्वारा मिशन की भावना को फिर से पाना (2:1-7); पुरुषों का क्रोध और विवाद से दूर रहना (2:8); स्त्रियों का दिखावटी और लुभाने वाले रूप से बचना (2:9-10); और एक स्त्री (एकवचन) का अधीनता के साथ सीखना (2:11), और किसी पुरुष को शिक्षा न देना और न उस पर अधिकार अपने हाथ में लेना (2:12)।

पौलुस की पत्रियों की व्याख्या करते समय हमें याद रखना चाहिए कि हम फ़ोन पर हो रही बातचीत का केवल एक पक्ष सुन रहे हैं, जिसमें पौलुस किसी और से बात कर रहा है, हम से नहीं। कभी-कभी हमें पत्री में ही मिलने वाले प्रमाणों का उपयोग करके अनुमान लगाना पड़ता है कि 1 तीमुथियुस 2 का हर निर्देश कलीसिया को कैसे पुनर्स्थापित करेगा और झूठे शिक्षकों के प्रभावों से कैसे निपटेगा। ऐसा करते हुए, उदाहरण के लिए, हम समझते हैं कि चूँकि झूठी शिक्षा से टूटी हुई कलीसिया मिशन की भावना खो सकती है, इसलिए प्रार्थना

समझा जाता था कि समाज के हर क्षेत्र में, कलीसिया सहित, पुरुष स्त्रियों पर शासन करें, क्योंकि स्त्री शासन के लिए अनुपयुक्त है। "और आदम बहकाया न गया, पर स्त्री बहकाने में आकर अपराधिनी हुई।" पूरकतावादी कहते हैं कि इसका अर्थ है शैतान द्वारा हव्वा पर आदम के अधिकार को उलटना और हव्वा का इस उलटफेर के आगे झुक जाना। परन्तु ऐतिहासिक रूप से इसे यों समझा जाता था कि स्त्री बौद्धिक और नैतिक रूप से धोखे और प्रलोभन में अधिक आसानी से पड़ती है। पूरकतावादी और ऐतिहासिक व्याख्याओं के बीच अन्तर के और अध्ययन के लिए देखें www.bit.ly/3Q4TWo4 और www.bit.ly/3xlOXIj। जो प्रश्न पूछा जाना चाहिए, वह यह है: जब तक हम यह ऐतिहासिक व्याख्या स्वीकार न करें कि स्त्री की गुणात्मक हीनता उसे किसी को भी शिक्षा देने या समाज में कहीं भी पुरुषों की अगुवाई करने के अयोग्य ठहराती है, तब तक हाल की व्याख्याओं में से (पूरकतावादी या परस्परतावादी) कौन-सी अधिक सही है? यह पुस्तक उस प्रश्न का मेरा उत्तर है।

के द्वारा उसे फिर से पाने वाला निर्देश समझ में आता है। विधर्म और फूट के कारण शायद पुरुष दूसरे पुरुषों पर, या बहकाई गई या अनादर करने वाली स्त्रियों पर क्रोध से भड़क उठते थे; इसीलिए पौलुस का यह निर्देश है कि पुरुष "बिना क्रोध और विवाद के" पवित्र हाथ उठाकर प्रार्थना करें। इसी प्रकार, विधर्म ने शायद किसी तरह, विशेषकर कुछ धनी स्त्रियों में, दिखावटी, घमंडी, न सीखने वाले और मनमाने रवैये और व्यवहार को बढ़ावा दिया था, ख़ास तौर पर पुरुषों के प्रति; इसीलिए स्त्रियों के लिए ये निर्देश हैं कि वे परमेश्वर के वचन से अधीनता के साथ सीखें, और पुरुषों के साथ अधिक आदरपूर्वक व्यवहार करें। मेरा कहना यह है कि पौलुस ऐसे निर्देश दे रहा है जो एक विशेष कठिन परिस्थिति से निपटते हैं, जिसके बारे में वह हम से अधिक जानता है, यद्यपि पत्री में कुछ प्रमाण हैं कि वह परिस्थिति क्या रही होगी। वरना केवल पुरुषों को ही प्रार्थना के लिए क्यों प्रोत्साहित किया जाता? और वरना केवल स्त्रियों से ही सीखने को क्यों कहा जाता?

इस बिन्दु पर 1 तीमुथियुस 1 से यह स्पष्ट है कि कुछ पुरुष बुरा व्यवहार कर रहे हैं, परन्तु 2:9-15 के बाहर हम कितने निश्चित हो सकते हैं कि स्त्रियाँ भी अनुचित आचरण कर रही हैं? 1 तीमुथियुस 5 इसका उत्तर देता है: कुछ स्त्रियों ने अपनी "कामुक इच्छाओं" के कारण अपना "मसीह के प्रति समर्पण" छोड़ दिया है (पद 11)। उनमें से बहुत-सी "आलसी होकर घर-घर फिरती हैं" और "दूसरों के काम में हाथ डालने वाली होकर बकबक करती और अनुचित बातें कहती हैं" (पद 13)। वे विरोधी को "बदनाम करने का अवसर" देती हैं (पद 14)। "कई तो बहककर शैतान के पीछे हो चुकी हैं" (पद 15) – यह विधर्म के आगे हार मान लेने का संकेत है।[227] पत्री में पौलुस के अन्तिम शब्द दिखाते हैं कि झूठी शिक्षा ही मूल समस्या है: "अशुद्ध बकवाद से और उन विरोधी बातों से दूर रहो जो झूठ-मूठ ज्ञान कहलाती हैं; कितने इस ज्ञान का अंगीकार करके विश्वास से भटक गए हैं" (6:20-21)। हम ठीक-ठीक नहीं जानते कि झूठी शिक्षा के कारण कुछ स्त्रियों का बुरा व्यवहार कैसे उत्पन्न हुआ, परन्तु एक निश्चित संबंध है, जो सबसे स्पष्ट रूप से इस बात में दिखता है कि पौलुस इफिसुस की इन स्त्रियों की तुलना हव्वा से करता है, जो स्वयं शैतान के द्वारा "बहकाई गई" थी।[228]

तो फिर, 1 तीमुथियुस 2:11-15 पर लिखने वाले अधिकांश पूरकतावादी विद्वानों में चौंकाने वाली बात यह है कि उनमें से कितने कम लोग यह स्वीकार करते हैं कि झूठी शिक्षा का प्रभाव पौलुस की पूरी पत्री की – इस खंड सहित – सबसे बड़ी चिन्ता है। उदाहरण के लिए, Kathy Keller पौलुस के ये शब्द उद्धृत करती है, "मैं तुम्हें ये बातें इसलिए लिखता हूँ कि यदि मेरे आने में देर हो, तो तुम जान लो कि परमेश्वर के घराने में लोगों को कैसा बर्ताव करना चाहिए," और निष्कर्ष निकालती है, "पूरी पत्री को ... कलीसिया स्थापित करने की पुस्तिका के रूप में देखा जा सकता है – परमेश्वर के घराने के सिद्धान्तों के अनुसार ... कलीसिया कैसे

227. तीमुथियुस को लिखी पौलुस की दोनों पत्रियों में शैतान के उल्लेख अधिकतर झूठी शिक्षा और उसके द्वारा बढ़ावा दिए जाने वाले भ्रष्ट जीवन से संबंधित हैं – देखें 1 तीमुथियुस 1:20; 2:14; 4:1; 2 तीमुथियुस 2:23-25।
228. 1 तीमुथियुस 2:14

स्थापित करें।"[229] यह सही नहीं है, जैसा Schreiner भी मानता है।[230] वह एक उपवाक्य – "यदि मेरे आने में देर हो" – को भी अनदेखा करती प्रतीत होती है, जो पत्री के हर मुख्य भाग में मिलने वाले दूसरे संकेतों के साथ, झूठे शिक्षकों द्वारा लूटी गई एक कलीसिया को पुनर्स्थापित करने के पौलुस के तत्काल प्रयासों को प्रकट करता है। Köstenberger और Grudem, यद्यपि यह मानते हैं कि पौलुस यह पत्री विधर्म और उसके प्रभावों का सामना करने के लिए लिखता है, विचित्र रूप से इस खंड को इस प्राथमिकता से एक विषयांतर मानते हैं[231] – मानो पौलुस अपने मुख्य बोझ और अपने पिछले विचार-क्रम से रुककर अब कुछ ऐसी स्त्रियों का सामना कर रहा हो, जो झूठी शिक्षा के बीच पुरुषों को सत्य सिखाने का प्रयास कर रही थीं। परन्तु केवल पहले और बाद के खंड ही नहीं, स्वयं पद 12 में भी ऐसे चिह्न हैं कि पौलुस एक ऐसी परिस्थिति को सुधार रहा है जिसमें कुछ स्त्रियाँ पाप कर रही थीं।

मैं अभी अनुमति नहीं देता

आइए पौलुस के शब्द epitrepō को देखें, जिसका अंग्रेज़ी में चार शब्दों के एक वाक्यांश से अनुवाद किया गया है, ताकि सुधारे जा रहे व्यवहार का वर्णन हो: "'I do not permit' (मैं अनुमति नहीं देता) [epitrepō] कि स्त्री शिक्षा दे या अधिकार अपने हाथ में ले ..."

पहले ध्यान दीजिए कि यह शब्द वर्तमान काल में है, जिससे यह मत काफ़ी संभव लगता है कि पौलुस यह निषेध इसी परिस्थिति के लिए दे रहा है। फिर भी Grudem ज़ोर देता है कि "यूनानी का बल" यह अर्थ देता है कि यह उन "आज्ञाओं में से है जो सब मसीहियों पर सब समयों के लिए लागू होती हैं।"[232] यह आग्रह अतिशयोक्तिपूर्ण है। जैसा उसके साथी पूरकतावादी विद्वान Douglas Moo कहता है: "जहाँ तक क्रिया के वर्तमान काल की बात है, उससे हम केवल यही निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि पौलुस लिखते समय इन निषेधों पर ज़ोर दे रहा था।"[233] केवल यह स्वीकारोक्ति ही उन सब घोषणाओं को कमज़ोर करने के लिए पर्याप्त है कि पौलुस कोई सार्वभौमिक आदेश जारी कर रहा है। चूँकि अंग्रेज़ी शब्द "I do not permit"

229. Kathy Keller, "Jesus, Gender and Justice" में। 1 तीमुथियुस 3:15।
230. 1 तीमुथियुस पर बहुत पुरानी टीकाएँ, जैसे J.N.D. Kelly की 1963 की और Donald Guthrie की 1957 की टीका, यही दृष्टिकोण अपनाती थीं, परन्तु जो समकालीन टीकाएँ मैंने पढ़ी हैं, वे स्वीकार करती हैं कि न केवल 1 तीमुथियुस का एक तिहाई भाग सीधे झूठे शिक्षकों/झूठी शिक्षा से निपटता है, बल्कि पत्री के बाकी दो तिहाई भाग पर भी इसकी छाया है। इसीलिए Tom Schreiner स्वीकार करता है: "1 तीमुथियुस को कलीसियाई व्यवस्था की पुस्तिका के रूप में वर्णित करना ... पत्री के उद्देश्य से ठीक-ठीक मेल नहीं खाता ... पौलुस उन स्त्रियों पर ध्यान केन्द्रित करता है जिन्हें झूठे शिक्षकों ने ठगा और बहकाया था (तुलना करें 1 तीमुथियुस 2:14; 2 तीमुथियुस 3:6-9)" (स्रोत: www.bit.ly/3BN3tYQ)। फिर भी, इस तथ्य के विरुद्ध कि 1 तीमुथियुस 2 झूठी शिक्षा से निपटता है, एक आम प्रतिवाद यह है कि पौलुस चाहता है कि "हर जगह" (NIV) या "हर स्थान में" (ESV) (पद 8) पुरुष एक विशेष ढंग से प्रार्थना करें। परन्तु 1 तीमुथियुस 1 के संदर्भ को देखते हुए, इसका अर्थ संभवतः हर वह स्थान है जहाँ इफिसुस के विश्वासी प्रार्थना के लिए इकट्ठे होते हैं – सबसे स्पष्ट रूप से इफिसुस के वे बहुत-से घर जिनमें कलीसियाएँ इकट्ठी होती हैं।
231. Köstenberger, "Women in The Church" में, पृ. 152-155, और Grudem, Evangelical Feminism and the Biblical Truth, पृ. 280-284। इसका श्रेय Andrew Bartlett को, "Men and Women in Christ" में (पृ. 390)।
232. Wayne Grudem, Evangelical Feminism and the Biblical Truth, पृ. 301
233. Douglas Moo, "Recovering Biblical Manhood and Womanhood" में, अध्याय 9।

(मैं अनुमति नहीं देता) यह आभास देते हैं कि कोई कालातीत, सार्वभौमिक आदेश दिया जा रहा है, इसलिए Moo स्वयं सुझाव देता है कि इसका बेहतर अनुवाद है: "I am not permitting ..." (मैं अभी अनुमति नहीं देता ...)।[234]

इसके अतिरिक्त, बाइबल में अन्य स्थानों पर इस शब्द के प्रयोग का अध्ययन इस बात की पुष्टि करता है कि यह संभवतः परिस्थिति-विशेष का निषेध है। पुराने नियम के यूनानी अनुवाद में epitrepō के सब प्रयोगों में, और नए नियम में जिन 17 दूसरे स्थानों पर इसका प्रयोग हुआ है उनमें से अधिकांश में, इसका अर्थ किसी विशेष परिस्थिति के लिए लिया गया निर्णय है।[235] Moo मानता है, "यह स्वीकार करना ही होगा कि पवित्रशास्त्र में यह क्रिया प्रायः सार्वभौमिक रूप से लागू होने वाली आज्ञाओं के लिए प्रयोग नहीं होती।"[236] यदि पौलुस सब जगह की सब कलीसियाओं के लिए कोई सार्वभौमिक आदर्श बताना चाहता, तो उसने बस यह क्यों नहीं लिखा, "स्त्रियाँ कभी शिक्षा न दें"? उदाहरण के लिए, वह कभी यह नहीं लिखता, "मैं अभी तुम्हें व्यभिचार करने की अनुमति नहीं देता।" नहीं, वह अधिक सीधे शब्दों में कहता: "व्यभिचार मत करो!" तो फिर वह यहाँ ऐसे अप्रत्याशित और नरम शब्दों का प्रयोग क्यों करता है?

यह सब कहने का अर्थ यह है: पौलुस इस निषेध को epitrepō शब्द से आरम्भ करता है, और यह तथ्य हमें यह मानने का कारण देता है कि पौलुस शायद एक स्थानीय परिस्थिति के बारे में बोल रहा है।

Authentein

पूरकतावादी व्याख्या का सार यह है कि पौलुस स्त्रियों से कह रहा है कि वे वह न करें जो केवल (कुछ) पुरुषों को करने की अनुमति होनी चाहिए: दूसरों को शिक्षा देना और उन पर पास्टरीय अधिकार चलाना। दूसरे शब्दों में, यहाँ जिस शिक्षा देने और अधिकार चलाने की बात है, वे परमेश्वर द्वारा ठहराई गई गतिविधियाँ हैं – बशर्ते सही व्यक्ति उन्हें कर रहा हो। परन्तु यह व्याख्या तब ढह जाती है, जब यह दिखाया जा सके कि पौलुस स्त्रियों को कुछ ऐसा करने से मना कर रहा है जो वह पुरुषों से भी नहीं करवाना चाहता। दूसरे ढंग से कहें, तो यदि इन दोनों गतिविधियों में से एक या दोनों पापपूर्ण सिद्ध हो जाएँ, तो पूरकतावादी व्याख्या ग़लत है।

तो बहस का विशेष विषय क्रिया "authentein करना" है। यह बहस अंग्रेज़ी के विभिन्न अनुवादों में दिखती है: "to exercise authority" (अधिकार चलाना; ESV) कोई वैध बात है, जबकि "to assume authority" (अधिकार अपने हाथ में लेना; NIV) एक नकारात्मक कार्य हो सकता है। उदाहरण के लिए,

234. "शब्द के यूनानी प्रयोग के प्रति अधिक विश्वासयोग्य अंग्रेज़ी अनुवाद है 'I am not permitting' (मैं अभी अनुमति नहीं देता), जो इफिसुस की एक समस्या के उत्तर में दिए गए एक नए, विशेष मामले से संबंधित निर्देश का संकेत देता है, जिसके पीछे कलीसियाई परम्परा का भार नहीं है।" Moo, 202

235. देखें Philip Payne, Man and Woman, One in Christ, पृ. 201-202। यह भी देखें https://biblehub.com/greek/strongs_2010.htm। केवल दो अपवाद हैं: 1 कुरिन्थियों 14:34 "उन्हें ... अनुमति नहीं" और मरकुस 10:4 "मूसा ने ... अनुमति दी।" पहले वाले पर मैं अध्याय 6 में विचार करता हूँ और इस निष्कर्ष पर पहुँचता हूँ कि सबसे अधिक संभावना यह है कि ये शब्द बाद में जोड़ा गया अंश (प्रक्षेप) थे, या वास्तव में पौलुस कुरिन्थुस की कलीसिया की एक बहुत विशेष परिस्थिति के लिए सलाह दे रहा था। दूसरे वाले के विषय में, मरकुस 10:5-12 में यीशु का उत्तर दिखाता है कि उन्होंने मूसा के आदेश को एक स्थायी आदर्श से अस्थायी विचलन के रूप में देखा।

236. स्रोत: https://bit.ly/3mExipX (पृ. 199)

यदि कोई अध्यापिका कक्षा में विद्यार्थियों को निर्देश देती है, तो वह "अधिकार चलाती है", जबकि यदि कोई विद्यार्थी पाठ को अपने नियंत्रण में लेने का प्रयास करता है, तो वह ग़लत ढंग से "अधिकार अपने हाथ में लेता है"। दूसरे अनुवादों में ये भी हैं: "to have dominion" (प्रभुता रखना; ASV), "to control" (नियंत्रित करना; CEB), "to domineer" (रौब जमाना; NEB), और "to lord it over" (किसी पर स्वामी बन बैठना; TLB)।

शब्द का अनुवाद करना इसलिए भी अधिक कठिन है कि authentein पूरी बाइबल में केवल एक बार प्रयोग हुआ शब्द है।[237] इसलिए हम यह नहीं देख सकते कि पौलुस ने, या किसी दूसरे बाइबल-लेखक ने, इस शब्द का प्रयोग और कहाँ और कैसे किया। यद्यपि प्राचीन यूनानी साहित्य में लेखकों ने इसका प्रयोग उन सदियों में किया जो सन् 62 ईस्वी में यहाँ पौलुस द्वारा इसके प्रयोग से पहले और बाद की थीं, फिर भी यह एक असाधारण रूप से दुर्लभ शब्द था। वास्तव में, पौलुस की सेवकाई से पहले के 100 वर्षों और बाद के 100 वर्षों में, बचे हुए प्राचीन साहित्य में इसके केवल पाँच उदाहरण हमारे पास हैं। तो फिर हम यह कैसे जानने की आशा कर सकते हैं कि इसकी अर्थ-छाया सकारात्मक है या नकारात्मक?

पूरकतावादी अपने सकारात्मक अनुवाद के दो कारण देते हैं। पहला, उनका दावा है कि didaskein (शिक्षा देना) शब्द सकारात्मक है, और इसलिए authentein का भी सकारात्मक अर्थ होना आवश्यक है। Köstenberger तर्क देता है कि प्राचीन यूनानी साहित्य में साथ-साथ आने वाली दो क्रियार्थक संज्ञाओं के उदाहरणों के आधार पर, didaskein और authentein दोनों क्रियाएँ या तो दोनों सकारात्मक हैं या दोनों नकारात्मक। पूरकतावादी दावा करते हैं कि didaskein हमेशा एक सकारात्मक शब्द है। उदाहरण के लिए, Schreiner दावा करता है कि तीमुथियुस और तीतुस को लिखी पौलुस की पास्टरीय पत्रियों में didaskein का अर्थ हमेशा "[एकत्र, सार्वजनिक आराधना] में अधिकारपूर्ण परम्परा का संचार है, न कि अनौपचारिक बातचीत।"[238] वे कहते हैं कि एकमात्र अपवाद तब है, जब इसे झूठी शिक्षा बताने के लिए अतिरिक्त नकारात्मक शब्दों का प्रयोग किया गया हो। इसलिए वे निष्कर्ष निकालते हैं कि 1 तीमुथियुस 2:12 में authentein का सकारात्मक अर्थ इसके didaskein के साथ जुड़े होने से निकलता है।

दूसरा, Henry Baldwin जैसे पूरकतावादी भाषाविद तर्क देते हैं कि प्राचीन साहित्य में यह शब्द बहुत आमतौर पर सकारात्मक अर्थ में प्रयोग होता है, जबकि Al Wolters तर्क देता है कि इसका नकारात्मक प्रयोग लगभग कभी नहीं हुआ।

चूँकि 1 तीमुथियुस 2:12 की व्याख्या में इसका अर्थ इतना निर्णायक सिद्ध हुआ है, हमें यह स्वीकार करना होगा कि इसके अर्थ पर हम शायद कभी विद्वानों की सर्वसम्मति तक न पहुँचें। हाल के दशकों में इस प्राचीन शब्द के विद्वत्तापूर्ण अध्ययन पर नज़र रखते हुए, मैं देखता हूँ कि विश्वस्तरीय विद्वान एक दूसरे के दावों का खंडन करते रहते हैं। फिर भी, इस शब्द पर हाल की विद्वत्तापूर्ण रचनाओं को कई दिनों तक पढ़ने और दोबारा पढ़ने के बाद, मैं इस निष्कर्ष पर पहुँचता हूँ कि प्राचीन साहित्य में यह शब्द कभी सकारात्मक अर्थ में प्रयोग होता है, और कभी नकारात्मक अर्थ में। इतना कहने के बाद, यहाँ आठ कारण हैं कि इस पद में "अधिकार

237. तकनीकी शब्द यह है कि यह एक hapax legomenon है (ऐसा शब्द जो केवल एक बार आता है)।
238. Women in the Church, 3rd Edition, पृ. 175

चलाना" संभवतः सही नहीं है और इस शब्द का अधिक नकारात्मक अर्थ-छाया वाला अनुवाद अधिक सटीक है:

पहला, इस खंड में "शिक्षा देना" (didaskein) बहुत संभव है कि एक नकारात्मक प्रकार की शिक्षा हो, और इसका अर्थ न सकारात्मक शिक्षा हो और न औपचारिक। Schreiner बाइबल के प्रमाणों से आगे बढ़कर यह तर्क देता है कि तीमुथियुस और तीतुस को लिखी पौलुस की पत्रियों में यह हमेशा एक सकारात्मक कार्य है, विशेष रूप से और औपचारिक रूप से साप्ताहिक आराधना-सभाओं में किया जाने वाला। पास्टरीय पत्रियों में यह शब्द आवश्यक रूप से एकत्र आराधना में दी जाने वाली अधिकारपूर्ण, धर्मसिद्धान्त संबंधी शिक्षा तक सीमित नहीं है, और कभी-कभी इसे पापपूर्ण प्रकार का didaskein माना गया है।[239]

जो भी हो, didaskein के लिए एक स्थिर अर्थ (औपचारिक, सकारात्मक शिक्षा) का और authentein के लिए संदर्भ से निर्धारित अर्थ का तर्क देना असंगत है – वास्तव में, व्याख्या का सबसे मूल सिद्धान्त यह है कि संदर्भ को दोनों शब्दों का अर्थ प्रकट करने दिया जाए।[240] उदाहरण के लिए, जब कलीसिया में कुछ लोगों को didaskein से मना किया जाता है, तो हम मान सकते हैं कि इसका संबंध उन शिक्षकों में या उनकी

239. "शिक्षा देना" शब्द का प्रयोग अलग-अलग खंडों में अलग-अलग ढंग से हुआ है। Schreiner के पास यह दावा करने के लिए कोई ठोस तर्क नहीं है कि पास्टरीय पत्रियों में didaskein शब्द को हमेशा आराधना-सभा में आत्मिक अगुवों द्वारा दिए जाने वाले औपचारिक धर्मसिद्धान्त संबंधी प्रचार के रूप में पढ़ा जाना चाहिए, या कि इसका अर्थ हमेशा आवश्यक रूप से स्वस्थ विषय-वस्तु की शिक्षा ही है। यद्यपि पास्टरीय पत्रियों के अन्य स्थानों पर didaskein का अर्थ वही हो सकता है जो Schreiner कहता है, परन्तु कभी-कभी इसके दूसरे अर्थ भी होते हैं: Schreiner के विपरीत, कभी-कभी इसका अर्थ एकत्र आराधना के बाहर अनौपचारिक बातचीत होता है। 1 तीमुथियुस 2:12 में didaskein का प्रयोग करके पौलुस का अर्थ कुछ ऐसा हो सकता है: दूसरों से इस प्रकार बात करना कि उनके विश्वास या उनके जीने के ढंग को आकार मिले। इसमें अनौपचारिक बातचीत भी शामिल होगी और अधिक औपचारिक प्रचार भी। यदि पूरकतावादी मानदंडों के अनुसार स्त्रियाँ पुरुषों को शिक्षा नहीं दे सकतीं, और साप्ताहिक आराधना में हमेशा पुरुष उपस्थित रहते हैं, तो स्त्रियाँ दूसरी स्त्रियों को कब और कहाँ शिक्षा दें (तीतुस 2:3-5)? और क्या कोई "विरोधियों" को केवल आराधना-सभाओं में ही शिक्षा और निर्देश दे सकता है (2 तीमुथियुस 2:24-25)? यह कैसे कहा जा सकता है कि एकत्र आराधना में केवल एक व्यक्ति ("एक स्त्री") केवल एक दूसरे व्यक्ति ("एक पुरुष") को शिक्षा देने का प्रयास कर रहा है (1 तीमुथियुस 2:12)? यदि केवल एकत्र आराधना की शिक्षा ही ध्यान में हो, तो शिक्षा का ऐसा प्रवाह कैसे हो सकता है, जिसमें एक सिखाया गया व्यक्ति दूसरे लोगों को सिखाता है, जो फिर और लोगों को सिखाएँगे (2 तीमुथियुस 2:2)? और उस शिक्षा के बारे में क्या, जो पूरे-पूरे घरानों को प्रभावित कर रही थी (तीतुस 1:10-11)? साथ ही, Schreiner के विपरीत, इसका अर्थ पापपूर्ण प्रकार की शिक्षा भी हो सकता है। उदाहरण के लिए, पौलुस ठीक didaskein शब्द का प्रयोग उन लोगों के मौखिक कार्यों का वर्णन करने के लिए करता है जो अधिकारपूर्ण प्रेरितीय परम्परा नहीं, बल्कि विधर्मी विषय-वस्तु बाँट रहे हैं (तीतुस 1:11)।

240. Didaskein अपने आप में न नकारात्मक है, न सकारात्मक। हर स्थिति में इसका अर्थ संदर्भ से निर्धारित होता है – उदाहरण के लिए, कोई घमंड या दबाव के साथ शिक्षा दे सकता है, या कोई ग़लत शिक्षा दे सकता है। निष्कर्ष यह है कि पूरकतावादी विद्वानों की तरह यह मानने के बजाय कि यह स्वभाव से सकारात्मक है और इसलिए साथ आने वाले शब्द authentein का अर्थ इसी से तय होना चाहिए, अधिक समझदारी यह है कि साथ आने वाले शब्दों और बड़े संदर्भ को ही इसका अर्थ तय करने दिया जाए। जो पूरकतावादी विद्वान कहते हैं कि didaskein "हमेशा सकारात्मक है, जब तक कोई ऐसा विशेषक शब्द न हो जो बताए कि झूठी शिक्षा की बात है," वे व्याख्या का एक बनावटी नियम गढ़ते हैं – नहीं, अर्थ हमेशा संदर्भ से तय होता है।

शिक्षा में किसी गंभीर दोष से है।[241] यद्यपि शिक्षा के निषिद्ध रूपों के दूसरे उदाहरण भी हैं,[242] पास्टरीय पत्रियों के उस दूसरे स्थान पर विचार कीजिए जहाँ didaskein को निषिद्ध किया गया है, और जो इस प्रकार 1 तीमुथियुस 2:12 का एक निकट समानांतर है। पौलुस तीतुस से कहता है कि एक समूह, जिसे वह "ख़तना किए हुए लोगों का दल" कहता है, और जिसका वर्णन वह "व्यर्थ बकवाद और छल से भरे लोग" के रूप में करता है, "उनका मुँह बन्द करना चाहिए, क्योंकि वे अनुचित बातें सिखाकर घर के घर बिगाड़ रहे हैं।"[243] पौलुस के आकलन के अनुसार, इन शिक्षकों में भी और उनकी शिक्षा में भी कुछ ग़लत था – इसलिए उन्हें और उनके इस प्रकार के बोलने को रोकना आवश्यक था। इसी प्रकार, जैसे-जैसे 1 तीमुथियुस 2 के खंड का हमारा अध्ययन आगे बढ़ेगा, हम पाएँगे कि कलीसिया में स्त्रियों के एक समूह में स्पष्ट रूप से कुछ अधार्मिक था, विशेष रूप से पुरुषों के प्रति उनका रवैया और उनके कार्य, जिनके कारण पौलुस का उस ढंग को सुधारना उचित था, जिससे वे पुरुषों से इस बारे में बात कर रही थीं कि क्या विश्वास करें और कैसे जिएँ।[244]

दूसरा, इस बात पर विद्वानों में कोई सहमति नहीं है कि प्राचीन काल में authentein शब्द हमेशा किसी सकारात्मक कार्य के लिए प्रयोग होता था। 1 तीमुथियुस 2:12 के अर्थ पर पूरकतावादियों की मुख्य पुस्तक Women in the Church के पहले और दूसरे संस्करण में इस शब्द के अर्थ पर अध्याय लिखने का काम Baldwin को सौंपा गया था, और उसने यह निष्कर्ष निकाला कि संदर्भ के अनुसार इसका अर्थ "शासन करना या राज करना, या नियंत्रण करना या प्रभुत्व जमाना, या स्वतंत्र रूप से कार्य करना, या उकसाना" हो सकता है।[245] 1 तीमुथियुस 2:12 के संबंध में वह आगे कहता है कि "नियंत्रण करने या प्रभुत्व जमाने के अर्थ ... पूरी तरह संभव हैं," और "किसी के ऊपर अधिकार अपने हाथ में ले लेना" "उपयुक्त हो सकता है।" दिलचस्प बात यह है कि तीसरे संस्करण से उसका अध्याय अब हटा दिया गया है और उसकी जगह Wolters का काम रखा गया है, जो दावा करता है कि authentein का अर्थ लगभग कभी भी नकारात्मक नहीं होता[246] – एक ऐसा निष्कर्ष जो पूरकतावादी पसंद का कहीं अधिक समर्थन करता है। फिर

241. देखें मत्ती 5:19a, तीतुस 1:11 और प्रकाशितवाक्य 2:14, 20, जहाँ इसका प्रयोग नकारात्मक संदर्भ में हुआ है।
242. विशेषकर उन कार्यों के संदर्भ में, जिन्हें यीशु या प्रेरित मना करते हैं, "शिक्षा देना" शब्द के साथ आने वाली कोई नकारात्मक क्रिया हमें यह मानने की दिशा दे सकती है कि यहाँ पापपूर्ण प्रकार की शिक्षा की बात है। उदाहरण के लिए, प्रकाशितवाक्य 2:20 में यीशु थुआतीरा की कलीसिया को इस बात के लिए डाँटते हैं कि उसने कलीसिया में इज़ेबेल जैसी एक स्त्री को उनके दासों को "सिखाने" (didaskein) "और भरमाने" (kai plana) दिया। यदि थुआतीरा के लोगों ने एक स्त्री की पापपूर्ण शिक्षा को सहन किया है, तो पौलुस इफिसुस की कलीसिया में ऐसा नहीं करेगा – "मैं अभी अनुमति नहीं देता ..." परन्तु ध्यान देने योग्य निर्णायक बात यह है कि दोनों स्थानों पर स्त्रियों की केवल पापपूर्ण प्रकार की शिक्षा पर ही रोक लगानी है। सुधार का संदर्भ और साथ आने वाली क्रिया "भरमाना" दिखाते हैं कि यीशु थुआतीरा की उस स्त्री को अच्छी शिक्षा से नहीं, बल्कि छलपूर्ण और विधर्मी प्रकार की शिक्षा से मना करते हैं। इसी प्रकार, सुधार का संदर्भ और साथ आने वाली क्रिया authentein (जिसका अर्थ "रौब जमाना" हो सकता है) दिखाते हैं कि पौलुस इफिसुस की स्त्रियों को अच्छी शिक्षा से नहीं, बल्कि अनादरपूर्ण और आक्रामक प्रकार की शिक्षा से मना कर रहा था।
243. तीतुस 1:10-11
244. वास्तव में यह दिखाया जा सकता है कि तीतुस द्वारा चुप कराए जाने वाले लोगों के बारे में पौलुस की चिन्ता वाले तीनों विचार (अधीनता न मानना, अनुपयोगी विषय-वस्तु, छल) 1 तीमुथियुस 2:12-14 में सुधारी जा रही स्त्रियों के बारे में उसकी चिन्ताओं से संबंधित हो सकते हैं।
245. Grudem, Evangelical Feminism, परिशिष्ट 7
246. Albert Wolters, "A Semantic Study of Αὐθέντης and its Derivatives," Journal for Biblical Manhood and Womanhood 1.11 (Spring 2006): pp. 44-65, 45.

भी Schreiner मानता है कि यह शब्द कभी-कभी नकारात्मक अर्थ में भी प्रयोग हो सकता है।[247] टॉलेमी (Ptolemy) अपनी पुस्तक Tetrabiblos (127–148 ई.) में इस शब्द का प्रयोग एक ग्रह के दूसरे ग्रह को नियंत्रित करने के लिए करता है – इसमें एक निर्विवाद नकारात्मक झलक है: जिन विद्वानों को मैंने पढ़ा है, उनमें से अधिकांश, Baldwin और Grudem समेत, यहाँ इसका अनुवाद "प्रभुत्व जमाना" करते हैं।[248]

यह सच है कि कॉन्स्टेंटाइन के बाद के युग में (चौथी शताब्दी से आगे) कलीसिया अक्सर authentein शब्द को सकारात्मक अर्थ में प्रयोग करने लगी, परन्तु इतनी शताब्दियों बाद के authentein के अर्थ इस चर्चा के लिए पूरी तरह प्रासंगिक नहीं हैं।[249] वास्तव में Baldwin और Wolters के अध्ययनों की एक समस्या (जैसी kephalē पर Grudem के शब्द-अध्ययनों की भी है) यह है कि जिन उदाहरणों की जाँच की गई है, उनमें से लगभग सभी नए नियम के काल के सदियों बाद के हैं, और इसलिए यह आँकने में उनका उपयोग सीमित है कि जब 1 तीमुथियुस लिखी गई, तब इस शब्द का अर्थ क्या था।[250]

Philip Payne इस शब्द के ऐतिहासिक विकास के बारे में अपने निष्कर्षों का सार इस प्रकार देता है: "authentein का एकमात्र अर्थ जो 1 तीमुथियुस 2:12 में ठीक बैठता है और जिसके बारे में यह भी सिद्ध है कि वह पौलुस के समय से पहले लिखा गया था, वह है 'अधिकार अपने हाथ में ले लेना'। 'प्रभुत्व जमाना' अर्थ पौलुस के समय के कुछ ही बाद दिखाई देता है, जबकि 'अधिकार चलाना' एक ऐसा अर्थ है जिसकी पुष्टि बहुत बाद में ही हो पाती है।"[251] Payne कहता है कि इस अर्थ के पहले पुष्ट उदाहरण चौथी शताब्दी में, कॉन्स्टेंटाइन के बाद के युग में मिलते हैं। फिर भी इस शब्द का नकारात्मक प्रयोग भी जारी रहा –

247. "Two Views on Women in Ministry" में Schreiner कहता है, "यह निश्चय ही संभव है कि विशेष संदर्भों में इस शब्द में एक नकारात्मक झलक हो।"
248. टॉलेमी के पाठ में इस शब्द का अनुवाद "gain mastery" (स्वामित्व प्राप्त करना) या "assume authority" (अधिकार अपने हाथ में ले लेना) करने में Wolters अकेला खड़ा है। फिर भी ऐसा करके वह उस नकारात्मक झलक को स्वीकार करता है जिसे Baldwin और Grudem इसका अनुवाद "dominate" (प्रभुत्व जमाना) करके पहचानते हैं। परन्तु Wolters इस बात को बहुत अधिक महत्व देता है कि टॉलेमी की क्रिया अनिश्चित भूतकाल (aorist) में है, और इसलिए वह केवल अब किसी पर हावी होने के आरंभ को दर्शाती है। पर वाक्य का संदर्भ ही इसके अर्थ का असली निर्णायक है: जैसा Wolters स्वयं दिखाता है, authentein का प्रयोग शनि द्वारा मनुष्य के प्राण पर "पूर्ण ... नियंत्रण कर लेने" और दूसरे ग्रहों से मनुष्यों को देह-प्रेमी "बनवाने" के समानांतर हुआ है। यद्यपि अनिश्चित भूतकाल "आरंभसूचक" (ingressive, अर्थात किसी कार्य का आरंभ) पक्ष को पकड़ सकता है, जैसे "assume authority" में, इसका अर्थ यह नहीं कि वर्तमान काल द्वारा सूचित चलता रहने वाला कार्य – यानी जिस पर कर्ता ने पहले नियंत्रण कर लिया था उस पर नियंत्रण बनाए रखना – अब तटस्थ या सकारात्मक कार्य बन जाता है। साथ ही, इस शब्द के इतने कम प्राचीन नमूने होने पर, और जबकि Wolters authentein के संज्ञा-रूप के अर्थ को इस शब्द के अपने अध्ययन में शामिल करने को तैयार है, यह मनमाने ढंग से उस अर्थ-झलक को नकारना लगता है जो इस शब्द के कहीं अधिक निकट के सजातीय रूप में है, और जिसका प्रयोग पौलुस के प्रयोग के समय के बहुत निकट हुआ। जहाँ तक मैं जानता हूँ, किसी भी मत का कोई दूसरा विद्वान authentein के विभिन्न प्राचीन नमूनों की अपनी व्याख्या में अनिश्चित भूतकाल और वर्तमान काल के बीच अर्थ की यह दूरी पैदा करने का प्रयास नहीं करता।
249. विशेष रूप से जब हम विचार करें कि अपने अस्तित्व की पहली कुछ शताब्दियों में ही कलीसिया, अरस्तू के स्त्री-द्वेष से प्रभावित होकर, 1 तीमुथियुस 2:12-14 को हव्वा की हीनता के आधार पर एक ऐसा व्यापक निषेध मानने लगी कि स्त्रियाँ किसी भी क्षेत्र में कभी पुरुषों की अगुवाई न करें। इसलिए संभव है कि कलीसिया में बहुत से लोग यह मानने लगे कि authentein का अर्थ अगुवाई का सकारात्मक प्रयोग है – इससे चौथी शताब्दी के कलीसियाई लेखों के उन दो स्थानों पर भी प्रकाश पड़ता है जहाँ परमेश्वर के विषय में कहा गया है कि वे प्रभु के रूप में authentein करते हैं।
250. Wolters इस समस्या के विषय में ईमानदार है: "'अधिकार चलाना' (exercise authority) अर्थ मुख्य रूप से इस क्रिया के बाद के प्रयोग पर आधारित है। ... खेद की बात है कि युग के मोड़ के आसपास के authentes के अधिक प्रमाण उपलब्ध नहीं हैं।"
251. Philip Payne, Man and Woman, One in Christ, अध्याय 20

कलीसियाई पिता यूहन्ना क्रिसोस्टम (John Chrysostom) ने पतियों को अपनी पत्नियों पर authentein करने से मना किया।[252]

चूँकि शब्दों के अर्थ समय के साथ बदलते हैं, इसलिए हमें सबसे निकट के समय-काल में इसका प्रयोग खोजना चाहिए। इसलिए पौलुस के समय से पहले के इस शब्द के जो दो पुष्ट प्रयोग हमारे पास हैं, वे हमारे अध्ययन के लिए सबसे महत्त्वपूर्ण हैं, क्योंकि वे पौलुस के समय की समझ को सबसे अच्छी तरह पकड़ते हैं। हमारे पास जो सबसे पहला प्रयोग है, वह 27 ई.पू. की एक apologia (सफ़ाई-पत्र) में है।[253] इसका अनुवाद करना बहुत कठिन माना जाता है, पर ऐसा लगता है कि इसमें त्रिफ़ोन (Tryphon) नाम के एक व्यक्ति की बात है, जो अपने भाई अस्क्लेपियादेस (Asklepiades) को एक पत्र में समझाता है कि उसने अन्तिलोकस (Antilochus) पर कैसे authentein किया था, जो शायद अस्क्लेपियादेस की प्रजा या उसका दास था। त्रिफ़ोन और अन्तिलोकस एक नाव पर थे, और जब अन्तिलोकस ने मल्लाह को किराया देने से इनकार किया, तो त्रिफ़ोन ने उस पर authentein करके उससे किराया दिलवाया। दूसरे शब्दों में, उसने उसे किराया देने के लिए विवश किया।[254] आधुनिक कानों को यह सभ्य व्यवहार लग सकता है, पर उस संस्कृति में किसी दूसरे की प्रजा को आदेश देना अस्वीकार्य था, ठीक वैसे ही जैसे आज किसी दूसरे के बच्चे को आदेश देना अस्वीकार्य है – इसीलिए त्रिफ़ोन को सफ़ाई देने वाला पत्र लिखना पड़ा। यहाँ authentein का एक अर्थ तो हो ही नहीं सकता, और वह है "अधिकार चलाना", क्योंकि यह पत्र यह समझाने का प्रयास है कि उसने वह काम अपने ज़िम्मे क्यों ले लिया जिसे करने का अधिकार स्पष्ट रूप से उसके पास नहीं था। इसलिए यह दावा भ्रामक है कि प्राचीन काल में यह शब्द "अधिकार चलाना" बताने के लिए "हमेशा सकारात्मक अर्थ में प्रयोग होता था"।[255]

तीसरा, जब authentein के घटक भागों पर विचार किया जाए, तो इसे एक नकारात्मक कार्य समझा जा सकता है। यद्यपि किसी शब्द के रूपिम (morphemes) उसका अर्थ तय करने का सबसे अच्छा तरीका नहीं हैं, फिर भी जब सहमति कम हो, जैसा कि यहाँ है, तो यह एक सार्थक अभ्यास है।[256] इस मामले में authentein शब्द के पहले भाग ("aut") का अर्थ है स्वयं, और बाइबल के शब्दों में इसका प्रयोग

252. John Chrysostom, Hom. Col. P. 27–31.

253. Papyrus BGU 1208. देखें www.bit.ly/3BKHl0Q। मैं दूसरे सबसे पुराने प्रयोग का उल्लेख नहीं करूँगा, क्योंकि उसका अर्थ 1 तीमुथियुस 2:12 वाले अर्थ से बिल्कुल भिन्न प्रतीत होता है। व्याकरणाचार्य अरिस्टोनिकस (Aristonicus) अपनी एक रचना में होमर के इलियड के एक अंश पर टिप्पणी करते हुए उस भाषण के "authentein" (अर्थात "रचयिता" या "प्रवर्तक") की बात करता है।

254. उन विद्वानों के उत्तर में, जो दावा करते हैं कि अन्तिलोकस आरंभ से ही वास्तव में त्रिफ़ोन के वैध अधिकार के अधीन था: यह समझना कठिन है कि लज्जा और सम्मान की संस्कृति में त्रिफ़ोन अपने पत्र का इतना बड़ा भाग अपने कार्य के बचाव में क्यों और कैसे लगाता – उसके अपने कार्य उसकी कमज़ोरी और अपमान को प्रकट करते, क्योंकि उसका अपने सेवक या दास पर नियंत्रण नहीं था, और मल्लाह के अपमान के लिए वह स्वयं ज़िम्मेदार होता।

255. Two Views of Ministry (पृ. 108) में Schreiner कहता है कि "H. Scott Baldwin और Al Wolters के हाल के अध्ययन दिखाते हैं कि यह शब्द अधिकार के सकारात्मक प्रयोग को दर्शाता है।" Jamin Hübner का अध्ययन पढ़ें कि पूरकतावादी विद्वान अपने ही शब्द-अध्ययनों की ग़लत व्याख्या कैसे करते हैं: "कम से कम, यह सब दिखाता है कि पूरकतावादी इस बारे में स्पष्ट रूप से उलझन में हैं कि authenteō के पूरकतावादी (और दूसरे) अध्ययनों ने क्या दिखाया है।" देखें www.bit.ly/3EKqWM8 (पृ. 17)

256. D.A. Carson "Exegetical Fallacies" में यही कहता है: यद्यपि व्युत्पत्ति-शास्त्र "अर्थ पहचानने का कुछ हद तक 'भद्दा औज़ार'" है, फिर भी यह उपयोगी है, "विशेषकर hapax legomena (केवल एक बार आने वाले शब्दों) के अर्थ समझने के प्रयासों में।" (पृ. 33)

अधिकतर ऐसे कार्यों के लिए होता है जो स्वयं की ओर निर्देशित या स्वयं पर केंद्रित होते हैं।[257] यदि यह दिखाया भी जा सके कि authentein गैर-मसीही शासकों द्वारा शक्ति का सकारात्मक प्रयोग था, तब भी यह कहीं अधिक संभव है कि पौलुस ने – जो अपने बारे में यह कहना पसंद करता था कि वह दूसरों पर प्रभुता नहीं जताता और मसीह के कारण सबका सेवक है[258] – यह शब्द, जो हाल ही में यूनानी भाषा में आया था, अधिकार जताने वाले ऐसे पापपूर्ण व्यवहार का वर्णन करने के लिए चुना जिसमें घमंड (परमेश्वर की ओर नहीं, स्वयं की ओर निर्देशित) और/या स्वार्थ (दूसरों पर नहीं, स्वयं पर केंद्रित) की झलक थी।

यदि हम Wolters का यह दावा मान भी लें कि इस शब्द का अर्थ का स्वामी होना है, तब भी यह सकारात्मक कार्य है या नकारात्मक, यह हर मामले में इस पर निर्भर करता है कि स्वामी कौन है। यदि परमेश्वर, कोई प्राचीन राजा या कोई प्राचीन दास-स्वामी अपने लोगों का "स्वामी" बनकर उन पर शासन करता है, तो यह ठीक हो सकता है, पर यीशु के किसी भी अनुयायी के लिए – चाहे वह पास्टर ही क्यों न हो – यीशु के किसी दूसरे अनुयायी का प्रभु या स्वामी बनने का प्रयास करना सामान्यतः वर्जित है।

चौथा, पूरा अध्याय सुधारात्मक है। भाषाविद् समझाते हैं कि यदि कोई शब्द कभी सकारात्मक और कभी नकारात्मक अर्थ में प्रयोग हो सकता है, तो संदर्भ तय करता है कि क्या अभिप्रेत है। झूठे शिक्षकों द्वारा उजाड़ी गई एक कलीसिया को फिर से सुधारने के संदर्भ में – जिसे 1 तीमुथियुस 1 स्पष्ट रूप से स्थापित करता है – यह संभव है कि पौलुस अध्याय 2 में भी ग़लत व्यवहारों को सुधारता जा रहा है।

अपनी पिछली आज्ञाओं में पौलुस इफिसुस के उन पुरुषों के विशिष्ट, पापपूर्ण कार्यों को सुधारता है जो क्रोधी, विवादी और प्रार्थनाहीन हैं और जिनके हाथ अपवित्र हैं (पद 8), और इफिसुस की उन स्त्रियों के भी, जो सजे-धजे केश-विन्यास और महँगे कपड़ों के साथ मर्यादा खो बैठी हैं, जिनमें भले कामों की कमी है, और जिन्हें व्यवधान डालना बंद करके फिर से अधीन होकर शिक्षा ग्रहण करनी चाहिए (पद 9-11)। यह बात कि पौलुस इन आज्ञाओं में एक बार में केवल एक ही लिंग को संबोधित करता है, इस बात का प्रमाण है कि वह इस विशिष्ट स्थिति में उनकी अपनी-अपनी विफलताओं को अलग करके सामने रखता है। इस अर्थ में किसी पुरुष का किसी स्त्री पर authentein करना उतना ही अस्वीकार्य है जितना उसका दिखावटी कपड़े पहनना, या किसी स्त्री का प्रार्थनाहीन, क्रोधी या झगड़ालू होना।

साथ ही, authentein की नकारात्मक झलक वाली समझ तब अच्छी तरह बैठती है जब हम याद रखें कि पद 11 की पिछली आज्ञा उस बात का विपरीत है जिसे पौलुस पद 12 में मना कर रहा है। पौलुस चाहता है कि इफिसुस की ये स्त्रियाँ बैतनिय्याह की मरियम की तरह, जो कभी यीशु के चरणों में बैठी थी, चुपचाप (यूनानी शब्द hesychia है, जिसका अर्थ यहाँ शान्ति से है) और अधीनता के साथ सीखें (पद 11), और अपने आप को आगे रखते हुए या रौब जमाते हुए शिक्षा न दें (पद 12a),[259] क्योंकि उससे ठीक उस

257. जैसे authadēs = "आत्म-संतुष्ट", authairetos = "अपनी इच्छा से", autarkeia = "आत्मनिर्भरता", autarkēs = "आत्मनिर्भर", autokatakritos = "स्वयं दोषी ठहराया हुआ", autocheir = "अपने ही हाथ से", aucheō = "मैं घमंड करता हूँ।" स्रोत: www.bit.ly/3EKqWM8 (पृ. 18)
258. देखें 2 कुरिन्थियों 4:5।
259. संयोजक "de", यद्यपि अधिकांश अनुवादों में दिखाई नहीं देता, दोनों वाक्यों को जोड़ता है और पद 11 और 12 के बीच विचार-प्रवाह को जोड़े रखता है। इसका अर्थ "परन्तु" की अपेक्षा "और" होने की अधिक संभावना है – विशेषकर इसलिए कि ठीक इसी पद में पौलुस "परन्तु" कहने के लिए "alla" का प्रयोग करता है।

"चुप्पी" (फिर से hesychia) का विपरीत ही होगा (पद 12b)।[260]

पाँचवाँ, पद 12 एक निषेध है। पद 12 की शब्द-रचना भी एक नकारात्मक अर्थ की ओर संकेत करती है। यदि कोई "एक स्त्री" के स्थान पर व्यक्ति A रखे, और "एक पुरुष" के स्थान पर व्यक्ति B, और didaskein के लिए अक्षर x और authentein के लिए अक्षर y, तो वाक्य इस प्रकार पढ़ा जाएगा: "मैं व्यक्ति A को न x करने की अनुमति देता हूँ, न व्यक्ति B पर y करने की।"[261] केवल इसे पढ़कर ही कोई यह निष्कर्ष निकालेगा कि x और y संभवतः नकारात्मक कार्य हैं। इस प्रकार संदर्भ अर्थ बनाता है – भले ही कोई शब्द कहीं और सकारात्मक अर्थ में प्रयोग हो सकता हो, इस संदर्भ में वह संभवतः नकारात्मक होगा।[262] आश्चर्य की बात है कि Wolters का अध्ययन इस बात पर विचार ही नहीं करता कि प्राचीन साहित्य में इस शब्द के सभी आरंभिक प्रयोगों में से केवल पौलुस की पत्री में ही यह किसी निषेध के संदर्भ में प्रयोग हुआ है।

इसके अतिरिक्त, Wolters पौलुस का अनुवाद ऐसे करता है मानो वह स्त्री को "पुरुष का स्वामी" होने से मना करता हो – पर यह पौलुस की बाद की उस आज्ञा से मेल नहीं खाता जिसमें वह दासों से अपने स्वामियों का आदर करने को कहता है[263] (और हम जानते हैं कि बहुत से दास पुरुष थे, और बहुत से स्वामी स्त्रियाँ थीं)। किसी घराने में पुरुष दासों की संभावित उपस्थिति को देखते हुए, पौलुस कुछ स्त्रियों को पुरुषों की स्वामिनी (oikodespotein) होने का निर्देश देता है।[264]

छठा, जब हम इस शब्द के प्राचीन प्रयोग की खोज को बढ़ाकर उसमें संज्ञा-रूप को भी शामिल करते हैं (authentein संज्ञा authentas का क्रिया-रूप है), तो हम पाते हैं कि इसके नकारात्मक संबंध निर्विवाद हैं। संज्ञा के प्राचीन प्रयोग में सबसे कठोर प्रकार के नकारात्मक अर्थ भरे पड़े हैं – इस शब्द का सबसे पुराना प्रयोग हत्या को दर्शाता है। Wolters इस अर्थ वाले संज्ञा के चालीस प्राचीन प्रयोगों को दर्ज करता है, पर फिर यह भी दिखाता है कि पौलुस के समय तक यह अर्थ काफ़ी हद तक धुँधला पड़ चुका था। इसे दूसरे अर्थों ने ढक लिया था, जिनमें सबसे प्रमुख था "स्वामी"। फिर भी यह विचार पौलुस के समय तक और संभवतः उसकी पठन-सामग्री तक बना रहता है: सुलैमान की बुद्धि (Wisdom of Solomon)[265] में परमेश्वर द्वारा

260. 1 तीमुथियुस में पहले आई एक समानांतर शब्द-रचना को देखते हुए, यही स्वाभाविक पाठ है: "ध्यान दें कि पद 12 में पौलुस के विचार का क्रम (शिक्षा देना नहीं, और पुरुष पर हावी होना नहीं, बल्कि शान्ति में रहना) शिक्षा देने के इसी विषय पर 1:3-4 में उसके विचार-क्रम से बहुत भिन्न नहीं है (भिन्न शिक्षा देना नहीं, और उन कहानियों और अंतहीन वंशावलियों पर ध्यान देना नहीं, जो विश्वास में परमेश्वर के प्रबंध के बजाय अटकलों को बढ़ावा देती हैं)। इनमें से पहली दो बातों को नकारात्मक दृष्टि से देखा गया है, अंतिम को सकारात्मक।" (Andrew Bartlett, Men and Women in Christ, पृ. 340)
261. इस अंतर्दृष्टि के लिए Jamin Hübner का धन्यवाद।
262. इसे दूसरे ढंग से कहें: यदि पौलुस सकारात्मक व्यवहार की प्रशंसा कर रहा होता, और शिक्षा देना सराही जा रही बातों में से एक होता, तो इस शिक्षा के किसी नकारात्मक प्रकार की होने की कोई संभावना न होती। पर क्योंकि पौलुस नकारात्मक व्यवहार को सुधार रहा है, इसलिए यह संभावना खुलती है कि यह शिक्षा देने का एक नकारात्मक रूप है।
263. 1 तीमुथियुस 6:2
264. 1 तीमुथियुस 5:14 में वह नवविवाहित स्त्रियों से "घर-बार सँभालने" को कहता है – यहाँ "सँभालने" के लिए प्रयुक्त शब्द का अर्थ शब्दशः "घर का स्वामी (despot)" है।
265. संभवतः युग के मोड़ से दो-तीन दशक पहले लिखी गई, और इब्रानी बाइबल के यूनानी अनुवाद का भाग; बहुत संभव है कि पौलुस इस साहित्य से परिचित था (इस पर एक चर्चा www.bit.ly/3EKKrE4 पर देखें।)

उन माता-पिता के नाश की बात है जो अपने बच्चों की "हत्या" (authentas) करते हैं।[266] यद्यपि संज्ञा का पहले वाला "हत्या" अर्थ लगभग धुँधला पड़ चुका है, फिर भी यह संभव है – भले ही निश्चित न हो – कि अर्थ के विकास के साथ एक नकारात्मक झलक बनी रही[267] – आख़िरकार, "किसी का जीवन ले लेने" और "किसी के जीवन पर नियंत्रण कर लेने" के बीच कम से कम एक वैचारिक समानता तो है ही।[268]

सातवाँ, यदि पौलुस के मन में अधिकार का सकारात्मक प्रयोग होता, तो वह ऐसे प्रचलित यूनानी शब्दों का प्रयोग कर सकता था जो ठीक यही कहते हैं – जैसे वह शब्द जिसका प्रयोग उसने 10 पद पहले अधिकार रखने वालों के लिए किया था (hyperochē)? Louw and Nida's Lexicon for the New Testament ऐसे 12 शब्द देता है जिनका अर्थ है "अधिकार चलाना" और 47 ऐसे जिनका अर्थ है "शासन करना" या "राज्य चलाना", पर पौलुस ने इनमें से किसी का प्रयोग नहीं किया। 1 कुरिन्थियों 7 में, उस वैध अधिकार की बात करते हुए जो एक लिंग का दूसरे पर हो सकता है, उसने exousia शब्द चुना, एक ऐसा शब्द जिसका प्रयोग उसने अपनी पत्रियों में 28 बार किया।[269] यदि वह विशेष रूप से पास्टरीय अगुवाई की बात कर रहा था, जैसा कि पूरकतावादी विद्वान ज़ोर देकर कहते हैं, तो उसने वह शब्द क्यों नहीं अपनाया जिसका प्रयोग उसने बाद में इसी पत्री में पास्टरीय अगुवाई के लिए किया (proestōtes) (5:17); या कलीसिया की रखवाली करने का शब्द (poimainō);[270] या वह शब्द जिसका प्रयोग इब्रानियों के लेखक ने कलीसिया के अगुवों के लिए किया (hegoumenōn)?[271]

यह बात कि उसने इसके बजाय ऐसा दुर्लभ शब्द चुना, जिसमें एक बहुत ही विशिष्ट झलक है,[272] इसे संभाव्य बनाती है कि वह इफिसुस की कलीसिया की स्त्रियों में आम एक विशिष्ट, पापपूर्ण व्यवहार को ठीक-ठीक पहचानकर सुधारना चाहता था।

266. सुलैमान की बुद्धि (Wisdom of Solomon) 12:6। Wolters का यह तर्क कि सुलैमान की बुद्धि में इस शब्द का अर्थ केवल "सगे-संबंधी का हत्यारा" है, "हत्यारा" नहीं, मुझे किसी काम का नहीं लगता – दोनों ही तरह से एक अत्यंत नकारात्मक कार्य का संकेत है।

267. Baldwin ग़लत ढंग से क्रिया-रूप को उसकी संज्ञा से अलग करने का प्रयास करता है, यह कहते हुए कि अधिकांश भाषाओं में किसी शब्द का संज्ञा-रूप क्रिया-रूप में प्रयोग होने पर अपना समग्र अर्थ बदल सकता है। परन्तु अधिकांश भाषाविद् मानते हैं कि किसी न किसी प्रकार की मेल खाती झलक बनी रह सकती है। उदाहरण के लिए, अंग्रेज़ी क्रिया "adulterate" (मिलावट करना) का अर्थ संज्ञा "adultery" (व्यभिचार) से भिन्न है, पर नकारात्मक झलक दोनों शब्दों में बनी रहती है।

268. Wolters का मत है कि "हत्यारा" अर्थ वाले "authentēs" शब्द और "स्वामी" अर्थ वाले उसी शब्द की व्युत्पत्तियाँ अलग-अलग हो सकती हैं। फिर, हो सकता है कि न भी हों। वह अधिक से अधिक इतना कह सकता है कि "विद्वानों ने बार-बार सुझाया है कि उनकी व्युत्पत्तियाँ अलग-अलग हैं" – पर दूसरे विद्वानों ने इसके विपरीत सुझाया है। दोनों में साझा विचार यह प्रतीत होता है कि अपने पास जो भी शक्ति हो, उसका प्रयोग करके अपने आप को किसी दूसरे पर थोपना।

269. संभवतः exousia और पौलुस द्वारा authentein के प्रयोग के बीच एक महत्त्वपूर्ण अंतर यह है कि पहला उस अधिकार का प्रयोग है जो व्यक्ति के पास सचमुच है, जैसे किसी स्त्री का अपने ही पति के साथ यौन संबंध रखने का exousia (1 कुरिन्थियों 7:4), जबकि दूसरा (जैसा हम त्रिफ़ोन के पत्र में पाते हैं) ऐसे अधिकार पर दावा करने को दर्शा सकता है जो व्यक्ति के पास वैध रूप से नहीं है, जैसे किसी स्त्री का किसी दूसरे के पति के साथ यौन संबंध रखना।

270. देखें यूहन्ना 21:16, प्रेरितों के काम 20:28 और 1 पतरस 5:2।

271. देखें इब्रानियों 13:7, 17, 24।

272. इस शब्द की "एक विशिष्ट झलक" से मेरा क्या अर्थ है, यह समझने के लिए अंग्रेज़ी क्रिया "to teach" (शिक्षा देना) की तुलना "to pontificate" (उपदेश झाड़ना) या "to harangue" (डाँट-फटकार भरा भाषण देना) से करें। या "to lead" (अगुवाई करना) की तुलना "to drive" (हाँकना) या "to compel" (विवश करना) से करें। दोनों ही मामलों में बाद वाली क्रियाओं का मूल विचार वही है जो "शिक्षा देना" या "अगुवाई करना" का है, पर वे अतिरिक्त रंगत जोड़ देती हैं। मैंने यह स्थापित करने का प्रयास किया है कि "authentein", भले ही उसमें किसी की "अगुवाई करने" का घटक-विचार हो, एक अतिरिक्त रंगत वाला शब्द है – यह "हत्या" के लिए एक पहले के शब्द से निकला है और इसमें "aut" (स्वयं) रूपिम है।

आठवाँ, दूसरे विद्वान उन विद्वानों के निष्कर्षों का गंभीरता से खंडन करते हैं जो पहले से ही पूरकतावाद के प्रति प्रतिबद्ध हैं। बाइबल के विद्वान जिन मानक संदर्भ-ग्रंथों का उपयोग करते हैं, उनमें से कम से कम सात में अधिकांश स्पष्ट रूप से नकारात्मक अनुवाद देते हैं (जैसे रौब जमाना, हुक्म चलाना), और जिनमें अधिक सकारात्मक अनुवाद हैं, उनमें भी मसीही दृष्टिकोण से नकारात्मक ध्वनि होती है (जैसे स्वतंत्र, स्व-केंद्रित अधिकार)। उदाहरण के लिए, Analytical Lexicon of the Greek NT इस शब्द की परिभाषा इस प्रकार देता है: "[उस व्यक्ति] के विषय में जो अपने ही अधिकार से कार्य करता है; इसलिए नियंत्रण रखना, रौब जमाना, प्रभुता जताना।" Nida and Louw इसकी परिभाषा देता है "नियंत्रण करना, रोकना, रौब जमाना", जैसे "किसी पर चिल्लाकर आदेश देना", "किसी के प्रति सरदार की तरह व्यवहार करना" या "किसी पर भौंकना"। इसी प्रकार BDAG[273] इसका अनुवाद करता है "स्वतंत्र अधिकार का रुख़ अपनाना, आदेश देना, हुक्म चलाना"।

इसलिए यह कोई आश्चर्य की बात नहीं कि Cynthia Westfall, इस शब्द का अपना अध्ययन पूरा करने के बाद,[274] उसी डेटाबेस[275] का उपयोग करती है जिसका Wolters करता है, और पाती है कि "जब authentein का प्रयोग किसी व्यक्तिगत कर्ता और किसी व्यक्तिगत [प्राप्तकर्ता] के साथ होता है, तो उसका मूल्यांकन नकारात्मक होता है, जब तक कि कर्ता के पास ईश्वरीय या परम अधिकार न हो।"[276] यद्यपि पूरकतावादी विद्वान ज़ोर देते हैं कि इस शब्द का अर्थ पास्टरीय अधिकार चलाना है, Westfall दिखाती है कि डेटाबेस में इस शब्द के सारे प्रयोगों में से एक भी किसी पास्टर या कलीसिया के पदाधिकारी द्वारा किसी व्यक्ति या समूह की किसी भी प्रकार की परोपकारी पास्टरीय देखभाल को नहीं दर्शाता।[277] वह अपना अध्ययन इन शब्दों से समाप्त करती है:

चूँकि "authentein" शब्द ही वह मुख्य स्रोत है जिसके आधार पर स्त्रियों को कलीसिया में ... अगुवाई से बाहर रखा जाता है, इसलिए इसके अर्थ का चुनाव निर्णायक है। ... इसे केवल "अधिकार रखना" मान लेना और फिर उसकी ऐसी व्याख्या करना मानो वह सेवक-अगुवाई या पास्टरीय देखभाल का वर्णन करता हो, अत्यंत भ्रामक है। कलीसिया का काम होना चाहिए कि वह ठोस कोश-विज्ञान और भाषावैज्ञानिक पद्धति के आधार पर इस शब्द की समझ विकसित करे, ताकि इस चर्चा में सावधानी से आगे बढ़ा जा सके। ... कलीसिया अब जवाबदेही की आयु तक पहुँच चुकी है; अब समय है कि वह authentein शब्द के आधार पर स्त्रियों को कलीसिया की अगुवाई के पदों से बाहर रखने की ज़िम्मेदारी (या दोष) अपने ऊपर ले।

मुझे सबसे अधिक परेशान करने वाली बात यह लगती है कि जब प्रमुख पूरकतावादियों को Westfall के भाषावैज्ञानिक काम की समीक्षा का काम सौंपा जाता है, तो वे केवल यह दावा करके उसके विस्तृत अध्ययन

273. इसका पूरा नाम है: The Bauer, Danker, Arndt, and Gingrich Greek-English Lexicon of the New Testament.
274. www.bit.ly/2prxkqm
275. Thesaurus Linguae Graecae डेटाबेस में इस शब्द के 300 से अधिक प्रयोग हैं, जो 1,200 वर्षों की अवधि में फैले हैं।
276. Westfall, Paul and Gender, अध्याय 9
277. Westfall, Paul and Gender, अध्याय 9

के परिणाम से कतरा जाते हैं कि Wolters का काम बेहतर है।[278] इसके विपरीत, Jamin Hübner authentein पर अपने शोध के साथ मिलाकर उसके काम की आदरपूर्वक समीक्षा करता है, और इस निष्कर्ष पर पहुँचता है कि 1 तीमुथियुस 2:12 में प्रयुक्त इस शब्द की नकारात्मक झलक "लगभग निश्चित" है।[279]

जहाँ तक इस शब्द के अर्थ की बात है, Westfall के अनुसार: "यूनानी साहित्य-संग्रह में यह क्रिया अनेक प्रकार के कार्यों को दर्शाती है, [जिनमें] इन कार्यों का निशाना बनने वाले लोगों को हानि पहुँचती है, उन्हें उनकी इच्छा के विरुद्ध विवश किया जाता है, या कम से कम उनके अपने हित को कुचल दिया जाता है, क्योंकि इन कार्यों में कर्ता की इच्छा थोपी जाती है – अपमान से लेकर प्राणघातक बल तक।"

उसका निष्कर्ष इस तथ्य से मेल खाता है कि जेरोम (Jerome) ने चौथी शताब्दी के अपने लातीनी वुलगाता (Vulgate) अनुवाद में 1 तीमुथियुस 2:12 के authentein का अनुवाद dominari किया – यह वही शब्द-परिवार है जिसका प्रयोग उसने एक और स्थान पर किया, जहाँ पौलुस, अपने वैध आत्मिक अधिकार के बावजूद, कहता है कि एक प्रकार की अगुवाई का वह कभी उपयोग नहीं करता, और वह है जिनकी वह अगुवाई करता है उन पर प्रभुता जताना।[280]

चाहे इस शब्द का अर्थ किसी के ऊपर अधिकार अपने हाथ में ले लेना हो (Payne का अनुवाद), का स्वामी होना हो (Wolters का अनुवाद), या अपने आप को किसी पर थोपना और उसे कुचल देना हो (Westfall का अनुवाद), न तो मसीही स्त्रियों को और न ही मसीही पुरुषों को ऐसा करना चाहिए – और इसलिए 1 तीमुथियुस 2:12 का पूरकतावादी पाठ विफल हो जाता है।

यद्यपि केवल परमेश्वर ही जानते हैं कि पौलुस का authentein से ठीक-ठीक क्या अभिप्राय था, फिर भी नकारात्मक झलक के पक्ष में इन तर्कों के भारी वज़न को देखते हुए मेरा निष्कर्ष है कि पूरकतावादी पाठ और उसका आम तौर पर प्रयुक्त अनुवाद ("अधिकार चलाना") संभवतः ग़लत है। NIV का अद्यतन अनुवाद

278. Westfall की पुस्तक की Tom Schreiner द्वारा की गई आलोचना authentein पर उसके अध्ययन के बारे में उसके दावों से ठीक से नहीं जूझती, बल्कि केवल यह दावा करती है कि "ऐसा नहीं लगता कि उसने 'authentein' शब्द पर उतनी सावधानीपूर्ण व्याख्या की है जितनी Wolters ने की है।" वास्तव में वह Wolters के काम की एक बहुत ठोस, यद्यपि आदरपूर्ण, आलोचना प्रस्तुत करती है। Schreiner की ही तरह, www.cbmw.org ने Westfall की पुस्तक की समीक्षा का काम Casey Haugh को सौंपा, और वह उसके व्याख्यात्मक अध्ययन की तुलना Wolters से करके कहता है, "Westfall authentein की अपनी समझ के प्रति उतनी चिंता नहीं दिखाती।" कम से कम Wolters का स्वर अलग है: "यद्यपि मैं Westfall के विश्लेषण के बहुत से भाग से असहमत हूँ, मैं सैद्धांतिक भाषाविज्ञान के प्रश्नों को चर्चा में लाने के लिए उसकी सराहना करता हूँ, और यह देखने की प्रतीक्षा करता हूँ कि भाषाविज्ञान के विषय में मुझसे अधिक जानकार लोग उसके तर्कों को कैसे ग्रहण करते हैं।"

279. www.bit.ly/340JLIS

280. 2 कुरिन्थियों 1:24: अंग्रेज़ी: "lord it over" (प्रभुता जताना); लातीनी वुलगाता: "dominamur"। यद्यपि जेरोम ने वुलगाता में दूसरी जगहों पर dominari शब्द का प्रयोग परमेश्वर और यीशु के निरंकुश शासन के लिए किया, फिर भी वह इस बात के प्रति सजग प्रतीत होता है कि यह शब्द पास्टरीय अगुवाई के लिए उपयुक्त नहीं है। वास्तव में वह इसी शब्द का प्रयोग मसीही अगुवों को दी गई यीशु और पतरस दोनों की उन चेतावनियों के अनुवाद में करता है कि वे दूसरों पर "प्रभुता न करें" (या "प्रभुता न जताएँ") – देखें मरकुस 10:42-43; 1 पतरस 5:3। जेरोम की समझ में निरंकुश शक्ति के इन स्पष्ट अर्थों को देखते हुए, यह बहुत असंभाव्य है कि वह 1 तीमुथियुस 2:12 में इस शब्द का प्रयोग केवल एक भक्तिपूर्ण, पास्टरीय अधिकार के लिए करता है। यह सच है कि जेरोम अपने एक निजी पत्र में एक बिशप के शासन (dominari) की तुलना एक राजा के शासन से करता है, पर यह तुलना दिखाती है कि चौथी शताब्दी के अंत के रोम में कलीसियाई और राजनीतिक शक्ति किस प्रकार बिशप की भूमिका में समा गई थी।

("assume authority" – "अधिकार अपने हाथ में ले लेना")[281] और, कम से कम इस मामले में, पुराने अंग्रेज़ी अनुवाद ("usurp authority" – "अधिकार हड़प लेना")[282] बेहतर हैं, यद्यपि मुझे लगता है कि "to control" – "नियंत्रण करना" (CEB), "to domineer" – "रौब जमाना" (NEB), या "to lord it over" – "किसी पर स्वामी बन बैठना" (TLB) अधिक सटीक हो सकते हैं।

जीवन के सभी क्षेत्र

इस विचार की, कि पौलुस यह प्रतिबंध केवल कलीसिया की सभाओं तक सीमित रखता है, शायद सबसे बड़ी कमज़ोरी यह है कि वह अपना तर्क – जैसा सभी पूरकतावादी कहते हैं – "सृष्टि की व्यवस्था" पर आधारित करता है। परन्तु कोई यह नहीं कह सकता कि पौलुस कलीसिया में स्त्री-अगुवाई पर अपने निषेध की नींव "सृष्टि की व्यवस्था" पर रखता है, और फिर "सृष्टि की व्यवस्था" के निहितार्थों को सभी संबंधों और क्षेत्रों पर लागू होने से इनकार करे। इस खंड की ऐसी कोई व्याख्या संभव ही नहीं है जो कलीसिया में पुरुषों पर स्त्री-अगुवाई को (सृष्टि की व्यवस्था का तर्क देकर) वर्जित करे और साथ ही कलीसिया के बाहर – सरकार, व्यवसाय या लोक सेवा के क्षेत्रों में – पुरुषों की अगुवाई करने वाली स्त्रियों पर ईश्वरीय अस्वीकृति की छाया न डाले।

कुछ पूरकतावादी "सृष्टि की व्यवस्था" में अपने विश्वास के उन प्रतिबंधात्मक निहितार्थों से कैसे बच निकलते हैं जो उनकी बेटियों की व्यावसायिक संभावनाओं पर पड़ते हैं – उन बेटियों की, जो (चूँकि काम सृष्टि का एक पहलू है) पुरुषों की अगुवाई नहीं कर सकतीं? वे तर्क देते हैं कि यह खंड केवल कलीसियाई क्षेत्र पर, विशेष रूप से कलीसिया की औपचारिक सभाओं पर लागू होता है। वे "मैं चाहता हूँ कि हर जगह पुरुष प्रार्थना करें" को ऐसे पढ़ते हैं मानो इसका अर्थ हो "मैं चाहता हूँ कि कलीसिया की सभी सभाओं में पुरुष प्रार्थना करें"। वे ध्यान दिलाते हैं कि 1 तीमुथियुस 2:1 प्रार्थना के विषय में बोलता है, जैसे यह पद भी। पद 11 सिखाए गए वचन के अधीन स्त्रियों के सीखने की बात करता है। इसी प्रकार अगला अध्याय कलीसिया के अगुवों के विषय में बोलता है (3:1-12), और इस बारे में भी कि यह पत्री लोगों को परमेश्वर के घराने में कैसा व्यवहार करने का निर्देश देती है (3:15)। वे कहते हैं कि यह सब स्त्रियों के शिक्षा देने और अगुवाई करने पर लगे प्रतिबंध को कलीसिया की उन साप्ताहिक सार्वजनिक सभाओं तक सीमित करता है जहाँ पुरुष उपस्थित होते हैं।

मेरा पहला उत्तर यह है कि प्रार्थना-सभाएँ कलीसिया की साप्ताहिक आराधना-सभाओं तक सीमित नहीं थीं। प्रेरितों के काम की पुस्तक बंद दरवाज़ों के पीछे ऊपरी कोठरियों में, समुद्र-तट पर और जेल की कोठरियों में होने वाली प्रार्थना-सभाओं का वर्णन करती है। निश्चय ही पौलुस अध्याय 2 में जो कहता है उसमें कलीसिया

281. इसका ऐसा अनुवाद करके NIV पाठक को यह तय करने देता है कि यह सकारात्मक रूप से किसी उचित अधिकार को जताने की बात करता है, या नकारात्मक रूप से ऐसे अधिकार की जिसे अवैध रूप से छीन लिया जाता है। इस अनुवाद का मेरा समर्थन नकारात्मक अर्थ को मानकर है।
282. उदाहरण के लिए देखें: "Geneva (1560 edition): "I permit not a woman to … vsurpe authoritie ouer the man." Bishop (1589): "I suffer not a woman to … vsurpe auctoritie ouer ye man." KJV (1611): "I suffer not a woman to … usurp authority over the man."

की सभाएँ शामिल हैं, पर कलीसिया का रोज़मर्रा का जीवन भी – जब वह इकट्ठी हो और जब बिखरी हो – दृष्टि में है: पवित्र हाथों, क्रोध और विवाद से मुक्ति, किसी के बाहरी रूप-रंग;[283] भले कामों, सीखने, संतान-जन्म; और विश्वास, प्रेम और पवित्रता की इन सब बातों के साथ पौलुस पूरे जीवन को ध्यान में रखता है। यदि, जैसा पूरकतावादी कहते हैं, पौलुस स्त्रियों को पुरुषों की अगुवाई करने और उन्हें शिक्षा देने से मना करता है, तो यह सभी स्थानों और मंचों पर लागू होता है।

मेरा दूसरा उत्तर यह है कि मैं Michael Bird को इस मामले की जड़ पर प्रहार करने दूँ:

मुझे लगता है यह बताना उचित है कि पूरकतावादी स्वयं अपने दृष्टिकोण के पूरे निहितार्थों को सीमित या नरम कर देते हैं, और यहीं उनकी स्थिति की कमज़ोरी है। उदाहरण के लिए, कुछ पूरकतावादी स्त्री को पुस्तकों, रेडियो और वेबसाइटों के द्वारा अप्रत्यक्ष रूप से पुरुषों को शिक्षा देने की अनुमति देते हैं, पर उसे आमने-सामने पुरुषों को शिक्षा देने की अनुमति नहीं देते। एक स्त्री इब्रानियों पर एक टीका लिख सकती है जिसे पुरुष पढ़ें, पर वह पुरुषों को इब्रानियों पर प्रचार या शिक्षा नहीं दे सकती। एक स्त्री राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, सीईओ, सेनापति या पुलिस अधिकारी हो सकती है, पर वह पास्टर के रूप में सेवा नहीं कर सकती। एक स्त्री पुरुषों को फ़्रेंच भाषा या पियानो सिखा सकती है, पर बाइबल या धर्मविज्ञान नहीं। एक स्त्री अविश्वासी पुरुषों को बाइबल और सिद्धांत सिखा सकती है, पर मसीही पुरुषों को नहीं।

मुझे यहाँ जो समस्या दिखती है वह यह है कि कुछ पूरकतावादी उत्पत्ति और सृष्टि की व्यवस्था का सहारा लेकर यह दिखाते हैं कि किसी स्त्री का किसी पुरुष के ऊपर अधिकार के पद पर होना अपने आप में ग़लत है, और फिर भी वे उस प्रतिबंध को केवल कलीसिया के जीवन या रविवार की आराधना पर लागू करते हैं। पर यह तो ऐसा कहने के समान है कि किसी का व्यभिचार करना ठीक है, जब तक वह ऐसा रविवार को या कलीसिया के सभागार में न करे। या यह ऐसा कहने के समान है कि व्यभिचार करना ठीक है, बशर्ते आप किसी अविश्वासी के साथ करें। यदि किसी स्त्री का किसी पुरुष पर अधिकार होना परमेश्वर की सृष्टि की व्यवस्था का इतना स्पष्ट उल्लंघन है, तो यह जीवन के सभी क्षेत्रों पर लागू होना चाहिए – चाहे वह व्यवसाय हो, सरकार, राजनीति, लोक सेवा या कलीसिया – क्योंकि परमेश्वर सभी संस्थाओं पर प्रभुता रखते हैं, और सारा जीवन परमेश्वर के सामने और परमेश्वर के अधीन जिया जाता है।[284]

यदि हम पूरकतावादी पाठ को थामे रहें, पर हर जगह पुरुषों पर स्त्री-अगुवाई को पूरी तरह वर्जित करने को तैयार न हों, तो मेरा सुझाव है कि हमें अपनी असंगति स्वीकार करनी होगी, क्योंकि हम केवल उन मसीही स्त्रियों पर रोक लगाते हैं जो कलीसिया में अगुवाई करती हैं। मेरा प्रस्ताव है कि इससे बेहतर समाधान यह है कि हम इन पदों को पढ़ने के अपने ढंग पर फिर से विचार करें।

क्योंकि आदम पहले, उसके बाद हव्वा बनाई गई

283. 1 कुरिन्थियों 11 का अध्ययन करने के बाद हम जानते हैं कि पौलुस चाहता था कि स्त्रियाँ कलीसिया की सभाओं में सिर ढँकें, और फिर भी यहाँ केश-विन्यास के बारे में उसकी बात दिखाती है कि वह रोज़मर्रा के जीवन में भी स्त्रियों के बाहरी रूप की बात कर रहा है।
284. Mike Bird, Bourgeois Babes, Bossy Wives and Bobby Haircuts: A Case for Gender Equality

1 तीमुथियुस 2:12 के बाद, "सृष्टि की व्यवस्था" के पक्ष में पूरकतावादी जो मुख्य प्रमाण-पद देते हैं, वह उसके बाद का पद है: "क्योंकि आदम पहले, उसके बाद हव्वा बनाई गई।" वे कहते हैं कि यह इस बात का प्रमाण है कि पौलुस ने पतन से पहले के आदम-हव्वा संबंध में पुरुष का अधिकार देखा। क्या यह एक अकाट्य तर्क है?

आइए "क्योंकि" (gar) शब्द से आरंभ करें। पूरकतावादी विद्वान कहते हैं कि यहाँ इसका अर्थ इस कारण कि है। दूसरे शब्दों में, पौलुस स्त्री-अगुवाई पर प्रतिबंध "इस कारण" लगाता है कि आदम पहले बनाया गया था। परन्तु gar शब्द का अर्थ हमेशा "इस कारण कि" नहीं होता। इसका अर्थ यह होता है कि अब पिछले कथन को समझाने वाली या उसका समर्थन करने वाली सामग्री दी जाने वाली है।[285] पौलुस अपने लेखों में विशेष रूप से हर प्रकार की समर्थन-सामग्री देता है, जिसमें – जैसा वह यहाँ करता दिखता है – उदाहरण भी शामिल हैं। इस बात को ध्यान में रखते हुए इसे इस प्रकार पढ़ा जा सकता है: "मैं अभी किसी स्त्री को किसी पुरुष के ऊपर अधिकार अपने हाथ में लेने की अनुमति नहीं देता, आख़िरकार, आदम पहले बनाया गया था ..." (कुछ अनुवादक gar के लिए अंग्रेज़ी शब्द indeed चुनते हैं – जिसका अर्थ है आख़िरकार या वास्तव में।) यद्यपि यह मेरे तर्क के लिए निर्णायक नहीं है,[286] फिर भी gar यहाँ संभवतः उसके निषेध को किसी कारण से नहीं, बल्कि एक ऐतिहासिक दृष्टांत से जोड़ता है।[287]

अपनी पत्रियों में पौलुस विशेष रूप से पुराने नियम के वृत्तांतों और चित्रों का उपयोग दृष्टांत के रूप में अपनी किसी बात के समर्थन में करता है। वह हाजिरा और सारा की कहानी का उपयोग पुरानी वाचा और नई वाचा के टकराव को दर्शाने के लिए करता है, जो गलातिया के उन गैर-यहूदी विश्वासियों का जीवित अनुभव था जिनका यहूदी ख़तना न होने के कारण उपहास किया जा रहा था।[288] दूसरी जगह वह लाल समुद्र पार करने, मन्ना, बादल, चट्टान और जंगल में समझौता करने वाले इस्राएलियों पर आई महामारी के चित्रों का उपयोग कुरिन्थुस की कलीसिया के इस ख़तरे के उदाहरण के रूप में करता है कि यीशु के द्वारा उद्धार पाने और उनकी देखभाल पाने के बाद भी वे नैतिक विफलता और मूर्तिपूजा के कारण अपना प्रतिफल खो सकते हैं।[289] बाद में वह शैतान द्वारा हव्वा को फुसलाने के चित्र का उपयोग उसी कलीसिया के सामने खड़े इस ख़तरे

285. "Pastoral Epistles, 131–35 में gar पर Mounce की चर्चा, जहाँ वह पौलुस द्वारा gar के प्रयोगों का संक्षेप में सर्वेक्षण करता है और निष्कर्ष निकालता है: इस बात का प्रमाण अत्यधिक है कि 1 तीमु. 2:13 में यह एक कारण प्रस्तुत करता है, क्योंकि इसका सबसे अधिक प्रयोग "कारण या हेतु व्यक्त करने" के लिए होता है (131)। परन्तु हर उदाहरण में तार्किक संबंध का अनुमान संदर्भ से लगाना पड़ता है, और gar स्वयं "कारण या हेतु व्यक्त" नहीं करता। इसका न्यूनतम अर्थगत योगदान समर्थन-सामग्री का संकेत देना है, जिसमें कारण के साथ-साथ उदाहरण, प्रतिरूप, उद्धरण और समर्थन के दूसरे रूप भी शामिल हो सकते हैं; ... विशिष्ट पाठों की व्याख्याएँ 'सबसे अधिक प्रयोग' के आधार पर तय नहीं की जा सकतीं।" (Cynthia Westfall, Paul and Gender, अध्याय 4)

286. परन्तु यदि gar का अर्थ यहाँ "इस कारण कि" हो भी, तब भी पद 13-14 की जो दो व्याख्याएँ मैं प्रस्तुत करने जा रहा हूँ, वे दोनों अर्थपूर्ण रहती हैं। उदाहरण के लिए, यह बात कि अदन की आदिरूप कहानी के अनुसार स्त्रियों को पुरुषों का आदर करना है (पद 13) और उनसे स्वतंत्र नहीं होना है (पद 14), इफिसुस की कुछ स्त्रियों द्वारा पुरुषों का अनादर करने के ढंग को पौलुस द्वारा वर्जित करने का धर्मवैज्ञानिक आधार बनती है (पद 12)।

287. परन्तु यदि gar का अर्थ यहाँ "इस कारण कि" हो भी, तब भी पद 13-14 की जो दो व्याख्याएँ मैं प्रस्तुत करने जा रहा हूँ, वे दोनों अर्थपूर्ण रहती हैं। उदाहरण के लिए, यह बात कि अदन की आदिरूप कहानी के अनुसार स्त्रियों को पुरुषों का आदर करना है (पद 13) और उनसे स्वतंत्र नहीं होना है (पद 14), इफिसुस की कुछ स्त्रियों द्वारा पुरुषों का अनादर करने के ढंग को पौलुस द्वारा वर्जित करने का धर्मवैज्ञानिक आधार बनती है (पद 12)।

288. गलातियों 4:22-24

289. 1 कुरिन्थियों 9:24-10:14

के दृष्टांत के रूप में करता है कि वह कलीसिया यीशु के प्रति अपनी शुद्ध और सच्ची भक्ति से हट जाए।[290] इन सभी उदाहरणों में पौलुस पुराने नियम के एक उदाहरण को उस स्थिति के सादृश्य के रूप में प्रयोग करता है जिसके बारे में वह उस समय बात कर रहा है।

इसी प्रकार, इफिसुस की स्त्रियों पर – और दूसरी कलीसियाओं में इसी तरह व्यवहार करने वाली सभी स्त्रियों पर – अपना प्रतिबंध व्यक्त करने के बाद, वह उसका समर्थन एक सादृश्य से करता है। वह जो समानता दिखाता है, वह इफिसुस की कलीसिया की स्थिति और उत्पत्ति 2-3 में आदम और हव्वा की कहानी के बीच है। पर आदम और हव्वा की कहानी में ठीक-ठीक वह क्या है जिसे पौलुस उभारना चाहता है?

बहुत से पूरकतावादी मानते हैं कि "पहले" (यूनानी: protos) शब्द का अर्थ पद में पहला है, पर क्या हो यदि पौलुस यहाँ बिना किसी पद-भाव के, क्रम में पहले की बात कर रहा हो? यही शब्द यूहन्ना के लिए प्रयोग हुआ है, जो यीशु की खाली क़ब्र पर "पहले" पहुँचा, और इस तथ्य के लिए भी कि परमेश्वर ने "पहले" हमसे प्रेम किया, जिसके बाद हम उत्तर में उनसे प्रेम करते हैं।[291] वास्तव में इसी शब्द का एक रूप आसपास के खंड में दो बार – दस पद पहले और दस पद बाद भी – क्रम में पहले के अर्थ में प्रयोग हुआ है: "अब मैं सबसे पहले यह आग्रह करता हूँ कि ... सब मनुष्यों के लिए प्रार्थनाएँ ... की जाएँ," और "ये भी पहले परखे जाएँ, तब ... सेवक का काम करें।"[292]

यहाँ तक कि जॉन कैल्विन (John Calvin) भी पदानुक्रमित व्याख्या के तर्क पर प्रश्न उठाता है: "यह तर्क कि स्त्री इसलिए अधीन है क्योंकि वह दूसरे स्थान पर सृजी गई, बहुत मज़बूत नहीं लगता, क्योंकि यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला मसीह से पहले आया ... फिर भी उनसे बहुत छोटा था।"[293] (इसी प्रकार उत्पत्ति 1 में मनुष्य सबसे अंत में सृजे गए, फिर भी कहा गया है कि वे उससे पहले आई हर वस्तु पर शासन करें।) क्या प्रतिभाशाली पौलुस ऐसा तर्क देता?

यदि पौलुस हव्वा के ऊपर आदम का पद नहीं बता रहा, तो वह केवल क्रम का उल्लेख क्यों करता है? एक विश्वसनीय उत्तर यह है कि वह पद 13 में उस बात की भूमिका बाँध रहा है जो वह पद 14 में कहेगा (और याद रखें कि पौलुस ने पद-संख्याओं का प्रयोग नहीं किया था, इसलिए पद 13 को पद 14 से अलग करने की हमारी प्रवृत्ति ही शुरू से भटकाने वाली है)। उत्पत्ति 2 का इससे सरल सार मैं सोच भी नहीं सकता जो पौलुस यहाँ देता है: "आदम पहले बनाया गया (जैसा उत्पत्ति 2:4-20 कहता है) और उसके बाद हव्वा (जैसा उत्पत्ति 2:21-25 कहता है)।" इसलिए हो सकता है कि पौलुस पद 13 में आदम और हव्वा के बनाए जाने के किसी पहलू को याद दिला रहा हो, जिसे पद 14 के साथ मिलाकर पढ़ा जाना चाहिए।

हव्वा बहकाई गई, आदम नहीं

बहुत से पूरकतावादी विद्वानों को पढ़ने के बाद मैंने देखा है कि वे "सृष्टि की व्यवस्था" के पक्ष में अपने तर्क का भार पद 13 पर डालते हैं (जिसे, मेरे विचार में, उन्होंने ग़लती से हव्वा के ऊपर आदम का पद समझ

290. 2 कुरिन्थियों 11:3-4
291. यूहन्ना 20:8, 1 यूहन्ना 4:18
292. 1 तीमुथियुस 1:2 और 3:10
293. John Calvin, The Epistles of Timothy, Titus and Philemon. कैल्विन, जो इसी खंड में हव्वा को "एक प्रकार का उपांग" और "एक निम्नतर सहायक" कहता है, फिर भी इस व्याख्या को स्वीकार करता है।

लिया है), पर फिर आम तौर पर मान लेते हैं कि पद 14 के बारे में वे कम निश्चित हैं।

वे इस पद की व्याख्या दो में से किसी एक ढंग से करते हैं। पहली व्याख्या यह है कि हव्वा (और उसकी बेटियाँ) आदम (और उसके बेटों) की अपेक्षा अधिक आसानी से धोखे में आ जाती हैं, और इसलिए स्त्रियाँ आत्मिक अगुवे और शिक्षक होने के योग्य नहीं हैं। दूसरी, जिसका प्रतिपादन सबसे पहले 1977 में George Knight ने किया,[294] यह है कि हव्वा ने अपने ऊपर आदम के उचित अधिकार को दरकिनार करके शैतान का साथ दिया।

क्या किसी पुरुष की अपेक्षा किसी स्त्री को धोखा देना अधिक आसान है? लगभग दो सहस्राब्दियों तक, 1960 के दशक तक, यह पद कलीसिया के लिए स्त्री की हीनता का – जिसमें उसकी बौद्धिक क्षमता की कमी भी शामिल थी – प्रमाण-पद था। पर स्त्री-मुक्ति आंदोलन ने उस सांस्कृतिक धारणा को उलट दिया – और लगभग सभी विचारशील मसीहियों ने भी उसे छोड़ दिया। यही कारण है कि शायद ही कोई पूरकतावादी विद्वान – जिन्होंने उचित ही स्त्री की हीनता के विचार की जगह स्त्री की समानता को रखा है – इस व्याख्या को चुनता है।[295] फिर भी यह बात कुछ साहसी लोगों को इसे थामे रहने का प्रयास करने से नहीं रोकती। Grudem कहता है, "पौलुस हव्वा में कुछ ऐसा देखता है जो सामान्य रूप से स्त्रीत्व का प्रतिनिधित्व करता है," और वह एक दूसरे विद्वान को सहमति के साथ उद्धृत करता है: "सामान्यतः स्त्रियाँ अधिक संबंध-केंद्रित और पालन-पोषण करने वाली होती हैं, और पुरुष तर्कसंगत विश्लेषण और वस्तुनिष्ठता की ओर अधिक झुके होते हैं। स्त्रियों को शिक्षक के पद पर नियुक्त करना इसलिए वर्जित है, क्योंकि सिद्धांत की उन बातों पर, जिन पर समझौता नहीं हो सकता, उनके द्वारा रेखा खींचने की संभावना कम होती है, और इस कारण धोखा और झूठी शिक्षा अधिक आसानी से कलीसिया में प्रवेश करेंगे।"[296]

पर यह उद्धरण मूल रूप से यह निष्कर्ष निकालता है कि स्त्रियाँ बौद्धिक रूप से हीन हैं। यह इस तथ्य को भी नकारता है कि बहुत सी स्त्रियाँ बहुत से पुरुषों से अधिक विश्लेषणात्मक और तर्कसंगत होती हैं, और बहुत से पुरुष बहुत सी स्त्रियों से अधिक आसानी से धोखे में आ जाते हैं। सबसे बड़ी समस्या यह है कि यह भूल जाता है कि पवित्रशास्त्र स्त्रियों द्वारा दूसरी स्त्रियों और बच्चों को भी शिक्षा देने की निःसंकोच सराहना करता है। यदि कोई स्त्री इसलिए शिक्षा नहीं दे सकती कि वह अधिक आसानी से धोखा खा सकती है, तो उसे किसी को भी शिक्षा नहीं देनी चाहिए, विशेषकर बच्चों को!

294. George Knight, The New Testament Teaching on the Role Relationship of Men and Women
295. "Women in the Church" (अध्याय 6) में Schreiner कहता है, "इस व्याख्या को अस्वीकार किया जाना चाहिए, क्योंकि इसका निहितार्थ यह है कि स्त्रियाँ अपने अस्तित्व में और बौद्धिक रूप से हीन हैं।"
296. Wayne Grudem, Evangelical Feminism, अध्याय 2

इसलिए इस ऐतिहासिक दृष्टिकोण को अधिकांश पूरकतावादी विद्वानों ने उचित ही छोड़ दिया है।[297] आइए अब Knight के नए दृष्टिकोण का मूल्यांकन करें, जिसे Schreiner इस प्रकार व्यक्त करता है:

पौलुस का ध्यान उस साँप पर है जो हव्वा के पास गया और उसे धोखा दिया, आदम को नहीं। [ऐसा करके उसने] पुरुष-अगुवाई के ढाँचे को उलट दिया और परीक्षा के समय केवल हव्वा से ही बात की। हव्वा ने साँप को उत्तर देने में पहल की, और आदम ने उसे ऐसा करने दिया। इस प्रकार उत्पत्ति 3 का हवाला हमें याद दिलाता है कि जब परमेश्वर द्वारा ठहराए गए ढाँचे को कमज़ोर किया जाता है तो क्या होता है।[298]

इस दृष्टिकोण की समस्या यह है कि न तो उत्पत्ति के वृत्तांत में और न ही पौलुस के तर्क में कुछ भी ऐसा है जो यह सुझाए कि हव्वा के धोखा खाने का स्वरूप किसी भी रूप में उसके अपने पद से बाहर निकलने और "परमेश्वर द्वारा ठहराए गए ढाँचे" को कमज़ोर करने से जुड़ा था। बल्कि दोनों खंड इस बात को उभारते हैं कि हव्वा ने परमेश्वर की भलाई पर अविश्वास किया और इस प्रकार परमेश्वर की आज्ञा तोड़ी। पूरकतावादी दोनों खंडों में वे बातें पढ़ लेते हैं जो वहाँ हैं ही नहीं। उत्पत्ति 3 में शैतान की परीक्षा का स्वरूप हव्वा पर आदम के अधिकार को उलटना नहीं था, बल्कि उस पर परमेश्वर के अधिकार को उलटना था। और फिर हव्वा और आदम दोनों को एक ही पाप के लिए दंड मिलता है: जिसके बारे में कभी यह नहीं कहा गया कि वह "आदम के अधिकार से बाहर निकलने" या "हव्वा की अगुवाई का त्याग करने" के विषय में था, बल्कि वह "फल खाने" का पाप था। हाँ, आदम ने "[अपनी] पत्नी की बात सुनी", पर पाप उसकी बात सुनना नहीं था (जो सब पतियों को करना चाहिए), बल्कि फल खाने के उसके पापपूर्ण सुझाव को मान लेना था। इसी प्रकार साँप को इसलिए शाप नहीं मिला कि उसने सृष्टि की व्यवस्था को उलटा, बल्कि इसलिए कि उसने हव्वा को धोखा दिया (पद 13-14)। हव्वा के धोखे में आ जाने का परिणाम यह हुआ कि वह "पापिनी" बन गई – शब्दशः "अपराधिनी", जो पति-पत्नी की भूमिकाओं की अदला-बदली की नहीं, बल्कि उस आज्ञा की बात करता है जो परमेश्वर ने दंपती को वर्जित वृक्ष का फल न खाने के लिए दी थी। उत्पत्ति 3 में भूमिकाओं की एकमात्र अदला-बदली यह है कि उन्होंने परमेश्वर के सिंहासन पर चढ़ने और स्वयं अपने परमेश्वर बनने का प्रयास किया।

जब पद 14 की दोनों पूरकतावादी व्याख्याएँ गंभीर संदेह के घेरे में हैं, तो हमें पूछना होगा कि पौलुस का इन शब्दों से और क्या अभिप्राय हो सकता है: "[और] आदम वह नहीं था जो धोखा खा गया; स्त्री ही धोखा खाकर पापिनी बन गई।" यह संभवतः उन पदों में से एक है जिनकी ओर पतरस संकेत करता है जब वह कहता है कि पौलुस कुछ ऐसी बातें लिखता है "जिनका समझना कठिन है"। जैसा Westfall कहती है: "पौलुस अपने धर्मविज्ञान की, या निषेधों के लिए इस वृत्तांत की प्रासंगिकता की, आगे कोई व्याख्या किए

297. पूरकतावादी इसके निहितार्थों पर विचार नहीं करते। Women In The Church के पहले संस्करण में – जो 1 तीमुथियुस 2 के पूरकतावादी पाठ का सबसे व्यापक बचाव है – Daniel Doriani इस खंड की व्याख्या के इतिहास पर एक परिशिष्ट लिखता है। वह दिखाता है कि 1960 के दशक तक कलीसिया यह मानती आई थी कि स्त्रियों पर यह निषेध स्त्री जाति की मूलभूत हीनता पर आधारित है। तो ध्यान दें कि केवल परस्परतावादी ही नहीं, बल्कि पूरकतावादी भी इस खंड की वह प्रस्तुति देते हैं जिसे Doriani "पुनर्व्याख्या" कहता है। कोई भी पक्ष यह दावा नहीं कर सकता कि उसका दृष्टिकोण ही ऐतिहासिक दृष्टिकोण है। चिंता की बात यह है कि दूसरे संस्करण से Doriani का परिशिष्ट हटा दिया गया है – मानो यह मौन स्वीकृति हो कि उन्होंने बहुत कुछ स्वीकार कर लिया था। भ्रामक ढंग से, अध्याय 5 में पूरकतावादी दृष्टिकोण को "ऐतिहासिक दृष्टिकोण" कहा गया है।

298. Tom Schreiner. Women in the Church, अध्याय 6

बिना बस पतन का एक संक्षिप्त वृत्तांत दे देता है।"[299] यद्यपि मूल पाठक शायद ठीक-ठीक जानते थे कि पौलुस किस बारे में बात कर रहा है, हम, जो सदियों बाद वही पत्री हाथ में लेते हैं, उन सब बातों से परिचित नहीं हैं जो पौलुस अपने पाठकों के बारे में जानता था, और इसलिए शायद कुछ महत्त्वपूर्ण जानकारी हमसे छूट रही हो। फिर भी मैं दो संभावित अर्थ प्रस्तुत करता हूँ, जो दोनों इस विचार पर आधारित हैं कि पौलुस इफिसुस की बहुत सी स्त्रियों को उनके पापपूर्ण व्यवहार की तुलना उनकी माता हव्वा के व्यवहार से करके डाँट रहा है – और यह तुलना इस बात से प्रकाश पाती है कि हव्वा आदम के बाद किस प्रकार बनाई गई।

पहला संभावित अर्थ यह है कि पौलुस पद 13 में शायद उस ढंग की ओर संकेत कर रहा है जिससे परमेश्वर ने हव्वा के अस्तित्व में आने से पहले आदम को निर्देश दिया था। क्या उसे यह निर्देश परमेश्वर से सीधे नहीं, बल्कि आदम के द्वारा मिला? यदि हाँ, तो क्या इसीलिए शैतान ने उसे निशाना बनाया? इससे यह समझ में आता कि क्यों कहा गया है कि हव्वा धोखा खा गई, जबकि आदम नहीं। इस प्रकार पढ़ें तो हव्वा का पाप उसके अपेक्षाकृत उथले दृढ़ विश्वास पर हुए हमले का परिणाम था, इसलिए वह धोखा था, जबकि आदम का पाप खुली आँखों से किया गया, इसलिए वह धोखा नहीं, विद्रोह था।[300] उस स्थिति में पौलुस शायद इस बात को उभार रहा हो कि इफिसुस की स्त्रियों को सुसमाचार पर और उसकी भक्तिपूर्ण जीवन की बुलाहट पर अपनी पकड़ मज़बूत करने की आवश्यकता है। यद्यपि "हुमिनयुस और सिकन्दर" जैसे पुरुष (जो शैतान के कारिंदे थे) पहले झूठी शिक्षा लाए थे, फिर भी इफिसुस की बहुत सी स्त्रियाँ (जो हव्वा जैसी थीं) उसमें सबसे बुरी तरह फँस गई थीं, और इसलिए वे दूसरों को शिक्षा देने की स्थिति में नहीं थीं (पद 12), बल्कि उन्हें अधीनता और शान्ति के साथ परमेश्वर का वचन फिर से सीखने की आवश्यकता थी (पद 11)। इसके विपरीत, कलीसिया में बचे हुए पुरुष दृढ़ खड़े रहे, इसलिए उन्हें इस आदेश की आवश्यकता नहीं थी।

दूसरी संभावना यह है कि "आदम पहले, उसके बाद हव्वा बनाई गई" को उत्पत्ति 2 पर मनन करने का निमंत्रण माना जाए। पौलुस दूसरी जगह कहता है कि "हव्वा आदम से बनाई गई, और हव्वा आदम के लिए बनाई गई"[301] – जिससे उसका अर्थ है कि हव्वा का अस्तित्व और उद्देश्य उसके साथी के रूप में आदम के अस्तित्व और उद्देश्य के साथ गहराई से गुँथे हुए हैं। हो सकता है कि पौलुस इफिसुस की उस कथा को सुधार रहा हो जिसके अनुसार स्त्रियों को पुरुषों की आवश्यकता नहीं थी। यदि ऐसा है, तो हव्वा की भूल इस बात से और बढ़ गई कि उसने परीक्षा का सामना अपने साथी आदम का ध्यान किए बिना या उस पर निर्भर हुए बिना किया। यह अंतर्दृष्टि समझाती है कि वह कैसे धोखा खा रही थी, जबकि आदम, जो आसपास ही था, धोखा नहीं खा रहा था। इस दृष्टिकोण के अनुसार पौलुस इफिसुस की उन स्त्रियों का सामना करता है जो अपने भाइयों को स्वतंत्र या अनादरपूर्ण ढंग से "शिक्षा" देती थीं, और उत्पत्ति की उस कहानी को भूल गई थीं जो आदिरूप के रूप में हव्वा की बेटियों को याद दिलाती कि वे आदम के बेटों का आदर करें और उनके साथ घनिष्ठ साझेदारी रखें।

299. Cynthia Westfall, Paul and Gender, अध्याय 4
300. वास्तव में पौलुस के लिए हव्वा के धोखा खाने का इस प्रकार प्रयोग करना सामान्य बात है – सृष्टि की व्यवस्था की दुहाई के रूप में नहीं, बल्कि उस प्रकार के धोखे के उदाहरण के रूप में जिससे बचना है – जैसा वह एक कलीसिया से कहता है: "परन्तु मैं डरता हूँ कि जैसे साँप ने अपनी चतुराई से हव्वा को बहकाया, वैसे ही तुम्हारे मन उस सिधाई और पवित्रता से जो मसीह के साथ होनी चाहिए, कहीं भ्रष्ट न किए जाएँ।" (2 कुरिन्थियों 11:3)
301. 1 कुरिन्थियों 11:8-9

कौन सा अर्थ सही है? यद्यपि मुझे दूसरा अर्थ अधिक पसंद है, हम निश्चित नहीं हो सकते। फिर भी, इन दोनों अर्थों की यह ख़ूबी है कि दोनों इफिसुस की पापी स्त्रियों, पौलुस के निषेध (पद 12) और समर्थन-सामग्री (पद 13-14) के बीच एक जोड़ने वाला सूत्र खींचते हैं, और इस प्रकार खींचते हैं कि पद 13 और पद 14 के विचार आपस में संगत रहते हैं।[302]

इफिसुस की स्त्रियों का असली पाप

इफिसुस की इन बहुत सी स्त्रियों ने ऐसा क्या किया था कि ऐसा प्रतिबंध आवश्यक हुआ? उत्तर उसी बात में मिलता है जिसे वर्जित किया जा रहा है। "मैं अभी किसी स्त्री को शिक्षा देने या किसी पुरुष पर authentein करने की अनुमति नहीं देता।"

इस बिंदु पर पूछने योग्य एक निर्णायक प्रश्न यह है कि क्या पौलुस दो अलग-अलग कार्यों पर प्रतिबंध लगा रहा है (शिक्षा देना और authentein करना), या दो पहलुओं वाले एक ही कार्य पर (authentein वाले ढंग से शिक्षा देना)। यद्यपि Köstenberger अलग-अलग कार्यों के पक्ष में तर्क देता है, फिर भी बहुत से पूरकतावादी, Craig Blomberg और Kathy Keller समेत, तर्क देते हैं कि दोनों क्रियाओं को जोड़ने वाला "या" (यूनानी: oude) शब्द वास्तव में क्रियाओं को एक ही कार्य में मिला देता है, जिसके दो आपस में गुँथे हुए पहलू हैं।

oude शब्द पर Philip Payne का अध्ययन Köstenberger के तर्कों का खंडन करता है और तर्क देता है कि बात ऐसी ही है।[303] दिलचस्प बात यह है कि Piper ने, authentein का अर्थ ग़लत समझने के बावजूद, 1989 में ही यह दृष्टिकोण अपना लिया था, जब उसने कहा, "'शिक्षा देना' शब्द ... संभवतः एक ऐसी शिक्षा का अर्थ देता है जो किसी न किसी रूप में अधिकार से जुड़ी है। शिक्षा देना और अधिकार चलाना साथ-साथ चलते हैं।"[304] इस प्रकार पढ़ें, तो "शिक्षा देना" शब्द उसी तरह अपने आप में अकेला नहीं खड़ा होता जैसे hit and run (टक्कर मारकर भाग जाना) में "hit" (टक्कर मारना) अकेला नहीं खड़ा होता। हर शब्द का अर्थ और उसकी झलक उसके साथी शब्द की उपस्थिति से बदल जाती है, लगभग उसी तरह जैसे loud and clear (ज़ोर से और साफ़-साफ़) में "loud" की झलक loud and proud (बेबाक और गर्व के साथ) में उसकी झलक से भिन्न है।

आख़िरकार, इस पूरे अध्याय में पौलुस शब्दों या वाक्यांशों को जोड़-जोड़कर एक-एक विचार बनाने की प्रवृत्ति रखता है। पौलुस "राजाओं और सब ऊँचे पदवालों", "विश्राम और चैन", "भक्ति और गम्भीरता", "प्रचारक और प्रेरित", "मैं सच कहता हूँ, झूठ नहीं बोलता", "क्रोध और विवाद", "संकोच और संयम",

302. इनमें से कोई भी अर्थ पद 13 को एक कारण और पद 14 को दूसरा कारण नहीं मानता, बल्कि दोनों को एक करके पद 12 के समर्थन में एक ही संगत दृष्टांत देता है – आदम-हव्वा की कहानी को इस प्रकार दोबारा सुनाकर कि वह विशेष रूप से इफिसुस की कलीसिया की स्थिति से जुड़ती है, जैसा कि स्वयं पत्री से प्रमाणित होता है।
303. देखें www.bit.ly/332TPjf. Jamin Hübner का लेख भी देखें, जिसमें वह इस बात को और बारीकी से रखते हुए दो पहलुओं वाले एक ही कार्य के विचार को थामे रहता है: www.bit.ly/3EKqWM8
304. देखें www.bit.ly/3GOjAce. Schreiner भी यही निष्कर्ष निकालता है: "1 तीमुथियुस 2:11-15 केवल अधिकारपूर्ण शिक्षा को वर्जित करता है।"

"चुपचाप ... अधीनता" की बात करता है। मैं Payne, Blomberg और Keller की इस स्थापना को स्वीकार करता हूँ: जब पौलुस दो क्रियाओं का एक साथ प्रयोग करता है, तो उसका अर्थ अक्सर एक ही बात होता है (दो नहीं), जैसा कि पद 12 में है।[305] इस प्रकार पौलुस एक ऐसी स्थिति को संबोधित करता है जिसमें स्त्रियाँ, झूठी शिक्षा के प्रभाव के कारण, ग़लत ढंग से "पुरुषों को शिक्षा देती हैं और साथ ही पुरुषों पर authentein करती हैं" या "पुरुषों को authentein वाले ढंग से शिक्षा देती हैं"।

तो इफिसुस की स्त्रियों का पाप क्या है? कलीसिया में झूठी शिक्षा के हमले के कारण किसी न किसी प्रकार बहुत सी स्त्रियाँ पुरुषों के साथ बुरा व्यवहार करने लगी हैं। पुरुषों के लिए ezer kenegdos होने के बजाय, वे उत्तेजक या दिखावटी कपड़े पहन रही हैं (पद 9); व्यवधान डाल रही हैं और सीखने को तैयार नहीं हैं (पद 11, 12c); पुरुषों को (उनकी बात सुनने या उनसे सीखने को तैयार होने के बजाय) ऐसे ढंग से शिक्षा दे रही हैं जो उन पर नियंत्रण अपने हाथ में ले लेता है (पद 12b)। इस सब में वे पुरुषों का अनादर करती हैं और अपने आप को और अधिक धोखे के लिए खुला छोड़ देती हैं (पद 13-14)। पौलुस का समाधान यह है कि ये स्त्रियाँ, यीशु के सभी अच्छे चेलों की तरह, अधीनता से सीखने वाले की विनम्र मुद्रा में लौट आएँ (पद 11)। उन्हें पुरुषों पर इतने ज़ोर-ज़बरदस्ती से हुक्म चलाना बंद करना चाहिए और इसके बजाय कलीसिया के मेल की रक्षा करनी चाहिए (पद 12) – पुरुषों के साथ उस पवित्र परस्पर निर्भरता की फिर से पुष्टि करके जो परमेश्वर ने आरंभ से स्त्रियों के लिए चाही थी, जैसा उत्पत्ति 2 में है (पद 13), और साथ ही हव्वा की उस भूल से बचकर कि उसने अपने आप को आदम से अलग कर लिया, विशेषकर जब शैतान धोखा देने का प्रयास करता है, जैसा उत्पत्ति 3 में है (पद 14)।

संक्षेप में, मैंने यह दृष्टिकोण अपनाया है कि समस्या यह थी कि स्त्रियाँ पुरुषों से कैसे व्यवहार करती थीं और उन्हें कैसे शिक्षा देती थीं। परन्तु दूसरे विद्वान, जैसे Men and Women in Christ में Andrew Bartlett, इसके अतिरिक्त यह तर्क देते हैं कि समस्या यह भी थी कि इफिसुस की स्त्रियाँ क्या सिखा रही

305. यदि हम अब भी निश्चित नहीं हैं कि पौलुस के मन में दो पहलुओं वाला एक ही कार्य है, तो ध्यान दें कि "शिक्षा देना या authentein करना" किस बात का विपरीत है, जैसा पद 11 में और पद 12 के अंत में व्यक्त किया गया है: ऐसी स्त्रियाँ जो चुपचाप अधीनता के साथ सीखती हैं (पद 11) – जो वास्तव में एक ही विचार को बताने के लिए बहुत से शब्दों का प्रयोग है। वास्तव में पद 12 का अंत इसी विचार को एक बार फिर दोहराता है, पर इस बार इसे केवल एक शब्द में समेट देता है: "वह चुपचाप रहे।"

थीं।[306] Bartlett का तर्क है कि ये स्त्रियाँ केवल झूठी शिक्षा से प्रभावित ही नहीं हुई थीं; वे उसकी प्रचारक बन गई थीं। इसलिए इफिसुस की स्त्रियों को 1) किसी को भी शिक्षा देना और 2) पुरुषों को नियंत्रित करना बंद करना था। यह संभव है: पौलुस ने पहले दो पुरुष झूठे शिक्षकों को कलीसिया से निकाल दिया था (1:20), पर ये स्त्रियाँ बनी रहीं। हम जानते हैं कि पौलुस की पत्री का मुख्य भार झूठी शिक्षा से निपटना है (1:3), और यह कि इफिसुस के झूठे शिक्षक विशेष रूप से स्त्रियों को निशाना बनाते थे।[307] कलीसिया की बहुत सी स्त्रियाँ अब "घर-घर फिरती" थीं, "बकबक करती रहती और औरों के काम में हाथ डालती और अनुचित बातें बोलती" थीं (5:13) (जो पास्टरीय पत्रियों में से एक के एक और स्थान से मेल खाता है, जहाँ पौलुस कुछ ऐसे लोगों का मुँह बंद करना चाहता है जो "अनुचित बातें सिखा" रहे थे)।[308] ये स्त्रियाँ झूठी शिक्षा की ओर मुड़ गई थीं (5:15)[309] – इसलिए पौलुस इन ग़लत विचारों के उनके प्रचार को भी तब तक के लिए चुप कराता है जब तक वे सिद्धांत और भक्ति में फिर से बहाल न हो जाएँ।

चाहे किसी भी ढंग से समझें, इफिसुस की स्त्रियों के प्रति पौलुस का सुधार हमारी आधुनिक संवेदनाओं को कठोर लग सकता है, पर जब हम समझते हैं कि क्या दाँव पर लगा था, तो हम यह हस्तक्षेप करने में उसकी बुद्धिमानी की बेहतर सराहना कर सकते हैं। यह पापपूर्ण व्यवहार, और इसके पीछे के विधर्मी विचार भी,

306. यद्यपि सभी पूरकतावादी विद्वान तर्क देते हैं कि 1 तीमुथियुस 2 में पौलुस जिस समस्या को संबोधित करता है, वह यह थी कि स्त्रियाँ पुरुषों को शिक्षा दे रही थीं, गैर-पूरकतावादी विद्वान इस दृष्टिकोण को अस्वीकार करते हैं, पर फिर तीन दृष्टिकोणों में बँट जाते हैं: कि समस्या यह थी कि स्त्रियाँ पुरुषों को क्या सिखा रही थीं; या यह कि स्त्रियाँ पुरुषों को कैसे सिखा रही थीं; या दोनों का मेल। इस अध्याय में मैं दूसरा दृष्टिकोण अपनाता हूँ: समस्या वह ज़ोर-ज़बरदस्ती वाला, अहंकारी या अनादरपूर्ण ढंग था जिससे वे स्त्रियाँ, जो झूठी शिक्षा से प्रभावित थीं पर आवश्यक नहीं कि उसकी प्रचारक भी हों, पुरुषों के साथ व्यवहार करती थीं और उन्हें शिक्षा देती थीं। परन्तु पहला या तीसरा दृष्टिकोण भी संभव है, जैसा यह अनुच्छेद संक्षेप में बताता है। Andrew Bartlett "Men and Women in Christ" के अध्याय 11 से 13 में और परिशिष्ट 3–6 में इसके पक्ष में सबसे मज़बूत और सबसे पूर्ण तर्क देता है जो मैंने पढ़ा है। Köstenberger के इस विश्लेषण को स्वीकार करके कि पौलुस शायद दो अलग-अलग, यद्यपि एक दूसरे से मिलते-जुलते, कार्यों को वर्जित कर रहा है – जिसे Bartlett इस प्रकार पढ़ता है: "मैं किसी स्त्री को न (किसी को भी) शिक्षा देने की अनुमति देता हूँ, न किसी पुरुष पर authentein करने की" (परिशिष्ट 4) – वह 1 तीमुथियुस के प्रमाणों से यह तर्क स्थापित करता है कि पुरुष झूठे शिक्षक कलीसिया छोड़ चुके थे, पर फिर भी "भोग-विलास में जीने वाली कई धनी जवान विधवाएँ घर-घर जाकर जादू-टोने और ज्योतिष से जुड़ी झूठी और व्यर्थ कथाएँ आगे फैला रही थीं, साथ ही अपने धन का दिखावा कर रही थीं, मर्यादाहीन कपड़े पहने थीं और हर एक किसी ऐसे पुरुष की खोज में थी जो उसकी यौन इच्छाओं को तृप्त करे।" (पृ. 259) "अपनी पूरी पत्री में पौलुस झूठे शिक्षकों का उल्लेख लिंग-निरपेक्ष रूप से करता है। हम 1:3 और 5:13 से यह अनुमान लगा सकते हैं कि उसके मन में झूठी शिक्षिकाओं के रूप में कई स्त्रियाँ थीं, जिनसे तीमुथियुस को आगे निपटना था।" (पृ. 261) "तीमुथियुस को उन्हें सुधारना होगा और यह सुनिश्चित करना होगा कि उनमें से कोई भी तब तक प्राचीन या सेविका (डीकन) का पद न ले, जब तक वह अपना सुधरा हुआ जीवन सिद्ध न कर दे।" (पृ. 263) इस दृष्टिकोण के अनुसार हव्वा, इफिसुस की स्त्रियों की तरह, "शैतान के द्वारा [अर्थात झूठे शिक्षकों के द्वारा] धोखा खाकर वर्जित ज्ञान ग्रहण कर बैठी, और उसने एक पुरुष को झूठी शिक्षा दी और उस पर हावी हो गई, जिसके भयानक परिणाम हुए।" (पृ. 285) यद्यपि Bartlett का दृष्टिकोण मेरे दृष्टिकोण से भिन्न है, हम दोनों एक ही स्थान पर पहुँचते हैं: "1 तीमुथियुस 2 कलीसिया में स्त्रियों के शिक्षा देने पर, या कलीसिया में स्त्रियों द्वारा अधिकार के प्रयोग पर, किसी सामान्य प्रतिबंध को उचित नहीं ठहराता।" (पृ. 286) यदि यह सिद्ध किया जा सके (मुझे नहीं लगता कि किया जा सकता है) कि पौलुस दो अलग-अलग कार्यों ("शिक्षा देना" और "किसी पुरुष पर authentein करना") की बात करता है, न कि – जैसा मैं मानता हूँ – दो आपस में जुड़े कार्यों की ("authentein वाले ढंग से शिक्षा देना"), तो Bartlett का दृष्टिकोण मेरे दृष्टिकोण से बेहतर है, क्योंकि उसका दृष्टिकोण, मेरे दृष्टिकोण का बहुत सा भाग समेटते हुए, यह भी समझाता है कि इस स्थिति में स्त्रियों को (उनके बहाल होने तक) सामान्य रूप से शिक्षा देने से भी क्यों वर्जित किया गया हो सकता है।

307. देखें 2 तीमुथियुस 3:6-8।

308. तीतुस 1:11

309. इसके अतिरिक्त, यदि हम 1 तीमुथियुस को दूसरी दोनों पास्टरीय पत्रियों के साथ रखकर देखें, तो यह और भी स्पष्ट हो जाता है। 2 तीमुथियुस 3:6-7 उन स्त्रियों की बात करता है जिन्हें झूठे शिक्षक भटका रहे हैं, जबकि तीतुस 1:10-11 उन "बकवादियों और धोखा देने वालों" की बात करता है जिनका "मुँह बंद करना चाहिए"।

कलीसिया को उसके आसपास के प्राचीन समाज की दृष्टि में बदनाम कर देते, जिसमें रीति के अनुसार स्त्रियों से पुरुषों का आदर करने की अपेक्षा की जाती थी, न कि सबके सामने उन्हें लज्जित करने की। पत्री में दूसरी जगह पौलुस चिंतित है कि मसीही स्त्रियों का रोज़मर्रा के जीवन में अनुचित व्यवहार कलीसिया की प्रतिष्ठा को हानि पहुँचा सकता है, यदि वे ऐसा आचरण करें जो "निंदा के योग्य" हो और शैतान को "बदनाम करने का अवसर" दे।[310] यदि कभी किसी समूह के लोगों को कुछ समय के लिए चुप कराने, और उनसे यह कहने का उचित कारण था कि वे फिर से विनम्रता के साथ हमारे शिक्षक यीशु के चरणों में बैठें, तो वह यही था।

यदि केवल कुछ स्त्रियाँ ऐसा कर रही थीं, तो पौलुस यह क्यों कहता है कि सभी स्त्रियों को पुरुषों को authentein वाले ढंग से शिक्षा नहीं देनी चाहिए? उसी कारण से, जिस कारण वह 1 तीमुथियुस 2 में पहले सभी पुरुषों से बिना झगड़े प्रार्थना करने को, और सभी स्त्रियों से दिखावटी कपड़े न पहनने को कहता है, यद्यपि निःसंदेह केवल कुछ पुरुष झगड़ते थे और कुछ स्त्रियाँ भड़कीले कपड़े पहनती थीं।

सबसे निर्णायक बात यह है कि पौलुस भक्तिपूर्ण पास्टर या शिक्षक बनने का प्रयास करने वाली स्त्रियों के विरुद्ध कुछ नहीं कह रहा। जो पूरकतावादी विद्वान इस आधार पर इस बात का विरोध करते हैं कि अगला खंड प्राचीनों और सेवकों (डीकनों) के विषय में है, वे बात को बहुत दूर तक खींच ले जाते हैं। जब पौलुस कहता है, "यह बात सत्य है कि जो अध्यक्ष होना चाहता है, वह भले काम की इच्छा करता है। अतः अध्यक्ष को ..." तो वह एक नया खंड आरंभ कर रहा है। पौलुस की बहुत सी पत्रियों में अलग-अलग खंड हैं जो आवश्यक नहीं कि एक दूसरे से जुड़े हों। 1 तीमुथियुस की पत्री में ऐसे छह खंड हैं जो, यद्यपि झूठी शिक्षा से क्षतिग्रस्त एक कलीसिया को सुधारने के पौलुस के प्रयास से ढीले-ढाले रूप में जुड़े हैं, अलग-अलग विषयों से संबंध रखते हैं। इसलिए अध्याय 2 में सेवकाई की भूमिकाओं के बारे में कुछ भी नहीं है, केवल उस ढंग के बारे में है जिससे मसीही गतिविधियाँ (जैसे प्रार्थना करना, कपड़े पहनना, सीखना) बेहतर ढंग से की जानी चाहिए (बिना विवाद के, उचित रूप से, अधीनता के साथ, आदि)। इसके अतिरिक्त, पौलुस – जैसा पूरकतावादी तर्क देते हैं – स्त्रियों में अगुवाई की हर इच्छा को क्यों कुचल देता, और फिर कुछ ही पदों बाद "जो" (और वह इसके लिए एक सामान्य, इसलिए दोनों लिंगों को समेटने वाला शब्द प्रयोग करता है) "अध्यक्ष होना चाहता है", उसकी इच्छा की पुष्टि करता?[311] वास्तव में उसने अभी-अभी 2:10 में इफिसुस की स्त्रियों को भले "कामों" (ergon) के लिए बुलाया है – अब 3:1 में वह कहता है कि अध्यक्ष होना ऐसा ही एक भला "काम" (ergon) है।

पति और पत्नियाँ

यद्यपि अधिकांश विद्वान यह निष्कर्ष निकालते हैं कि पौलुस इस बात को संबोधित कर रहा है कि कलीसिया में सामान्य रूप से स्त्रियाँ सामान्य रूप से पुरुषों के साथ कैसे ग़लत व्यवहार कर रही हैं, कुछ लोग – जैसे मार्टिन लूथर (Martin Luther) – इसे ऐसे पढ़ते हैं कि पौलुस पत्नियों द्वारा अपने पतियों के साथ ग़लत

310. 1 तीमुथियुस 5:7, 14
311. नया नियम tis शब्द का प्रयोग पुरुषों और स्त्रियों दोनों के लिए करता है। इसका अर्थ है "कोई भी", "कोई" या "एक"। उदाहरण के लिए, लूका 10:38 में इसका प्रयोग विशेषण के रूप में एक "स्त्री", "मार्था", के लिए हुआ है।

व्यवहार के ढंग से निपट रहा है। चूँकि "एक स्त्री" और "एक पुरुष" का अनुवाद "एक पत्नी" और "एक पति" भी किया जा सकता है, CEB पद 12 का अनुवाद इस प्रकार करता है: "मैं किसी पत्नी को अपने पति को शिक्षा देने या उसे नियंत्रित करने की अनुमति नहीं देता।" ये अनुवादक ध्यान देते हैं कि पौलुस पुरुषों (पद 8) और स्त्रियों (पद 9) के लिए बहुवचन शब्द से हटकर पद 11-12 में दोनों के लिए एकवचन का प्रयोग करता है। वे पूछते हैं कि बहुवचन से एकवचन में यह बदलाव क्यों, जब तक कि वह विशिष्ट लोगों (दंपतियों) और विशिष्ट संबंधों (विवाह) की ओर संकेत न कर रहा हो? यद्यपि मैं अभी भी किसी निर्णय पर नहीं पहुँचा हूँ, मुझे लगता है कि इस खंड को इस तरह पढ़ने के विरुद्ध दिए गए तर्क इसका खंडन नहीं करते।[312]

यह मानने के चार कारण हैं कि यह खंड संभवतः सामान्य रूप से स्त्री-पुरुष संबंधों की नहीं, बल्कि विवाहों की ओर संकेत करता हो। पहला, "पुरुष" के लिए सामान्य एकवचन का कोई अर्थ नहीं बनता। यदि पौलुस, जैसा पूरकतावादी कहते हैं, किसी स्त्री (एकवचन) को कलीसिया में इसलिए शिक्षा देने से रोकने का प्रयास कर रहा था कि वहाँ पुरुष (बहुवचन) उपस्थित थे, तो वह "पुरुषों" के बजाय "एक पुरुष" क्यों कहता है? यह कहना अधिक स्वाभाविक होता, "मैं किसी स्त्री (एकवचन) को ... पुरुषों (बहुवचन) को शिक्षा देने की अनुमति नहीं देता" – जब तक कि पौलुस यह न चाहता हो कि हम इफिसुस में कलीसिया की कुछ ऐसी सभाओं की कल्पना करें जहाँ केवल एक ही पुरुष उपस्थित हो, जो असंभाव्य है।

दूसरा, पौलुस अपने प्रतिबंध का आधार आदम और हव्वा को बनाता है, जो पवित्रशास्त्र का आदिरूप विवाहित दंपती हैं (पद 13-14), और फिर संतान-जन्म की बात भी करता है (पद 15), जो स्वभाव से घरेलू विषय है और इसलिए अधिक संभावना है कि विवाह के संदर्भ की ओर संकेत करता है।

तीसरा, लगभग हर उस स्थान पर जहाँ पौलुस यूनानी शब्द aner और gune एक साथ प्रयोग करता है, उसका अर्थ पति और पत्नी होता है। सामान्यतः जब वह लिंग के आधार पर व्यक्तियों की तुलना करना चाहता है (और पूरकतावादी कहते हैं कि यहाँ पौलुस इसी की बात कर रहा है), तो वह दूसरे यूनानी शब्दों का प्रयोग करता है। उदाहरण के लिए, गलातियों 3:28 ("न कोई नर, न नारी") में वह arsen और thely

312. विभिन्न पूरकतावादी इस पाठ के विरुद्ध तीन कारणों से तर्क देते हैं। पहला, कुछ कहते हैं कि यदि पौलुस का अर्थ पति और पत्नियाँ होता, तो वह इन शब्दों से पहले "their" (उनकी/उनके) शब्द जोड़ता। पर विवाह के विषय में अपनी किसी भी मुख्य शिक्षा में पौलुस 'पत्नी' और 'पति' से पहले शायद ही कभी संबंधवाचक सर्वनाम का प्रयोग करता है (देखें कुलुस्सियों 3:18-19; इफिसियों 5:22-25; 1 कुरिन्थियों 7:2-4, 11, 14, 33)। दूसरा, कुछ कहते हैं कि यह अजीब होगा कि पौलुस पुरुषों को एक समूह के रूप में (पद 8) और फिर स्त्रियों को एक समूह के रूप में (पद 9-10) संबोधित करे, और फिर अचानक केवल विवाहित स्त्रियों और विवाहित पत्नियों से बात करे। वास्तव में पौलुस के लिए यह बहुत स्वाभाविक होगा कि वह अपनी पत्री में कहीं उन विवाहों को संबोधित करे जो निःसंदेह झूठी शिक्षा से प्रभावित हुए थे – और इसके लिए यह स्थान किसी भी दूसरे स्थान जितना ही उपयुक्त है। तीसरा, कुछ कहते हैं कि पौलुस अपनी पत्री में बिना किसी नियम के बहुवचन और एकवचन के बीच बदलता रहता है, और इसलिए इसे बहुत अधिक महत्व नहीं दिया जाना चाहिए। उदाहरण के लिए, पौलुस एकवचन में एक सामान्य अध्यक्ष (3:2) और उस मज़दूर की बात करता है जो अपनी मज़दूरी का हक़दार है (5:18)। और बहुवचन में प्राचीनों की बात करने (5:17) के बाद, खंड के आगे बढ़ने पर वह एकवचन पर आ जाता है (5:19)। परन्तु अपनी बाकी पत्रियों में पौलुस कभी भी सामान्य एकवचन का प्रयोग बिना किसी नियम के नहीं करता। उसके पीछे हमेशा कोई उद्देश्य होता है। 3:2 में वह एकवचन में प्राचीन की बात इसलिए करता है कि अब वह उस प्रकार के व्यक्ति की बात करता है जिसे तीमुथियुस को प्राचीन के रूप में खोजना चाहिए। एकवचन 'मज़दूर' (5:18) का प्रयोग इसलिए हुआ है कि जिस उद्धरण का वह प्रयोग करता है वह एकवचन में है। जहाँ तक बहुवचन प्राचीनों (5:17) से एकवचन (5:19) पर बदलाव की बात है, 5:17 उनकी सामूहिक अगुवाई की बात करता है, जबकि 5:19 अलग-अलग प्राचीनों के विरुद्ध लाए गए आरोपों की ओर संकेत करता है।

शब्दों का प्रयोग करता है – वही शब्द जिनका प्रयोग यीशु ने भी किया जब उन्होंने स्त्री-पुरुष के रूप में मनुष्यों की सृष्टि की बात की (देखें मत्ती 19:4: "सृजनहार ने उन्हें नर और नारी करके बनाया")।

चौथा, "एक स्त्री" द्वारा "एक पुरुष" को शिक्षा देने का उल्लेख भिन्न लिंग के दो व्यक्तियों के बीच निजी बातचीत का संकेत देता है। एक ऐसी प्राचीन संस्कृति में, जहाँ मर्यादा को बहुत ऊँचा स्थान दिया जाता था, ऐसा प्रायः केवल घरों में ही होता था।

यदि पौलुस सचमुच विवाहों की बात कर रहा है, तो इसका अर्थ यह हो सकता है कि वह इस बात से चिंतित है कि इफिसुस की पत्नियाँ, झूठी शिक्षा से प्रभावित होकर, अपने पतियों को अनौपचारिक रूप से नियंत्रणकारी और ज़ोर-ज़बरदस्ती वाले ढंग से शिक्षा देने की आदी हो गई थीं, और हव्वा की तरह आगे और धोखा खाने के ख़तरे में थीं, क्योंकि वे स्वतंत्र होकर अपने पतियों के साथ विनम्र साझेदारी से अलग हो गई थीं। इस प्रकार व्याख्या करें तो पौलुस बुद्धिमानी से इसे बीच में रोकता है और इन पत्नियों से आग्रह करता है कि वे विनम्र, सीखने को तैयार चेलों के रूप में फिर से परमेश्वर के वचन के अधीन आएँ, और साथियों के रूप में अपने पतियों के साथ खड़ी हों।

दिलचस्प बात यह है कि दृढ़ता से पूरकतावादी Acts 29 Movement (एक्ट्स 29 आंदोलन) की अग्रणी कलीसिया ने स्त्रियों को शिक्षा देने और अगुवाई से बाहर रखने को उचित ठहराने के लिए एक लंबा बाइबल-आधारित विश्लेषण लिखा, फिर भी उसे इसके पक्ष में केवल एक ही तर्क मिला: 1 तीमुथियुस 2:12 का पूरकतावादी पाठ। फिर भी उस लेख में वे (बिल्कुल उचित रूप से) स्वीकार करते हैं कि पौलुस शायद केवल विवाहों की बात कर रहा हो।[313] पर देखिए, यदि पौलुस विशेष रूप से विवाहों की बात करता है, तो सामान्य रूप से स्त्रियों को सामान्य रूप से पुरुषों की अगुवाई करने और उन्हें प्रचार करने से बाहर रखने का उनका एकमात्र तर्क धराशायी हो जाता है।

धुँधले पाठ बनाम स्पष्ट पाठ

मुझे पूरा विश्वास है कि 1 तीमुथियुस 2:11-14 में पौलुस इफिसुस की एक विशिष्ट स्थिति को संबोधित करता है जिसमें कुछ स्त्रियाँ पाप कर रही थीं। इसलिए पद 12 को हर जगह की सभी कलीसियाओं के लिए एक सार्वभौमिक आज्ञा के रूप में नहीं पढ़ा जाना चाहिए, जब तक कि किसी विशेष कलीसिया में भी कुछ ऐसी स्त्रियाँ न हों जो पुरुषों को authentein वाले ढंग से शिक्षा दे रही हों।

परन्तु अब मैं बाद में सूझा एक महत्त्वपूर्ण विचार प्रस्तुत करता हूँ: यह खंड इतना धुँधला है कि वैसे भी यह किसी सिद्धांत या कलीसियाई प्रथा का आधार बनने योग्य नहीं है।

313. "The Role of Women in the Village Church' में टिप्पणी 160 देखें: www.bit.ly/3CFKgJO

व्याख्या-शास्त्र (hermeneutics – पवित्रशास्त्र की व्याख्या के सिद्धांत) का एक नियम है कि धुँधले पाठों की व्याख्या अधिक स्पष्ट पाठों के प्रकाश में की जानी चाहिए।[314] परिधि के पाठ – जिनमें वे जो कहते प्रतीत होते हैं उसका प्रायः केवल एक ही बार उल्लेख होता है, जैसे "स्वर्गदूतों के कारण" सिर ढँकने के निर्देश,[315] या "मरे हुओं के लिए बपतिस्मा" लेना,[316] या मसीह का "कैदी आत्माओं" को प्रचार करना,[317] या "स्त्रियों का बच्चे जनने के द्वारा उद्धार पाना"[318] – उन्हें स्पष्ट, केंद्रीय पाठों जितना भार नहीं दिया जाना चाहिए। इन अधिक धुँधले खंडों पर हठधर्मी होने या उन पर बड़े-बड़े सिद्धांत या प्रथाएँ खड़ी करने के बजाय, कलीसियाओं को इनकी अपनी व्याख्याओं को अधिक नम्रता और ढीली पकड़ के साथ थामना चाहिए, जबकि वे पवित्रशास्त्र के अधिकार को आत्मविश्वास और दृढ़ता से थामे रहें।

धुँधले (अस्पष्ट) पवित्रशास्त्र-अंश किसी निर्णायक सिद्धांत के लिए वैध आधार नहीं हैं। स्पष्ट शिक्षाओं को प्राथमिकता मिलनी चाहिए। धन्यवाद की बात है कि बाइबल के अधिकांश पाठ स्पष्ट हैं; केवल कुछ ही धुँधले हैं।[319] कौन-सी बातें किसी पाठ को धुँधला बनाती हैं? उनमें प्रायः असामान्य रूप से अधिक अस्पष्ट शब्द होते हैं; या वे दूसरे अंशों की बात के उलट कहते प्रतीत होते हैं; या उन्हें ठोस परिस्थितियों में लागू करना विशेष रूप से कठिन होता है; या बाइबल का कोई दूसरा अंश वही बात कहता दिखाई नहीं देता; या वह प्राचीन परिस्थिति, जिसे वह अंश संबोधित करता है, उलझन भरी होती है। इसलिए उनकी अनेक भिन्न-भिन्न व्याख्याएँ निकलती हैं और प्रमुख विद्वानों के बीच उन पर ज़ोरदार बहस होती है।[320] तो, मैं कलीसिया के इतिहास के पिछले सौ वर्षों में न तो इससे अधिक विवादित किसी अंश को जानता हूँ, न इससे अधिक धुँधले किसी पाठ को। इन सभी कसौटियों पर 1 तीमुथियुस 2:12-15 एक बहुत ही धुँधला पाठ है।

इसकी निर्णायक क्रिया, authentein, एक धुँधला शब्द है, जो नए नियम में केवल एक बार आता है, और पौलुस के जीवनकाल के बाइबल से बाहर के साहित्य में भी बहुत कम मिलता है। Wolters (बहुत अधिक) आश्वस्त है कि इस शब्द का "बहुत संभवतः" कोई नकारात्मक अर्थ नहीं है, जबकि वह पौलुस के समय के सबसे निकट के इस शब्द के आठ प्राचीन प्रयोगों का अध्ययन करता है और पाता है कि "इन यूनानी स्रोतों में इस शब्द के प्रयोग की दुर्लभता और अस्पष्टता ने विद्वानों में सहमति के अभाव में बड़ा योगदान दिया है," और यह कि "इन आठ में से अधिकांश किसी न किसी रूप में विवादित हैं – या तो इसलिए कि पाठ संदिग्ध है, या संदर्भ अस्पष्ट है, या तिथि पर विवाद है।" वास्तव में Wolters स्वयं इन आठ में से पाँच का अनुवाद इन अर्थों में करता है: "अधिकार अपने हाथ में लेना," "किसी से अधिक कुशल होना," "आरंभ करने वाला होना," "अपने ही बल पर काम करना," और "हत्या करना।" अर्थों की इस बेतहाशा विविधता के लिए

314. उदाहरण के लिए, दूसरी शताब्दी के कलीसियाई पिता तर्तुलियन (Tertullian) ने लिखा कि "अनिश्चित कथनों का निर्णय निश्चित कथनों के द्वारा, और अस्पष्ट कथनों का निर्णय साफ़ और स्पष्ट कथनों के द्वारा किया जाना चाहिए।" (Gregg Allison, Historical Theology, पृ. 122 में उद्धृत।)
315. 1 कुरिन्थियों 11:10
316. 1 कुरिन्थियों 15:29
317. 1 पतरस 3:19
318. 1 तीमुथियुस 2:15
319. हमें याद है कि पतरस ने स्वीकार किया था कि पौलुस के लेखों में कुछ बातें ऐसी हैं "जिनका समझना कठिन है" (2 पतरस 3:16)। पतरस का यह शब्द प्राचीन संसार में देववाणियों (oracles) के लिए भी प्रयोग होता था, जिनके एक से अधिक अर्थ निकल सकने की बात सबको मालूम थी।
320. उदाहरण के लिए, इब्रानियों 6:4-6 की व्याख्या की कम से कम 18 धाराएँ हैं, और 1 तीमुथियुस 2:12 की 12।

उसका स्पष्टीकरण यह है: "authentein चौथी शताब्दी से पहले काफ़ी हद तक भूमिगत (अर्थात् मौखिक) अस्तित्व में रहा, क्योंकि यह भाषा के एक उप-साहित्यिक स्तर का शब्द था।"[321] इसी कारण 1 तीमुथियुस 2:12 में इसके वास्तविक अर्थ पर बहस जारी है और इस पर स्याही की नदियाँ बह चुकी हैं।[322] (और बात केवल authentein की नहीं है – Schreiner कहता है, "पद 12 के हर शब्द पर विद्वानों में बहस है।"[323]) Jamin Hübner अपने PhD शोध-प्रबंध में इस शब्द के प्राचीन प्रयोगों पर हुए सबसे नए अध्ययनों का सावधानी से मूल्यांकन करता है, और पूरकतावादी विद्वानों की उचित आलोचना करता है:

एक बात यह कहना है कि "हम ठीक-ठीक नहीं जानते कि पहली शताब्दी में या 1 तीमुथियुस 2:12 में 'authentein' का क्या अर्थ था।" बिलकुल दूसरी बात यह कहना है कि "हम ठीक-ठीक नहीं जानते कि पहली शताब्दी में या 1 तीमुथियुस 2:12 में इस शब्द का क्या अर्थ था, इसलिए हम मान लेंगे कि पौलुस के इसे चुनने का कोई विशेष कारण नहीं था, कि इसमें किसी भी प्रकार की कोई बारीकी नहीं है और इसलिए इसका अर्थ सामान्य रूप से अधिकार चलाना है" – और फिर संसार भर की आधी कलीसिया को पास्टर बनने से रोक देना। यह ठोस तर्क नहीं है।[324]

authentein को "अधिकार चलाना" मानने से यह पद व्यावहारिक परिस्थितियों में एकरूपता से लागू करने के लिए विशेष रूप से कठिन, बल्कि असंभव भी हो जाता है। उदाहरण के लिए, क्या किसी महिला मिशनरी के लिए उचित है कि वह खड़ी होकर अविश्वासी पुरुषों को सुसमाचार की शिक्षा दे? यह अंश इस बारे में कुछ नहीं कहता कि "पुरुष" ने मन फिराया है या नहीं। यदि स्त्री पुरुष को शिक्षा नहीं दे सकती, तो किस आयु के लड़के को माँ या महिला युवा-अगुवा शिक्षा देना बंद कर दे? क्या स्त्रियाँ सेमिनरी में, या मिश्रित बाइबल-अध्ययन समूहों में, या मसीही सम्मेलनों में पुरुषों को शिक्षा दे सकती हैं? क्या पुरुष किसी स्त्री की लिखी सिद्धांत-संबंधी पुस्तक या बाइबल-टीका पढ़ सकते हैं? क्या कोई स्त्री किसी पैराचर्च संस्था (स्थानीय कलीसिया के ढाँचे से बाहर की मसीही सेवा-संस्था) की, या किसी ऐसी सेवकाई की अगुवाई कर सकती है जिसमें पुरुष उसके अधीन काम करते हों? कलीसिया में कोई स्त्री अगुवाई के किस स्तर तक पहुँच सकती है? (जब Köstenberger पूरकतावादियों को याद दिलाता है कि निषेध स्त्रियों की अगुवाई के विरुद्ध है, न कि केवल उनके पास्टर होने के विरुद्ध,[325] तो यह असंगत है कि स्त्रियों को सर्वोच्च स्तर की अगुवाई से वंचित किया जाए, पर फिर उन्हें पुरुषों पर निचले स्तर की अगुवाई करने दी जाए, जैसे छोटे समूह की अगुवाई या स्वयंसेवकों की किसी टीम की अगुवाई।) और 1 तीमुथियुस 2:12 की पूरकतावादी व्याख्या से केवल वरदान-प्राप्त स्त्रियाँ ही किनारे नहीं कर दी जातीं; पूरकतावादी ढंग से पढ़ने पर यही पद वह एकमात्र "बाइबल-आधारित" आधार बन जाता है, जिससे एक कथित अनधिकारिक, अनौपचारिक शिक्षा और एक

321. Al Wolters, "Women In The Church" में, अध्याय 2।
322. प्राचीन बाइबल-बाह्य साहित्य में authentein शब्द के विद्वत्तापूर्ण अध्ययन शब्दकोश-संबंधी और व्याख्या-संबंधी समस्याएँ उत्पन्न करते जा रहे हैं। देखें www.bit.ly/3EHxZ8a
323. अन्यत्र वह इस बात का खंडन भी करता है और उसे बढ़ा-चढ़ाकर भी कहता है, जब वह कहता है, "1 तीमुथियुस 2:12 पौलुस की स्पष्ट शिक्षा है और स्त्रियों की भूमिका को समझने के लिए यही मार्गदर्शक होनी चाहिए।" हम सबको मानना होगा कि यह बिलकुल भी स्पष्ट नहीं है।
324. देखें www.bit.ly/3BNaSY8 पृ. 245
325. "इस विषय को केवल 'कोई स्त्री प्राचीन/अध्यक्ष नहीं' तक सीमित कर देना अनुचित रूप से न्यूनतम दृष्टि हो सकती है। ... 1 तीमुथियुस 2:12 किसी पद पर स्त्रियों के आसीन होने के मात्र ऊपरी निषेध से कहीं अधिक मूलभूत वास्तविकताओं पर आधारित है।" स्रोत: www.bit.ly/3wsFsFr

औपचारिक, अधिकारपूर्ण शिक्षा के बीच भेद किया जाता है, जो प्रत्यक्षतः केवल पास्टरों के लिए उपयुक्त है। पूरकतावादी कलीसियाओं में कितने ही वरदान-प्राप्त पुरुष प्रचारकों को, जो पास्टर नहीं हैं, व्याख्या के इसी दो-फाड़ विभाजन के कारण प्रचार करने नहीं दिया गया? यदि एक ही पद की यह व्याख्या सचमुच "उस सत्य" का भाग है "जो हमें स्वतंत्र करता है," तो नए नियम के और कौन-से निर्देश मसीह की देह में इतनी अनिश्चितता, चिंता, अटकलबाज़ी, बाल की खाल निकालने वाले नियम-विचार, पीड़ा और फूट को जन्म देते हैं?

यही एकमात्र अंश है जो वह कहता प्रतीत होता है जो वह कहता है। बाइबल का कोई और पाठ यह नहीं कहता कि स्त्री पुरुष को शिक्षा न दे। यदि परमेश्वर चाहते कि सब कलीसियाओं में सदा के लिए केवल पुरुष प्रचारक और पास्टर हों, तो क्या वे निश्चय ही हमें वही बात कहने वाला एक दूसरा पद भी न देते? इस पाठ की व्याख्या और भी कठिन हो जाती है, क्योंकि जिस परिस्थिति को पौलुस संबोधित कर रहा है, उसके बारे में हमारा ज्ञान सीमित है। इन पदों को समझने के हर प्रयास को अनुमान से यह ब्योरा भरना पड़ता है कि इफिसुस में कुछ या सभी स्त्रियाँ ठीक-ठीक किस प्रकार पुरुषों/अपने पतियों के विरुद्ध पाप कर रही होंगी, और उनका यह अनुचित व्यवहार आदम और हव्वा की कहानी के उस अजीब ढंग से छोटे किए गए वर्णन से कैसे जुड़ा था।[326]

अंत में, authentein का अनुवाद "अधिकार चलाना" करने से यह अंश बाइबल के अनेक ऐसे उदाहरणों से टकराता है, जिनमें स्त्रियाँ पुरुषों की अगुवाई करती हैं और/या उन्हें शिक्षा देती हैं – और स्पष्टतः परमेश्वर की स्वीकृति के साथ। जैसा कि हम अध्याय 10-12 में देखेंगे, पूरकतावादी व्याख्या बाइबल की उन स्त्रियों से मेल नहीं खाती जो पुरुषों को शिक्षा देती हैं या उन पर शासन करती हैं।[327] बाइबल के किसी एक पाठ की व्याख्या करना – यहाँ तक कि उस पर एक विद्वत्तापूर्ण पुस्तक लिखना – और इस विषय पर बाइबल जो कुछ और कहती है उससे दिशा न लेना, और फिर घोषित करना, "परमेश्वर का वचन स्पष्ट रूप से कहता है ...", पवित्रशास्त्र को सँभालने का न तो विवेकपूर्ण, न ठोस, न पक्का तरीका है। यदि हमें, जैसा पौलुस तीमुथियुस से कहता है, "वचन को ठीक रीति से काम में लाना" है, तो उसी विषय के अधिक स्पष्ट अंशों को अधिक धुँधले अंशों की हमारी समझ का मार्गदर्शन करना चाहिए।

बच्चे जनने के द्वारा उद्धार

शायद इस बात का सबसे स्पष्ट संकेत कि यह एक धुँधला अंश है, यह है कि यह पद 14-15 में इन शब्दों पर समाप्त होता है: "[हव्वा] धोखा खाकर पापिनी बन गई। तौभी स्त्रियाँ बच्चे जनने के द्वारा उद्धार पाएँगी – यदि वे संयम सहित विश्वास, प्रेम और पवित्रता में स्थिर रहें।" Grudem इस पद को इस रूप में समझता है

326. पूरकतावादी Douglas Moo इस बारे में खुलकर कहता है: "ये पद (पद 13-14) सृष्टि और पतन के बारे में कथन प्रस्तुत करते हैं, पर यह स्पष्ट नहीं है कि वे पद 11-12 की आज्ञाओं का समर्थन कैसे करते हैं।" (1 Timothy 2:11–15: Meaning and Significance. पृ. 68.)

327. पवित्रशास्त्र में सबसे उल्लेखनीय उदाहरण प्रिस्किल्ला का है, जिसने विशेष रूप से एक पुरुष को सिद्धांत की शिक्षा दी (देखें परिशिष्ट 4 में "स्त्रियों के शिक्षा देने के उदाहरण") और ऐसा पास्टरीय अधिकार के साथ किया (प्रमाण के लिए देखें अध्याय 12)। चूँकि हम आत्मा की प्रेरणा के अधीन पवित्रशास्त्र की एकता में विश्वास करते हैं, इसलिए यह तर्क देना – जैसा पूरकतावादी विद्वान देते हैं – कि 1 तीमुथियुस 2:12 किसी स्त्री के लिए वही करने पर प्रतिबंध है जो प्रिस्किल्ला करती है, 1 तीमुथियुस 2:12 की उनकी व्याख्या की भूल को उजागर कर देता है।

कि पौलुस स्त्रियों को उनकी घरेलू, बच्चों के पालन-पोषण वाली भूमिका की ओर वापस भेज रहा है, जबकि पुरुष शिक्षा देने और अगुवाई करने की सार्वजनिक भूमिकाओं में बने रहते हैं।[328] इस तथ्य के अतिरिक्त कि पद 12 बहुत संभवतः शिक्षा देने और अगुवाई करने की सार्वजनिक भूमिकाओं के बारे में बात ही नहीं करता, इस व्याख्या की मुख्य कमज़ोरी यह है कि "बच्चे जनना" (एक क्षणिक जैविक क्रिया) और "बच्चों का पालन-पोषण" (एक लंबी सामाजिक भूमिका) एक ही बात नहीं हैं।

तो फिर पद 15 का अर्थ क्या है? कई विद्वानों के अनुसार कुंजी यह याद रखना है कि उत्पत्ति 3 में दर्ज हव्वा के पाप का तुरंत परिणाम पीड़ा के साथ "बच्चे जनना" है। पौलुस इस संबंध को उठाता है, पर इसे इस प्रकार कहने का प्रयास करता है कि स्त्रियों की उन्नति हो। विद्वान तीन संभावित व्याख्याओं में बँटे हुए हैं। एक संभावना यह है कि पौलुस उत्पत्ति 3 में दी गई परमेश्वर की उस प्रतिज्ञा की ओर संकेत करता है कि हव्वा का वंश एक दिन शैतान का सिर कुचलेगा। दूसरे शब्दों में, स्त्रियाँ हव्वा की बेटी, माता मरियम, के बच्चा जनने के द्वारा उद्धार पाएँगी, और वह उद्धार प्राप्त करेंगी जो पवित्र जीवन की ओर ले जाता है।

दूसरी संभावना यह है कि मूल यूनानी शब्द sōzō, जो प्रायः आत्मिक उद्धार के लिए आता है, शारीरिक रक्षा के अर्थ में भी आ सकता है।[329] दूसरे शब्दों में, परमेश्वर इफिसुस की कलीसिया की इन स्त्रियों से विशेष प्रतिज्ञा करते हैं कि बच्चे को जन्म देने की ख़तरनाक घड़ी में वे उनके साथ रहेंगे।[330]

तीसरी संभावना यह है कि पौलुस उस बात का सामना करता है कि झूठी शिक्षा विवाह के इनकार तक ले गई थी।[331] शायद इफिसुस की कलीसिया की भटकी हुई विवाहित स्त्रियों ने, कुरिन्थुस की कलीसिया की "अति-आत्मिक" स्त्रियों की तरह,[332] न केवल अपनी वैवाहिक साझेदारी से पीछे हटना शुरू कर दिया था, बल्कि अपने पतियों के साथ यौन संबंध रखना भी बंद कर दिया था। इसलिए पौलुस दोहराता है कि (यौन संबंध और) बच्चे जनना पवित्रता और पवित्रीकरण का एक आयाम है।[333]

यह इनमें से कोई भी हो सकता है, या कुछ और भी। पर मुख्य बात यह है कि पद 15, जो बाइबल के सबसे उलझाने वाले पदों में से एक है, इस बात की पुष्टि करता है कि जिन पिछले पदों का यह समापन करता है, वे कितने अस्पष्ट हैं। यह इस बात को और भी रेखांकित करता है कि पद 11-15 हर कसौटी पर किसी भी

328. न्याय की दृष्टि से कहें तो Craig Blomberg जैसे दूसरे पूरकतावादी उससे असहमत हैं।
329. जैसे इसका प्रयोग प्रेरितों के काम 27:20 और 2 तीमुथियुस 4:18 में हुआ है। चूँकि पवित्रशास्त्र का बाक़ी भाग कहता है कि स्त्रियाँ आत्मिक रूप से यीशु पर विश्वास के द्वारा उद्धार पाती हैं, न कि संतान उत्पन्न करने जैसी किसी जैविक क्रिया के द्वारा, इसलिए शब्द की यह समझ आत्मिक उद्धार के बारे में बाइबल की शिक्षा से बेहतर मेल खाती है।
330. प्राचीन संसार में बच्चे को जन्म देना स्त्रियों की मृत्यु और विकलांगता का सबसे बड़ा कारण था। इफिसुस की देवी अरतिमिस ने जन्म लेने के कुछ ही समय बाद अपनी ही माँ को प्रसव में सहायता दी थी। इसलिए इफिसुस की स्त्रियाँ प्रायः उससे प्रार्थना करती थीं कि वह प्रसव में उनकी रक्षा करे। इससे इस व्याख्या को बल मिलता है – पौलुस कहता है कि पवित्र जीवन के साथ-साथ उन्हें परमेश्वर से प्रार्थना करनी चाहिए।
331. जैसा कि वह 1 तीमुथियुस 4:3 में कहता है।
332. Gordon Fee 1 कुरिन्थियों पर अपनी प्रमुख टीका में कहता है कि यही वह पृष्ठभूमि है जिसके कारण पौलुस 1 कुरिन्थियों 7 लिखता है, जिसमें वह पतियों और पत्नियों को सलाह देता है कि वे नियमित रूप से एक दूसरे के साथ यौन संबंध रखें। बाद में पत्री में वह सलाह देता है कि "जवान विधवाएँ ब्याह करें, और बच्चे जनें, घरबार सँभालें, और किसी विरोधी को बदनाम करने का अवसर न दें।" (1 तीमुथियुस 5:14)
333. पूरकतावादी Craig Blomberg "Two Views on Women in Ministry" में यह व्याख्या प्रस्तुत करता है: "पद 15 का अनुवाद करना अत्यंत कठिन है, पर इसे संभवतः सबसे अच्छी तरह उस भ्रांत शिक्षा और उसके विवाह-विरोधी रुख़ का सामना करने वाले पद के रूप में समझा जा सकता है।" (अध्याय 2)

प्रकार के सिद्धांत के लिए अनुपयुक्त आधार हैं – ऐसे सिद्धांत की तो बात ही क्या, जो "सृष्टि की व्यवस्था" के विचार पर आधारित होकर संभवतः संसार के आधे लोगों को बाक़ी आधे को शिक्षा देने और उनकी अगुवाई करने से रोकता है।

जब कोई नहीं सुनता, तो इतिहास स्वयं को दोहराता है। बाइबल-व्याख्या के इतिहास में कलीसिया के सामने बार-बार यह प्रलोभन आया है कि सिद्धांतों को अकेले-अकेले अंशों पर आधारित किया जाए। तीसरी शताब्दी के आरंभ में एरियस (Arius) ने नीतिवचन 8:22 के आधार पर तर्क दिया कि परमेश्वर का पुत्र परमेश्वर की पहली सृष्टि था: "यहोवा ने [बुद्धि] को अपने कामों में सबसे पहले उत्पन्न किया।" 1500 के दशक के आरंभ में कैथोलिक कलीसिया ने याकूब 2:24 पर खड़े होकर लूथर के "केवल अनुग्रह से उद्धार" के सिद्धांत को अस्वीकार किया: "मनुष्य अपने कामों से धर्मी ठहरता है, न कि केवल विश्वास से।" और 1900 के दशक के अंत में पूरकतावादियों ने 1 तीमुथियुस 2:12 को पकड़कर तर्क दिया कि स्त्रियाँ पुरुषों की अगुवाई नहीं कर सकतीं या उन्हें शिक्षा नहीं दे सकतीं। इन सब मामलों में भूल यह है कि किसी एक धुँधले अंश की ग़लत व्याख्या का उपयोग उस विषय पर अन्यत्र दी गई अधिक स्पष्ट शिक्षा को कमज़ोर करने के लिए किया जाता है। पवित्रशास्त्र की बनावट इतनी विशाल और जटिल है कि कलीसिया के लगभग सभी प्रमुख सिद्धांतों में कुछ पद ऐसे होते हैं जो सही शिक्षा के विपरीत कुछ कहते प्रतीत हो सकते हैं। आगे का मार्ग यह है कि बाइबल के बड़े भाग की स्पष्ट शिक्षा को अपेक्षाकृत थोड़े, अधिक धुँधले अंशों की हमारी व्याख्या की सीमा तय करने दें।

वास्तव में, अधिक स्पष्ट अंशों के प्रकाश को इस धुँधले अंश में से चमकने देने की बुद्धिमानी विशेष रूप से तब दिखाई देती है जब हम इस प्रश्न का उत्तर देते हैं: "क्या स्त्रियाँ पुरुषों को शिक्षा दे सकती हैं?" – इस प्रश्न का उत्तर मैं परिशिष्ट 4 में देता हूँ।



8

पत्नियो, अधीन रहो

"विवाह के साथी न तो एक पदानुक्रमित संबंध में रखे गए हैं, जिसमें एक दूसरे के ऊपर हो, और न ही स्वायत्त इकाइयों के रूप में अलग रखे गए हैं, जिनमें हर कोई वही करे जो उसे भाए। इसके बजाय, विवाह का संबंध परस्पर अधीनता का संबंध है।" Richard Hays[334]

"हमें अपनी बेटियों को सिखाना होगा कि एक दिन वे अपने पतियों के अधीन रहें।" जब मैंने हाल ही में एक माँ को मेरी पत्नी से यह कहते सुना, तो मेरे भीतर सचमुच खलबली मच गई। क्या मुझे सचमुच Ivy को सिखाना चाहिए कि एक दिन वह अपने पति के अधीन कैसे रहे? अपने ही विवाह में अगुवाई और अधीनता का विषय अपने आप में काफ़ी निजी है, पर जब मुझे यह सोचना पड़ता है कि विवाह के बारे में मैं अपने बच्चों को कौन-सी शिक्षाएँ सौंपूँ, तब मैं उस शिक्षा को ठीक समझने के लिए और भी अधिक प्रतिबद्ध महसूस करता हूँ।

एक-बिंदु पूरकतावाद

जब मैंने यह और अगला अध्याय लिखने के लिए शोध किया, तभी जाकर मैंने अंततः और पूरी तरह इस विचार को छोड़ा कि सभी विवाहों के लिए परमेश्वर के आदर्श में पति-पत्नी के बीच अधिकार और अधीनता का कोई सबसे हल्का रूप भी शामिल है। इससे पहले इफिसियों 5 की अपनी समझ के आधार पर मैं लंबे समय तक यह विचार मानता रहा कि पति द्वारा अपनी पत्नी की त्यागपूर्ण अगुवाई का उद्देश्य मसीह द्वारा अपनी कलीसिया की त्यागपूर्ण अगुवाई की कुछ झलक दिखाना है।

एक-बिंदु पूरकतावाद यह मानता है कि स्त्रियों को कलीसिया और समाज में पुरुषों की अगुवाई करने की अनुमति है, यद्यपि पत्नियों को अपने पतियों के प्रति किसी प्रकार की एकतरफ़ा अधीनता का पालन करना

334. Richard Hays, First Corinthians, पृ. 116

है।[335] यह दो-बिंदु पूरकतावाद से भिन्न है, जो विवाह में और कलीसिया में, दोनों जगह स्त्री की अधीनता की माँग करता है। रोचक बात यह है कि संसार भर में अनेक बाइबल-विद्वान और कलीसियाएँ एक-बिंदु पूरकतावाद को मानती हैं।[336]

मुझे लगता है कि दो-बिंदु वाले कई पूरकतावादी यह पुस्तक पढ़कर कलीसिया की अगुवाई से स्त्रियों को बाहर रखने की बात छोड़ने के लिए क़ायल हो जाएँगे, पर शायद विवाह में अब भी किसी प्रकार के अधिकार और अधीनता को थामे रहेंगे – और क्योंकि मैंने भी कुछ वर्षों तक यही स्थिति अपनाई थी, मैं इस स्थिति को पूरी तरह समझ सकता हूँ।

रोचक बात यह है कि जब इफिसियों 5 के मेरे निरंतर अध्ययन ने मुझे एक-बिंदु पूरकतावाद को भी छोड़ने पर विवश किया, तो इससे मेरे विवाह में कोई बहुत बड़ा परिवर्तन नहीं आया। जैसा कि मैं समझाऊँगा, मुझे एहसास हुआ कि विवाह में भी मैं पहले से ही कमोबेश परस्परतावादी (स्त्री-पुरुष की परस्पर साझेदारी को मानने वाला) था। इसका कारण यह है कि यदि लगभग दो दशकों के मेरे वैवाहिक अनुभव ने मुझे कुछ सिखाया है, तो यही कि बराबरी के साथियों वाला विवाह, अगुवे और अनुयायी वाले विवाह से कहीं अधिक वांछनीय है। और यह उन अनेक सुंदर ढंग से गढ़े गए एक-पंक्ति वाक्यों के बावजूद है, जिनका "मसीही" विवाह के बारे में मैंने और दूसरों ने इतनी बार प्रचार किया है, जैसे: "वह बलिदान करता है, वह अधीन रहती है; वह अगुवाई करता है, वह पीछे चलती है; वह पहल करता है, वह पुष्टि करती है।"[337]

यद्यपि यीशु पति द्वारा अपनी पत्नी की अगुवाई के बारे में एक शब्द भी नहीं कहते,[338] पौलुस इस बारे में बहुत कुछ कहता प्रतीत होता है, विशेष रूप से इफिसियों 5 में, जो इस अध्याय का केंद्र है। वह अंश यह है:

335. यदि किसी विवाह में अधिकार और अधीनता हो भी, तो इसका अर्थ यह नहीं कि पत्नी किसी दूसरे क्षेत्र में अपने पति पर भी अधिकार नहीं रख सकती। उदाहरण के लिए, लप्पीदोत की पत्नी दबोरा ने, जिस पितृसत्तात्मक संस्कृति में वह रहती थी उसमें, घर में शायद अपने पति के आदेश माने हों (या न माने हों), फिर भी वह देश में एक अगुवा के रूप में फली-फूली, जहाँ उसके पति को भी उसके आदेश मानने पड़ते। जटिल है, हाँ, पर असंगत नहीं, क्योंकि पवित्रशास्त्र का एक भी अंश विवाह में स्त्री की अधीनता को इस बात का आधार नहीं बनाता कि उसे कलीसिया और समाज में पुरुषों की अगुवाई करने से रोका जाए।
336. एक छोटे-से नमूने के रूप में, मैंने एक-बिंदु पूरकतावादी विचार पश्चिमी यूरोप के N.T. Wright, पूर्वी यूरोप के Hayk HovHannisyan, और एक समय ऑस्ट्रेलिया के Michael Bird में पाए हैं। जो लोग अमेरिका के समानतावादी-पूरकतावादी "युद्धों" में डूबे हुए हैं, वे शायद इस संभावना को समझ न पाएँ। N.T. Wright समझाता है: "समस्या का एक भाग, विशेष रूप से अमेरिका में, यह है कि संस्कृतियाँ इतनी ध्रुवीकृत हो जाती हैं कि यदि आप एक खाने पर निशान लगाते हैं, तो बहुत-से लोग मान लेते हैं कि आपको पन्ने के उसी ओर के एक दर्जन दूसरे खानों पर भी निशान लगाना होगा – यह समझे बिना कि वह पन्ना स्वयं अत्यंत मनमाना और संस्कृति से बँधा हुआ है।" जब हमें कोई बात पर्याप्त बार बताई जाती है, तो हम उसे मानने लगते हैं। यदि मैं रात के आकाश में दो तारों को दिखाकर कहूँ, "ये दोनों तारे आपस में जुड़े हुए हैं; ये 'द पॉइंटर्स' (The Pointers) नाम का तारामंडल हैं," तो सुनने वाला इन तारों को जोड़ने वाली एक अदृश्य डोर की कल्पना करने लगता है। फिर जब भी वह आकाश की ओर देखता है, उसे उनका 'साथ होना' दिखाई देता है। सच यह है कि वे लाखों प्रकाश-वर्ष दूर हैं और अलग-अलग तारे हैं। केवल हमारी आकाशगंगा के एक दृष्टि-बिंदु से ही वे इतने पास-पास दिखाई देते हैं। पति के सिर होने और प्राचीनों की सेवकाई के साथ भी ऐसा ही है – वे अलग-अलग तारे हैं। परमेश्वर के मन में वे अनिवार्य रूप से आपस में जुड़े नहीं हैं, और पवित्रशास्त्र में तो निश्चय ही जुड़े नहीं हैं।
337. Beth Allison Barr "The Making of Biblical Womanhood" (अध्याय 6) में "Happily Ever After" का उद्धरण देती है।
338. फिर भी प्रमुख पूरकतावादी विद्वान ग़लत दावा करते हैं कि यीशु ऐसा कहते हैं! उदाहरण के लिए, Andreas Köstenberger "God, Marriage, Family" (पृ. 250) में लिखता है: "यीशु ने उत्पत्ति 1:27 और 2:24 दोनों को उद्धृत करते हुए (मत्ती 19:4-6 और समानांतर अंश) विवाह के लिए सृष्टिकर्ता परमेश्वर की मूल योजना की पुष्टि की। इसके द्वारा हमारे प्रभु ने दृढ़ता और ज़ोर के साथ पुष्टि की कि विवाह के लिए परमेश्वर की मूल रचना, जिसमें पति सिर के रूप में और पत्नी अधीन रहने वाली, सहारा देने वाली साथी के रूप में।"

21 मसीह के भय से एक दूसरे के अधीन रहो।

22 हे पत्नियो, अपने अपने पति के ऐसे अधीन रहो जैसे प्रभु के। 23 क्योंकि पति पत्नी का सिर है, जैसे मसीह कलीसिया का सिर है, जो उसकी देह है, और वह आप ही उसका उद्धारकर्ता है। 24 पर जैसे कलीसिया मसीह के अधीन है, वैसे ही पत्नियाँ भी हर बात में अपने अपने पति के अधीन रहें।

25 हे पतियो, अपनी अपनी पत्नी से प्रेम रखो, जैसा मसीह ने भी कलीसिया से प्रेम करके अपने आप को उसके लिये दे दिया, 26 कि उसको वचन के द्वारा जल के स्नान से शुद्ध करके पवित्र बनाए, 27 और उसे एक ऐसी तेजस्वी कलीसिया बनाकर अपने पास खड़ी करे, जिसमें न कलंक, न झुर्री, न कोई ऐसी वस्तु हो, वरन् पवित्र और निर्दोष हो। 28 इसी प्रकार उचित है कि पति अपनी अपनी पत्नी से अपनी देह के समान प्रेम रखें। जो अपनी पत्नी से प्रेम रखता है, वह अपने आप से प्रेम रखता है। 29 क्योंकि किसी ने कभी अपने शरीर से बैर नहीं रखा, वरन् वह उसका पालन-पोषण करता है, जैसा मसीह भी कलीसिया के साथ करता है – 30 इसलिये कि हम उसकी देह के अंग हैं। 31 “इस कारण मनुष्य माता-पिता को छोड़कर अपनी पत्नी से मिला रहेगा, और वे दोनों एक तन होंगे।” 32 यह भेद तो बड़ा है; पर मैं मसीह और कलीसिया के विषय में कहता हूँ। 33 तौभी तुम में से हर एक अपनी पत्नी से अपने समान प्रेम रखे, और पत्नी भी अपने पति का आदर करे।

इस अध्याय पर शोध करते हुए मैंने पाया कि C.S. Lewis की लिखी एक बात सच है: “बहुत-से लोग ... पाते हैं कि जब वे दाँतों में पाइप और हाथ में पेंसिल लिए धर्मविज्ञान के किसी कठिन अंश से जूझ रहे होते हैं, तब हृदय बिना बुलाए गा उठता है।” इस मामले में इफिसियों 5 एक कठिन, धर्मविज्ञान से लदा हुआ अंश है, जिस पर मैं कई वर्षों से मनन करता आ रहा हूँ। मैं इससे इतना अधिक क्यों जूझता रहा हूँ, इसके तीन कारण हैं।

पहला कारण यह है कि पृथ्वी पर मेरा सबसे प्रमुख संबंध मेरी पत्नी के साथ है। मैं परमेश्वर के वचन का पालन करना और परमेश्वर की बुद्धि को अपने विवाह में लागू करना चाहता हूँ, और यह अंश विवाह के बारे में बाइबल के प्रमुख पाठों में से एक है, इसलिए अच्छा यही है कि मैं इसे भली-भाँति समझूँ।

दूसरा कारण यह है कि इस अंश की “पति अगुवाई करता है और पत्नी पीछे चलती है” वाली व्याख्या मेरे अपने अनुभव और सांस्कृतिक समझ के विपरीत जाती है। मैं समझाता हूँ: मेरा विवाह एक ऐसी स्त्री से हुआ है जो मेरे जितनी ही शिक्षित और योग्य है, और कई बातों में मुझसे अधिक। वह पैसों के प्रबंधन में मुझसे बेहतर है और इस समय मुझसे अधिक कमाती है; हमारे बच्चों की भावनात्मक और व्यावहारिक ज़रूरतों को पहचानने में मुझसे बेहतर है; और लोगों के समूहों की स्वाभाविक अगुवा के रूप में भी मुझसे बेहतर है। साथ ही, ऐसा लगता है कि परमेश्वर हमारे परिवार और हमारी सेवकाई के बारे में उससे उतनी ही बात करते हैं जितनी मुझसे। उस पर अपनी अगुवाई जताना मुझे न केवल मनमाना लगता है, बल्कि हमारे संबंध और उसकी योग्यता का उल्लंघन भी। सच कहूँ तो, उसे अपनी अगुवाई देने की अपेक्षा उसके साथ अपनी बराबर की साथी के रूप में साझेदारी करना मुझे कहीं बेहतर लगता है।

तीसरा कारण, जिसकी वजह से मैं इस अंश से जूझता रहा हूँ, यह है कि उत्कृष्ट बाइबल-टीकाकार इस बारे में अलग-अलग निष्कर्षों पर पहुँचते हैं कि यह अंश क्या कह रहा है, और पास्टर इस बारे में अलग-अलग निष्कर्षों पर पहुँचते हैं कि अपने विश्वासों को किसी वास्तविक विवाह में कैसे लागू करें। पहली बार पढ़ने पर शब्द भले ही सरल लगें, पर अधिक मनन करने पर इफिसियों 5 उत्तरों से अधिक प्रश्न खड़े करता है। केवल पहले कुछ पदों पर विचार कीजिए: पौलुस विवाह-संबंध को परस्पर अधीनता वाले पिछले पद के ढाँचे में क्यों रखता है? "सिर" का क्या अर्थ है? "अधीन रहना" का क्या अर्थ है? क्या "अधीन रहना" का अर्थ पद 21 ("एक दूसरे के अधीन रहो"), पद 22 (पत्नियाँ अपने पतियों के अधीन रहें) और पद 24 (कलीसिया मसीह के अधीन है) में एक ही है? और व्यावहारिक रूप से, पत्नियों के "हर बात में" अपने पतियों के अधीन रहने का क्या अर्थ है?

मैं इन प्रश्नों का सामना चार भिन्न व्याख्याएँ – या "दृष्टिकोण" – प्रस्तुत करके करूँगा। चूँकि इफिसियों 5 के इस अंश का तीन-चौथाई भाग पति को संबोधित करता है, इसलिए मैं हर दृष्टिकोण को इस आधार पर परिभाषित करूँगा कि मसीही पति से क्या माँगा गया है। ये दृष्टिकोण पति को निर्णय लेने वाला (दृष्टिकोण 1), गतिरोध में अंतिम निर्णय देने वाला (दृष्टिकोण 2), अपनी बराबर की पत्नी का सेवक (दृष्टिकोण 3), और छुड़ाया गया paterfamilias (घर का मुखिया) (दृष्टिकोण 4) मानते हैं।

दृष्टिकोण 1: (नियमित रूप से) निर्णय लेने वाले के रूप में पति

यह Wayne Grudem का दृष्टिकोण है। उसका तर्क है कि जब पौलुस इफिसियों 5:21 में कहता है, "एक दूसरे के अधीन रहो," तो उसका अर्थ यह नहीं कि सभी विश्वासी सभी विश्वासियों के अधीन रहें, बल्कि केवल यह कि सभी विश्वासी केवल उन्हीं के अधीन रहें जिनके पास उन पर उचित अधिकार है। दूसरे शब्दों में, अधीनता पत्नी से पति की ओर बहती है, पर निश्चय ही उलटी दिशा में नहीं।

उसका कहना है कि "पति पत्नी का सिर है" में "सिर" का अर्थ किसी के ऊपर अधिकार है। पौलुस पुरुषों पर ज़ोर दे रहा है कि वे अपनी पत्नियों की अगुवाई अपने हाथ में लें, और पत्नियों पर कि वे इस अगुवाई को स्वीकार करें। जब यह अंश पति के अपनी पत्नी के लिए अपना प्राण देने की बात करता है, जैसे यीशु ने कलीसिया के लिए दिया, तो इसका अर्थ है कि पौलुस पति से केवल अपनी पत्नी से प्रेम करने का नहीं, बल्कि प्रेमपूर्ण ढंग से अपनी पत्नी की अगुवाई करने का आग्रह कर रहा है। और जब पौलुस अंत में उत्पत्ति 2:24 को उद्धृत करता है, तो Grudem का तर्क है कि पौलुस पत्नी पर पति के इस अधिकार की नींव पतन से पहले के उस वृत्तांत में रख रहा है जिसमें आदम का हव्वा पर अधिकार है।

इन सब बातों के व्यावहारिक निहितार्थ के बारे में Grudem बताता है कि वह इसे अपने विवाह में कैसे लागू करता है:

हर निर्णय में, चाहे वह बड़ा हो या छोटा, और चाहे हम सहमति पर पहुँचे हों या नहीं, निर्णय लेने की ज़िम्मेदारी फिर भी मुझ पर ही रहती है। (मैं यहाँ उन निर्णयों की बात कर रहा हूँ जिनमें हम दोनों शामिल हैं,

न कि उन व्यक्तिगत निर्णयों की जो हम में से हर एक अपनी-अपनी ज़िम्मेदारी के क्षेत्र में लेता है।) मैं उन लोगों से सहमत नहीं हूँ जो कहते हैं कि पुरुष का सिर होना (मुखियापन) केवल दस वर्षों में एक-आध बार अंतर लाता है, जब पति-पत्नी सहमति पर नहीं पहुँच पाते। मेरा मानना है कि पुरुष का सिर होना उस हर निर्णय में अंतर लाता है जो दंपति अपने वैवाहिक जीवन के हर दिन लेता है। यदि पुरुष का सिर होना वास्तविक है, तो एक शांत, सूक्ष्म स्वीकृति रहती है कि निर्णय-प्रक्रिया का केंद्र पति है, पत्नी नहीं। और यद्यपि प्रायः बहुत चर्चा होगी, और एक दूसरे के प्रति बहुत परस्पर आदर और ध्यान होना चाहिए, फिर भी अंततः निर्णय लेने की ज़िम्मेदारी पति पर ही रहती है।[339]

John Piper इस दृष्टिकोण की कुछ झलक देता है, जब वह स्नेह के साथ अपने माता-पिता के विवाह को याद करता है, जिसमें उसके पिता नियमित रूप से निर्णय लेने वाले थे:

जब मेरे पिता घर आते थे, तो वे स्पष्ट रूप से घर के सिर (मुखिया) होते थे। भोजन की मेज़ पर वे प्रार्थना में अगुवाई करते थे। वे परिवार को पारिवारिक आराधना के लिए इकट्ठा करते थे। वे हमें संडे स्कूल और आराधना में ले जाते थे। गाड़ी वे चलाते थे। परिवार कहाँ बैठेगा, यह वे तय करते थे। दोपहर के भोजन के लिए Howard Johnson's जाने का निर्णय वे लेते थे। वे हमें मेज़ तक ले जाते थे। वे वेट्रेस को बुलाते थे। बिल वे चुकाते थे। यदि हम परिवार का कोई नियम तोड़ते या माँ का अनादर करते, तो हम जानते थे कि हिसाब उन्हीं से होगा। ये माँ के लिए सबसे आनंद भरे समय होते थे। ओह, पिताजी के घर आने पर वे कितनी आनंदित होती थीं! उन्हें उनकी अगुवाई बहुत प्रिय थी। बाद में मैंने जाना कि बाइबल इसे "अधीनता" कहती है।[340]

विवाह पर अधिकांश लोकप्रिय मसीही पुस्तकें इसी दृष्टिकोण का समर्थन करती हैं। एक पुस्तक कहती है, "पति ... घर के महत्वपूर्ण निर्णयों के लिए ज़िम्मेदार है। ... एक प्रत्युत्तर देने वाली और ग्रहणशील पत्नी स्वेच्छा से ... उसके प्रेम, श्रद्धा, सुरक्षा और भरण-पोषण के बदले अपनी स्वतंत्रता समर्पित कर देती है।"[341] एक और पुस्तक भी यही भाव दोहराती है: "घर के बाहर किसी पुरुष के कई बॉस हो सकते हैं, पर घर के भीतर उसके पास यह अवसर है कि वह दयालुता से अधिकार प्रदान करे और अपना उचित आदर प्राप्त करे।"[342]

अब, दूसरे दृष्टिकोणों की खोज की ओर बढ़ने से पहले, मैं यह कह दूँ: 1980 के दशक तक लगभग सभी बाइबल-विद्वान और मसीही इस अंश को ठीक इसी प्रकार पढ़ते थे। इसलिए यह एक ऐसा दृष्टिकोण है जिसे गंभीरता से लेना ही होगा।

पर मुझे ईमानदारी से कहने दीजिए: यह तरीका तो मेरे विवाह की मृत्यु होता! और एक पास्टर के रूप में मैंने कभी इस दृष्टिकोण की सलाह नहीं दी – निःसंदेह Grudem और Piper का जीवन-अनुभव मुझसे भिन्न है, पर मैं ऐसे किसी घनिष्ठ संबंध के फलने-फूलने की कल्पना नहीं कर सकता जिसमें एक ही व्यक्ति वे सब या अधिकांश निर्णय लेता हो जिनमें दोनों शामिल हैं। मैं यह निष्कर्ष निकाले बिना नहीं रह सकता कि जो दंपति

339. Wayne Grudem, Evangelical Feminism, अध्याय 1
340. John Piper, Recovering Biblical Manhood and Womanhood, अध्याय 1
341. Ed and Gaye Wheat, Intended for Pleasure, चौथा संस्करण, पृ. 30–31
342. Kevin Leman, Sheet Music, पृ. 54।

कहते हैं कि यह दृष्टिकोण उनके विवाह में काम करता है, वे या तो ऐसे लोग हैं जो अपनी परवरिश या संस्कृति के कारण बीते ज़माने के "पारंपरिक विवाह" को पसंद करते हैं, या उनमें पति स्वभाव से अगुवा है और पत्नी स्वभाव से पीछे चलने वाली। पर हर वैवाहिक संबंध इस प्रकार का नहीं बना होता, और Julie और मेरा संबंध तो निश्चय ही नहीं। मुझे प्रसन्नता है कि पिछले कुछ दशकों में पास्टरों और धर्मविज्ञानियों ने इस दृष्टिकोण में एक संशोधन सुझाना शुरू किया, जिसे कुछ लोग "नरम पूरकतावाद" कहते हैं, और जिसे मैं "अंतिम निर्णय देने वाले के रूप में पति" कहता हूँ।

दृष्टिकोण 2: (कभी-कभार) अंतिम निर्णय देने वाले के रूप में पति

Timothy और Kathy Keller अपनी बहुत बिकने वाली पुस्तक The Meaning of Marriage में पूरकतावादी विवाह का एक नरम दृष्टिकोण प्रस्तुत करते हैं। वे पूरा एक अध्याय इस बात पर लिखते हैं कि Grudem के दृष्टिकोण के विपरीत, पौलुस पद 21 में विवाह की लैंगिक भूमिकाओं को परस्पर अधीनता की अभिव्यक्ति के रूप में प्रस्तुत करता है, और परस्पर अधीनता को वे इस चुनाव के रूप में परिभाषित करते हैं कि हम दीनता से दूसरे की सेवा करें और उसे प्रसन्न करें:

फिलिप्पियों 2:2-3 में पौलुस साफ़-साफ़ कहता है कि मसीहियों को "दीनता से दूसरों को [अपने] से अच्छा समझना" चाहिए। ... हमें दूसरों के हितों को अपने हितों से अधिक महत्वपूर्ण समझना और गिनना चाहिए। अन्यत्र वह कहता है कि हमें "अपने आप को प्रसन्न" नहीं करना चाहिए, बल्कि "अपने पड़ोसी को उसकी भलाई के लिये, उसकी उन्नति के निमित्त प्रसन्न करना" चाहिए, "क्योंकि मसीह ने भी अपने आप को प्रसन्न नहीं किया" (रोमियों 15:1-3)। पौलुस यहाँ तक कहता है कि मसीही एक दूसरे के "douloi" बनें (गलातियों 5:13) – शब्दशः, बंधुआ दास। ... चाहे हम पति हों या पत्नी, हमें अपने लिए नहीं बल्कि दूसरे के लिए जीना है। और विवाह में पति या पत्नी होने का यही सबसे कठिन, फिर भी सबसे महत्वपूर्ण काम है।[343]

इस दृष्टिकोण के अनुसार परस्पर अधीनता दोनों दिशाओं में बहती है: पद 22-24 में पौलुस पत्नियों से कहता है कि वे अपने पतियों के अधीन रहें, जबकि पद 25-29 में वह पतियों को बताता है कि वे अपनी पत्नियों के अधीन कैसे रहें (जो उनके लिए त्यागपूर्ण प्रेम का रूप लेता है)।

परस्पर अधीनता के बावजूद Keller दंपति फिर भी पति को अगुवा मानने का तर्क देते हैं। वे ऐसा अपनी भाषा बदलकर करते हैं: अपनी पत्नी के साथ परस्पर अधीनता में रहने वाले पति की बात छोड़कर वे ऐसे पति की बात करने लगते हैं जो "सेवक-अगुवे की भूमिका के अधीन" रहता है।[344] (मुझे यह कहना होगा कि यह "अधीन रहना" शब्द का संदिग्ध प्रयोग है, क्योंकि अब इसका अर्थ परस्पर अधीनता के विचार में इसके प्रयोग से भिन्न हो जाता है: किसी भूमिका के अधीन रहना किसी व्यक्ति के अधीन रहने के समान बिलकुल नहीं है।)

343. Tim and Kathy Keller, The Meaning of Marriage, अध्याय 2
344. Tim and Kathy Keller, The Meaning of Marriage, अध्याय 6

धन्यवाद की बात है कि Keller दंपति ऐसी अगुवाई प्रस्तुत करते हैं जो बीती शताब्दियों में पत्नी की अधीनता की समझ से कहीं अधिक नरम है – "जहाँ दोनों पक्ष सहमत नहीं हो सकते, पर कोई न कोई निर्णय लेना ही है, [वहाँ पति को] निर्णायक मत डालने और (इस प्रकार) निर्णय की अधिक ज़िम्मेदारी लेने का अधिकार है।"[345] अन्यत्र Timothy Keller इसे पति का यह अधिकार कहता है कि वह "अंतिम बात" कहकर अपनी पत्नी के मत को "रद्द" कर सके।[346] दूसरे शब्दों में, केवल जहाँ असहमति हो, न कि रोज़मर्रा के निर्णयों में, पति को निर्णय लेना चाहिए।

लंबे समय तक नरम पूरकतावादी रहे होने के नाते, मैंने और उसी खेमे के बहुत-से दूसरे शिक्षकों ने इस शिक्षा को इस प्रकार की बातें कहकर लागू किया है: "कभी-कभार, बहुत ही दुर्लभ अवसरों पर, कोई चुनाव करना ही पड़ता है और आप दोनों सहमत नहीं हो पाते, तब पत्नी को पति से कहना चाहिए कि वह इस मामले में निर्णय ले।" उदाहरण के लिए, मेरे मित्र Alan Frow, जो दक्षिणी कैलिफ़ोर्निया में एक प्रभावशाली पूरकतावादी पास्टर है, कहता है कि उसके विवाह में लगभग सभी निर्णय मिल-जुलकर लिए जाते हैं: "मेरे विवाह को 25 वर्ष हो गए हैं," वह कहता है, "और इस समय में केवल पाँच बार मेरी पत्नी ने मुझसे कहा है, 'हम सहमत नहीं हो पा रहे। आप अगुवे हैं, इसलिए जाइए और परमेश्वर की इच्छा खोजिए।'"[347]

मेरे अपने विवाह में वर्षों बीत जाते थे और मुझे अपने "अंतिम निर्णय के अधिकार" का प्रयोग करने की आवश्यकता नहीं पड़ती थी, क्योंकि हम हमेशा सहमति तक पहुँच जाते थे। पर देखिए, इसका अर्थ यह है कि हमारे जीए हुए अनुभव में Julie पर मेरी "अगुवाई" और उसका मेरे "अधीन रहना" व्यवहार में अस्तित्व में ही नहीं था।

अंतिम निर्णय वाले मॉडल पर संदेह

बहुत-से नरम पूरकतावादियों के लिए – जैसे मेरे लिए भी कई वर्षों तक – अपनी स्थिति को धर्मविज्ञान की दृष्टि से नया रूप देने का कठिन काम इस झंझट के लायक़ ही नहीं लगता। वर्ष के लगभग किसी भी दिन उनका विवाह ठीक वैसा ही होता है जैसा किसी परस्परतावादी का। वास्तव में, मैं शायद Keller दंपति के दृष्टिकोण पर और अधिक समय तक टिका रहता (और जो अब भी टिके हैं, उनके प्रति मेरी सहानुभूति है), यदि मैं इस बात पर प्रश्न न उठाने लगता कि क्या अधिकार और अधीनता का नरम रूप भी सचमुच सभी विवाहों के लिए परमेश्वर का आदर्श है। वास्तव में, मेरे पाँच गंभीर संदेह हैं।

पहला, यदि हम पति के अधिकार के प्रति पत्नी की अधीनता को आदर्श बना देते हैं, तो कलीसिया और समाज में उसके महत्वपूर्ण योगदानों की उपेक्षा करना उतना ही आसान हो जाता है। नरम पूरकतावादियों के इस आग्रह के बावजूद कि पत्नी की अधीनता केवल उसके पति के प्रति है, सभी पुरुषों के प्रति नहीं, पूरकतावादी अब भी इस बिंदु का उपयोग यह तर्क देने के लिए करते हैं कि यदि घर में पत्नी की अगुवाई की

345. Tim and Kathy Keller, The Meaning of Marriage, परिशिष्ट
346. Timothy Keller, The Timothy Keller Sermon Archive, 2012–2013
347. यहाँ सुनें: www.bit.ly/2ZPRZGH

जानी है, तो उसे कलीसिया में अगुवाई नहीं करनी चाहिए।[348] उदाहरण के लिए, Frow ठीक ही कहता है कि मानवीय परिवार में विवाह की भूमिकाएँ कलीसिया के साथ मसीह के संबंध का एक "रहस्यमय दर्पण"[349] हैं, और यद्यपि वह फिर भी समाज में स्त्रियों की अगुवाई का समर्थन करता है, वह यह निष्कर्ष निकालता है कि "परमेश्वर के परिवार में भी कुछ रहस्यमय प्रतिबिंब होना चाहिए।"

पर क्या यह छलाँग लगाना उचित है? इफिसियों 5 में पौलुस कहता है कि पति और पत्नी का मिलन एक "भेद" है, जो मसीह और कलीसिया के मिलन की ओर संकेत करता है। तो फिर पूरकतावादी यह स्वतंत्रता क्यों महसूस करते हैं कि इस "भेद" को सामान्य रूप से पूरे समुदाय पर थोप दें, ताकि पुरुष प्राचीन किसी तरह पति के रूप में यीशु का प्रतिनिधित्व करें (और इस तर्क के अनुसार उनका पुरुष होना अनिवार्य हो), जबकि बाक़ी कलीसिया दुल्हन का प्रतिनिधित्व करे (जो अब अजीब ढंग से उपमा से हट जाती है, क्योंकि उसमें स्त्रियाँ और पुरुष दोनों शामिल हैं)? इसके अतिरिक्त, यह विचार कि प्राचीन कलीसिया के पति का प्रतिनिधित्व करते हैं, ख़तरनाक और बाइबल-विरुद्ध है – विशेषकर जब कलीसिया में यह भूमिका पूरे ज़ोर के साथ और केवल यीशु की है। यदि हम विवाह और कलीसिया की उपमा पर ही टिके रहें, तो कलीसिया के अगुवे अधिक से अधिक यीशु के "दूल्हे के मित्र" हो सकते हैं, जैसे यूहन्ना 3:29 में यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला।

दूसरा, मैं यह सोचने लगा कि पूरकतावादी विवाह-दृष्टिकोण के अनुसार पौलुस ठीक उसी पदानुक्रमित व्यवस्था को आदर्श क्यों बनाएगा, जिसे पतन लेकर आया, जब परमेश्वर ने उसके परिणाम की घोषणा किसी प्रतिज्ञा के रूप में नहीं, बल्कि एक भयानक भविष्यवाणी के रूप में की: "वह तुझ पर प्रभुता करेगा।"[350]

तीसरा, मैं इस बात से बार-बार भयभीत होता हूँ कि मसीही विवाहों में साथी के साथ दुर्व्यवहार का कितना ऊँचा स्तर कितनी बार प्रमाणित हुआ है। Elaine Storkey जैसे समाजशास्त्रियों का तर्क है कि जब स्त्री की अधीनता को परमेश्वर द्वारा ठहराए गए नियम के रूप में सिखाया जाता है, तो इससे बिलकुल भी सहायता नहीं मिलती। अपने "उदार" अधिकार के बारे में शिक्षाएँ सुनने के बावजूद, परमेश्वर द्वारा ठहराए गए पुरुष-अधिकार का विचार ही कभी-कभी पतियों को "पुरुष के विशेषाधिकार और हक़ के प्रति एक खुले या अवचेतन विश्वास" के लिए प्रोत्साहित करता है, "जिसके द्वारा पुरुष स्वतंत्रता, प्रतिष्ठा और राय के ऐसे अधिकार अपने लिए मान लेते हैं जो उनके साथी पर लागू नहीं होते।"[351] जब तक वे सबसे अधिक पवित्र

348. John Piper यह तर्क इस प्रकार रखता है: "जब पुरुष और स्त्रियाँ कलीसिया में एक दूसरे से संबंध रखते हैं, तो पुरुषों को अगुवाई करनी है, उसी तरह जैसे पति घर में अगुवाई करता है (इफिसियों 5:22-33)।" रोचक बात यह है कि मेरे महाद्वीप की सबसे बड़ी कलीसियाओं में से एक स्त्रियों को प्रचार करने और कलीसिया की अगुवाई करने देती है, फिर भी पत्नी की अधीनता पर उसके ज़ोर के कारण वहाँ एक अजीब संस्कृति पनप गई है: ये महिला प्रचारक और पास्टर विवाह करने से इनकार करती हैं, क्योंकि जैसे ही वे विवाह करती हैं, कलीसिया के सदस्य उनकी अगुवाई को कम गंभीरता से लेने लगते हैं।
349. यहाँ सुनें: www.bit.ly/2ZPRZGH
350. उत्पत्ति 3:16
351. Elaine Storkey, Scars across humanity: Understanding and Overcoming Violence Against Women, पृ. 210

किए गए प्रकार के पति न हों, अपने साथियों को सच्चे बराबर के न समझने के कारण उनमें यह झुकाव बना रहता है – चाहे बहुत थोड़ा ही सही – कि वे उनके साथ कमतर व्यक्ति जैसा व्यवहार करें।[352]

अफ़्रीका में, जहाँ मैं रहता हूँ, लैंगिक हिंसा का स्तर सचमुच भयावह है। मैंने ऐसे मसीही पतियों की कहानियाँ सुनी हैं जो अपनी पत्नियों को अवज्ञा के लिए पीटते हैं (और यहाँ तक कि एक पास्टर की भी, जिसने अपनी मंडली की एक पत्नी को उसके अपने पति की अवज्ञा करने के लिए पीटा)। साथ ही, कुछ शोध[353] दिखाते हैं कि स्त्री की अधीनता का सिद्धांत इस संभावना को बढ़ाता है कि दुर्व्यवहार झेल रही पत्नी उस दुर्व्यवहार भरे विवाह में टिकी रहे, और यह भी कि जिन कलीसियाओं से वह सहायता माँगती है, वे उसे दुर्व्यवहार करने वाले से दूर जाने की सलाह न दें। यदि यह परमेश्वर की आदर्श शिक्षा है, तो मैं सोचने लगा कि मसीही कानों में पड़ते ही यह इतनी बार हानि क्यों पहुँचाती है।

चौथा, जितना भी मैं कठोर रूप की अपेक्षा नरम पूरकतावाद को पसंद करता हूँ, मुझे मानना पड़ा कि यह एक बिलकुल नई रचना थी। यदि नरम पूरकतावादी विवाह को जन्म देने वाली व्याख्या केवल लगभग आधी शताब्दी पुरानी है, तो वह परस्परतावादी विवाह को जन्म देने वाली व्याख्या से भी नई है। यद्यपि मैं Keller-शैली के इस नए नरम पूरकतावाद के लिए आभारी हूँ, मुझे Grudem और Russell Moore जैसे पूरकतावादी विद्वानों से सहमत होना पड़ता है, जो संकेत करते हैं कि यह नरम तरीका वास्तव में पूरकतावादी विवाह की अपेक्षा परस्परतावादी विवाह के अधिक निकट है। यदि पाठ का सीधा अर्थ यह माँगता है कि मैं नियमित रूप से निर्णय लूँ और मेरी पत्नी नियमित रूप से अधीन रहे, तो आख़िरकार हमारा विवाह कभी वास्तव में "बाइबल-आधारित" विवाह रहा ही नहीं। इसके बजाय हमारा विवाह ऐसा रहा है जो "बराबरी की वैवाहिक साझेदारी के भीतर परस्पर अधीनता की पुष्टि करता है," जिसमें निर्णय "बातचीत से बनी सहमति की प्रक्रिया के द्वारा" लिए जाते हैं – और Moore इसी को "नारीवादी" विवाह कहता है, न कि "बाइबल-आधारित" या पूरकतावादी विवाह।[354] यदि Grudem (और ऐतिहासिक दृष्टिकोण) सही है, तो या तो परमेश्वर चाहते हैं कि मैं अपना व्यवहार बदलूँ और अपनी पत्नी की ओर से अधिक निर्णय लेने लगूँ, या मुझे अपना धर्मविज्ञान बदलना होगा। जिस बात पर हम विश्वास करते हैं, उससे बेमेल जीवन जीते रहना केवल असंगति है।

पाँचवाँ, जैसा मैं देखता हूँ, इस प्रश्न का कोई संतोषजनक उत्तर नहीं है: "पत्नी अधीन क्यों रहे?" दृष्टिकोण 1 आज हम में से बहुतों को खटक सकता है, पर सदियों तक यह पूरी तरह तर्कसंगत लगता था: संस्कृति और कलीसिया का सिद्धांत मानते थे कि स्त्रियाँ पुरुषों से हीन हैं, और इसलिए उनकी अपनी भलाई के लिए उनकी अगुवाई की जानी चाहिए। पर 1960 के दशक से ये विचार संस्कृति में और कलीसिया में छोड़ दिए गए हैं। हम सब ऐसी बहुत-सी स्त्रियों को जानते हैं जो अपने पतियों से अधिक बुद्धिमान और निर्णायक हैं। इसलिए कारण यह नहीं हो सकता कि वे निर्णय लेने में हीन हैं। तो फिर क्यों?

352. विचार कलीसिया से बाहर भी फैलते हैं। इसीलिए हमें यह भी पूछना होगा कि मसीही विचार व्यापक संस्कृति में कैसी लहरें पैदा करते हैं। जब कोई कलीसिया सिखाती है कि पति के प्रति स्त्री की अधीनता परमेश्वर का आदर्श है, तो इससे लैंगिक हिंसा की संभावना को रोकने में कोई सहायता नहीं मिलती। परंतु जब कलीसिया इस बात पर ज़ोर देती है कि विवाहों के लिए परमेश्वर का आदर्श परस्परता है, तो इससे घरेलू हिंसा की जड़ें निश्चय ही कमज़ोर होती हैं।
353. देखें www.ab.co/3bHZF05 और www.bit.ly/3GNbrVt
354. www.bit.ly/3nVy1CK

Keller दंपति साहस करके एक उत्तर देते हैं: "इस प्रश्न का उत्तर एक और प्रश्न है: 'मसीह ही वह क्यों बने जिसने अपना अधिकार पिता को सौंप दिया?'" उनकी बात यह है कि पति के अधिकार के प्रति पत्नी की अधीनता का उद्देश्य पिता के साथ मसीह के संबंध को प्रतिबिंबित करना है। पर जैसा मैंने अध्याय 3 और 6 में समझाया है, यह त्रिएकता के संबंध को ग़लत ढंग से प्रस्तुत करता है, और इस तथ्य को भी अनदेखा करता है कि पवित्रशास्त्र कहीं भी पुत्र के अपना अधिकार पिता को सौंपने की तुलना पत्नी के अपना अधिकार पति को सौंपने से नहीं करता।

John Piper एक और उत्तर देता है: मसीही पत्नी की अपने पति के प्रति अधीनता देखने वाले संसार के सामने मसीह के प्रति कलीसिया की अधीनता को दर्शाती है। प्रचार में यह अच्छा लगता है, पर ज़रा ध्यान से देखिए: यह केवल दृष्टिकोण 1 में काम करता है, जहाँ पति पत्नी के जीवन के हर दिन उसकी अगुवाई करता है। दृष्टिकोण 2 कलीसिया पर मसीह की अगुवाई का एक घटिया चित्रण है – यदि यीशु हमारे प्रभु हैं, तो हम उनकी प्रतिदिन की अगुवाई के लिए स्वयं को सौंपते हैं, न कि किसी नरम, मिल-जुलकर निर्णय लेने की व्यवस्था के लिए, जिसमें केवल कभी-कभार, जब हम सहमत नहीं हो पाते, हम यीशु को अपना तुरुप का पत्ता चलने देते हैं।

यद्यपि Keller और Piper जैसे धर्मविज्ञानी कमज़ोर धर्मवैज्ञानिक कारण देने का प्रयास करते हैं, बहुत-से पास्टर, जो प्रायः अधिक व्यावहारिक सोच वाले होते हैं, पति के अधिकार के लिए यह औचित्य देते हैं: वे कहते हैं, दो सिर वाली कोई भी चीज़ राक्षस होती है, इसलिए यह जानना ज़रूरी है कि अंतिम ज़िम्मेदारी किस पर आकर रुकती है। पर यही वह कारण है जिसे मैं स्वीकार नहीं कर सकता। मुझे समझाने दीजिए कि क्यों।

"पर अंतिम ज़िम्मेदारी किस पर आकर रुकेगी?"

दो व्यक्तियों के मिलन में, क्या सचमुच अंतिम ज़िम्मेदारी केवल एक ही व्यक्ति पर आकर रुकनी चाहिए, नहीं तो विवाह बिगड़ जाएगा? मैं किसी खेल-टीम में कप्तान की, या सेना पर सेनापति की, या किसी कंपनी में CEO की आवश्यकता समझ सकता हूँ। पर "एक तन" के मिलन में बंधे दो लोग, जो आदर्श रूप से, जैसा उत्पत्ति 2:24 कहता है, एक दूसरे के सामने "नंगे" हैं, अर्थात् जान-बूझकर एक दूसरे के सामने असुरक्षित और खुले हैं, उन्हें किसी अगुवे की उतनी आवश्यकता नहीं लगती जितनी इस बात की कि दोनों बराबर के साथियों के रूप में एक दूसरे से प्रेम करने और एक दूसरे की सेवा करने के लिए पूरी तरह समर्पित हों।

Love and Respect, विवाह पर सबसे प्रभावशाली लोकप्रिय मसीही पुस्तक, यह तर्क इस प्रकार रखती है: "सिर के स्थान पर दो बराबर के लोगों को रखकर विवाह की व्यवस्था करना उसे असफलता के लिए तैयार करना है। आज लोग चारों ओर तलाक़ ले रहे हैं, उसका यह एक बड़ा कारण है।"[355] पर मैं सोचता रहा कि इस विचित्र दावे का प्रमाण कहाँ है? यद्यपि मैं इस विषय पर और अध्ययन पढ़ने की आशा रखता हूँ,

355. Eggerichs, Love & Respect, पृ. 221। उसने यह दावा किसी अध्ययन या किसी बाहरी प्रमाण का हवाला दिए बिना किया।

कलीसिया जाने वाली 21,000 विवाहित और तलाक़शुदा मसीही स्त्रियों के एक हाल के अध्ययन ने उलटा निष्कर्ष निकाला है: "जिन दंपतियों में एक जीवनसाथी निर्णय लेता है – चाहे वह अपने निर्णयों पर पहले अपने जीवनसाथी से बात करे और उसकी राय माँगे – उनके तलाक़ की संभावना उन दंपतियों की तुलना में 7.4 गुना अधिक है जो निर्णय लेने की शक्ति साझा करते हैं।"[356]

बहुत-से मसीही यह बात सहज बुद्धि से जानते हैं (चाहे वे धर्मविज्ञान की दृष्टि से इसे मानने का दावा करें या नहीं)। जिन हज़ारों लोगों का सर्वेक्षण किया गया, उनमें से लगभग 40% मानते थे कि पति के पास अंतिम निर्णय का अधिकार है, जबकि लगभग 60% मानते थे कि पत्नी को अपने पति के अधीन रहकर उससे प्रेम करना चाहिए – और फिर भी, "केवल 17.3% दंपति वास्तव में ऐसा व्यवहार करते हैं जिसमें अंतिम बात पुरुष की होती है। इसके विपरीत, 78.9% विवाह बिना किसी अंतिम निर्णायक के चलते हैं – अर्थात् दंपति या तो मिलकर निर्णय लेते हैं, या सहमत न होने पर निर्णय लेना छोड़ देते हैं।"

यहाँ हमारे सामने दो दुविधाएँ हैं जिन्हें मेरे जैसे पास्टर स्वीकार न करना ही पसंद करते आए हैं। पहली, जिन लोगों की हम अगुवाई करते हैं, उनके विश्वासों और व्यवहार में मेल नहीं है। जहाँ अधिकांश मसीही मानते हैं कि पति निर्णय लेने वाला या अंतिम निर्णायक है, वहीं अधिकांश इसका पालन नहीं करते! दूसरी, "यद्यपि बहुत-से मसीही दंपति मानते हैं कि पतियों के पास निर्णय लेने का अधिकार है, इस विश्वास ने दंपति को तब तक हानि नहीं पहुँचाई जब तक इसे व्यवहार में नहीं लाया गया।" क्या मेरे जैसे पास्टरों को इस बात पर ज़ोर देना चाहिए कि परमेश्वर के लोग जिस पर विश्वास करते हैं उसका पालन करना शुरू करें, या हम उस पर प्रश्न उठाएँ जिस पर विश्वास करना हम उन्हें सिखाते आए हैं? यदि मैं एक पास्टर के रूप में सचमुच उन विवाहित दंपतियों की भलाई चाहता हूँ जिनकी मैं अगुवाई करता हूँ, तो मुझे कुछ कठोर आँकड़ों का सामना करना होगा:

जब स्त्रियों को लगता है कि उनकी बात सुनी नहीं जाती, और इसके बजाय उन्हें ऐसा लगता है कि उनकी राय उतनी महत्वपूर्ण नहीं जितनी उनके पतियों की, तो उनके विवाह के तलाक़ में समाप्त होने की संभावना 26 गुना अधिक होती है। ... चाहे पति अपनी पत्नी से सलाह ले, फिर भी जिन विवाहों में पति के पास निर्णय की शक्ति होती है, उनमें परिभाषा के अनुसार ही उसकी राय पत्नी की राय से अधिक मायने रखती है। और जब स्त्रियों को लगता है कि उनकी राय को उनके पतियों की राय जितना महत्व नहीं दिया जाता, तो विवाह [अधिक संभावना से] टूट जाते हैं।[357]

इसके विपरीत, विवाह में परस्परता के स्पष्ट लाभ हैं। "जब दंपति मिलकर निर्णय लेते हैं, तो पत्नियों द्वारा स्वयं को सबसे कम सुखी 20% विवाहों की अपेक्षा सबसे सुखी 20% विवाहों में गिनने की संभावना चार गुना से भी अधिक होती है, और यौन संबंध के दौरान बार-बार चरम सुख अनुभव करने की संभावना 67% अधिक होती है।"[358] ये आँकड़े पुष्टि करते हैं कि जो विवाह (और यौन जीवन) सबसे अच्छे चलते हैं, वे वही

356. Sheila Gregoire, The Great Sex Rescue, अध्याय 2। The Gottman Insitute का एक धर्मनिरपेक्ष अध्ययन भी इससे सहमत है – John Gottman "The Seven Principles for Making Marriage Work" में लिखता है कि "आँकड़ों की दृष्टि से, जब कोई पुरुष अपने साथी के साथ शक्ति साझा करने को तैयार नहीं होता, तो 81% संभावना है कि उसका विवाह अपने आप नष्ट हो जाएगा।"
357. Sheila Gregoire, The Great Sex Rescue, अध्याय 2।
358. Sheila Gregoire, The Great Sex Rescue, अध्याय 2।

हैं जो बातों को मिलकर सुलझाने का निर्णय लेते हैं, और जब वे असहमत होते हैं, तो सहमति तक पहुँचने के लिए मामले को उतना समय और ध्यान देते हैं जितना उसे चाहिए।

मैं समझ सकता हूँ कि मान लीजिए दस लोगों की किसी अगुवाई-टीम में अगुवे को कभी-कभी अंतिम निर्णायक की भूमिका निभानी पड़ सकती है। पर आइए, सावधान रहें कि संगठनों की निर्णय-प्रक्रिया की गतिशीलता को विवाह में न ले आएँ, जिसमें केवल दो लोग होते हैं, जो कार्य से कहीं अधिक संबंध पर आधारित है, और जो आत्मा के स्तर के मिलन की प्रतिज्ञा से बंधा है।

इसके अतिरिक्त, कितनी बार दंपति ऐसी स्थिति में पड़ते हैं जहाँ कोई महत्वपूर्ण निर्णय सहमति खोजने का समय मिले बिना लेना ही पड़े? प्रायः निर्णय लेने का समय होता है, या दंपति उस व्यक्ति की बात मान सकते हैं जिसके पास उस क्षेत्र में, जिस पर यह निर्णय असर डालता है, सबसे अधिक दृढ़ विश्वास या विशेषज्ञता है। पर यदि दंपति फिर भी असहमत हैं, तो इससे पता चलता है कि दोनों अपने-अपने विचार के बारे में गहराई से महसूस करते हैं। ठीक सबसे बड़े मतभेद के क्षण में पति का अपने पद का रौब जमाना मुझे सबसे ख़राब परिणाम लगता है! क्या दंपति के लिए कोई ऐसा मार्ग नहीं कि वे इस बात पर तब तक बात करते रहें जब तक सहमति न हो जाए? जब तक वह स्पष्टता न आए, तब तक बातचीत को आगे बढ़ाना बेहतर है, जबकि पति और पत्नी दोनों प्रार्थना में सबसे अच्छे परिणाम को खोजें, दूसरों से सलाह लें, और सचमुच, सचमुच एक दूसरे को सुनने का प्रयास करें।[359]

मेरा अनुभव मुझे इस निष्कर्ष पर पहुँचाता है: ठीक उस बिंदु पर अपने अधिकार का प्रयोग करना, जहाँ मेरी पत्नी किसी बात के बारे में इतनी गहराई से महसूस करती है कि मुझसे असहमत है, संबंध में तोड़-फोड़ करने जैसा लगता है। Alan Frow के विपरीत, जिसे पाँच ऐसे अवसर याद हैं जब उसकी पत्नी ने उससे तुरुप का पत्ता चलने को कहा, मुझे केवल एक ही बार की याद है जब मैंने कोई बड़ा निर्णय इस तरह लिया कि उसके बारे में Julie की अनिश्चितता को दरकिनार कर दिया। पर उस बार भी उसने केवल मेरे अधिकार को स्वीकार करने से अधिक मेरे दृढ़ विश्वास पर भरोसा किया। अब जब मैं इस पर सोचता हूँ, तो मुझे ऐसी कहीं अधिक घटनाएँ याद आती हैं जब मैंने उसके विचार के विरुद्ध अंतिम निर्णय लेने का प्रयास किया, और उसने साहस के साथ मेरा विरोध किया। धन्यवाद की बात है कि हर बार मैंने उसकी सुनी और हमने अंतिम निर्णय टाल

359. एक पॉडकास्ट साक्षात्कार में Alan Frow अंतिम निर्णय वाले मॉडल का बचाव करते हुए कहता है कि जब वह पास्टर के रूप में समानतावादी विवाहों को परामर्श देता है, तो वह देखता है कि “बहुत तनाव होता है, क्योंकि वे नहीं जानते कि निर्णय कौन लेगा।” यहाँ सुनें: www.bit.ly/2ZPRZGH – पर क्या यह व्यापक रूप से सच है? यदि मेरे विवाह के अनुभव से और उन सब दंपतियों से, जिन्हें मैंने परामर्श दिया है, कुछ पता चलता है, तो यह कि यदि पत्नी यह अपेक्षा रखती है कि जब वह और उसका पति सहमत न हो पाएँ, तब निर्णय पति के अधिकार से होगा, तो यह वास्तव में उसके वैवाहिक अनुभव में भारी मात्रा में तनाव जोड़ देगा। अनेक मसीही परामर्शदाता ज़ोर देकर कहते हैं कि टकराव वाले मसीही विवाहों में तनाव से निपटने में सबसे अधिक सहायता पति को अंतिम निर्णय का अधिकार देने से नहीं, बल्कि ऐसे अधिकार के न होने से मिलती है। बल्कि दंपति को यह सीखना होगा कि वे सचमुच एक दूसरे को कैसे सुनें, एक दूसरे से कैसे प्रेम करें, और दूसरे की सेवा में अपनी-अपनी योजनाएँ कैसे छोड़ें। मैंने ऐसी स्त्रियों की पर्याप्त कहानियाँ सुनी हैं जो अपने पति के अंतिम निर्णय के अधिकार के अधीन रहने का प्रयास करती रहीं, जी-जान से प्रयास करती रहीं, फिर भी उससे आहत हुईं। जब मैं भूमिकाओं को उलटने की कल्पना करता हूँ, और स्वयं को एक ऐसी पत्नी के स्थान पर रखता हूँ जो किसी निर्णय के बारे में गहराई से महसूस करती है, जिसके बारे में उसका पति भी उतनी ही गहराई से महसूस करता है और जिसे अंततः निर्णय लेने का अधिकार है, तो मुझे एहसास होता है कि अंतिम निर्णय वाला दृष्टिकोण पति को यीशु के इन शब्दों की उपेक्षा करने पर विवश कर सकता है: “दूसरों के साथ वैसा [न] करो जैसा तुम [नहीं] चाहते कि वे तुम्हारे साथ करें।”

दिया। पीछे मुड़कर देखता हूँ तो मुझे लगता है कि यदि उसकी उचित चिंताओं के बावजूद मैंने अपने पद का रौब जमाने का प्रयास किया होता, तो मैं उसके भरोसे को चोट पहुँचाता।

इन सब बातों का अर्थ यह है कि मुझे दृष्टिकोण 2 के बारे में गंभीर संदेह हो गए हैं! जितनी मेरी उम्र बढ़ी है, और जितने अधिक दंपतियों के साथ मैं एक पास्टर और मित्र दोनों के रूप में चला हूँ, इन चिंताओं को क़ालीन के नीचे छिपाना उतना ही कठिन हो गया है। मैंने यह निष्कर्ष निकाला है कि Julie और मैं परमेश्वर की दृष्टि में अपना विवाह कैसे चलाते हैं, और हम अपने बच्चों को कैसे पालते हैं कि वे अपने जीवनसाथियों से कैसा व्यवहार करें और अपने जीवनसाथियों को अपने साथ कैसा व्यवहार करने दें – यह इतना निर्णायक विषय है कि अंतिम निर्णय वाले दृष्टिकोण की कमज़ोरियों का भी सामना करना और इफिसियों 5 की दूसरी संभावित व्याख्याओं के लिए खुला रहना बेहतर है। जब मैंने ऐसा किया, तो मैंने फिर से वह आनंद पाया जो इफिसियों 5 जैसे कठिन अंशों को केवल ऊपर-ऊपर से पढ़ने में नहीं, बल्कि गहराई तक खोदने में है – यह पूछते हुए कि अंश क्या कह रहा है, और यह भी कि वह ऐसा क्यों कह रहा है, और मूल रूप से किससे कह रहा है।

दृष्टिकोण 3: अपनी बराबर की पत्नी के सेवक के रूप में पति

इस तीसरे दृष्टिकोण की ठीक से जाँच करने से पहले मैंने मान लिया था कि यह स्पष्ट रूप से इफिसियों 5 की स्पष्ट शिक्षा से बच निकलने का एक प्रयास है। मैं Frow से सहमत होता, जो कहता है कि यह इस अंश के साथ व्याख्या की "कलाबाज़ियाँ" (flick flacks) करने का प्रयास है। इसलिए जब मैंने अंततः और ठीक से इस दृष्टिकोण पर अपना मन लगाया, तो यह जानकर मैं चकित रह गया कि यह सचमुच कितना विश्वसनीय है – यह व्याख्या की कोई कलाबाज़ी नहीं, बल्कि उस कठिन मेहनत का परिणाम है जो ठोस व्याख्या के लिए बहुत आवश्यक है। बाइबल-विद्वान Philip Payne इफिसियों 5 के बारे में कई बातें बताता है, जिनसे यह बहुत संभव लगता है कि पौलुस वास्तव में विवाह के आधार के रूप में समानता और परस्परता को बढ़ावा दे रहा है, न कि – जैसा ऊपरी पठन सुझाता है – अगुवाई और अधीनता को।

पहला, पौलुस मसीही विवाह को परस्पर अधीनता के ढाँचे के भीतर रखता है। Payne कहता है कि पौलुस द्वारा "अधीन रहना" शब्द (जिसका अर्थ है, स्वयं को दूसरे के नीचे रखना) को पारस्परिक वाक्यांश "एक दूसरे" (यूनानी: allelous) के साथ जोड़ना पौलुस की सामाजिक रूप से सबसे क्रांतिकारी और भाषा की दृष्टि से सबसे रचनात्मक शिक्षाओं में से एक है। नए नियम में अधिकांश बार "अधीन रहना" (यूनानी: hypotasso) शब्द का अर्थ किसी दूसरे के अधिकार का पालन करना होता है, पर इसे "एक दूसरे" के साथ जोड़कर वह इस अधीनता को पारस्परिक बना देता है, और इस प्रकार इसका अर्थ किसी के अधिकार को स्वीकार करने से बदलकर स्वयं को उसकी सेवा में लगा देना हो जाता है। यह उस बात से पूरी तरह मेल खाता है जो पौलुस इफिसुस के मसीहियों से पहले ही कह चुका है, जिन्हें "प्रेम से एक दूसरे की सह लेना" (4:25), "एक दूसरे पर कृपालु और करुणामय" होना, और "एक दूसरे को क्षमा करना" (4:32) है। पौलुस जो कारण देता है वह यह है कि हम एक दूसरे के अधीन "मसीह के भय से" (5:21) रहते हैं – यह अध्याय

के आरंभ की ओर संकेत करता है, जहाँ दिखाया गया है कि मसीह ने स्वयं को हमारी सेवा में लगा दिया: "मसीह ने हम से प्रेम किया और हमारे लिये अपने आप को सुखदायक सुगन्ध के लिये परमेश्वर के आगे भेंट और बलिदान कर दिया" (5:2)।

दृष्टिकोण 1 को मानने वाले कठोर पूरकतावादी इसका विरोध करते हैं। Wayne Grudem और Kevin De Young दोनों यह तर्क देकर पत्नी के प्रति पति की अधीनता के पारस्परिक निहितार्थ का खंडन करने का प्रयास करते हैं कि "एक दूसरे" वाक्यांश का अर्थ "कुछ लोग दूसरों के" भी हो सकता है। उदाहरण के लिए, Grudem इस शब्द के प्रयोग "लोग एक दूसरे को वध करें" (प्रकाशितवाक्य 6:4) का हवाला देता है और कहता है कि इसका अर्थ है कि "कुछ लोग दूसरे लोगों को वध करेंगे।" पर यदि प्रकाशितवाक्य के लेखक के मन में केवल यह होता कि कुछ लोग दूसरों को वध करते हैं, पर स्वयं वध नहीं किए जाते, तो वह यह शब्द प्रयोग ही न करता। De Young ऐसे दूसरे पाठों की ओर संकेत करता है जिनमें "एक दूसरे" वाक्यांश आता है[360] और जिनके बारे में उसका दावा है कि वे पारस्परिक नहीं हैं – पर ध्यान से जाँचने पर वे निश्चय ही पारस्परिक हैं, ठीक वैसे ही जैसे इफिसियों की पत्री के बाक़ी भाग में और पूरे नए नियम में "एक दूसरे" का हर प्रयोग। "एक दूसरे" के अधीन रहने को केवल एक ही दिशा में (अधीनस्थ से अधिकार वाले की ओर) बहाने का Grudem और De Young का प्रयास असफल हो जाता है। यहाँ तक कि George Knight और Tom Schreiner जैसे अग्रणी पूरकतावादी धर्मविज्ञानी भी इस बिंदु पर उनसे असहमत हैं।[361]

दूसरा, पौलुस स्पष्ट करता है कि वह पत्नी की किस प्रकार की अधीनता की बात कर रहा है। जैसा कि मैंने अभी कहा, अधीनता दो प्रकार की होती है। एक है अनुपालन वाली अधीनता, जो कोई अधीनस्थ किसी अधिकारी के प्रति रखता है, जैसे कोई नागरिक अपनी सरकार के प्रति।[362] फिर सेवा वाली अधीनता है – जैसा हमने देखा, पौलुस का यही अर्थ है जब वह परस्पर अधीनता की बात करता है।[363] पहली एकतरफ़ा होती है और उसकी माँग की जा सकती है। दूसरी पारस्परिक हो सकती है, और वह हमेशा स्वैच्छिक होती है।

360. मत्ती 24:10; लूका 12:1; 1 कुरिन्थियों 7:5. 11:33

361. पूरकतावादियों के विरोध का एक और तरीका यह कहना है कि यदि परस्पर अधीनता (इफिसियों 5:21 में) तीनों जोड़ियों (पति-पत्नी, माता-पिता-बच्चे, स्वामी-दास) का ढाँचा है, तो स्पष्ट है कि पौलुस विवाह में अगुवाई और अधीनता के विचार को कमज़ोर कर ही नहीं सकता, क्योंकि दूसरी और तीसरी जोड़ी स्वभाव से ही पदानुक्रमित हैं। इफिसियों 5:21 के बारे में मेरी अपनी समझ यह है कि यह तीनों जोड़ियों का ढाँचा देने वाला पद नहीं, बल्कि पौलुस की पत्री के नए भाग में ले जाने वाला संक्रमण-पद मात्र है, जिसे पौलुस विशेष रूप से विवाह-संबंधों पर लागू करता है। यह Schreiner और Knight जैसे पूरकतावादियों के तरीके से कहीं बेहतर है, जो परस्पर अधीनता के पतियों और पत्नियों दोनों पर लागू होने के विचार को स्वीकार करते हुए, अजीब ढंग से उसे यों दोबारा कहते हैं: "पत्नी अधीन रहने वाली पत्नी की अपनी भूमिका के अधीन रहती है, जबकि पति त्यागपूर्ण अगुवे की अपनी भूमिका के अधीन रहता है।" पर पौलुस स्पष्ट रूप से उनसे भूमिकाओं के अधीन रहने को नहीं, बल्कि एक दूसरे के अधीन रहने को कह रहा है।

362. रोमियों 13:1

363. "क्योंकि hupotassō में किसी दूसरे से नीचे के दर्जे पर रखे जाने का विचार है, इसलिए यह अधिकारियों के प्रति अधीनता के लिए भी उपयुक्त है और बराबर के लोगों के बीच व्यक्तिगत संबंधों में अधीनता के लिए भी। पहली स्थिति में किसी पदानुक्रम में वस्तुगत दर्जा होता है: उदाहरण के लिए, विश्वासी नागरिक सरकार के अधिकार के अधीन हैं, और इसलिए उन्हें उस अधिकार के प्रति अधीनता में व्यवहार करना चाहिए। दूसरी स्थिति में दर्जा व्यक्तिपरक होता है: विश्वासियों को स्वयं को दूसरों से नीचे के दर्जे पर रखना है, मानो किसी पदानुक्रम में हों; अर्थात् उन्हें दूसरों को अपने से अधिक महत्वपूर्ण मानकर व्यवहार करना है, क्योंकि यही मसीही दीनता का सार है (रोमियों 12:10; फिलिप्पियों 2:3)।" (Andrew Bartlett, Men and Women in Christ, पृ. 36)

जब पौलुस पत्नियों से अपने पतियों के अधीन रहने को कहता है, तो वह किस प्रकार की अधीनता की बात कर रहा है? इसका उत्तर देने की हमारी क्षमता हमारे (अंग्रेज़ी और दूसरे) अनुवादों से प्रभावित होती है। कोई भी बाइबल खोलिए, और हम पद 21 के अंत में पूर्ण विराम देखेंगे, फिर एक बिलकुल नया अनुच्छेद शुरू होता है। कुछ अनुवाद तो पद 21 और 22 के बीच एक शीर्षक भी डाल देते हैं, जैसे "Wives and husbands" (पत्नियाँ और पति) (ESV)। पर यह अनुच्छेद-विभाजन या डाला गया शीर्षक एक बहुत महत्वपूर्ण बात को छिपा देता है: यूनानी भाषा में पद 21 और पद 22 के बीच कोई पूर्ण विराम नहीं है।

वास्तव में – और इस बात ने मुझे चकित कर दिया – हमारे पास मौजूद सबसे पुरानी यूनानी प्रतियों में पद 22 में "अधीन रहो" शब्द है ही नहीं। वह इसलिए नहीं है क्योंकि पद 22 यह क्रिया पद 21 से उधार लेता है।[364] यूनानी पाठ शब्दशः कहता है, "मसीह के भय से एक दूसरे के अधीन रहते हुए, पत्नियाँ [ध्यान दीजिए, यहाँ शब्द नहीं है] अपने अपने पतियों के ..." दूसरे शब्दों में, जब पौलुस यहाँ पत्नियों से अपने पतियों के अधीन रहने को कहता है, तो वह ठीक उसी प्रकार की अधीनता की बात करता है जो सब विश्वासियों को एक दूसरे के प्रति रखनी है। पौलुस यहाँ पत्नियों से यह नहीं कह रहा कि वे विशेष रूप से अपने पतियों के अधीनस्थ बनें। बल्कि वह दूसरे प्रकार की अधीनता की बात करता है, जिसमें पत्नियाँ दीनता से अपने पतियों की सेवा करने और उन्हें प्रसन्न करने का चुनाव करती हैं। उसी वाक्य में वह अंतिम बार "अधीन रहना" शब्द का प्रयोग मसीह के प्रति कलीसिया की अधीनता के लिए करता है, जिसे पद 21 और 22 में "अधीन रहना" शब्द के प्रयोग के प्रकाश में हमें इस प्रकार पढ़ना चाहिए: "जैसे कलीसिया हर बात में दीनता से मसीह की सेवा करती और उन्हें प्रसन्न करती है, वैसे ही पत्नियाँ भी हर बात में दीनता से अपने पतियों की सेवा करें और उन्हें प्रसन्न करें" (पद 24)।[365]

तीसरा, यहाँ "सिर" (यूनानी: kephalē) का अर्थ बहुत संभवतः अधिकार नहीं, बल्कि जीवन-स्रोत है। आधुनिक अंग्रेज़ी में "head" (सिर) शब्द का लाक्षणिक अर्थ अधिकार होता है – CEO कंपनी का "head" (प्रमुख) होता है; कमांडिंग ऑफ़िसर प्लाटून का "head" होता है। इसके अतिरिक्त, जब हम किसी शाब्दिक शरीर के शाब्दिक सिर की कल्पना करते हैं, तो हम आधुनिक लोग मान लेते हैं कि सिर, जिसमें मस्तिष्क है, इसलिए शरीर का नियंत्रण-केंद्र है। तंत्रिका-तंत्र के द्वारा वह शरीर को आदेश भेजता है।

हमें जो प्रश्न पूछना चाहिए वह यह है कि जब पौलुस ने kephalē शब्द चुना तो उसका अर्थ क्या था और उसके मूल पाठक क्या समझते। पूरकतावादी विद्वानों का तर्क है कि चूँकि पौलुस सिर के रूप में मसीह की तुलना पति से करता है, जो सिर है, इसलिए निश्चय ही इसमें पति का अधिकार निहित है। पर यह इस तथ्य को अनदेखा करता है कि जब पौलुस इस शब्द का प्रयोग रूपक के रूप में करता है, तो संभवतः उसका अर्थ यह बिलकुल नहीं होता। हाँ, पौलुस समझता था कि यीशु मसीह को कलीसिया और सृष्टि पर अधिकार है, पर जब वह यीशु के बारे में किसी देह के kephalē के रूप में बात करना चुनता है, तो वह प्रायः ऐसी बात पर ज़ोर देता है जो अधिकार से संबंधित तो है, पर ठीक-ठीक अधिकार जैसी नहीं। "परिशिष्ट 3: Kephalē का

364. Cynthia Westfall "Paul and Gender" (अध्याय 1) में लिखती है, "इफिसियों 5:18-23 यूनानी में एक ही वाक्य है, और पद 22 में पत्नियों के लिए निर्देश व्याकरण की दृष्टि से पद 21 की परस्पर अधीनता पर निर्भर हैं, क्योंकि पद 22 में 'अधीन रहो' क्रिया का लोप (छूट जाना) है।"
365. ऐसा लगता है कि पौलुस अपनी पत्री में "अधीन रहना" के इस अर्थ की रक्षा इस प्रकार करता है कि आगे के पदों में माता-पिता और बच्चे तथा दास और स्वामी के संबंध के लिए वह एक दूसरा शब्द चुनता है – "आज्ञा मानना।"

अर्थ क्या है" में – जिसे अवश्य पढ़ना चाहिए – मैं समझाता हूँ कि Grudem के दावे के विपरीत, पौलुस के समय में इस शब्द का सामान्य अर्थ अधिकार नहीं था।

यहाँ इफिसियों 5 में पौलुस का अभिप्रेत अर्थ क्या है? सबसे महत्वपूर्ण संकेत यह है कि वह इस शब्द का प्रयोग विवाह की एक उपमा के भाग के रूप में करता है – और वह भी एक बिलकुल नई साहित्यिक रचना – जिसमें पति पत्नी का सिर है, और पत्नी उसकी देह है। "सिर" के लिए यूनानी शब्द स्त्री-पुरुष संबंध के संदर्भ में केवल दो बार आता है (यहाँ और 1 कुरिन्थियों 11:3 में), और दोनों जगह इस शब्द के अर्थ को लेकर विद्वान बँटे हुए हैं (यद्यपि अध्याय 6 में मैं तर्क देता हूँ कि 1 कुरिन्थियों में इसका अर्थ आदर के योग्य जीवन-स्रोत है)। केवल इफिसियों 5 में यह शब्द सिर-और-देह के रूपक के भीतर प्रयोग हुआ है। तो क्या पौलुस हमें कोई संकेत देता है कि "पत्नी का सिर, जो उसकी देह है" से उसका क्या अर्थ हो सकता है?

हाँ, देता है! पद 23 में वास्तविक यूनानी वाक्य-रचना, जो दुर्भाग्य से अधिकांश अनुवादों में छिप जाती है, यह है: "पति पत्नी का सिर, ... मसीह कलीसिया का सिर, वह आप ही देह का उद्धारकर्ता।" यूनानी में हम देखते हैं कि "सिर" से पौलुस का क्या अर्थ है। ये तीन समानांतर वाक्यांश दिखाते हैं कि पौलुस "सिर" शब्द को "उद्धारकर्ता" के पर्याय के रूप में प्रयोग करता है। यदि पौलुस पति के अधिकार पर ज़ोर देना चाहता, तो वह ऐसा कहने के लिए अनेक यूनानी शब्दों में से कोई एक प्रयोग कर सकता था: kyrios (प्रभु), exousia (अधिकार), या proestōtes (प्रबंध करना)। इसके बजाय वह सिर-देह के रूपक को चुनता है, जिसकी तुलना वह मसीह के अपनी देह के उद्धारकर्ता (इस मामले में प्रभु नहीं) के रूप में स्वयं को दे देने से करता है। निश्चय ही, धर्मविज्ञान की दृष्टि से मसीह उद्धारकर्ता भी हैं (जो वे सेवा और देखभाल में हमें देते हैं) और प्रभु भी (जो वे उचित रूप से हमसे माँगते हैं), पर पौलुस इस उपमा में केवल अपनी देह के उद्धारकर्ता के रूप में मसीह का अर्थ भरता है। यदि हमें कोई संदेह हो कि यहाँ पति के सिर होने का अर्थ पति की देखभाल और सेवा है, तो देखभाल और सेवा का विचार आगे के पदों में भी बना रहता है, यद्यपि यह थोड़ा छिप जाता है, क्योंकि पौलुस उसमें एक और रूपक बुन देता है – मसीह का अपनी दुल्हन, कलीसिया, से विवाह:

मसीह ने अपने आप को उसके [अपनी दुल्हन/देह के] लिये दे दिया, कि उसको [अपनी दुल्हन/देह को] पवित्र बनाए, उसको [अपनी दुल्हन/देह को] वचन के द्वारा जल के स्नान से शुद्ध करे, और उसे [अपनी दुल्हन/देह को] एक ऐसी तेजस्वी कलीसिया बनाकर अपने पास खड़ी करे, जिसमें न कलंक, न झुर्री, न कोई ऐसी वस्तु हो, वरन् पवित्र और निर्दोष हो। इसी प्रकार उचित है कि पति अपनी अपनी पत्नी से अपनी देह के समान प्रेम रखें। जो अपनी पत्नी से प्रेम रखता है, वह अपने आप से प्रेम रखता है। क्योंकि किसी ने कभी अपने शरीर से बैर नहीं रखा, वरन् वह उसका पालन-पोषण करता है, जैसा मसीह भी कलीसिया के साथ करता है।

देखा आपने? इस पूरे अंश में पौलुस अधिकार पर नहीं, बल्कि सेवा और देखभाल पर ज़ोर देता है। जब वह पति को पत्नी का सिर कहता है, तो उसका आशय यह नहीं कि पतियों को अपनी पत्नियों पर अपना अधिकार जताना चाहिए, बल्कि यह कि पतियों को अपनी पत्नियों की सेवा वैसे ही करनी चाहिए जैसे हम में से कोई भी अपनी देह की सेवा करता है।

पद 21-30 में इस तिहरी परत वाले रूपक (सिर-देह; पति-पत्नी; और मसीह-कलीसिया) को खोलने के बाद, पौलुस इसमें एक और परत जोड़ता है: पतन से पहले आदम और हव्वा का मिलन – इससे वह चित्र, जो वह बना रहा है, और जटिल हो जाता है, पर फिर भी वह एक अद्भुत बात कहता है: "'इस कारण मनुष्य माता-पिता को छोड़कर अपनी पत्नी से मिला रहेगा, और वे दोनों एक तन होंगे।' यह भेद तो बड़ा है; पर मैं मसीह और कलीसिया के विषय में कहता हूँ।" (पद 31)। पति के सिर होने और उसकी पत्नी के शेष देह होने की पौलुस की उपमा उसे हमें आदम और हव्वा के बीच हुए सबसे पहले विवाह तक वापस ले जाने देती है, जब उन्होंने पहली बार रूपक के अर्थ में "एक तन" होने की एकता का आनंद लिया। जैसा हम अध्याय 4 में देख चुके हैं, आदम और हव्वा का मिलन अधिकार और अधीनता के बारे में नहीं, बल्कि आनंद भरी घनिष्ठता और साझेदारी के बारे में था। इस प्रकार सिर-देह के रूपक का प्रयोग करते हुए, इफिसियों 5 में पौलुस आदेशों की किसी शृंखला पर नहीं, बल्कि प्रेम के बंधन पर ज़ोर देता है।

इफिसियों 5 को इस रूप में पढ़ने के आधार पर, कि परमेश्वर पति को अपनी पत्नी की सेवा करने (न कि उसकी अगुवाई करने) के लिए बुलाते हैं, मैं एक अंतिम अंतर्दृष्टि देना चाहता हूँ: इस अंश में पति के लिए एक भी निर्देश नहीं है कि वह अपनी पत्नी की अगुवाई करे – न यहाँ, और न पूरे पवित्रशास्त्र में कहीं और! चलिए, इसे फिर से पढ़िए। व्याख्या के लिए यह बात सब कुछ बदल देती है।

यह सब हमें इस बड़े निष्कर्ष पर पहुँचाता है कि इफिसियों 5 में अपनी अधीनस्थ पत्नी पर पति के अधिकार के बारे में संभवतः कुछ भी नहीं है। बल्कि पौलुस सजीव रूपकों के द्वारा जिस बात पर ज़ोर देता है, वह यह है कि पति और पत्नी प्रेमपूर्वक एक हों और परस्पर एक दूसरे की सेवा करें और एक दूसरे को प्रसन्न करें।

क्या इसका अर्थ यह है कि पौलुस पतियों और पत्नियों से एक दूसरे के साथ एक ही प्रकार का व्यवहार करने को कह रहा है?

हाँ भी और नहीं भी। हाँ, क्योंकि दोनों को "एक दूसरे के अधीन रहने" के लिए बुलाया गया है। और यद्यपि यहाँ केवल पतियों से अपनी पत्नियों से "प्रेम" रखने को कहा गया है, दोनों को एक दूसरे से प्रेम रखना है – अन्यत्र पौलुस विशेष रूप से पत्नियों से कहता है कि वे "अपने पतियों से प्रेम रखें।"[366] पर नहीं भी, क्योंकि पौलुस के मन में शायद वे ढर्रे हैं जो उसने यूनानी-रोमी संसार की कलीसियाओं के बहुत-से विवाहों में देखे थे। उदाहरण के लिए, ध्यान दीजिए कि पति को kephalē या जीवन-स्रोत के रूप में वर्णित किया गया है, उसे ऐसा बनने के लिए कहा नहीं गया। पौलुस संभवतः इस तथ्य को ध्यान में रख रहा है कि प्राचीन संसार में पत्नियाँ प्रायः उम्र में छोटी और कम शिक्षित होती थीं, बच्चों के पालन-पोषण में बंधी रहती थीं, और इसलिए अपने पतियों की आर्थिक और शारीरिक देखभाल पर पूरी तरह निर्भर होती थीं। किसी आश्रित पत्नी को kephalē कहने का कोई अर्थ ही न होता।

साथ ही, यदि पौलुस के समय के पति आज के उन बहुत-से पतियों जैसे थे जिन्हें मैं जानता हूँ, तो (औसतन) उनमें पत्नियों की अपेक्षा अपने जीवनसाथी के लिए त्यागपूर्वक अपना जीवन देने की संभावना कम थी।[367] इसी कारण पौलुस पत्नियों से केवल इतना कहना पर्याप्त समझता है कि वे अपने पतियों के अधीन रहें

366. तीतुस 2:4

367. पतियों के पत्नियों की अपेक्षा अधिक स्वार्थी होने की प्रवृत्ति का एक तंत्रिका-विज्ञान संबंधी स्पष्टीकरण भी है – देखें www.on.today.com/3CKRlsD

(अर्थात् दीनता से उनकी सेवा करें और उन्हें प्रसन्न करें), पर फिर पति से तीन गुना अधिक बात कहकर उसके स्वार्थ को धीरे-धीरे तराशता है – उस पर ज़ोर देते हुए कि वह मसीह के समान बलिदान करे। यह बात मुझ पर तो निश्चय ही ठीक बैठती है: मेरे अपने विवाह में Julie को नहीं, बल्कि मुझे ही अपने जीवनसाथी की त्यागपूर्वक और दीनता से सेवा करने और उसे प्रसन्न करने के लिए पवित्रशास्त्र के सबसे अधिक कोंचने की और आत्मा के निरंतर बदलने वाले काम की आवश्यकता पड़ी है। मुझे लगता है कि मेरे मित्र Andrew Bartlett का यह निष्कर्ष सही है: "पौलुस पति को आत्म-बलिदान में पहल करने के लिए बुला रहा है। यद्यपि यह अपने पति के प्रति निःस्वार्थ प्रेम के पत्नी के मसीही दायित्व से स्वभाव में भिन्न नहीं है, फिर भी यह प्रेम करने की पति की ज़िम्मेदारी को और तीव्र कर देता है।"[368]

पद 33 में पौलुस पुरुषों से विशेष रूप से अपनी पत्नियों से "प्रेम" रखने (न कि उनकी अगुवाई करने) का, और पत्नियों से विशेष रूप से अपने पतियों का "आदर" करने (न कि उनकी अधीनस्थ बनने) का आग्रह करता है। वह पत्नियों से अपने पतियों का आदर करने को, और पतियों से अपनी पत्नियों से प्रेम रखने को क्यों कहता है? यद्यपि तब भी और अब भी अधिकांश पत्नियाँ आदर पाना चाहेंगी, और अधिकांश पति प्रेम पाना चाहेंगे, पर संभव है कि पौलुस अपने समय के बहुत-से पुरुषों और स्त्रियों के विशिष्ट मनोभावों के बारे में कुछ जानता था।

दृष्टिकोण 3 – अपनी बराबर की पत्नी के सेवक के रूप में पति – का वर्णन करते हुए भी मैं इसकी शक्ति महसूस करता हूँ। सच कहूँ तो, मैं आशा करता हूँ कि यही सही व्याख्या हो, क्योंकि मुझे यह बहुत प्रेरक और चुनौतीपूर्ण लगती है। यदि मुझे प्रतिदिन निर्णय लेने वाले पति के रूप में Grudem की समझ बुरा समाचार लगती है, और अंतिम निर्णय देने वाले पति के रूप में Keller दंपति की समझ बेहतर, पर फिर भी समस्यापूर्ण और असंगत लगती है, तो यह दृष्टिकोण मुझे शुभ समाचार भी लगता है और व्यवहार में पूरी तरह संभव भी।

फिर भी, क्या हो यदि पौलुस इस अंश में यह संकेत देना चाहता हो – चाहे उसने पतियों को प्रेमपूर्ण बलिदान के लिए बुलाकर उसे संतुलित कर दिया हो – कि इफिसुस की पत्नियों को अपने पतियों में किसी प्रकार का अधिकार मानना था? आख़िरकार, विवाह की कोई भी तुलना उस दिव्य विवाह से, जिसमें परमेश्वर/यीशु और हमारे बीच निश्चय ही दर्जे का अंतर है, कम से कम वैवाहिक संबंध में पदानुक्रम की बात तो मन में ला ही सकती है। इसलिए, इस अंश को ठीक समझने के संकल्प के साथ, मैंने इस पर और भी मनन किया। मैंने सोचा कि क्या मैंने बाइबल-व्याख्या के सभी सबसे महत्वपूर्ण सिद्धांतों को इस काम में लागू किया है – और तब मुझे एहसास हुआ कि मैंने ऐसा नहीं किया था।

दृष्टिकोण 4: छुड़ाए गए PATERFAMILIAS (घर के मुखिया) के रूप में पति

जैसा पहले कहा गया, पवित्रशास्त्र को समझने और लागू करने का प्रयास करते समय हम जो सबसे सामान्य भूलें करते हैं, उनमें से एक यह कल्पना करना है कि उसके विभिन्न भाग सीधे हमें लिखे गए थे। पर ऐसा नहीं

368. Men and Women in Christ, पृ. 64

है: वे शायद हमारे लिए लिखे गए हों, पर वे हमें नहीं लिखे गए थे। जब हम मूल पाठकों की परिस्थिति को, और यह कि वे उन शब्दों से क्या समझते, समझ लेते हैं, केवल तभी हम, जो बहुत भिन्न परिस्थिति या संस्कृति में रहते हैं, पाठ से अपने लिए अर्थ निकालने का काम शुरू कर सकते हैं। धन्यवाद की बात है कि अनेक या अधिकांश अंशों में हमारी आधुनिक परिस्थिति पहले पाठकों की परिस्थिति से काफ़ी मिलती-जुलती है; इससे यह काम आसान हो जाता है। पर तब क्या, जब उनकी परिस्थिति हमारी परिस्थिति से बहुत, बहुत भिन्न हो?

आज का मसीही बाइबल के मूल श्रोताओं से भिन्नताओं की एक "नदी" (जैसे भाषा, संस्कृति, परिस्थितियाँ) के द्वारा अलग है। यह नदी हमें उनके संदर्भ के अर्थ से सीधे हमारे संदर्भ के अर्थ तक पहुँचने से रोकती है। निश्चय ही हम उसी महान कहानी का भाग हैं, पर कहानी में हमारा स्थान प्रायः हमारे आत्मिक पूर्वजों के स्थान से भिन्न है। कभी-कभी नदी चौड़ी होती है, और उसे पार करने के लिए लंबे पुल की आवश्यकता होती है। कभी वह एक सँकरी धारा होती है, जिसे हम आसानी से पार कर सकते हैं। उसके पार सिद्धांत निकालने वाला पुल बनाने का प्रयास शुरू करने से पहले हमें यह जानना होगा कि नदी ठीक कितनी चौड़ी है।[369]

जब मैंने व्याख्या की इस कुंजी को इफिसियों 5 के अपने अध्ययन में लागू किया, तो मुझे अपनी भूल का एहसास हुआ, और उन लगभग सब लोगों की भूल का भी, जिन्हें मैंने इस अंश पर पढ़ा था: हम मान लेते हैं कि इफिसियों 5 एक सँकरी धारा है, जिसे हम आसानी से पार कर सकते हैं, जबकि वास्तव में यह एक चौड़ी नदी है, जिसे पार करने के लिए लंबे पुल की आवश्यकता है।

मैं समझाता हूँ। हम कल्पना करते हैं कि इफिसुस की कलीसिया में उपस्थित विवाहित दंपति कमोबेश आज के दंपतियों जैसे थे। हम कल्पना करते हैं कि पौलुस हमें, हमारे आज के विवाहों को "देखता" है, और इसलिए यह पत्री हमें लिखता है। पर नहीं, वह जिन विवाहों को संबोधित करता है, वे पहली शताब्दी के यूनानी-रोमी संसार के विवाह हैं, जो हमारे विवाहों से बहुत भिन्न थे। उस संसार में घराना कमाने वाले दो माता-पिता, दो बच्चों और एक कुत्ते और बिल्ली से मिलकर नहीं बनता था। वह प्रायः एक पुरुष से बनता था – paterfamilias (घर का मुखिया) – जो अपनी पत्नी, अपने बच्चों और कभी-कभी अपने दासों पर शासन करता था। अरस्तू (Aristotle) की शिक्षा के कारण घर पदानुक्रम के अनुसार व्यवस्थित होते थे – उस संस्कृति में घराना होने का यही सबसे अच्छा तरीका माना जाता था। (केवल जब कोई वयस्क पुरुष न होता, तभी घर की शासक कोई स्त्री होती थी।) मैं "शासक" शब्द जान-बूझकर प्रयोग करता हूँ: अरस्तू ने कहा, "घर का शासन एक राजतंत्र है"[370] – पति और पिता राजा था।

पिछले अनुच्छेद में बच्चों और दासों का उल्लेख होते ही शायद आपके मन में भी कुछ बात स्पष्ट होने लगी हो, जैसे मेरे मन में हुई। इफिसियों 5:22-33 में पति-पत्नी का संबंध उन तीन संबंध-जोड़ियों में से पहला है जिन्हें पौलुस संबोधित करता है। अगली दो तुरंत बाद आती हैं: माता-पिता और बच्चे (6:1-4) तथा स्वामी और दास (6:5-9)। जो बात मैं पहले नहीं देख पाया था, वह यह थी कि पौलुस सुसमाचार को इन स्तरों में बँटे प्राचीन घरानों पर लागू कर रहा है, जिनमें पुरुषों, स्त्रियों, बच्चों और दासों का पदानुक्रम था। पतियों के पास

369. Duvall and Hays, Grasping God's word, अध्याय 13।
370. अरस्तू, Politics, 1255b.

ऐसे अधिकार, विशेषाधिकार और स्वतंत्रताएँ थीं जो पत्नियों को नहीं दी जाती थीं,[371] शक्ति उनके हाथ में थी, और अधिकांश आय वही लाते थे। प्रायः स्त्रियाँ न संपत्ति की स्वामी हो सकती थीं, न व्यापार चला सकती थीं, और न ही किसी पुरुष के उनकी ओर से काम किए बिना कोई क़ानूनी या आर्थिक लेन-देन कर सकती थीं।

भूमध्यसागरीय समाज में विवाह के समय पुरुष की औसत आयु तीस वर्ष होती थी, पर स्त्री की अठारह वर्ष या उससे कम। जब कोई पुरुष विवाह करता था, तो वह पहले से ही दुनिया देखा हुआ व्यक्ति होता था, जो समाज में जीना जानता था। वह ऐसा व्यक्ति था जो सामाजिक और आर्थिक रूप से अपना काम चला सकता था। जब कोई स्त्री विवाह करती थी, तो वह अभी भी एक लड़की होती थी, जिसे कभी अपने घर के मुख्य द्वार पर हुई दस्तक का उत्तर देने तक की अनुमति नहीं मिली थी। एक सामान्य स्त्री संतान जनने की अपनी पूरी आयु में लगभग हर दो वर्ष या तीस महीने में एक बच्चे को जन्म देती थी। वह सदा "नंगे पाँव और गर्भवती" घर पर रहती थी। जैसे ही पिछले बच्चे का दूध छूटता, वह अगले बच्चे को जन्म देती थी।[372]

अधिकांश स्त्रियों को घरेलू कामों के सिवा कोई शिक्षा नहीं मिलती थी। वे पूरी तरह निर्भर थीं और जीवन भर किसी पुरुष के नीचे रखी जाती थीं – पिता के, या शायद किसी अभिभावक के, फिर पति के। बच्चों, दासों और पत्नियों के लिए अधीनस्थता ही सामान्य नियम था। इस संदर्भ और संस्कृति में paterfamilias से अपेक्षा थी कि वह नियंत्रण में रहे, न कि दीनता से किसी की सेवा करे, विशेषकर अपने ही अधीनस्थों की, जिन्हें वास्तव में paterfamilias की सेवा करनी थी। यही अरस्तू का विचार था: "पुरुष स्वभाव से स्त्री की अपेक्षा आज्ञा देने के लिए अधिक उपयुक्त है ... यह असमानता स्थायी है। ... पुरुष का साहस आज्ञा देने में दिखता है, स्त्री का आज्ञा मानने में।"[373]

अब इस पर ध्यान दीजिए: पौलुस कोई ऐसी घरेलू संरचना नहीं गढ़ रहा जिसमें सबसे बड़ा पुरुष बाक़ी सब पर शासन करे, ठीक वैसे ही जैसे वह वह शासन-संरचना नहीं गढ़ता जिसमें कैसर रोमी साम्राज्य का प्रभु है। वह केवल उस संरचना को संबोधित कर रहा है, और प्रयास कर रहा है कि मौजूदा सामाजिक संरचनाओं के भीतर रहकर काम करे – उन्हें छुड़ाने के मार्ग खोजकर, न कि अनिवार्य रूप से उन्हें उखाड़ फेंकने का प्रयास करके। जैसे आज कोई भी अच्छा मिशनरी किसी नई संस्कृति में प्रवेश करते समय करेगा, पौलुस जहाँ तक हो सका, लोगों के स्तर पर उतरकर उनकी व्यवस्था के अनुसार चला, यद्यपि उसने उसे अनिवार्य रूप से आदर्श के रूप में स्वीकार नहीं किया।

371. मैं यह भी मानकर चल रहा हूँ कि "यूनानी और रोमी दोनों परिवेशों में दास क़ानूनी रूप से विवाह करने में असमर्थ थे। इसलिए इफिसियों 5 में पत्नियों और पतियों के व्यवहार के बारे में पौलुस की बातें मुख्य रूप से स्वतंत्र लोगों को संबोधित हैं, विशेषकर उस सामाजिक वर्ग को जो दासों वाले घरानों का मुखिया था।" (Andrew Bartlett, Men and Women in Christ, पृ. 66)
372. David Scholer, Journal of the Evangelical Theological Society 30, दिसंबर 1987, पृ. 416. www.bit.ly/3bDKpl9
373. अरस्तू, Politics, 1259a.

सुसमाचार का प्राचीन घराने से सामना

यदि आप उस संदर्भ में प्रेरित पौलुस होते, तो आप अपनी कलीसिया के इन पदानुक्रमित घरानों की पास्टरीय देखभाल कैसे करते? आइए, उन तीन तरीक़ों को देखें जिनसे पौलुस इफिसुस के घरानों की उनके संदर्भ में पास्टरीय देखभाल करता है।

पहला, वह घराने के सब संबंधों को सुसमाचार में डुबो देता है। पौलुस पत्नी और पति को एक दूसरे के साथ "मसीह के भय से" व्यवहार करने का मार्गदर्शन देता है, और हर निर्देश को ऐसे शब्दों से सराबोर कर देता है जो मसीह से जुड़े हैं: "जैसे प्रभु के," "जैसे मसीह ... है," "मसीह के," "जैसा मसीह ने भी," और "मैं मसीह ... के विषय में कहता हूँ।" माता-पिता और बच्चों, तथा स्वामियों और दासों से अपने संबंध के ढंग की नई कल्पना कराने में भी वह यही तरीका अपनाता है। ऐसा लगता है कि हर दूसरा शब्द "मसीह" या "प्रभु" है। पौलुस कुशलता से प्रयास कर रहा है कि सब लोग – पत्नियाँ और पति, बच्चे और माता-पिता, दास और स्वामी – दूसरे के साथ अपने संबंध के ढंग को मसीह के साथ अपने संबंध के फल के रूप में देखें।

दूसरा, पौलुस विशेष रूप से उस स्वार्थी और दबंग व्यवहार की जड़ काटता है जो paterfamilias में बहुत आम था। उन प्राचीन संहिताओं में, जो घराने के भीतर की भूमिकाएँ निर्धारित करती थीं, paterfamilias से शासन करने को कहा जाता था, और बाक़ी सबसे अधीनस्थ रहने को। उन संहिताओं का अधिकांश ध्यान उन अधीनस्थों पर होता था जिन्हें अपना आचरण सुधारना था। पर पौलुस की उन्नत "संहिता" वह करती है जो पहले कभी नहीं किया गया था: संबंधों की हर जोड़ी में वह सबसे अधिक ध्यान पति/माता-पिता/स्वामियों (तीनों में वही पुरुष शामिल है!) से यह कहने पर देता है कि वे अपना आचरण सुधारें। यह मानकर चलते हुए कि अपनी संस्कृति के बल पर paterfamilias पहले से ही शासन करता है, वह उससे कहता है कि अब वह अपनी पत्नी के लिए अपना प्राण दे, अपने बच्चों को रिस न दिलाए, और अपने दासों को धमकाए नहीं। अपने समय में यह एक बिलकुल क्रांतिकारी चुनौती रही होगी। जिस संस्कृति ने पतियों को अपनी पत्नियों पर जीवन और मृत्यु की शक्ति दी थी, उसमें पौलुस पतियों से कहता है कि वे अपनी शक्ति छोड़ दें, आवश्यकता हो तो मर भी जाएँ, ताकि उनकी पत्नियाँ फल-फूल सकें।

तीसरा, पौलुस सुसमाचार का प्रयोग करके पत्नी, बच्चों और दासों की paterfamilias के प्रति अधीनस्थता को नरम करता है और उसे नया रूप देता है। उन्हें अवज्ञाकारी बनने का सुझाव दिए बिना, वह उस प्रकार की अधीनस्थता का सुझाव देता है जो सुसमाचार उनकी परिस्थिति में ला सकता है। जैसा हमने देखा, पत्नी के लिए इसका अर्थ यह है कि उसे केवल अनिच्छा से अपने पति के अधिकार के नीचे नहीं झुकना चाहिए, बल्कि दीनता से उसकी सेवा करनी और उसे प्रसन्न करना चाहिए, उसी प्रकार जैसे वह दीनता से मसीह की सेवा करती और उन्हें प्रसन्न करती है।

पौलुस की शिक्षा ने चमत्कार कर दिखाए।

paterfamilias पर लगातार चोट करके, और फिर पितृसत्तात्मक समाज के सबसे शक्तिहीन लोगों – पत्नियों, बच्चों, दासों – को इतनी कोमलता से संबोधित करके, पौलुस ने आरंभिक कलीसिया की सहायता की कि वह शक्तिहीनों को झुंड के झुंड अपनी ओर खींचे। दूसरी शताब्दी में मूर्तिपूजक आलोचक केल्सस (Celsus) ने कलीसिया का उपहास करते हुए कहा कि "मसीही धर्म स्त्रियों, बच्चों और दासों का धर्म है।"[374]

घराने के संबंधों के कामकाज को पौलुस ने जो नया मोड़ दिया, वह उस संस्कृति में अनसुना था। इन सब बातों में वह प्राचीन पदानुक्रम को मिटा नहीं देता – पर वह उसे किसी प्रकार के दिव्य आदर्श के रूप में बनाए रखने का प्रयास भी नहीं करता। बल्कि वह उसे इस प्रकार भीतर से पलट देता है कि न केवल पूरी संरचना सुसमाचार में डुबो दी जाती है, बल्कि अंततः उसी में घुल भी जाएगी – जैसा हमारे समय में हो चुका है।

परंतु उस समय, प्राचीन संसार का कोई भी मूर्तिपूजक, जो किसी मसीही घराने के भीतर झाँकता, संभवतः यह नहीं सोचता कि पौलुस रोमी क़ानून को उखाड़ फेंकने का, या बिना पदानुक्रम वाले, समानतावादी घराने लागू करने का प्रयास कर रहा है। उसे छुड़ाए गए paterfamilias में जो दिखाई देता, वह था वह असामान्य ढंग जिससे वह उन लोगों की कोमलता से देखभाल करता और उनके लिए बलिदान करता जिनकी वह अगुवाई करता था, और उसकी पत्नी, बच्चों और दासों में दिखाई देने वाला आनंद।

इसलिए दृष्टिकोण 3 के विपरीत, जो सुझाता है कि पौलुस बिना किसी मिलावट के समानतावाद सिखा रहा है, यह दृष्टिकोण मानता है कि जब पौलुस पति को सिर कहता है, तो हो सकता है कि वह एक सांस्कृतिक मानदंड के रूप में पत्नी पर पति के अधिकार को मानकर चल रहा हो। और जब वह पति-पत्नी संबंध की तुलना मसीह-कलीसिया संबंध से करता है, तो संभव है कि वह इस तथ्य को उठा रहा हो कि एक दूसरे का "प्रभारी" है। परंतु यद्यपि वह मानकर चलता है कि paterfamilias प्रभारी है, फिर भी वह निश्चय ही इसे किसी "भूमिका" या दर्जे के रूप में निर्धारित नहीं कर रहा, जो पति को सब समयों और सब संस्कृतियों में अपनी पत्नी पर रखना चाहिए। स्त्री पर पुरुष की सांस्कृतिक शक्ति को आदर्श बनाने के बजाय, वह सुसमाचार के द्वारा उसे छुड़ाने का प्रयास करता है।

John Piper के तर्क का उत्तर

कुछ पूरकतावादी इसके विरोध में यह तर्क देते हैं कि यदि हम मान लें कि पौलुस पति के अधिकार को स्वीकार भी करता है और उसे कलीसिया के साथ मसीह के संबंध से भी जोड़ता है, तो वह वास्तव में पति की अगुवाई और पत्नी की अधीनता को आदर्श बनाकर सदा के लिए स्थायी कर देता है। Piper कहता है (और यही कहने के लिए उसने एक पूरी पुस्तक लिखी है) कि छुड़ाया गया, फिर भी पदानुक्रमित मसीही विवाह संसार के सामने सुसमाचार को प्रकट करता है। वह कहता है, "अपनी अधीन और आश्रित पत्नी के प्रति पति

374. Celsus दूसरी शताब्दी में रहने वाला एक मूर्तिपूजक आलोचक था। यह उद्धरण Ross Shepherd Kraemer की पुस्तक "Her Share of the Blessings" (पृ. 128) से है।

की प्रेमपूर्ण अगुवाई मसीह और कलीसिया का चित्र है। यदि पति अगुवाई खो देता है, तो वह चित्र नहीं रहता।"[375]

उसका तर्क तीन तरह से दोषपूर्ण है। पहला, पौलुस घराने में दासता के विषय में भी कुछ ऐसा ही कहता है, जब वह दासों से कहता है कि वे अपने स्वामियों की आज्ञा वैसे ही मानें जैसे वे मसीह की आज्ञा मानते हैं, जो उनके स्वामी हैं। Piper के तर्क के अनुसार तो परमेश्वर ने स्वामी और दास का संबंध इसलिए रचा कि संसार के सामने यीशु, हमारे स्वामी, के प्रति हमारी दासवत अधीनता की "सुंदरता" प्रकट हो। नहीं! दोनों ही स्थितियों में पौलुस सुसमाचार को एक वास्तविक, पर ज़रूरी नहीं कि आदर्श, स्थिति पर लागू कर रहा है।

दूसरा, विवाह का पदानुक्रम सुसमाचार को प्रकट नहीं करता, बल्कि ऐसे विवाह का छुटकारा उसे प्रकट करता है। इस खंड में पौलुस जिस बात पर ज़ोर देता है, वह पदानुक्रम नहीं, बल्कि पति का अपनी पत्नी की सेवा करना है – उस पत्नी की, जो परस्पर अधीनता में उसके अधीन रहती है और जिसके साथ वह घनिष्ठ संबंध का आनंद लेता है। क्या यह बात स्तरबद्ध विवाह की अपेक्षा परस्परतावादी विवाह में और भी अधिक स्पष्ट नहीं दिख सकती? जैसा दृष्टिकोण 3 में बताया गया, पौलुस kephalē शब्द के अपने प्रयोग को सीमित करता है: वह यीशु को कलीसिया के उद्धारकर्ता और पालनहार के रूप में सामने रखता है, उस पर प्रभुता करने वाले के रूप में नहीं।

तीसरा, यदि हम यह मान लें कि परमेश्वर विवाहों के द्वारा देखने वाले संसार को अपनी कलीसिया पर यीशु की प्रभुता दिखाना चाहते हैं, तो कोई भी पदानुक्रमित विवाह कभी पर्याप्त रूप से पदानुक्रमित नहीं हो सकता। यीशु अपनी कलीसिया के प्रभु हैं, जबकि पति निश्चय ही अपनी पत्नी का प्रभु नहीं है।

Piper के तर्क की कमज़ोरियों को एक ओर रख दें, तो मैं उससे सहमत हूँ कि मसीही विवाह सुसमाचार की कुछ झलक दिखाने के लिए है। एक मसीही विवाह जो काम बहुत अच्छी तरह कर सकता है, वह ठीक वही है जो एक मसीही समुदाय कर सकता है: वह संसार को दिखा सकता है कि हम यीशु के चेले हैं, क्योंकि हम एक दूसरे से वैसे ही बलिदानी प्रेम करते हैं जैसा उन्होंने हम से किया है। परस्परतावादी विवाह भी यह काम स्तरबद्ध विवाहों जितना, बल्कि उनसे बेहतर, कर सकते हैं। दूसरी बात जो एक मसीही विवाह अच्छी तरह कर सकता है, वह है मसीह के साथ हमारी स्थायी और घनिष्ठ एकता का प्रतिबिंब बनना। सिर और देह की उपमा – जिसे पौलुस आगे "एक तन" कहता है – प्रेम के एक गहरे, वाचा से बँधे बंधन की ओर, और एक जीवंत और सजीव जुड़ाव की ओर संकेत करती है। इसके विपरीत, किसी अगुवे का अपने अनुयायी को तलाक़ देना सोचना उतना विचलित नहीं करता, पर किसी सिर को उसकी देह से काट दिए जाने की कल्पना अत्यंत भयानक है।

इफिसियों 5 में हम कहाँ चूक जाते हैं

अपनी 800 पृष्ठों की पुस्तक में Grudem बड़े साहस से विवाह में पत्नी की अधीनस्थता के पक्ष में तर्क देता है, फिर भी वह कहीं भी यह स्वीकार नहीं करता कि पहली शताब्दी के विवाहों और हमारे विवाहों के बीच

375. देखें John Piper, Momentary Marriage, अध्याय 6–8

कितनी बड़ी दूरी है।[376] इसी तरह, इफिसियों 5 के अपने विस्तृत अध्ययन में Keller दंपति भी कहीं इस पर ध्यान नहीं देते, न ही प्राचीन विवाह की स्थिति की खोजबीन करते हैं। एक बार भी नहीं। यह एक भूल है: जो नदी वास्तव में चौड़ी है, उसे वे एक संकरी धारा मान लेते हैं।

पौलुस प्राचीन घराने की संरचना को सदा के लिए स्थायी बनाने का प्रयास नहीं कर रहा। बल्कि वह सुसमाचार को एक विशेष सांस्कृतिक स्थिति पर लागू करता है, जो हमारी स्थिति से बहुत अलग है। पौलुस मेरे संसार को संबोधित नहीं कर रहा था, जिसमें अधिकतर वयस्क स्त्रियाँ पुरुषों जितनी पढ़ी-लिखी हैं, अपनी प्रजनन-क्षमता पर नियंत्रण रखती हैं, आर्थिक रूप से स्वतंत्र हैं, और समाज की ओर से उन्हें किसी ऐसे पुरुष की आवश्यकता नहीं जो उनके ऊपर हो। यह सब मिलकर एक अलग प्रकार का विवाह बनाता है।

अब अगला प्रश्न यह है: जब हम जान गए हैं कि उनकी स्थिति और हमारी स्थिति के बीच एक बहुत चौड़ी नदी है, तो हम "सिद्धांत निकालने वाला पुल" कैसे बनाएँ? या दूसरे शब्दों में, पौलुस समाज के आज के विवाहों से, जो अब स्तरबद्ध नहीं बल्कि समानतावादी हैं, क्या कहता? मैं यह सुझाव देता हूँ:

वह हमसे कहता कि मसीह को अपने विवाह का केंद्र बनाए रखें। एक दूसरे को "देखने", एक दूसरे से संबंध रखने, एक दूसरे के साथ सहयोग करने और एक दूसरे का आदर करने का हमारा ढंग मसीह के साथ हमारे सर्वोपरि संबंध से आकार पाना चाहिए। हमें एक दूसरे के अधीन रहना चाहिए – अपनी स्वतंत्रता और स्वार्थ को त्यागकर, और ऐसे घनिष्ठ "एक तन" वाले संबंध की खोज करते हुए जैसा पतन से पहले अदन की वाटिका में दिखाया गया था। यदि हम यह मान सकें कि पुरुष औसतन स्त्रियों से अधिक स्वतंत्र और इसलिए अधिक आत्मकेंद्रित होते हैं, और स्त्रियाँ औसतन पुरुषों से अधिक परस्पर-निर्भर और इसलिए दूसरों की ओर अधिक उन्मुख होती हैं, तो निश्चय ही मेरे जैसे पतियों को विशेष रूप से कलीसिया के लिए मसीह के उस बलिदानी प्रेम पर मनन करना चाहिए, जिसका परिणाम उनकी दुल्हन का तेजस्वी रूप से फलना-फूलना है।

परंतु अब जब मैं प्राचीन संदर्भ और हमारे संदर्भ के बीच की दूरी को समझता हूँ, तो मैं किसी भी तरह कल्पना नहीं कर सकता कि पौलुस एक औसत आधुनिक विवाह में आए – जहाँ पति-पत्नी की आयु में कम अंतर है, दोनों समान रूप से पढ़े-लिखे हैं, दोनों शायद काम करते हैं और बच्चों का पालन-पोषण करने का प्रयास कर रहे हैं – और उस दंपति से कहे, "इतनी अच्छी साझेदारी के लिए शाबाश। ऐसे ही करते रहो! पर मैं इस बात पर ज़ोर देना चाहूँगा कि पति अगुवा हो, और पत्नी उसके अधीन रहे।" पौलुस ऐसा कैसे कर सकता था, जब वह सिखाता है कि विवाह के लिए सृष्टि का आदर्श "एक तन" वाली, पूरी साझेदारी है, जैसी आदम और हव्वा के आरंभिक विवाह में थी?

यह केवल मेरी राय नहीं है। यह एक व्यापक रूप से स्वीकृत दृष्टिकोण है, वास्तव में अधिकांश मसीहियों का दृष्टिकोण: पोप John Paul II अपने Mulieris Dignitatem में, जो सभी कैथोलिकों के लिए बाध्यकारी एक विश्वपत्र है, कहता है कि पत्नी पर पुरुष का अधिकार उस बात का प्रतिबिंब है जो "पुरानी" है; यह सोचने के ऐसे ढंग की बात करता है जो "उस समय के रीति-रिवाजों और धार्मिक परंपरा में गहराई से जड़ पकड़े हुए" था। जो "नया" है और "सुसमाचार की एक नवीनता" है, वह यह है कि "अधीनता

376. Grudem केवल एक बार paterfamilias शब्द उद्धृत करता है – अध्याय 7 की फ़ुटनोट 102 में, जिसमें एक अन्य लेखक घराने के वरिष्ठ सदस्य के महत्व के पक्ष में तर्क देता है।

एकतरफ़ा नहीं, बल्कि परस्पर है।"[377] यदि संसार के सबसे सिद्धांत-कठोर संप्रदायों में से एक अपने सिद्धांत में यह सुधार कर सकता है, तो हम बाकी लोगों को इस पर ध्यान देना चाहिए।

निस्संदेह, संसार में आज भी ऐसी संस्कृतियाँ हैं जहाँ पुरुष ही शासन करते हैं। उनके लिए पौलुस की शिक्षा बिलकुल सटीक बैठ सकती है। पितृसत्तात्मक समाजों में पतियों के पास आम तौर पर स्त्रियों की तुलना में कहीं अधिक सामाजिक, बौद्धिक, राजनीतिक और आर्थिक शक्ति होती है। तो ठीक है, पति उस शक्ति का उपयोग आत्म-बलिदान के साथ अपनी पत्नी की भलाई के लिए करे, जैसे मसीह अपनी श्रेष्ठ शक्ति का उपयोग कलीसिया के लिए करते हैं। परंतु यदि पितृसत्तात्मक संस्कृतियों में हज़ारों पति सचमुच पर्याप्त लंबे समय तक ऐसा करें, तो अंततः स्त्रियाँ और पत्नियाँ अपनी सामाजिक और बौद्धिक शक्तियों में ऊपर उठेंगी, और अपने पतियों की बराबर की साझेदार बनने के लिए अधिक सक्षम होंगी। मेरी खोज मुझे ठीक इसी निष्कर्ष तक लाई है। दृष्टिकोण 4 – छुड़ाए गए paterfamilias (घर के मुखिया) के रूप में पति – जब उन संस्कृतियों पर लागू किया जाता है जहाँ विवाह स्तरबद्ध हैं, तो वह उस संस्कृति को अंततः बदल देगा और दृष्टिकोण 3 जैसे विवाह को सशक्त करेगा, जैसा उन देशों में पहले ही हो चुका है जिनमें मसीही विश्वास लंबे समय से फैला हुआ है।

ध्यान दीजिए, यदि हमने केवल उन बाइबल-खंडों का दायरा बढ़ा दिया होता जिन्हें हम पुराने और नए नियम दोनों में विवाह के अध्ययन के लिए आम तौर पर चुनते हैं, तो परस्परतावादी विवाह के लिए परमेश्वर की पसंद शुरू से ही पर्याप्त रूप से स्पष्ट हो जानी चाहिए थी।

पत्नियाँ जो अपने पतियों को दिशा देती हैं

यह ध्यान में रखते हुए कि पुराने नियम में उल्लिखित हर विवाह पितृसत्तात्मक परिवेश में चलता है, हम निश्चिंत होकर यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि सांस्कृतिक मान्यता यही थी कि पत्नियाँ अपने पतियों के अधीन हैं। तो यह उल्लेखनीय है कि परमेश्वर की इस भविष्यवाणी के अलावा कि "आदम हव्वा पर प्रभुता करेगा", पत्नियों को अपने पतियों के अधीन रहने की एक भी आज्ञा नहीं है – न मूसा की व्यवस्था में, न भविष्यद्वक्ताओं के मुँह से।

वास्तव में, जब हम पुराने नियम में विवाहित जोड़ों के बीच शक्ति के संतुलन की उन छोटी-छोटी झलकियों को देखते हैं जो हमारे पास हैं, तो हमें बार-बार पत्नियाँ अपने पतियों को दिशा देती हुई मिलती हैं! अपने जीवन के कई मोड़ों पर मैंने परमेश्वर से बुद्धि माँगी है, और कान लगाकर स्वर्ग की ओर सुनने का प्रयास किया है कि वह मुझसे क्या कहेंगे। और कई बार मैंने उन्हें मुझसे ठीक वही शब्द कहते सुना है जो उन्होंने एक बार अब्राहम से कहे थे: "जो कुछ [तेरी पत्नी] तुझसे कहे, उसकी सुन।"[378] कितनी बढ़िया सलाह है। मैं यह जानता हूँ; पत्नियाँ बहुत बार परमेश्वर की बात पहले सुनती हैं।

377. John Paul II, Mulieris Dignitatem, पृ. 88.
378. उत्पत्ति 21:12

क्या शिमशोन की माँ के साथ यही नहीं हुआ? एक ऐसी संस्कृति में जहाँ किसी पुरुष का सीधे किसी पत्नी के पास जाना अनुचित था, एक स्वर्गदूत पुरुष का रूप लेकर एक बाँझ स्त्री के पास आता है और उसे बताता है कि उसे आत्मा से अभिषिक्त एक बालक होगा। बाद में पत्नी अपने पति को बुलाती है: "स्त्री ने फुर्ती से जाकर अपने पति से कहा, 'वह यहाँ है! वही पुरुष जिसने उस दिन मुझे दर्शन दिया था!'" आगे के शब्दों पर ध्यान से गौर कीजिए: "[वह] उठकर अपनी पत्नी के पीछे-पीछे गया।" शायद इस बात से बहुत प्रसन्न न होकर कि कोई अजनबी पितृसत्तात्मक नियमों का उल्लंघन करे, वह पूछता है, "क्या तू वही पुरुष है जिसने मेरी पत्नी से बातें की थीं?"[379] वास्तव में, यह कहानी एक और भी अधिक महत्वपूर्ण जन्म की ओर संकेत करती है, जिसमें एक हज़ार वर्ष से भी अधिक बाद एक स्वर्गदूत पहले मरियम के पास आकर उसे यही बात बताता है,[380] और उसके पति को बाद में ही सूचना देता है।[381] दोनों घटनाओं में पत्नी किसी बात के विषय में परमेश्वर की बात पहले सुनती है, और पति बाद में ही उस गति तक पहुँचता है (यानी अपनी पत्नी की गति तक)। यदि किसी प्रकार की "सृष्टि की व्यवस्था" है (जो है नहीं), तो परमेश्वर उससे बिलकुल अनजान लगते हैं।

फिर शूनेमिन स्त्री है, जो पहल करके एलीशा भविष्यद्वक्ता का आतिथ्य करती है। वह अपने पति से कहती है: "मैं जानती हूँ कि यह जो बार-बार हमारे यहाँ से होकर जाता है, वह परमेश्वर का कोई पवित्र जन है। तो हम छत पर एक छोटी कोठरी बनाएँ, और उसमें उसके लिए एक खाट, एक मेज़, एक कुर्सी और एक दीवट रखें। तब जब-जब वह हमारे यहाँ आए, तब-तब वहीं ठहर सके।"[382] एक बार फिर पति तुरंत अपनी पत्नी की बात मान लेता है और सहज रूप से इस विषय में उसकी आत्मिक परख पर भरोसा करता है।

यहाँ एक छोटी-सी टिप्पणी उचित है: "पति पत्नी का kephalē है" का यह अर्थ लगाना कि "पति को घर का आत्मिक अगुवा होना चाहिए" – यह प्रयोग कितना भी लोकप्रिय क्यों न हो, मुझे खेद के साथ आपको बताना पड़ता है कि यह विचार बाइबल में निर्धारित नहीं है। हो सकता है आपको वे नोट्स फेंक देने पड़ें जो आपने कभी इस विषय में लिखे थे कि पुरुष (पत्नी नहीं) प्रार्थना की शुरुआत करे, या पारिवारिक मनन और प्रार्थना के लिए सबको बुलाए, या यह चुने कि दंपति या परिवार किस कलीसिया में जाएगा। अपने परिवार के आत्मिक स्वास्थ्य के लिए पति या पिता जो महत्वपूर्ण पहल कर सकता है, उसके महत्व को ज़रा भी कम किए बिना, एक बेहतर विचार यह है कि पति और पत्नी दोनों वह सब करें जो वे कर सकते हैं – एक टीम के रूप में भी और व्यक्तिगत रूप से भी: परमेश्वर को खोजें; एक कलीसिया चुनें और उसमें जम जाएँ; और परिवार के अन्य सदस्यों की आत्मिक उन्नति के लिए प्रयत्न करें। उन शिक्षाओं के उत्तर में जो कहती हैं कि पति बाकी परिवार का पास्टर हो, मेरा सुझाव है कि पति और पत्नी मिलकर परिवार की पास्टरीय अगुवाई की टीम हों।

एक और पत्नी जो पितृसत्तात्मक नियमों को चुनौती देती दिखती है (भले ही वह पुरुष-केंद्रित संस्कृति की वास्तविकता के बीच अपना रास्ता निकालती है), अबीगैल है। उसका बहुत धनी पति नाबाल "कठोर और

379. न्यायियों 13:10-11
380. लूका 1:26-38
381. मत्ती 1:18-21
382. 2 राजाओं 4:8-10

अपने व्यवहार में दुष्ट" है।[383] जब दाऊद और उसके सैनिक, जो भाग रहे थे और भूखे थे, कुछ भोजन माँगते हैं, तो नाबाल निर्दयता से उनका उपहास करता है और उनका निवेदन ठुकरा देता है। दाऊद बहुत अपमानित और क्रोधित होकर नाबाल और उसकी संपत्ति पर के सब पुरुषों को मार डालने की योजना बनाता है – जो मसीह के समान प्रतिक्रिया बिलकुल नहीं है।

अबीगैल अपने पति की आज्ञा न मानकर, और दाऊद के हत्या के इरादों के विषय में सुनी बात उसे न बताकर, रक्तपात को रोक देती है। वह अपने गधे पर भोजन लादती है, दाऊद के पास जाती है, और चतुराई से दाऊद के आहत अहं के अनुसार बात करते हुए कहती है, "कृपया, मेरे प्रभु, उस दुष्ट नाबाल पर ध्यान न दें। जैसा उसका नाम है, वैसा ही वह है – उसके नाम का अर्थ है मूर्ख।"[384] जहाँ वह अपने पति के बुरे स्वभाव को साफ़-साफ़ उजागर करती है, वहीं वह दाऊद में जो सबसे अच्छा है उसे जगाती है और दया की विनती करती है। दाऊद अपने हथियार नीचे रखने का निर्णय लेता है।

जब अबीगैल घर लौटकर नाबाल को बताती है कि उसने उसका निर्णय पलट दिया और दाऊद ने उसकी जान बख़्श दी, तो उसका हृदय बैठ जाता है और दस दिन बाद वह मर जाता है। जब दाऊद उसे अपनी तीसरी पत्नी बनाने के लिए कुछ पुरुषों को भेजता है, तो वह झुककर कहती है, "मैं आपकी दासी हूँ, और आपकी सेवा करने और अपने प्रभु के सेवकों के पाँव धोने को तैयार हूँ।"

यह एक अजीब कहानी है, पर ध्यान दीजिए कि इसमें कुछ भी यह नहीं दिखाता कि परमेश्वर ने अबीगैल के नाबाल और दाऊद दोनों को अपना "प्रभु" कहने का समर्थन किया। यद्यपि दोनों पुरुष बिना हिचकिचाहट यह उपाधि स्वीकार कर लेते हैं, यह स्पष्ट है कि यहाँ एक ऐसी स्त्री है जिसने पितृसत्ता के अनुसार ढलकर उसमें जीवित बचे रहना सीख लिया है। कभी-कभी इसका अर्थ अपने "पुरुष अधिकारी" की आज्ञा न मानना भी है – और यह खंड इसकी सराहना करता है। बल्कि यहाँ हमें एक ऐसी स्त्री का उदाहरण मिलता है जो किसी और, अधिक न्यायपूर्ण संस्कृति में संभवतः एक अगुवे के रूप में फलती-फूलती। दाऊद को उसकी ओर केवल उसकी सुंदरता ही नहीं खींचती, बल्कि उसकी रणनीतिक क्षमता और मनमोहक कूटनीति भी, जिसके द्वारा वह शीघ्र ही व्यर्थ रक्तपात को टाल देती है।

कहने का अर्थ यह है: पुराने नियम की कहानियाँ पत्नियों पर पति के अधिकार को परमेश्वर के पसंदीदा मानदंड के रूप में समर्थन नहीं देतीं।

1 कुरिन्थियों 7 का परस्परतावादी विवाह

श्रेष्ठगीत पवित्रशास्त्र का सबसे लंबा भाग है जो किसी दंपति के स्नेहपूर्ण, रोमानी और यौन मिलन की भीतरी गतिशीलता की खोज करता है। इसमें पुरुष और स्त्री के बीच अधिकार और अधीनता का बिलकुल भी कोई चिह्न नहीं है। प्रेम और यौन संबंध में दोनों पहल करते हैं और दोनों समर्पित होते हैं; दोनों देते हैं और दोनों पाते हैं। यह काव्य-पुस्तक न केवल पतन से पहले के आदम और हव्वा के उस आनंद की याद दिलाती है जो

383. 1 शमूएल 25:3
384. 1 शमूएल 25:25

वे नग्न अवस्था में बराबर के साथियों के रूप में एक दूसरे में पाते थे; नए नियम में भी इसकी एक समानांतर बात है।

1 कुरिन्थियों 7 विवाह पर पौलुस का कहीं सबसे लंबा खंड है। फिर भी, मसीही विवाह में यौन संबंध, सेवा और अलगाव के विषय में अपने मार्गदर्शन में पौलुस ज़रा-सा भी संकेत नहीं देता कि मसीही विवाह बराबर के लोगों के बीच एक परस्पर और प्रेमपूर्ण साझेदारी के अलावा कुछ और है। वास्तव में, बाइबल में यही एकमात्र अध्याय है जो विवाह में अधिकार के प्रश्न से स्पष्ट रूप से निपटता है – और संयोग से यह अधिकार पत्नी और पति दोनों को दिया गया है।

मैं कुछ उद्धरण[385] सामने रखता हूँ जो उस पारस्परिक प्रेम और परस्पर अधिकार पर ज़ोर देते हैं जिसकी कल्पना परमेश्वर हमारे विवाहों के लिए करते हैं:

हर पुरुष अपनी ही पत्नी के साथ यौन संबंध रखे, और हर स्त्री अपने ही पति के साथ (पद 2)।

पति अपनी पत्नी के प्रति अपना वैवाहिक कर्तव्य पूरा करे, और वैसे ही पत्नी भी अपने पति के प्रति (पद 3)।

पत्नी को अपनी देह पर अधिकार नहीं, बल्कि वह उसे अपने पति को सौंप देती है। वैसे ही पति को भी अपनी देह पर अधिकार नहीं, बल्कि वह उसे अपनी पत्नी को सौंप देता है (पद 4)।

एक दूसरे को वंचित न करो, सिवाय शायद आपस की सम्मति से और कुछ समय के लिए (पद 5)।

पत्नी अपने पति से अलग न हो। ... और पति अपनी पत्नी को तलाक़ न दे (पद 10-11)।

यदि किसी भाई की पत्नी विश्वासी न हो और वह उसके साथ रहने को राज़ी हो, तो वह उसे तलाक़ न दे। और यदि किसी स्त्री का पति विश्वासी न हो और वह उसके साथ रहने को राज़ी हो, तो वह उसे तलाक़ न दे (पद 12-13)।

[क्योंकि] अविश्वासी पति अपनी पत्नी के कारण पवित्र ठहरता है, और अविश्वासी पत्नी अपने विश्वासी पति के कारण पवित्र ठहरती है (पद 14)।

[परंतु] यदि अविश्वासी अलग हो जाए, तो उसे जाने दो। ऐसी स्थिति में भाई या बहन बंधन में नहीं है (पद 15)।

हे पत्नी, तू कैसे जानती है कि तू अपने पति का उद्धार करा लेगी? या हे पति, तू कैसे जानता है कि तू अपनी पत्नी का उद्धार करा लेगा? (पद 16)।

परंतु यदि तू [पुरुष] विवाह करे, तो तूने पाप नहीं किया; और यदि कुँवारी विवाह करे, तो उसने पाप नहीं किया (पद 28)।

अविवाहित पुरुष प्रभु की बातों की चिंता करता है ... अविवाहित स्त्री या कुँवारी प्रभु की बातों की चिंता करती है (पद 32, 34ख)।

385. NRSV से

[परंतु] विवाहित पुरुष संसार की बातों की चिंता करता है। ... विवाहित स्त्री संसार की बातों की चिंता करती है (पद 33-34क)।

1 कुरिन्थियों 7 में हम विवाह के लिए परमेश्वर की योजना के विषय में क्या सीखते हैं? Richard Hays कहता है, "पौलुस के उत्तर ... पहली शताब्दी के सुनने वालों को असाधारण लगे होंगे। विवाह के साथियों को न तो पदानुक्रमित संबंध में रखा गया है, जिसमें एक दूसरे के ऊपर हो, और न ही अलग-अलग स्वायत्त इकाइयों के रूप में, जिनमें हर कोई वही करे जो उसे भाए। बल्कि विवाह का संबंध परस्पर अधीनता का संबंध है, जिसमें हर साथी दूसरे का [होता है]।"[386]

जब मैंने पहली बार लोगों को सिखाया कि जीवन-साथी कैसे चुना जाए, तो मैंने सुझाव दिया कि हम परमेश्वर को अपने लिए चुनने दें। फिर एक दिन 1 कुरिन्थियों 7 पढ़ते हुए मुझे सूझा कि मैंने अभी-अभी नए नियम में इस विषय पर एकमात्र स्पष्ट शिक्षा पढ़ी है: "वह जिससे चाहे विवाह करने को स्वतंत्र है, पर वह [पुरुष] प्रभु का होना चाहिए" (पद 39)। सीख क्या है? चुनना हमें है, और बुद्धिमानी से चुनना है। अब 1 कुरिन्थियों 7 को फिर से पढ़ते हुए मुझे अभी-अभी वैसा ही एक अहा क्षण मिला है: पूरे नए नियम में एकमात्र पद जो यह बताता है कि दंपति महत्वपूर्ण निर्णय कैसे लें (जैसे कब यौन संबंध रखें, और कब मिलकर परमेश्वर को खोजें), यह है: "एक दूसरे को वंचित न करो, सिवाय आपस की सम्मति से।" (पद 5) सीख क्या है? जब कोई दंपति बराबर के साथियों के रूप में मिलकर निर्णय लेने का ध्यान रखता है, तो पति को न आदेश देने की आवश्यकता है और न गतिरोध में अंतिम निर्णय सुनाने की।

मैं निष्कर्ष निकालता हूँ। 1 कुरिन्थियों 7 ही एकमात्र अध्याय है जो पत्नी पर पति के अधिकार की स्पष्ट बात करता है – पर देखिए, वह पति पर पत्नी के अधिकार की भी बात करता है। विवाहों में यह लैंगिक समानता, परस्पर अधीनता, और निर्णय लेने के आधार के रूप में आपसी सहमति को बढ़ावा देता है।

पवित्रशास्त्र की उस एकता को देखते हुए जिसके रचयिता पवित्र आत्मा हैं, 1 कुरिन्थियों 7 इफिसियों 5 की हमारी व्याख्या का मार्गदर्शन कर सकता है और करना चाहिए। तो अजीब बात यह है कि अधिकांश प्रमुख पूरकतावादी लेखक या तो 1 कुरिन्थियों 7 का केवल संक्षेप में, ऐसे ढंग से उल्लेख करते हैं जो उनकी व्याख्या

386. Richard Hays, First Corinthians, पृ. 116.

के साथ उसके वास्तविक टकराव से कतरा जाता है,[387] या – अधिकतर – वे उसे बस अनदेखा कर देते हैं।[388]

तो फिर कौन-सा दृष्टिकोण?

इफिसियों 5 की व्याख्या हमें कैसे करनी चाहिए, इस विषय के अध्याय को मैं यह पूछकर समाप्त करता हूँ कि हमारे विवाहों और कलीसियाओं में चारों में से कौन-सा दृष्टिकोण प्रबल होना चाहिए।

मेरा सुझाव है कि हम दृष्टिकोण 1 (निर्णय लेने वाले के रूप में पति) को अस्वीकार करें, और उसे वही कहें जो वह है: एक दमनकारी धर्मविज्ञान।

दृष्टिकोण 2 (अंतिम निर्णय देने वाले के रूप में पति) ने कई वर्षों तक Julie और मेरे विवाह के लिए बीच के एक पड़ाव का काम किया, और इसके लिए मैं आभारी हूँ। परंतु उससे जुड़ी समस्याओं का विश्लेषण, दृष्टिकोण 3 और 4 की व्याख्यात्मक श्रेष्ठता, और विवाह के विषय में बाइबल को अधिक व्यापक रूप से पढ़ना – इन सबका अर्थ है कि संभवतः हमें उसे भी छोड़ देना चाहिए।

तो बचे हुए दो दृष्टिकोणों में से हम कौन-सा चुनें?

शायद हमें चुनने की आवश्यकता ही नहीं है।

दृष्टिकोण 3 (अपनी बराबर की पत्नी के सेवक के रूप में पति) परस्परतावादी विवाह की पुष्टि करता है, जबकि दृष्टिकोण 4 (छुड़ाए गए paterfamilias के रूप में पति) में ऐसे विवाह के विरोध में कहने को कुछ नहीं है (यद्यपि वह उन विवाहों और कलीसियाओं को मार्गदर्शन देता है जो अब भी गहरी पितृसत्तात्मक संस्कृतियों में हैं)।

387. उदाहरण के लिए, Grudem की प्रमुख कृति “Evangelical Feminism and Biblical Truth” समानतावादी तर्कों का खंडन करने के लिए लिखी गई थी – जिनमें से एक तर्क यह है कि 1 कुरिन्थियों 7 बराबरी वाले विवाह की शिक्षा देता है। फिर भी एक बहुत छोटे खंड (6.7) में, जो उसके 800 पृष्ठों में से केवल 1 पृष्ठ लेता है, वह केवल यह दावा करता है कि 1 कुरिन्थियों 7 बस पति की अधिकारपूर्ण अगुवाई को नियंत्रित करता है। फिर भी वह इस दावे के विरुद्ध कोई तर्क नहीं देता कि 1 कुरिन्थियों 7 को इफिसियों 5 की पदानुक्रमित व्याख्या के केवल प्रयोग को ही नियंत्रित नहीं करना चाहिए, बल्कि इफिसियों 5 की व्याख्या का मार्गदर्शन भी करना चाहिए। 1 कुरिन्थियों 7 जैसा खंड, जो बिना किसी अस्पष्टता के कहता है कि पति और पत्नी दोनों का एक दूसरे पर बराबर अधिकार है – एक ऐसा तथ्य जिस पर सभी व्याख्याकार सहमत हैं – उस खंड (इफिसियों 5) की व्याख्या में कुछ महत्व अवश्य रखना चाहिए जिसके विषय में केवल कुछ व्याख्याकार दावा करते हैं कि वह पति को एकतरफ़ा अधिकार देता है।

388. उदाहरण के लिए, जैसा Andrew Bartlett ने “Men and Women in Christ” (पृ. 18-19) में बताया है, Philip Payne की 2009 की पुस्तक “Man and Woman: One in Christ” के उत्तर में Tom Schreiner एक विस्तृत सारांश और खंडन का प्रयास लिखता है। यद्यपि Payne ने 1 कुरिन्थियों 7 पर एक पूरा अध्याय लिखा है, विचित्र बात है कि Schreiner उस अध्याय का कहीं उल्लेख तक नहीं करता। इसी तरह Claire Smith ने 2012 में “God’s Good Design: What the Bible Really Says about Men and Women” लिखी। उसका लक्ष्य उन “मुख्य बाइबल-खंडों” पर विचार करना है जिन्हें विवाह के सर्वोत्तम आदर्श को “निर्धारित करना चाहिए”। Don Carson और अन्य लोगों ने इस पुस्तक की भरपूर प्रशंसा की है, और उनमें से कई इसकी व्यापकता की सराहना करते हैं। फिर भी आश्चर्यजनक रूप से, विवाह पर उसके पाँच अध्यायों में से कोई भी 1 कुरिन्थियों 7 को नहीं देखता। मैं इन लेखकों पर किसी बेईमानी का आरोप नहीं लगा रहा, केवल एक बड़े अंधे बिंदु की उपस्थिति की ओर, और “पुष्टि-पूर्वाग्रह” के प्रमाण की ओर संकेत कर रहा हूँ, जिसमें लोग अनजाने में बाइबल के पास यह जानने नहीं आते कि वह किसी विषय पर क्या-क्या कहती है, बल्कि केवल अपने पहले के दृष्टिकोण के लिए समर्थन खोजने आते हैं।

दूसरे शब्दों में, दृष्टिकोण 4 शायद हमें इस खंड को उसी तरह समझने में सबसे अधिक सहायता करता है जैसे उसके मूल पाठकों ने समझा होगा। परंतु दृष्टिकोण 3, विशेषकर हममें से उन लोगों के लिए जो अधिक समानतावादी संस्कृतियों में रहते हैं, इफिसियों 5 को लागू करने का सही तरीका है।

तो एक विवाहित दंपति के लिए परमेश्वर की बुद्धि यह है कि वे अपने "एक तन" वाले मिलन को पहचानें, जैसा अदन के प्रेम में दिखाया गया है। साथ ही, वे पूरे परस्पर समर्पण और सेवा के द्वारा, और – निर्णय लेते समय – परस्पर विचार और सहमति के द्वारा इस एकता को और दृढ़ करें। इस मार्ग पर चलते हुए दो उपमाएँ हमें प्रेरित कर सकती हैं: अपनी कलीसिया के लिए मसीह का बलिदानी प्रेम, और हर व्यक्ति का अपनी देह की चिंता करना।

सच्ची लैंगिक समानता के लिए परमेश्वर की इच्छा के विषय में बचे हुए संदेहों का हम क्या करें? विवाह में (और कलीसिया और समाज में) पितृसत्तात्मक मान्यता को छोड़ने का शायद सबसे महत्वपूर्ण कारण आगे आता है।

9

हमारे स्तर पर उतरने वाले परमेश्वर

"क्या [हम पति] अपनी पत्नियों पर उस अधिकार को पकड़े रहने का प्रयास करेंगे जो कभी आसपास की संस्कृति ने हमें दिया था, पर जो अब अधिकतर हमारे पास नहीं रहा? या [हम] सहर्ष शक्ति को, और शक्ति के दिखावे को भी, छोड़ देंगे, और [अपनी] पत्नियों के साथ बराबर का व्यवहार करेंगे, और ... एक अधिक घनिष्ठ वैवाहिक संबंध का फल पाएँगे?" Peter Davids[389]

Gates Foundation ने हाल ही में एक विशाल अंतरराष्ट्रीय अध्ययन प्रायोजित किया, जिसने दिखाया कि मीडिया की ख़बरों में स्त्रियों का प्रतिनिधित्व बहुत ही कम है। "उदाहरण के लिए, 2019 में यू.के. में विश्लेषण की गई ऑनलाइन ख़बरों में से केवल 29% में स्त्रियों की आवाज़ उद्धृत की गई थी। भारत में यह केवल 14% थी।"[390] समाज में स्त्रियों की उन्नति में हुई सारी अद्भुत प्रगति के बावजूद, हम आज भी पुरुषों को "देखने" और "सुनने" की तुलना में स्त्रियों को देखने और सुनने के लिए कहीं कम तैयार रहते हैं।

तो पिछली सहस्राब्दियों में, जब पितृसत्ता को कोई चुनौती नहीं थी, सामाजिक परिस्थितियों ने सार्वजनिक भूमिकाओं में ऊपर उठने की स्त्रियों की क्षमता को कितना अधिक दबाया होगा? पुरातत्वविद् Ian Morris समझाता है कि प्राचीन एथेंस में स्त्रियों के अस्तित्व तक के इतने कम प्रमाण क्यों हैं: "स्त्रियाँ और दास अदृश्य रहते हैं", क्योंकि वहाँ की "सर्वव्यापी पुरुष-नागरिक संस्कृति" में पुरुषों ने "न केवल स्त्रियों को अधीन बनाया, बल्कि उन स्थानों पर भी नियंत्रण रखा जिनमें स्त्रियाँ रहती थीं", जिससे वे उस समय की संस्कृति में भी और आज की पुरातात्विक खोजों में भी लगभग अदृश्य हो गईं।[391]

यूनानी-रोमी संसार में, जिसमें नवजात कलीसिया फैली, स्त्रियों के लिए हालात कुछ ख़ास बेहतर नहीं थे। यद्यपि कुछ दुर्लभ अपवाद थे,[392] प्रतिष्ठित स्त्रियाँ सार्वजनिक अगुवाई की भूमिकाओं की आकांक्षा नहीं रखती थीं। उनका सम्मान घर पर गृहस्थी और बच्चों के पालन-पोषण की भूमिकाओं में था। यूनानी नाटकों में सबसे आम स्त्री पात्र प्रायः दासियाँ और वेश्याएँ होती थीं, क्योंकि ये नाटक "घर के बाहर" की कहानियाँ सुनाते थे। सम्मानित शहरी स्त्रियों और अविवाहित युवतियों से अपेक्षा की जाती थी कि वे घर में, नज़रों से दूर

389. "Discovering Biblical Equality" में उद्धरण, पृ. 238
390. स्रोत: www.gates.ly/3bMqqQZ
391. स्रोत: Sandra Joshel और Sheila Murnaghan, Women and Slaves in Greco-Roman Culture, पृ. 217–20. Barr, "The Making of Biblical Womanhood" (पृ. 226) में उद्धृत
392. देखें Susan Hylen, Women in the World of the New Testament

रहें। तो इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि आरंभ में "अगुवा-प्रकार" की स्त्रियाँ इतनी कम मिल पाती थीं। आख़िरकार, किसी व्यक्ति को यह सिद्ध करने के लिए कि उसमें अगुवाई का वरदान है, कुछ शिक्षा पाना और सार्वजनिक जीवन में भूमिका निभाने की छूट पाना आवश्यक है। जब स्त्रियाँ छिपाकर रखी जाती थीं, तो शिक्षा और अगुवाई के परमेश्वर-प्रदत्त वरदानों वाली बहुत कम स्त्रियों को कभी यह अवसर मिला कि उनके वे वरदान सार्वजनिक स्थानों में पहचाने जाएँ, विकसित हों और काम में लाए जाएँ।[393]

आख़िर नए नियम में पुरुष अगुवों की पत्नियों का उल्लेख इतना कम क्यों होता है? मसीही विवाहित दंपतियों के बीच समानता, साझेदारी और साझा प्रतिष्ठा पर आज का ज़ोर मसीही कलीसिया के आरंभिक युग में लगभग था ही नहीं, जब – कलीसिया में भी – गृहस्थी और बच्चों के पालन-पोषण की भूमिकाएँ पत्नियों को सौंपी जाती थीं।

इसी तरह हम पूछ सकते हैं कि बाइबल में पुरुषों की तुलना में स्त्री पात्र इतने कम क्यों हैं। आज कुछ आलोचक, जो बाइबल की ईश्वरीय प्रेरणा को नकारते हैं, तर्क देते हैं कि इससे सिद्ध होता है कि यह पुस्तक केवल एक पितृसत्तात्मक संस्कृति की उपज है। कुछ पूरकतावादी कहते हैं कि यह परमेश्वर का उन विशेष, प्रमुख भूमिकाओं को उजागर करने का तरीका है जो परमेश्वर के राज्य में केवल पुरुषों को निभानी हैं। परंतु बाइबल के ईश्वरीय अधिकार को और उन अनेक ऐतिहासिक परिस्थितियों को, जिन्हें बाइबल संबोधित करती है, दोनों को समझने का एक बेहतर तरीका यह कहना है कि परमेश्वर ने अपने प्रकाशन को विशेष परिस्थितियों में रहने वाले लोगों के स्तर पर उतारा, बिना उन परिस्थितियों को आवश्यक रूप से आदर्श बनाए। जब हम व्याख्या के इस महत्वपूर्ण सिद्धांत को चूक जाते हैं, तो हम भोलेपन से इस अवलोकन से कि बाइबल के समय में विभिन्न स्थानों पर स्त्रियाँ पुरुषों के अधीन थीं, सीधे इस विचार पर कूद पड़ते हैं कि परमेश्वर की सार्वभौमिक योजना के अंग के रूप में स्त्रियों को सब स्थानों पर और सब समयों में पुरुषों के अधीन रहना चाहिए।

परमेश्वर के हमारे स्तर पर उतरने को समझना

इतिहास के अंत में परमेश्वर अंततः एक आदर्श समाज पर राज्य करेंगे। परंतु पतन के समय से उन्होंने यह चुना है कि वे टूटे हुए समाज के भीतर छुटकारे का काम करें, बजाय इसके कि उसे बस न्याय की बाढ़ में डुबो दें, जैसा उन्होंने एक बार किया था। अभी के लिए परमेश्वर का छुटकारा इस प्रकार बरसता है कि "पवित्र आत्मा का जीवन-जल [मौजूदा] सामाजिक भू-दृश्य पर बहता है, और एक घुमावदार नदी की तरह उन ढलानों और मोड़ों के अनुसार ढल जाता है जिनसे उसका सामना होता है। फिर भी ऐसा करते हुए, पानी के अदम्य प्रवाह की तरह, वह भू-दृश्य को नया आकार देता है, और अंततः टेढ़े मार्गों को सीधा कर देता है।"[394]

393. यह समझने के लिए कि सामाजिक परिस्थितियाँ किस प्रकार उन लोगों को सीमित करती हैं जो अगुवे बन सकते हैं, किसी संपन्न क्षेत्र की एक आधुनिक कलीसिया के बारे में सोचिए जिसमें मुख्य रूप से उच्च शिक्षा प्राप्त लोग हैं। अब सोचिए कि किसी अशिक्षित मज़दूर का उस कलीसिया में सामने खड़े होकर अगुवाई करने वाला अगुवा बनना कितना असंभव होगा – सीधे इस कारण कि इन विशेष लोगों के लिए उसका 'अनुसरण-योग्य होना' (और इसलिए उसकी अगुवाई) प्रश्न के घेरे में होगा। यही कारण है कि बाइबल में हमें दासों के प्राचीन होने का भी कोई उदाहरण नहीं मिलता।
394. John Stackhouse, Finally Feminist, पृ. 39

नए नियम के वे गिने-चुने खंड, जिनमें उसके लेखक व्यापक संस्कृति की पितृसत्ता के आगे थोड़ा सिर झुकाते-से दिखते हैं, वास्तव में परमेश्वर के हमारे स्तर पर उतरने के उदाहरण हैं। उनके पास जो है, वह उसी के साथ काम करते हैं, और प्रेरित उनके उदाहरण पर चलते हैं – वे राज्य के बीज ऐसी मिट्टी में बोते हैं जो अब भी पत्थरों और खरपतवार से भरी है। अभी हम उस समय में जी रहे हैं जहाँ दो युग एक दूसरे पर चढ़े हुए हैं। परमेश्वर का राज्य यहाँ, एक पतित संसार के बीच है, जिसमें पतित सामाजिक व्यवस्थाएँ फैली हुई हैं। एक दिन राज्य उन व्यवस्थाओं को पूरी तरह ढक लेगा, पर अभी वह उनमें अपनी जड़ें गहरी उतारता है, और उनमें से कुछ नया खिलाता है।

पूरकतावादी John MacArthur तर्क देता है कि चूँकि पवित्रशास्त्र केवल पुरुषों ने लिखा, इसलिए यह इस बात का प्रमाण है कि परमेश्वर केवल पुरुषों से ही परमेश्वर के वचन की शिक्षा दिलवाना चाहते हैं। स्पष्ट है कि वह उन विद्वानों को अनदेखा करता है जो इस संभावना के पक्ष में तर्क देते हैं कि इब्रानियों की पत्री प्रिस्किल्ला ने (अक्विला के साथ मिलकर) लिखी। पर मुख्य रूप से वह यह नहीं देख पाता कि प्राचीन संसार में शायद ही किसी स्त्री को लिखना सिखाया गया होगा – यह तथ्य कि बाइबल की पुस्तकें केवल पुरुषों ने लिखीं (या अधिकतर पुरुषों ने, यदि प्रिस्किल्ला ने क़लम उठाई थी) इस बात का प्रमाण है कि परमेश्वर जो कुछ है उसी के साथ काम करते हैं, जबकि वह अंततः shalom लाने की प्रतिज्ञा करते हैं, जिसमें सब पुरुष और स्त्रियाँ पढ़-लिख सकेंगे।

पत्नियों के अधीन रहने के विषय में और

स्त्रियों की प्राचीन सामाजिक स्थिति, जो आज से कहीं बदतर थी (हमें अभी भी काफ़ी आगे जाना है), यह थी कि शक्ति और सार्वजनिक भूमिकाओं में पुरुषों को विशेषाधिकार दिया जाए, स्त्रियों को नहीं; और पुरुषों की कही और की हुई बातों पर ध्यान दिया जाए, स्त्रियों की नहीं; और स्त्रियों को एक छोटे-से घरेलू दायरे तक सीमित रखा जाए, जिससे वे दासों और बच्चों की तरह अदृश्य हो जाएँ।

जो भी स्त्री अपने पक्ष में खड़ी होती, उसे इसकी कीमत चुकानी ही पड़ती। उदाहरण के लिए, एस्तेर 1 में राजा क्षयर्ष (Xerxes) राज्य के प्रतिष्ठित पुरुषों के लिए भोज देता है, और उसी समय उसकी पत्नी वशती स्त्रियों के एक आयोजन में अपनी सहेलियों का आतिथ्य करती है। उत्सव के बीच में क्षयर्ष, "दाखमधु पीकर मगन" होकर, आज्ञा देता है कि उसकी अत्यंत सुंदर पत्नी अपना आयोजन छोड़कर आए, "ताकि देश-देश के लोगों और हाकिमों पर उसकी सुंदरता प्रकट हो, क्योंकि वह देखने में सुंदर थी।" जब वशती आने से इनकार करती है, तो क्रोधित राजा, जो अपनी पत्नी की आज्ञा न मानने से सबके सामने लज्जित हुआ है, अपने बुद्धिमानों से सलाह लेता है। वे निर्णय लेते हैं कि वशती को रानी के पद से हटा दिया जाए, और वह फिर कभी अपने पति के सामने न आए। वे ऐसा इसलिए करते हैं: ताकि देश की अन्य पत्नियों के लिए उसका उदाहरण अपनाने – यानी अपने पति की आज्ञा न मानने – की हर संभावना को कुचल दिया जाए। लक्ष्य यह है कि "सब स्त्रियाँ अपने-अपने पति का, छोटे से लेकर बड़े तक, आदर करेंगी।"

यह कहानी दिखाती है कि लगभग हर प्राचीन संस्कृति में – इस घटना में इस्राएल नहीं, बल्कि फ़ारस में – यह मान्यता रही है कि सार्वजनिक भूमिकाओं में पुरुष अगुवाई करें और स्त्रियाँ अपने पतियों के अधीन रहें। इस प्रकार स्वयं पवित्रशास्त्र दिखाता है कि पितृसत्ता पतन की उपज है, इस्राएल के परमेश्वर की कोई विशेष रचना नहीं।

जब प्रेरित रोमी साम्राज्य भर में सुसमाचार प्रचार करते और कलीसियाएँ स्थापित करते हैं, तो वे स्वयं को ऐसे ही पुरुष-प्रधान संसार में पाते हैं। इफिसियों 5 को हम पहले ही देख चुके हैं, पर उस खंड के बाहर भी पहली शताब्दी की कलीसिया में मसीही पत्नियों को दी गई प्रेरितों की सलाह एक स्वर में है। पौलुस कुलुस्सियों को लिखता है, "हे पत्नियो, अपने-अपने पति के अधीन रहो..."[395] और तीतुस को, "... जवान स्त्रियों को ... सिखाओ कि ... अपने-अपने पति के अधीन रहें।"[396] पतरस भी यही कहता है: "हे पत्नियो ... अपने-अपने पति के अधीन रहो..."[397] जो कोई भी बाइबल को अधिकारपूर्ण मानने का दावा करता है, उसे पहली बार पढ़ने पर यह पूरी तरह निर्णायक लगता है। हम मान सकते हैं कि सब विवाहों के लिए परमेश्वर का आदर्श यह है कि पत्नी पति के अधीन रहे, पर इस अध्याय के शेष भाग में मैं इस निष्कर्ष का खंडन करूँगा, यह दिखाकर कि यह ग़लत मान्यता इन खंडों के एक सतही और ग़लत पठन पर निर्भर है।

कुलुस्सियों में पौलुस की बात का हम क्या करें? "हे पत्नियो, जैसा प्रभु में उचित है, वैसा ही अपने-अपने पति के अधीन रहो। हे पतियो, अपनी-अपनी पत्नी से प्रेम रखो, और उनसे कठोरता न करो।"? मेरा सुझाव है कि इन पदों की व्याख्या से हम उन निष्कर्षों से अलग निष्कर्ष न निकालें जिन पर हम इफिसियों 5 में पहुँचे थे। विद्वानों में आम सहमति है कि कुलुस्सियों और इफिसियों की पत्रियाँ एक ही समय पर लिखी गईं, यहाँ तक कि उनमें "काटो-और-चिपकाओ" जैसा तरीका भी दिखता है, जिसमें मुख्य सामग्री दोनों पत्रियों में दोहराई गई है। दोनों खंडों से ठीक पहले के पद लगभग एक जैसे हैं। दोनों में ये वाक्यांश एक ही क्रम में आते हैं: "एक दूसरे", "भजन", "स्तुतिगान", "आत्मिक गीत", "अपने मन में धन्यवाद के साथ", "के नाम से", "प्रभु", "यीशु", "मसीह", "परमेश्वर पिता"। अंतर यह है कि कुलुस्सियों का खंड, जो केवल दो पदों का है, इफिसियों के लंबे खंड – तेरह पदों – का संक्षिप्त रूप है। इफिसियों 5 कुलुस्सियों की थोड़ी-सी सामग्री का विस्तार करता है, और इस प्रकार उस पर प्रकाश डालता है।

और बाकी दो खंडों, तीतुस 2:3-5 और 1 पतरस 3:1, का क्या? हमारे पास यह संदेह करने का अच्छा कारण है कि उन खंडों में पौलुस और पतरस मानव इतिहास भर की सब पत्नियों को अपने पतियों के अधीन

395. कुलुस्सियों 3:18
396. तीतुस 2:5
397. 1 पतरस 3:1

रहने की सार्वभौमिक आज्ञा दे रहे हैं।[398] यह पहली शताब्दी के भूमध्यसागरीय लोगों को दी गई पास्टरीय सलाह है, जो अरस्तू की घरेलू आचार-संहिताओं का पालन करते थे, और इसलिए इसके पीछे सृष्टि की रचना नहीं, बल्कि प्रतिष्ठा की एक समझ में आने वाली चिंता है। मैं समझाता हूँ।

घरेलू आचार-संहिताएँ

जब हम "पत्नियो, अधीन रहो" वाले पदों को उनके संदर्भ से अलग कर लेते हैं, तो हम उन्हें प्रमाण-पदों की तरह इस्तेमाल करने का जोखिम उठाते हैं। आइए साहित्यिक संदर्भ को देखें, यानी उन बड़े खंडों को जिनमें ये पद और इन जैसे अन्य पद मिलते हैं:

	पत्नियाँ–पति/ स्त्रियाँ–पुरुष	बच्चे–माता-पिता	दास–स्वामी
इफिसियों	5:21-33	6:1-4	6:5-9
कुलुस्सियों	3:18-19	3:20-21	3:22-4:1
1 पतरस	3:1-7	उल्लेख नहीं	2:18-25
तीतुस	2:1-8	उल्लेख नहीं	2:9-10
1 तीमुथियुस	5:1-16	उल्लेख नहीं	6:1-3

398. अपनी पुस्तक को बहुत लंबा होने से बचाने के लिए मैंने 1 पतरस 3:1-7 को पूरी तरह खोलकर न समझाने का निर्णय लिया। परंतु इस काम के लिए मैं Andrew Bartlett की पुस्तक "Men and Women in Christ" के अध्याय 6 की सिफ़ारिश करता हूँ। उस अध्याय का शीर्षक है "Submission and Honour: 1 Peter." Bartlett दिखाता है – और मेरी दृष्टि में विश्वसनीय ढंग से – कि पतरस मूल रूप से वही मार्ग अपनाता है जो पौलुस इफिसियों 5 में अपनाता है: वह परस्पर अधीनता की शिक्षा के द्वारा संस्कृति की पदानुक्रमित व्यवस्था को भीतर से उलट देता है। पौलुस की तरह, पतरस 3:1-6 में पत्नी से संस्कृति द्वारा अपेक्षित अधीन भूमिका को न तो उखाड़ फेंकता है और न सार्वभौमिक रूप से उसका समर्थन करता है, बल्कि सुसमाचार से निकली नई प्रेरणाओं के साथ उसे नया रूप देता है: अपने ग़ैर-मसीही पति का भय नहीं, बल्कि परमेश्वर में आशा और अपने पति को मसीह के लिए जीत लेने का प्रयास। और पौलुस की तरह, पतरस मसीही पति की संस्कृति द्वारा अपेक्षित अधिकारपूर्ण भूमिका को न तो आदर्श बनाता है और न उसकी निंदा करता है, बल्कि 3:7 में उसे तीन तरीकों से गहराई से बदल देता है: 1) पति अपनी पत्नियों के प्रति "उसी प्रकार" व्यवहार करें (यही वह निर्णायक वाक्यांश है जिसे बहुत-से पूरकतावादी विद्वान चूकते दिखते हैं) जैसा पहले कहा गया था: विश्वासियों का अपने परमेश्वर और राजा के प्रति (2:13); दासों का अपने स्वामियों के प्रति (2:18-25); मसीह का अपने प्राण लेने वालों के प्रति (2:21); और पत्नियों का अपने पतियों के प्रति, जिसमें उत्पत्ति 18 में अब्राहम के प्रति सारा भी शामिल है (3:1-6) – अर्थात नम्रता से अधीन रहने वाले ढंग से। 2) पति अपनी पत्नियों के साथ इस प्रकार रहें कि वे इस बात का ध्यान रखें कि उनकी पत्नियाँ उनसे कम बलवान हैं। 3) पति अपनी पत्नियों का आदर करें, जो (यूनानी-रोमी संस्कृति के विपरीत) किसी अधीनस्थ स्थिति में नहीं हैं, क्योंकि वे उद्धार की बराबर की सह-वारिस हैं। यहाँ "आदर" के लिए वही शब्द है जो पत्री में पहले उस अधीनता का वर्णन करने के लिए प्रयोग हुआ है जो सब विश्वासियों को कैसर के प्रति दिखानी चाहिए; 2:13 (अधिकारियों के "अधीन रहो") और 2:17 ("राजा का सम्मान करो") की तुलना कीजिए। दूसरे शब्दों में, पतरस, ठीक इन्हीं शब्दों का प्रयोग किए बिना, पतियों से कहता है कि वे बदले में अपनी पत्नियों के अधीन रहें (अर्थात नम्र, आदरपूर्ण सेवा करें)। इस प्रकार समझने पर पतरस, इफिसियों 5 में पौलुस की तरह, विवाह में अधीनता के अर्थ को किसी दूसरे के अधिकार का केवल पालन करने से हटाकर नम्रता से सेवा करने और प्रसन्न करने की प्रतिबद्धता की ओर मोड़ता दिखता है। अधिकार का पालन केवल एक ही दिशा में बह सकता है; जबकि, जैसा इफिसियों 5 और 1 पतरस 3 में दिखाया गया है, और चाहे वे किसी भी व्यापक सामाजिक संरचना में हों, मसीही विवाहों में ऐसी नम्र सेवा दिखनी चाहिए जो दोनों दिशाओं में बहती है। यह भी ध्यान दीजिए कि पतरस पत्नी की अधीनता का कारण यह नहीं बताता कि परमेश्वर की रचना के अनुसार पति को उस पर एकतरफ़ा अधिकार है। यदि पतरस ऐसा मानता, तो इसका उल्लेख करने के लिए यह सबसे उपयुक्त स्थान होता। पर वह ऐसा नहीं करता, और वास्तव में बाइबल में कहीं भी कोई पद पतियों को अपनी पत्नियों पर एकतरफ़ा अधिकार चलाने का निर्देश नहीं देता।

जब हम साहित्यिक संदर्भ का विश्लेषण करते हैं, तो हम क्या देखते हैं? पहला, हर बार जब पत्नी की अधीनता का उल्लेख होता है, तो वह किसी ऐसी बात का अंग होता है जिसे "घरेलू आचार-संहिता" कहा जाता है, जिसमें घराने के भीतर के संबंधों – पति, पत्नियाँ, बच्चे और दास – को संबोधित किया जाता है। अरस्तू की पहले की शिक्षा का अनुसरण करते हुए, रोमी क़ानून के अनुसार घरों को एक वरिष्ठ पुरुष के शासन के अधीन स्तरबद्ध होना था। यदि कोई वयस्क पुरुष न हो, तो वरिष्ठ स्त्री यह भूमिका निभाती थी। प्राचीन घरेलू आचार-संहिता एक पदानुक्रम का पालन करती थी, जो ऊपर से नीचे के क्रम में इस प्रकार था: घर का मुखिया; फिर पत्नी; फिर बच्चे और दास। दूसरे शब्दों में, पौलुस और पतरस कोई ऐसी संदर्भ-रहित बुद्धि नहीं बाँट रहे जिसे मसीही इतिहास के शेष काल में सब विवाहित दंपतियों पर लागू किया जाए। वे एक बहुत विशेष संदर्भ को संबोधित कर रहे हैं – औसत प्राचीन घराने में, जैसा रोमी समाज ने उसे व्यवस्थित किया था, सुसमाचार का व्यवहार में उतरना।

दूसरा, इनमें से किसी भी खंड में पति को अगुवाई करने की आज्ञा नहीं दी गई। पत्नी से केवल अधीन रहने को कहा गया है। प्रेरित मानकर चलते हैं कि पुरुष की अगुवाई पहले से लागू है। अपनी आज्ञाओं में वे जो करने का प्रयास करते हैं, वह है पुरुष की अगुवाई को नरम करना और पत्नी की निचली स्थिति को गरिमा देना। पतरस और पौलुस स्त्रियों को सिखाते हैं कि वे अधीनता को स्वेच्छा से और सुसमाचार से सामर्थ्य पाकर अपनाएँ, न कि पति की अगुवाई को केवल सहन करें।

तीसरा, सब खंडों में – और इस अध्याय के तर्क में यही सबसे महत्वपूर्ण है – पत्नी को अपने पति के अधीन रहने का निर्देश, दास को अपने स्वामी के अधीन रहने के निर्देश के समानांतर चलता है। इनमें से दो स्थानों पर यह समानता बच्चों के अपने माता-पिता की आज्ञा मानने पर भी लागू होती है, पर स्वामी और दास का संबंध हर बार जोड़ा गया है।

दासता और पितृसत्ता के बीच की समानता पर मैं थोड़ी देर में लौटूँगा, पर अभी मैं यह बात कहना चाहता हूँ कि पौलुस और पतरस न दासता को आदर्श बना रहे हैं और न विवाह में स्त्री की अधीनस्थता को – बल्कि, जैसा सब अच्छे आत्मिक अगुवों को करना चाहिए, वे जिन कलीसियाओं के साथ काम करते हैं उनकी सहायता कर रहे हैं कि वे उन परिस्थितियों में भी सबसे अच्छा करें जो कभी-कभी आदर्श से बहुत दूर होती हैं। उत्पत्ति 16 में परमेश्वर भी कुछ ऐसा ही करते हैं, जब दासी हाजिरा अपनी अत्याचारी स्वामिनी सारा के पास से भाग जाती है। हाजिरा को बचाने और ढाढ़स देने के बाद परमेश्वर कहते हैं, "अपनी स्वामिनी के पास लौट जा और उसके अधीन रह।"[399] हममें से कौन यह निष्कर्ष निकालेगा कि उसे दिया गया परमेश्वर का यह निर्देश उसके लिए उनकी सर्वोच्च और सर्वोत्तम इच्छा की अभिव्यक्ति था? नहीं, उनकी यह पिता-समान सलाह उसकी सहायता करती है कि वह आदर्श से बहुत दूर की एक स्थिति में भी सबसे अच्छा करे। स्पष्ट है कि उसके और उसके बच्चे के लिए सारा के अधीन रहना जंगल में भाग जाने से बेहतर है।

आज भी कभी-कभी उस अनादर्श स्थिति में, जिसमें हम स्वयं को पाते हैं, सबसे अच्छा करना ही बेहतर होता है। उदाहरण के लिए, मेरे पिता को, जिनका नया-नया विवाह हुआ था, दक्षिण अफ़्रीकी सेना में दो वर्ष की अनिवार्य सेवा के लिए भर्ती कर लिया गया। घर पर एक नवजात बच्चे और युवा पत्नी के होते हुए वह जानते

399. उत्पत्ति 16:9

थे कि यह आदर्श से बहुत दूर है, पर उनके हाथ बँधे थे। वह बस इतना कर सकते थे कि एक बुरी स्थिति में भी सबसे अच्छा करें। दूसरा विकल्प था जेल। कभी-कभी कोई पास्टर अपनी मंडली को किसी लोकतांत्रिक चुनाव में मतदान करने की सलाह दे सकता है, भले ही लोकतंत्र बाइबल में नहीं है और इसलिए आवश्यक रूप से मानव समाज के लिए परमेश्वर का अनंत आदर्श नहीं है। उसके विरुद्ध प्रचार करने से व्यर्थ का विरोध खड़ा होगा – यही बात पहली शताब्दी में अरस्तू की घरेलू आचार-संहिता के विषय में भी कही जा सकती है।[400]

प्रतिष्ठा की चिंता

उन्हें एक अनादर्श स्थिति में भी सबसे अच्छा करने में सहायता देने के अलावा, पतरस और पौलुस पत्नियों और दासों को और किस कारण से सलाह देते हैं कि वे स्वेच्छा से अपने पतियों और स्वामियों के अधीन रहें – जिन्हें बदले में अपनी पत्नियों और दासों के साथ कोमलता और आदर से व्यवहार करने का निर्देश दिया गया है? अधिकतर खंडों में हमें एक ठोस उत्तर मिलता है: पौलुस और पतरस को चिंता है कि देखने वाले संसार की दृष्टि में नई-नई कलीसियाओं की विश्वसनीयता और सुसमाचार-प्रचार का आकर्षण सुरक्षित रहे – एक ऐसा संसार जिसमें स्त्रियों और दासों का paterfamilias (घर के मुखिया) की आज्ञा मानना रोमी क़ानून है।

इन खंडों में इसके प्रमाण ये हैं:

- ठीक दासों और पत्नियों को संबोधित करने से पहले, पतरस सम्राट के अधीन रहने की सलाह देता है और आगे कहता है, "क्योंकि परमेश्वर की इच्छा यह है कि तुम भले काम करके निर्बुद्धि लोगों की अज्ञानता की बातों को बंद कर दो।"[401]
- पत्नियों से पतरस कहता है, "अपने-अपने पति के अधीन रहो, इसलिए कि यदि इनमें से कोई वचन को न मानते हों, तो भी अपनी-अपनी पत्नी के चालचलन के द्वारा बिना वचन के खिंच जाएँ।"[402]
- क्रेते की पत्नियों से पौलुस कहता है, "अपने-अपने पति के अधीन रहें, ताकि परमेश्वर के वचन की निंदा न होने पाए।"[403]
- क्रेते के दासों से पौलुस कहता है, "[अपने] स्वामियों के अधीन रहें, ताकि [वे] सब बातों में हमारे उद्धारकर्ता परमेश्वर के उपदेश की शोभा बढ़ाएँ।"[404]
- इफिसुस के दासों से पौलुस कहता है: "जितने दास जूए के नीचे हैं, वे अपने-अपने स्वामी को पूरे आदर के योग्य समझें, ताकि परमेश्वर के नाम और हमारे उपदेश की निंदा न हो।"[405]

400. इसके अलावा, उस समय की अरस्तू की घरेलू आचार-संहिता और राजतंत्रीय शासन की तरह, लोकतंत्र भी शायद अब तक समाज द्वारा खोजी गई सबसे अच्छी शासन-व्यवस्था है।
401. 1 पतरस 2:15
402. 1 पतरस 3:1-2
403. तीतुस 2:5
404. तीतुस 2:10
405. 1 तीमुथियुस 6:1

- इफिसुस की कलीसिया के लिए तीमुथियुस के द्वारा दिए गए अपने सब निर्देशों के विषय में पौलुस लिखता है, "लोगों को ये निर्देश दे, ताकि कोई दोषी न ठहरे। ... [और] विरोधी को निंदा करने का कोई अवसर न दें।"[406]

यहाँ क्या हो रहा है? विशेषकर 1 पतरस, पर तीतुस और 1 तीमुथियुस भी, ऐसी पत्रियाँ हैं जो छोटी, प्रायः सताई जाने वाली और दुख उठा रही कलीसियाओं को लिखी गईं। शैतान की रणनीति इन कलीसियाओं की ओर नकारात्मक ध्यान खींचने की है। इफिसियों की पत्री एक "भीतरी" दस्तावेज़ है, जो पूरी तरह मसीहियों को संबोधित है और बाहरी लोगों की चिंता नहीं करती (इसलिए उसमें प्रतिष्ठा की चिंता का कोई उल्लेख नहीं); जबकि इन तीन पत्रियों का उद्देश्य एक विशेष परिस्थिति से जुड़ी इस चिंता को संबोधित करना है कि बाहरी लोगों के साथ व्यवहार में कलीसिया कैसी दिखाई देती है। Cynthia Westfall कहती है:

वह एक सम्मान-आधारित संस्कृति थी, जिसमें लैंगिक भूमिकाओं का महत्वपूर्ण स्थान था। यदि कोई स्त्री अपने पति पर नियंत्रण रखकर उसके साथ "स्वामी जैसा व्यवहार" करती, तो इसे पूरे रोमी साम्राज्य के पदानुक्रम और संरक्षण-व्यवस्था के लिए एक विनाशकारी चुनौती माना जाता था। ऐसी परंपराओं के उल्लंघन को गंभीरता से लिया जाता था, और वे संभवतः कलीसिया की प्रतिष्ठा को नष्ट कर सकते थे – स्त्रियों का व्यवहार आरंभिक कलीसिया और अन्य पंथिक धार्मिक आंदोलनों पर विवादपूर्ण हमलों के लिए मसाला बनता था।[407]

एक ऐसे संसार में जहाँ दासों और पत्नियों को क़ानून के द्वारा paterfamilias के अधीन रहने के लिए बाध्य किया जाता था, इन पत्नियों और दासों को बुलाया गया कि वे उससे भी आगे बढ़कर स्वेच्छा से अपना जीवन अपने पतियों और स्वामियों को सौंप दें। धन्यवाद की बात है कि यदि paterfamilias मसीही होता, तो प्रेरितों ने उसे भी अपने घराने के लोगों की सच्ची देखभाल करने के उसके अपने निर्देश दिए थे।

कहने का अर्थ यह है कि जब पतरस और पौलुस ने पत्नियों से अपने पतियों के अधीन रहने को कहा, तो वे सब विवाहों में लैंगिक पदानुक्रम को किसी प्रकार के मसीही आदर्श के रूप में निरपेक्ष नहीं बना रहे थे। बल्कि वे एक अनादर्श स्थिति के अनुसार ढल रहे थे। पतरस अपनी पत्री की पहली पंक्ति में भविष्य के सिद्ध समाज में रहने वाले विश्वासियों को नहीं, बल्कि "उन परदेशियों को जो प्रांतों में तितर-बितर होकर रहते हैं" संबोधित करता है – हम परदेशी हैं, जो जितना हो सके उतना घुलने-मिलने का प्रयास कर रहे हैं, जबकि हम परमेश्वर के राज्य में अपनी सच्ची नागरिकता को जीते हैं। जब हम घराने के प्राचीन मानदंडों को समझते हैं, तो इन खंडों को इस रूप में समझना चाहिए कि कलीसिया को सांस्कृतिक मानदंडों के विरुद्ध खुला विद्रोह किए बिना उन्हें भीतर से उलटने का मार्ग दिखाया जा रहा है। पतरस और पौलुस अपूर्ण व्यवस्थाओं के बीच से रास्ता निकालते हैं, क्योंकि जब रोमी अधिकारी मसीहियों को बंदी बनाने का कोई भी बहाना ढूँढ़ रहे थे, तो कोई भी चुनौती इन छोटी कलीसियाओं पर कड़ी निगरानी और सताव ले आती। दिलचस्प बात यह है कि जब 1 पतरस, तीतुस और 1 तीमुथियुस लिखी गईं, उसके केवल कुछ ही वर्ष बाद उनके लेखकों, पतरस और पौलुस, को रोमी व्यवस्था में उथल-पुथल मचाने के कारण मृत्युदंड दिया गया।

406. 1 तीमुथियुस 5:7, 14
407. स्रोत: www.bit.ly/3EL7OgM

"दासो, अधीन रहो ... वैसे ही, पत्नियो, अधीन रहो"

तीतुस से कहा गया है कि वह पत्नियों का मार्गदर्शन करे कि वे अपने पतियों के अधीन रहें (2:3), और उसके तुरंत बाद उससे यह भी कहा गया है कि दास अपने स्वामियों के अधीन रहें (2:9)।

पतरस पौलुस के क्रम को उलट देता है: पहले वह दास और स्वामी के संबंधों की बात करता है, फिर पत्नी और पति के संबंधों की। 1 पतरस 2:18 में दासों से कहा गया है कि वे पूरे आदर के साथ अपने स्वामियों के अधीन रहें, न केवल भलों और नम्रों के, बल्कि अन्यायियों के भी; फिर 3:1 में हम पढ़ते हैं कि पत्नियाँ, उसी प्रकार, अपने पतियों के अधीन रहें। पतरस के शब्द इन निर्देशों के बीच के संबंध को और पक्का करते हैं: "हे दासो ... अधीन रहो ... हे पत्नियो, तुम भी इसी प्रकार ... अधीन रहो..."।

अब इस अध्याय का मुख्य तर्क: यद्यपि पूरकतावादी पत्नियों के अधीन रहने के निर्देश को कालातीत और सार्वभौमिक मानते हैं, हम आधुनिक लोग, जिनके लिए दासता अब बीती बात है, यह पहचानते हैं कि दासों के अधीन रहने के विषय में उसका समानांतर निर्देश आख़िरकार परिस्थिति-विशेष का ही था!

क्योंकि जब कोई नहीं सुनता तो इतिहास अपने आप को दोहराता है, इसलिए मैं इस अंतर्दृष्टि को कुछ गहराई से खोलूँगा।

दासता-उन्मूलन का मसीही विरोध

दासता के उन्मूलन के लिए लड़ने वाले मसीहियों ने, परमेश्वर के न्याय की भावना से प्रेरित होकर, पहले 1833 में यूनाइटेड किंगडम में दासता को एक संस्था के रूप में पराजित किया, फिर समय के साथ दासों की मुक्ति दूसरे देशों में भी फैलती गई। William Wilberforce, John Wesley, John Newton, Charles Finney, Grimké बहनों, Harriet Stowe, Olaudah Equiano और Frederick Douglass जैसे लोगों ने अंततः दासता की संस्था को एक गौरवपूर्ण और निर्णायक अंत तक पहुँचाया। सब आधुनिक मसीही समाज-परिवर्तन के इन नायकों की कहानियाँ सुनाना पसंद करते हैं।

जो बात कम ज्ञात है, और जिसे शायद हम जान-बूझकर भूल जाते हैं क्योंकि अब वह मसीहियों के लिए लज्जा की बात है, वह यह है कि अमेरिका में दासता के उन्मूलन के सबसे बड़े विरोधी दक्षिण के मसीही थे। वास्तव में, अमेरिका का आज का सबसे बड़ा संप्रदाय, दक्षिणी बैपटिस्ट (Southern Baptists), 1845 में ठीक इसी मुद्दे पर उत्तरी बैपटिस्टों से अलग हो गया।

अठारहवीं शताब्दी तक अधिकांश मसीही मानते थे कि दासता बाइबल-सम्मत है, और इससे उनका अर्थ था परमेश्वर द्वारा समर्थित। अमेरिका के बाइबल-विद्वानों, जैसे Robert Dabney और J.H. Thornwell, ने दास रखने के पक्ष में बाइबल से शक्तिशाली तर्क गढ़े। Charles Hodge, जो अपने समय का सबसे बड़ा रिफ़ॉर्म्ड धर्मविज्ञानी था, ने एक निबंध लिखा, The Biblical Case for Slavery, जिसमें उसने तर्क दिया कि:[408]

408. इस खंड का श्रेय Kevin Giles को, "What the Bible Actually Teaches on Women" के अध्याय 8 में।

- परमेश्वर ने दासता की स्थापना की। नूह के पुत्र हाम को दास होने का शाप देकर[409] परमेश्वर ने स्वयं दासता की स्थापना की।
- परमेश्वर ने दासता को स्वीकृति दी। अब्राहम, दाऊद और अय्यूब के भी दास थे।
- मूसा की व्यवस्था ने दासता का समर्थन किया। उदाहरण के लिए, दस आज्ञाओं में से चौथी और दसवीं आज्ञा में यह मान लिया गया है कि परमेश्वर के लोग दास रखते हैं। साथ ही, मूसा की व्यवस्था कंगाल यहूदियों और युद्ध में पराजित लोगों को दास बनाने की अनुमति देती थी।[410]
- यीशु ने दासता के विरुद्ध कभी कुछ नहीं कहा। जिसकी उन्होंने निंदा नहीं की, उसे उन्होंने अवश्य स्वीकार किया होगा।
- प्रेरितों ने दासों को अपने स्वामियों के अधीन रहने की आज्ञा दी। उन्होंने दासता की निंदा किए बिना उसे नियंत्रित किया।
- प्रेरितों ने दासता को सुसमाचार के एक सकारात्मक पहलू के चित्र के रूप में प्रयोग किया – हम "मसीह के दास" उस स्वामी की पूरी तरह आज्ञा मानें जिसकी संपत्ति हम हैं।

कुछ धर्मविज्ञानियों ने इन बहुसंख्यक धर्मविज्ञानियों का मन बदलने का प्रयास किया, पर असफल रहे। उदाहरण के लिए, 1845 में चार दिन चली एक बहस में दासता-उन्मूलन के समर्थक Jonathan Blanchard ने "बाइबल के व्यापक सिद्धांतों" और "पवित्रशास्त्र के पूरे दायरे" का सर्वेक्षण किया। उसके लिए यह स्पष्ट था कि "बाइबल के सिद्धांत न्याय और धार्मिकता हैं।" उसने तर्क दिया कि लगभग किसी भी बात के समर्थन में पद उद्धृत किए जा सकते हैं, और अंत में ऐसी व्याख्याएँ निकल सकती हैं जो पवित्रशास्त्र के व्यापक सत्यों के विरुद्ध हों।

दुख की बात है कि दक्षिण के बाइबल पर विश्वास करने वाले मसीही इतने आश्वस्त थे कि परमेश्वर दासता का समर्थन करते हैं कि वे दासता बनाए रखने के अपने अधिकार की रक्षा के लिए एक ऐसे गृहयुद्ध में हथियार उठाने को तैयार हो गए जिसमें पाँच लाख से अधिक लोगों की जान गई! यद्यपि गृहयुद्ध से अमेरिका के दक्षिण में नस्लवाद का अंत नहीं हुआ, फिर भी उसने उन मसीहियों को, जो कभी दास रखते थे, इतना अपमानित किया कि अंततः उन्होंने मान लिया कि दासता ग़लत थी। न रुकने वाले सांस्कृतिक परिवर्तन ने – जिसे न्याय की भावना आगे बढ़ा रही थी – उन्हें पवित्रशास्त्र की ओर लौटने पर विवश किया, जहाँ उन्होंने धीरे-धीरे पर निश्चित रूप से अपनी भूल देखी। अब लगभग हर बाइबल-विद्वान मानता है कि पहले के "बाइबल-आधारित" तर्क चाहे कितने भी अधिक रहे हों, बाइबल – जब उसे ठीक से समझा जाए – दासता का समर्थन नहीं करती, और यह प्रथा पापपूर्ण है।

409. उत्पत्ति 9:20-27
410. लैव्यव्यवस्था 25:39-41; 25:44-46

दासता और पितृसत्ता की तुलना

आइए अब परखें कि दासता किस प्रकार पितृसत्ता के – यानी सभ्यता भर चली आई इस मान्यता के कि पुरुषों को अगुवाई करनी चाहिए – समानांतर चलती है। आइए देखें कि यदि किसी के पास पवित्रशास्त्र की व्याख्या की पूरकतावादी पद्धति हो, तो वैसे ही तर्कों की एक श्रृंखला कितनी आसानी से गढ़ी जा सकती है.[411]

- परमेश्वर ने पुरुष के अधिकार की स्थापना की। पतन से पहले वाटिका में परमेश्वर ने आदम को हव्वा का अगुवा बनाया।
- परमेश्वर ने पुरुष के अधिकार को स्वीकृति दी। परमेश्वर के लोगों की अगुवाई कुलपिताओं ने की, कुलमाताओं ने नहीं। इस्राएल के इतिहास पर रानियाँ नहीं, राजा छाए रहते हैं।
- मूसा की व्यवस्था ने पुरुष के अधिकार का समर्थन किया। दसवीं आज्ञा कहती है कि हम अपने पड़ोसी की पत्नी, या गधे, या किसी अन्य संपत्ति का लालच न करें। याजक पुरुष हों, स्त्री नहीं।
- यीशु ने पति के अधिकार के विरुद्ध कभी कुछ नहीं कहा। जिसकी उन्होंने निंदा नहीं की, उसे उन्होंने अवश्य स्वीकार किया होगा।
- प्रेरितों ने पत्नियों को अपने पतियों के अधीन रहने की आज्ञा दी। उन्होंने पितृसत्ता की निंदा किए बिना उसे नियंत्रित किया।
- प्रेरितों ने पति के अधिकार को सुसमाचार के एक सकारात्मक पहलू के चित्रण के लिए प्रयोग किया, जिसमें पति को स्वामी मसीह का चित्र बनना था, और पत्नी को अपने पति के अधीन ऐसे रहना था मानो मसीह के।

क्या आप दासता और पितृसत्ता के पक्ष में बाइबल से तर्क देने के प्रयासों के बीच की उल्लेखनीय और गंभीर समानताएँ देख सकते हैं? संसार की सबसे बड़ी कलीसिया भी अब "पत्नियो, अधीन रहो" और "दासो, अधीन रहो" वाले खंडों के बीच की समानता को पहचानती है: 1988 में पोप John Paul II ने स्पष्ट शब्दों में तर्क दिया कि दासता को उचित ठहराने के लिए इफिसियों 6 में पौलुस के लेखों का प्रयोग करना, विवाह में स्त्री की अधीनस्थता को उचित ठहराने के लिए इफिसियों 5 का प्रयोग करने से कुछ अलग नहीं है।[412]

सेब और संतरे?

पूरकतावादी धर्मविज्ञानी इस समानता का उत्तर कैसे देते हैं? George Knight कहता है कि "पत्नियो, अधीन रहो" और "दासो, अधीन रहो" वाले खंड बहुत अलग हैं – "सेब और संतरे" (यानी ऐसी चीज़ें जिनकी आपस में तुलना ही नहीं हो सकती)। कैसे? मैं एक प्रमुख पूरकतावादी धर्मविज्ञानी, Sam Storms, के एक

411. इस खंड का श्रेय Kevin Giles को, "What the Bible Actually Teaches on Women" के अध्याय 8 में।
412. Pope John Paul II, Mulieris Dignitatem, पृ. 24. Barr, पृ. 110 में उद्धृत।

लेख[413] से अंश दूँगा, जो छह कारण देता है कि क्यों उसके विचार में हम दासता की निंदा करते हुए भी पत्नियों की अधीनता का समर्थन कर सकते हैं। मैं उसे एक-एक अंश करके उद्धृत करूँगा, उसके शब्दों को तिरछे अक्षरों में और उद्धरण-चिह्नों के भीतर रखते हुए, फिर हर एक का उत्तर दूँगा:

पहला, "पवित्रशास्त्र अवांछनीय संबंधों को स्थायी आदर्शों के रूप में स्वीकार किए बिना उन्हें नियंत्रित करने के लिए जाना जाता है (देखें मत्ती 19:8, 1 कुरिन्थियों 6:1-8)। दासों और स्वामियों को एक दूसरे से कैसा संबंध रखना चाहिए, इस विषय में पौलुस की सिफ़ारिशें इस संस्था को अच्छा नहीं मान लेतीं।"

तो Storms सामाजिक संरचनाओं के अनुसार हमारे स्तर पर उतरने की परमेश्वर की तत्परता को समझता तो है। अच्छा है! फिर भी यूनानी-रोमी संसार में paterfamilias के प्रति पत्नी की उस अधीनता के विषय में, जिसे संस्कृति अनिवार्य ठहराती थी, ठीक यही तर्क दिया जाना चाहिए – बाइबल उसे स्वीकार किए बिना उसे नियंत्रित करती है।

दूसरा, "दासता की संस्था सृष्टि में आधारित नहीं, बल्कि पतन से उत्पन्न एक विकृति है। दूसरी ओर, विवाह और पुरुष का सिर होना (मुखियापन) उस मूल सृष्टि-व्यवस्था का अंग हैं जो पतन से पहले की है।"

यहाँ Storms उत्पत्ति 2 और 3 की एक ग़लत व्याख्या अपनाता है, और फिर उस बात को आदर्श बना देता है जिसके विषय में उत्पत्ति 3:16 कहता है कि वह सीधे पतन का परिणाम है, सृष्टि का नहीं।

तीसरा, "कई अवसरों पर दासता के अंत के बीज बोए गए हैं। देखें फिलेमोन 16, इफिसियों 6:9। परंतु नए नियम में कुछ भी यह संकेत नहीं देता कि पतियों और पत्नियों के संबंध के लिए भी ऐसी ही कल्पना की गई थी।"

यह सच नहीं है। गलातियों 3:28, 1 कुरिन्थियों 7, और इफिसियों 5 का सही पठन, विशेषकर परस्पर अधीनता के विषय में उसकी शिक्षा, वास्तव में विवाह में पुरुष-प्रभुत्व के "अंत के बीज" हैं।

चौथा, "यदि दासता के तर्क का प्रयोग पत्नी की अपने पति के प्रति अधीनता को अमान्य ठहराने के लिए किया जाता है, तो क्या वह बच्चे की अपने माता-पिता के प्रति अधीनता को भी अमान्य नहीं ठहराएगा? ध्यान दीजिए कि इफिसियों 5-6 में पौलुस पतियों और पत्नियों, माता-पिता और बच्चों, और दासों और स्वामियों के संबंधों को – सबको – संबोधित करता है।"

Storms ग़लत शब्द का प्रयोग करता है: बच्चों को "आज्ञा माननी" है, जबकि पत्नियों और दासों को "अधीन रहना" है। यह पत्नियों और दासों को एक अनोखे ढंग से जोड़ता है। Storms यह भी मानकर चलता दिखता है कि उस संस्कृति में माता-पिता और बच्चे माता-पिता और संतान वाले पदों को उसी तरह पढ़ते होंगे जैसे हम आज पश्चिम में पढ़ते हैं। फिर भी हममें से कौन इस पर ज़ोर देगा कि हमारे बच्चे वयस्क होने के बहुत बाद तक अपने माता-पिता की आज्ञा मानें? पहली शताब्दी के पाठक के कानों में इफिसियों 6

413. स्रोत: www.bit.ly/2ZXK1LY

का अर्थ यह समझा जाता कि पौलुस वयस्क बच्चों को भी आज्ञा दे रहा है कि वे अपने माता-पिता का केवल आदर ही न करें, बल्कि उनकी आज्ञा भी मानें।[414]

परंतु यदि माता-पिता और बच्चे का संबंध उस समय भी वैसा ही होता जैसा अब है (जो वह नहीं था), तब भी विवाह में लिंग पर आधारित पदानुक्रम, पालन-पोषण में पीढ़ी पर आधारित पदानुक्रम से बहुत अलग है। यह तथ्य कि हमारे छोटे बच्चे जीवन और बुद्धि के विषय में बहुत कम जानते हैं, उन्हें ऐसी स्थिति में रखता है जहाँ निर्भरता और आज्ञा-पालन उनके लिए सबसे अच्छा है, और इसलिए समानतावादी संस्कृतियों में भी इसका पालन होता है। दो पढ़े-लिखे वयस्कों के विवाह में यह बात सच नहीं है। पालन-पोषण का लक्ष्य अपने बच्चों को निर्भरता और आज्ञा-पालन से आगे ले जाना है, ताकि अंततः वे अपने परिवार के अगुवे बनकर खड़े हों, और तब वे हमारे बराबर के हो जाते हैं (जैसा पौलुस इफिसियों 5:31 में संकेत करता है)। इसलिए किसी बच्चे पर माता-पिता की अगुवाई को जीवन भर के लिए स्थायी बनाने का प्रयास करना ग़लत होगा। तो फिर हम अपने जीवन-साथी के साथ ऐसा करने को सही मानने के विषय में इतने निश्चित क्यों हों?

पाँचवाँ, "दासों को दिए गए पौलुस के निर्देशों में दासता के संदर्भ में किसी स्थायी नैतिक आज्ञा या नैतिक निरपेक्ष नियम का प्रयोग नहीं हुआ है।"

यहाँ Storms अपनी पहली बात को दोहराता है। पर 1 पतरस 2-3 के शब्दों को देखिए: "हे दासो, अपने स्वामियों के अधीन रहो ... हे पत्नियो, तुम भी इसी प्रकार अपने पतियों के अधीन रहो।" वह किस आधार पर निश्चित है कि पहली बात स्थायी नैतिक आज्ञा नहीं है, जबकि दूसरी है? उसका पक्ष असंगत है।

छठा, "पौलुस स्पष्ट रूप से किसी दास के स्वतंत्रता पाने की संभावना की कल्पना करता है और उसका समर्थन करता है (1 कुरिन्थियों 7:21)। पत्नियों और उनके पतियों के प्रति उनकी अधीनता के विषय में वह ऐसी कोई बात कभी नहीं कहता।"

ऐसा इसलिए है क्योंकि दासता के विपरीत, विवाह परमेश्वर की रचना के अनुसार "एक तन" वाला संबंध है।[415] दासता से स्वतंत्रता इसलिए वांछनीय थी क्योंकि वह काम की परमेश्वर द्वारा ठहराई गई संस्था का छुटकारा है। इसी तरह, पितृसत्ता से स्वतंत्रता विवाह की परमेश्वर द्वारा ठहराई गई संस्था का छुटकारा है। इफिसियों 5 लिखने में पौलुस का लक्ष्य यह है कि अरस्तू की संहिताओं के विरुद्ध क्रांति का संदेश भेजे बिना, उस संस्कृति में जितना संभव था उतना बराबरी वाला विवाह स्थापित हो।

414. "बच्चों और माता-पिता का संबंध हमारी समकालीन संस्कृति से महत्वपूर्ण रूप से भिन्न था। आधुनिक संसार में यह माना जाता है कि वयस्क होने के बाद किसी समय बड़े हो चुके बच्चे अपने माता-पिता से स्वतंत्र हो जाएँगे और फिर उनके अधिकार के अधीन नहीं रहेंगे। प्राचीन संसार में ऐसा नहीं था, जहाँ अपेक्षा की जाती थी कि वयस्क बच्चे वयस्क होने के बहुत बाद तक अपने माता-पिता के अधिकार के अधीन रहें।" (Howard Marshal, "Discovering Biblical Equality", पृ. 188.)
415. Jane Hooker एक और तर्क जोड़ती है, जिसे मैं Storms की सूची में जोड़ दूँगा: "दासता की बाइबल-कालीन प्रथा और अमेरिका में दासता की हाल की प्रथा के बीच महत्वपूर्ण अंतर हैं।" (स्रोत: www.bit.ly/3GNFnk9) इससे उसका अर्थ यह प्रतीत होता है कि हाल की शताब्दियों में दासता को समाप्त करने का सामाजिक आंदोलन समझ में आता है, पर पहली शताब्दी में दासता इतनी बुरी नहीं थी। परंतु पहली शताब्दी में भी दासों के साथ भयानक व्यवहार होता था। यह मूल बात से भी चूक जाता है: दोनों स्थितियों में दासता का अर्थ आर्थिक उद्देश्यों के लिए किसी व्यक्ति पर स्वामित्व था। दासता के उन्मूलन ने केवल दासों के साथ बुरे व्यवहार से ही संघर्ष नहीं किया, बल्कि उसकी दयालु प्रथा से भी।

कहने का अर्थ यह है – और George Knight तथा Sam Storms के दावों के विपरीत – कि दासता और पितृसत्ता अत्यंत समान हैं; वे सेब और संतरे बिलकुल नहीं, बल्कि एक ही पतित पेड़ के सड़े हुए फल हैं। पत्नी पर पति की अगुवाई की मान्यता सिद्धांत रूप में दासता से बहुत मिलती-जुलती है। चाहे उनकी अभिव्यक्ति दयालु हो या क्रूर, दोनों प्रथाएँ पतित संसार का परिणाम हैं। "दयालु" दासता की भी निंदा करना – जैसा आज सब मसीही करते हैं – और साथ ही "दयालु" पितृसत्ता का गढ़ बने रहना, इसका कोई अर्थ नहीं बनता।

वास्तव में, यदि समाज पर सुसमाचार का एक दीर्घकालीन प्रभाव दासता को उलट देना है, तो उसी तीर से जो दूसरा निशाना लगता है, वह पितृसत्ता है। यही कारण है कि अफ़्रीकी-अमेरिकियों के बीच बाइबल की व्याख्या पर एक उल्लेखनीय लेख में Clarice Martin एक आँखें खोल देने वाला प्रश्न पूछती है: "श्वेत पुरुष प्रचारक और धर्मविज्ञानी दासों के विषय में प्रचार और धर्मविज्ञान करते समय मुक्तिदायक व्याख्या-पद्धति का, पर स्त्रियों के संदर्भ में शब्दशः अर्थ वाली व्याख्या-पद्धति का प्रयोग कैसे कर सकते हैं?"[416]

पहले के अन्याय से मिलने वाली सीख

दासता और पितृसत्ता के बीच की समानताओं को नकारकर पूरकतावादी विद्वान अमेरिका के दक्षिण के उन मसीहियों की भूल दोहराते हैं जिन्होंने दासता-उन्मूलन का विरोध किया था, और उन कलीसियाओं को, जो उनकी धर्मवैज्ञानिक कुशलता पर भरोसा करती हैं, यीशु की कलीसिया के लिए एक दूसरी लज्जा में घसीट लेते हैं – और साथ ही कलीसिया द्वारा अपने ही कुछ लोगों के अवमूल्यन को आगे बढ़ाते हैं।

इस सब को और भी दुखद यह बात बनाती है कि संसार में पुरुष के सिर होने (मुखियापन) के सबसे प्रभावशाली समर्थक दक्षिणी बैपटिस्ट हैं – विश्वासियों का वह समूह जिससे अमेरिका की हर चार में से एक कलीसिया संबंधित है। वे अपने प्रमुख विद्वानों और मीडिया के द्वारा अपने विचारों को संसार भर में फैलाते रहते हैं। दुख की बात है कि, जैसी Georg Hegel ने चेतावनी दी थी, ऐसा लगता है कि "इतिहास से हम केवल एक ही बात सीखते हैं – कि हम इतिहास से कुछ नहीं सीखते।"

तो दासता-उन्मूलन का विरोध करने वाले मसीहियों की असफलताओं से आज की कलीसिया को ठीक-ठीक क्या सीखना चाहिए? पहला, यह संभव है कि कोई बाइबल भर के पदों को समेटने वाली विस्तृत "विद्वत्तापूर्ण" रचनाओं के आधार पर दृढ़ता से आश्वस्त हो – और वास्तव में पूरे-पूरे संप्रदाय और बाइबल-विद्वानों के पूरे-पूरे स्कूल ऐसे होते हैं – और फिर भी ग़लत हो।

दूसरा, यह संभव है कि संस्कृति एक सकारात्मक दिशा में बढ़े, जो वास्तव में उन मसीही सिद्धांतों का परिणाम हो जिन्होंने सहस्राब्दियों में उस संस्कृति में जड़ पकड़ी है। उदाहरण के लिए, गलातियों 3:28 में पौलुस का मानवता का मैग्ना कार्टा इतिहास में पहली बार है जब किसी ने समानता और सामाजिक पदानुक्रमों के अंत के विचार को इतनी शक्ति से व्यक्त किया। समाज द्वारा दासता और पुरुष-प्रभुत्व को उखाड़ फेंकने के लिए हम वास्तव में इसी खंड के कितने ऋणी हैं? समाज में सुसमाचार के प्रभाव के विरुद्ध

416. Cain Felder (ed), Stony the Road we Trod, पृ. 226. Barr, अध्याय 6 में उद्धृत।

प्रतिक्रिया करने के बजाय कलीसिया को उसे अपना कहना चाहिए और उसका उत्सव मनाना चाहिए, उस पर हमला नहीं करना चाहिए।

तीसरा, यह संभव है कि समाज में हुई खोजें और प्रगति पवित्रशास्त्र की किसी लंबे समय से चली आ रही व्याख्या को चुनौती दें। जब अधिकतर लोग सोचते थे कि संसार चपटा है या पृथ्वी ब्रह्मांड का केंद्र है, तब कलीसिया के पास इसके समर्थन में बाइबल के पद थे। जब वैज्ञानिक खोजों ने इसका खंडन किया, तो इससे हमें बाइबल को नए ढंग से पढ़ने और वह देखने का अवसर मिला जो उसमें शुरू से था। जब औद्योगिक क्रांति और उस आंदोलन की पहली लहरें, जो आगे चलकर स्त्री-मुक्ति आंदोलन बना, पश्चिम में फैलीं, तो इतिहास में पहली बार स्त्रियों को पुरुषों के बराबर की अपनी बुद्धि और क्षमता दिखाने का अवसर मिला। इसे ख़तरे के रूप में देखने के बजाय, यह वास्तव में हमारे लिए एक अवसर है कि हम इस प्रश्न के साथ स्वयं पवित्रशास्त्र के पास लौटें: हम शुरू से क्या चूकते आ रहे हैं?

चौथा, व्याख्या की आम भूलों से बचना आवश्यक है। बाइबल के हर भाग की व्याख्या के लिए पूरी बाइबल चाहिए। ऐसे प्रमाण-पदों को जोड़ लेना, जिन्हें स्वयं ग़लत समझा गया हो, बहुत आसान है। हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि बाइबल की पुस्तकें हमें संबोधित करके नहीं लिखी गईं, भले ही वे हमारे लिए लिखी गई हैं। जिस कालातीत संदेश को हम अपने समय और संदर्भ पर लागू कर सकें, उसे पहचानने से पहले हमें उस ऐतिहासिक संदर्भ में अवश्य गहराई से डूबना चाहिए जिसके लिए वह पाठ लिखा गया था।

पाँचवाँ, स्वार्थ और समूह-सोच पवित्रशास्त्र को एक विशेष ढंग से पढ़ने के लिए एक शक्तिशाली पूर्वाग्रह पैदा कर सकते हैं। (इस विषय पर और जानने के लिए परिशिष्ट 6 देखें।) सामान्य नियम के रूप में, मनुष्य (मसीही मनुष्य भी) हर उस बात का विरोध करते हैं जो उनके स्थान या विशेषाधिकार के लिए ख़तरा हो। क्या 1800 के दशक में दास रखने वाले धर्मविज्ञानियों को धर्मवैज्ञानिक बहसों में सबसे ऊँची आवाज़ बनने देना चाहिए था? क्या उन लोगों को, जो पूरकतावादी कलीसियाओं, सेवकाइयों और कॉलेजों में पास्टर, अगुवे या प्रोफ़ेसर के रूप में अपनी नौकरी और प्रतिष्ठा खो देंगे, आज इस विषय पर सबसे प्रभावशाली आवाज़ बनने देना चाहिए?

छठा, बाइबल की व्याख्या के लिए पूरी कलीसिया चाहिए। कलीसिया के उन भागों को अनदेखा करना या नीचा दिखाना कभी बुद्धिमानी नहीं है जो बातों को आपसे अलग ढंग से देखते हैं। जो लोग सच्चे मन से पवित्रशास्त्र से प्रेम करते हैं, उन्हें "संस्कृति के आगे घुटने टेकने वाले" या "उदारवादी" कहना परमेश्वर की आवाज़ के प्रति अपने कान बंद करने का एक रूप हो सकता है। जिन लोगों को आप पवित्रशास्त्र के प्रति "निम्न दृष्टिकोण" वाले कहकर ख़ारिज कर देते हैं, हो सकता है वे उसके कुछ भागों को आपसे कहीं बेहतर समझते हों।

अंत में, जब व्यापक संस्कृति भ्रष्ट सांस्कृतिक प्रथाओं को छोड़ रही हो, तब भी उन्हें पकड़े रहना समाज में कलीसिया की विश्वसनीयता के लिए विशेष रूप से हानिकारक है। मेरे विचार में, पितृसत्ता का गढ़ बने रहना कलीसिया के लिए उतना ही आत्मघाती है जितना दासता के पक्ष में तर्क देने के लिए बाइबल का प्रयोग करते रहना। उन शताब्दियों में, जब संस्कृति और कलीसिया कमोबेश इस पर सहमत थीं कि दासता स्वीकार्य है, भले ही कलीसिया उसके सबसे दयालु रूप की सिफ़ारिश करती थी, उसके साथ चलने से कलीसिया की

प्रतिष्ठा को बहुत अधिक हानि नहीं हुई। पर कल्पना कीजिए कि यदि पश्चिम का कोई आधुनिक मसीही घराना दो ऐसे दास रखकर "परमेश्वर की आज्ञा मानना" चुने, जिन्होंने बाइबल के आधार पर इस प्रथा के लिए सहमति दी हो, तो लोग इसे कैसे लेंगे?

इसी तरह, जब तक कलीसिया Jean-Jacques Rousseau द्वारा व्यक्त इस सांस्कृतिक धारणा से सहमत थी कि "[पुरुष] को बलवान और सक्रिय होना चाहिए; [स्त्री] को निर्बल और निष्क्रिय; एक के पास शक्ति भी होनी चाहिए और इच्छा भी; दूसरे के लिए इतना ही पर्याप्त है कि वह थोड़ा-सा ही विरोध करे,"[417] तब तक पितृसत्ता के साथ चलना कलीसिया की प्रतिष्ठा के लिए बहुत हानिकारक नहीं था। परंतु अब, जब हमारा समाज स्त्री की अधीनस्थता की "भयावहताओं" पर एक पूरी पुरस्कृत टीवी श्रृंखला, The Handmaid's Tale, बनाता है, तो यदि हम अपनी बेटियों को अपने पति के एकतरफ़ा अधिकार के अधीन रहना सिखाते हैं, और शिक्षा और अगुवाई के वरदानों वाली स्त्रियों को शिक्षा देने और अगुवाई करने से रोकते हैं, तो हम कलीसिया दासों वाले उस काल्पनिक आधुनिक परिवार से बहुत अलग नहीं दिखते।[418]

अधिक घनिष्ठ विवाह का फल पाने के अलावा, यदि विश्वासी स्त्रियों को बराबरी देने को घर से आगे कलीसिया और समाज तक फैलाएँ, तो हम अपनी संस्कृति में अपने सुसमाचार के लिए अधिक विश्वसनीयता का फल भी पाएँगे। हमारे साथी नागरिक जो भूल गए हैं, पर जो हम उन्हें याद दिला सकते हैं, वह यह है कि हमारी संस्कृति में आज स्त्रियों का जो उत्थान है, उसकी ऐतिहासिक जड़ें हमारे अपने, गरिमा प्रदान करने वाले सुसमाचार के धीरे-धीरे भीतर तक रिसने वाले प्रभाव में, और परमेश्वर के प्रेमपूर्ण और न्यायपूर्ण चरित्र के ज्ञान में हैं – आख़िरकार, बहुत, बहुत लंबे समय से परमेश्वर किसी भी पूरकतावादी प्रतिबंध से आनंदपूर्वक अनजान रहे हैं, और स्त्रियों को उनके वरदानों में पूरी उड़ान भरने के लिए ऊपर उठाते रहे हैं, यहाँ तक कि सामर्थ्य के साथ पुरुषों की अगुवाई करने और उन्हें शिक्षा देने के लिए भी उनका उपयोग करते रहे हैं।

417. Jean Jacques Rousseau, Emile or On Education (1762). Barr, अध्याय 6 में उद्धृत।
418. "Finally Feminist" (पृ. 56) में John Stackhouse और भी तीखे शब्दों में कहता है: "जब समाज पितृसत्तात्मक था, जैसा वह नए नियम के संदर्भ में था और जैसा वह हमारे समय के आधुनिक समाज को छोड़कर संसार में हर जगह रहा है, तब कलीसिया उसके साथ चलकर ठोकर का कारण बनने से बचती रही। परंतु अब, जब आधुनिक समाज कम से कम आधिकारिक रूप से समानतावादी है, ठोकर की बात यह है कि कलीसिया समाज के साथ नहीं चल रही, और इस अभूतपूर्व स्वतंत्रता में आनंदित नहीं हो रही कि स्त्रियाँ और पुरुष किसी मनमानी लैंगिक रेखा के बिना अपने वरदान और बुलाहट के अनुसार सेवा करें। यह ठोकर दूसरों के सुसमाचार-प्रचार में भी बाधा डालती है और ... उन लोगों को बनाए रखने और विकसित करने में भी जो पहले से परिवर्तित हो चुके हैं। ... इस समाज में कलीसियाओं द्वारा पितृसत्ता को जारी रखना [बहुतों] के मार्ग में एक धार्मिक ठोकर का पत्थर रख देता है।"

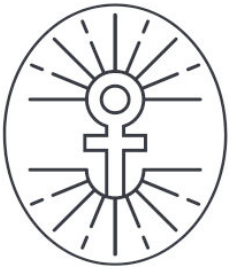

तीसरा भाग

स्त्रियों की सेवकाई



10

पुराने नियम में शक्तिशाली स्त्रियाँ

"यह प्रभु की इच्छा थी कि वे दबोरा को परमेश्वर की प्रजा की अगुवा के रूप में उपयोग करें ... यह दिखाने के लिए कि स्त्रियाँ अगुवाई में पुरुषों जितनी ही सक्षम हैं।" Nijay Gupta[419]

परमेश्वर के यह कहने के बाद कि पतित "आदम हव्वा पर प्रभुता करेगा", मानवजाति वाटिका से निकलकर तेज़ी से बाहर की जंगली दुनिया में आ गिरती है, और – परमेश्वर की उदास भविष्यद्वाणी के अनुसार ही – जहाँ भी देखें, केवल पुरुष ही अधिकार में हैं। स्पष्ट है कि बहुविवाह और विषैला पुरुषत्व उसी मिट्टी में उगते हैं जिसमें पितृसत्ता उगती है, क्योंकि मानवजाति की कहानी के कुछ ही पन्नों बाद कैन हाबिल से होड़ करता है, और सबसे ऊपर रहने वाला ("अल्फ़ा") न बन पाने के बजाय हत्या करना पसंद करता है। इसके कुछ ही समय बाद लेमेक एक नहीं, दो पत्नियाँ ले लेता है, और डींग मारता है कि उसने एक ऐसे पुरुष को मार डाला जिसने उसे केवल घायल किया था।

पुराने नियम के बाकी भाग को पलटकर देखिए, और आप पाएँगे कि सार्वजनिक जीवन पर पुरुषों का ही दबदबा बना रहता है। नीतिवचन 31 की पत्नी का पति दिन में "देश के प्राचीनों के बीच अपना स्थान लेता है"[420] और फिर घर लौटकर भी शायद वही अधिकार में रहता है। इसका कारण यह है कि प्राचीन इब्री समाज का केंद्र विस्तृत परिवार है, जिसमें एक पुरुष अपनी संतान, संबंधियों, दासों और अपनी पत्नी या पत्नियों की अगुवाई करता है (जैसा कि उत्पत्ति में पत्नियों की आपसी होड़ की कहानियाँ दिखाती हैं)।[421]

फिर कुलपिता का नाम उसके बेटों में जीवित रहता है, जबकि उनकी माता का नाम उसी दिन दफ़न हो जाता है जिस दिन उसका विवाह होता है। बेटियों का दर्जा नीचा है, इसलिए वे बस अपने पति के परिवार में समा जाती हैं। स्त्री की मुख्य भूमिका "फलवन्त" होना है, और इसके विपरीत, उसकी सबसे दुखद विफलता संतान उत्पन्न न कर पाना है।[422] इसके अतिरिक्त, व्यवस्था और रीति-रिवाज स्त्रियों पर दम घोंटने वाले कसे हुए आवरण की तरह लिपटे रहते हैं। वयस्क स्त्रियों को भी नाबालिग माना जाता है, जो किसी पुरुष अभिभावक के अधीन रहती हैं; और इस बीच उसके पति के पास यह अधिकार है कि वह अपनी मनमर्ज़ी से

419. www.bit.ly/3BFrpwV
420. नीतिवचन 31:23
421. उदाहरण के लिए, अब्राहम, याकूब, कालेब, दाऊद, सुलैमान और गिदोन, सब की एक से अधिक पत्नियाँ हैं।
422. देखें निर्गमन 23:25-26; 1 शमूएल 1:1-2:10; अय्यूब 24:21; भजन संहिता 113:9।

परमेश्वर के सामने ली गई उसकी मन्नतों को, और उसके प्रति अपनी मन्नतों को भी, रद्द कर दे।[423]

फिर भी, जैसे-जैसे कहानी आगे बढ़ती है, परमेश्वर अक्सर पितृसत्तात्मक मान्यताओं को लाँघकर किसी स्त्री को मसीह के आगमन से पहले की अपनी प्रजा में रणनीतिक महत्व या अगुवाई के स्थान तक ऊँचा उठाते हैं। जैसा कि हम इस अध्याय में देखेंगे, पतित समाज ने स्त्रियों के लिए चाहे जो भी "भूमिकाएँ" तय की हों, परमेश्वर ने स्पष्ट रूप से वैसा ही करने की कोई बाध्यता महसूस नहीं की। आइए, ऐसी कई स्त्रियों से मिलें, जिनके बारे में हम कह सकते हैं कि उन्होंने ezer kenegdos के रूप में सेवा की – ऐसी सशक्त स्त्रियाँ, जो अगुवाई करती हैं, छुड़ाती हैं, शिक्षा देती हैं और ज़रूरत पड़ने पर पुरुषों का विरोध भी करती हैं।

शिप्रा और पूआ: अत्याचारी शासन का विरोध करने वाली स्त्रियाँ

प्राचीन संसार में, जहाँ माता-पिता अक्सर बेटों के द्वारा अपना भविष्य सुरक्षित करने के लिए अपनी नवजात बेटियों को मार डालते थे, मिस्र का एक फ़िरौन धाइयों को आदेश देता है कि वे उसके दास बनाए गए लोगों के बेटों को मार डालें: "जब तुम इब्री स्त्रियों को प्रसव के समय जनने के पत्थरों पर बैठी देखो, तब यदि बेटा हो तो उसे मार डालना; और यदि बेटी हो तो जीवित रहने देना।"[424] उसकी योजना इब्रियों के भविष्य को कमज़ोर करने की है। यदि यहूदी लड़कियों के बड़े होने पर उनसे विवाह करने वाला कोई पुरुष नहीं होगा, तो वे मिस्री पुरुषों से विवाह कर लेंगी और मिस्री संस्कृति में घुल-मिल जाएँगी। कम से कम योजना तो यही है। परन्तु तब दो यहूदी धाइयाँ, शिप्रा और पूआ, अपनी जान जोखिम में डालकर पृथ्वी के सबसे शक्तिशाली पुरुषों में से एक की आज्ञा का उल्लंघन करती हैं, और एक दुष्ट शासन के विरुद्ध प्रतिरोध के सबसे पुराने ज्ञात उदाहरणों में से एक बन जाती हैं। इसी क्रम में वे शिशु मूसा की जान बचाती हैं, जो अस्सी वर्ष बाद परमेश्वर की प्रजा को स्वतंत्र करेगा।

मज़बूत सहायकों के रूप में, पुरुषों की रक्षक और साझेदार के रूप में, और अत्याचारी पुरुषों का विरोध करने वाली स्त्रियों के रूप में किए गए उनके प्रयासों के बदले परमेश्वर इन दो ezer kenegdos के लिए क्या करते हैं? हमें बताया गया है कि "परमेश्वर ने धाइयों के साथ भलाई की; और लोग बढ़कर और भी अधिक हो गए। और इसलिए कि धाइयाँ परमेश्वर का भय मानती थीं, उसने उनके घर बसाए।"[425]

मरियम: अगुवा और घोषणा करने वाली

जन्म के कुछ ही समय बाद शिशु मूसा की बड़ी बहन मरियम धाइयों से उसकी ezer kenegdo होने की ज़िम्मेदारी अपने हाथ में ले लेती है: वह उसे एक टोकरी में रखकर नील नदी में छोड़ देती है और इस तरह उसकी जान बचाती है। परमेश्वर उसकी सुरक्षा के लिए की गई उसकी प्रार्थनाओं का उत्तर देते हैं, जब फ़िरौन

423. गिनती 30:3-16, व्यवस्थाविवरण 24:1-4
424. निर्गमन 1:16
425. निर्गमन 1:20-21

की बेटी – जो स्वयं भी एक प्रकार की ezer kenegdo है – उसे पाती है और महल में ले जाती है, और ऐसा करके उसे मिस्र के सिंहासन के उत्तराधिकारियों की पंक्ति में खड़ा कर देती है।

दशकों बाद परमेश्वर मूसा को इस्राएलियों को स्वतंत्रता की ओर ले जाने के लिए चुनते हैं, परन्तु वे उसे एक प्रकार की छोटी अगुवाई-टीम में रखते हैं: हम यह इसलिए जानते हैं क्योंकि परमेश्वर ने हारून और मरियम को भी मूसा के साथ-साथ इस्राएल के छुड़ाने वाले और अगुवे होने के लिए बुलाया। बहुत बाद के एक भविष्यद्वक्ता, मीका, के द्वारा परमेश्वर निर्गमन पर विचार करते हुए कहते हैं: "मैं तुझे मिस्र देश से निकाल लाया और दासत्व के घर से तुझे छुड़ाया। मैंने तेरी अगुवाई करने के लिए मूसा को भेजा, और हारून और मरियम को भी।"[426]

मरियम भविष्यसूचक अगुवाई प्रदान करती है। मूसा की तरह उसे भी "भविष्यद्वक्तिन" कहा गया है।[427] लाल समुद्र के बीच से होकर जाने वाले उस मार्ग के, जो अब बंद हो चुका है, दूसरी ओर वह इस्राएली स्त्रियों की अगुवाई करते हुए स्तुति का गीत गाती और नाचती है।[428] उसका विजय-गीत, जो एक प्रकार का उपदेश-गीत है और जिसके शब्द पवित्रशास्त्र के रूप में लिखे गए हैं, एक हज़ार से भी अधिक वर्ष बाद की कलीसिया के सुसमाचार का पूर्व-रूप है। मरियम के गीत के शब्द और हमारा सुसमाचार, दोनों उस परमेश्वर की भलाई और राजत्व की घोषणा करते हैं जो हमें ऐसे शत्रु से छुड़ाते हैं जिसे हम अपने बल से कभी हरा नहीं सकते, और हमें बंधुआई से निकालकर प्रतिज्ञा किए हुए देश तक पहुँचाते हैं। मरियम की घोषणा उन सब स्त्रियों की ओर भी संकेत करती है जो आगे चलकर यीशु के राजकीय उद्धार के सुसमाचार की घोषणा करेंगी। हम यह इसलिए जानते हैं क्योंकि सदियों बाद एक भजनकार मरियम और उसकी सहेलियों को आगे आने वाले सब आराधना-अगुवों और सुसमाचार-प्रचारकों के एक आरंभिक संकेत-चिह्न के रूप में देखता है: "प्रभु वचन सुनाता है, और उसका प्रचार करने वाली स्त्रियों का एक बड़ा दल है।"[429]

चेतावनी का एक शब्द: हम में से जो लोग उस दिन की लालसा रखते हैं जब परमेश्वर की प्रजा के बीच अधिक स्त्रियाँ अगुवाई की बागडोर सँभालेंगी और मंच से प्रचार करेंगी, वे भोलेपन से यह कल्पना न करें कि वे उन सामान्य परीक्षाओं पर आसानी से जय पा लेंगी जिनमें पुरुष अगुवे बार-बार गिरते रहते हैं। मैं यह इसलिए कहता हूँ क्योंकि अपने प्रभाव के चरम पर मरियम होड़ की भावना के बहकावे में आ जाती है। जब वह मूसा की अनुचित आलोचना करती है, तो उसे सात दिनों तक छावनी के बाहर कोढ़ भुगतना पड़ता है, और जिन लोगों की अगुवाई करने के लिए वह बुलाई गई थी, उन्हें भी उसके चंगे होने की प्रतीक्षा करते हुए कष्ट उठाना पड़ता है।[430] इस नैतिक चूक के बावजूद परमेश्वर उस पर दया करते हैं, और बाद में जब उसकी मृत्यु होती है, तो परमेश्वर की प्रजा उसे प्रेम से याद करती है।[431]

426. मीका 6:4। जिस वाक्यांश का अनुवाद कभी-कभी "तुम्हारे आगे-आगे" किया जाता है, उसका शब्दशः अर्थ है "तुम्हारे सामने", अर्थात् "तुम्हारी अगुवाई करने के लिए"।
427. निर्गमन 15:20
428. निर्गमन 15:20-21
429. भजन संहिता 68:11
430. गिनती 12:1-15। स्पष्ट कर दूँ: पाठ में कहीं नहीं कहा गया कि मरियम ने पुरुष के अधिकार को लाँघकर पाप किया। वह और हारून इसलिए भटक गए क्योंकि उन्होंने मूसा की स्थिति पर प्रश्न उठाया।
431. मीका के द्वारा उसकी अगुवाई पर किए गए चिंतन के अतिरिक्त, तोरा के लेखक उसकी मृत्यु को भी दर्ज करते हैं और उसे वंशावलियों में भी सम्मिलित करते हैं। (गिनती 20:1; 26:59, 1 इतिहास 6:3)

हुल्दा: भविष्यद्वक्तिन

यहूदी मिश्ना इब्रानी बाइबल के भविष्यसूचक इतिहास का सार इस प्रकार देता है: "इस्राएल में अड़तालीस भविष्यद्वक्ताओं और सात भविष्यद्वक्तिनों ने भविष्यद्वाणी की।"[432] मरियम और दबोरा (जैसा कि हम जल्द ही देखेंगे), दोनों की भविष्यसूचक सेवकाई सार्वजनिक अगुवाई की भूमिकाओं के साथ जुड़ी हुई थी। और यशायाह एक भविष्यद्वक्तिन से विवाह करता है।[433] आइए, अब भविष्यद्वक्तिन हुल्दा से मिलें।

इस्राएल के राजाओं के युग में युवा राजा योशिय्याह अपनी प्रजा की आत्मिक जीवंतता को प्राथमिकता देकर, और अपने राज्य के आत्मिक स्वास्थ्य को हानि पहुँचाने वाली बातों को उखाड़कर, यह दिखाता है कि वह आत्मिक रूप से अपने से पहले के कई राजाओं से श्रेष्ठ है। राजा के लिए यह रीति थी कि वह अपने किसी भविष्यद्वक्ता को बुलाकर "यहोवा से पूछे"। इसलिए जब वह महायाजक और अन्य अगुवों से कहता है कि वे उसकी ओर से परमेश्वर की इच्छा जानें, तो वे उस भविष्यद्वक्ता के पास जाते हैं जिसे वे अपनी सबसे अधिक सहायता करने में समर्थ मानते हैं।

दिलचस्प बात यह है कि वे यिर्मयाह और सपन्याह के पास नहीं जाते, जो दोनों राजा योशिय्याह के समकालीन थे, बल्कि किसी और को नहीं, स्वयं हुल्दा को बुलाते हैं। हम नहीं जानते कि उसकी सेवकाई के किस पिछले अनुभव के कारण उसकी इतनी साख थी, परन्तु हम अनुमान लगा सकते हैं कि वह स्वर्ग से अपने सीधे संपर्क के लिए जानी जाती थी। वह मन्दिर में "वस्त्रों के रखवाले" के रूप में काम करने वाले एक छोटे पद के व्यक्ति की पत्नी है, इसलिए उसकी भविष्यसूचक प्रतिष्ठा किसी ऊँचे पद वाले पुरुष से विवाह के कारण नहीं हो सकती।

वह योशिय्याह की ओर से परमेश्वर की खोज करती है, और फिर बिना लाग-लपेट के परमेश्वर की ओर से बोलती है: वह राष्ट्र की मूर्तिपूजा की निंदा करती है, निकट आने वाले विनाश की घोषणा करती है, और योशिय्याह के मन की प्रशंसा करती है, जिसके बारे में वह कहती है कि उसे उस विपत्ति को देखने से बचाया जाएगा। उसके शब्द इतने तीखे हैं कि योशिय्याह "छोटे से लेकर बड़े तक" सब लोगों को इकट्ठा करता है, उन्हें परमेश्वर का वचन पढ़कर सुनाता है, झूठे देवताओं की वेदियों को नष्ट करता है, और परमेश्वर की प्रजा को उस जागृति में ले जाता है जो शायद इस्राएल के इतिहास की सबसे बड़ी जागृति है।[434] यहाँ हम चलते-चलते यह भी देख लें कि कहानी में ऐसा कुछ भी नहीं है जिससे लगे कि हुल्दा पुरुष भविष्यद्वक्ताओं से अलग ढंग से काम करती है या उसके साथ अलग व्यवहार किया जाता है।

432. 6 Meg. 14a Bar. Kevin Giles, What the Bible Actually Teaches on Women (पृ. 75) में उद्धृत।
433. यशायाह 8:3। कुछ झूठी भविष्यद्वक्तिनें भी थीं। स्पष्ट रहे: उनका पाप यह नहीं था कि उन्होंने पुरुष के अधिकार की सीमाएँ लाँघीं, बल्कि यह कि उन्होंने उस बात का खंडन किया जो परमेश्वर वास्तव में कह रहे थे। (यहेजकेल 13:17-24)
434. 2 राजाओं 22:11-23:25

परमेश्वर के उद्देश्यों को पूरा करने वाली रानियाँ

मैंने कई पूरकतावादी विद्वानों को इस तथ्य पर बहुत ज़ोर देते हुए पढ़ा है कि इस्राएल के अधिकांश राजनीतिक अगुवे (अर्थात् राजा) पुरुष थे, और वे तर्क देते हैं कि यह एक सामान्य सिद्धांत के रूप में पुरुष के अधिकार पर परमेश्वर की स्वीकृति है। परन्तु इससे यह बात छूट जाती है कि पितृसत्तात्मक संसार में राजा का पुरुष होना पहले से ही मान लिया जाता था। केवल बहुत असाधारण परिस्थितियों में ही कोई रानी अकेली शासिका के रूप में उभरती थी, आमतौर पर तब, जब उसके पति की मृत्यु हो चुकी होती और उसका कोई पुत्र न होता। राजत्व के विषय में इस्राएल ने अपने पड़ोसी प्राचीन राष्ट्रों की रीतियों का ही पालन किया। आख़िरकार, यदि हमें याद हो, अपना पहला राजा पाने से पहले – एक ऐसा विचार जिसके बारे में परमेश्वर जानते थे कि वह उनके उत्पीड़न का कारण बनेगा – उनकी ठीक-ठीक प्रार्थना यही गिड़गिड़ाहट थी: "हम अपने ऊपर राजा चाहते हैं ... ताकि हम भी अन्य सब जातियों के समान हो जाएँ।"[435]

इस प्रकार अधिकतर पुरुष राजाओं ने ही शासन किया। परन्तु कुछ स्त्रियाँ भी थीं। इस्राएल के इतिहास में कुछ शक्तिशाली रानियों की प्रशंसा की गई है। रानी एस्तेर यहूदी रानियों में सबसे प्रसिद्ध है, यद्यपि उसने यह पद इस्राएल राष्ट्र में नहीं, बल्कि फ़ारसी साम्राज्य में सँभाला। यद्यपि वह राजा से निजी रूप से बातचीत करती थी, फिर भी इसमें कोई संदेह नहीं कि वह एक सार्वजनिक पद पर थी – और यदि आप कहानी पढ़ें, तो यह पद उसे परमेश्वर ही देते हैं। इस भविष्यसूचक पहचान से प्रेरित होकर कि परमेश्वर ने उसे "ऐसे ही समय के लिए"[436] इस पद पर रखा है, वह कुशलता से अपनी ही प्रजा के विरुद्ध बनाए गए जनसंहार के एक क़ानून को रोक देती है। वह यह साहस के साथ हामान की दुष्ट मंशा को उजागर करके, और फिर उसके घराने का तथा अपनी प्रजा के 75,000 शत्रुओं का विनाश करवाकर करती है।

इस राजनीतिक विजय का उत्सव मनाने के लिए वह एक क़ानून जारी करती है, जिसे वह और उसका चाचा मोर्दकै "पूरे अधिकार के साथ" लिखते हैं, और जो क्षयर्ष के राज्य के 127 प्रांतों में रहने वाले सब यहूदियों के पास भेजा जाता है। यह क़ानून उनके भाग्य के पलट जाने की स्मृति में प्रति वर्ष दो दिन का उत्सव मनाने का आदेश देता है, और यह "उनके वंशजों" के लिए भी है।[437]

इन सब में एस्तेर फ़ारस राष्ट्र में, और साथ ही परमेश्वर की प्रजा, इस्राएलियों, पर भी अगुवाई करती है। ऐसा करके वह उन स्त्रियों के लिए एक प्रेरक उदाहरण बनती है जो समाज में अगुवाई करने के लिए बुलाई गई हैं, और उनके लिए भी जो परमेश्वर की प्रजा की व्यावहारिक और आत्मिक अगुवाई कर सकती हैं।

वह अकेली रानी नहीं है जिसका इस्राएल के इतिहास से संपर्क हुआ। अफ़्रीकी शेबा की रानी[438] की यीशु प्रशंसा करते हैं, क्योंकि उसने सुलैमान पर परमेश्वर द्वारा दी गई महानता को पहचाना और उसकी सराहना

435. 1 शमूएल 8:19-20
436. एस्तेर 4:14
437. एस्तेर 9:29-32
438. 1 राजाओं 10:1-13; 2 इतिहास 9:1-12

की, और इस प्रकार, भविष्यसूचक पूर्वाभास में, स्वयं यीशु के राजत्व को भी।[439] इसी प्रकार कसदियों की बेबीलोनी रानी दानिय्येल पर भविष्यद्वाणी के आत्मिक वरदान को याद करती है, और कुछ समय गुमनामी में रहने के बाद दानिय्येल को फिर से सार्वजनिक क्षेत्र में लाने के लिए परमेश्वर उसका उपयोग करते हैं।[440] इस्राएल की अपनी रानियाँ, ईज़ेबेल और अतल्याह, दुष्ट थीं, जैसे इस्राएल के अधिकांश राजा भी दुष्ट थे। परन्तु ध्यान दीजिए कि रानियों के सब वृत्तांतों में अगुवाई के पद पर स्त्रियों के होने के विषय में एक भी नकारात्मक शब्द नहीं कहा गया – केवल ऐसे पद के दुरुपयोग के विषय में।

विचित्र बात यह है कि पूरकतावादी विद्वान कभी-कभी यह आपत्ति करते हैं कि ये रानियाँ अकेली शासिकाओं के रूप में नहीं, बल्कि केवल अपने राजा-पति के साथ मिलकर शासन करती थीं। परन्तु प्राचीन निकट पूर्व में अकेले शासन करने वाली रानियाँ असाधारण रूप से दुर्लभ थीं। 500 वर्षों की अवधि में (शाऊल के राज्य से सिदकिय्याह के राज्य तक) किसी भी साम्राज्य में एक भी ऐसी रानी का होना बहुत असंभव था। फिर भी, अपने पति की मृत्यु के बाद अतल्याह बिना पति के राज्य करने वाली शासिका है, और यीशु के आने से पहले की सदी में, हस्मोनी राजवंश के समय, सलोमी अलेक्सांद्रा (Salome Alexandra) अपने पति की मृत्यु के बाद नौ वर्षों तक इस्राएल की अकेली शासिका के रूप में राज्य करती है।

परमेश्वर द्वारा ठहराई गई इन स्त्रियों के साथ-साथ – जो अत्याचारी शासन का विरोध करने वाली, अगुवा, घोषणा करने वाली, भविष्यद्वक्तिनें और राजनीतिक अगुवा थीं – एक स्त्री अगुवा विशेष रूप से परमेश्वर की प्रजा के बीच भविष्य की सब स्त्री अगुवों के लिए एक प्रज्वलित मार्ग बनाती है।

दबोरा: न्यायी

"उस समय लप्पीदोत की पत्नी दबोरा, जो भविष्यद्वक्तिन थी, इस्राएल की अगुवाई कर रही थी। वह एप्रैम के पहाड़ी देश में रामा और बेतेल के बीच 'दबोरा के खजूर' के नीचे न्याय-सभा लगाती थी, और इस्राएली अपने झगड़ों का निर्णय कराने के लिए उसके पास जाते थे।"[441] यद्यपि मरियम ने संभवतः परमेश्वर की प्रजा की अगुवाई-टीम के एक भाग के रूप में काम किया (जिसमें मूसा मुख्य अगुवा था), दबोरा ने कुछ समय तक परमेश्वर की प्रजा की सर्वोच्च अगुवा के रूप में सेवा की: उसके न्यायियों में से एक के रूप में।

न्यायी कौन थे? यहोशू की मृत्यु और शाऊल के इस्राएल के पहले राजा के रूप में राज्याभिषेक के बीच की कई सदियों में इस्राएली यहोवा की आराधना करने वाले गोत्रों के एक ढीले-ढाले संघ के रूप में रहते थे। उस काल में एक चक्र बार-बार दोहराया जाता रहा: परमेश्वर की प्रजा पहले गंभीर नैतिक समझौते और झूठे देवताओं की उपासना में गिर जाती; फिर पड़ोसी गोत्र सैन्य बल से उन्हें जीतकर उन पर अत्याचार करते; फिर परमेश्वर की प्रजा पछताकर परमेश्वर की दोहाई देती; और परमेश्वर एक न्यायी खड़ा करते जो "इस्राएल को उनके शत्रुओं के हाथ से छुड़ाए"।[442] यद्यपि ये न्यायी स्थायी राजा नहीं थे, फिर भी उनके विषय में कहा गया

439. मरकुस 12:32
440. दानिय्येल 5:10-12
441. न्यायियों 4:4-5
442. न्यायियों 2:16, 18; 4:10, 14, 24; 5:1-31

है कि वे अपने क्षेत्र में परमेश्वर की प्रजा पर "शासन करते" या "राज्य चलाते" थे।[443]

दबोरा को न्यायियों की पुस्तक के अन्य पाँच प्रमुख न्यायियों से जो बात अलग करती है, वह यह है कि वह अकेली है जो भविष्यद्वक्तिन भी है, और जो परमेश्वर की प्रजा के बीच के अनेक झगड़ों में न्यायिक अगुवाई भी देती है। दूसरे केवल सैन्य विजय में ही विशेषज्ञ प्रतीत होते हैं, जबकि दबोरा लोगों की अगुवाई करती है। इसके अतिरिक्त, ऐसा लगता है कि वह "परमेश्वर के अचानक किए गए चुनाव" से ऊपर नहीं उठती (गिदोन के बुलाए जाने के बारे में सोचिए)। बल्कि, उसकी आरंभिक बुलाहट का कोई उल्लेख न होने के कारण, हमें यह अनुमान लगाना पड़ता है कि अगुवाई, भविष्यद्वाणी और बुद्धि के उसके असाधारण, परमेश्वर-प्रदत्त वरदानों ने उसके लिए शिखर तक के सब द्वार खोल दिए। वास्तव में, उसकी सबसे अधिक समानता शमूएल से है, जो उसी की तरह भविष्यद्वक्ता, न्यायी और सैन्य सलाहकार है।

वह देश की सर्वोच्च न्यायिक अधिकारी थी। पाठ में ऐसा कुछ भी नहीं है जिससे लगे कि दबोरा केवल निजी ढंग से काम करती थी। सार्वजनिक झगड़ों की मध्यस्थ के रूप में उसने, अपने से पहले मूसा की तरह, सार्वजनिक क्षेत्र में एक सार्वजनिक भूमिका निभाई। न्यायी के रूप में मूसा के कार्य को आगे बढ़ाते हुए[444] वह इस्राएल के सर्वोच्च न्यायालय की एकमात्र सदस्य के रूप में न्याय करती है। और मूसा की तरह[445] वह राष्ट्रीय न्यायी की भूमिका सँभालती है, क्योंकि लोग पूरे देश से अपने झगड़े निपटाने के लिए उसके पास आते हैं।

न्यायियों की पुस्तक के अन्य प्रमुख न्यायियों की तरह दबोरा भी परमेश्वर की प्रजा को सैन्य विजय तक ले जाती है। शमूएल की तरह, जिसने स्वयं गए बिना शाऊल को युद्ध में कूच करने के लिए नियुक्त किया,[446] दबोरा की भी योजना यह थी कि वह स्वयं युद्ध में कूच न करे। इसके बजाय वह बाराक को आज्ञा देती है कि वह अत्याचारियों को हराने के लिए इस्राएल की सेना इकट्ठी करे।[447] फिर वह सैन्य अभियान की योजनाओं का रणनीतिक रूप से निर्देशन करती है: सेना का आकार, उन्हें कौन-सा ऊँचा मोर्चा सँभालना चाहिए, और आक्रमण का ठीक समय भी।

जिस शत्रु को वह निशाना बनाती है, वह याबीन है, जो पूरे इस्राएल पर नहीं, केवल उत्तर के गोत्रों पर अत्याचार करता है। यद्यपि वह दक्षिण में रहती है, फिर भी वह याबीन की शक्ति के आधार के बारे में इतना जानती है कि उसे हराने के लिए वह बाराक को, जो स्वयं उत्तर का निवासी है, नियुक्त करती है। बाराक उसकी रणनीतिक प्रतिभा का इतना प्रशंसक है कि वह उससे विनती करता है कि वह युद्ध की अग्रिम पंक्ति में उसके साथ खड़ी रहे। वह उससे स्वयं हथियार उठाने को नहीं कहता, केवल यह कि वह युद्ध को खुले स्थान से देखते हुए, जैसे-जैसे वह आगे बढ़े, उसे सलाह देती रहे। युद्ध के लिए तैयार खड़ी सेना में बाराक सेनापति है, जबकि दबोरा सर्वोच्च सेनाध्यक्ष के रूप में काम करती है। वह भविष्यसूचक रूप से उसे विजय

443. Daniel Block न्यायियों और रूत पर अपनी टीका में लिखता है: "रूत 1:1 उन दिनों की बात करता है जब न्यायी 'शासन करते थे' (ESV) या 'राज्य चलाते थे' (NIV)। 'इब्रानी शब्द shaphat, "न्याय करना", का अर्थ है "शासन करना, प्रशासन करना, अगुवाई करना"।'" (पृ. 23)
444. व्यवस्थाविवरण 17:8-13
445. निर्गमन 18:13
446. 1 शमूएल 10:1
447. न्यायियों 4:6

का आश्वासन देती है और आदेश देती है, "जा", और वह जाता है।[448] अद्भुत बात यह है कि परमेश्वर उन्हें ऐसी विजय देते हैं जिसके बाद चालीस वर्ष तक शान्ति रहती है।[449]

युद्ध जीतने के तुरंत बाद, बाराक को अपने साथ गाने वाला बनाकर, वह परमेश्वर की सारी प्रजा को अपना लिखा हुआ एक गीत सिखाती है। मरियम की तरह, जिसने एक-दो सदी पहले अपनी घिरी हुई प्रजा को छुड़ाने के लिए परमेश्वर की स्तुति की थी,[450] ये दोनों गाते हैं कि कैसे परमेश्वर ने उन्हें विजय दी है। यह गीत परमेश्वर की स्तुति करता है, परन्तु बाराक के साथ-साथ दबोरा को भी विजय में परमेश्वर के एक साधन के रूप में सम्मान देता है। वे गाते हैं: "जब इस्राएल में [अगुवे] अगुवाई करते हैं, जब लोग अपनी इच्छा से अपने आप को अर्पित करते हैं, तब [सब लोग] यहोवा की स्तुति करें।"[451] जिन अगुवों की वे बात करते हैं, वे स्पष्ट रूप से वे स्वयं ही हैं – गीत आगे कहता है: "इस्राएल के गाँवों के लोग लड़ने को तैयार न थे; वे पीछे हटे रहे, जब तक मैं, दबोरा, न उठी, जब तक मैं इस्राएल में माता होकर न उठी।"[452] जब हम पूरे राष्ट्र को साथ गाते हुए सुनते हैं, तो आज भी हमें उन अगुवों का, जिनमें स्त्रियाँ भी हैं, सम्मान करने की प्रेरणा मिलती है जिन्होंने अच्छी अगुवाई की है।

लप्पीदोत से विवाहित होने के कारण वह कोई अविवाहित स्त्री नहीं है जो केवल परमेश्वर और राष्ट्र की सेवा पर ध्यान दे सके। फिर भी हम पवित्रशास्त्र में क्रम पर ध्यान देते हैं: वह पहले भविष्यद्वक्तिन है और फिर पत्नी। उस पितृसत्तात्मक संस्कृति में भी, जहाँ अपने पति के अधीनस्थ होना शायद सामान्य बात रही हो, न तो उसे और न ही कहानी में किसी और को इस बात पर ज़रा भी आपत्ति है कि वह पुरुषों पर अधिकार का प्रयोग करती है।

अपने गीत में उसे "इस्राएल की माता" कहा गया है। परन्तु उसका मातृ स्वभाव उसकी सार्वजनिक अगुवाई को कम नहीं करता; बल्कि उसे एक विशेष रंग देता है। युद्ध के समय के कई अगुवों में महिमा की जो सामान्य भूख होती है, उसके विपरीत दबोरा सैन्य महिमा किसी और को सौंपना चाहती है। फिर भी उसकी मातृत्व-भावना की इस बात को भी बढ़ा-चढ़ाकर नहीं कहना चाहिए – अपनी प्रजा के लिए सैन्य विजय की खोज में, किसी स्त्री से जिस करुणा की आशा की जा सकती है, वह उसके गीत में दिखाई नहीं देती, क्योंकि वह मारे गए शत्रु सैनिकों की उन दुखी माताओं का उपहास करती है जिनके बेटे घर नहीं लौटते।[453]

एक अत्यंत सक्षम, हर काम में निपुण स्त्री होने पर भी वह महत्वपूर्ण ज़िम्मेदारियाँ दूसरों को सौंप देती है। वह बाराक को अकेले युद्ध में कूच करने का काम सौंपती है, शायद इसलिए कि वह सोचती है कि पुरुषों के अधिक शारीरिक बल के कारण लड़ना पुरुष का काम है। परमेश्वर से विजय का आश्वासन पाकर वह चाहती है कि बाराक को उसके बिना यह करने का सम्मान मिले। परन्तु बाराक चाहता है कि वह युद्ध में उसके साथ

448. न्यायियों 4:14
449. न्यायियों 5:31
450. निर्गमन 15
451. न्यायियों 5:1-2। NIV "leaders" (अगुवे) के बजाय "princes" (प्रधान) शब्द का प्रयोग करता है, जिससे स्वयं दबोरा बाहर हो जाती है, जबकि अपने ही गीत में 5:8 में उसे छुड़ाने वाली के रूप में प्रस्तुत किया गया है। मेरे विचार में ESV और NLT "leaders" (अगुवे) शब्द से इस शब्द का अर्थ बेहतर पकड़ते हैं।
452. न्यायियों 5:8
453. न्यायियों 5:28-30। वास्तव में, दबोरा के इस मार्मिक गीत में, एक माता, जिसका बेटा अब नहीं रहा, फिर यह जान लेती है कि उसकी बेटियाँ भी जल्द ही बंदी बनाई जा सकती हैं।

रहे, और तब वह उसे सचेत करती है कि अब उसे युद्ध की महिमा का – जो सामान्यतः पुरुषों का क्षेत्र है – एक भाग "एक स्त्री" के साथ बाँटना पड़ेगा: यह स्वयं उसकी ओर, और एक दूसरी स्त्री, याएल, की ओर भी एक भविष्यसूचक संकेत है, जो याबीन के सेनापति को मार डालेगी।[454]

कैसी अद्भुत कहानी है! पुरुषों को ऊँचा उठाने वाली संस्कृति में, यहाँ एक स्त्री है जो परमेश्वर की प्रवक्ता है, और सेनापति तथा साधारण लोग, दोनों आनंद से उसकी सुनते हैं।

पूरकतावादी विद्वान, जो मानो दबोरा के पुरुषों पर परमेश्वर-प्रदत्त वैध अधिकार को कमज़ोर करने पर तुले हुए हैं, आमतौर पर तीन तर्कों से ऐसा करते हैं: वे दावा करते हैं कि उसकी अगुवाई सार्वजनिक नहीं, निजी थी;[455] कि परमेश्वर दबोरा को इसलिए चुनते हैं क्योंकि देश के पुरुष निष्क्रिय हैं, और इस प्रकार वे उन्हें लज्जित करना चाहते हैं;[456] और कि दबोरा बाराक को सच्चा अगुवा मानती है।[457] इनमें से कोई भी तर्क वास्तव में टिकता नहीं। यह खंड वास्तव में यह दिखाता है कि एक स्त्री, परमेश्वर के चुनाव से, धार्मिक और नागरिक दोनों क्षेत्रों में पुरुषों सहित परमेश्वर की प्रजा की अगुवाई करती है। ऐसा करके वह आज की उन भक्त, वरदान-प्राप्त स्त्रियों के लिए मार्ग तैयार करती है जो इनमें से किसी एक या दोनों क्षेत्रों में अगुवाई करने के लिए बुलाई गई हों।

454. न्यायियों 4:21। बाराक और दबोरा की तरह, न्यायियों 5:24-26 में दबोरा के गीत में उसका भी सम्मान किया गया है।
455. वे बताते हैं कि वह उन छोटे-छोटे समूहों के लिए न्यायिक मध्यस्थ के रूप में काम करती है जो उसके घर आते हैं, और कि वह बाराक को व्यक्तिगत रूप से आज्ञा देती है। परन्तु इसमें यह पहचाना नहीं जाता कि उसकी भूमिका सार्वजनिक है, चाहे वह व्यक्तियों के साथ ही व्यवहार करती हो, और कि वह ऐसी आज्ञा देती है जिसके कारण 10,000 पुरुष हथियार उठाते हैं। वह एक कहीं बड़े समुदाय की अगुवाई एक उत्सव-गीत में भी करती है, जिसमें वे सब उसकी परमेश्वर द्वारा ठहराई गई अगुवाई का गीत गाते हैं। ये विद्वान यह तर्क इसलिए देते हैं क्योंकि वे दबोरा की पुरुषों पर अगुवाई का मेल 1 तीमुथियुस 2:12 की अपनी ग़लत व्याख्या से बैठाने का प्रयास कर रहे हैं, जिसके अनुसार, उनके कहने के मुताबिक, कोई स्त्री सार्वजनिक रूप से पुरुषों की अगुवाई नहीं कर सकती। ये भेद खींच-तान वाले और मनमाने लगते हैं।
456. परन्तु कहानी में ऐसा कुछ भी नहीं है जो दिखाए कि पुरुषों ने भविष्यद्वक्ता, न्यायिक अधिकारी या सैन्य रणनीतिकार की भूमिकाएँ अस्वीकार कीं। बाराक का प्रतिरोध इनमें से किसी भी भूमिका के प्रति नहीं है – उसकी एकमात्र घबराहट दबोरा के बिना युद्ध में कूच की अगुवाई करने को लेकर है, जिसके लिए उसे सांस्कृतिक रूप से यह दंड मिलता है कि उसे युद्ध की महिमा दबोरा और याएल के साथ बाँटनी पड़ती है। यदि हम परमेश्वर के अगुवों के चुनाव के विषय में कुछ जानते हैं, तो यह कि वे अनपेक्षित व्यक्ति को चुनना पसंद करते हैं। उदाहरण के लिए, यद्यपि पहला न्यायी, ओत्नीएल, आदर्श न्यायी है, उसके बाद परमेश्वर जिन तीन न्यायियों को चुनते हैं, उनमें से हर एक आश्चर्य के प्रति परमेश्वर की रुचि को दिखाता है। एहूद "बैंहत्था" है – जिसका अर्थ है कि वह उस सामान्य योद्धा को चौंका सकता है जिसे आमतौर पर दाहिने हाथ से लड़ने वाले योद्धा से लड़ने का प्रशिक्षण मिला हो। गिदोन डरपोक है, और एक छोटे कुल का है। और निःसंदेह, दबोरा एक स्त्री है – शायद ही कोई उससे पहले-पहल सैन्य विजय की आशा करता। उसके बाद की परमेश्वर की सारी प्रजा के लिए: हमें परमेश्वर द्वारा अनपेक्षित रूप से चुने गए अगुवों को ग्रहण करने के लिए तत्पर रहना चाहिए। हमें स्त्री अगुवों को उससे अधिक अस्वीकार नहीं करना चाहिए जितना हम बैंहत्थे अगुवों को, या वंचित पृष्ठभूमि से आने वाले डरपोक अगुवों को अस्वीकार करेंगे।
457. Grudem "Evangelical Feminism" (अध्याय 4) में इसके पक्ष में यह तर्क देता है कि दबोरा ने बाराक से सेना इकट्ठी करने को कहा, और इस प्रकार "पुरुष अगुवाई के उचित होने" की पुष्टि की। वह आगे कहता है कि बाराक के इस आग्रह पर कि वह उसके साथ युद्ध में चले, दबोरा की डाँट भी यही सिद्ध करती है। परन्तु यह सब केवल अनुमान है। यह व्याख्या कहीं अधिक उपयुक्त है कि वह ठीक ही समझती है कि शारीरिक युद्ध में सेना की अगुवाई करना पुरुषों के लिए अधिक उपयुक्त है। वह एक स्त्री है, और इसलिए ऐसे सैन्य अभियान के लिए उपयुक्त नहीं जिसमें बल ही मुख्य बात थी। उसकी शारीरिक रूप से युद्ध की अगुवाई करने की कोई आकांक्षा नहीं है, और वह मानती है कि शारीरिक युद्ध पुरुषों की महिमा है। निःसंदेह बाराक अगुवाई करता है, परन्तु उसकी अगुवाई भी उसी के द्वारा उसे सौंपी गई है। उसकी पसंदीदा रणनीति (शमूएल की तरह) यह थी कि वह सर्वोच्च सेनाध्यक्ष बनी रहे, जो सेनापति को युद्ध लड़ने का निर्देश दे। परन्तु निगरानी के द्वारा अगुवा तब भी वही है। उसने अपनी अगुवाई किसी को सौंप नहीं दी – उसने एक पुरुष को अपनी परमेश्वर-प्रदत्त अगुवाई को कार्यान्वित करने का निर्देश दिया है। यदि यह दिखाया भी जा सके कि वह बाराक को सच्चा अगुवा मानती है (जो दिखाया नहीं जा सकता), तब भी देश के सर्वोच्च न्यायिक अधिकार वाली के रूप में उसकी भूमिका बाराक से हमारी भेंट होने से पहले ही स्पष्ट है।

कुछ विद्वान केवल उसकी नागरिक भूमिका को स्वीकार करते हैं। Grudem सर्वोच्च सेनाध्यक्ष के रूप में उसकी भूमिका को स्वीकार नहीं करता, और उसके न्यायिक कार्य की तुलना आज के किसी परामर्शदाता या दीवानी न्यायाधीश के कार्य से करता है। अन्य विद्वान केवल उसकी आत्मिक अगुवाई पर टिप्पणी करते हैं। प्यूरिटन टीकाकार Matthew Henry उसकी सामाजिक भूमिका को नकारते हुए कहता है: "उसने किसी राजकुमारी की तरह उसे सौंपे गए नागरिक अधिकार से न्याय नहीं किया, बल्कि एक भविष्यद्वक्तिन के रूप में, और उनके लिए परमेश्वर के मुख के रूप में, दुरुपयोगों को सुधारते हुए और शिकायतों का निवारण करते हुए – विशेषकर उनका जो परमेश्वर की आराधना से संबंधित थीं।"[458] Grudem और Henry, दोनों यह देखने से चूक जाते हैं कि वह इस्राएल की प्रजा पर धार्मिक और सामाजिक (जिसमें राजनीतिक, न्यायिक और सैन्य क्षेत्र भी सम्मिलित हैं) अगुवाई करती है।

यह कहानी एक शक्तिशाली मिसाल है। इतना तो स्पष्ट है कि न तो परमेश्वर को और न ही प्राचीन इब्रियों को स्त्री की अगुवाई स्वभाव से घृणित लगती थी। यहाँ हमारे सामने एक स्त्री है जो पूरे समुदाय की, उसके सबसे बलवान पुरुषों सहित, सक्षमता से अगुवाई करती है।

दबोरा की सेवकाई को आज की सेवकाई की परिस्थितियों के लिए विशेष रूप से प्रासंगिक बनाने वाली बात यह है कि न्यायियों/छुड़ाने वालों का परमेश्वर द्वारा चुनाव पुराने नियम के उन सबसे अच्छे उदाहरणों में से एक है जो दिखाते हैं कि परमेश्वर आज किस प्रकार के अगुवों का उपयोग कर सकते हैं। इसका कारण यह है कि हर बार परमेश्वर संस्कृति से बँधी संस्थाओं तक सीमित नहीं हैं – जैसे कुलपिताओं के मामले में पुरुष ज्येष्ठाधिकार, या याजकों की संस्था के लिए मूसा की विस्तृत व्यवस्था, या प्राचीन निकट पूर्व की सामान्य भू-राजनीतिक संस्था, अर्थात् पुरुष राजत्व। इसके विपरीत, हर न्यायी की नियुक्ति आत्मा द्वारा दी गई बुलाहट और वरदानों पर आधारित है, न कि प्राचीन समाज के सबसे लोकप्रिय या संभावित चुनाव पर। यह अद्भुत है कि न्यायियों की पुस्तक के छह मुख्य छुड़ाने वालों में से दबोरा शायद उन सब में सबसे अधिक उपलब्धियों वाली है – वह न केवल देश की वरिष्ठ राजनीतिक-सैन्य अगुवा है, बल्कि भविष्यद्वक्तिन और सर्वोच्च न्यायिक अगुवा भी है।

जो पूरकतावादी विद्वान यह मानते हैं, वे फिर भी दावा करते हैं कि वह एक ऐसा अपवाद है जो इस नियम को सिद्ध करता है कि परमेश्वर की प्रजा की अगुवाई पुरुषों को करनी चाहिए। फिर भी पाठ में ऐसा कुछ भी नहीं है जो हमें उस दिशा में ले जाए। नहीं, वह ऐसा अपवाद नहीं है जो नियम को सिद्ध करता हो। बल्कि उसकी असाधारण अगुवाई सिद्ध करती है कि ऐसा कोई नियम है ही नहीं – कम से कम परमेश्वर के मन में तो निश्चय ही नहीं। वह पुरुष शासकीय अधिकार के उस तथाकथित "नमूने" को झुठलाती है, जिसके बारे में कई पूरकतावादी विद्वान दावा करते हैं कि वह परमेश्वर के मन में है। पितृसत्तात्मक संसार में इतनी महत्वपूर्ण अगुवाई के लिए परमेश्वर का एक स्त्री को चुनना अत्यंत उल्लेखनीय है। यह एक "novum" (किसी कहानी या पाठ में कोई नई और अनपेक्षित बात) के रूप में काम करता है, जो न्यायियों की पुस्तक के मूल पाठकों को (और हमें भी) परमेश्वर, लिंग और अगुवाई के बारे में अपनी सारी धारणाओं पर प्रश्न उठाने को विवश करता है। न्यायियों की पुस्तक के एक प्राचीन पाठक के लिए किसी पुरुष के अगुवाई करने के बारे में पढ़ना सांस्कृतिक रूप से अपेक्षित था, जबकि चौंकाने वाला विवरण ही अपने आप में "संदेश" था। यदि हम इस

458. स्रोत: www.bit.ly/3bIr6am

वृत्तांत में दबोरा के बारे में वह न देख पाएँ जो उन्होंने देखा, और फिर भूल से आत्मिक अगुवाई को पुरुष लिंग के साथ एक ही डिब्बे में बंद कर दें, तो अंत में हम केवल परमेश्वर को ही एक डिब्बे में बंद करने का प्रयास कर रहे होंगे।

हमारे स्तर पर उतरने वाले परमेश्वर

हुल्दा, मरियम, एस्तेर और दबोरा को एक ओर रख दें, तो भी प्रश्न बना रहता है: पुराने नियम में परमेश्वर मुख्य रूप से पुरुषों को ही अगुवों के रूप में क्यों चुनते हैं?

पूरकतावादी विद्वान अक्सर पुराने नियम के पुरुष प्राचीनों, पुरुष कुल-प्रधानों, पुरुष कुलपिताओं, पुरुष राजाओं इत्यादि की सूची इस तरह गिनाते हैं मानो परमेश्वर सदा के लिए यह मानदंड स्थापित कर रहे हों कि केवल पुरुष ही अगुवाई करें। परन्तु इस निष्कर्ष से परमेश्वर की छुटकारे की प्रक्रियाओं के विषय में एक बहुत महत्वपूर्ण बात छूट जाती है: इस्राएल ने इनमें से कोई भी भूमिका विशेष रूप से स्वयं नहीं गढ़ी थी – प्राचीन निकट पूर्व के सब राष्ट्रों में पुरुष प्राचीन, पुरुष कुल-प्रधान, पुरुष कुलपिता और पुरुष राजा होते थे। हमें यह नहीं मान लेना चाहिए कि इस्राएल को भी वैसा ही करने देकर परमेश्वर इसे किसी प्रकार के सार्वभौमिक आदर्श के रूप में स्वीकृति दे रहे थे। बाइबल की लंबाई, और वह जितनी विशाल समयावधि को समेटती है, यह दिखाती है कि पतित संसार का परमेश्वर द्वारा छुटकारा धीरे-धीरे होता है। जब परमेश्वर छुड़ाए गए समुदायों पर और उनके द्वारा एक अविश्वासी संसार पर अपने आप को प्रकट करते हैं, तो हम देखते हैं कि वे अक्सर अनादर्श, और कभी-कभी तो बिलकुल भयानक सांस्कृतिक वास्तविकताओं के स्तर पर भी उतर आते हैं, और साथ ही उनके भीतर ऐसे बीज बोते रहते हैं जो अंत में उनके छुटकारे की ओर ले जाएँगे।

प्राचीन निकट पूर्व उतनी ही भारी पितृसत्तात्मक संस्कृति थी जितना आज का मध्य पूर्व है। यही कारण है कि पुराने नियम में कुलों और गोत्रों के अगुवे सदा पुरुष थे, और किसी स्त्री के किसी गोत्र या कुल की प्रधान होने का कोई उल्लेख नहीं है। पुराने नियम में परमेश्वर की प्रजा अब्राहम, इसहाक और याकूब का परिवार है। जब मूसा परिवारों और गोत्रों के प्रधानों को अधिकार बाँटना चाहता है, तो वह 70 वरिष्ठ पुरुषों को चुनता है, जिन्हें "प्राचीन" कहा जाता है। "प्राचीनों" की बात चली है, तो हमें यह भी याद आता है कि पुरुष प्राचीन नगरों के फाटकों पर बैठते थे – परन्तु देखिए, यह व्यापक संसार में अगुवाई की मानक व्यवस्था थी: उदाहरण के लिए, मिस्र में भी "प्राचीन" थे।[459]

परन्तु पितृसत्ता की किसी विद्यमान सांस्कृतिक प्रथा में और उसके भीतर परमेश्वर का अपने आप को प्रकट करना और कार्य करना उसकी सार्वभौमिक स्वीकृति उतनी ही कम है जितनी, मान लीजिए, बहुविवाह की सांस्कृतिक प्रथा के द्वारा बारह कुलपिताओं, अर्थात् याकूब के पुत्रों, को अस्तित्व में लाना बहुविवाह की स्वीकृति है। बहुविवाह ग़लत है, यह हम जानते हैं, फिर भी परमेश्वर इसके स्तर पर इस हद तक उतरे कि इस्राएल के बारह गोत्रों के संस्थापक ऐसे पुरुष हैं जिनका पिता एक ही है, परन्तु माताएँ एक से अधिक हैं। दासप्रथा के साथ भी ऐसा ही है, जैसा हमने अध्याय 9 में देखा। एक ऐसी प्रजा के भीतर परमेश्वर का कार्य करना, जिसके लिए बहुविवाह, दासप्रथा और पितृसत्ता सामान्य बातें थीं, इसका अर्थ यह नहीं कि परमेश्वर इनमें से किसी भी प्रथा को आदर्श मानते हैं या उसे स्वीकृति देते हैं। अपने आप को और अपने विश्वव्यापी

459. उत्पत्ति 50:7

छुटकारे के उद्देश्यों को क्रमशः प्रकट करने की लंबी प्रक्रिया में, परमेश्वर स्पष्ट रूप से ऐसी बातों को सहने के लिए तैयार हैं जिनका अंत करने की वे अंततः प्रतिज्ञा करते हैं।

फिर भी, यदि परमेश्वर ने पुराने नियम में सदा केवल पुरुषों को ही अगुवों के रूप में चुना होता (जो सच नहीं है), तब भी हमें यह नहीं मान लेना चाहिए कि यह सामान्य सांस्कृतिक नमूना यीशु की कलीसिया पर लागू किया जाना चाहिए। कारण यह है: यीशु के आने से पहले परमेश्वर की प्रजा एक शाब्दिक राष्ट्र थी, परन्तु उनके आने के बाद, और विशेषकर पहली कलीसिया पर यरूशलेम में हुए सताव के बाद, उसने एक नया रूप ले लिया। परमेश्वर की योजना, जो अब प्रकट हो चुकी है, यह है कि कलीसियाएँ किसी राष्ट्र के रूप में नहीं, बल्कि सारे संसार के राष्ट्रों के भीतर एक जीवंत समुदाय के रूप में हों। अब एक भू-राजनीतिक प्रजा न रहकर, आज परमेश्वर की प्रजा को राजाओं, कुल-प्रधानों, महायाजकों या राष्ट्रीय भविष्यद्वक्ताओं जैसी प्राचीन अगुवाई-भूमिकाओं की कोई आवश्यकता नहीं है। अधिकांशतः नया नियम पुरानी और नई वाचा के अधीन विश्वास के बीच निरंतरता के अभाव (विच्छेद) पर ज़ोर देता है। इस तथ्य की अनदेखी करके पूरकतावादी पुराने नियम से पुरुष अगुवाई को परमेश्वर का पसंदीदा मानदंड ठहराने के लिए एक और तर्क गढ़ लेते हैं।

पुरुष याजक

पुराने नियम के तीन महान पद हैं: भविष्यद्वक्ता, याजक और राजा। यद्यपि हम भविष्यद्वक्तिनों के विषय में और परमेश्वर द्वारा उपयोग की गई शक्तिशाली रानियों के विषय में जानते हैं, एक पद ऐसा था जो निर्विवाद रूप से, बिना किसी अपवाद के, केवल पुरुषों के लिए आरक्षित था: याजक का पद।

कुछ पूरकतावादी विद्वान इस बात को बहुत बढ़ा-चढ़ाकर पेश करते हैं: "यदि कोई यह मान ले कि पुराने नियम में याजकों को छोड़ अगुवाई की सब भूमिकाओं में अपवाद हैं, तो निश्चय ही एक नमूना मौजूद है: परमेश्वर स्त्रियों के लिए हर प्रकार की अगुवाई खोलते हैं, एक को छोड़कर। इस अर्थ में पुराने नियम में याजक अपवाद हैं, और नए नियम में प्राचीन।"[460]

बहुत हाल ही में कुछ अन्य विद्वानों ने दो और तर्क जोड़कर इस तर्क को बल दिया है, और दोनों पुराने नियम के याजकों और विशेष रूप से कलीसिया के प्राचीनों के बीच संबंध जोड़ते हैं। पहला, वे बताते हैं कि प्रमुख याजकों, हारून और लेवी, को आज्ञा दी गई कि वे लोगों को मूसा की व्यवस्था सिखाएँ[461] – जो कुछ हद तक उन प्राचीनों से मेल खाता है जिन्हें "सिखाने में निपुण" होना चाहिए।[462] दूसरा, वे इस बात पर ज़ोर देते हैं कि याजक पवित्रस्थान और उसकी वस्तुओं के रखवाले थे, जो आज के प्राचीनों के कार्य से मेल खाता है, जिन्हें कलीसिया के आत्मिक और नैतिक रखवाले होना है।

इन तर्कों का उत्तर कैसे दिया जाए?

यद्यपि याजक पुरुष थे, हमें यह निष्कर्ष नहीं निकालना चाहिए कि परमेश्वर पितृसत्ता को स्वीकृति दे रहे थे – विशेषकर इसलिए कि पवित्रशास्त्र ऐसा नहीं कहता। केवल पुरुषों के याजक होने के कुछ विशेष कारण रहे

460. Craig Blomberg, "Two Views of Women in Ministry"
461. लैव्यव्यवस्था 10:11, मलाकी 2:7
462. 1 तीमुथियुस 3:2

होंगे, जिन्हें शायद हम जान भी न सकें। स्त्रियों को पवित्रस्थान के संचालन से अलग रखने के तीन तर्कसंगत कारण हैं। (यदि मुझे इनमें से केवल एक पर दाँव लगाना पड़े, तो वह पहला होगा।)

पहला, मूसा की व्यवस्था मासिक धर्म वाली स्त्रियों को अनुष्ठान की दृष्टि से अशुद्ध ठहराती थी, और इसलिए उन्हें हर महीने के एक चौथाई भाग में मन्दिर में पैर रखने की भी अनुमति नहीं थी। हम आज इस पर मुस्कुरा सकते हैं, परन्तु प्राचीन इस्राएलियों की धार्मिक कल्पना में इसका बड़ा स्थान था। मूसा ने आज्ञा दी: "जब किसी स्त्री का नियमित रक्तस्राव हो, तो उसके मासिक धर्म की अशुद्धता सात दिन तक रहेगी, और जो कोई उसे छूए वह साँझ तक अशुद्ध रहेगा। ... जो कोई किसी ऐसी वस्तु को छूए जिस पर वह बैठी हो, वह अशुद्ध रहेगा; वह अपने वस्त्र धोए और जल से स्नान करे, और वह साँझ तक अशुद्ध रहेगा।"[463] इसके कारण स्त्रियों का अनुष्ठान संबंधी कार्य वाले याजक होना अनुपयुक्त रहा होगा, जब तक कि उनके बदलते मासिक चक्रों के अनुसार सेवा की बारी-सूचियाँ न बनाई जातीं – जो निःसंदेह एक दूर की कौड़ी है।[464]

दूसरा, स्त्री याजकों के होने से मूर्तिपूजक धर्मों की उन पुजारिनों के साथ संभावित संबंध जुड़ सकता था जो उपासना के साथ वेश्यावृत्ति को जोड़ती थीं।[465] तीसरा, याजकों को शारीरिक रूप से बलवान होना आवश्यक था। उन्हें मन्दिर में अनुचित रूप से प्रवेश करने वाले किसी भी व्यक्ति से शारीरिक रूप से रक्षा करनी होती थी, और आवश्यकता पड़ने पर उसे मार डालना होता था;[466] वे दिन भर पशुओं को काटते और इधर-उधर ढोते थे; और पवित्रस्थान के अस्तित्व के पहले 300–400 वर्षों में याजकों को पूरे पवित्रस्थान और उसके सारे सामान को बार-बार समेटकर एक स्थान से दूसरे स्थान तक ढोना पड़ता था। इस अर्थ में स्त्रियों को मन्दिर के याजकपद से अलग रखना उतनी ही स्वाभाविक सीमा थी जितना स्त्रियों को इस्राएल की सेना से अलग रखना।

परन्तु याजकों के पुरुष होने को मिसाल के रूप में उपयोग करने के प्रयास के विषय में कहने को इससे भी अधिक मूल बात है। मूसा की अनुष्ठान संबंधी व्यवस्था ने ही यह ठहराया था कि याजक पुरुष हों। जैसा कि स्वयं यीशु ने बताया,[467] मूसा की व्यवस्था ने किसी आदर्श समाज का विधान नहीं किया, बल्कि वह एक अपूर्ण समाज में दी गई रियायतें थीं। इसलिए यह तथ्य कि केवल पुरुष ही याजक थे (और हमें ध्यान देना चाहिए कि केवल एक ही गोत्र से), आज कलीसिया में अगुवाई के विषय में हमारे प्रश्न में कोई महत्व नहीं रखता। यह एक भिन्न संस्कृति और एक भिन्न वाचा का नियम था। नई वाचा के विश्वासियों के रूप में हम मूसा की व्यवस्था के अधीन नहीं हैं। याजक बनने का किसी के वरदानों या भक्ति से कोई संबंध नहीं था, केवल लेवी के गोत्र में पुरुष के रूप में जन्म लेने से, और सौभाग्य से कोई शारीरिक दोष न होने से था; इसलिए उनका पद आत्मिक अगुवाई का पूर्व-रूप नहीं है।

463. लैव्यव्यवस्था 15:19, 22
464. धन्यवाद हो कि यीशु इन शुद्धता-नियमों का अंत करने आए: याईर की बेटी को जिलाने और लहू बहने के रोग से पीड़ित स्त्री को चंगा करने के लगातार हुए आश्चर्यकर्मों पर विचार कीजिए, जिनमें मूसा की व्यवस्था के अनुसार यीशु उनके संपर्क से अशुद्ध हो गए। दोनों ही घटनाओं में यीशु अशुद्ध को शुद्ध कर देते हैं।
465. जिसका व्यवस्थाविवरण 23:17 निषेध करता है – परमेश्वर ने इस्राएल को बार-बार मना किया कि वह आसपास के राष्ट्रों की अनैतिक प्रथाओं का पालन करता हुआ भी न दिखाई दे।
466. गिनती 18:7
467. मत्ती 19:8

कहने का अर्थ यह है कि पुराने नियम के याजक और नए नियम के पास्टर के बीच दावा किया गया संबंध बहुत कमज़ोर है। किसी संपत्ति की शारीरिक रूप से रक्षा करना किसी प्रजा की आत्मिक और नैतिक रूप से रखवाली करने से बहुत भिन्न है:[468] पहले का संबंध शारीरिक बल से है, जो पुरुषों में होता है, जबकि दूसरे का संबंध आत्मिक परिपक्वता और सिद्धांत की गहराई से है, जो पुरुषों तक सीमित नहीं है। और हाँ, आज के पास्टरों की तरह, पुराने नियम में याजक भी परमेश्वर का वचन सिखाते थे, परन्तु भविष्यद्वक्ता, राजा-रानी और माता-पिता – ऐसी भूमिकाएँ जिनमें स्त्रियाँ भी सम्मिलित थीं – भी उसे सिखाने के लिए उत्तरदायी थे।[469]

सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि पतरस और इब्रानियों के लेखक के अनुसार याजक पास्टरों के पूर्व-रूप बिलकुल नहीं थे, बल्कि सिद्ध याजक यीशु के, जो अपने आप को सिद्ध बलिदान के रूप में चढ़ाते हैं,[470] और सब विश्वासियों के – पुरुष और स्त्री दोनों के – पूर्व-रूप थे, जो "याजकों का पवित्र समाज हैं, जो यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर को ग्रहणयोग्य आत्मिक बलिदान चढ़ाते हैं।"[471] नया नियम कहीं भी पास्टरों को सीधे याजकों से नहीं जोड़ता। वास्तव में, धर्मसुधार (Reformation) की एक महान खोज यह थी कि पुराने नियम के याजक कलीसिया के पादरी-वर्ग से बिलकुल मेल नहीं खाते, बल्कि सब विश्वासियों से मेल खाते हैं। क्या हम धर्मसुधार की एक आधारशिला को मिटाने का प्रयास कर रहे हैं?

इस अध्याय की मुख्य बात पर लौटें: स्त्रियों के ये उत्कृष्ट उदाहरण, जिन्होंने पुरुषों की अगुवाई की और उनकी ezer kenegdos या सशक्त साझेदार के रूप में काम किया – प्राचीन निकट पूर्व में सामान्य माने जाने वाले पुरुष-प्रभुत्व के बावजूद – उस भावी दिन की झलकियाँ हैं जब स्त्रियाँ परमेश्वर के कार्य में पूरी साझेदारी में पुरुषों के साथ खड़ी होंगी। योएल की भविष्यद्वाणी, जो पुरुषों और स्त्रियों, बेटों और बेटियों के आत्मा की पूरी सामर्थ्य में काम करने के विषय में है,[472] भविष्य की इस आशा को सुंदरता से व्यक्त करती है कि स्त्रियाँ आगे चलकर और भी बड़े पैमाने पर उठेंगी और अगुवाई और प्रचार का दायित्व उठाएँगी। इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं होनी चाहिए: पुराने नियम में ऐसा कुछ भी नहीं है जो इस संभावना को कमज़ोर करे कि परमेश्वर समाज और कलीसिया में शक्तिशाली अगुवाई और शिक्षा के कार्यों के लिए स्त्रियों को चुनें। बल्कि, प्राचीन पितृसत्तात्मक अतीत में परमेश्वर द्वारा चुनी गई स्त्रियों के अनेक उदाहरणों से हमें यह आशा करनी

468. हाल ही में एक पूरकतावादी धर्मविज्ञानी ने इस तर्क में आदम द्वारा वाटिका की रखवाली की बात जोड़कर इसे मज़बूत करने का प्रयास किया है। वह बताता है कि पुरुष आदम को वाटिका-रूपी मन्दिर का याजक और रखवाला होना था, और पुरुष याजकों को भौतिक मन्दिर की रखवाली करनी थी, और इसलिए पुरुष प्राचीनों को कलीसिया-रूपी मन्दिर की रखवाली करनी चाहिए। यद्यपि धर्मवैज्ञानिक रूप से वाटिका-रूपी मन्दिर, भौतिक मन्दिर और कलीसिया-रूपी मन्दिर के बीच एक संबंध है (ये वे स्थान हैं जहाँ परमेश्वर निवास करते हैं), फिर भी दावा किया गया नमूना तीन प्रकार से विफल होता है। पहला, परमेश्वर हव्वा को आदम के लिए एक सशक्त सहायक के रूप में देते हैं, ताकि वह वाटिका-रूपी मन्दिर की देखभाल में उसकी साझेदार हो (उत्पत्ति 2:18), इसलिए आदम का पुरुष होना अप्रासंगिक है। दूसरा, नए नियम के अनुसार आदम कलीसिया के पास्टरों का पूर्व-रूप नहीं है, बल्कि यीशु का, अर्थात् अंतिम आदम का (1 कुरिन्थियों 15:45), और मसीह में सब लोगों का – पुरुषों और स्त्रियों सहित – जिन्हें परमेश्वर के घर में याजकों के रूप में सेवा करनी है (1 पतरस 2:5)। तीसरा, आदम उस वाटिका के ऊपर है और उसका भाग नहीं है जिसकी वह रखवाली करता है, जैसे याजक भी मन्दिर के ऊपर हैं, जबकि पास्टर कलीसिया-रूपी मन्दिर के ऊपर नहीं, बल्कि उसके भाग हैं।

469. इसके अतिरिक्त, लेवी और हारून के (न कि पूरे याजक-वर्ग के) शिक्षा देने के उल्लेखों का यह अर्थ नहीं कि हर याजक शिक्षक था।

470. इब्रानियों 8-10

471. 1 पतरस 2:5

472. योएल 2:28-29

चाहिए कि भविष्य में अगुवों का चुनाव करते समय भी परमेश्वर किसी का पक्षपात नहीं करेंगे – और इसमें यह भी सम्मिलित है कि उनके गुणसूत्र XX हैं या XY।[473]

अंत में शाप पूरी तरह पलट जाएगा: तब आदम हव्वा पर प्रभुता नहीं करेगा, बल्कि वे एक-दूसरे के साथ मिलकर प्रभुता करेंगे – और यदि हम पुराने नियम की शिक्षा के प्रति सच्चे रहें, तो यही परमेश्वर का आदर्श है, जो उसके बिलकुल पहले अध्याय में ही स्पष्ट रूप से व्यक्त किया गया है।

473. या कोई अन्य भिन्नताएँ, जिनका इंटरसेक्स (intersex) लोगों में होना विज्ञान सिद्ध कर सके।



11

सुसमाचारों में शक्तिशाली स्त्रियाँ

"सब सुसमाचार दिखाते हैं कि यीशु की स्त्री चेलियाँ ही वे पहली व्यक्ति थीं जिन्होंने यीशु के पुनरुत्थान का संदेश सुनाया, जो आरंभिक कलीसिया में सुसमाचार का केंद्र था।" David Scholer[474]

धन्यवाद की बात है कि पूरकतावादी विद्वान यह स्वीकार करते हैं कि यीशु ने स्त्रियों को ऊँचा उठाया। आख़िरकार, यीशु की सेवकाई का यह भाग पूरकतावाद के इस सिद्धांत का समर्थन करता है कि स्त्रियाँ पुरुषों के समान मूल्य और महत्व के साथ बनाई गई हैं। परन्तु ये विद्वान फिर इस बात की अनदेखी करते हैं या इसे कम करके आँकते हैं कि सुसमाचारों में यीशु न केवल स्त्रियों के मूल्य को उजागर करते हैं, बल्कि स्त्रियों की सेवकाई को भी मुक्त करते हैं। यह एक भूल है। मसीही विश्वास का सार है – सब बातों को, जिनमें स्त्रियाँ और सेवकाई भी हैं, वैसे ही देखना सीखना जैसे यीशु उन्हें देखते हैं।

यीशु की सेवकाई का जो भाग हर पूरकतावादी बताने को उत्सुक रहता है, वह यह तथ्य है कि यीशु ने केवल पुरुष प्रेरितों को चुना। अक्सर ऐसा लगता है कि सुसमाचारों में स्त्रियों की सेवकाई के विषय में यीशु के दृष्टिकोण में से वे बस यही बात देखते हैं। वे यह निष्कर्ष निकालते हैं कि यीशु चाहते हैं कि स्त्रियाँ सेवा करें, परन्तु अगुवाई न करें। इस अध्याय के अंत में मैं दिखाऊँगा कि यीशु के बारह को उनकी कलीसिया में भविष्य की सारी अगुवाई के लिए किसी प्रकार का साँचा मानना कितनी बड़ी भूल है। परन्तु इस अध्याय के अधिकांश भाग में मैं इसी विचार का खंडन करूँगा कि यीशु ने केवल पुरुषों वाली सेवकाई-भूमिकाओं के विचार का समर्थन किया। यद्यपि सुसमाचार मुख्य रूप से यीशु की सेवकाई के विषय में हैं, यह बहुत उल्लेखनीय है कि सुसमाचार-लेखक यीशु द्वारा स्त्रियों को सेवकाई के लिए मुक्त करने को कितना स्थान देते हैं – वे उन्हें परमेश्वर के कार्य में आगे और केंद्र में रखते हैं, और उन्हें किसी प्रकार के "लिंग के अनुकूल क्षेत्र" में सीमित रखने की ज़रा भी परवाह नहीं करते। इस अध्याय में हम उन कुछ स्त्रियों पर दृष्टि डालेंगे जिनका यीशु ने अपने राज्य के अत्यंत प्रभावशाली प्रतिनिधियों के रूप में उपयोग किया। आइए, सबसे महत्वपूर्ण स्त्री से आरंभ करें।

इतिहास में वह पहला व्यक्ति कौन है जिसने यीशु नाम सुना? जिसने सुना और विश्वास किया कि वे परमेश्वर के पुत्र हैं जो संसार का उद्धार करने आते हैं, और जो ऐसा राज्य स्थापित करेंगे जिसमें छोटे से छोटा सबसे

474. www.fuller.edu/womeninministry/

बड़ा बन जाएगा? नए नियम के युग में वह पहला कौन है जिसने परमेश्वर का भेजा हुआ संदेश पाया, और जिस पर परमेश्वर का आत्मा सामर्थ्य के साथ उतरा? वह पहला कौन है जिसने यीशु और उनके उलटे-पुलटे अनुग्रह के राज्य के विषय में उपदेश दिया (वास्तव में, गाया)? और वह पहला कौन है जिसने परमेश्वर के पुत्र पर अपने विश्वास के कारण कष्ट उठाया, विशेष रूप से सताव सहा? एक और संकेत: वही पहला व्यक्ति भी है जिसके भीतर यीशु आकर रहे।

निःसंदेह, मैं हमारे प्रभु की माता मरियम की बात कर रहा हूँ।

माता मरियम

एक ख़तरनाक और विदेशियों के क़ब्ज़े वाले देश में निम्न दर्जे की एक किशोरी होने के बावजूद, मरियम का गीत घोषणा करता है कि वह कितनी धन्य है, क्योंकि परमेश्वर ने "शासकों को उनके सिंहासनों से गिरा दिया, परन्तु दीनों को ऊँचा उठाया है।"[475] जब वह परमेश्वर पर (किसी पुरुष या सांस्कृतिक मान्यता पर नहीं) भरोसा करती और उनकी आज्ञा मानती है, तो परमेश्वर उसे ऐसा मूल्य प्रदान करते हैं जिसे कोई पुरुष या संस्कृति उससे कभी छीन नहीं सकती।

ऑगस्टीन (Augustine) परमेश्वर के पुत्र को मरियम द्वारा जन्म दिए जाने के धर्मवैज्ञानिक महत्व पर विचार करता है: "प्रभु यीशु मसीह, जो मनुष्यों को – उद्धार के लिए ठहराए गए पुरुषों और स्त्रियों दोनों को – स्वतंत्र करने आए, पुरुष स्वभाव से लज्जित नहीं हुए, क्योंकि उन्होंने उसे धारण किया; और न स्त्री स्वभाव से, क्योंकि वे एक स्त्री से जन्मे।"[476] Lucy Peppiatt ऑगस्टीन के इस उद्धरण पर टिप्पणी करती है: "जब परमेश्वर ने पृथ्वी पर आना चुना, तो उन्होंने एक स्त्री के गर्भ की गुप्तता को चुना। जब परमेश्वर ने देह धारण करना चुना, तो उन्होंने यह देह एक स्त्री से लेना चुना। ... एक पुरुष के द्वारा परमेश्वर अपने आप को हम पर प्रकट करते हैं, और एक स्त्री के द्वारा परमेश्वर मानवजाति से संबंध जोड़ते हैं।"[477]

यीशु के वयस्क हो जाने के बहुत बाद भी मरियम उनकी सेवा में और उनके लिए कष्ट उठाने की अपनी तत्परता में सक्रिय रहती है: "और कौन है जो सीधे यीशु के सामने आकर उन्हें बताती है कि दाखरस समाप्त हो गया है, या कि यदि वे धार्मिक अगुवों को ठेस पहुँचाते रहे तो मुसीबत में पड़ जाएँगे? और किसका प्राण छिदता है, जब वह उस भयानक पहले गुड फ़्राइडे को पहरेदार को अपने पुत्र की पसली बेधते हुए देखती है – उस भविष्यद्वाणी की पूर्ति में जो उसे तब दी गई थी जब यीशु कपड़ों में सुरक्षित लिपटे एक छोटे शिशु ही थे?"[478]

यीशु के बाद परमेश्वर के राज्य के लिए सबसे अधिक किसने किया? मेरा उत्तर अब्राहम, या मूसा, या दाऊद, या पौलुस नहीं है। निःसंदेह, वह मरियम है। मुझे संदेह है कि मानव इतिहास में अपने गर्भ में मसीह को धारण

475. लूका 1:52
476. Thomas Oden, Classic Christianity: A Systematic Theology, पृ. 266 में उद्धृत
477. Lucy Peppiatt, Rediscovering Scripture's Vision for Women, अध्याय 2।
478. Lucy Peppiatt, Rediscovering Scripture's Vision for Women, अध्याय 2।

करने, और उन्हें इतने समय तक जीवित रखने से कि वे अपने पैरों पर खड़े हो सकें, बड़ी कोई सेवकाई हुई होगी।

केवल उसका पुत्र ही नहीं, वह स्वयं भी दुर्जेय है: हम उसकी दीनता और असुरक्षा के बारे में तो सोचते हैं, परन्तु भूल जाते हैं कि वह ऐसी शक्ति है जिसे हल्के में नहीं लिया जा सकता – इतनी कि यूहन्ना, वह मुँहबोला पुत्र जिसकी देखभाल में यीशु उसे छोड़ जाते हैं, भविष्यसूचक रूप से उसका चित्रण ऐसे करता है कि वह बच्चे को जन्म देते समय एक लाल, दुष्टात्मिक अजगर से युद्ध में बच निकलती है।[479]

हन्नाह: भविष्यद्वक्तिन

"हन्नाह नाम की एक भविष्यद्वक्तिन भी थी, [जो] मन्दिर को कभी नहीं छोड़ती थी, बल्कि उपवास और प्रार्थना करते हुए रात-दिन आराधना करती थी। उसी घड़ी मरियम, यूसुफ़ और बालक के पास आकर उसने परमेश्वर का धन्यवाद किया।"[480]

हन्नाह नए नियम के युग में भविष्यद्वक्ता कहलाने वाली पहली व्यक्ति है। वास्तव में, इस पवित्र क्षण से पहले की पूरी आधी सहस्राब्दी में किसी भविष्यद्वक्ता द्वारा परमेश्वर का वचन सुनाने का हमारे पास कोई बाइबलीय विवरण नहीं है। केवल सात वर्ष के विवाह के बाद अपने पति को खो देने पर, वह अपना बाकी जीवन मन्दिर में बिताती है। जैसे-जैसे वर्ष बीतते हैं, अपने दिवंगत साथी के लिए उसकी पीड़ा संसार के उद्धारकर्ता की लालसा में बदल जाती है। एक दिन, जब मरियम और यूसुफ़ अपने शिशु को समर्पित करने के लिए मन्दिर पहुँचते हैं, तो उसे उन्हें देखने की आँखें मिलती हैं – उन्हें सचमुच देखने की। प्रतीक्षा आख़िरकार समाप्त हो गई है। उसकी सब निराशाएँ मिट जाती हैं, और वह तुरंत स्तुति से भर उठती है और "उन सब से, जो यरूशलेम के छुटकारे की बाट जोह रहे [हैं], बालक के विषय में" प्रचार करके अपनी सेवकाई पूरी करती है।[481]

मन्दिर के आँगनों में, किसी धार्मिक सार्वजनिक स्थान पर विश्वासी पुरुषों को शिक्षा देने के लिए अधिकृत न होने की किसी पूरकतावादी शिक्षा से बिलकुल अनजान, वह विश्वास रखने वाली स्त्रियों और पुरुषों को पवित्रशास्त्र की भविष्यसूचक प्रतिज्ञाओं की याद दिलाती है। वह उन्हें उस बालक का शुभ संदेश सुनाती है जो उद्धार देने वाला राजा होगा – और यह सब बिना किसी पति के, जो उसे "ढाँके" या उसके साथ खड़ा रहे।

479. प्रकाशितवाक्य 12:1-6
480. लूका 2:36-37
481. लूका 2:38

कुएँ पर मिली स्त्री

यदि आप किसी भी बाइबल-पाठक से पूछें कि वह पहला मसीही कौन था जिसने एक बड़ी भीड़ के सामने यीशु को मसीह घोषित किया और जिसे सुसमाचार-प्रचार में बड़ी सफलता मिली, तो वह शायद कहेगा कि वह पिन्तेकुस्त के दिन पतरस था। परन्तु कोई ऐसा था जिसने उससे कुछ वर्ष पहले ही यह कर दिखाया।

अध्याय 5 में मैंने यीशु के सामरी स्त्री के साथ आमने-सामने हुए धर्मवैज्ञानिक वार्तालाप के बारे में बताया था – जो हमारे पास दर्ज सबसे लंबा ऐसा वार्तालाप है। यहाँ मैं इस बात पर ज़ोर देना चाहता हूँ कि वह न केवल यह विश्वास करने लगती है कि वे मसीह हैं; बल्कि वह एक प्रकार की सार्वजनिक जागृति की अगुवाई करने वाली पहली सुसमाचार-प्रचारक भी बन जाती है।

यह एक जीवन का उल्लेखनीय कायापलट है। जब यीशु उससे पानी माँगकर अपना परिचय देते हैं, तब वह बस एक और प्यासी आत्मा है। वह अपने नगर में प्रतिष्ठा की सीढ़ी के बिलकुल निचले पायदान पर भी है। सामान्यतः स्त्रियाँ सुबह-सवेरे, और दूसरी स्त्रियों के साथ मिलकर, कुएँ पर आती थीं, परन्तु यहाँ वह है – बिलकुल अकेली और दिन की तपती धूप में – जो दूसरी स्त्रियों की दृष्टि में उसके कलंक का चिह्न है, जो शायद बहुत से पुरुषों के साथ संबंधों में आने-जाने के कारण उसकी निंदा करती थीं।

परन्तु यीशु उससे बात करते हैं। वे उसके साथ धर्मवैज्ञानिक संवाद करते हैं। इस प्रक्रिया में वह धीरे-धीरे उनके आत्म-प्रकाशन का अनुभव करती है, ठीक वैसे ही जैसे वह स्वयं को उनके सामने खोलती है। जब यीशु यह कहकर वार्तालाप को चरम पर पहुँचाते हैं, "मैं मसीह हूँ", तो वह जीवन के जल का एक शुद्ध करने वाला घूँट लेती है, अपनी पुरानी बाल्टी छोड़ देती है, और नगर की ओर दौड़ पड़ती है ताकि दूसरों को भी वही जल दे जो उसने अभी-अभी पाया है। हमें बताया गया है: "तब स्त्री अपना घड़ा छोड़कर नगर में चली गई और लोगों से कहने लगी, 'आओ, एक मनुष्य को देखो, जिसने सब कुछ जो मैंने किया, मुझे बता दिया। कहीं यही तो मसीह नहीं है?' तब वे नगर से निकलकर उसके पास आने लगे।"[482]

परिणाम यह है कि "उस स्त्री की गवाही के कारण ... बहुतों ने उस पर विश्वास किया"। स्वयं यीशु से मिलने के बाद उन्होंने उस स्त्री से कहा, "अब हम केवल तेरे कहने से ही विश्वास नहीं करते; क्योंकि हमने आप ही सुन लिया है, और जानते हैं कि यही सचमुच जगत का उद्धारकर्ता है।"[483] वह न केवल इतिहास में पहली व्यक्ति है जिसने ये शब्द सुने, "मैं मसीह हूँ", बल्कि हन्नाह के बाद वह पहली है जिसने यह खोज हर उस व्यक्ति तक पहुँचाई जो उसकी सुनना चाहे – चाहे वे पुरुष हों या स्त्रियाँ! यीशु द्वारा उसके चुने जाने और सम्मानित किए जाने का अर्थ है कि उसकी बहिष्कृत पहचान का स्थान यीशु की संदेशवाहिका होने का ऊँचा दर्जा ले लेता है।

जो विद्वान उसकी सुसमाचार-प्रचार की सेवकाई को कम करके आँकते हैं – "उसने तो बस अपनी गवाही सुनाई" – वे इन तथ्यों की अनदेखी करते हैं: वह गई और लोगों को ढूँढ़ा; उसने लोगों को यीशु की ओर मोड़ने

482. यूहन्ना 4:28-30
483. यूहन्ना 4:39-42

के लिए शब्दों का उपयोग किया; और उसने घोषणा की कि वे मसीह हैं, जिसके परिणामस्वरूप लोग यीशु पर विश्वास में आए। यीशु तो अपने चेलों को सुसमाचार-प्रचार पर दी गई एक छोटी शिक्षा में उसी क्षण उसका उदाहरण भी देते हैं। लोगों की भीड़ की तुलना कटनी के लिए पके खेत से करने के बाद, वे उसकी ओर संकेत करते हुए कहते हैं, "अभी से काटने वाला ... अनंत जीवन के लिए फल बटोरता है।"[484] उनका उपदेश तब समाप्त होता है जब यह सुसमाचार-प्रचारक अपने नए मित्रों को पीछे लिए पहाड़ी चढ़कर यीशु के पास आती है। हो सकता है चेले पहले "अचम्भा करने लगे हों कि वह एक स्त्री से बातें कर रहा है"[485] (पद 27), परन्तु वे और कितने अधिक चकित हुए होंगे जब उन्होंने उसकी सुसमाचार-प्रचार की सेवकाई को तुरंत इस प्रकार आरंभ होते देखा जो उस समय उनकी अपनी किसी भी सेवकाई से बढ़कर थी।

मार्था: गवाह

जब हम "मार्था" नाम सुनते हैं, तो हम में से बहुतों को याद आता है कि एक अवसर पर वह कैसे चूक गई थी, जब यीशु ने उसे इसलिए डाँटा क्योंकि उसने उनसे शिक्षा पाने का अवसर गँवा दिया, और उनकी चेली बनने के बजाय उनकी घरेलू सहायक बनना चुना। उसकी भूल यह थी कि उसने उनके लिए ऐसा भौतिक भोजन तैयार किया जिसका उन्होंने कभी आदेश नहीं दिया था, जबकि वे उसकी बहन को आत्मिक भोजन परोस रहे थे।

परन्तु हम में से कम ही लोगों को याद आता है कि एक दूसरे अवसर पर वह कितनी प्रभावशाली रीति से सही थी, और परमेश्वर उसका उपयोग हर उस व्यक्ति को सिखाने के लिए करते हैं जिसके पास आज बाइबल है। यूहन्ना का सुसमाचार, यीशु के अन्य वृत्तांतों से कहीं अधिक, यीशु के व्यक्तिगत, आमने-सामने के मिलनों का चित्रण इस प्रकार करता है कि हर व्यक्ति उनके विषय में कोई निर्णायक बात समझ लेता है – और यह प्रकाशन पाठकों के रूप में हमारे लिए भी खुल जाता है। उदाहरण के लिए, कुएँ पर मिली स्त्री की यह खोज कि यीशु मसीह हैं, यूहन्ना के सुसमाचार के द्वारा अब पहली सदी के उसके नगरवासियों से कहीं दूर के लोगों और स्थानों तक प्रचारित की जाती है। परन्तु वह अकेली स्त्री गवाह नहीं है जिसे यूहन्ना अपने लेखन में मंच देता है: मार्था भी यीशु के विषय में एक निर्णायक बात की गवाही देती है।

उस तक पहुँचने से पहले एक छोटी सी टिप्पणी: अधिकांश बाइबल-पाठक सुसमाचारों में गवाही के इन कथनों का महत्व जानते हैं। सबसे प्रसिद्ध कथन वह है जब यीशु अपने चेलों से पूछते हैं, "तुम मुझे क्या कहते हो?" और पतरस उत्तर देता है, "तू मसीह है।"[486] वास्तव में, पतरस का यह कथन एक कब्ज़े की तरह है जो मरकुस के सुसमाचार के पहले आधे भाग को (जो इस विषय में है कि यीशु कौन हैं) दूसरे आधे भाग से (जो हमारे लिए क्रूस पर मरने के यीशु के संकल्प के विषय में है) जोड़ता है। इससे भी बढ़कर, पतरस की यह घोषणा प्रकाशन की वह चट्टान है जिस पर कलीसिया का निर्माण होना है।

484. यूहन्ना 4:36
485. यूहन्ना 4:27
486. मरकुस 8:29

कम लोग यह समझते हैं कि यूहन्ना यीशु के विषय में मार्था की गवाही का उपयोग ठीक उसी प्रकार करता है जिस प्रकार मरकुस पतरस की गवाही का। यूहन्ना 11 में हम पढ़ते हैं कि यीशु आकर देखते हैं कि मार्था अपने भाई के लिए रो रही है, जिसकी हाल ही में मृत्यु हुई है। यीशु उससे कहते हैं (और सुसमाचारों में यही एकमात्र स्थान है जहाँ हमें ऐसा कुछ मिलता है), "पुनरुत्थान और जीवन मैं ही हूँ। जो मुझ पर विश्वास करता है, वह यदि मर भी जाए, तौभी जीएगा ... क्या तू इस बात पर विश्वास करती है?"

"हाँ, प्रभु," वह उत्तर देती है (और अब आती है उसकी घोषणा), "मैं विश्वास करती हूँ कि तू परमेश्वर का पुत्र मसीह है, जो जगत में आनेवाला था।"[487] यूहन्ना उसके शब्दों को आने वाली पीढ़ियों के लिए लिख देता है – और बस ऐसे ही, जो वह यीशु में देखती है और उनके विषय में कहती है, वह ऐसी ठोस नींव बन जाता है जिस पर यूहन्ना के सुसमाचार के लाखों पाठक अपना जीवन और अपनी अनंत नियति बना सकते हैं।

यीशु के निकटतम घेरे की स्त्रियाँ

सुसमाचारों में यीशु के चेलों के निकटतम घेरे के 23 लोगों के नाम दिए गए हैं। इनमें बारह हैं, यूसुफ़ यूस्तुस, लाज़र, नीकुदेमुस और अरिमतिया का यूसुफ़। कम लोग यह समझते हैं कि बाकी सात नामित चेले सब स्त्रियाँ हैं: उनकी माता मरियम, मरियम मगदलीनी, "दूसरी" मरियम, बैतनिय्याह की मरियम, योअन्ना, सूसन्नाह और सलोमी। उदाहरण के लिए, यह खंड देखिए:

यीशु नगर-नगर और गाँव-गाँव फिरकर परमेश्वर के राज्य का सुसमाचार सुनाता रहा। बारह उसके साथ थे, और कुछ स्त्रियाँ भी, जो दुष्टात्माओं और बीमारियों से छुड़ाई गई थीं: मरियम (जो मगदलीनी कहलाती थी), जिसमें से सात दुष्टात्माएँ निकली थीं; और हेरोदेस के भण्डारी खुज़ा की पत्नी योअन्ना; और सूसन्नाह; और बहुत सी अन्य स्त्रियाँ। ये स्त्रियाँ अपनी संपत्ति से उनकी सहायता करती थीं।[488]

यह खंड बताता है कि यीशु का निकटतम घेरा केवल बारह तक सीमित नहीं था, बल्कि उससे बड़ा था, और उसमें बहुत सी स्त्रियाँ थीं। यीशु के छुड़ाने वाले स्पर्श का अनुभव करने के बाद, ये गलीली स्त्रियाँ समय-समय पर यीशु और बारह के साथ जुड़ जाती थीं, और यरूशलेम तक की कठिन यात्रा करती थीं।

यीशु ने इन स्त्रियों को अपनी चेलियों के रूप में, मिशन में साथियों के रूप में, और ऐसी संरक्षिकाओं के रूप में चुना जिन्होंने अपनी निजी संपत्ति से मिशन का ख़र्च उठाया। प्राचीन संस्कृति में किसी का संरक्षण स्वीकार करना अपने आप को निर्भरता और ऋणी होने की स्थिति में रखना था। इसलिए यीशु ने इन स्त्रियों को बहुत अधिक सम्मान दिया होगा।

लूका 10 में हमें बताया गया है कि "प्रभु ने बहत्तर अन्य लोगों को नियुक्त किया, और जिस-जिस नगर और स्थान को वह आप जाने पर था, वहाँ उन्हें दो-दो करके अपने आगे भेजा।" ध्यान दीजिए कि यीशु ने केवल उन लोगों को इकट्ठा नहीं किया जो आसपास सुन रहे थे, बल्कि इस मिशन-दल को विशेष रूप से चुना और फिर तैयार किया। बहुत संभव है कि उनके निकटतम घेरे की बहुत सी, यदि सब नहीं, स्त्रियाँ उन 36 जोड़ियों

487. यूहन्ना 11:25-27
488. लूका 8:1-3

में थीं जिन्हें यीशु ने यहूदी देश भर में एक बड़े मिशन-अभियान पर भेजा।[489] इस प्रकार, इन स्त्रियों ने – यीशु के निर्देशों का पालन करते हुए – स्वागत करने वाले घरानों और गाँवों में परमेश्वर के राज्य की उपस्थिति की घोषणा की होगी; यीशु के निमंत्रण और राज्य को ठुकराने वालों की साहस के साथ निंदा की होगी; और दुष्टात्माओं को निकालकर उनकी राजकीय सामर्थ्य का प्रदर्शन किया होगा।

फिर भी कुछ विद्वान तर्क देते हैं कि 72 का यह अग्रिम दल केवल पुरुषों का था, इस आधार पर कि "अन्य" (यूनानी: heterous) शब्द पुल्लिंग है। परन्तु यह इस बात को ग़लत समझना है कि पुरुष-केंद्रित भाषाओं में प्राचीन लेखक मिश्रित समूहों का वर्णन करने के लिए नियमित रूप से किसी शब्द के पुल्लिंग रूप का उपयोग करते थे। (उदाहरण के लिए, यही शब्द उन सब "लंगड़ों, अंधों, टुंडों, गूँगों और बहुत से अन्य लोगों [heterous]"[490] के लिए भी उपयोग हुआ है जिन्हें चंगाई के लिए यीशु के पाँवों पर डाला गया – और निःसंदेह उस चंगा करने वाले के बहुत से रोगी स्त्रियाँ थीं।)

बाद में यीशु के निकटतम घेरे की इनमें से बहुत सी स्त्रियाँ मुख्य गवाह बनीं; उस दुखद शुक्रवार को क्रूस को छोड़ने वाली उनकी अंतिम चेलियाँ वही थीं; और ईस्टर रविवार को उनकी क़ब्र पर पहुँचने वाली पहली भी वही। इनमें से एक स्त्री को बाकी सब से अधिक सम्मान दिया गया है।

मरियम मगदलीनी

अब तक आप शायद समझ गए होंगे कि मसीही सुसमाचार के केंद्र में यह दावा है कि यीशु, इतिहास के तथ्यों के अनुसार, क्रूस पर चढ़ाए गए, गाड़े गए और मृतकों में से जी उठे। यदि इन ऐतिहासिक घटनाओं के विषय में हमें कोई संदेह है, तो हमें स्वयं मसीही विश्वास के विषय में संदेह है।

धन्यवाद की बात है कि यीशु ने ध्यान रखा कि इतिहास की इन महत्वपूर्ण घटनाओं में से हर एक – उनकी मृत्यु, उनका गाड़ा जाना और उनका पुनरुत्थान – बहुत से लोगों द्वारा देखी जाए। परन्तु यह बात शायद आश्चर्यजनक लगे कि इन गवाहों के रूप में उन्होंने मुख्य रूप से स्त्रियों को चुना! वास्तव में, केवल मरियम मगदलीनी और उसकी सहेलियों ने ही इन तीनों घटनाओं को देखा। वे क्रूस के पास सबसे अंत तक थीं, और पुरुष चेलों के भाग जाने के बहुत देर बाद तक वहीं रहीं।[491] उनमें से कुछ ने तो उन्हें गाड़ने में सहायता भी की।[492] और रविवार को भोर होते ही वे क़ब्र पर थीं – हमें बताया गया है: "स्वर्गदूत ने स्त्रियों से कहा, 'मत डरो, मैं जानता हूँ कि तुम यीशु को, जो क्रूस पर चढ़ाया गया था, ढूँढ़ती हो। वह यहाँ नहीं है; वह जी उठा है ... शीघ्र जाकर उसके चेलों से कहो: 'वह मृतकों में से जी उठा है।'"[493] सोचिए इसका क्या अर्थ है: किसी

489. यह संभव नहीं लगता कि यीशु को 72 सबसे समर्पित चेलों का कोई ऐसा दूसरा समूह मिल गया हो जिसमें सुसमाचारों में नामित अधिकांश या सब चेले सम्मिलित न हों। फिर भी मैं इन स्त्रियों के सम्मिलित होने के विषय में अधिक दृढ़ता से इसलिए नहीं कहता, क्योंकि शायद यीशु के लिए, जो मिशन के प्रति अपने दृष्टिकोण में अक्सर रणनीतिक थे, यह बात महत्वपूर्ण रही हो कि अत्यंत पितृसत्तात्मक इस्राएल पुरुषों की सार्वजनिक सेवकाई को अधिक सरलता से ग्रहण करता।
490. मत्ती 15:30
491. मत्ती 27:55-56; मरकुस 15:40-41
492. मत्ती 27:57-61; मरकुस 15:42-47; लूका 23:50-56
493. मत्ती 28:5-6

भी पुरुष प्रेरित ने ऐसा नहीं किया कि यीशु के शरीर को क़ब्र में रखे जाते देखा हो और तीन दिन बाद उसे ख़ाली भी पाया हो। इसके बजाय परमेश्वर मरियम और उसकी सहेलियों को इन सब घटनाओं को देखने और जो उन्होंने देखा था उसे आगे पहुँचाने का काम सौंपते हैं। वास्तव में, उस पहले ईस्टर रविवार के अधिकांश समय तक ये स्त्रियाँ ही पृथ्वी ग्रह पर पुनरुत्थान के संदेश की एकमात्र वाहक थीं। इस पर विचार कीजिए – ब्रह्माण्ड की सबसे महान कहानी के इस निर्णायक चरण में, मसीही विश्वास की पूरी विश्वसनीयता इन थोड़ी सी स्त्रियों के हाथों में है। स्त्रियों पर परमेश्वर का कैसा भरोसा है!

इन स्त्रियों में से यीशु ने मरियम मगदलीनी को जी उठे प्रभु के रूप में स्वयं से पहली वास्तविक भेंट का सौभाग्य दिया: "उसने उसे माली समझकर उससे कहा, 'हे महाशय, यदि तूने उसे उठा लिया है तो मुझ से कह कि उसे कहाँ रखा है, और मैं उसे ले जाऊँगी।'" जब यीशु फिर उसका नाम लेकर उसे पुकारते हैं, तो वह उनकी ओर मुड़ती है और अरामी भाषा में पुकार उठती है, "रब्बूनी!" (जिसका अर्थ है गुरु)। फिर मरियम यह चकित कर देने वाला समाचार लेकर चेलों के पास जाती है: "मैंने प्रभु को देखा है!"[494]

हमें पूछना पड़ता है कि यीशु ने स्त्रियों को क्यों चुना, जबकि वे जानते थे कि किसी स्त्री की गवाही कम विश्वसनीय मानी जाती थी – या शायद तुरंत ठुकरा ही दी जाती थी?[495] और उन्होंने ऐसा क्यों किया, जबकि वे जानते थे कि पुरुष चेले भी शायद उनकी बात पर विश्वास नहीं करेंगे? वैसे, हुआ भी यही – लूका बताता है कि "उन्होंने स्त्रियों की बात पर विश्वास नहीं किया, क्योंकि उनकी बातें उन्हें कहानी-सी लगीं।"[496] निःसंदेह, जब उसी दिन बाद में पुरुष स्वयं यीशु से मिलते हैं, तो वे समझ जाते हैं कि स्त्रियों के संदेश पर संदेह करना कितनी मूर्खता थी। यह तथ्य कि यीशु बाद में अपनी बहनों की बात न सुनने की उनकी विफलता के लिए उन्हें अच्छी तरह शर्मिंदा करते हैं,[497] उस शिक्षा को निर्विवाद बना देता है जो वे हम पुरुषों को – ठीक संसार में कलीसिया के आरंभ के समय – सिखाना चाहते हैं: अपनी बहनों के मुँह से निकले परमेश्वर के वचन को स्वीकार करना सीखो। यह तथ्य कि यीशु इस निर्णायक अंतर्दृष्टि को इतिहास के सबसे महत्वपूर्ण दिन में बुन देते हैं, और कि सुसमाचार-लेखक इसे दर्ज करते हैं, इसका अर्थ है कि यह एक प्राथमिक शिक्षा है जिसे हमें – मसीह के अनुयायियों के बाद के समुदायों को – कभी नहीं भूलना चाहिए।

इस विषय पर: जी उठे प्रभु के मुँह से निकला पहला शब्द क्या है?

वह है, "हे नारी ..."

इसे अनदेखा मत कीजिए। यूहन्ना का सुसमाचार हमें बताता है कि यीशु "पहले दिन" जी उठे – जो नई सृष्टि की ओर संकेत है। यीशु आदम की कहानी को फिर से दोहराते हैं, जो बगीचे में अपनी गहरी नींद से जागता है और तुरंत हव्वा को पाता है, जिससे वह आनंदित होता है और जिसे वह "नारी" कहता है, और बाद में "हव्वा ... सब जीवितों की माता"। और इस प्रकार मरियम मगदलीनी, इस déjà vu के क्षण में, नई सृष्टि के

494. यूहन्ना 20:15-18
495. उदाहरण के लिए, यहूदी रब्बियों की व्यवस्था यह मानती थी कि सौ स्त्रियों की गवाही एक पुरुष की गवाही के बराबर नहीं है।
496. लूका 24:11
497. मरकुस 16:14

युग की उन सब स्त्रियों का प्रतिनिधित्व करती है जिनका संदेश सुनाने वालियों के रूप में आदर किया जाना है – जो हर उस व्यक्ति के लिए जीवन लाती हैं जिसके सामने वे यह घोषणा करती हैं कि यीशु जीवित हैं।

हो सकता है हव्वा पहली सृष्टि के बगीचे में विफल हुई हो, जब वह शैतान का दास बनाने वाला संदेश आदम तक ले गई। परन्तु ख़ाली क़ब्र और नई सृष्टि के बगीचे में शाप पलट जाता है – हव्वा की बेटी अब परमेश्वर का मुक्ति देने वाला संदेश आदम के बेटों तक ले जाती है। और बस ऐसे ही, इस पुराने और टूटे हुए संसार के बीच एक बिलकुल नया संसार टूट पड़ता है – और अपने साथ यह महिमामय संभावना लाता है कि स्त्रियाँ परमेश्वर के मिशन की अग्रिम पंक्तियों में पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर खड़ी हों। जी उठे यीशु न केवल पुनरुत्थान की वास्तविकता के नए युग में स्त्रियों को पहली निर्णायक सेवकाई देते हैं; वे उन्हें समानता के एक नए स्तर और सेवकाई के संभावित प्रभाव से भी सम्मानित करते हैं। "स्त्रियों का सेवकाई की भूमिका तक ऊँचा उठाया जाना राज्य के टूटकर आने का चिह्न है, जो दिखाता है कि पुरानी व्यवस्था समाप्त हो गई है और संबंधों का एक नया क्रम आरंभ हुआ है।"[498]

मरियम एक प्रकार की प्रेरिताई भूमिका भी निभाती है। प्रेरितों के काम के आरंभिक अध्यायों में "पुनरुत्थान का गवाह" होने की सेवकाई प्रेरितों को पहचानने का एक तरीका बन गई।[499] प्रेरित वे थे जिनकी भेंट जी उठे यीशु से हुई थी और जिन्हें उन्होंने दूसरों को शुभ संदेश सुनाने के लिए भेजा था। यही कारण है कि कलीसियाई पिताओं ने प्रेम से मरियम मगदलीनी को "प्रेरितों की प्रेरित" कहा। N.T. Wright इससे सहमत है: "यदि प्रेरित पुनरुत्थान का [भेजा गया] गवाह है, तो कुछ स्त्रियाँ ऐसी थीं जो किसी भी पुरुष से पहले इस उपाधि की अधिकारी थीं।"[500] स्पष्ट कर दूँ: कड़ाई से कहें तो वह बारह का भाग नहीं है, परन्तु ऐसा लगता है कि वह, कम से कम उस समय के लिए, "भेजे गए लोगों" के एक बड़े घेरे का भाग है, जो यीशु के पुनरुत्थान के गवाह हैं (प्रेरित का अर्थ यही है)।

हम निष्कर्ष निकालते हैं: जिस दिन से यीशु के आगमन के साथ नई सृष्टि का सवेरा हुआ, यह स्पष्ट है कि परमेश्वर की इच्छा है कि केवल पुरुष ही नहीं, बल्कि स्त्रियाँ भी यीशु के विषय में सत्य की घोषणा करें। केवल अविश्वासियों से नहीं, या केवल निजी रूप से नहीं, या केवल स्त्रियों से नहीं, बल्कि (पूरकतावादी शिक्षा के विपरीत) हर उस व्यक्ति से जिसके सुनने के कान हैं – स्त्रियों और पुरुषों से, अविश्वासियों और विश्वासियों से, निजी रूप से और सार्वजनिक रूप से।

केवल पुरुष प्रेरित ही क्यों?

समकालीन कलीसियाओं की वरिष्ठ अगुवाई-टीमों से स्त्रियों को अलग रखने के लिए पूरकतावादी विद्वान एक और तर्क देते हैं: कि यीशु ने, यद्यपि परमेश्वर के कार्य में स्त्रियों की भूमिका का सम्मान किया, फिर भी अपने बारह प्रेरितों के चुनाव में उन्हें अलग रखा। न्याय की दृष्टि से कहें तो सब पूरकतावादी इस पर इतना ज़ोर नहीं देते: "हम यह तर्क नहीं देंगे कि केवल इसलिए कि यीशु ने बारह पुरुषों को अपने प्रेरित चुना, यीशु ने अवश्य

498. Grant Osborne, Women in Jesus' Ministry, पृ. 289-90।
499. प्रेरितों के काम 1:22; 2:32
500. www.bit.ly/3k5tah6

ही कलीसिया में केवल पुरुषों वाले प्राचीन-मंडल को पसंद किया होगा,"[501] Piper और Grudem लिखते हैं। फिर भी बहुत से लोग इसे एक ठोस तर्क के रूप में अवश्य उपयोग करते हैं। जिन लोगों को मैंने यह तर्क देते हुए पढ़ा है, वे कमोबेश एक ही मूल तर्क-पद्धति अपनाते हैं, जिसे मैं आदरपूर्वक उसके सार तक संक्षिप्त करने का प्रयास करूँगा:

इसके दो संभावित कारण हो सकते हैं कि यीशु ने प्रेरितों के रूप में केवल पुरुषों को क्यों चुना, जो बाद में यरूशलेम की कलीसिया की अगुवाई करने वाले थे। पहला यह कि वे एक पितृसत्तात्मक संस्कृति में सामाजिक परंपराओं का पालन कर रहे थे। दूसरा यह कि वे भविष्य की कलीसिया के लिए परमेश्वर की प्रजा की केवल पुरुषों द्वारा अगुवाई के सिद्धांत का आदर्श प्रस्तुत कर रहे थे। हम जानते हैं कि यीशु को सामाजिक परंपराओं को उलटने में कोई समस्या नहीं थी (एक स्त्री से अकेले में बात करने, या सब्त के दिन सेवा करने के बारे में सोचिए), जिसका अर्थ है कि दूसरा कारण ही सही होना चाहिए। इसलिए, यीशु के व्यवहार का अनुसरण करते हुए, कलीसियाओं की पास्टरीय अगुवाई-टीमों में केवल पुरुषों को ही सेवा करनी चाहिए।

पहली बार पढ़ने पर यह तर्क प्रभावशाली लगता है। परन्तु निकट से जाँचने पर यह धूल में मिल जाता है।

आरंभ में ही हम पूछ सकते हैं कि पूरकतावादी विद्वान केवल प्रेरितों के पुरुष होने पर ही क्यों ध्यान केंद्रित करते हैं। क्या हम सचमुच कह सकते हैं कि प्रेरितों के लिए यीशु का नमूना यह तय करे कि हर स्थानीय कलीसिया किस प्रकार के पास्टर या प्राचीन चुने? यीशु ने बारह चुने। क्या सब कलीसियाओं में बारह होने चाहिए? उन्होंने अन्यजातियों को नहीं, यहूदियों को चुना; क्या सब कलीसियाओं को भी ऐसा ही करना चाहिए? यीशु ने दासों को नहीं, स्वतंत्र पुरुषों को चुना; क्या हमें गरीबों को अगुवाई की भूमिकाओं से वंचित करना चाहिए? वे युवा थे; कलीसियाओं को इस विषय में क्या करना चाहिए, क्योंकि यहाँ हम एक अड़चन से टकराते हैं: "प्राचीन" शब्द का अर्थ ही है बूढ़ा व्यक्ति? इन प्रश्नों से जो समस्या उठती है, वह यह है कि यदि हम बारह यहूदी पुरुषों के यीशु के चुनाव को पास्टरों या प्राचीनों के बाद के सब चुनावों के लिए एक शाब्दिक साँचा मान लें, तो हमें यह निष्कर्ष भी निकालना होगा कि यीशु न केवल लिंग के आधार पर पक्षपाती हैं, बल्कि जातीय पृष्ठभूमि के आधार पर (अन्यजाति नहीं, यहूदी) और वर्ग के आधार पर (दास नहीं, स्वतंत्र) भी पक्षपाती हैं। अधिक संभावना यह है कि बारह लोगों का उनका चुनाव छुटकारे के इतिहास में एक विशेष उद्देश्य और एक विशेष क्षण के लिए था।

पूरकतावादी तर्क की मुख्य कमज़ोरी यह है कि यीशु के पुरुषों को चुनने के केवल दो ही कारण नहीं हैं – वास्तव में एक बहुत स्पष्ट प्रतीकात्मक कारण है, और संभवतः कुछ रणनीतिक कारण भी, जिनके कारण स्त्रियों को बारह से अलग रखा गया।

पहले प्रतीकात्मक कारण पर विचार कीजिए। यीशु ने आने वाले मसीह के विषय में पुराने नियम के चित्रों और प्रतिज्ञाओं को पूरा करने के लिए बड़ी कुशलता से प्रतीकात्मक कार्यों का उपयोग किया। उदाहरण के लिए, यीशु अपने अनुयायियों को सिखाने के लिए एक पहाड़ पर चढ़ते हैं, और भीड़ को रोटी खिलाते हैं। ऐसा करके वे दिखाते हैं कि वे सच्चे मूसा हैं – जो पहाड़ पर व्यवस्था पाता है और परमेश्वर की प्रजा को स्वर्ग से रोटी पाने तक ले जाता है। जब यीशु गदहे पर सवार होकर राजधानी में प्रवेश करते हैं, तो वे जकर्याह की उस

501. Recovering Biblical Manhood and Womanhood, पृ. 62

भविष्यद्वाणी को पूरा करते हैं जो उस दीन मसीह के विषय में है जो चुपचाप, किसी की नज़र में आए बिना, अपने घमंडी शत्रुओं को नष्ट करने आता है। जब वे मन्दिर में मेज़ें उलट देते हैं, तो वे चित्र-रूप में यह बताते हैं कि परमेश्वर किस प्रकार इस्राएल की आराधना के भ्रष्टाचार को शुद्ध करने की चेतावनी देते हैं। और उनकी मृत्यु का समय और स्थान भी गहरे प्रतीकात्मक हैं – वे किसी भी दिन और कहीं भी क्रूस पर चढ़ाए जा सकते थे, परन्तु वे फसह के समय उसी नगर में मरते हैं जहाँ हज़ारों मेमने इस बात की स्मृति में बलि किए जा रहे हैं कि परमेश्वर ने पहले अपनी प्रजा को अत्याचार और दासत्व से छुड़ाया था।

अब मेरी बात: बारह यहूदी पुरुषों का यीशु द्वारा चुनाव शायद उनका सबसे प्रभावशाली प्रतीकात्मक कार्य है, जिसे इब्रानी पवित्रशास्त्र से परिचित लोग पहचान लेते, चाहे हम आधुनिक लोग उसे न पहचानें। बारह स्वतंत्र यहूदी पुरुषों को चुनकर वे उस समय के यहूदियों को दिखाते हैं कि वे परमेश्वर की बिखरी हुई और पतित प्रजा को अपनी अगुवाई में फिर से गठित कर रहे हैं। यीशु की अपनी स्पष्ट व्याख्या के अनुसार,[502] वे नए इस्राएल के, या इस्राएल के बारह गोत्रों के, और विशेष रूप से याकूब के उन बारह पुत्रों के प्रतीक हैं जिनसे पूरा राष्ट्र निकला। यह भी कोई संयोग नहीं है कि यीशु अपने अंतिम भोज के समय बारह की भूमिका को इस्राएल के न्यायियों के रूप में घोषित करते हैं[503] – यदि कभी कोई घटना प्रतीकों से भरी थी, तो वह यही थी।

कहने का अर्थ यह है कि यीशु चाहते थे कि इस्राएल यह समझे कि बारह यहूदी पुरुष चेलों की उनकी छोटी सी टीम मसीह के युग में परमेश्वर की प्रजा का अग्रिम दल थी। उनका पुरुष प्रेरितों को चुनना इस बात से मेल खाता है कि उन्होंने बारह ही चुने, और यह भी कि वे यहूदी और स्वतंत्र हों।[504] वे उस किसी भी अगुवाई-टीम के बारे में बिलकुल कुछ नहीं कह रहे जो बाद में उभरने वाली किसी स्थानीय कलीसिया की अगुवाई करेगी। वास्तव में, स्थानीय कलीसिया के विषय में यीशु के एकमात्र उल्लेख में वे केवल कुछ अगुवों को नहीं, बल्कि पूरे समुदाय को दिए गए आत्मिक अधिकार पर ज़ोर देते हैं।[505]

अपने बाद के दृष्टिकोण से शायद हम चाहते कि यीशु ने अपनी टीम को थोड़ा और मिश्रित बनाया होता, परन्तु हमें यह स्वीकार करना होगा कि यह प्रतीकात्मक महत्व मुख्य रूप से अन्यजातियों के लिए नहीं था (जैसे हम में से अधिकांश, जिन तक बाद में बाकी संसार में सुसमाचार पहुँचा), बल्कि यीशु के मूल मिशन-क्षेत्र के लिए था – अर्थात् यहूदियों के लिए, जिनका विश्व-दृष्टिकोण पूरी तरह इब्रानी बाइबल से गढ़ा गया था। हम शायद

502. मत्ती 19:28 और लूका 22:30 में
503. लूका 22:14-30
504. Michael Bird “Evangelical Theology” में उन लोगों का महत्व समझाता है जिन्हें यीशु ने अपने मिशन में आरंभ में लक्ष्य बनाया – अर्थात् इस्राएल के यहूदी: “12 की संख्या इस्राएल के 12 गोत्रों का प्रतीक थी। परन्तु इस्राएल में हर कोई जानता था कि यहूदी गोत्रों का संघ बहुत पहले ही समाप्त हो चुका था। आठवीं सदी में अश्शूरी उत्तर के दस गोत्रों को बंधुआई में ले गए थे, और बचे हुए दो गोत्र छठी सदी में बेबीलोन चले गए थे, और उनमें से केवल एक बचा हुआ भाग ही यहूदिया लौटा था। एक बड़ी आशा यह थी कि जब छुटकारे का युग आरंभ होगा, तो उसके साथ एक नवीकृत यहूदी राज्य में 12 गोत्र फिर से एक हो जाएँगे (जैसे, यशायाह 34:10; 43:5; 56:8)। 12 चेलों को चुनकर ... यीशु वास्तव में यह कह रहे थे कि इस्राएल की पुनर्स्थापना अब उनके और उनके 12 अनुयायियों के चारों ओर आरंभ हो चुकी है। वे नए इस्राएल का अग्रिम दल थे। इसी कारण यीशु ने एक नवीकृत राष्ट्र पर राज्य करने के लिए 12 चेलों को चुना (मत्ती 19:28/लूका 22:30), इसी कारण उन्होंने अपनी सेवकाई केवल इस्राएल पर केंद्रित की (मत्ती 10:5-6; 15:24), और इसी कारण उन्होंने घोषणा की कि बहुत से लोग शीघ्र ही पूर्व और पश्चिम से आकर इस महत्वपूर्ण घटना में सम्मिलित होंगे (मत्ती 8:10-12/लूका 13:28-30)।”
505. मत्ती 18:17

चाहते कि यीशु छह पुरुषों और छह स्त्रियों को, या छह यहूदियों और छह अन्यजातियों को, या छह बूढ़ों और छह युवाओं को, या छह दासों और छह स्वतंत्र लोगों को बुलाते, परन्तु तब जिन लोगों के लिए यह प्रतीक था, उनके लिए उसका अर्थ पूरी तरह खो जाता।

शायद इस बात का सबसे बड़ा संकेत कि यीशु को केवल भविष्य के अगुवे तैयार करने की ही नहीं, बल्कि प्रतीकात्मकता की चिंता थी, यह तथ्य है कि बारह में से अधिकांश कुछ ही वर्षों के बाद प्रमुख सेवकाई से ओझल हो जाते हैं। निश्चय ही पतरस, यूहन्ना और याकूब प्रेरितों के काम में प्रमुख अगुवे बने रहते हैं, परन्तु बाकी प्रेरितों का नाम फिर कभी नहीं लिया जाता। प्रतीकात्मक प्राथमिकता का एक और प्रमाण यह है कि प्रेरितों के काम 1 में पतरस यहूदा का स्थान लेने वाले को ढूँढ़ने के लिए इतना उत्सुक है। इसलिए नहीं कि वह सोचता है कि 11 लोग वह काम नहीं कर सकते जो 12 कर सकते हैं। बल्कि इसलिए कि वह जानता है कि यह महत्वपूर्ण है कि बारह पुरुष यरूशलेम के सामने खड़े होकर उसे उसके मसीह के पास बुलाएँ। यही कारण है कि नगर में कलीसिया के पहले उपदेश में हमें बताया गया है कि जब पतरस ने सुसमाचार सुनाया, तब "पतरस उन ग्यारह के साथ खड़ा हुआ"।[506] यदि लिखा होता, "पतरस उन दस के साथ खड़ा हुआ", तो प्रतीकात्मक संदेश – जो यीशु के लिए इतना महत्वपूर्ण था – खो जाता।

आरंभ में पतरस और वे ग्यारह यरूशलेम की कलीसिया की अगुवाई-टीम के रूप में काम करते हैं, परन्तु वे यह भी समझते हैं कि उनका काम नई कलीसिया के पास्टर होने से अधिक, नए इस्राएल के अग्रिम दल के रूप में यहूदियों को सुसमाचार सुनाना है। यही कारण है कि जब उनके काम का बोझ बढ़कर उसमें पास्टरीय चुनौतियों से निपटना भी सम्मिलित हो जाता है, तो वे कलीसिया को सात अगुवे चुनने देते हैं जो मिलकर कलीसिया की अगुवाई करें।[507] पास्टरीय अगुवाई के व्यावहारिक पहलुओं से अपने आप को मुक्त रखने का यह संकल्प इस तथ्य से भी पुष्ट होता है कि कुछ समय बाद प्रेरित नहीं, बल्कि प्राचीन यरूशलेम की कलीसिया की अगुवाई करते हैं। ध्यान दीजिए कि प्रेरितों के काम की पुस्तक स्पष्ट करती है कि बारह इन बाद के प्राचीनों से एक अलग समूह हैं।[508] तो फिर प्रश्न उठता है: जब बारह को प्राचीनों से इतना अलग बताया गया है, तो पूरकतावादी विद्वान प्रेरितों के पुरुष होने को प्राचीनों के पुरुष होने के तर्क के रूप में क्यों उपयोग करते हैं?[509]

जैसे-जैसे सुसमाचार इस्राएल से बाहर फैलने लगता है, परमेश्वर बारह से आगे प्रेरितों का एक बड़ा घेरा खड़ा करते हैं, जिसमें पौलुस, बरनबास और सीलास भी हैं। यह बड़ा समूह अब बारह में निहित प्रतीकात्मक संदेश को नहीं ढोता। इसलिए इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि एक स्त्री, यूनिया, उनकी गिनती में सम्मिलित है।[510] (उसके विषय में और अधिक अगले अध्याय में।)

प्रतीकात्मकता को एक ओर रख दें, तो बारह की अपनी टीम के लिए यीशु द्वारा केवल पुरुषों को चुनने के संभवतः कुछ रणनीतिक कारण भी हो सकते हैं। यद्यपि यीशु को कभी-कभी सामाजिक परंपराओं को तोड़ने

506. प्रेरितों के काम 2:14
507. प्रेरितों के काम 6:1-6
508. देखें प्रेरितों के काम 11:30; 15:2
509. वास्तव में, यीशु भविष्य की कलीसियाओं के प्राचीनों के विषय में कुछ भी नहीं कहते। जिन प्राचीनों के विषय में वे कभी बोलते हैं – और बहुत बोलते हैं – वे यरूशलेम के दुष्ट प्राचीन (पुरनिये) हैं, जो अंत में उन्हें क्रूस पर चढ़वाएँगे।
510. रोमियों 16:7

में कोई आपत्ति नहीं थी, इसका अर्थ यह नहीं कि वे ऐसा मनमाने ढंग से करते थे। यीशु अपने प्रयासों में अक्सर रणनीतिक थे – उदाहरण के लिए, जो कैसर का है वह कैसर को देने में;[511] अपनी सेवकाई के आरंभिक भागों में अपने मसीह होने की सार्वजनिक पहचान को कम रखने के अपने निर्णय में; और मिशन पर कलीसिया के चरण-दर-चरण भौगोलिक विस्तार की योजना बनाने में।[512] स्वयं यीशु कबूतर की तरह भोले रहे होंगे, परन्तु जो उन्होंने सिखाया उसका पालन करते हुए वे "साँपों की तरह चतुर" भी थे, और इस प्रकार भोले-भाले नहीं, बल्कि व्यावहारिक सोच वाले और रणनीतिक थे।

क्योंकि यीशु के मिशन की प्राथमिकता पहले इस्राएल तक पहुँचना थी,[513] इसलिए शायद अपने प्रेरितों के रूप में अन्यजातियों के बजाय यहूदियों को चुनना अधिक रणनीतिक था, और उन्होंने यही किया। केवल यहूदी पुरुषों का उनका चुनाव इस्राएल तक पहुँचने की उनकी तात्कालिक प्राथमिकताओं के साथ बेहतर मेल खाता है। इसके अतिरिक्त, अत्यंत पितृसत्तात्मक इस्राएल पुरुषों की सार्वजनिक सेवकाई को अधिक सरलता से ग्रहण करता। अत्यंत पितृसत्तात्मक संसार में स्त्रियों को आंदोलन की वरिष्ठ, सार्वजनिक अगुवा बनाना संभवतः नए आंदोलन और उसके संदेश की विश्वसनीयता पर अनावश्यक संदेह डाल देता। (सोचिए, पुनरुत्थान के दिन यीशु के चेले भी एक स्त्री की गवाही को स्वीकार करने में कितने अनिच्छुक थे – तो जो यीशु के अनुयायी नहीं थे, वे कितने अधिक विरोधी होते?) इसी कारण, प्रेरितों के काम की पुस्तक में पुनरुत्थान के मुख्य सार्वजनिक गवाह पुरुष प्रेरित हैं।

हम पक्के तौर पर नहीं कह सकते, परन्तु कुछ और व्यावहारिक कारण भी हैं जिनकी वजह से यीशु ने पुरुषों को चुना होगा: यीशु ने ऐसे चेले बुलाए जो फिर उन्हें रब्बी कहते थे, और इस तरह वे जान-बूझकर रब्बियों द्वारा चेले बनाने की यहूदी संस्था को अपना रहे थे – और वह संयोग से केवल पुरुषों का काम था। इसके अलावा, आरंभिक प्रेरिताई में मिशन के लिए अपने परिवार को छोड़ना और शहीद होने की प्रबल संभावना शामिल थी, और शायद यीशु माताओं से यह माँगना नहीं चाहते थे।[514]

इससे भी बढ़कर, जो बात हम यीशु के व्यवहार से अधिक से अधिक अनुमान भर लगाते हैं, उसे हमें अटल नियम नहीं बनाना चाहिए। यीशु ने उन लोगों के लिंग के बारे में कभी कुछ भी नहीं कहा जो आगे चलकर

511. मरकुस 12:17
512. प्रेरितों के काम 1:8
513. देखें मत्ती 10:5-6; 15:24।
514. उदाहरण के लिए, लूका 14:26 में पतियों को छोड़ने का कोई उल्लेख नहीं है, केवल पत्नियों और बच्चों का, और यीशु जानते थे कि प्रेरिताई का परिणाम संभवतः शहादत होगा (कलीसियाई परंपरा के अनुसार बारह प्रेरितों में से ग्यारह शहीद हुए)। यद्यपि स्त्रियाँ कभी-कभी उनकी कुछ सेवकाई-यात्राओं में उनके साथ जाती थीं (लूका 8:1-3), फिर भी शायद यीशु ने माताओं से – जो उस संस्कृति में बच्चों का मुख्य पालन-पोषण करती थीं – यह माँगना बहुत अधिक समझा कि वे अपने बच्चों को स्थायी रूप से छोड़कर उनके साथ यात्रा करें। यीशु जानते थे कि आगे चलकर उनके कुछ प्रेरित इस्राएल से बहुत दूर तक यात्रा करेंगे। प्राचीन संसार में स्त्रियों का यात्राएँ करना कहीं अधिक दुर्लभ था। वे अधिक ख़तरे में होती थीं, और घर पर घरेलू कामों और बच्चों के पालन-पोषण की ज़िम्मेदारियों से कहीं अधिक बँधी होती थीं। इसलिए यह आश्चर्य की बात नहीं कि नए नियम के पुनरुत्थान के बाद वाले भाग में केवल चार नामित स्त्रियाँ हैं जिनके बारे में हम निश्चित रूप से जानते हैं कि उन्होंने यात्राएँ कीं: पतरस की पत्नी, उसकी सेवकाई के बाद के समय में (क्या तब तक बच्चे बड़े हो गए थे?), फीबे, एक धनी संरक्षिका जो निःसंदेह अंगरक्षकों का ख़र्च उठा सकती थी, और यूनिया तथा प्रिस्किल्ला, जो दोनों अपने पतियों के साथ यात्रा करती थीं (किसी बच्चे का उल्लेख नहीं है)। रोचक बात यह है कि क्रिसोस्टम (Chrysostom) मत्ती 23:14 पर अपने प्रवचन 73 (Homily 73) में उन बहुत थोड़ी स्त्रियों का उल्लेख करता है, जिनमें प्रिस्किल्ला भी थी, जिन्होंने "पुरुषों जैसे साहस के साथ" यात्राएँ कीं। उन दिनों मिशनरी यात्रा, सेना में लड़ने की तरह, पुरुषों में मौजूद शारीरिक बल के अधिक अनुकूल थी।

उनकी बनाई जा रही कलीसिया में अगुवाई करेंगे। वास्तव में, कलीसिया की अगुवाई के बारे में उनकी स्पष्ट शिक्षा – जो आज कलीसियाओं में पास्टरीय अगुवाई की प्राथमिकताओं की नींव बन गई है – इस बात पर केंद्रित थी कि सेवक-भाव को ही अगुवाई का आधार और मुख्य ज़ोर बनाया जाए।[515] उन्होंने स्पष्ट रूप से सुसमाचार प्रचार करने और ऐसे चेले बनाने को भी प्राथमिकता दी जो "उन सब बातों को मानें जिनकी उन्होंने आज्ञा दी थी"[516] – पर देखिए, सेवकाई के इन दोनों कामों में से कोई भी पुरुषों तक सीमित नहीं है, ठीक वैसे ही जैसे वे मूल बारह तक सीमित नहीं हैं।

यीशु द्वारा बारह के चुनाव में अपने विचार और अनुमान पढ़ लेना उस तरीके से मेल नहीं खाता जिससे यीशु ने स्त्रियों को सामर्थ के साथ सेवकाई के लिए मुक्त किया। यह पाठ को असंगत ढंग से पढ़ने पर भी आधारित है (ऐसा पढ़ना बारह की बाकी सब अंतर्निहित विशेषताओं को अनदेखा कर देता है और केवल उनके लिंग को पकड़ लेता है)। यीशु क्रांतिकारी रूप से स्त्रियों के पक्ष में थे, और सेवकाई करने वाली स्त्रियों के पक्ष में थे – इतिहास में उनसे पहले के किसी भी सार्वजनिक व्यक्ति से कहीं अधिक। उन्होंने उस पितृसत्ता को व्यवस्थित ढंग से तोड़ा जो उनकी बहनों के पंख कतरती थी, और उनके लिए केवल-पुरुषों वाली भूमिकाओं में प्रवेश के द्वार खोले, जहाँ कहीं मिशन उन्हें ले गया। इसलिए पूरकतावादी गलत हैं जब वे चुप्पी से यह कारण निकालते हैं कि यीशु ने स्त्रियों को बारह से बाहर रखा – ऐसा कारण जिसे यीशु ने न तो कभी स्पष्ट रूप से बताया और न ही उसकी ओर कोई संकेत किया। इस तरह के बहिष्कार को सब युगों के लिए स्त्रियों की अगुवाई पर रोक तक फैला देना यीशु के उस व्यवहार का घोर खंडन है, जिसमें वे बार-बार पितृसत्तात्मक मान्यताओं की अवहेलना करते हुए स्त्रियों को सेवकाई के लिए मुक्त करते थे, और लिंग के अनुसार "उचित" क्षेत्रों की ज़रा भी चिंता नहीं करते थे।

स्त्रियाँ सबसे पहले

यद्यपि यीशु द्वारा 12 पुरुषों को चुने जाने का तथ्य, अपने आप में अकेले, स्त्रियों की अगुवाई के समर्थन में प्रयोग नहीं किया जा सकता, परन्तु जब कोई यह जान लेता है कि उन्होंने 12 यहूदी पुरुषों को क्यों चुना, और यह भी कि यीशु ने पहली सदी के इस्राएल में मौजूद लिंग-आधारित सीमाओं की परवाह किए बिना स्त्रियों को किस तरह सेवकाई के लिए मुक्त किया, तब इस तथ्य को स्त्रियों की अगुवाई के विरुद्ध तर्क के रूप में भी प्रयोग नहीं किया जा सकता।

जो संसार स्त्रियों को हमेशा सबसे पीछे रखता था, उसमें यीशु ने उन्हें बार-बार सबसे आगे रखा। एक स्त्री ही थी जिसने सबसे पहले उनके देहधारण के विषय में सुना और सुसमाचार सुनाया;[517] पहली सामरी विश्वासी और सार्वजनिक सुसमाचार प्रचारक भी एक स्त्री थी;[518] पहली अन्यजाति विश्वासी भी;[519] यीशु के "पुनरुत्थान और जीवन" होने का प्रकाशन सबसे पहले पाने वाली भी;[520] यीशु के मिशन में क्रूस की केंद्रीय

515. मरकुस 10:42-45
516. मत्ती 28:19
517. लूका 1:32-35
518. यूहन्ना 4:7-42
519. मत्ती 15:21-28
520. यूहन्ना 11:23-27

भूमिका को सबसे पहले समझने वाली भी;[521] और यीशु के पुनरुत्थान की सबसे पहली गवाह भी।[522] पूरकतावादी विद्वान "पहले आदम बनाया गया, फिर हव्वा" पर बहुत ज़ोर देते हैं, और गलत ढंग से पहले आने को उचित अगुवा होने के बराबर मान लेते हैं – तो मैं सोचता हूँ कि इन सब "पहलों" के बारे में वे क्या कहेंगे।

और फिर भी कलीसिया ने सदियों तक यहूदा के सिंह के भाइयों के साथ सिंहों जैसा व्यवहार किया है, जबकि उनकी बहनों को पालतू बनाकर बिल्ली के बच्चों जैसा बना दिया। एक लंबी, दुखद परंपरा के बावजूद, जिसमें केवल पुरुषों को ही प्रभुता के योग्य समझा जाता था, हमारे संसार और हमारी कलीसिया को ऐसे मसीही पुरुषों और स्त्रियों, दोनों की आवश्यकता है जो सेवकाई का अधिकार काम में लाएँ।

स्त्रियों को दबाने वाले संसार में यीशु का स्त्रियों के साथ व्यवहार और उन्हें शामिल करना इतना आश्चर्यजनक रूप से प्रगतिशील था कि मुझे यह बात बिल्कुल समझ नहीं आती कि यीशु अब हमें पीछे लौटने के लिए बुलाएँगे – विश्व-इतिहास के ऐसे समय में जब स्त्रियों के अगुवाई और शिक्षा के वरदानों को आख़िरकार पुरुषों के वरदानों के बराबर मानकर सराहा और मुक्त किया जा रहा है।

इसके अलावा, यीशु ने स्त्री की पहचान और सेवकाई को जो गरिमा दी, वह आज समाज में स्त्रियों के उत्थान और मुक्ति का एक प्रमुख मूल कारण है। मेरा सुझाव है कि मसीहियों को इसे समाज पर अपने सुसमाचार के दीर्घकालिक प्रभाव के रूप में अपना श्रेय मानना चाहिए, न कि पूरकतावादियों के चाहे जितने भी दोषपूर्ण तर्कों के आधार पर इसका विरोध करना चाहिए। वास्तव में, स्त्रियों को इन तर्कों की आँखों से देखना उन्हें वैसे देखने से चूक जाना है जैसे यीशु उन्हें देखते थे।

ध्यान दीजिए, इससे हम उन्हें वैसे भी नहीं देख पाते जैसे सबसे आरंभिक कलीसियाओं में बहुत से लोग उन्हें देखते थे।

521. मत्ती 26:7-11
522. यूहन्ना 20:16

12

आरंभिक कलीसिया में शक्तिशाली स्त्रियाँ

"जहाँ आज के विश्वासी स्त्रियों की नियुक्ति (ordination), स्त्रियों द्वारा पुरुषों को शिक्षा देने और ऐसे ही विषयों पर बँटे हुए हैं, वहीं [रोमियों 16] संकेत देता है कि ऐसी आपत्तियाँ पौलुस को उलझन में डाल देतीं ... [जिसे] स्त्रियों के शिक्षक या अगुवे, सुसमाचार की प्रचारक या मिशनरी होने से कोई समस्या नहीं है। क्या नए नियम के समय में स्त्रियाँ ऐसी सेवकाइयाँ करती थीं जिन्हें बाद में 'पद' कहा गया? सारे प्रमाण बताते हैं कि उत्तर है: हाँ।" William Witt[523]

प्रोक्रस्टीज़ की खाट

क्या आपने प्रोक्रस्टीज़ (Procrustes) के बारे में सुना है? यूनानी कथा के अनुसार, वह थके-माँदे यात्रियों का आतिथ्य करता था और उन्हें अपने घर में एक खाट पर सोने देता था। जब वे सो जाते, तो वह या तो उनके अंगों को खींचकर लंबा कर देता या उनके पैर काट देता, जब तक कि उनके शरीर उसकी खाट पर ठीक-ठीक न समा जाएँ। इसी से तर्क-वितर्क के क्षेत्र में एक मुहावरा निकला है, जिसे प्रोक्रस्टीज़ की खाट कहा जाता है: इसमें व्यक्ति किसी विषय पर एक मत अपना लेता है, और फिर उस मत को ऐसी दूसरी जानकारियों पर ज़बरदस्ती बैठा देता है जो वास्तव में उस मत को गलत सिद्ध करती हैं। वह ऐसा उन जानकारियों में ऐसे विचार डालकर करता है जो उनमें हैं ही नहीं – या तो उन्हें खींचकर लंबा करके या उनके कुछ हिस्से काटकर।[524]

जब मैंने पुराने नियम, सुसमाचारों और नए नियम के बाकी हिस्सों में सेवकाई करने वाली स्त्रियों के बाइबल के वृत्तांतों के विरुद्ध पूरकतावादी प्रतितर्कों का अध्ययन किया, तो मुझे यह देखकर गहरा आश्चर्य हुआ कि पूरकतावादी विद्वान मरियम, हुल्दा, दबोरा, मरियम मगदलीनी, फीबे, प्रिस्किल्ला और यूनिया जैसी स्त्रियों की भूमिका और योगदान को घटाने में कितनी अथक मेहनत करते हैं। निश्चय ही, वे ऐसा किसी कारण से करते

523. William Witt, Icons of Christ, पृ. 99
524. इसे अधिकतर "विशेष पैरवी का तर्कदोष" (fallacy of special pleading) कहा जाता है, जिसमें कोई व्यक्ति यह स्वीकार करने के बजाय कि विरोधी तथ्य उसके पहले से बने विश्वास को वैध रूप से चुनौती देते हैं, इन तथ्यों को "समझाकर टालने" की कोशिश करता है।

हैं। मेरी राय में, 1 तीमुथियुस 2:12 की उनकी व्याख्या सेवकाई करने वाली सब स्त्रियों के लिए प्रोक्रस्टीज़ की खाट है। इस पद को गलत पढ़कर, मानो वह कहता हो, "मैं मसीही स्त्रियों को मसीही पुरुषों को अधिकार के साथ शिक्षा देने या उन पर पास्टरीय अधिकार चलाने की अनुमति नहीं देता," वे इसका प्रयोग न केवल आज स्त्रियों की सेवकाई को सीमित करने के लिए करते हैं, बल्कि बाइबल की हर स्त्री की सेवकाई को सीमित करने और उसे नए ढाँचे में ढालने के लिए भी करते हैं। पूरकतावादी एक बात कभी स्वीकार नहीं कर सकते: कि बाइबल के समय की कोई विश्वासी स्त्री ठीक वही काम करे जिसे उनकी व्याख्या के अनुसार वह नहीं कर सकती – यानी परमेश्वर उसे किसी पुरुष की आत्मिक अगुवाई करने या उसे शिक्षा देने के लिए प्रयोग करें। बाइबल के प्रमाणों की ठीक से जाँच होने से पहले ही पूरकतावादी यह तय कर चुका होता है कि दबोरा परमेश्वर के लोगों की सार्वजनिक अगुवा नहीं हो सकती थी, या (जैसा हम इस अध्याय में देखेंगे) प्रिस्किल्ला अपने पति के साथ कलीसियाओं की पास्टर नहीं रही हो सकती थी और उन्हें शिक्षा नहीं दे सकती थी, या यूनिया वास्तव में नई राह खोलने वाली एक स्त्री प्रेरित नहीं हो सकती थी – और वह भी एक उत्कृष्ट प्रेरित।

इन और बाइबल की दूसरी स्त्रियों के अपने अध्ययन में, मैं उन्हें सचमुच तभी "देख" पाया जब मुझे समझ आया कि समस्या उनकी सेवकाई के आकार में नहीं, बल्कि उस खाट के मनमाने आकार में थी जो 1 तीमुथियुस 2:12 की पूरकतावादी व्याख्या है। इसी कारण पूरकतावादी विद्वान तरह-तरह के ऐसे अनुमान लगाते हैं जो हमारे सामने उपलब्ध बाइबल के तथ्यों को "समझाकर टाल देते" हैं। उदाहरण के लिए, प्रिस्किल्ला की सेवकाई के बारे में Kevin De Young का सार सुनिए: "वह विद्वान, बुद्धिमान और प्रभावशाली रही होगी, परन्तु इसका कोई संकेत नहीं है कि उसने पुरुषों पर शिक्षा देने का अधिकार चलाया।"[525]

1 तीमुथियुस 2 चाहे जो कहता हो, हमें उसकी व्याख्या बाकी पवित्रशास्त्र के प्रकाश में करनी होगी, और इसका अर्थ है "बाइबल के पूरे संग्रह (कैनन) के छुटकारे वाले चाप, यीशु की सेवकाई की दिशा, और आरंभिक कलीसिया के जीवन के उस चित्र को, जो हमें स्वयं पौलुस से मिलता है," गंभीरता से लेना।[526]

यह पुस्तक लिखने की मेरी प्रेरणा का एक हिस्सा यह था कि मैं आज और कल की कलीसियाओं में अपनी बहनों के अगुवाई और शिक्षा के वैध वरदानों का बचाव करना चाहता था। फिर भी जब मैंने अध्ययन किया कि पूरकतावादी विद्वान बाइबल की स्त्रियों के अगुवाई और शिक्षा के वरदानों को किस तरह काट-छाँट देते हैं, तो मैंने पाया कि मेरे भीतर पवित्रशास्त्र की अपनी बहनों का भी बचाव करने का जोश जाग उठा है।

क्या हमें यह मान लेना चाहिए कि प्रिस्किल्ला किसी पुरुष को शिक्षा देते समय यह पक्का कर रही थी कि वह अपने पति के आवरण के नीचे रहे, या यह सब निजी तौर पर और किसी औपचारिक मसीही सभा के बाहर हो रहा था, या उसने सिद्धांत संबंधी किसी अधिकार के साथ बात नहीं की, बल्कि उसे कलीसिया के पुरुष पास्टरों के पास भेज दिया जो सबसे अच्छी तरह जानते थे? क्या हमें यह मान लेना चाहिए कि दबोरा ने इस तरह अगुवाई की कि उसकी अगुवाई निजी रहे, या वह बाराक के नीचे दबकर रही, जो अगुवे के रूप में परमेश्वर की असली पसंद था? नहीं, प्रिस्किल्ला, दबोरा और दूसरों की सेवकाइयों का वर्णन करने वाले अंशों

525. स्रोत: www.bit.ly/3nXd763
526. Amy Etikson ऐसा कहती है। स्रोत: www.bit.ly/2ZQo0Pj (पृ. 61)

को सीधे-सादे ढंग से पढ़ने पर यह दिखता है कि या तो वे परमेश्वर की तथाकथित पूरकतावादी पसंद से पापपूर्ण रूप से भटकी हुई थीं, या – जो कहीं अधिक संभव है – बाइबल की इन स्त्रियों को किसी ऐसे दिव्य नियम का बिल्कुल भी पता नहीं था कि कोई स्त्री किसी पुरुष को आत्मिक शिक्षा न दे या उसकी अगुवाई न करे।

कोई स्त्री पास्टर नहीं?

प्रेरितों के काम की पुस्तक पढ़िए, और आप ज़रूर ध्यान देंगे कि सुसमाचार के फैलने के हर चरण में – जब वह यरूशलेम में, फिर सामरिया में, और फिर एक-एक करके फिलिप्पी, थिस्सलुनीके, बिरीया, एथेंस और कुरिन्थुस के यूरोपीय नगरों में फैलता है – स्त्रियों का बार-बार प्रमुख विश्वासियों के रूप में उल्लेख होता है।[527] परन्तु क्योंकि लूका इन आरंभिक कलीसियाओं की कहानी इस तरह सुनाता है कि उसका ध्यान पहले बारह के अगुवे पतरस की सेवकाई पर (प्रेरितों के काम 1-12 में), फिर प्रेरितों के व्यापक दायरे में सबसे सफल पौलुस पर (प्रेरितों के काम 13-28 में) रहता है, और उदाहरण के लिए स्तिफनुस, फिलिप्पुस और बरनबास पर गौण रूप से ध्यान दिया जाता है, इसलिए सरसरी तौर पर बाइबल पढ़ने वाले अधिकतर लोग उन शक्तिशाली सेवकाई-भूमिकाओं पर ध्यान नहीं देते जो दूसरे लोगों ने – जिनमें बहुत सी स्त्रियाँ भी थीं – निभाईं।

पूरकतावादी विद्वान कम से कम इन अधिकांश स्त्री-योगदानों से परिचित हैं – वे इसके बजाय इस बात पर ध्यान देते हैं कि इनमें से किसी भी स्त्री को कलीसियाओं में विशेष रूप से प्राचीन या पास्टर नहीं कहा गया है। वे कहते हैं कि इन स्त्रियों ने सुसमाचार के प्रसार या कलीसिया की बढ़ोतरी में चाहे जितना भी किया हो, उन्होंने किसी कलीसिया में वरिष्ठ पास्टरीय या शिक्षा का अधिकार नहीं चलाया। या उन्हीं के शब्दों में – और यहाँ Schreiner का प्रोक्रस्टीज़ वाला कथन है: "कलीसिया में स्त्रियों की सेवकाई उल्लेखनीय और महत्वपूर्ण थी, परन्तु उसने पुरुषों की अगुवाई का स्थान कभी नहीं लिया; बल्कि वह पुरुषों की अगुवाई के सहारे के रूप में काम करती थी।"[528]

इस अध्याय में मैं इस दावे का उत्तर आरंभिक कलीसिया में स्त्रियों के कुछ शक्तिशाली योगदानों का सर्वेक्षण करके दूँगा। मैं पूरकतावादियों के इन दावों को भी सीधे चुनौती दूँगा कि नए नियम में किसी भी स्त्री कलीसिया-अगुवे का नाम नहीं मिलता; और यह कि कोई भी स्त्री परमेश्वर के राज्य के लिए योगदान के सर्वोच्च स्तरों पर दूसरे पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर खड़ी नहीं हुई।

पर पहले "प्राचीन" और "पास्टर" शब्दों के बारे में एक छोटा सा स्पष्टीकरण। आज कोई कलीसिया शासन का जो रूप अपनाती है, उसके अनुसार हम पास्टरों और प्राचीनों के बारे में पदों को अलग-अलग ढंग से पढ़ते हैं। यद्यपि कुछ संप्रदाय "पास्टर" और "प्राचीन" की भूमिकाओं को अलग करते हैं, इस अध्याय में मैं यह मानकर चलता हूँ कि नया नियम "प्राचीन", "पास्टर" और "अध्यक्ष" शब्दों का एक-दूसरे के स्थान पर

527. प्रेरितों के काम 5:14; 8:12; 16:13-15; 17:4,12,34 और 18:2।
528. "Recovering Biblical Manhood and Womanhood", पृ. 216।

प्रयोग करता है, ताकि एक ही व्यक्ति के अलग-अलग कार्यों को बताए।[529]

पुराना और नया नियम दोनों भेड़ों की देखभाल करने वाले चरवाहे के रूपक को आत्मिक अगुवे की भूमिका पर लागू करते हैं। यद्यपि बाइबल में चरवाहिनें भी थीं,[530] फिर भी किसी तरह पूरकतावादी प्रायः पक्का मानते हैं कि बाइबल में कोई स्त्री पास्टर (यानी चरवाहा) नहीं है। एक दशक तक मैं अपनी कलीसिया के नए सदस्यों को यह समझाता रहा कि हम स्त्रियों को पास्टर के रूप में नियुक्त क्यों नहीं करते: "नए नियम में कोई स्त्री पास्टर या प्राचीन नहीं है, और हम कलीसिया चलाने के अपने ढंग में पवित्रशास्त्र से आगे नहीं जाना चाहते।" यदि मुझे ठीक याद है, तो मैंने यह एक प्रसिद्ध धर्मविज्ञानी से लिया था, जिसने इसे और भी ज़ोर देकर कहा था: "नए नियम में कहीं भी किसी स्त्री प्राचीन का उल्लेख नहीं है। आप यह कहकर आपत्ति करना चाहेंगे कि यह चुप्पी से निकाला गया तर्क है। हाँ, है। परन्तु यह कान फाड़ देने वाली चुप्पी है।"[531]

अपने शोध के दौरान मुझे यह जानने की जिज्ञासा हुई कि आरंभिक कलीसिया में नाम से उल्लिखित पुरुष प्राचीन या पास्टर कौन थे। मुझे कम से कम दस मिलने की उम्मीद थी। कितना बड़ा झटका लगा जब केवल एक नामित प्राचीन मिला: प्रेरित पतरस "संगी प्राचीनों" को संबोधित करता है,[532] और इससे वह शायद यह संकेत देता है कि अपनी सेवकाई के बाद के समय में वह साथ-साथ प्राचीन की भूमिका भी निभाने लगा होगा, यद्यपि वह मुख्य रूप से प्रेरित था – हालाँकि कुछ बाइबल विद्वान सुझाते हैं कि वह शायद अपने पद की नहीं, केवल अपनी आयु की बात कर रहा था।

तुरंत जो बात स्पष्ट हो जाती है वह यह है: नया नियम पतरस के अलावा किसी भी पास्टर या प्राचीन का नाम नहीं देता, और शायद वह भी प्राचीन न हो! फिर भी हम जानते हैं कि नए नियम में उल्लिखित बहुत सी, या शायद अधिकांश, कलीसियाओं की अगुवाई आगे चलकर ऐसे लोगों की एक टीम करती थी।[533] संभवतः पतरस को छोड़कर किसी को भी प्राचीन नाम से क्यों नहीं बताया गया, यह एक रहस्य है। स्पष्ट है कि यह जानकारी नए नियम के विभिन्न लेखकों के दायरे और उद्देश्य से बाहर थी। फिर भी हम सोचते रह जाते हैं: नए नियम की आरंभिक कलीसियाओं में नाम से उल्लिखित बहुत से लोगों में से कौन-कौन संभवतः पास्टर या प्राचीन थे? धन्यवाद की बात है कि इस बात के कुछ प्रमाण हैं कि वे कौन रहे होंगे।

संभावित प्राचीनों को पहचानने की कसौटियाँ

मुझे नहीं लगता कि कोई भी पूरकतावादी विद्वान निश्चित रूप से कह सकता है कि आरंभिक कलीसिया में कोई स्त्री प्राचीन नहीं थी। अधिक से अधिक वे यह कह सकते हैं कि ऐसी कोई रही हो, इसकी संभावना कम

529. देखें प्रेरितों के काम 20:17, 28; 1 पतरस 4:1-2 और तीतुस 1:5-7।
530. उत्पत्ति 29:9; श्रेष्ठगीत 1:5-8
531. Sam Storms. स्रोत: www.bit.ly/3CL3GNt
532. 1 पतरस 5:1-2। यीशु को "हमारे प्राणों का पास्टर (रखवाला) और अध्यक्ष" कहा गया है (1 पतरस 2:25), परन्तु यह पूरी कलीसिया पर उनकी अद्वितीय अगुवाई की बात है। यूहन्ना एक व्यक्ति को लिखते हुए स्वयं को "प्राचीन" कहता है (2 यूहन्ना 1:1), जो अधिक संभवतः एक अनुभवी प्रेरित के रूप में उसकी आयु और बुद्धि की ओर संकेत है।
533. देखें प्रेरितों के काम 14:23, 1 थिस्सलुनीकियों 5:12 और 1 तीमुथियुस 5:17।

है। परन्तु इस मत के विपरीत, मैं अब यह तर्क देने जा रहा हूँ कि इस बात की संभावना बहुत अधिक है कि ऐसी स्त्रियाँ थीं।

यद्यपि न तो लूका प्रेरितों के काम में और न पौलुस अपनी पत्रियों में किसी प्राचीन या पास्टर का नाम लेते हैं, फिर भी वे इस बात के ठोस सुराग देते हैं कि वे प्राचीन कौन रहे होंगे। मेरा प्रस्ताव है कि पाँच मुख्य संकेत हैं जो बताते हैं कि नए नियम में नाम से उल्लिखित कोई व्यक्ति ऐसा पास्टर हो सकता है जो किसी कलीसिया की वरिष्ठ अगुवाई टीम में सेवा करता था।

पहला, जिन लोगों को गिरफ़्तार किया गया, वे संभवतः सामने रहकर काम करने वाले अगुवे, शिक्षक या पास्टर थे। यदि कलीसिया के इतिहास में किसी समय सताव के दौरान किसी कलीसिया के किसी व्यक्ति को गिरफ़्तार किया गया, तो हम ठीक ही यह मानते हैं कि इसका सबसे संभावित कारण यह था कि उसे संदेह के घेरे में आए समुदाय का सरगना या सार्वजनिक प्रवक्ता समझा गया था।

दूसरा, पहले विश्वासी, या ऐसे सदस्य जो पहले ही प्रेरितों से शिक्षा पा चुके थे, बाद के विश्वासियों की देखभाल करने और उन्हें चेला बनाने के लिए प्रायः प्रेरितों की पहली पसंद होते थे। प्रेरितों के काम की पुस्तक में, कुरिन्थियों को लिखी पौलुस की पत्री में, और कलीसियाई पिता क्लेमेंट के लेखों में इस बात के प्रमाण हैं कि यह एक आम रीति थी।

तीसरा, घराने के वे मुखिया जिनके घर में कलीसिया इकट्ठी होती थी, संभवतः उस कलीसिया के अगुवे थे। आज की उन कलीसियाओं के विपरीत जिनके अपने विशेष भवन होते हैं, आरंभिक कलीसियाएँ अधिकतर सामान्य से बड़े घरों में होती थीं, और उनमें पूरा घराना तथा सभाओं के लिए आने वाले दूसरे लोग शामिल होते थे। 1 तीमुथियुस 3 में पौलुस इसे अच्छा विचार मानता है कि इन्हीं घरानों के मुखियाओं में से प्राचीन चुने जाएँ, इसलिए हम मान सकते हैं कि घरेलू कलीसियाओं के बहुत से अगुवे वास्तव में कलीसिया के अगुवे थे।

चौथा, जिन लोगों ने कोई कलीसिया स्थापित की – उसमें विश्वासियों को इकट्ठा किया, उन्हें दृढ़ किया और शिक्षा दी – वे संभवतः कलीसिया के अगुवे थे। मानता हूँ, यह कोई बहुत कठिन बात नहीं है। कुछ मामलों में फिलिप्पुस जैसे सुसमाचार प्रचारक और पौलुस जैसे प्रेरित कोई कलीसिया शुरू करते, फिर आगे बढ़ जाते और उसे दूसरे अगुवों को सौंप देते; परन्तु कभी-कभी लोग कलीसिया शुरू भी करते थे और फिर उसके लोगों की अगुवाई करते और उन्हें शिक्षा देते भी रहते थे।

पाँचवाँ, रोमियों 16 की पौलुस की सूची में से बहुत से लोग संभवतः रोम की कलीसिया के अगुवे थे। अपनी पत्री के अंत में पौलुस लगभग 27 लोगों के नाम गिनाता है। यह नए नियम में नामों की सबसे लंबी सूची है। उनमें से बहुतों के लिए वह ठीक वही शब्द प्रयोग करता है जो वह अपने लिए और उन लोगों के लिए करता है जिनके साथ उसने अन्यजातियों के बीच अपने मिशन के अग्रणी काम में सबसे निकटता से काम किया। यह बहुत संभव है कि इस तरह विशेष पदनाम पाने वाले लोगों में से कुछ रोम की कलीसिया की अगुवाई टीम में थे।

यदि हम यह स्वीकार कर सकें कि ये पाँच कसौटियाँ आरंभिक कलीसिया में अगुवाई के वैध संकेत हैं, तो पत्रियों और प्रेरितों के काम की पुस्तक की समीक्षा करते हुए हम यह पाते हैं: हर उस नामित पुरुष के लिए

जो सबसे अधिक संभावना से प्राचीन या पास्टर था, हमें एक या अधिक ऐसी नामित स्त्रियाँ मिलती हैं जो योग्यता या कार्य में हर बात में इन पुरुषों की बराबरी करती हैं। आइए, मैं आपको दिखाता हूँ।

सताव का निशाना

किसी भी समूह को सताने का लगभग सार्वभौमिक तरीका यह है कि उसके अगुवों को अलग से निशाना बनाया जाए और उन्हें डराया या गिरफ़्तार किया जाए। प्रेरितों के काम की पुस्तक में इसी कारण पहले पतरस और यूहन्ना, फिर पौलुस और सीलास को गिरफ़्तारी और कैद के लिए चुना जाता है। यह बात समझ में आती है: वे सब उस समय जिन कलीसियाओं में सेवा कर रहे थे, उनके मुख्य अगुवे, शिक्षक और सुसमाचार प्रचारक थे।

तब यह कितनी रोचक बात है कि यरूशलेम में कलीसिया के अगुवे स्तिफनुस को मार डाले जाने के बाद, शाऊल आसपास के नगरों में मसीहियों के विरुद्ध सताव जारी रखना चाहता है। हमें बताया गया है: "शाऊल कलीसिया को उजाड़ने लगा ... [वह] पुरुषों और स्त्रियों को घसीट-घसीटकर बन्दीगृह में डालता था।"[534] वास्तव में, यह आगे चलकर उसकी गवाही का हिस्सा बन गया – जब उस पर स्वयं मुकदमा चल रहा था, तब उसने याद किया कि उसने सताया और "पुरुषों और स्त्रियों, दोनों को पकड़वाया।"[535] पौलुस के मन में यह बात थी कि जिन नई-नई कलीसियाओं को वह सता रहा था, उनमें बहुत सी स्त्रियों की सेवकाइयाँ इतनी महत्वपूर्ण थीं (केवल खाना पकाना, सफ़ाई करना और बच्चे पालना नहीं) कि उसने निष्कर्ष निकाला कि उन्हें बंदी बनाए बिना वह इस आंदोलन को रोक नहीं सकता। N.T. Wright कहता है: "इसका अर्थ तभी बनता है जब स्त्रियों को भी अगुवे, समुदाय के भीतर प्रभावशाली व्यक्ति माना जाए।"[536] यह इस बात का पक्का प्रमाण नहीं है कि इनमें से कोई स्त्री अपनी कलीसिया की वरिष्ठ अगुवाई टीम का हिस्सा थी, फिर भी केवल वे ही स्त्रियाँ निशाना बनाए जाने लायक समझी जातीं जो प्रमुखता से सुसमाचार प्रचार, शिक्षा या अगुवाई की भूमिकाएँ निभाती थीं।

स्त्रियाँ जो कलीसिया का "पहला फल" थीं

पौलुस और प्रेरित आम तौर पर किसी नई कलीसिया के पहले विश्वासियों या पहले सदस्यों को अगुवों के रूप में चुनते थे। परिपक्व कलीसियाओं के पास तो ऐसे अगुवे चुनने की सुविधा थी जो "नए चेले न हों", परन्तु बिल्कुल नई कलीसियाओं को भी किसी न किसी प्रकार की अगुवाई की आवश्यकता थी।

534. प्रेरितों के काम 8:1,3
535. प्रेरितों के काम 22:4
536. देखें www.bit.ly/3BEnYqo

रोम का क्लेमेंट ईस्वी सन् 95 में लिखता है कि प्रेरितों की यह रीति थी कि वे अपने "पहले फलों" को कलीसिया के अगुवे चुनते थे।[537] इसकी पुष्टि प्रेरितों के काम 14:23 में होती है, जहाँ पौलुस अपनी दूसरी भेंट में अपनी पिछली यात्रा के – केवल कुछ ही महीने पहले के – विश्वासियों के समूह में से पास्टर नियुक्त करता है। यही कारण है कि बहुत से व्याख्याकार स्तिफनास को कुरिन्थुस में एक प्राचीन मानते हैं, जब पौलुस वहाँ की कलीसिया से आग्रह करता है कि वे "ऐसों के अधीन रहें" जो "पहले विश्वासी" (शब्दशः "पहले फल") थे और "पवित्र लोगों की सेवा" के उत्तम उदाहरण भी थे।[538] इस तरह, प्राचीन आवश्यक रूप से बाकी लोगों से आयु में बड़ा नहीं होता था, बल्कि आत्मिक रूप से अधिक परिपक्व होता था (चाहे थोड़ा ही अधिक)। ये लोग उस समय भी उपस्थित रहे थे जब कलीसिया स्थापित करने वाले प्रेरित ने पहली बार शिक्षा का भंडार सौंपा था।

तब उल्लेखनीय बात यह है कि कई बार कलीसिया का पहला विश्वासी या पहला सदस्य एक स्त्री थी – उदाहरण के लिए लुदिया यूरोप में पौलुस की पहली विश्वासी थी, और फिलिप्पी की कलीसिया की पहली सदस्य भी, जो उसी के घर में इकट्ठी होती थी।[539]

घराने की मुखिया और कलीसिया की मेज़बान स्त्रियाँ

कौन इनकार कर सकता है कि फिलेमोन – धनी, सम्मानित घराने का मुखिया, जिसके घर में कलीसिया थी – संभवतः कुलुस्से की कलीसिया में एक प्राचीन था? आख़िरकार, हम जानते हैं कि पौलुस ने उसे प्रभु तक पहुँचाया था,[540] शायद इफिसुस में,[541] और अपनी शिक्षा से उसे दृढ़ करने के बाद उसे उस कलीसिया में सेवा करने के लिए कुलुस्से भेजा था, जहाँ पौलुस ने उसे एक ऐसे "सहकर्मी" के रूप में सराहा जो पवित्र लोगों से प्रेम करता है।[542]

पर ठहरिए, यदि हम कह सकते हैं (जैसा कुछ कलीसियाई पिताओं ने कहा[543]) कि फिलेमोन कुलुस्से में एक प्राचीन था, तो नुम्फा के बारे में क्या? आख़िर हम जानते हैं कि वह कुलुस्से की दूसरी घरेलू कलीसिया की अगुवाई करती थी।[544] प्रेरितों के काम की पुस्तक प्रेरितों के सीमांत क्षेत्रों में सुसमाचार प्रचार और विश्वव्यापी मिशन के काम पर ध्यान देती है, परन्तु वह हमें स्थानीय कलीसियाओं में सेवकाई के महत्व के बारे में भी पर्याप्त संकेत देती है। तब यह ध्यान खींचने वाली बात है कि इन घरेलू कलीसियाओं की मेज़बानी – और संभवतः अगुवाई – न केवल पुरुष, बल्कि स्त्रियाँ भी करती थीं।

537. "प्रेरित देश-देश और नगर-नगर प्रचार करते हुए गए, और उन्होंने अपने पहले विश्वासियों को – आत्मा के द्वारा उन्हें परखने के बाद – भविष्य के विश्वासियों के लिए अध्यक्ष ... नियुक्त किया।" (1 क्लेमेंट 42)
538. 1 कुरिन्थियों 16:16-17
539. प्रेरितों के काम 16:13-40
540. फिलेमोन 3, 8-9,19
541. प्रेरितों के काम 19:9-10
542. फिलेमोन 1, 5, 7
543. उदाहरण के लिए देखें www.bit.ly/3CN1tRo में अनुच्छेद XLVI
544. कुलुस्सियों 4:15। जो विद्वान तर्क देते हैं कि नुम्फा शायद पुरुष था, वे सबसे अच्छे उपलब्ध यूनानी पाठों का प्रयोग नहीं करते, जिनमें लिखा है कि "कलीसिया 'उसके' (autēs – स्त्रीलिंग रूप, यानी उस स्त्री के) घर में इकट्ठी होती थी।"

पूरकतावादी विद्वान प्रायः इस बात को एक गलत तुलना के द्वारा खारिज कर देते हैं: वे घरेलू कलीसिया के अगुवे की तुलना आज के किसी छोटे समूह (small group) के मेज़बान से करते हैं, जो शायद पूछे, "अगले सप्ताह हम किसके घर में मिल सकते हैं?" परन्तु इससे पहली सदी के घराने के स्वरूप के बारे में अज्ञानता प्रकट होती है। यूनानी-रोमी समय में घराने का मुखिया आम तौर पर पुरुष होता था, जिसे paterfamilias (घर का मुखिया) कहा जाता था, परन्तु यदि पति की मृत्यु हो चुकी हो और सबसे वरिष्ठ व्यक्ति स्त्री हो, तो वह materfamilias (घर की मुखिया स्त्री) के रूप में उसकी अगुवाई करती थी। वे अपने आप ही अपने घर में रहने वाले सब लोगों की देखरेख करते थे, जिनमें बच्चे, रिश्तेदार, दास और किरायेदार शामिल थे। उन्हें संबंध बनाने, संगठन करने और प्रबंधन के अच्छे कौशल की आवश्यकता होती थी,[545] और साथ ही शिक्षा देने, अनुशासन रखने, पालन-पोषण करने और भौतिक संसाधनों का प्रबंध करने की योग्यता की भी। इसलिए यह माना जा सकता है कि, कम से कम कुछ मामलों में, किसी घराने का मुखिया होना व्यक्ति को उस घर में इकट्ठी होने वाली कलीसिया का अगुवा बनने का मुख्य दावेदार बना देता था। नुम्फा ने केवल अपने दरवाज़े खोलने से कहीं अधिक किया। आख़िरकार, घरेलू कलीसियाएँ स्थानीय सुसमाचार प्रचार और विश्वासियों को चेला बनाने का आधार थीं – और इन सब के लिए अगुवाई, प्रशिक्षण और संसाधन जुटाना आवश्यक था। "नए नियम के समय में जिस प्रकार की मेज़बानी हो रही थी, वह कार्यों के एक दीर्घकालिक, रणनीतिक आधार की स्थापना थी, जहाँ कलीसिया के लक्ष्यों की सफलता या विफलता में घर का स्वामी निर्णायक था।"[546]

यदि उनका भक्ति का अच्छा रिकॉर्ड रहा हो और वे सुसमाचार में दृढ़ हों, तो वे पास्टरीय अगुवाई के लिए आदर्श उम्मीदवार होते। 1 थिस्सलुनीकियों 5:12 में पास्टरों के जो तीन कार्य बताए गए हैं, उन पर विचार कीजिए: "जो परिश्रम करते हैं" (यूनानी: kopiōntas), "जो तुम्हारी देखभाल करते हैं" (यूनानी: proistamenous), और "जो तुम्हें चेतावनी देते हैं" (यूनानी: nouthetountas)। "परिश्रम करना" उस शारीरिक मेहनत की बात करता है जो सेवकाई को व्यावहारिक और आत्मिक, दोनों रूप से सँभालने के लिए आवश्यक थी।[547] "देखभाल करना" का अर्थ है समुदाय को दिशा देना, उसका प्रबंध करना और उसकी भलाई की ज़िम्मेदारी लेना।[548] "चेतावनी देना" में सुधार करने वाली शिक्षा शामिल है।[549] वर्तमान काल का प्रयोग यह दर्शाता है कि ये ज़िम्मेदारियाँ कभी-कभार की नहीं, बल्कि निरंतर थीं। पर देखिए – ठीक यही वे कौशल और योग्यताएँ थीं जिनमें घराने का एक अच्छा मुखिया निपुण होता। इसके अलावा, घर में जो कुछ होता था उसके लिए घर के स्वामी आसपास के समाज के सामने भी ज़िम्मेदार ठहराए जाते थे।[550] इसलिए, एक सामान्य नियम के रूप में, "ऐसा लगता है कि घर के स्वामी को कलीसिया में अगुवाई का अधिकार मिल जाता था।"[551]

545. इसी कारण पौलुस 1 तीमुथियुस 5:14 में materfamilias को प्रोत्साहित करता है कि वह "घरबार सँभाले" – शब्दशः, घर की "निरंकुश स्वामिनी" (despot) बने।
546. Jamin Hübner. स्रोत: www.bit.ly/3BNaSY8
547. देखें 1 थिस्सलुनीकियों 2:9 और 3:5।
548. यही शब्द रोमियों 12:8 में "अगुवाई के वरदान" से जुड़े कार्य के लिए प्रयोग हुआ है, और उस बात के लिए भी जिसकी अपेक्षा घरानों के उन सब परिश्रमी मुखियाओं से की जाती थी, जो अपने घराने का अच्छा "प्रबंध" करते थे।
549. देखें 1 कुरिन्थियों 4:14
550. उदाहरण के लिए देखें प्रेरितों के काम 17:5-7।
551. www.bit.ly/3bHJPmo

Brian Capper, जो आरंभिक यूनानी-रोमी परिवेश और पहली सदी की कलीसियाओं के स्वरूप का विशेषज्ञ है, बताता है कि किसी नगर की कलीसिया एक या अधिक घरेलू कलीसियाओं से मिलकर बनी होती थी, और यह निष्कर्ष निकालता है:

पौलुस की कलीसियाओं की "कोशिकीय" संरचना से ... स्थानीय अगुवों की बहुलता का कारण प्रकट होता है। हर उप-समूह मसीही समुदाय के किसी अगुवे के घर में इकट्ठा होता था; ऐसा हर अगुवा एक प्राचीन/अध्यक्ष था, और हर नगर में ऐसे कई थे। ... हम निश्चित हो सकते हैं कि प्राचीन संसार में घर के स्वामी को उसके यहाँ होने वाली किसी भी सभा का अंतिम नियंत्रण सौंपा जाता था। यह रीति और सामान्य शिष्टाचार था। क्योंकि आरंभिक मसीही घर-स्वामी, जो अपने घरों में कलीसिया की सभाएँ करवाते थे, विश्वास में हमेशा पुराने और सुसमाचार के स्थानीय संरक्षक होते थे, इसलिए वे स्थानीय स्तर पर मंडली के प्रमुख व्यक्ति बन गए। सामाजिक प्रतिष्ठा, परिपक्वता, उदारता, व्यक्तिगत आकर्षण और प्रेरितों से मिला दायित्व – ये सब मिलकर सुसमाचार के इन स्थानीय संरक्षकों को अधिकार देते थे। ... प्राचीन के लिए कलीसिया बस उसके अपने घराने का ही विस्तार थी, क्योंकि वह कलीसिया की मेज़बानी अपने ही घर में करता था।"[552]

इससे यह समझ आता है कि बाद के पितृसत्तात्मक पाठक, जो प्राचीन परिवेश के अधिक निकट थे, घरेलू कलीसियाओं की मेज़बान स्त्रियों के उल्लेख पर क्यों ठिठक गए। उदाहरण के लिए, प्रतिलिपिकारों को नुम्फा की स्पष्ट अगुवाई की भूमिका इतनी आपत्तिजनक लगी कि उनमें से कुछ ने उसके नाम को पुरुषवाचक बना दिया और "उसे" नुमफास कहने लगे – मानो वह पुरुष हो। उनके लिए बाइबल के किसी पात्र का लिंग बदल देना एक स्त्री पास्टर को स्वीकार करने से अधिक सहनीय था।

यह सब कहने का अर्थ यह है कि सार्वजनिक क्षेत्र में स्त्रियों की सामान्यतः निम्न स्थिति के बावजूद, एक materfamilias, जिसके पास लोगों की मेज़बानी के लिए पर्याप्त बड़ा घर हो, कलीसिया की अगुवाई के काम के लिए एक paterfamilias जितनी ही उपयुक्त होती, क्योंकि उसके पास वही कौशल होते। तब हमें जो बात सोचने पर विवश करे, वह यह है कि जिन घरों में कलीसियाएँ इकट्ठी होती थीं, उनका ब्योरा देते समय नया नियम पुरुषों से अधिक स्त्रियों के नाम लेता है – न केवल नुम्फा और लुदिया, बल्कि मरकुस की माता मरियम भी, जिसका घर यरूशलेम की कलीसिया का आधार था;[553] खलोए, जिसके लोगों को शब्दशः "खलोए के लोग" कहा गया है और जो कुरिन्थुस की कलीसिया के बारे में कुछ चिंताएँ बताने के लिए पौलुस के पास गए थे;[554] प्रिस्किल्ला,[555] जिसकी चर्चा पर मैं जल्दी ही लौटूँगा; और काफ़ी संभवतः एक अनाम स्त्री जो घरेलू कलीसिया की अगुवा थी, जिसे "चुनी हुई श्रीमती" कहा गया है।[556]

552. www.rb.gy/cmxtqm
553. प्रेरितों के काम 12:12
554. 1 कुरिन्थियों 1:11
555. रोमियों 16:3
556. पूरकतावादी इस बात पर ज़ोर देते हैं कि "चुनी हुई श्रीमती" स्वयं कलीसिया को दर्शाती है, परन्तु निष्पक्ष होकर कहें तो इससे यह स्पष्ट नहीं होता कि "चुनी हुई श्रीमती" को "उसके बच्चों" से अलग क्यों बताया गया है (2 यूहन्ना 1), और न यह कि "उसे" उसी ढंग से क्यों संबोधित किया गया है जिस ढंग से यूहन्ना उस व्यक्ति गयुस को नमस्कार कहता है जिसे वह 3 यूहन्ना लिखता है। देखें Scott McKnight, "The Elect Lady," Patheos (blog), September 18, 2014, www.bit.ly/3CMNSd1

कलीसिया स्थापित करने वाली एक स्त्री

एक और संभावित पास्टर वह है जिसने कोई कलीसिया स्थापित की और उसकी अगुवाई की, और फिर भी प्रेरित नहीं है। आइए एक पुरुष उदाहरण से शुरू करें – प्रेरितों के काम की पुस्तक में सबसे प्रमुख उदाहरण अक्विला है। उसने कुरिन्थुस में पौलुस के साथ कलीसिया शुरू करने में सहायता की, अपने घर में उसकी मेज़बानी की, और उसके काम का ख़र्च उठाया।[557] पौलुस के अधीन 18 महीने प्रशिक्षण पाने के बाद, वह पौलुस के साथ जहाज़ से चल पड़ा। "वे इफिसुस पहुँचे, और पौलुस ने अक्विला को वहीं छोड़ दिया,"[558] प्रत्यक्षतः कुछ ऐसे विश्वासियों की देखभाल के लिए, जो स्थानीय आराधनालय में यहूदियों को दिए गए एक ही सुसमाचार-संदेश से विश्वास में आए थे।[559] पौलुस के बाहर रहने के छह से बारह महीनों के दौरान, अक्विला ने अपने घर में एक कलीसिया की मेज़बानी की, जिसमें "भाइयों और बहनों" की संख्या बढ़ती जा रही थी।[560] वह आराधनालय में जाता रहा और ऐसे ग्रहणशील लोगों को खोजता रहा जिनसे वह सुसमाचार की बात कर सके। हम यह इसलिए जानते हैं क्योंकि एक सब्त के दिन उसकी भेंट एक उल्लेखनीय व्यक्ति से हुई, जो "अपुल्लोस, सिकन्दरिया का रहने वाला" था, और जो "विद्वान पुरुष था और पवित्रशास्त्र को अच्छी तरह जानता था। उसने प्रभु के मार्ग की शिक्षा पाई थी, ... यीशु के विषय में ठीक-ठीक सिखाता था, परन्तु वह केवल यूहन्ना के बपतिस्मा की बात जानता था। वह आराधनालय में निडर होकर बोलने लगा। जब ... अक्विला ने उसकी बातें सुनीं, तो [उसने] उसे [अपने] घर बुलाया ..."[561]

यद्यपि अपुल्लोस पुराने नियम को जानता था, और प्रत्यक्षतः यीशु के बारे में इतना सुन चुका था कि समझ गया था कि वही पुराने नियम में प्रतिज्ञा किए गए मसीह हैं, फिर भी उसके धर्मविज्ञान में कुछ कमियाँ थीं जिन्हें अक्विला ने पहचान लिया। उसने उसे अपने घर बुलाया और "परमेश्वर का मार्ग उसे और भी ठीक-ठीक समझाया।" "समझाया" के लिए प्रयुक्त शब्द (यूनानी: exethento) "शिक्षा देना" शब्द का समानार्थी है, और रोम में पौलुस की सेवकाई का वर्णन करने के लिए भी प्रयोग हुआ है, जहाँ वह "सुबह से शाम तक" "परमेश्वर के राज्य के विषय में समझाता" रहा।[562] क्योंकि अक्विला की प्राथमिकता केवल विश्वासियों को इकट्ठा करना नहीं, बल्कि सुसमाचार के राजदूतों को भेजना भी थी, इसलिए उसने अपुल्लोस को दूसरे नगर में जाने के लिए प्रोत्साहित किया, जहाँ अक्विला द्वारा उसे दिए गए धर्मवैज्ञानिक प्रशिक्षण ने बड़ा फल उत्पन्न किया।[563]

निश्चय ही अक्विला कुरिन्थुस की कलीसिया का, और इससे भी अधिक निश्चित रूप से इफिसुस की कलीसिया का, प्राचीन या पास्टर था? यद्यपि नया नियम कहीं भी किसी के "कलीसिया स्थापित करने" या

557. प्रेरितों के काम 18:1-3
558. प्रेरितों के काम 18:18
559. प्रेरितों के काम 18:19-21
560. प्रेरितों के काम 18:27
561. प्रेरितों के काम 18:24-26
562. प्रेरितों के काम 28:23
563. प्रेरितों के काम 18:27-28

"कलीसिया की अगुवाई करने" की शब्दावली का प्रयोग नहीं करता, फिर भी अक्विला ठीक यही काम कर रहा है।

और अब कहानी में मोड़: यद्यपि मैंने पिछले अनुच्छेदों में जान-बूझकर उसका नाम छोड़ दिया, प्रेरितों के काम 18 बड़ी सावधानी से उसके नाम को उसकी पत्नी प्रिस्किल्ला के नाम के साथ जोड़ता है। जो कुछ अक्विला ने किया, वह प्रिस्किल्ला ने भी किया। उन दोनों ने कुरिन्थुस में कलीसिया की मेज़बानी की, और तम्बू बनाने के अपने साझा काम से उसे सहारा दिया। वे दोनों पौलुस के साथ जहाज़ से चले। पौलुस ने दोनों को इफिसुस में छोड़ा, ताकि वहाँ सुसमाचार की उपस्थिति स्थापित हो। उन दोनों ने नए विश्वासियों को अपने घर में इकट्ठा किया। उन दोनों ने स्थानीय आराधनालय में उन लोगों तक पहुँच बनाई जिन्होंने अभी विश्वास नहीं किया था। उन दोनों ने अपुल्लोस को शिक्षा दी।

प्रेरितों के काम 18 और दूसरे पाठों के प्रमाणों के आधार पर,[564] हम लगभग निश्चित रूप से कह सकते हैं कि अक्विला इफिसुस में एक प्राचीन या पास्टर था। नए नियम में वह हमारा सबसे संभावित उम्मीदवार है! और फिर भी, उसी पाठ्य प्रमाण के आधार पर, हमारे पास यह संदेह करने का कोई कारण नहीं कि उसे अपनी पत्नी से ऊँचा आत्मिक या कलीसियाई अगुवाई का दर्जा प्राप्त था। बल्कि वे – पतन से पहले के आदम और हव्वा की तरह – बुलाहट और सेवकाई में बराबर के साथी और साझेदार के रूप में काम करते थे।

रोमियों 16 के सहकर्मी

रोमियों 16 में पौलुस रोम की कलीसिया के 27 लोगों को नाम लेकर नमस्कार कहता है। क्योंकि इनमें से बहुत सी आरंभिक कलीसियाएँ बहुत छोटी थीं, निश्चय ही इनमें से कुछ लोग उस कलीसिया की अगुवाई टीम का हिस्सा थे। परन्तु कौन-कौन? सबसे अच्छा सुराग वे पहचान कराने वाले वाक्यांश हैं – "जो प्रभु में बहुत परिश्रम करते हैं" (यूनानी: polla ekopiasen en kyriō) और "सहकर्मी" (यूनानी: synergos) – जिन्हें पौलुस सूची के केवल कुछ ही व्यक्तियों के लिए प्रयोग करता है। हम यह इसलिए जानते हैं क्योंकि पौलुस दूसरी जगहों पर यही शब्द अपनी टीम के सबसे महत्वपूर्ण लोगों के लिए प्रयोग करता है। वह तीमुथियुस, अपुल्लोस, उरबानुस, तीतुस, इपफ्रुदीतुस, मरकुस, इपफ्रास और लूका को अपने "सहकर्मी" कहता है[565] – ये सुसमाचार को फैलते देखने के उसके उद्यम में उसके मुख्य साझेदार हैं। पौलुस अक्सर "परिश्रम करना" क्रिया का प्रयोग उन लोगों के लिए भी करता है जो अगुवाई के योग्य हैं, और प्राचीनों के

564. यद्यपि मैं यहाँ प्रेरितों के काम 18 की गहराई से जाँच नहीं करता, परन्तु दूसरी जगह मैंने इफिसुस की कलीसिया में इस दंपती की शिक्षा देने, कलीसिया स्थापित करने और कलीसिया की अगुवाई करने की भूमिकाओं के बहुत अधिक प्रमाण दिए हैं, और इसके विरुद्ध कथित प्रमाणों पर भी विचार किया है – देखें www.terranwilliams.com पर मेरा लेख "Was Priscilla a pastor?" (www.rb.gy/ttr2do), जिसमें मैं Mark Ellis के उस प्रयास का खंडन करता हूँ जो "प्रिस्किल्ला के पास्टर होने की धारणा को मिटाने" (disabuse Priscilla as a pastor) के लिए किया गया।
565. देखें रोमियों 16:21, 1 कुरिन्थियों 3:9, रोमियों 16:9, 2 कुरिन्थियों 8:23, फिलिप्पियों 2:25, कुलुस्सियों 4:11, फिलेमोन 24।

काम के एक मुख्य कार्य के लिए भी।[566] अपनी सेवकाई का वर्णन करने का भी यह उसका एक प्रिय तरीका है।[567]

स्पष्ट है कि पौलुस की आदत "पास्टर" (कलीसिया में स्थित लोगों के लिए) या "मिशनरी" (नए क्षेत्रों में भेजे जाने वालों के लिए) जैसे सेवकाई-पदनामों का प्रयोग करने की नहीं थी, बल्कि वह उन्हें ऐसे "सहकर्मी" कहता है जो "प्रभु में परिश्रम करते हैं"। वास्तव में, कुरिन्थियों को लिखी अपनी पत्री में वह इन दोनों शब्दों का प्रयोग उन लोगों के लिए करता है जिनके अधीन कलीसिया को रहना चाहिए।[568]

रोचक बात यह है कि रोमियों 16 की सूची में दस लोग ऐसे हैं जिनका वर्णन इन शब्दों और गंभीर सेवकाई-योगदान से जुड़े दूसरे शब्दों से किया गया है। आगे मैं जो कहने जा रहा हूँ, उसके लिए शायद आपको बैठ जाना चाहिए: इन दस में से सात स्त्रियाँ हैं! आइए उनकी सूची बनाएँ: प्रिस्किल्ला को "सहकर्मी" कहा गया है (पद 3), जबकि मरियम (पद 6), त्रूफैना, त्रूफोसा और पिरसिस (पद 12) के बारे में कहा गया है कि उन्होंने "प्रभु में परिश्रम किया"। दूसरे उल्लेखनीय नाम हैं यूनिया, एक प्रेरित (पद 7), और फीबे, जो किंख्रिया की कलीसिया की सेविका (डीकन) (पद 1)[569] और पौलुस की उपकारक या संरक्षिका (पद 2), दोनों है। फीबे ही वह व्यक्ति भी है जिसे पौलुस ने रोम तक यात्रा करने का भार सौंपा – और अब ढोल बजाइए! – रोमियों के नाम पत्री उसी के हाथ में सौंपी गई थी।

इनमें से कुछ शब्द दूसरी कलीसियाओं की दूसरी स्त्रियों के लिए भी प्रयोग किए गए हैं। पौलुस दो स्त्रियों, यूओदिया और सुन्तुखे, का सम्मान करता है और उन्हें ऐसी "सहकर्मी" कहकर सराहता है जिन्होंने "सुसमाचार के कार्य में [उसके] साथ कंधे से कंधा मिलाकर संघर्ष किया"।[570] "संघर्ष किया" के लिए यूनानी शब्द (synēthlēsan) ऐसे खिलाड़ी या सैनिक का चित्र प्रस्तुत करता है जो जीत पाने के लिए अपनी हर मांसपेशी को तान देता है। दूसरे शब्दों में, पौलुस मसीह के कार्य के प्रति उनके समर्पण को अपने

566. 1 थिस्सलुनीकियों 5:12
567. 1 कुरिन्थियों 4:12; 15:10; गलातियों 4:11; फिलिप्पियों 2:16; कुलुस्सियों 1:29; 1 तीमुथियुस 4:10
568. 1 कुरिन्थियों 16:16।
569. यहाँ फीबे का एक छोटा सा गुणगान: वह मसीहियत के इतिहास में दर्ज पहली 'डीकन' है, यद्यपि कुछ विद्वान इस पर बहस करते हैं कि क्या वह सचमुच डीकन थी, क्योंकि "diakonos" शब्द कभी-कभी "सेवकों" को दर्शाता है, न कि फिलिप्पियों 1:1 में उल्लिखित डीकन के पद को। परन्तु वह "किंख्रिया की कलीसिया की" diakonos है। नए नियम में यही एकमात्र स्थान है जहाँ यह शब्द विशेष रूप से किसी स्थानीय कलीसिया से जोड़ा गया है। यदि पौलुस का अर्थ केवल "सेवक" होता, तो वह संभवतः "सेवा करने वाला" (diakoneo) (रोमियों 15:25) जैसा क्रिया-रूप या सामान्य शब्द "सेवकाई" (diakonia) (1 कुरिन्थियों 16:15) प्रयोग करता। वर्तमान कृदंत (डीकन होते हुए) एक निरंतर सेवकाई की ओर संकेत करता प्रतीत होता है। यह, "किंख्रिया की कलीसिया की" इस विशेषण के साथ मिलकर, कलीसिया में एक मान्यता-प्राप्त पद की ओर संकेत करता है। N.T. Wright कहता है कि इस शब्द को "डीकन" के अलावा कुछ और अर्थ देने के प्रयास विफल होते हैं। इसका अनुवाद "सेवक" करना समस्या को केवल एक कदम और पीछे धकेल देता है, क्योंकि इसका "अर्थ या तो यह होगा कि फीबे कलीसिया की वेतनभोगी कर्मचारी थी (क्या करने के लिए?), या यह कि 'सेवक' नाम की कोई सेवकाई-श्रेणी थी, जो अन्यथा अज्ञात है।" Craig Keener बताता है, "यदि यह अंश किसी स्त्री के बारे में न होता, तो अधिकांश पाठक यहाँ संभवतः वही अर्थ [डीकन] मान लेते।" यह शब्द सामान्य रूप से "वचन का सेवक" का अर्थ देता है – पौलुस इसे सुसमाचार के प्रेरित के रूप में सात स्थानों पर अपने लिए प्रयोग करता है (1 कुरिन्थियों 3:5; 2 कुरिन्थियों 3:6; 6:4; 11:23; इफिसियों 3:7; कुलुस्सियों 1:23, 25), और सुसमाचार में अपने साथियों के लिए भी (इफिसियों 6:21; कुलुस्सियों 1:7; 4:7; 1 थिस्सलुनीकियों 3:2; 1 तीमुथियुस 4:6)। यह सब इस ओर संकेत करता है कि अपनी कलीसिया में उसकी एक मान्यता-प्राप्त सेवकाई या ज़िम्मेदारी का पद था।
570. फिलिप्पियों 4:3

समर्पण के बराबर ठहराता है।[571]

N.T. Wright कहता है, "मैं सोचता था कि रोमियों 16 इस पत्री का सबसे नीरस अध्याय है, और अब, जब मैं इन नामों का अध्ययन करता हूँ और उन पर विचार करता हूँ, तो मैं यह देखकर दंग रह जाता हूँ कि यीशु और पौलुस, दोनों की शिक्षा किस सामर्थ के साथ व्यवहार में उतारी जा रही थी।"[572] विशेष पदनाम पाने वाली स्त्रियों की यह सूची बिल्कुल स्पष्ट रूप से दिखाती है कि उनके और पुरुषों के बीच दर्जे या सेवा में कोई भेद नहीं था।

क्या यह संभव, बल्कि संभाव्य, नहीं है कि रोम की कलीसिया की इन स्त्रियों में से, जिन्हें पौलुस सेवकाई-पदनामों से सम्मानित करता है, कम से कम कुछ अपनी कलीसिया की वरिष्ठ अगुवाई टीम में थीं? विशेषकर यह ध्यान में रखते हुए कि वे अधिकतर उसी कलीसिया में स्थित थीं, और घूमने वाली मिशनरी नहीं थीं? Cynthia Westfall कहती है, "पहली सदी की मसीहियत में ये शब्द उससे निकटता से मेल खाते हैं जो बाद में विधिवत नियुक्त पादरी-वर्ग बना। ऐसा लगता है कि पौलुस अगुवों को सम्मान देते समय इन शब्दों का लगातार प्रयोग करता है।"[573]

प्राचीन भूमध्यसागरीय समाज में स्त्रियों को बहुत कम सामाजिक शक्ति दी जाती थी। फिर भी उस अत्यंत पुरुष-अहंकारी संसार में, जहाँ सामाजिक परिस्थितियाँ स्त्रियों को शायद ही कभी सार्वजनिक आवाज़ या सामुदायिक अगुवाई में कोई सार्थक भूमिका देती थीं, देखिए कि कितनी स्त्रियाँ महत्वपूर्ण सेवकाई में मसीह के लिए आगे आ रही थीं, और इसके लिए प्रेरित पौलुस उनकी सराहना कर रहा था। यदि ऐसी स्त्री-विरोधी संस्कृति में स्त्रियाँ सेवकाई में फल-फूल सकती थीं, तो अब, जब हमारी संस्कृति की सामाजिक परिस्थितियाँ इसका विरोध नहीं करतीं, स्त्रियाँ परमेश्वर के राज्य के लिए शक्तिशाली योगदानों में कितना अधिक आगे बढ़ सकती हैं?

परन्तु मैं अपनी बात से आगे निकल रहा हूँ। आइए संक्षेप में दोहराऊँ। नया नियम अपनी कलीसियाओं के पास्टरों के नाम नहीं बताता, परन्तु मेरा तर्क है कि वह पाँच प्रमुख सुराग देता है कि वे लोग कौन रहे होंगे: वे जिन्होंने सबसे बुरा सताव सहा; जो विश्वास में पहले आए और इसलिए दूसरों को चेला बनाने में समर्थ थे; जिन्होंने अपने घराने को कलीसिया का आधार बना दिया; जिन्होंने कोई कलीसिया स्थापित की; और/या जिन्हें रोमियों 16 में सेवकाई की उपलब्धि के लिए सबसे ऊँचे सम्मान के साथ विशेष पदनाम दिया गया।

इनमें से कुछ भी अकाट्य प्रमाण नहीं है, परन्तु हर सुराग इस बात को काफ़ी विश्वसनीय बना देता है कि ऐसा व्यक्ति अपनी कलीसिया की अगुवाई टीम में था। अब, मुझे आशा है कि आप अभी भी बैठे हैं, क्योंकि एक स्त्री है जिसका नाम इन पाँचों श्रेणियों में उभरकर सामने आता है।

571. इन दो स्त्रियों की अपनी कलीसिया में इतनी ऊँची प्रमुखता थी कि जब उनका आपस में टकराव हुआ, तो पौलुस को एकता के महत्व के बारे में एक पूरी पत्री – फिलिप्पियों के नाम पत्री – लिखनी पड़ी।
572. www.bit.ly/3URMrTN
573. Cynthia Westfall, Paul and Gender, अध्याय 8।

प्रिस्किल्ला

क्या प्रिस्किल्ला सताव का एक मुख्य निशाना थी? हाँ। पौलुस हमें बताता है कि उसने सुसमाचार में उसके साथ साझेदारी करके "अपनी जान जोखिम में डाली"[574] – यह इस तथ्य की ओर संकेत है कि कलीसिया की सेवकाई में वह इतनी प्रमुख थी कि शत्रुतापूर्ण अधिकारियों का ध्यान उसकी ओर खिंचा।

क्या वह एक "पहला फल" थी जो नए विश्वासियों को चेला बनाने में समर्थ थी? हाँ। अपने पति के साथ वह कुरिन्थुस और इफिसुस, दोनों कलीसियाओं की सबसे पहली सदस्य थी, और दोनों में आत्मिक रूप से सबसे परिपक्व लोगों में से एक। इसके अलावा, इफिसुस में पौलुस की अनुपस्थिति में वह उन पहले कुछ विश्वासियों की देखभाल करने और उन्हें चेला बनाने के लिए विशेष रूप से योग्य थी, जो स्थानीय आराधनालय में पौलुस की छोटी सी भेंट के दौरान विश्वास में आए थे और जो बाद में इफिसुस के (दूसरे) पास्टर बने प्रतीत होते हैं।[575]

क्या वह घरेलू कलीसिया की अगुवा थी? हाँ। वास्तव में, हमारे पास बाइबल का प्रमाण है कि उसने कम से कम तीन अलग-अलग कलीसियाओं में अपने घराने को कलीसिया के कामों का आधार बना दिया: कुरिन्थुस, इफिसुस और रोम की कलीसियाओं में।

क्या उसने कोई कलीसिया स्थापित की? हाँ। विशेष रूप से इफिसुस में उसने और उसके पति ने वह सब कुछ किया जो आज के कलीसिया-स्थापक कर सकते हैं: वे एक काम शुरू करने में सहायता के लिए एक नए क्षेत्र में जा बसे; उन्होंने सुसमाचार प्रचार किया; विश्वासियों को इकट्ठा किया; उन्हें धर्मविज्ञान की शिक्षा दी; उन्हें सेवकाई के लिए खड़ा किया; और उन्हें मिशन पर भेजा।

क्या रोमियों 16 की सूची में उसे "सहकर्मी" कहा गया है? फिर से, हाँ। वास्तव में, रोम की कलीसिया में जिन लोगों को नमस्कार कहा गया है, उन सब में उसका नाम पहला है! उसकी सेवकाई इतनी प्रसिद्ध थी कि पौलुस न केवल उसके लिए उसका धन्यवाद करता है, बल्कि "अन्यजातियों की सारी कलीसियाओं" की ओर से भी उसे धन्यवाद पहुँचाता है![576]

मैं इसे निष्कर्ष के रूप में प्रस्तुत करता हूँ: यह तथ्य कि प्रिस्किल्ला पाँचों श्रेणियों में पाई जाती है, इस बात का लगभग सबसे मज़बूत पाठ्य प्रमाण है कि उसने एक या अधिक कलीसियाओं की वरिष्ठ अगुवाई टीम में सेवा की। मैं तो यहाँ तक कहूँगा कि यह लगभग निश्चित है।

574. रोमियों 16:3
575. देखें मेरा लेख "Was Priscilla a pastor?" (www.rb.gy/ttr2do), जिसमें मैं तर्क देता हूँ कि प्रेरितों के काम 18:17-19, 27 और 20:18 के आधार पर, पौलुस ने इफिसुस के आराधनालय से आए अपने सबसे पहले विश्वासियों को प्रिस्किल्ला और अक्विला की देखभाल में छोड़ा, जब तक कि वे स्वयं प्रिस्किल्ला और अक्विला के साथ-साथ इफिसुस की कलीसिया के पास्टर नहीं बन गए।
576. रोमियों 16:3

अब जब मैं इस बात को पक्का कर रहा हूँ, तो मैं खुलकर इसका निहितार्थ भी कह दूँ: यदि हमें पहली सदी की यीशु की एक भी ऐसी शिष्या मिल जाए जो उस कठोर पितृसत्तात्मक परिवेश के बावजूद, जिसमें वह रहती और काम करती थी, लगभग निश्चित रूप से एक पास्टर थी, तो यह बिल्कुल स्पष्ट बात है कि इक्कीसवीं सदी के उन प्रबल समानतावादी परिवेशों में, जिनमें आज हम हैं, हमें वरदान-प्राप्त और बुलाई गई स्त्रियों को आनंद के साथ पास्टरीय अगुवाई टीमों के लिए मुक्त करने को तैयार रहना चाहिए।

प्रिस्किल्ला के पास्टर होने पर आपत्तियाँ

यदि मैं बहुत तेज़ी से आगे बढ़ गया हूँ, तो आइए एक पल के लिए पीछे लौटें। हो सकता है कि मेरे इस निष्कर्ष के बारे में आपको कुछ संकोच हो कि प्रिस्किल्ला वास्तव में अपने पति की तरह कलीसिया की एक वरिष्ठ अगुवा थी। वास्तव में, प्रिस्किल्ला की वरिष्ठ अगुवाई और शिक्षा की जिस भूमिका को हम देखते हैं, उसके विरुद्ध चार आम आपत्तियाँ हैं। पहली यह है कि 1 तीमुथियुस 3 अध्यक्ष के बारे में कहता है कि वह "अपनी पत्नी के प्रति विश्वासयोग्य" हो। हम अगले अध्याय में इसे विस्तार से देखेंगे, परन्तु बाकी तीन आपत्तियों पर मैं अभी विचार करता हूँ।

पहली आपत्ति यह सुझाव देना है कि प्रिस्किल्ला केवल अक्विला की सहायता करती थी। आज पूरकतावादी दायरों में "सेवकाई दंपती" (ministry couples) की बात करना आम है। यह शब्द चाहे जितना सुंदर हो, जब आप इसे इसके सार तक घटाते हैं, तो इससे उनका वास्तविक अर्थ यह होता है कि पति उचित रूप से अगुवा है और पत्नी उसकी योग्य सहायक है (John Piper के इस दावे के अनुरूप कि हव्वा आदम की "वफ़ादार सहायक" थी)। जब तक पति के अगुवाई के वरदान दंपती के लिए द्वार नहीं खोलते, तब तक पत्नी के पास अपने अगुवाई के वरदानों को कभी काम में लाने का बहुत कम अवसर होता है। तो इस मामले में अक्विला पास्टर था, जबकि प्रिस्किल्ला केवल उसकी अद्भुत रूप से योग्य सहायक थी।

फिर भी प्रिस्किल्ला और अक्विला के मामले में अगुवा-सहायक का नमूना बेहद असंभव है। बाइबल में इस जोड़े का जिन छह बार नाम आता है, उनमें से चार बार उसका नाम पहले आता है। आधुनिक कानों को इसका शायद बहुत अर्थ न लगे, परन्तु प्राचीन पितृसत्तात्मक साहित्य में किसी की पत्नी का उल्लेख होना ही दुर्लभ है (उदाहरण के लिए, सोचिए कि नए नियम में कितनी कम पत्नियों के नाम दिए गए हैं)। किसी पत्नी का नाम पहले आना तो और भी दुर्लभ है।

कुछ लोग कहते हैं कि यह केवल संयोग है। परन्तु यह तथ्य कि पौलुस और लूका दोनों अपने-अपने लेखों में उसका नाम पहले लेते हैं, और यह भी कि वे छह में से चार बार (केवल एक या दो बार नहीं) ऐसा करते हैं, दिखाता है कि यह संयोग नहीं है। इसके विपरीत, रोमियों 16 में प्रिस्किल्ला और अक्विला के उल्लेख के कुछ ही पदों बाद पौलुस एक और दंपती का उल्लेख करता है और पुरुष का नाम पहले रखने की सामान्य रीति पर लौट आता है।

कुछ विद्वान कहते हैं कि इससे केवल इतना पता चलता है कि उसकी सामाजिक प्रतिष्ठा अधिक थी। शायद वह ऊँचे कुल की थी और अक्विला नीचे कुल का, या वह रोमी नागरिक थी और वह नहीं था? परन्तु इससे अधिक स्पष्ट अर्थ को किनारे कर दिया जाता है। जब भी नए नियम के लेखक किसी का नाम लगातार पहले लेते हैं, तो यह प्रायः उसकी सेवकाई की प्रमुखता का प्रमाण होता है (जो बदले में उसके विशेष वरदान से जुड़ी होती है)। यही कारण है कि लूका और दूसरे सुसमाचार-लेखक प्रेरितों के नामों की सूची में पतरस का नाम हमेशा पहले रखते हैं। यही कारण है कि लूका अन्ताकिया की कलीसिया में उनकी सेवकाई-साझेदारी का उल्लेख करते समय बरनबास का नाम पौलुस से पहले रखता है, परन्तु फिर जब वे अंततः मिशन की राह पर निकलते हैं और पौलुस का प्रचार और चमत्कारी सेवकाई दूसरे ही स्तर पर पहुँच जाती है, तब से वह पौलुस का नाम पहले रखता है।[577]

बाइबल में नाम से उल्लिखित विवाहित दंपतियों के अपने सर्वेक्षण में मैंने पाया कि केवल तीन और दंपतियों में पत्नी का नाम पति से पहले आता है: न्यायी दबोरा का नाम लप्पीदोत से पहले;[578] भविष्यद्वक्तिन हुल्दा का नाम शल्लूम से पहले;[579] और मरियम का नाम यूसुफ से पहले।[580] इन सब स्थानों पर उनका पहले उल्लेख होना स्पष्ट रूप से उनकी अधिक प्रमुख सेवकाई पर ज़ोर देता है। तो फिर यह हमें प्रिस्किल्ला के बारे में भी यही निष्कर्ष निकालने की ओर क्यों न ले जाए? यद्यपि हम केवल अनुमान लगा सकते हैं कि प्रिस्किल्ला के पास कौन से वरदान थे जिन्होंने उसे अक्विला से अधिक प्रमुख बनाया, परन्तु एक बात हम निश्चित रूप से कह सकते हैं: वह अपने पति की सेवकाई में केवल एक पिछलग्गू सहायक नहीं थी। यह सब कहने का अर्थ है कि कम से कम वह अक्विला के बराबर थी, और अपने सार्वजनिक वरदान में उतनी ही (यदि उससे अधिक नहीं) मुक्त की गई थी जितना वह।

दूसरी आपत्ति इस बात पर ज़ोर देती है कि "प्राचीन" और "पास्टर" पुल्लिंग शब्द हैं, और इसलिए प्रिस्किल्ला चाहे जितनी वरदान-प्राप्त और सम्मानित रही हो, एक चीज़ वह नहीं हो सकती थी – पुरुष, और इसलिए प्राचीन भी नहीं।

यह आपत्ति इस बात को नहीं समझती कि प्राचीन यूनानी भाषा, सब प्राचीन भाषाओं की तरह, पुरुष-केंद्रित (androcentric) थी, अर्थात पुरुष को केंद्र में रखती थी। अंग्रेज़ी भाषा भी, जो अब तेज़ी से अपनी पुरुष-केंद्रितता छोड़ रही है, अभी भी दोनों लिंगों के लिए पुरुषवाचक संज्ञाओं का प्रयोग करती है: एक सामान्य "he" (वह – पुरुषवाचक) "he or she" (वह पुरुष या स्त्री) के स्थान पर आ सकता है; "mankind" (मानवजाति, शब्दशः "पुरुष-जाति") और "manmade" (मनुष्य-निर्मित, शब्दशः "पुरुष-निर्मित") में स्त्रियाँ भी शामिल हैं; और इसी तरह "chairman" (अध्यक्ष) और "fireman" (अग्निशमनकर्मी) जैसे शब्दों में भी।

577. प्रेरितों के काम 11:26, 30; 12:25; 13:1-2 में हमेशा "बरनबास और शाऊल/पौलुस" आता है। परन्तु पाफुस द्वीप पर उसकी नाटकीय सेवकाई के बाद, जो उसकी और बरनबास की मिशन-यात्रा का पहला चरण था, पौलुस का नाम पहले आने लगता है – उदाहरण के लिए देखें प्रेरितों के काम 13:13, 42, 43, 46, 49; 14:1, 3। इसलिए जब लूका इफिसुस में अक्विला और प्रिस्किल्ला के कलीसिया-स्थापना के काम का वर्णन करता है, तो हमें ध्यान देना चाहिए कि वह तीन बार उसका नाम पहले रखता है – देखें प्रेरितों के काम 18:18, 19, 26।
578. न्यायियों 4:4
579. 2 राजाओं 22:14
580. मत्ती 1:18

प्राचीन यूनानी में यह पुरुष-केंद्रितता कहीं अधिक प्रमुख है, क्योंकि व्यक्तियों के लिए संज्ञाएँ या तो पुल्लिंग होती हैं या स्त्रीलिंग, नपुंसकलिंग का कोई विकल्प नहीं होता। स्त्रीलिंग रूप का प्रयोग केवल तभी होता है जब बात केवल किसी स्त्री या स्त्रियों के समूह की हो। जब बात केवल किसी पुरुष या पुरुषों की हो, या पुरुषों और स्त्रियों के मिले-जुले समूह की हो, तो पुल्लिंग संज्ञा-रूप का प्रयोग होता है।[581]

जब पतरस पिन्तेकुस्त के दिन भीड़ में उपस्थित हज़ारों पुरुषों और स्त्रियों को संबोधित करता है, तो वह उन्हें पुल्लिंग संज्ञाओं से पुकारता है: "भाइयो" (adelphoi) और "पुरुषो" (andres)। इसी तरह, प्रेरितों के काम की पुस्तक में "चेलों" का उल्लेख करते समय, जहाँ स्त्रियाँ स्पष्ट रूप से उपस्थित हैं, वहाँ भी पुल्लिंग रूप का ही प्रयोग होता है। या जब 1 कुरिन्थियों 14 में वर्णित कलीसिया की सभाओं में भाग लेने वाले बहुत से भविष्यद्वक्ताओं का उल्लेख होता है, तो पुल्लिंग रूप का प्रयोग होता है, यद्यपि हम जानते हैं कि स्त्रियाँ भी भविष्यद्वाणी कर रही थीं।[582] या इस पर विचार कीजिए: "पौलुस और सीलास ... लुदिया के घर गए, जहाँ वे adelphoi (शब्दशः "भाइयों") से मिले और उन्हें प्रोत्साहित किया"[583] – जबकि लुदिया और बहुत सी दूसरी स्त्रियाँ उस मिले-जुले समूह का हिस्सा हैं, जिसका वर्णन फिर भी एक सामूहिक पुल्लिंग संज्ञा से किया गया है। भाषा का यह पुरुष-केंद्रित प्रयोग इतना चरम था कि कभी-कभी किसी अगुवाई के पद पर अकेली स्त्री का वर्णन भी पुल्लिंग संज्ञा से किया जा सकता था – उदाहरण के लिए, जैसा मैं पहले भी उल्लेख कर चुका हूँ, फीबे स्त्री होते हुए भी रोमियों 16:1 में डीकन कहलाती है, न कि डीकनेस ('डीकन' शब्द का स्त्रीलिंग रूप)।

इसका अर्थ है कि जब हम पढ़ते हैं कि पौलुस ने "हर एक कलीसिया में ... प्राचीन ठहराए",[584] तो हो सकता है कि उस समूह में स्त्रियाँ भी रही हों, या कम से कम, उसका "प्राचीन" शब्द का प्रयोग अपने आप में इस बात का संकेत नहीं है कि उसने स्त्री प्राचीन नियुक्त नहीं कीं। निश्चय ही, उस समय की अत्यंत पितृसत्तात्मक संस्कृति में बहुत संभव है कि बहुत सी कलीसियाओं की टीम में केवल पुरुष होते। फिर भी यह आवश्यक रूप से हमेशा ऐसा नहीं था, विशेषकर यदि उस समय प्रिस्किल्ला उस कलीसिया में थी।

मेरी बात को स्पष्ट करने के लिए एक काल्पनिक दृश्य: इफिसुस की कलीसिया में लौटने के बाद पौलुस उसे फिर से छोड़कर चला गया, और कुछ समय बाद जब वह इफिसुस के पास से गुज़र रहा था, तो उसने नगर में न जाने का निर्णय लिया, बल्कि केवल कलीसिया के प्राचीनों को पास के नगर मीलेतुस में बुलवाया, ताकि वह एक दिन उनके साथ अपनी दो वर्षों की सेवकाई को याद करने और पास्टरीय सेवकाई के लिए उन्हें फिर से उत्साहित करने में बिता सके। उसने इस भेंट के बारे में कहा कि यह "अंतिम बार थी जब वे उसका मुँह देखेंगे।"[585] सभा इस तरह समाप्त हुई कि वे उसके चारों ओर इकट्ठे होकर रो रहे थे और प्रार्थना करके उसे विदा कर रहे थे। परन्तु ध्यान दीजिए: कलीसिया के सब लोगों को नहीं बुलाया गया था, केवल प्राचीनों को।[586] अब क्या आप कल्पना कर सकते हैं कि अक्विला प्रिस्किल्ला से, जो मीलेतुस की यात्रा में उसके साथ

581. कभी-कभी संदर्भ से स्पष्ट होता है कि लेखक केवल पुरुषों की बात कर रहा है, और कभी पुरुषों और स्त्रियों दोनों की, और कभी-कभी पाठक निश्चित नहीं हो सकता कि स्त्रियाँ शामिल हैं या नहीं।
582. देखें 1 कुरिन्थियों 11:2; 14:29।
583. प्रेरितों के काम 16:40
584. प्रेरितों के काम 14:23
585. प्रेरितों के काम 20:38
586. प्रेरितों के काम 20:17

चलने की कोशिश करती है, कहे, "प्रिये, पौलुस ने केवल प्राचीनों को बुलाया है। तुम्हें यहीं रुकना पड़ेगा"? मैं तो इसकी कल्पना भी नहीं कर सकता। और मैं आपको बताता हूँ क्यों: प्रिस्किल्ला ने उस कलीसिया में ठीक उतनी ही पास्टर की भूमिका निभाई थी जितनी उसके पति ने।

अंतिम आपत्ति इस बात पर ज़ोर देती है कि मूल, यरूशलेम की कलीसिया की अगुवाई केवल पुरुष करते थे। यह सच है कि पुरुष प्रेरित यरूशलेम की कलीसिया की अगुवाई करते हैं (प्रेरितों के काम 1-5 में) और फिर उन्होंने अगुवाई में सहायता के लिए सात पुरुष नियुक्त किए (प्रेरितों के काम 6-8 में), परन्तु इनमें से कोई भी तथ्य सब कलीसियाओं के लिए सार्वभौमिक साँचा नहीं है। बारह के पुरुष होने के प्रतीकात्मक महत्व को एक ओर रखें (उस पर मैं पिछले अध्याय में विचार कर चुका हूँ), तो हमें याद रखना चाहिए कि हर कलीसिया की तरह यरूशलेम की कलीसिया भी अपनी स्थानीय परिस्थिति से आकार पाती थी। उदाहरण के लिए, प्रेरितों के काम 6 में प्रेरित नहीं, बल्कि कलीसिया सात पुरुषों को चुनती है, ताकि वे उन असहाय विधवा स्त्रियों से जुड़े बड़े टकरावों को सुलझाएँ, जिनमें से कुछ यूनानी भाषी यहूदी थीं और कुछ इब्रानी भाषी यहूदी। उस यहूदी संस्कृति में यह अपेक्षित था कि हाशिये पर पड़ी स्त्रियाँ, जिन्हें अपनी रक्षा और पैरवी के लिए किसी की आवश्यकता थी, इस काम के लिए स्वतंत्र पुरुषों को चुनें (न दूसरी स्त्रियों को और न दासों को)।

यरूशलेम की कलीसिया के प्रत्यक्ष पुरुष-केंद्रित होने के बारे में और भी कहा जा सकता है। यीशु के पुनरुत्थान और आत्मा के वरदान से जो नई धर्मवैज्ञानिक वास्तविकताएँ प्रकट हुईं, उन्हें पहली सदी की नई-नई कलीसिया में रचने-बसने में फिर भी, ऐसा प्रतीत होता है, कुछ वर्ष लगे। जब हम प्रेरितों के काम की पुस्तक को आरंभ से अंत तक पढ़ते हैं, तो हमें व्यवहार में कुछ प्रगति दिखाई देती है, क्योंकि आरंभिक कलीसिया को हाल ही में पाए सुसमाचार को लागू करने में समय लगता है। अति-सरलीकरण का जोखिम उठाते हुए कहें, तो नए नियम में वर्णित "आरंभिक कलीसिया" का युग दो चरणों में बँटता है। पहले दशक में कलीसिया मुख्य रूप से यरूशलेम में एक यहूदी पंथ है। फिर वह तेज़ी से अपने यहूदी आधार से आगे बढ़कर एशिया माइनर और यूरोप में फैलती है, जहाँ वह मुख्य रूप से अन्यजातियों का समुदाय बन जाती है। आरंभिक कलीसिया के भीतर इस विकास के साथ-साथ केवल यहूदी अगुवाई से यहूदी और अन्यजाति अगुवाई की ओर एक स्पष्ट गति दिखाई देती है – एक प्रक्रिया जिसमें समय लगता है, यद्यपि आरंभ से ही, धर्मवैज्ञानिक रूप से कहें तो, "न कोई यहूदी है, न अन्यजाति।" तो कुछ ऐसा ही अनुमान उस धीमी प्रगति के बारे में भी लगाया जा सकता है जो कलीसिया स्त्रियों को अधिक पूर्ण रूप से सेवकाई में लगाने में करती है, यद्यपि आरंभ से ही, धर्मवैज्ञानिक रूप से कहें तो, "न कोई नर है, न नारी।" नए नियम की कलीसिया के इन दो चरणों में से कौन सा आज की कलीसियाओं से सबसे अधिक मेल खाता है? यद्यपि हम सन् 35 ईस्वी की यरूशलेम की कलीसिया से प्रेरणा ले सकते हैं, फिर भी शायद सन् 57 ईस्वी की रोम की कलीसिया हमारा बेहतर मार्गदर्शन करेगी – जो अब न तो एक यहूदी पंथ थी (रोमियों 1-15 का मुख्य विचार), और न पुरुष-प्रधान (रोमियों 16 का मुख्य विचार)।

निष्कर्ष यह है: यह मानने के बहुत से अच्छे कारण हैं कि प्रिस्किल्ला एक पास्टर थी, और न मानने का कोई ठोस कारण नहीं। परन्तु शायद हम प्रिस्किल्ला पर ही अटके रहे हैं। रोमियों 16 में एक और स्त्री का उल्लेख है

जिसकी सेवकाई की साख इतिहास की और आज की कलीसिया में स्त्रियों की सेवकाई को छोटा करने के प्रयासों को सामर्थ के साथ झिड़कती है।

प्रेरित यूनिया

प्रिस्किल्ला और अक्विला को नमस्कार कहने के बाद, पौलुस रोम की कलीसिया के एक और दंपती की सराहना करता है: "अन्द्रुनीकुस और यूनिया को नमस्कार कहो, जो मेरे साथी यहूदी हैं और मेरे साथ कैद में रहे हैं। वे प्रेरितों में उत्कृष्ट हैं, और वे मुझसे पहले मसीह में थे।"[587]

हम कभी-कभी मान लेते हैं कि विश्वव्यापी कलीसिया के पहले दशकों में हुई सारी महत्वपूर्ण सेवकाई का वर्णन प्रेरितों के काम की पुस्तक में है। परन्तु यह पद उस धारणा को चकनाचूर कर देता है। यह एक ऐसा दंपती है जिसका प्रेरितों के काम की पुस्तक में बिल्कुल उल्लेख नहीं है, फिर भी प्रत्यक्षतः उन्होंने अत्यंत महत्वपूर्ण और नई राह खोलने वाली सेवकाई की, और वह भी बड़ी कीमत चुकाकर: इसके लिए उन्हें कैद किया गया।

जब पौलुस रोम की कलीसिया को लिखता है, तब तक वह उस नगर में या उस कलीसिया में नहीं गया था। यह यूरोप की उन थोड़ी सी कलीसियाओं में से एक है जिन्हें उसने स्थापित नहीं किया था। हमें अनुमान लगाना पड़ता है कि इसे किसने स्थापित किया, और बहुत से विद्वान मानते हैं कि यह दंपती सबसे संभावित उम्मीदवार है। यूनिया और अन्द्रुनीकुस, जो पौलुस की तरह यहूदी थे, पौलुस से पहले विश्वासी बने थे, जिसका अर्थ है कि वे यरूशलेम की कलीसिया में यीशु के पीछे चलने लगे थे। शायद वे यरूशलेम के विश्वासियों के उस भीतरी दायरे का हिस्सा थे जिन्होंने जी उठे यीशु को देखा था, और जो स्तिफनुस के मारे जाने पर बाहर के विस्तृत संसार में धकेल दिए गए।

प्रिस्किल्ला और अक्विला की तरह, पौलुस हमें उनके विवाह में पूरकतावादी "अगुवा-सहायक नमूना" पढ़ने का कोई अवसर नहीं देता, बल्कि दोनों को एक साथ एक ही प्रशंसा देकर उन्हें सच्चे सेवकाई-दंपती के रूप में प्रस्तुत करता है – दोनों प्रेरित हैं; दोनों अपनी अग्रणी सेवकाई में उत्कृष्ट रहे हैं; और दोनों कैद में रहे हैं। दुर्भाग्य से, पदानुक्रम के समर्थक व्याख्याकार लंबे समय से तीन में से किसी एक तरीके से उसकी सेवकाई को घटाने का प्रयास करते रहे हैं।

पहला, कुछ लोग तर्क देते हैं कि यूनिया स्त्री नहीं थी। यद्यपि मध्य युग के अंतिम दौर तक उसे स्त्री माना जाता रहा,[588] चौदहवीं सदी में रोम के जाइल्स (Giles of Rome) ने उसे पुरुष ठहराया, क्योंकि उसे प्रेरित कहा गया था। परन्तु यह "लिंग-परिवर्तन", जैसा कि एक विद्वान कहता है, "पुरुष-अहंकारी कल्पना की उपज" था।[589] Junia (यूनिया) नाम रोमी साम्राज्य में एक आम स्त्री-नाम था, जो लैटिन से निकला था। इसके

587. रोमियों 16:7
588. देखें Paul Jewett, Romans, पृ. 961–62। अपवाद एपिफेनियस (Epiphanius) (315-403) है, जो एक पुरुष Junias का उल्लेख करता है, परन्तु जो यह भी मानता है कि रोमियों 16:3 की प्रिस्किल्ला एक पुरुष है – और हम जानते हैं कि यह असत्य है। इसलिए उसे एक विश्वसनीय गवाह के रूप में हटा देना सुरक्षित लगता है। देखें Eldon Epp, Junia, पृ. 34।
589. Paul Jewett, Romans, पृ. 962।

विपरीत, प्राचीन नामों के डेटाबेस में गहन खोज से पता चलता है कि कथित पुरुष-नाम Junias (यूनियास – हिन्दी O.V. में रोमियों 16:7 में यही पुरुषवाचक रूप है) का एक भी उदाहरण नहीं मिला है।[590] बीसवीं सदी में उसे फिर से पुरुष कहने के एक दौर के बाद, अब लगभग चार दशकों से विद्वानों की आम सहमति ने फिर से पुष्टि की है कि वह स्त्री थी[591] (यद्यपि कुछ पूरकतावादी विद्वान अब भी इसके विपरीत तर्क देते हैं[592])।

दूसरा, कुछ कहते हैं कि वह प्रेरित नहीं थी। 2001 में दो पूरकतावादी विद्वानों ने[593] एक लेख लिखा, जिसका प्रयोग ESV अनुवाद को उचित ठहराने के लिए किया गया, जिसने यह अनुवाद चुना: "यूनिया प्रेरितों की दृष्टि में अत्यंत सम्मानित थी" – और इसलिए प्रेरितों में से एक नहीं थी। परन्तु इन विद्वानों का दावा (और इस कारण उस पद का ESV अनुवाद) विद्वानों की आपसी समीक्षा (peer review) की कसौटी पर नहीं टिक पाया। डेटाबेस की जाँच करके और शब्दावली तथा व्याकरण का विश्लेषण करके, Linda Belleville, Eldon Epp और Richard Bauckham जैसे पाठ-विद्वानों ने इस दावे का शीघ्र खंडन किया, और दिखाया कि आरंभिक कलीसिया की समझ के अनुरूप इस पद का यह अर्थ लेना कहीं अधिक विश्वसनीय है कि यूनिया स्त्री भी थी और प्रेरित भी।[594]

उनके तर्क इतने प्रबल हैं कि Tom Schreiner ने भी अंततः स्वीकार किया कि वह स्त्री थी और प्रेरित थी,[595] यद्यपि उसी समय उसने एक और आपत्ति उठा दी।

वह असली प्रेरित नहीं थी। Schreiner कहता है कि "यहाँ 'प्रेरित' शब्द संभवतः 'कलीसिया-स्थापकों' या 'मिशनरियों' को दर्शाता है, और इसलिए यूनिया और अन्द्रुनीकुस को बारह या पौलुस के स्तर पर नहीं रखता।"[596]

परन्तु ऐसा लगता है कि Schreiner की प्रेरिताई की समझ अपर्याप्त है। यद्यपि "प्रेरित" शब्द का अर्थ है भेजा हुआ, नए नियम में तीन प्रकार के "प्रेरित" हैं। पहले प्रकार के प्रेरित हैं बारह, जिन्हें यीशु ने पृथ्वी पर रहते हुए चुना। फिर दूसरे प्रकार के प्रेरित हैं। इसका अर्थ है प्रेरितों का व्यापक दायरा, जिसमें पौलुस,

590. Kevin Giles, What the Bible Actually Teaches on Women, पृ. 276
591. उदाहरण के लिए, रोमियों की पुस्तक के हाल के टीकाकार, जैसे M.J. Lagrange, Leon Morris, John Ziesler, J. A. Fitzmyer, C. E. B. Cranfield और James Dunn, यही मत रखते हैं।
592. फिर भी, अधिकांश वरिष्ठ पूरकतावादी विद्वान और लगभग सभी वर्तमान टीकाकार, जैसे Andreas Köstenberger और Douglas Moo, मानते हैं कि वह स्त्री थी।
593. Michael Burer और Daniel Wallace, "Was Junia Really an Apostle? A Re-examination of Romans 16:7" में, NTS 47 (2001), पृ. 76–91।
594. देखें Linda Belleville, "A Re-examination of Romans 16:7 in Light of Primary Source Materials," NTS 51 (2005): पृ. 231–49; Eldon Epp, Junia: The First Woman Apostle; Richard Bauckham, Gospel Women, पृ. 165–85।
595. 1995 की "Recovering Biblical Manhood and Womanhood" (p221) में वह इस बात की किसी भी निश्चितता पर विवाद करता है कि यूनिया प्रेरित है, जबकि 2005 की "Two Views of Women in Ministry" (अध्याय 1) में वह बहुसंख्यक विद्वानों से सहमत हो जाता है। इसी तरह Philip Payne की पुस्तक "One in Christ" की अपनी समीक्षा में वह Payne से सहमत होता है: "यूनिया लगभग निश्चित रूप से एक स्त्री थी, और पौलुस उसे प्रेरित बताता है।" (स्रोत: www.bit.ly/3qaJctI) वह अकेला नहीं है – दूसरे शीर्ष पूरकतावादी विद्वान जो इससे सहमत हैं, वे हैं Douglas Moo, अपनी रोमियों की टीका में (पृ. 923), और Köstenberger, "God's Design for Man and Woman" में (पृ. 153)।
596. Schreiner यह "Two Views of Ministry", पृ. 105 में कहता है। Douglas Moo रोमियों पर अपनी टीका, पृ. 922 में ऐसा ही तर्क देता है।

बरनबास और याकूब शामिल हैं, जिन्हें यीशु अब, स्वर्ग में होते हुए, खड़ा कर सकते हैं और भेज सकते हैं।[597] नए नियम में प्रेरितों के लगभग सारे उल्लेख इन्हीं दो प्रयोगों में आते हैं, यद्यपि जब तक रोमियों की पत्री लिखी गई – कलीसिया की कहानी के कुछ दशक बाद – तब तक "प्रेरित" अब बारह को नहीं, बल्कि व्यापक समूह को दर्शाता था। पौलुस सामान्यतः इस शब्द का प्रयोग इसी तरह करता था।

अंत में, तीसरे प्रकार के प्रेरित हैं – वे लोग जिन्हें कोई विशेष कलीसिया किसी महत्वपूर्ण काम के लिए चुनकर भेजती थी, विशेषकर आर्थिक भेंट पहुँचाने वाले संदेशवाहक के रूप में। नए नियम में केवल दो स्थानों पर इस शब्द का प्रयोग ऐसे व्यक्ति के लिए हुआ है जिसे कोई स्थानीय कलीसिया किसी विशेष काम के साथ भेज सकती थी, ताकि वह किसी व्यक्ति या दूसरी कलीसिया के सामने उस कलीसिया का प्रतिनिधित्व करे: फिलिप्पी की कलीसिया इपफ्रुदीतुस को पौलुस को सांत्वना देने और उसकी आवश्यकताएँ पूरी करने के लिए एक "भेजे हुए" के रूप में भेजती है,[598] जबकि कई कलीसियाएँ यरूशलेम की कलीसिया तक एक बड़ी आर्थिक भेंट पहुँचाने में सहायता के लिए किसी को चुनकर भेजती हैं[599] – NIV यहाँ इस शब्द का अनुवाद "representatives" (प्रतिनिधि) करती है।

तो जब पौलुस कहता है कि यूनिया "प्रेरितों" में से एक है, तो वह किनकी बात कर रहा है? स्पष्ट है कि ये पहले प्रकार के प्रेरित नहीं हो सकते, जिन्हें पौलुस दूसरी जगह "बारह" कहता है।[600] और लगभग निश्चित रूप से वे किसी विशेष काम पर भेजे गए, कलीसियाओं के तीसरे प्रकार के प्रतिनिधि मात्र भी नहीं हैं। हम यह इसलिए जानते हैं क्योंकि जिन दो स्थानों पर पौलुस इस शब्द को भेजे गए प्रतिनिधि के अर्थ में प्रयोग करता है, वहाँ वह इसे संबंधवाचक सर्वनामों से सीमित करता है: इपफ्रुदीतुस "तुम्हारा प्रेरित" है, जबकि धन ले जाने वाले "कलीसियाओं के प्रेरित" हैं। इसके विपरीत, दूसरे प्रकार का प्रेरित किसी स्थानीय कलीसिया का प्रतिनिधि मात्र नहीं होता – उसे स्वयं मसीह भेजते हैं। यह कि पौलुस इस जोड़े को बस "प्रेरित" कहता है, दर्शाता है कि उन्हें केवल किसी कलीसिया ने किसी काम पर नहीं भेजा था। न तो इपफ्रुदीतुस और न धन ले जाने वाले इन कामों को करके कैद का जोखिम उठाते हैं, जबकि यूनिया और उसका पति कैद में रह चुके थे – संभवतः दूसरे प्रकार के प्रेरित का काम करने के कारण। पौलुस की तरह, उन्हें स्वयं यीशु मसीह ने ऊँची कीमत वाली, नई राह खोलने वाली सेवकाई के लिए नियुक्त किया है, जिसमें सुसमाचार प्रचार करना, कलीसियाएँ स्थापित करना और उन्हें दृढ़ करना, इन कलीसियाओं के सिद्धांत तय करना, और पास्टरों को तैयार करना तथा नियुक्त करना शामिल है।

यद्यपि प्रेरितों के व्यापक दायरे में पौलुस की प्रेरिताई अद्वितीय है, क्योंकि वह बारह में से कुछ की तरह पवित्रशास्त्र भी लिखता है, फिर भी वह ऐसी भाषा का प्रयोग करता है जो इस प्रेरित-दंपती को स्वयं उसके साथ जोड़ती है। वे "साथी यहूदी" हैं। वे उसके "साथ" कैद में रहे हैं।

हमें आश्चर्य होता है कि Schreiner का यूनिया को केवल "कलीसिया-स्थापक" या "मिशनरी" कहना उसे पौलुस से कम कैसे बना देता है, जबकि पौलुस ठीक यही था। वास्तव में, पौलुस ऐसी भाषा का प्रयोग करता

597. देखें प्रेरितों के काम 14:14, 1 कुरिन्थियों 9:5-6, और गलातियों 1:19।
598. फिलिप्पियों 2:25
599. 2 कुरिन्थियों 8:23
600. 1 कुरिन्थियों 15:5

है जो प्रकट करती है कि उसकी दृष्टि में यूनिया उसके बराबर है। उसके "प्रेरितों में उत्कृष्ट [यानी, कक्षा में सबसे आगे]" होने से उसका और क्या अर्थ हो सकता है – उस समूह में, जिसमें वह स्वयं भी शामिल था? यूनिया की जिस बात ने पौलुस को इतना प्रभावित किया, उसका कम से कम एक हिस्सा यह था कि ऐसा प्रतीत होता है कि वह उससे अधिक समय से प्रेरिताई का काम कर रही थी। जैसा वह कहता है, वह उससे "पहले मसीह में" थी।

यहीं Schreiner की भूल है: यूनिया को पौलुस से कम दिखाने का उसका प्रयास पौलुस के उस प्रयास के विपरीत जाता है जिसमें वह उसे अपने जैसा, बल्कि अपने से भी बढ़कर, दिखाता है। शायद Schreiner के लिए अच्छा होगा कि वह कलीसियाई पिता यूहन्ना क्रिसोस्टम (John Chrysostom) के उन शब्दों पर ध्यान दे जो उसने रोमियों 16 पर अपनी प्राचीन टीका में लिखे: "प्रेरित होना एक बड़ी बात है। परन्तु प्रेरितों में उत्कृष्ट होना – ज़रा सोचिए, यह कितना अद्भुत प्रशंसा-गीत है! वे अपने कामों और सद्गुणपूर्ण कार्यों के आधार पर उत्कृष्ट थे। सचमुच, इस स्त्री की बुद्धि कितनी महान रही होगी कि उसे प्रेरित की उपाधि के योग्य भी समझा गया।"[601]

हमारा निष्कर्ष: यूनिया एक स्त्री थी, और वह एक प्रेरित थी – और वह भी दूसरे प्रकार की प्रेरित। पर क्या आप देखते हैं कि इन सब का क्या अर्थ है?

यद्यपि अधिकांश आधुनिक कलीसियाई संप्रदाय प्रेरिताई की सेवकाई को मान्यता नहीं देते, नया नियम दो स्थानों पर कहता है कि यह सबसे निर्णायक सेवकाई है। वास्तव में, पौलुस जब यह वर्णन करता है कि पवित्र आत्मा संसार में और कलीसियाएँ किस तरह स्थापित करते हैं, तो वह "पहले" शब्द का भी प्रयोग करता है। वह कहता है, "परमेश्वर ने कलीसिया में पहले प्रेरित, दूसरे भविष्यद्वक्ता, तीसरे शिक्षक, फिर सामर्थ के काम करने वाले, फिर चंगा करने के वरदान, और सहायता करने वाले, और प्रबंध करने वाले, और नाना प्रकार की भाषा बोलने वाले नियुक्त किए हैं।"[602]

इससे एक सीधा सा प्रश्न उठता है: यदि रोमियों 16:7 एक ऐसी स्त्री का नाम लेता है जो प्रेरित थी, और इस प्रकार संसार की सबसे वरिष्ठ, सबसे निर्णायक, बुनियादी और अधिकारपूर्ण सेवकाई का हिस्सा थी, तो क्या किसी स्त्री के लिए सेवकाई के किसी भी निचले स्तर पर – स्थानीय कलीसिया की अगुवाई समेत – अगुवाई करना कोई समस्या होगी? इसका उत्तर पूरकतावादी विश्वास का – कि स्त्रियाँ कलीसिया में ऊँचा अधिकार नहीं चला सकतीं – इतना खंडन करता है कि अब हम समझते हैं कि इसके विद्वान यूनिया के लिंग और उसकी प्रेरिताई पर प्रश्न उठाने के लिए किस हद तक जाते प्रतीत होते हैं।[603]

601. John Chrysostom, Homily 31 on Romans
602. 1 कुरिन्थियों 12:28-29। इफिसियों 4:11 भी देखें।
603. इन सब का दूसरा निहितार्थ यह है कि प्रिस्किल्ला को पास्टर मानने के लिए हमारे पास एक और कारण है, क्योंकि यदि यूनिया ने अपने पति के साथ प्रेरिताई का पद साझा किया, तो हम मान सकते हैं कि प्रिस्किल्ला का अपने पति अक्विला के साथ पास्टरीय अगुवाई का पद साझा करना सामान्य बात रही होगी।

स्त्री भविष्यद्वक्ता

नए नियम में हमारे पास एक स्त्री प्रेरित (यूनिया), एक सुसमाचार प्रचारक (सामरी स्त्री), और एक पास्टर-और-शिक्षक (प्रिस्किल्ला) हैं। यह हमें इफिसियों 4:11 में उल्लिखित अगुवाई के पाँच पदों की याद दिलाता है ("मसीह ने स्वयं प्रेरित, भविष्यद्वक्ता, सुसमाचार प्रचारक, पास्टर और शिक्षक दिए, ताकि उनके लोग तैयार किए जाएँ।"[604]), जो बदले में हमें एक और निर्णायक सेवकाई की ओर ले जाता है, जिस पर हमने इस अध्याय में अब तक विचार नहीं किया है: भविष्यद्वक्ता।

इब्रानी बाइबल में स्त्री भविष्यद्वक्ताओं की परंपरा (जिसमें मरियम, दबोरा और हुल्दा शामिल हैं) को आगे बढ़ाते हुए, और स्त्रियों तथा बेटियों के भविष्यद्वाणी करने के बारे में योएल की भविष्यद्वाणी को पूरा करते हुए, नए नियम में कई नामित स्त्री भविष्यद्वक्ता हैं: हन्नाह, यीशु की माता मरियम, और फिलिप्पुस की चार बेटियाँ।[605] पौलुस कुरिन्थुस की कलीसिया में भविष्यद्वाणी करने वाली अनाम स्त्रियों की भी सराहना करता है।[606] प्रकाशितवाक्य में यीशु थुआतीरा की कलीसिया में एक स्त्री भविष्यद्वक्ता-शिक्षिका का – जो संभवतः वहाँ की एक अगुवा भी थी – सामना करते हैं, और उसे पश्चाताप करने का समय भी देते हैं; इसलिए नहीं कि वह एक स्त्री होकर शिक्षा देने और भविष्यद्वाणी करने का प्रयास कर रही थी, बल्कि इसलिए कि वह एक अनैतिक व्यक्ति थी जो अनैतिकता को बढ़ावा दे रही थी।[607]

यद्यपि नए नियम में भविष्यद्वक्ता के कम सामान्य अगुवाई-पद (इफिसियों 4:11 में उल्लिखित) और भविष्यद्वाणी करने के अधिक सामान्य वरदान के बीच अंतर प्रतीत होता है, फिर भी पाठ में ऐसा कुछ भी नहीं है जो यह संकेत दे कि स्त्रियों के पास केवल वरदान हो सकता था, पद नहीं – विशेषकर उन स्त्रियों के प्रकाश में जिन्होंने पुराने नियम में स्पष्ट रूप से भविष्यद्वक्ता का पद संभाला। अब सोचिए कि यह अंतर्दृष्टि कितनी निर्णायक है।

भविष्यद्वक्ता भी शिक्षक थे – वरना पौलुस 1 कुरिन्थियों 14 में यह क्यों कहता कि वे "शिक्षा का वचन" ला सकते हैं[608]? 1 कुरिन्थियों 14 का विश्लेषण करते हुए Derek Morphew निष्कर्ष निकालता है: "पौलुस के लिए भविष्यद्वाणी एक ऐसा शब्द है जिसमें कुछ प्रकार की आत्मा-प्रेरित शिक्षा शामिल है। भविष्यद्वक्ता की शिक्षा शिक्षक की शिक्षा से आंशिक रूप से मेल खाती है, और उसे केवल इस बात से अलग किया जा सकता है कि वह किस ढंग से दी जाती है, या शिक्षा देने वाले की भविष्यद्वक्ता के रूप में मान्यता-प्राप्त स्थिति से।"[609]

604. यद्यपि 1 कुरिन्थियों 12 और रोमियों 12 वरदानों को ऐसे कार्यों के रूप में बताते हैं जो विभिन्न लोगों को (स्त्रियों समेत) दिए गए हैं, इफिसियों 4:11 कुछ ऐसे अगुवों की बात करता है जो स्वयं कलीसिया के लिए यीशु के वरदान हैं।
605. लूका 2:36; प्रेरितों के काम 1:14 और 2:17; प्रेरितों के काम 21:9
606. 1 कुरिन्थियों 11:4
607. प्रकाशितवाक्य 2:20-24
608. 1 कुरिन्थियों 14:26
609. Derek Morphew "Equal but Different" में E.E. Ellis को उद्धृत करता है, "Prophecy and Hermeneutics in Early Christianty" (पृ. 141)।

आधुनिक संप्रदाय, जो शिक्षकों और भविष्यद्वक्ताओं के बीच स्पष्ट सीमा-रेखा खींचते हैं और शिक्षकों को भविष्यद्वक्ताओं से ऊपर रखते हैं, अपने विश्वासों को पीछे से नए नियम पर थोपने का प्रयास करते हैं, यह कहकर कि शिक्षा भरोसेमंद है और इसलिए अधिकारपूर्ण है, जबकि भविष्यद्वाणी अधिक स्वतःस्फूर्त हो सकती है और इसलिए अधिकारपूर्ण नहीं है। वास्तव में, शिक्षकों की शिक्षाओं और भविष्यद्वक्ताओं की शिक्षाओं, दोनों से अपेक्षा की जाती है कि वे सच्ची और आत्मा से मार्गदर्शित हों, परन्तु दोनों के असत्य होने का ख़तरा रहता है, और इसलिए कलीसियाओं को उनकी परख करनी चाहिए।[610] पतरस तो झूठी शिक्षा को झूठी भविष्यद्वाणी के साथ एक कर देता है, और इस प्रकार शिक्षा को भविष्यद्वाणी के साथ: "[जिस प्रकार] उन लोगों में झूठे भविष्यद्वक्ता भी थे, उसी प्रकार तुम में भी झूठे शिक्षक होंगे।"[611] शिक्षा और भविष्यद्वाणी के इस वैचारिक मेल के कारण, "पूरकतावादियों के आने से पहले के प्रोटेस्टेंट धर्मविज्ञानियों और टीकाकारों ने तर्क दिया कि भविष्यद्वाणी [बाइबल आधारित] प्रचार का एक रूप है, [जो] आरंभिक कलीसिया की सबसे महत्वपूर्ण सेवकाइयों में से एक [थी]। John Calvin ने भी भविष्यद्वाणी को 'वर्तमान आवश्यकता पर लागू की गई पवित्रशास्त्र की व्याख्या' माना।"[612]

नया नियम पूरकतावादी विद्वानों के इस कथन का बिल्कुल समर्थन नहीं करता कि शिक्षा देना "आधिकारिक" सेवकाई है जबकि भविष्यद्वाणी "अनाधिकारिक" सेवकाई।[613] इफिसियों 4:11 में पौलुस द्वारा बताए गए अगुवाई के पाँच पदों के बाहर, "आधिकारिक" सेवकाई कही जा सकने वाली किसी बात को व्यक्त करने के सबसे निकट पौलुस इफिसियों 2:20 में आता है, जहाँ वह कहता है कि कलीसियाओं को "प्रेरितों और भविष्यद्वक्ताओं" की सेवकाइयों पर बनाया जाना है (पास्टरों या शिक्षकों का कोई उल्लेख नहीं), और 1 कुरिन्थियों 12:28 में, जहाँ पौलुस पदों को सबसे प्रमुख और रणनीतिक से लेकर सबसे कम तक क्रम में रखता है: "परमेश्वर ने कलीसिया में पहले प्रेरित, दूसरे भविष्यद्वक्ता, तीसरे शिक्षक नियुक्त किए।" शिक्षा देने को भविष्यद्वाणी करने से ऊँचा दर्जा देने का हमारे पास कोई बाइबल आधारित औचित्य नहीं है – यदि कुछ है, तो हम यह तर्क दे सकते हैं कि भविष्यद्वक्ताओं का दर्जा शिक्षकों से ऊँचा है। शिक्षा और भविष्यद्वाणी दोनों उस सीमा तक अधिकारपूर्ण हैं जिस सीमा तक उनका संदेश सच्चा और परमेश्वर की ओर से है। यह सब कहने का अर्थ है कि यह पूरकतावादी तर्क – कि स्त्रियाँ भविष्यद्वक्ता हो सकती हैं परन्तु पास्टर या शिक्षक नहीं, जिनके पास अपनी "आधिकारिक" सेवकाई में ऊँचा अधिकार है – बहुत सी आधुनिक कलीसियाई परिस्थितियों में भले ही समझ में आए, परन्तु पौलुस के धर्मविज्ञान का खंडन करता है।

610. 1 कुरिन्थियों 14:29; प्रकाशितवाक्य 2:20, 24
611. 2 पतरस 2:1
612. Kevin Giles, What the Bible Actually Teaches on Women, अध्याय 6।
613. Kevin Giles एक पूरकतावादी विद्वान को उद्धृत करता है, जो कहता है, "भविष्यद्वाणी का अधिकारपूर्ण कार्य किसी संस्थागत पद में नहीं, बल्कि स्वयं परमेश्वर के वचन के रूप में कहे गए कथन में निहित है।" (अध्याय 6) परन्तु यह तर्क दोनों ओर लागू होता है। आप यह भी कह सकते हैं, "शिक्षक और शिक्षा में कोई अंतर्निहित अधिकार नहीं है; जो अधिकारपूर्ण है, वह भविष्यद्वाणी की तरह 'स्वयं परमेश्वर के वचन के रूप में कहा गया कथन' है।"

कलीसिया के इतिहास से तर्क

पूरकतावादी विद्वान प्रिस्किल्ला के पास्टर होने और यूनिया के प्रेरित होने, दोनों का खंडन करने का एक और तरीका अपनाते हैं: वे बताते हैं कि जहाँ तक हम जानते हैं, कलीसियाई पिताओं ने दूसरी सदी से आगे स्त्रियों को अगुवों या शिक्षकों के रूप में नियुक्त नहीं किया। वास्तव में, जैसे-जैसे समय बीतता गया, उन्होंने इस पर और अधिक सख़्ती से रोक लगाई।[614] इस बारे में क्या कहें?

अध्याय 2 में हमने उन स्त्री-द्वेषी मनोवृत्तियों पर फिर से नज़र डाली जो बहुत से कलीसियाई पिताओं में स्पष्ट दिखाई देती हैं। जैसा हमने देखा, वे दुखद रूप से यह भूल गए कि यीशु स्त्रियों को कैसे देखते हैं, और उन्होंने पवित्रशास्त्र को अपनी पितृसत्तात्मक संस्कृति के चश्मे से पढ़ा, न कि अपनी संस्कृति को पवित्रशास्त्र के चश्मे से। और इस प्रकार, स्त्रियों का सम्मान करने वाले नए नियम की स्याही सूखने से पहले ही स्त्री-द्वेष कलीसिया में रिस आया। स्त्रियों को पास्टर नियुक्त करना तो दूर की बात, कलीसिया स्त्रियों की हीनता और अधीनस्थता के बारे में इतनी आश्वस्त हो गई कि बीती सदियों में शायद ही किसी कलीसिया ने स्त्रियों को सेविका (डीकन) के रूप में भी नियुक्त किया।

यद्यपि हमें कलीसिया के इतिहास से बहुत कुछ सीखना है, हमें हर प्रकार के विषयों पर पवित्रशास्त्र और बाइबल की शिक्षा की बेहतर समझ के प्रकाश में उसकी आलोचना भी करनी चाहिए। उदाहरण के लिए, यद्यपि कलीसिया ने अपनी पहली कुछ सदियों में त्रिएकता और यीशु मसीह से जुड़े सिद्धांतों को परिभाषित करने में बड़ी प्रगति की, फिर भी ऐसा लगता है कि वह कलीसिया की अगुवाई के बारे में नए नियम की शिक्षा से जल्दी ही भटक गई। पहली सदी के अंत तक नए नियम में ज़ोर दी गई बहुल अगुवाई (कई अगुवों की साझा अगुवाई) छोड़ दी गई। कलीसियाई पिता इग्नेशियस ने हर कलीसिया को राजतंत्रीय बिशप-प्रणाली (monarchical episcopate) के अधीन चलाने का मार्गदर्शन दिया – यानी एक अकेला पास्टर, एक ऐसा विचार जो आज भी व्यापक रूप से प्रचलित है।

सुधारवाद (Reformation) के बाद ही प्रेस्बिटेरियन जैसे समूहों ने बहुल अगुवाई के विचार को फिर से अपनाया। यद्यपि आज पूरे-पूरे संप्रदाय इसे फिर से अपनाते हैं, हम ध्यान देते हैं कि यह एक हज़ार वर्ष से अधिक के "कलीसियाई इतिहास" से हटकर था – एक ऐसा विचलन जो इस बात की पुनर्खोज पर आधारित था कि नया नियम आरंभ से क्या सिखाता आया था। इसी प्रकार, कलीसिया के इतिहास में इतनी व्यापक रही स्त्रियों की हीनता और अधीनस्थता, दोनों को अस्वीकार करना इस बात की पुनर्खोज से उचित ठहरता है कि नया नियम आरंभ से क्या सिखाता आया है।

यद्यपि पिछली सदी में मानव इतिहास ने अधिकांशतः अधिक से अधिक स्त्रियों को समाज की बागडोर सँभालने में पुरुषों के साथ आने दिया है, विडंबना यह है कि बहुल अगुवाई वाली बहुत सी कलीसियाएँ उल्टी

614. पितृ-युग (Patristic era) में कम से कम कुछ स्त्रियों को कलीसियाओं में प्रेस्बिटर (प्राचीन) के रूप में नियुक्त किया जा रहा था, यह इस बात से स्पष्ट है कि सन् 370 ईस्वी की लौदीकिया की परिषद (Council of Laodicea) जैसी परिषदों में इस प्रथा को अवैध घोषित किया गया।

दिशा में चली गई हैं। राजतंत्रीय बिशप-प्रणाली की सदियों में केवल एक पुरुष कलीसिया की अगुवाई करता था, जिसका अर्थ था कि कम से कम सिद्धांत रूप में बहुत सी स्त्रियाँ दूसरी श्रेणी की सेवकाइयों में उसके साथ खड़ी हो सकती थीं। परन्तु जब बहुल अगुवाई को फिर से अपनाने वालों ने यह भी मान लिया कि अगुवाई टीम में हर व्यक्ति पुरुष ही होना चाहिए, तो ये कलीसियाएँ पहले से कहीं अधिक पुरुष-प्रधान हो गईं!

मैं बहुत आभारी हूँ कि मैं ऐसे समय में जीवित हूँ जब अधिक से अधिक विद्वानों ने पवित्रशास्त्र की समग्र शिक्षा को फिर से खोज लिया है – यदि प्रिस्किल्ला एक पास्टर थी, और यूनिया एक प्रेरित थी, और स्त्री भविष्यद्वक्ता थीं, तो स्त्रियों को परमेश्वर के राज्य के किसी भी काम से बाहर रखने का कोई अच्छा कारण नहीं है। यद्यपि हमें परंपरा को तिरस्कार से नहीं देखना चाहिए, यीशु हमें सिखाते हैं कि हम पवित्रशास्त्र की अपनी नवीकृत समझ के आधार पर अपनी परंपराओं को नया करें, और हमें चेतावनी देते हैं कि हम परंपराओं का प्रयोग सुसमाचार के निहितार्थों के अनुसार कार्य करने से बचने के लिए न करें।[615]

बाइबलीय बनाम शब्दवादी

इतना सब कहने के बाद भी, कुछ लोग अड़े रहते हैं और कहते हैं कि जब तक हमें सौ प्रतिशत निश्चितता न हो कि प्रिस्किल्ला या कोई और स्त्री पास्टर थी, तब तक हमें सावधानी बरतनी चाहिए और आज स्त्रियों को पास्टर नियुक्त नहीं करना चाहिए।

इसमें पहली समस्या यह है कि हमारे पास इस बात की भी कोई पूर्ण निश्चितता नहीं है कि नए नियम में किसी अन्यजाति या दास को प्राचीन नियुक्त किया गया था। हम केवल एक ऐसे पुरुष को जानते हैं जो शायद पास्टर रहा हो – पतरस, एक स्वतंत्र यहूदी पुरुष। तो क्या अब हम निश्चितता के नाम पर अन्यजातियों और

615. मत्ती 15:2-6

निम्न दर्जे के लोगों को कलीसियाओं की वरिष्ठ अगुवाई से वर्जित कर दें?[616] हमें संगत रहना होगा। यदि हम स्त्री प्राचीनों को रखने से इसलिए घबराते हैं कि कोई स्पष्ट उदाहरण नहीं दिया जा सकता, तो हमें अन्यजाति प्राचीनों के बारे में भी उतना ही घबराना चाहिए।

लेकिन इससे भी बड़ी समस्या यह है कि पवित्रशास्त्र को लागू करने का यह तरीका ही बिल्कुल नहीं है! यह शब्दवादी (biblicist) दृष्टिकोण है, बाइबलीय दृष्टिकोण नहीं। पहला दृष्टिकोण किसी भी बात की अनुमति तभी देता है जब उसके लिए कोई पद मिल जाए, जबकि दूसरा पवित्रशास्त्र के सिद्धांतों के अनुसार चलना चाहता है, भले ही ऐसा कोई पद न मिले जो ठीक उसी व्यवहार का आदेश देता हो। मेरा सुझाव है कि जब कलीसिया के उस मिशन की बात हो जिसे आत्मा चलाते हैं और जो परिस्थिति का ध्यान रखता है, तो हमें डर से भरा शब्दवादी रवैया नहीं अपनाना चाहिए, जिसमें कोई काम तब तक नहीं किया जाता जब तक उसके लिए कोई प्रमाण-पद न मिल जाए; बल्कि हमें यह रुख अपनाना चाहिए कि हम पवित्रशास्त्र के सिद्धांतों के अनुसार काम करने के लिए स्वतंत्र हैं।

सच तो यह है कि मिशन को ध्यान में रखने वाली आज की कलीसियाएँ जो सैकड़ों काम करती हैं, उनमें हम पहले से ही इसी तरह काम करते हैं: हम संगीत-वाद्य और साउंड सिस्टम का उपयोग करते हैं, मध्यस्थ प्रार्थना की विशेष टीमें बनाते हैं, सुसमाचार के पर्चे बाँटते हैं, अगुवों को तैयार करने के कार्यक्रम बनाते हैं, कई कर्मचारी रखते हैं, बाइबलें छापकर बाँटते हैं, वेबसाइटें बनाते हैं, इमारतें खरीदते हैं, या बच्चों और किशोरों को एक दूसरे से और वयस्कों से अलग रखते हैं। और इनमें से किसी भी बात का नए नियम में न तो आदेश है, न ही वर्णन।

616. हम आज की कलीसिया में अन्यजातियों को नियुक्त करने में इतने सहज क्यों हैं? मैं अन्यजाति प्राचीनों के प्रमाण न होने वाले इस तर्क पर बहुत अधिक भार नहीं डालना चाहता, परन्तु मैं इसे इसलिए सामने रखता हूँ ताकि दिखा सकूँ कि हम अनिर्णय की उसी स्थिति में पहुँचते हैं जिसमें हम स्त्री प्राचीनों के पक्ष या विपक्ष में तर्क देते समय होते हैं। आरंभिक कलीसिया में यूनानी अगुवे कौन हैं? यूनानी तीतुस प्राचीन नहीं, बल्कि प्रेरितिक प्रतिनिधि था। तीमुथियुस, जिसे एक यहूदी माता और नानी ने पवित्रशास्त्र सिखाया था, अधिकतर यहूदी ही था। परन्तु यदि वह अन्यजाति था भी, तब भी वह प्रेरितिक प्रतिनिधि था, प्राचीन नहीं। यह संदिग्ध है कि लूका अन्यजाति था, परन्तु यदि था भी, तो वह यात्रा का साथी और लेखक था, प्राचीन नहीं। यह कम से कम संभव है कि क्योंकि पौलुस की रणनीति किसी भी नगर में पहले यहूदियों के पास और उसके बाद ही अन्यजातियों के पास जाने की थी, इसलिए वह प्राचीनों को उस यहूदी समूह में से लेता होगा जो पवित्रशास्त्र को अच्छी तरह जानता था। फिर भी, हम में से कौन यह सब सुनकर अन्यजातियों को प्राचीन बनने से रोक देगा? मैं तो नहीं, और शायद आप भी नहीं। तो फिर इतने सारे लोग स्त्रियों को प्राचीन के रूप में सेवा करने से इसलिए रोकने को क्यों तैयार हैं कि पवित्रशास्त्र से कोई निर्णायक उदाहरण नहीं दिया जा सकता? यदि कोई यह बचाव करना चाहे कि अन्यजाति प्राचीन क्यों हो सकते हैं, तो वह यह कैसे करेगा? मेरा अनुमान है कि वह इन चार तर्कों में से किसी एक का हवाला देगा: 1) गलातियों 3:28 कहता है कि मसीह में 'न कोई यहूदी है, न अन्यजाति।' परन्तु तब हमें याद रखना होगा कि यही पद लिंग के बारे में भी यही बात कहता है: 'न कोई नर, न नारी'। 2) छत पर पतरस का दर्शन और उसके बाद कुरनेलियुस पर आत्मा का उँडेला जाना उसे दिखाता है कि अन्यजाति अशुद्ध नहीं हैं, जैसा यहूदी समझते थे, बल्कि कलीसिया की पूर्ण सदस्यता के योग्य हैं। परन्तु तब हमें याद रखना होगा कि, जैसा पिन्तेकुस्त के दिन उन पर आत्मा के उँडेले जाने से प्रमाणित हुआ, स्त्रियों को भी पूर्ण सदस्यता प्राप्त थी। 3) तीतुस जैसे यूनानी प्रेरितिक प्रतिनिधि की ओर संकेत करके, और इस प्रकार यह दिखाकर कि प्राचीनों जैसे कम अधिकार वाले लोग भी यूनानी हो सकते थे। परन्तु तब हमें याद रखना होगा कि हमारे पास प्रेरित यूनिया है, जो अधिकार के पैमाने पर तीतुस से एक पायदान ऊपर है। 4) इस तथ्य पर ज़ोर देकर कि रोमी साम्राज्य और पहली सदी से आगे संभवतः ऐसी संस्कृतियाँ होंगी जिनमें केवल अन्यजाति हों, नए नियम के उन कस्बों और नगरों के विपरीत जहाँ यहूदी हमेशा मिल जाते थे (उनमें से 60 लाख फ़िलिस्तीन के बाहर रहते थे)। परन्तु तब हमें याद रखना होगा कि यह उस समानतावादी तर्क की प्रतिध्वनि है कि अब हम एक समानतावादी संस्कृति में हैं, पहली सदी की पितृसत्तात्मक संस्कृतियों के विपरीत।

स्त्री पास्टरों को नियुक्त करने की स्वतंत्रता एक ऐसी दिशा है जिस पर बाइबल में भी उतना ही ज़ोर है: कलीसिया में निश्चित रूप से स्त्री सुसमाचार प्रचारक, घरानों की स्त्री अगुवे, स्त्री शिक्षक, स्त्री भविष्यद्वक्ता, स्त्री सेविकाएँ (डीकन) और स्त्री प्रेरित थीं; और जब तक इसके विरुद्ध बाइबल का कोई स्पष्ट निषेध न हो, तब तक उन परिस्थितियों में स्त्री प्राचीनों को स्वीकार करना उचित है, अनुचित नहीं, जहाँ परमेश्वर उन्हें खड़ा करते हैं और जहाँ यह मिशन के लिए लाभदायक है – और आज की अधिकांश समानतावादी संस्कृतियों में ऐसा ही है। जैसा कि Jamin Hübner कहता है, यह बात बिल्कुल समझ में नहीं आती कि "प्राचीन-पद या पास्टर के पद को इन बाकी कामों से अलग किसी विशेष श्रेणी में रख दिया जाए – इस तरह कि एक लिंग को एक भूमिका से अपने आप, हर जगह और हमेशा के लिए वंचित किया जा सके, और फिर भी वह बाकी सब काम कर सके।"[617] यह बात तब और भी सही है जब हम यह निश्चित रूप से नहीं कह सकते कि नए नियम के युग में केवल पुरुष ही प्राचीन थे; जब स्त्रियों के प्राचीन होने पर कोई स्पष्ट प्रतिबंध नहीं है; और जब हम लगभग निश्चित हो सकते हैं कि प्रिस्किल्ला अपने पति की तरह पास्टर थी।

इसके अलावा, रोम की कलीसिया स्त्री अगुवों और शिक्षकों को अपने बीच सेवा के लिए मुक्त करने को इसलिए तैयार थी क्योंकि वह आत्मिक वरदानों को पहचानने के मार्गदर्शक सिद्धांत को अच्छी तरह समझती थी।

617. Jamin Hübner अपनी PhD थीसिस "A New Case for Female Elders" में यह कहता है। (स्रोत: www.bit.ly/3BNaSY8 पृ. 171)

13

वरदान (रोमियों 12) बनाम लिंग (1 तीमुथियुस 3)

"जब किसी को छाँटने की पहली कसौटी लिंग बन जाता है, तो परमेश्वर ने ... स्त्रियों को जो भी वरदान और योग्यताएँ दी हैं, वे अलमारी की किसी ताक पर पड़ी रह सकती हैं। इन वरदानों को नकारे जाने से जो निराशा पैदा हो सकती है, वह इसका एक परिणाम है; पर उससे भी बड़ा परिणाम वह क्रोध या दुःख है जो तब अनुभव होता है जब हमारे व्यक्तित्व के एक मूल हिस्से को तुच्छ ठहरा दिया जाता है।" Alice Mathews[618]

समाज में पितृसत्ता की एक कीमत केवल यह नहीं है कि वह आधी आबादी के योगदान को दबा देती है, बल्कि यह भी है कि दूसरी आधी आबादी में से उन लोगों का साधारण-सा योगदान अधिक संभव हो जाता है जो बहुत बार यह समझते हैं कि पदोन्नति पर उनका हक़ है, भले ही दूसरे लोग उस काम के लिए अधिक योग्य हों। नेतृत्व में स्त्रियों पर लिखी अपनी 2019 की पुस्तक में Melinda Gates लैंगिक समानता के तराज़ू को संतुलित करने के बारे में अपना दृष्टिकोण समझाते हुए कहती है,

मैंने कभी यह नहीं माना कि स्त्रियाँ पुरुषों से बेहतर हैं, या कि संसार को बेहतर बनाने का सबसे अच्छा तरीका यह है कि स्त्रियों को पुरुषों से अधिक शक्ति मिल जाए। मेरा मानना है कि पुरुषों का प्रभुत्व समाज के लिए हानिकारक है, क्योंकि कोई भी प्रभुत्व हानिकारक होता है: इसका अर्थ है कि समाज पर एक झूठा पदानुक्रम शासन करता है, जिसमें शक्ति और अवसर लिंग, आयु, धन और विशेषाधिकार के अनुसार दिए जाते हैं – कौशल, परिश्रम, प्रतिभा या उपलब्धियों के अनुसार नहीं।[619]

कलीसिया के बारे में भी कुछ ऐसा ही कहा जा सकता है जब वह लिंग के आधार पर अगुवों और शिक्षकों को चुनती है। बेशक, किसी अत्यधिक पितृसत्तात्मक परिवेश में (जैसे किसी ऐसे देश में जहाँ इस्लामी नियम सख़्ती से लागू हों), जहाँ स्त्रियों की अगुवाई बाहर के लोगों के सुसमाचार ग्रहण करने में एक गंभीर ठोकर समझी जा सकती है, मिशन के लिए यह लाभदायक हो सकता है कि कलीसिया में केवल पुरुषों को ही अगुवे चुना जाए। लेकिन जहाँ ऐसी कोई ठोकर बाकी नहीं रहती, वहाँ मुझे यह स्पष्ट लगता है कि वरदान की ही जीत होनी चाहिए।

618. Alice Mathews, Gender Roles and the People of God, अध्याय 13
619. Melinda Gates, The Moment of Lift: How Empowering Women Changes the World

पौलुस ने रोम, इफिसुस और कुरिन्थुस की कलीसियाओं को लिखी अपनी पत्रियों में (संयोग से वही कलीसियाएँ जिनकी अगुवाई में प्रिस्किल्ला ने अलग-अलग समय पर हाथ बँटाया) आत्मिक वरदानों की जो अनेक सूचियाँ दी हैं,[620] उन पर एक नज़र डालिए, और आप पाएँगे कि आत्मा ये वरदान देते समय इस बात की कोई परवाह नहीं करते कि किसी का लिंग या समाज में उसका दर्जा क्या है। ऐसा लगता है कि वरदान देने वाले आत्मा लिंग नहीं देखते।

रोम की कलीसिया स्त्रियों को महत्त्वपूर्ण योगदान की भूमिकाओं में मुक्त करने में इतनी सहज थी, जैसा कि रोमियों 16 से स्पष्ट है, और इसका कारण यह था कि वह भली-भाँति समझती थी कि भूमिकाएँ वरदानों के आधार पर दी जाती हैं, जैसा कि रोमियों 12 से स्पष्ट है:

हम सबको उस अनुग्रह के अनुसार जो हम में से प्रत्येक को दिया गया है, भिन्न-भिन्न वरदान मिले हैं। यदि आपका वरदान भविष्यद्वाणी करना है, तो अपने विश्वास के अनुसार भविष्यद्वाणी करें; यदि सेवा करना है, तो सेवा करें; यदि सिखाना है, तो सिखाएँ; यदि उत्साह बढ़ाना है, तो उत्साह बढ़ाएँ; यदि दान देना है, तो उदारता से दें; यदि अगुवाई करना है, तो लगन से करें; यदि दया करना है, तो हर्ष से करें।[621]

यदि पौलुस मानता कि कुछ भूमिकाएँ लिंग के कारण सीमित हैं, तो यह बात कहने के लिए यही सबसे उपयुक्त स्थान होता। लेकिन वह ऐसा नहीं कहता। इस खंड में ऐसा कुछ भी नहीं है जिससे लगे कि पौलुस इनमें से किसी भी वरदान से स्त्रियों को बाहर रख रहा हो।[622] जब हम उसकी पत्री को अंत तक पढ़ते हैं और उदाहरण के लिए प्रिस्किल्ला का उल्लेख पाते हैं, जिसने प्रमाणों के अनुसार पुरुषों की अगुवाई भी की और उन्हें शिक्षा भी दी, तो हमें इसका कारण मिल जाता है: प्रिस्किल्ला के पास अवश्य ही शिक्षा देने और अगुवाई करने के आत्मिक वरदान रहे होंगे।

आत्मिक वरदान बराबरी लाते हैं

पद और काम यदि दर्जे, जातीय पृष्ठभूमि या लिंग के आधार पर सौंपे जाएँ, तो अनजाने में लोग बँट जाते हैं; पर यदि वे आत्मिक वरदानों के आधार पर सौंपे जाएँ, तो लोग एक होते हैं। पहला मनुष्यों की पसंद पर आधारित है, जबकि दूसरा परमेश्वर के चुनाव पर। इफिसियों और रोमियों के नाम लिखी पौलुस की उत्कृष्ट पत्रियों में यहूदियों और अन्यजातियों की व्यावहारिक एकता के प्रति उसकी प्रतिबद्धता पर विचार कीजिए। इफिसियों 1-3 और रोमियों 1-11 में वह एकता की धर्मवैज्ञानिक नींव से शुरू करता है, और फिर इफिसियों 4-6 और रोमियों 12-15 में वह विस्तार से बताता है कि उस एकता को व्यवहार में जीने के लिए कैसी भक्ति चाहिए। पर ध्यान दीजिए कि रोमियों 12:3-8 और इफिसियों 4:11-16 में उन आत्मिक वरदानों के बारे में शिक्षा, जो बराबरी को प्रकट करते हैं, वह गोंद है जो आगे और पीछे के खंडों को आपस में जोड़े रखता है। पौलुस मानो यह कह रहा है कि क्योंकि आत्मा वरदान बाँटते हैं, जिनमें अगुवाई करने और शिक्षा देने के

620. देखें इफिसियों 4:11, 1 कुरिन्थियों 12, 14 और रोमियों 12:6-8।
621. रोमियों 12:6-8
622. इसमें एक भी पुल्लिंग सर्वनाम नहीं है, जैसे “if it is teaching, then let him teach” (“यदि सिखाना हो, तो वह (पुरुष) सिखाए”)।

वरदान भी शामिल हैं, चाहे किसी की जातीय पृष्ठभूमि कुछ भी हो, इसलिए यह एक और तरीका है जिससे वे अलग-अलग जातीय पृष्ठभूमि के लोगों को एक करते हैं। इसी तरह 1 कुरिन्थियों में, यद्यपि वह इन्हीं खंडों में साफ़-साफ़ बँटी हुई नहीं है, हम देखते हैं कि स्त्री और पुरुष के बीच, और धनी और निर्धन के बीच की विषमताओं से पौलुस जिस धर्मवैज्ञानिक ढंग से निपटता है, उसे उसकी यह शिक्षा और मज़बूत करती है कि आत्मा अपनी प्रभुता से वरदान बाँटते हैं (और इसलिए किसी के सामाजिक दर्जे या लिंग का ध्यान किए बिना)।

इन सब बातों में पौलुस उस एकता के तीन प्रेरक कारण देता है जिसकी वह यहूदियों और अन्यजातियों के बीच (और हम जोड़ सकते हैं, धनी और निर्धन, दास और स्वतंत्र, और पुरुष और स्त्री के बीच) देखने की आशा रखता है: उस सुसमाचार की समझ जो एक करता है और समाज की दीवारों को तोड़ देता है; अपने से भिन्न लोगों से प्रेम करने और उनकी सेवा करने की ऐसी प्रतिबद्धता जो एकता बनाती है; और उन वरदानों को पहचानना जो परमेश्वर जिसे चाहते हैं उसे देते हैं। "स्त्री-पुरुष के युद्ध" के विपरीत, स्त्री और पुरुष को एक करने का परमेश्वर का समाधान यह है कि हम कलीसिया के रूप में उनके साथ मिलकर "किसी का पक्षपात न करें" और उन लोगों को अगुवाई करने और शिक्षा देने के लिए मुक्त करें जिन्हें परमेश्वर अपनी प्रभुता से इसके लिए वरदान देते और बुलाते हैं।

वरदानों को दबाने का ख़तरा

1 तीमुथियुस 2:12 को गलत समझकर उसे इस बात पर सार्वभौमिक प्रतिबंध मान लेना कि कोई भी स्त्री किसी भी पुरुष को शिक्षा न दे या उसकी अगुवाई न करे – इसकी त्रासदी यह है कि यह उन स्त्रियों के लिए एक जकड़न बन जाता है जिन्हें आत्मा इन वरदानों से सामर्थ देते हैं। इन स्त्रियों से यह कहना कि वे अपने वरदानों का उपयोग केवल बच्चों और दूसरी स्त्रियों के बीच करें, न केवल उनका अपमान है, बल्कि – और मेरी असली चिंता यही है – यह उस कलीसिया को वंचित करता है जिसे परमेश्वर के दिए अनुग्रह के सब मार्गों की बड़ी सख़्त ज़रूरत है।

फिर भी पूरकतावाद की एक संस्थापक स्त्री असल में स्त्रियों को यह सलाह देती है कि जब कमरे में कोई पुरुष हो तो वे अपने वरदानों पर परदा डाल दें: "एक बुद्धिमान स्त्री अपने वरदान को दिखाने और उसका उपयोग करने का अवसर छोड़ देना ही बेहतर समझेगी, यदि उस वरदान के उपयोग से परमेश्वर के वचन का और इस तरह स्वयं परमेश्वर का अनादर होने का ख़तरा हो।"[623] इसी तरह Kevin De Young यह मानने के बाद भी कि "स्त्रियों के पास महत्त्वपूर्ण आत्मिक वरदान हैं, जिनमें शिक्षा देने और अगुवाई करने के वरदान भी शामिल हैं," इन वरदानों को पुरुषों से दूर ही रखता है: "बच्चों और दूसरी स्त्रियों को सिखाना निश्चय ही किसी स्त्री के वरदानों की बर्बादी तो नहीं है?"[624] लेकिन दूसरे विश्वासियों के योगदान को नम्रता से ग्रहण करने के बारे में पौलुस की शिक्षा ऐसी हानिकारक सोच के विरुद्ध चेतावनी देती है: "आँख हाथ से नहीं कह

623. Dorothy Patterson, "Women in the Church" (2nd Edition), अध्याय 6 में यह कहती है।
624. स्रोत: www.bit.ly/3k2AA4x

सकती, 'मुझे तेरी आवश्यकता नहीं!' और न सिर पाँवों से कह सकता है, 'मुझे तुम्हारी आवश्यकता नहीं!'"[625]

अभी हाल ही में मैं एक अद्भुत वरदानों वाली स्त्री अगुवे के साथ कॉफ़ी पीने बैठा, जिन्होंने कलीसिया की वेतन वाली सेवकाई छोड़ दी है। वे मुझे उस पीड़ा के बारे में बताती हैं कि कलीसिया में पुरुषों ने उनके योगदान को किनारे कर दिया, उस पर भरोसा नहीं किया और कुछ मामलों में उन्हें चुप करा दिया। इसी तरह Alice Mathews, जो एक धर्मविज्ञानी है और भूतपूर्व अकादमिक डीन है और अब 80 से अधिक वर्ष की है, उस वेदना के बारे में बताती है कि उसके जीवन के बड़े भाग में उसके वरदान ताक पर रखे रहे:

बहुत साल पहले, जब मेरे पति और मैं यूरोप में मिशनरी के रूप में सेवा कर रहे थे, एक सुबह मैं अपने बिस्तर पर बैठी मत्ती 25 पढ़ रही थी। जब मैं तोड़ों के दृष्टान्त के अंत पर पहुँची, तो मैंने पाया कि मैं रो रही हूँ। और मैंने प्रार्थना की, "प्रभु, क्या आप मुझे इस बात के लिए थोड़ी छूट देंगे कि आपने मुझे जो दिया है उसका मैं उपयोग नहीं कर रही, क्योंकि जिनके हाथ में अधिकार है वे मुझे करने नहीं देते?" लिंग वरदान पर भारी पड़ गया था, और मैं अपने को इसके बारे में कुछ भी करने में असहाय पाती थी। बहुत-सी मसीही स्त्रियों के लिए यह कोई असामान्य अनुभव नहीं है।[626]

पूरकतावादी कलीसिया न केवल व्यक्तियों को चोट पहुँचाने का जोखिम उठाती है, बल्कि वह उस कलीसिया की पूरी मिशनरी प्रभावशीलता में भी बाधा डालती है। मेरे शहर में मुझे यह देखने का सौभाग्य मिला है कि पास की एक कलीसिया तेज़ी से बढ़कर हज़ारों की हो गई, क्योंकि वह पुरुषों और स्त्रियों को उनके वरदानों के अनुसार और लिंग का ध्यान किए बिना सेवा के लिए मुक्त करती है। पुरुष और स्त्रियाँ दोनों अगुवाई करते हैं। स्त्रियाँ और पुरुष दोनों प्रचार करते हैं।

John Piper और Tom Schreiner को भले ही यह "सुंदर" लगे कि केवल पुरुष अगुवाई करें और स्त्रियाँ इन पुरुषों का साथ दें, पर मुझे यह कहीं अधिक सुंदर लगता है कि पुरुष और स्त्रियाँ कंधे से कंधा मिलाकर अगुवाई करें और शिक्षा दें।

पिछले कुछ समय में कई बार मुझे लगा है कि परमेश्वर के आत्मा ने स्त्रियों के योगदान को दबाए जाने पर अपना कुछ दुःख मेरे साथ बाँटा है। एक बार एक पूरकतावादी आंदोलन के अगुवाई सम्मेलन में एक स्त्री ने 15 मिनट तक वह सब बताया जो उसने अपने मित्रों को यीशु के पास लाने के बारे में सीखा था। मैंने जल्दी-जल्दी नोट्स लिए और उससे बहुत प्रेरणा पाई। लेकिन बाद में, धर्मविज्ञान में काफ़ी आगे बढ़े हुए मेरे एक पुरुष मित्र ने मुझसे कहा – और यह तब, जब वह स्त्री इस निर्देश पर पूरी तरह टिकी रही थी कि वह कोई धर्मविज्ञान नहीं सिखाएगी: "जब कोई स्त्री मंच के पीछे खड़ी होती है, तो मुझे घिन आती है।" उसकी बात ने मुझे दुःखी कर दिया – वह उस स्त्री को वैसे नहीं देख पाया जैसे परमेश्वर उसे देखते हैं, और इसलिए वह उसके द्वारा परमेश्वर के वचन भी नहीं सुन सका।

किसी एक ही पाठ की गलत व्याख्या को कलीसिया पर थोप देना उन लोगों के लिए अगणित आत्मिक जोखिम पैदा करता है जिन्हें अन्यथा सुसमाचार प्रचार, चेले बनाने, पास्टरीय देखभाल, अगुवाई और

625. 1 कुरिन्थियों 12:21
626. Alice Mathews, Gender Roles and the People of God, अध्याय 13

कलीसिया स्थापना की उन सेवाओं से लाभ मिलता जिनमें स्त्री और पुरुष दोनों लगे होते हैं? किसी स्थानीय कलीसिया में हमें हर वरदान को इस तरह काम में लाने की ज़रूरत है कि उससे संभवतः हर दूसरे व्यक्ति को लाभ हो, ताकि कलीसिया "प्रत्येक भाग के अपना-अपना काम करने से बढ़ती जाए और प्रेम में अपनी उन्नति करती जाए।"[627] पवित्र आत्मा जो वरदान स्त्रियों को देते हैं, उनके पूरे उपयोग को सीमित करना उचित ठहराने के लिए किसी को 1 तीमुथियुस 2:12 की अपनी व्याख्या पर पूरी तरह निश्चित होना चाहिए। लेकिन जैसा मैंने अध्याय 7 में सुझाया, कोई भी खुले मन वाला और सचमुच ईमानदार व्यक्ति इतना निश्चित नहीं हो सकता।

वरदानों को सीमित करना न केवल स्त्रियों को, बल्कि स्वयं परमेश्वर को भी जकड़न में डालना है। जब परमेश्वर का आत्मा किसी स्त्री के द्वारा आपकी सेवा करते हैं और आपको घिन आती है, तो इसके लिए कोई टेढ़ा धर्मविज्ञानी औचित्य ढूँढ़ना उस पवित्र आत्मा को शोकित करता है, जो "जिधर चाहता है उधर चलता है"[628] और जिनकी रीति है कि वे जिसे उचित समझें उसे अपना मुख बनाएँ।[629] Gordon Fee कहता है:

नए नियम का प्रमाण यह है कि पवित्र आत्मा लिंग के आधार पर किसी को बाहर नहीं रखते; वे पुरुषों और स्त्रियों दोनों को वरदान देते हैं, और इस तरह पूरी देह को संभवतः स्वतंत्र करते हैं ताकि उसके सब अंग सेवा कर सकें और अलग-अलग ढंग से दूसरों की अगुवाई कर सकें। इसलिए अंत में मेरा मुद्दा सेवकाई में स्त्रियों का कोई एजेंडा नहीं है। बल्कि यह आत्मा का एजेंडा है, यह विनती कि आत्मा को हमारी बंदिशों और ढाँचों से मुक्त किया जाए, ताकि कलीसिया अपनी और संसार की सेवा और अधिक प्रभावशाली ढंग से कर सके।[630]

परमेश्वर स्त्रियों को जो वरदान देते हैं और जिनसे राज्य आगे बढ़ता है, उन्हें हम आम तौर पर दो तरीकों से दबाते हैं: हम उन पर कोई सीमा लगा देते हैं; या सामाजिक परिस्थितियाँ उन्हें पहचाने जाने तक से रोक देती हैं।

जब पुरानी मशकें नए दाखरस को नष्ट कर देती हैं

यद्यपि कलीसिया के इतिहास में स्त्रियों की महत्त्वपूर्ण सेवकाई के क्षणिक उभार आते रहे हैं, फिर भी 1900 से पहले के कलीसिया के इतिहास में ऐसे उदाहरण बहुत कम हैं जहाँ स्त्रियों ने लंबे समय तक लगातार कलीसियाओं में अगुवाई की हो। ऐसा क्यों है? यीशु ने चेतावनी दी थी कि पुरानी मशकें नए दाखरस को नष्ट कर सकती हैं। ऐसा होने का एक तरीका यह है कि आत्मा सामर्थ के साथ काम करते हैं और हर तरह के वरदान वाले लोगों को आगे ले आते हैं, लेकिन बाद में संस्थावाद की शक्तियाँ जो कुछ परमेश्वर से जन्मा था, उसकी जगह बहुत कसकर परिभाषित नीतियाँ और प्रक्रियाएँ बैठा देती हैं। जो कभी वरदानों से चलता था, उसकी जगह पद-विवरणों का पालन ले लेता है।

627. इफिसियों 4:16
628. यूहन्ना 3:8
629. निर्गमन 15:20; न्यायियों 2:16; 4:4; एस्तेर 4:14
630. स्रोत: Discovering Biblical Equality, 2005, पृ. 254.

उदाहरण के लिए, जब हम सदियों के जागरणों पर नज़र डालते हैं, तो उनके आरंभिक चरणों में हमें नए दाखरस का उंडेला जाना दिखाई देता है – जब हर तरह के "बिना मान्यता प्राप्त" लोग, जिनमें स्त्रियाँ भी शामिल हैं, आत्मा की सामर्थ में अचानक सामने आते हैं और अगुवाई करते हैं, प्रचार करते हैं, सुसमाचार सुनाते हैं, और कलीसियाएँ स्थापित करते या उनकी पास्टरीय देखभाल करते हैं। पिछली सदी की शुरुआत के पेंटेकॉस्टल आंदोलन के बारे में सोचिए, जब आत्मा ने झुंड की झुंड स्त्रियों को सुसमाचार प्रचार, उपदेश और नई राहें खोलने वाली अगुवाई के लिए सामर्थी वरदान दिए। लेकिन फिर, कुछ समय बीतने पर, संस्थावाद धीरे-धीरे घुस आता है और कलीसिया "पेशेवर" सेवकों (कुछ चुने हुए लोग जो परमेश्वर का अधिकांश काम करते हैं) और स्त्रियों की अधीनस्थता (कभी-कभी कम वरदान वाले पुरुषों के अधीन) की अपनी पुरानी मशकों में लौट जाती है। Maria Boccia अपनी पुस्तक Hidden History of Women Leaders of the Church में कलीसिया के इतिहास में बार-बार दोहराए जाने वाले इस दुःखद ढर्रे का सार इस तरह देती है: "जब अगुवाई का अर्थ यह था कि परमेश्वर पवित्र आत्मा के वरदानों के द्वारा अपनी कृपा से अगुवों को चुनते हैं, तब स्त्रियाँ शामिल थीं। जैसे-जैसे समय बीता, अगुवाई संस्थागत हो गई, संसार की पितृसत्तात्मक संस्कृति कलीसिया में रिस आई, और स्त्रियों को बाहर कर दिया गया।"[631]

यह बात दूसरी सदी तक जाती है। जहाँ तक हम जानते हैं, रोमियों 16 में वर्णित अगुवाई के बाद कलीसिया में फिर कभी ऐसी अगुवाई टीम नहीं रही जिसमें स्त्री और पुरुष दोनों हों। पौलुस के रोम की कलीसिया को पत्री लिखने के कुछ ही दशकों के भीतर, एक प्रबल पितृसत्तावाद और संस्थावाद ने कलीसिया को कसकर अपनी कुंडली में जकड़ लिया। उदाहरण के लिए, तर्तुलियन (Tertullian) ने कलीसिया को रोमी समाज के एक छोटे रूप में फिर से गढ़ा, जिसमें पदों के क्रम वाले अधिकारियों की श्रेणियाँ थीं, जिससे पास्टर शासक बन गए। वरदानों का जीवंत उपयोग जाता रहा, और उसकी जगह पादरी-वर्ग और साधारण विश्वासियों के बीच का विभाजन पैदा हुआ, जिसमें पादरियों के विशेष अधिकार थे, और साथ ही यह धारणा भी कि केवल पुरुष ही पादरी हो सकते हैं।

जब कोई कलीसिया यह तय करती है कि कोई स्त्री अगुवाई या प्रचार नहीं करेगी, तो उसकी छुटकारा देने वाली क्षमता का कुछ भाग बह जाता है। धन्यवाद हो कि परमेश्वर उसमें फिर भी काम करते रहते हैं (क्योंकि उनके पास कभी कोई सिद्ध कलीसिया नहीं रही)। लेकिन यदि कोई कलीसिया (या कलीसियाओं का आंदोलन) आत्मा की ओर से मिलने वाली आपूर्ति का कुछ भाग खोना नहीं चाहती, तो उसे उन पुरानी मशकों से अवश्य छुटकारा पाना होगा जो शासन के पदानुक्रम पर ध्यान लगाती हैं या अगुवाई और शिक्षा को लिंग पर आधारित करती हैं। यदि आरंभिक कलीसिया और उसके बाद के अनेक जागरण कुछ सिखाते हैं, तो यह कि बेहतर मशक वह है जो उन वरदानों को खोजती और काम में लगाती है जो आत्मा सब लोगों को देते हैं: जवानों और बूढ़ों को, धनी और निर्धन को, काले और गोरे को, पुरुषों और स्त्रियों को। इतना कहने के बाद, स्त्रियों के वरदानों पर सीमा लगाने से भी अधिक भयानक एक बात है। वह है उन्हें पहचान तक न पाना।

631. स्रोत: Journal of Biblical Equality, September 1990, पृ. 58.

सामाजिक परिस्थितियाँ वरदानों के विकास को रोक सकती हैं

मैं स्त्री-मुक्ति आंदोलन की सफलता का उत्सव मनाता हूँ, विशेषकर इसलिए कि उसने शिक्षा और व्यवसाय में बराबर अवसरों के लिए आवाज़ उठाई है। बड़े ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य से देखें, तो संसार अभी यह खोजना शुरू ही कर रहा है कि जब स्त्रियों को समाज के हर क्षेत्र में खुलकर काम करने दिया जाता है, तो वे कितनी सक्षम हैं। सच तो यह है कि 1960 के दशक तक लगभग सर्वसम्मति से यह माना जाता था कि स्त्रियाँ वह नहीं कर सकतीं जो आज वे लाखों की संख्या में कर रही हैं! उन प्रतिभाओं, वरदानों और अवसरों के लिए परमेश्वर की महिमा हो जो उन्होंने पुरुषों और स्त्रियों को दिए हैं!

इससे हमें रुककर उन सब प्रतिभाओं और वरदानों पर विचार करना चाहिए जो संसार के इतिहास में व्यर्थ चले गए, क्योंकि सामाजिक परिस्थितियाँ ऐसी थीं कि स्त्रियों को अपनी क्षमता को साकार करने के लिए शायद ही कभी शिक्षा या अवसर दिए गए। यह बात कलीसिया के इतिहास पर भी लागू होती है – कितने प्रेरित, भविष्यद्वक्ता और शिक्षक कभी दिन का उजाला देख ही नहीं पाए? परमेश्वर ने अपनी कलीसिया को जो अच्छे वरदान दिए, उनमें से कितने कभी खोले ही नहीं गए? दुःख की बात है कि केवल अतीत की कलीसियाओं ने ही इतना कुछ नहीं खोया। आज की वे कलीसियाएँ भी खो रही हैं जिनका धर्मविज्ञान लिंग के आधार पर सीमाएँ लगाता है – जो या तो उन्हें अपने बीच वरदान वाली स्त्रियों के प्रति अंधा कर देता है, या, यदि ये वरदान पहचाने और विकसित भी हो जाएँ, तो उन्हें ऐसे कमरों तक सीमित कर देता है जहाँ पुरुष न हों।

मैं परमेश्वर का धन्यवाद करता हूँ कि मैं एक समानतावादी संस्कृति में रहता हूँ, जहाँ सामाजिक परिस्थितियाँ ऐसी हैं कि मेरी बेटी के लिए यह अधिक संभव है कि वह समाज में वह हर पेशेवर योगदान दे सके जिसके लिए परमेश्वर ने उसे वरदान दिया है। मैं हृदय से आशा करता हूँ कि कलीसिया में उसकी सेवकाई के बारे में भी यही सच हो।

लेकिन मुझे मानना होगा कि मैंने अभी तक उस आम आपत्ति का उत्तर नहीं दिया है जो पदानुक्रम को मानने वाले विद्वान उठाते हैं: यदि कलीसिया की अगुवाई लिंग पर आधारित नहीं होनी चाहिए, तो 1 तीमुथियुस 3:2 क्यों कहता है कि पास्टर को "अपनी पत्नी के प्रति विश्वासयोग्य" होना चाहिए? यह ऐसा प्रश्न है जो हमें न केवल उस पद को, बल्कि व्याख्या के अपने तरीके को भी ध्यान से देखने के लिए प्रेरित करता है।

रोमियों बनाम 1 तीमुथियुस – मानक बनाम सुधारात्मक

यह वह खंड है जिसमें यह वाक्यांश आता है:

जो अध्यक्ष होना चाहता है, वह एक उत्तम काम की इच्छा करता है। इसलिए अध्यक्ष को निर्दोष, **अपनी पत्नी के प्रति विश्वासयोग्य**, संयमी, आत्म-नियंत्रित, सम्मानित, अतिथि-सत्कार करने वाला और सिखाने में

निपुण होना चाहिए; वह पियक्कड़ न हो, मारपीट करने वाला नहीं बल्कि कोमल हो, झगड़ालू न हो, धन का लोभी न हो। वह अपने घर का अच्छा प्रबन्ध करता हो और ध्यान रखे कि उसके बच्चे उसकी आज्ञा मानें, और यह वह ऐसे ढंग से करे जो पूरे आदर के योग्य हो। (यदि कोई अपने परिवार [शब्दशः, "घराने"] का ही प्रबन्ध करना नहीं जानता, तो वह परमेश्वर की कलीसिया की देखभाल कैसे करेगा?) वह नया चेला न हो, ऐसा न हो कि वह घमंड में फूलकर उसी दण्ड में पड़े जिसमें शैतान पड़ा। बाहर के लोगों में भी उसका सुनाम होना चाहिए, ताकि वह निन्दा में और शैतान के फंदे में न फँसे।[632]

यह खंड उन योग्यताओं की सूची से काफ़ी मिलता-जुलता है जो क्रेते टापू पर तीतुस की प्रेरितिक सेवकाई में प्राचीनों के लिए दी गई है।[633] दोनों में अंतर यह है कि तीमुथियुस वाला खंड इसके बाद सेवकों (डीकनों) के लिए योग्यताओं की एक मिलती-जुलती पर छोटी सूची भी जोड़ता है।[634] तीनों खंडों में – तीतुस में प्राचीनों वाला, और तीमुथियुस में प्राचीनों और सेवकों वाले दोनों – "अपनी पत्नी के प्रति विश्वासयोग्य" वाक्यांश एक योग्यता के रूप में आता है।

ऊपरी तौर पर यह रोमियों 12 और 16 से टकराता हुआ लगता है, जहाँ एकमात्र कसौटी वरदान और बुलाहट है, न कि पुरुष होना या वैवाहिक स्थिति। इसलिए हम पूछते हैं, "क्या हमें रोमियों 12 और 16 की व्याख्या 1 तीमुथियुस 3 के प्रकाश में करनी चाहिए, या इसके उलट?"

यदि मैं अपने बेटे को एक पत्र लिखूँ जिसमें मैं उसके प्रति अपना प्रेम प्रकट करूँ और उसके जीवन के लिए अपनी सबसे अच्छी बुद्धि की बातें भी बताऊँ, और फिर एक दूसरा पत्र लिखूँ जिसमें मैं इस बारे में अपनी चिंता प्रकट करूँ कि उसने किसी विशेष परिस्थिति को कितनी बुरी तरह संभाला, और उसे सलाह दूँ कि वह उसे कैसे सुधारे, तो मैं आशा करूँगा कि जैसे-जैसे साल बीतेंगे, मेरा बेटा पहले वाले सकारात्मक पत्र को बाद वाले सुधारात्मक पत्र का ढाँचा बनने देगा। इसी तरह हमें रोमियों 12 और 16 को 1 तीमुथियुस 3 का ढाँचा बनने देना चाहिए। जैसा कि मैंने अध्याय 7 में दिखाया, 1 तीमुथियुस की पूरी पत्री का स्वर मुख्यतः सुधारात्मक है; वह एक ऐसी कलीसिया को ठीक करने का प्रयास करती है जिसे झूठे शिक्षकों ने हानि पहुँचाई थी। यद्यपि उसके खंडों में सदा लागू होने वाली बुद्धि है, फिर भी आज की कलीसियाओं को, जो बिल्कुल अलग परिस्थितियों का सामना कर रही हो सकती हैं, इन सच्चाइयों को सावधानी से खोदकर निकालना होगा।

अपने उदाहरण पर लौटें: यदि मेरी बेटी, जो बिल्कुल अलग परिस्थिति में है, वह पत्र पढ़े जो मैंने उसके भाई को यह समझाने के लिए लिखा था कि वह अपने जीवन की उलझन को कैसे सुलझाए, तो मैं आशा करूँगा कि वह उस पत्र की हर बात को बिना सोचे-समझे अपने ऊपर लागू नहीं करेगी। इस उदाहरण को लागू करें तो रोमियों की पत्री कुछ-कुछ ऐसे परिपत्र जैसी है जो मैं अपने पाँचों बच्चों को लिखता हूँ, चाहे उनकी परिस्थिति कुछ भी हो। यद्यपि वह यहूदियों और अन्यजातियों के आपस में घुलने-मिलने की एक विशेष परिस्थिति से संबंधित है, फिर भी उसका स्वभाव मुख्यतः सुधारात्मक नहीं है – बल्कि पौलुस इस तरह शिक्षा देता है कि उसकी कही लगभग हर बात किसी भी जगह की किसी भी कलीसिया पर सीधे लागू की जा

632. 2 तीमुथियुस 3:1-7
633. तीतुस 1:6-9
634. 1 तीमुथियुस 3:8-12

सकती है। इसका कारण यह है कि वह उस कलीसिया में कभी गया ही नहीं था, और इसलिए वह अधिकतर ऐसे लिखता है मानो किसी भी साधारण कलीसिया को लिख रहा हो।

इसके विपरीत, 1 तीमुथियुस, तीतुस की पत्री की तरह, मुख्यतः एक ही व्यक्ति को संबोधित है। यद्यपि किसी विशेष मंडली को भी उसकी बातें मालूम हो सकती हैं, फिर भी यह तथ्य कि वह एक विशेष अगुवे को लिखी गई है जो बहुत विशेष चुनौतियों से गुज़र रहा है, इसका अर्थ है कि उसकी बातों को सब कलीसियाओं पर लागू करते समय अतिरिक्त सावधानी बरतनी चाहिए।

अंत में, हमें यह ध्यान रखना होगा कि स्पष्ट खंडों का उपयोग धुँधले खंडों की व्याख्या के लिए किया जाना चाहिए। यद्यपि पहली बार पढ़ने पर 1 तीमुथियुस 3 काफ़ी सीधा-सादा लग सकता है, पर थोड़ा विचार करने पर पता चलता है कि वह बाइबल के बहुत-से दूसरे खंडों की स्पष्ट शिक्षा का खंडन करता हुआ लगता है। मैं जल्द ही इसके उदाहरण दूँगा। क्योंकि पवित्रशास्त्र ही पवित्रशास्त्र की व्याख्या करता है, और स्पष्ट खंड अधिक धुँधले खंडों पर प्रकाश डालने के लिए हैं, इसलिए 1 तीमुथियुस 3 से सार्वभौमिक रूप से लागू होने वाला सत्य निकालने के हमारे प्रयास का मार्गदर्शन रोमियों 12 और 16 को करना चाहिए।[635]

1 तीमुथियुस 3 और तीतुस 1 को पढ़ने के दो तरीके

लिंग और कलीसिया की अगुवाई के विषय में 1 तीमुथियुस 3 (और तीतुस 1) की व्याख्या करने के दो तरीके हैं। पहला तरीका यह है कि इसे ऐसे पढ़ा जाए मानो पौलुस आज्ञा दे रहा हो कि इफिसुस की (और क्रेते की) कलीसियाओं में प्राचीन पुरुष ही हों, और इस तरह हर जगह की सब कलीसियाओं में। दूसरा तरीका यह है कि इसे ऐसे पढ़ा जाए कि पौलुस यह मानकर चल रहा है कि उन यूनानी-रोमी कलीसियाओं में सबसे संभावित और शायद सबसे उपयुक्त प्राचीन कोई paterfamilias, यानी घराने का कोई पुरुष मुखिया होगा, यद्यपि इसके अपवाद भी हो सकते हैं।[636]

मेरा सुझाव है कि इसे पढ़ने का दूसरा तरीका बेहतर है। जैसा कि N.T. Wright कहता है: "[यद्यपि] पौलुस [अध्यक्ष] का उल्लेख एक पुरुष के रूप में करता है ... ऐसा इसलिए है क्योंकि यूनानी व्याकरण सामान्यतः दोनों लिंगों का एक साथ उल्लेख करता है, और क्योंकि कलीसिया के आरंभिक दिनों में अधिकांश समुदायों के अगुवे संभवतः पुरुष ही थे। मैं इसे इस विशेष सेवकाई और बुलाहट से स्त्रियों को वंचित करने वाला नहीं मानता।"[637]

635. कृपया मेरी बात में वह न सुनें जो मैं नहीं कह रहा। किसी भी विशेष खंड की व्याख्या के लिए हमें पवित्रशास्त्र के पूरे संग्रह की ज़रूरत है, फिर भी 1 तीमुथियुस को, जो एक सुधारात्मक पत्री है, रोमियों के लेंस से पढ़ना बेहतर हो सकता है, जो एक मानक पत्री है – इसके उलट नहीं।

636. अपनी पुस्तक पूरी करने के बाद मैंने Andrew Bartlett की "Men and Women in Christ" पढ़ी, और पृष्ठ 315-327 पर एक तीसरा तरीका पाया: पौलुस जान-बूझकर सामान्य, और इसलिए दोनों लिंगों को शामिल करने वाली भाषा का उपयोग करता है, और इसलिए यह भी मानकर नहीं चलता कि अध्यक्ष पुरुष होंगे। यदि पद 11 में उन रहस्यमय "स्त्रियों" का उल्लेख न होता, जिन्हें समझने का प्रयास मैं परिशिष्ट 5 में करता हूँ, तो मैं उसके दृष्टिकोण की ओर चला जाता। अभी की स्थिति में मैं दूसरे और तीसरे तरीके के बीच बाड़ पर बैठा हूँ। किसी भी तरह पढ़ें, इस खंड को स्त्रियों को पास्टर की भूमिका से बाहर रखने वाला नहीं पढ़ा जाना चाहिए।

637. Tom Wright, Paul for Everyone: The Pastoral Letters, पृ. 29

Wright सही बात कहता है जब वह कहता है, "यूनानी व्याकरण सामान्यतः दोनों लिंगों का उल्लेख करता है।" हमारे अंग्रेज़ी अनुवादों के विपरीत, पौलुस जो शब्द इस्तेमाल करता है वे मुख्यतः दोनों लिंगों को शामिल करते हैं। मूल यूनानी में, "जो कोई अध्यक्ष होना चाहता है"[638] में "जो कोई" के लिए पौलुस का शब्द (tis) दोनों लिंगों को शामिल करता है। लेकिन इससे भी बढ़कर, 1 तीमुथियुस 3 या तीतुस की किसी भी सूची में कोई पुल्लिंग सर्वनाम नहीं है। इसकी तुलना 1 तीमुथियुस में अध्यक्षों वाली सूची के हमारे अंग्रेज़ी अनुवादों से कीजिए – "his ... He ... his ... his ... him ...he ... his ... he ... He ... he ... He ... he ..." ("उसका ... वह ... उसका ... उसका ... उसे ... वह ... उसका ... वह ... वह ... वह ... वह ... वह ...") – जो हमें लगभग हर पंक्ति में एक पुरुष की कल्पना करने के लिए भटकाते हैं, ऐसे ढंग से जैसे मूल पाठकों ने नहीं की होगी।

दोनों लिंगों को शामिल करने की यह संभावना तब और मज़बूत हो जाती है जब हम समझते हैं कि "अपनी पत्नी के प्रति विश्वासयोग्य" (शब्दशः "एक पत्नी वाला पुरुष") वाक्यांश सूची का एकमात्र ऐसा भाग है जो ऊपरी तौर पर पढ़ने पर पुरुष होने का संकेत देता है। फिर भी वास्तव में यह एक ऐसा वाक्यांश है जो इस संदर्भ में किसी भी सामान्य व्यक्ति के लिए इस्तेमाल होता है, चाहे वह पुरुष हो या स्त्री। यह सच है कि यदि केवल स्त्रियों को संबोधित किया जा रहा हो, तो पौलुस "एक पति वाली स्त्री" कहता (जैसा वह 1 तीमुथियुस 5:9 में कहता है)। फिर भी क्योंकि पौलुस, किसी भी प्राचीन पुरुष-केंद्रित यूनानी लेखक की तरह, किसी समूह में दोनों लिंगों के शामिल होने पर वाक्यांश का पुल्लिंग रूप इस्तेमाल करता था, इसलिए हम समझ सकते हैं कि यहाँ भी ऐसा ही हो सकता था। यीशु भी कुछ ऐसा ही करते हैं जब वे पुरुष-केंद्रित ढंग से कही गई उस व्यवस्था को उद्धृत करते हैं कि "अपने पड़ोसी की पत्नी" का लालच न करना[639] – एक ऐसी व्यवस्था जो उन पत्नियों पर भी लागू होती है जिन्हें अपनी पड़ोसिन के पति का लालच नहीं करना चाहिए।

यदि "अपनी पत्नी के प्रति विश्वासयोग्य" का मुद्दा पुरुष होना नहीं है, तो फिर क्या है? इस वाक्यांश का अर्थ है वैवाहिक और यौन रूप से एकनिष्ठ। यह उन लोगों को बाहर रखता है जिनके एक से अधिक जीवनसाथी हैं, और उन्हें भी जो अपने जीवनसाथी के प्रति यौन रूप से विश्वासघाती हैं।[640] Schreiner (और दूसरे) जैसे पूरकतावादी विद्वान भी इस संभावना को स्वीकार करते हैं: "1 तीमुथियुस 3:1-7 और तीतुस 1:6-9 में प्राचीनों के लिए दी गई योग्यताएँ, जिनमें यह कथन भी शामिल है कि वे एक-स्त्री वाले पुरुष हों, अपने आप में स्त्रियों को प्राचीन के रूप में सेवा करने से आवश्यक रूप से नहीं रोकतीं।"[641]

638. "जो कोई" या "कोई भी" के लिए यही शब्द (tis) फिर से पद 5 में आता है, और तीतुस 1:6 में भी। इसका अर्थ "कोई भी पुरुष" नहीं, बल्कि "कोई भी व्यक्ति" है – उदाहरण के लिए, यीशु कहते हैं, "यदि कोई (tis) मेरे पीछे आना चाहे, तो वह अपना क्रूस उठाए।" (मत्ती 16:24)

639. मरकुस 10:12

640. "एक पत्नी वाला पुरुष" एक मुहावरा है जिसे उसके हिस्सों के जोड़ के रूप में समझा जाना चाहिए। इसी तरह अंग्रेज़ी में हमारे यहाँ ऐसे पद-नाम रहे हैं जिनमें "man" (पुरुष) शब्द है, जैसे "mailman" (डाकिया) और "chairman" (अध्यक्ष), जिनसे यह संकेत नहीं मिलता था कि वह व्यक्ति पुरुष है, बल्कि यह कि पुरुष होना सामान्य मान लिया जाता था। देखें Philip Payne, Man and Woman, One in Christ, अध्याय 24 में की गई चर्चा।

641. स्रोत: www. bit.ly/31ls4qR पृ. 36. इसी तरह Douglas Moo, जो केवल पुरुषों की अगुवाई का समर्थक है, फिर भी कहता है, "यह तर्क देना बहुत दूर जाना होगा कि यह वाक्यांश [एक-स्त्री-वाला-पुरुष] स्त्रियों को स्पष्ट रूप से बाहर रखता है।" (The Interpretation of 1 Timothy 2: 11-15: A Rejoinder.) Craig Blomberg भी यही कहता है: "1 तीमुथियुस 3:1-7 और तीतुस 1:5-9 बहुत अधिक प्रासंगिक नहीं हैं।" (Two Views on Women in Ministry, अध्याय 1)।

लेकिन मान लीजिए (यद्यपि इसका शायद कोई ठोस कारण न हो) कि पौलुस इस सूची में सचमुच विशेष रूप से केवल पुरुषों की बात कर रहा था। तब भी हमारे पास यह निष्कर्ष निकालने का अच्छा कारण है कि पौलुस अधिक से अधिक यह मानकर चल रहा है कि उस संदर्भ में प्राचीन संभवतः पुरुष होंगे, और यह आवश्यक नहीं कि वह इसे सब समय की सब कलीसियाओं के लिए एक कठोर और अटल नियम बना रहा हो।

यह शायद ही कोई नया विचार है। दशकों तक मैंने ऐसी "प्राचीनों की अगुवाई वाली" कलीसियाओं में सेवा की है जो दावा करती थीं कि वे पास्टरों को चुनते समय 1 तीमुथियुस 3 को लागू करती हैं। फिर भी हम कलीसिया के अगुवों में से किसी ने पौलुस की परिस्थिति से अधिक जुड़ी योग्यताओं को इस बारे में कड़ा क़ानून नहीं माना कि कौन अगुवाई कर सकता है। चरित्र से संबंधित गुण ("कोमल, झगड़ालू नहीं, धन का लोभी नहीं"), संबंधों में अगुवाई की क्षमता ("प्रबन्ध करने में समर्थ"), और शिक्षा-संबंधी ज्ञान ("सिखाने में निपुण") – इन पर हम सब सहमत थे कि ये सार्वभौमिक हैं। लेकिन पद 4 और 5 में बताई गई परिस्थिति से जुड़ी बातें सार्वभौमिक नहीं हैं। सच तो यह है कि उन्हें बाध्यकारी आज्ञा मानने से कलीसियाएँ केवल ऐसे लोगों को नियुक्त कर पाएँगी जो बूढ़े हों ("प्राचीन" शब्द वरिष्ठता का संकेत देता है), जो विवाहित हों, और जिनके दो या अधिक बड़े बच्चे हों, जिनमें से हर एक उत्साह से मसीह की सेवा करता हो और अपने माता-पिता की हर आज्ञा मानता हो। निश्चय ही पौलुस सार्वभौमिक रूप से उन पास्टरों को नियुक्त करने की संभावना को मना नहीं कर रहा जो शायद बूढ़े न हों, विवाहित न हों, जिनके एक से अधिक बच्चे न हों, जिनके बच्चे आज्ञाकारी या विश्वासी न हों, जिनका अपना घराना (जिसमें आम तौर पर दास, रिश्तेदार और किरायेदार होते थे) न हो, और इसी तर्क को आगे बढ़ाएँ तो, जो पुरुष न हों?

क्या हम सचमुच यह मानें कि पौलुस सोचता है कि यीशु, तीमुथियुस और वह स्वयं – जो सब अविवाहित थे – किसी कलीसिया की वरिष्ठ अगुवाई टीम में होने के योग्य नहीं हैं? थोड़ी-सी सामान्य बुद्धि का उपयोग करें, तो हम समझ जाते हैं कि इस सूची में हमारे सामने पौलुस की यह धारणा है कि उस समय इफिसुस की कलीसिया के लिए सबसे संभावित और/या सबसे उपयुक्त प्राचीन कौन होंगे – न कि उन लोगों के बारे में उसका सार्वभौमिक नियम जो बाकी सारे समय तक कलीसियाओं की अगुवाई कर सकते हैं।

जैसा मैंने कहा है, 1 तीमुथियुस 3 और तीतुस 1 में दिए गए चरित्र के गुण प्राचीनों को चुनने में हमारी सहायता करने के लिए बाइबल की अत्यंत महत्त्वपूर्ण सामग्री हैं, लेकिन चरित्र के गुणों की यह सूची भी परिस्थिति से आकार लेती है: हम पूछ सकते हैं कि यह सूची बाहरी गुणों – धार्मिकता के दिखाई देने – के बारे में इतनी चिंतित क्यों है, भीतरी गुणों के बारे में क्यों नहीं? इसमें किसी ऐसे गुण का एक बार भी उल्लेख क्यों नहीं है जिसका संबंध परमेश्वर और लोगों के प्रति प्रेम से हो? इस सूची की उस समय के यूनानी साहित्य में इतनी अद्भुत समानताएँ क्यों मिलती हैं कि "नया चेला न हो" (पद 6) को छोड़कर, सूची के हर गुण की अपेक्षा यूनानी-रोमी संसार में किसी गैर-मसीही सरकारी अधिकारी से भी की जाती? इन गुणों का न होना "निन्दा" (पद 7) की ओर क्यों ले जाता?[642] जब पौलुस ने प्राचीनों को नियुक्त किया, तो उसने अपने ही

642. सांस्कृतिक विश्वसनीयता के लिए पौलुस की चिंता तीमुथियुस को लिखी उसकी पूरी पत्री की एक मुख्य प्रेरक शक्ति है। पौलुस चाहता है कि कलीसिया के अगुवों का "बाहर के लोगों में सुनाम हो, ताकि वह निन्दा में न पड़े।" इसी तरह 1 तीमुथियुस 2:10,15; 3:4,8,11; 5:10; और 6:1 कलीसिया की बाहरी प्रतिष्ठा के लिए एक व्यापक चिंता प्रकट करते हैं।

सब निर्देश क्यों लागू नहीं किए – उदाहरण के लिए, यद्यपि वह यहाँ कहता है कि नए मसीहियों को प्राचीन नियुक्त नहीं किया जाना चाहिए (पद 6), फिर भी उसने और बरनबास ने कभी-कभी नए विश्वासियों के समूह में से ही प्राचीन नियुक्त किए?[643]

इनमें से हर प्रश्न का उत्तर यह लगता है कि इफिसुस की कलीसिया झूठे शिक्षकों और गिरे हुए अगुवों के कारण पहले ही निन्दा झेल चुकी थी, जिन्होंने कलीसिया की प्रतिष्ठा को तार-तार कर दिया था। इस सूची के पीछे पौलुस की प्रबल चिंता यह है कि कलीसिया अपने अगुवों की विश्वसनीयता के द्वारा अपने परिवेश में अपनी खोई हुई विश्वसनीयता और गवाही फिर से पा ले।[644] उस संस्कृति में, वृद्ध लोगों की अगुवाई वाली कलीसिया युवाओं की अगुवाई वाली कलीसिया से बेहतर संदेश देती – इसके अलावा, पुरुष होना, विवाहित होना और अपने घराने में अधीन रहने वाले सदस्य होना, ये सब उस समय की किसी भी उभरती संस्था के अगुवों में पसंद किए जाने वाले और दिखाई देने वाले गुण थे। लेकिन हमें यह नहीं मान लेना चाहिए कि परिस्थिति से जुड़ी ये सब बातें दूसरी संस्कृतियों और संदर्भों में भी हमेशा वैसी ही रहेंगी। सच तो यह है कि हमारी अपनी संस्कृति में निःसंतान, अविवाहित, कम उम्र के या स्त्री अगुवे कलीसिया की विश्वसनीयता को कमज़ोर नहीं करते। मैं एक नवविवाहित पुरुष के रूप में पास्टर बना, जिसमें "प्राचीनता" बहुत कम थी (मैं अभी बीस से तीस वर्ष के बीच की उम्र का ही था) और जिसके कोई बच्चे नहीं थे; और जिन्होंने मुझे नियुक्त किया, उन्होंने यह नहीं सोचा कि वे बाइबल की शिक्षा का उल्लंघन कर रहे हैं, और न ही कलीसिया के उन लोगों ने ऐसा सोचा जिन्होंने मेरी आत्मिक अगुवाई को स्वीकार किया।

यदि 1 तीमुथियुस को सही ढंग से पढ़ने के बारे में हम कुछ सीखते हैं, तो यह कि उसके बहुत-से निर्देश कितने परिस्थिति-विशेष हैं। उसका सब कुछ सार्वभौमिक क़ानून नहीं है। उदाहरण के लिए, मैं कभी किसी ऐसी कलीसिया का हिस्सा नहीं रहा जो "विधवाओं की सूची" रखती हो, फिर भी 1 तीमुथियुस 5:3-9 कहता है कि केवल उन्हीं विधवाओं (विधुरों को नहीं) को कलीसिया से आर्थिक सहायता मिलनी चाहिए जिनकी आयु 60 वर्ष से अधिक हो (59 या उससे कम नहीं)। फिर भी बहुत-सी कलीसियाएँ विधुरों की भी सहायता करने को तैयार हैं, और उनकी भी जो 60 से कम आयु के हैं! जब हम उनसे पूछते हैं कि वे 1 तीमुथियुस 5 की "स्पष्ट शिक्षा" की अनदेखी क्यों करती हैं, तो वे ठीक ही उत्तर देती हैं कि उनकी परिस्थिति में – जो इफिसुस की परिस्थिति से अलग है – ऐसा करना ही सही है। इसी तरह, यदि हम पूछें कि आज कोई कलीसिया 1 तीमुथियुस 3 की "स्पष्ट शिक्षा" के बावजूद अपनी वरिष्ठ अगुवाई टीम में किसी वरदान वाले, भक्त अविवाहित पुरुष या विवाहित स्त्री को क्यों शामिल कर सकती है, तो वे ठीक ही उत्तर देती हैं कि उनकी परिस्थिति में – जो घायल इफिसी कलीसिया की परिस्थिति से इतनी अलग है – ऐसा करना ही सही है।

643. प्रेरितों के काम 14:8-23

644. William Mounce 1-2 तीमुथियुस और तीतुस पर अपनी टीका में दिखाता है कि जब हम 1 तीमुथियुस 3 और तीतुस 1 की सूचियों को एक साथ रखते हैं, और इन दो पत्रियों से पौलुस के विरोधियों और झूठे शिक्षकों और कलीसिया पर उनके प्रभावों के बारे में जो हम जानते हैं उसकी एक सूची बनाते हैं, तो पौलुस की सूचियों के लगभग हर विवरण का विरोधियों में एक ठीक उलटा रूप मिलता है। दूसरे शब्दों में, पौलुस तीमुथियुस और तीतुस पर ज़ोर दे रहा है कि वे ऐसे अगुवे खोजें जो उन विरोधियों जैसे बिल्कुल न हों जिन्होंने कलीसिया(ओं) को उजाड़ दिया है।

"क्या कोई ऐसा काम है जो वह नहीं कर सकती?"

मैं अक्सर अपनी पत्नी की असाधारण कुशलता पर चकित होता हूँ – एक सर्वगुण-संपन्न व्यक्ति और अनुभवी पेशेवर के रूप में – और मैं अपने आप से यही प्रश्न पूछता हूँ। लेकिन जब पास्टरीय सेवा की बात आती है, तो यह प्रश्न भक्त और उपयुक्त वरदानों वाली स्त्रियों के बारे में पूछा जाना चाहिए।

नया नियम प्राचीनों या पास्टरों के लिए आवश्यक गुणों और कामों, दोनों का विस्तार से वर्णन करता है। जब मैं इन विवरणों पर नज़र डालता हूँ, तो जो बात मुझे चौंकाती है वह यह है कि इनमें से हर एक बात स्त्रियों की पहुँच में भी है।

आइए 1 तीमुथियुस 3 में (और तीतुस 1 में दोहराई गई) चरित्र की योग्यताओं की सूची से शुरू करें। "एक पत्नी वाला पुरुष" शब्द को छोड़कर (जिसके बारे में मैंने पहले तर्क दिया कि इसे सामान्य अर्थ में "वैवाहिक और यौन रूप से एकनिष्ठ" पढ़ा जाना चाहिए), सूची में ऐसा कुछ भी नहीं है जिसे आज का पाठक केवल पुरुषों की पहुँच की बात समझे। फिर भी हम पूछ सकते हैं: क्या पौलुस ऐसा सोचता था? इसका उत्तर देने के लिए हमें अनुमान लगाने की ज़रूरत नहीं है: तीमुथियुस और तीतुस को लिखी अपनी पत्रियों में दूसरी जगहों पर वह स्पष्ट रूप से भक्त स्त्रियों में इन्हीं गुणों के होने की कल्पना करता है:

प्राचीन का पद एक अच्छा काम है (3:1); स्त्रियों को अच्छे काम करने हैं (5:10)। प्राचीनों को, और दूसरी जगहों पर उल्लिखित स्त्रियों को भी, ऐसा होना चाहिए: निर्दोष (3:2; 5:7); संयमी (3:2; 3:11); आत्म-नियंत्रित (3:2; 2:9, 15); सम्मानित (3:2; 2:9); अतिथि-सत्कार करने वाले (3:2; 5:10); सचेत (3:3; तीतुस 2:3); अपने घराने का अच्छा प्रबन्ध करने वाले (3:4; 5:14); और बाहर के लोगों में सुनाम वाले (3:7; 5:7, 10)। प्राचीनों को सिखाने में निपुण होना चाहिए (3:2), स्त्रियों को अच्छी बातें सिखानी चाहिए (तीतुस 2:3)। प्राचीनों को धन का लोभी नहीं होना चाहिए (3:3); स्त्रियों को सोना, मोती और महँगे कपड़े नहीं पहनने चाहिए (2:9)। प्राचीनों को अपने बच्चों को वश में रखने के ढंग में गरिमा दिखानी चाहिए (3:4); स्त्रियों को भी गरिमा दिखानी है (3:11)। प्राचीन नए चेले न हों, जो घमंड में फूलकर दण्ड में पड़ें (3:6); स्त्रियों को नम्र होना है और दण्ड के अधीन नहीं होना है (5:10, 12)।[645]

चरित्र के गुणों के अलावा, किसी पास्टर या प्राचीन के लिए आवश्यक क्षमता के बारे में क्या? संक्षेप में, उन्हें "झुंड की रखवाली करनी, उसका मार्गदर्शन करना, उसे सिखाना, उसे चिताना और उस पर चौकसी करनी है। इसमें झूठे शिक्षकों से बचाव करना भी शामिल है। उन्हें अच्छा उदाहरण भी रखना है और बीमारों की चंगाई के लिए प्रार्थना करनी है। वे भविष्यद्वाणी में और आत्मिक वरदान देने के लिए हाथ रखने में भी शामिल

645. Andrew Bartlett ने "Men and Women in Christ" (पृ. 318-319) में मेरा ध्यान इन बातों की ओर दिलाया। वह आगे कहता है, "पौलुस तीन और योग्यताएँ जोड़ता है: कोमल, मारपीट करने वाला नहीं (तुलना करें 1:13), और झगड़ालू नहीं (3:3)। इसमें कोई विवाद नहीं कि ये गुण स्त्रियों में पाए जा सकते हैं।"

हो सकते हैं।"[646] क्या इन कामों में से कोई भी काम ऐसा है जो उन स्त्रियों की क्षमता से परे हो जिन्हें इन्हें करने के लिए पर्याप्त वरदान, प्रशिक्षण और अनुभव मिला हो?

जब बाइबल का कोई ऐसा खंड नहीं है जो स्त्रियों को पास्टर बनने से स्पष्ट रूप से मना करता हो (मैंने इस पुस्तक में अब तक दिखाया है कि ऐसा कोई खंड नहीं है), तो यह मानना उचित होगा कि योग्यताओं और कामों की दोनों सूचियों में ऐसा कुछ भी नहीं है जो किसी स्त्री को ठीक उसी बुलाहट के पीछे चलने से रोके जिसके लिए पौलुस "जो कोई" को आमंत्रित करता है, जब वह लिखता है, "जो अध्यक्ष होना चाहता है, वह एक उत्तम काम की इच्छा करता है" (3:1)। कहने का अर्थ यह है कि निश्चय ही जिस समानतावादी संस्कृति में मैं रहता हूँ, उसमें चरित्रवान, बुलाई हुई और सक्षम स्त्रियों को भी कलीसिया की अगुवाई में नियुक्त करना सही और बुद्धिमानी की बात है।

(पौलुस के शब्दों "अपनी पत्नी के प्रति विश्वासयोग्य" के अलावा, 1 तीमुथियुस 3 से दो और तर्क हैं जिनका उपयोग पूरकतावादी केवल पुरुष प्राचीनों के पक्ष में करते हैं। मैं उन पर "परिशिष्ट 5: 1 तीमुथियुस 3 से दो और तर्क" में विचार करता हूँ।)

शिक्षा और अगुवाई का आधार: वरदान

दोहराकर कहूँ तो, रोमियों की पत्री में, जो एक मानक पत्री है, पौलुस कलीसिया में अगुवाई करने और शिक्षा देने के आधार के रूप में वरदानों पर ज़ोर देता है, जबकि 1 तीमुथियुस में, जो एक सुधारात्मक पत्री है, उसकी चिंता अधिकतर इफिसुस की कलीसिया की एक परिस्थिति को सुधारने की है।

लेकिन इसका अर्थ यह नहीं है कि 1 तीमुथियुस अगुवों और शिक्षकों को चुनते समय वरदानों को पहचानने के महत्त्व को पूरी तरह छोड़ देता है। पत्री के अंत के पास एक निर्णायक पद यह प्रकट करता है: "जो प्राचीन कलीसिया के कामों की अच्छी अगुवाई करते हैं, वे दुगने आदर के योग्य हैं, विशेष करके वे जिनका काम प्रचार करना और शिक्षा देना है।"[647] ध्यान दीजिए कि इस पद में वरदानों की ओर दो मौन संकेत हैं। पहला है अगुवाई का वरदान। पौलुस कहता है कि कुछ प्राचीन "कलीसिया की अगुवाई करने" में विशेष रूप से अच्छे होते हैं। अगुवाई करने के लिए यूनानी शब्द (proestōtes) कलीसिया की अगुवाई के लिए सबसे अधिक इस्तेमाल होने वाला शब्द है।[648] और फिर भी – और इस बात से हमें झटका लगना चाहिए – पौलुस रोमियों 12 में लिंग से स्वतंत्र "अगुवाई के वरदान" के लिए भी यही शब्द इस्तेमाल करता है। मेरा मुद्दा यह है कि परमेश्वर किसी व्यक्ति को अध्यक्ष बनाना चाहते हों, इसका सबसे पक्का चिह्न यह है कि उस व्यक्ति में परमेश्वर का दिया हुआ अगुवाई का वरदान दिखाई दे।

646. प्रेरितों के काम 20:28; 1 तीमुथियुस 3:5; 5:17; 1 पतरस 5:2-3; प्रेरितों के काम 20:28-31, याकूब 5:14-15, 1 तीमुथियुस 4:14। कामों की इस सूची के लिए Andrew Bartlett की "Men and Women in Christ" (पृ. 294) का धन्यवाद, जिसे मैं लगभग शब्दशः उद्धृत करता हूँ।
647. 1 तीमुथियुस 5:17
648. यह 1 तीमुथियुस 5:12 में आता है, जहाँ कलीसिया की अगुवाई का वर्णन करने के लिए इस क्रिया से संबंधित एक शब्द का उपयोग हुआ है।

दूसरा है शिक्षा देने का वरदान। पत्री में पहले पौलुस कहता है कि सब प्राचीनों को "सिखाने में निपुण" होना चाहिए, लेकिन "विशेष करके वे जिनका काम प्रचार करना और शिक्षा देना है" लिखकर वह स्पष्ट करता है कि कुछ प्राचीनों को शायद दूसरों से कहीं अधिक यह काम करना चाहिए। कलीसिया के जीवन का मेरा अनुभव मुझे इससे सहमत होने को प्रेरित करता है: कुछ प्रचारकों को इसका वरदान दूसरों से बस अधिक मिला होता है। 1 तीमुथियुस के अनुसार हम जानते हैं कि पास्टरीय अगुवाई टीमों को परमेश्वर के दिए वरदानों के प्रति (अपने बीच भी और दूसरों में भी) गहराई से सजग रहना चाहिए, क्योंकि पौलुस उसे याद दिलाता है: "उस वरदान की उपेक्षा न कर जो तुझे भविष्यद्वाणी के द्वारा उस समय मिला जब प्राचीनों की मंडली ने तुझ पर हाथ रखे।"[649]

आइए इस अध्याय को वहीं समाप्त करें जहाँ से हमने शुरू किया था: "आत्मा की मशक" जिसे हमें लागू करने का प्रयास करना चाहिए, वह है वरदानों को पहचानना – और निश्चय ही लिंग के आधार पर लोगों को बाहर रखना नहीं। कलीसियाओं को ऐसे भक्त, वरदान वाले लोगों को खोजना चाहिए जिन्हें वे प्रशिक्षित करें और शिक्षा देने और अगुवाई करने की अत्यधिक प्रभाव वाली सेवकाइयों के लिए मुक्त करें। आख़िरकार, पौलुस इसकी सीधी आज्ञा देता है: "यदि आपका वरदान ... सिखाना है, तो सिखाएँ; ... यदि अगुवाई करना है, तो लगन से अगुवाई करें।"[650] वरदान वाली स्त्रियों से ख़तरा महसूस करने के बजाय हमें उनके लिए परमेश्वर की स्तुति करनी चाहिए। Ben Witherington के इस निष्कर्ष में शायद जितना हम चाहें उससे अधिक सच्चाई है; वह नए नियम का एक विद्वान है जिसने आरंभिक कलीसिया में स्त्रियों की सेवकाई पर अपनी PhD की थी: "कलीसिया में समस्या मज़बूत स्त्रियाँ नहीं हैं, बल्कि ... वे पुरुष हैं जो मज़बूत स्त्रियों से ख़तरा महसूस करते हैं, और जिन्होंने अलग-अलग तरीकों से, यहाँ तक कि संदिग्ध व्याख्या के द्वारा भी, उन्हें कलीसिया में अपने वरदानों और अनुग्रह-दानों का उपयोग करने से रोकने का प्रयास किया है।"[651]

YWAM का Loren Cunningham एक बात बताता है जो दिवंगत David Yonggi Cho ने उससे एक बार कही थी: "[कोरिया में] सब कलीसियाएँ छोटी हैं [क्योंकि] वे अपनी स्त्रियों को रोककर रखती हैं, उन्हें वह करने नहीं देतीं जिसके लिए परमेश्वर उन्हें बुलाते हैं। मैंने उनसे कहा है कि अपनी स्त्रियों को मुक्त कीजिए, लेकिन वे ज़ोर देते हैं कि समस्या यह नहीं है। वे मुझसे पूछते हैं, 'आपकी कलीसिया की कुंजी क्या है?' मैं उनसे फिर कहता हूँ, 'अपनी स्त्रियों को मुक्त कीजिए,' पर वे मेरी सुनते ही नहीं!"[652]

अभी हाल ही में मैं एक मित्र से बात कर रहा था जिन्होंने अपनी पत्नी के साथ मिलकर पचास वयस्कों के साथ एक कलीसिया को फिर से स्थापित किया और उसे बढ़कर हज़ारों की होते देखा है। क्योंकि वे दक्षिणी अफ़्रीका में कलीसियाओं के एक बड़े परिवार की अगुवाई भी करते हैं, और ज़ाम्बिया में कलीसियाओं के एक बढ़ते हुए परिवार की भी, जिसे उन्होंने पहले स्थापित किया था, मैंने उनसे पूछा कि वे इस बोझ को कैसे संभालते हैं। वे ऐसे उत्तर देते हैं जिससे पता चलता है कि वे अपने विवाह में भी और अपनी सेवकाई में भी,

649. 1 तीमुथियुस 4:14
650. रोमियों 12:6-8
651. स्रोत: www.bit.ly/3BJj5wh
652. Loren Cunningham, Why Not Women? A Biblical Study of Women in Missions, Ministry, and Leadership

लिंग का ध्यान किए बिना, वरदानों को पहचानने को ही वह मशक मानते हैं जिसमें संसार के लिए परमेश्वर की आशीष उंडेली जाए:

मेरी पत्नी और मैं मिलकर अगुवाई करते हैं। हमारे लिए इसका हमारे काम पर कई गुना बढ़ाने वाला प्रभाव पड़ता है। हम दोनों एक टीम के रूप में अगुवाई करते और काम करते हैं; अपनी-अपनी क्षमताओं के अनुसार अलग-अलग क्षेत्रों में हम दोनों अगुवाई भी करते हैं और एक दूसरे के अधीन भी रहते हैं। हम एक दूसरे में से सबसे अच्छा बाहर लाने और एक दूसरे का साथ देने का प्रयास करते हैं। जब हम ज़ाम्बिया में कलीसियाएँ स्थापित करते हैं, तो हमारे पास जितने पुरुष कलीसिया-अगुवे हैं, उससे कहीं अधिक अवसर होते हैं। अक्सर स्त्रियों के पास ही सबसे अधिक वरदान और सबसे अच्छा चरित्र होता है। जब हम कलीसियाओं को उनकी देखभाल में सौंपते हैं, तो बार-बार हम उन्हें और उनकी अगुवाई वाली कलीसियाओं को फलते-फूलते देखते हैं।

जब हम वरदान वाली स्त्रियों को किनारे कर देते हैं या उन्हें कम आँकते हैं, तो हम परमेश्वर के अनुग्रह का बहुत बड़ा भाग खो देते हैं। हम न केवल वरदान वाली स्त्रियों को स्वयं वंचित करते हैं, बल्कि उन कलीसियाओं को भी जिनकी हम अगुवाई करते हैं, उस संसार को भी जिसकी हम सेवा करते हैं, और पुरुषों को भी – उस साझेदारी से जिसकी उन्हें बड़ी सख़्त ज़रूरत है।

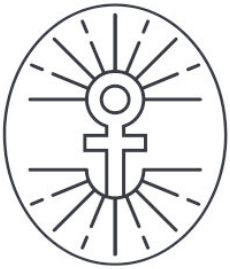

चौथा भाग

स्त्रियों को मुक्त करना

14

बाइबल के अनुसार स्त्रीत्व और पुरुषत्व

"स्त्री को पालन-पोषण करने वाली और पुरुष को अगुवा मानने की पुरानी पारंपरिक धारणा को एक ओर रख दीजिए। स्त्री को सर्वशक्तिमान 'सुपरवुमन' और पुरुष को अत्याचारी मानने की नई धारणाओं को भी एक ओर रख दीजिए। सबसे डरावनी चीज़ से शुरुआत कीजिए – एक कोरी स्लेट से।" **Anna Quindlen**[653]

John Piper कहता है, "कलीसिया के पास इस प्रश्न का उत्तर होना चाहिए कि आप उस आठ साल के लड़के या लड़की से क्या कहेंगे जो पूछता है, 'मम्मी, बड़ा होकर स्त्री नहीं बल्कि पुरुष होने का क्या अर्थ है?' ... मुझसे सामान्य मानवीय गुणों की बात मत कीजिए। मुझे बताइए कि स्त्री नहीं बल्कि पुरुष होने का क्या अर्थ है।"[654] लेकिन मैं उससे भी यही प्रश्न पूछ सकता हूँ। वह मेरे बच्चों से क्या कहेगा, जो लगभग इसी उम्र के हैं? आगे जो लिखा है उसमें उसके मुँह में शब्द डालने के लिए क्षमा कीजिए, पर वे उसी के अपने शब्द हैं।

उसके द्वारा लिखा गया डैनवर्स वक्तव्य कहता है कि परमेश्वर सब पुरुषों को बुलाते हैं कि वे स्त्रियों की अगुवाई करें, उनका भरण-पोषण करें और उनकी रक्षा करें। बदले में स्त्रियों को इस अगुवाई, भरण-पोषण और रक्षा के अधीन रहना और उसे ग्रहण करना है, और विशेष रूप से घर और बच्चों पर ध्यान देना है। यदि मेरे बच्चे पूछें कि सही अर्थ में पुरुषोचित पुरुष और सही अर्थ में स्त्रियोचित स्त्री होने का क्या अर्थ है, तो Piper यह उत्तर देने का साहस करता है:

परिपक्व पुरुषत्व के केंद्र में स्त्रियों की अगुवाई करने, उनका भरण-पोषण करने और उनकी रक्षा करने की एक हितकारी ज़िम्मेदारी का भाव है, ऐसे ढंग से जो किसी पुरुष के अलग-अलग संबंधों के लिए उपयुक्त हो ... और ... परिपक्व स्त्रीत्व के केंद्र में योग्य पुरुषों की ओर से मिलने वाली शक्ति और अगुवाई को स्वीकार करने, ग्रहण करने और पोषित करने की एक मुक्त करने वाली प्रवृत्ति है, ऐसे ढंग से जो किसी स्त्री के अलग-अलग संबंधों के लिए उपयुक्त हो।[655]

लेकिन देखिए, Piper अब विवाह की भूमिकाओं की अपनी समझ को स्त्री और पुरुष के सब आपसी संबंधों पर थोप देता है। यदि वह सही है, तो मुझे अपनी आठ साल की बेटी को सिखाना चाहिए कि वह अपने चार

653. 1999 Mount Holyoke Commencement Speech
654. देखें www.vimeo.com/44525286.
655. स्रोत: Recovering Biblical Manhood and Womanhood, अध्याय 1.

भाइयों की "अगुवाई ग्रहण करना" शुरू करे। क्या परमेश्वर मेरे बेटों और बेटी से सचमुच यही अपेक्षा रखते हैं? आइए, जितनी गहराई से हो सके, इस प्रश्न पर विचार करें कि पुरुषत्व और स्त्रीत्व के बारे में बाइबल क्या सिखाती है।

पूरकता: बाइबल की एक शिक्षा

बाइबल में मनुष्यजाति के बारे में सबसे पहला पद, उसके पहले ही अध्याय में, हमें बताता है कि "नर और नारी करके उसने उनकी सृष्टि की।" जैविक रूप से परमेश्वर ने मनुष्यजाति को दो अलग-अलग लैंगिक रूपों वाला बनाया। उत्पत्ति 1 में इससे पहले, रात और दिन, और सूर्य और चंद्रमा की भाषा शायद नर और नारी की पूरकता का एक नमूना देती है। हम एक दूसरे के प्रतिरूप हैं। किसी पहेली के दो टुकड़ों की तरह हम एक दूसरे की कमियों को भरते हैं। यीशु ने उत्पत्ति 1 का हवाला देकर लिंग के भेद पर ज़ोर दिया: "क्या तुमने नहीं पढ़ा कि आरम्भ में सृष्टिकर्ता ने 'उन्हें नर और नारी बनाया?'"[656]

बाइबल का दूसरा अध्याय भी स्त्री और पुरुष की पूरकता को दिखाता है। यदि हम आदम और हव्वा को सामान्य रूप से पुरुषों और स्त्रियों का मूल नमूना मानें, तो हम "समान-और-आमने-सामने" (kenegdo) हैं – हम प्रतिरूपों के रूप में एक दूसरे को पूर्ण करते हैं और एक दूसरे में से सबसे अच्छा बाहर लाने के लिए साझेदारी करते हैं। (इन विचारों को एक साथ रखें, तो हम "प्रतिरूप-साझेदार" हैं।)

इसलिए पूरकता परमेश्वर का ही विचार है! अब तक सब ठीक है। लेकिन जब हम बाइबल के इन आरंभिक अध्यायों से पूछते हैं कि उनके स्पष्ट जैविक अंतरों के अलावा पुरुषों और स्त्रियों में ठीक-ठीक क्या अंतर है, तो हमें उत्तर पाने में कठिनाई होती है। निश्चय ही पुरुष बच्चों को गर्भ में नहीं रख सकता, उन्हें जन्म नहीं दे सकता और उन्हें स्तनपान नहीं करा सकता; पर इसके अलावा वह क्या नहीं कर सकता, या उसे क्या नहीं करना चाहिए? और किसी स्त्री को गर्भवती करने के अलावा, ऐसा क्या है जो स्त्री नहीं कर सकती? मेरा सुझाव है कि पवित्रशास्त्र के आरंभिक अध्यायों में इसके बहुत कम स्पष्ट उत्तर मिलते हैं।

किसी भी तरह की "भूमिका की पहचान" के सबसे निकट हम उस ढंग में पहुँचते हैं जिससे परमेश्वर उत्पत्ति 3 में दण्ड देते हैं। स्त्री को प्रसव में पीड़ा होगी – क्या यह परमेश्वर का यह मानने का तरीका है कि उसके जीवन की दिशा बच्चों का पालन-पोषण होगी? और पुरुष खेत से परेशान होगा – क्या यह परमेश्वर का यह पक्का करने का तरीका है कि वह आर्थिक भरण-पोषण करने वाला होगा?

क्या हमें इन दण्डों से अपनी भूमिकाओं के बारे में इतने निष्कर्ष निकालने का साहस भी करना चाहिए? आख़िरकार, क्या यह खंड वर्णन करता है या आदेश देता है? जब हम उत्पत्ति के मूल पाठकों पर विचार करते हैं, तो हम समझते हैं कि यहाँ संभवतः किसी बात का वर्णन हो रहा है, आदेश नहीं। यह एक कृषि-प्रधान संस्कृति के लिए लिखा गया है, जिसमें पुरुष खेती के काम का शारीरिक रूप से कठिन हिस्सा करते, जबकि पत्नियाँ अपने छठे बच्चे को दूध पिला रही होतीं।

656. मत्ती 19:4। रोचक बात यह है कि केवल झूठे, ज्ञानवादी (नॉस्टिक) यीशु ही इस अंतर को मिटाते हैं: "जब तुम दोनों को एक कर दोगे ... ताकि नर नर न रहे और नारी नारी न रहे ... तब तुम [राज्य में] प्रवेश करोगे" (थोमा का सुसमाचार 22)।

सच तो यह है कि इन दण्डों में ऐसा कुछ भी नहीं है जो सब संस्कृतियों के सब पुरुषों और स्त्रियों के लिए, चाहे वे अविवाहित हों या विवाहित, लिंग के आधार पर अलग-अलग क्षेत्र ठहराता हो। बल्कि उत्पत्ति 1 इस बात पर ज़ोर देता है कि नर और नारी दोनों बच्चों के पालन-पोषण में लगे हैं ("फूलो-फलो")। हव्वा भले ही बच्चों को जन्म दे, पर आदम भी उनके बच्चों की देखभाल और पालन-पोषण करता है। (उत्पत्ति 2 में कथावाचक संकेत देता है कि परमेश्वर की योजना यह है कि बच्चे का पालन-पोषण पिता और माता दोनों करें।[657])

और दोनों खेतों में काम करने में लगे हैं ("पृथ्वी को अपने वश में कर लो")। यह सच हो सकता है कि हव्वा के आने से पहले आदम को वाटिका में उसकी देखभाल करने के लिए रखा गया, लेकिन हमें बताया गया है कि हव्वा उसे एक उपयुक्त सहायक और साथी के रूप में दी गई, जिससे संकेत मिलता है कि वह भी काम के बोझ में भागीदार है।[658] ऐसा नहीं कि भरण-पोषण करने वाले और पालन-पोषण करने वाली की इन भूमिकाओं में कुछ गलत है, लेकिन जब पूरकतावादी उन्हें सब पुरुषों और स्त्रियों पर थोपते हैं, तो वे इस खंड की स्पष्ट शिक्षा से आगे निकल जाते हैं।

संक्षेप में, लैंगिक द्विरूपता और पूरकता का विचार भले ही उत्पत्ति 1-3 में स्पष्ट हो, पर नर और नारी की भूमिकाओं और क्षेत्रों के बारे में आदेश, या पुरुषत्व और स्त्रीत्व की परिभाषाएँ उसमें स्पष्ट नहीं हैं।

पुरुषत्व और स्त्रीत्व: समाज की गढ़ी हुई धारणा?

"असली पुरुष" या "असली स्त्री" होने का क्या अर्थ है, इस बारे में प्रश्न हमारी आधुनिक संस्कृति में इस बात से और उलझ गए हैं कि लिंग को "समाज की गढ़ी हुई धारणा" मानने वाला उत्तर-आधुनिक विचार हावी हो गया है। जैविक लिंग को छोड़ दें, तो आज व्यापक रूप से यह दावा किया जाता है कि पुरुषत्व और स्त्रीत्व जैसी धारणाएँ किसी के आनुवंशिक गुणों की अपेक्षा कहीं अधिक उसकी परवरिश और संस्कृति का परिणाम हैं।

हमारी संस्कृति के इस तर्क की शक्ति का एक भाग यह है कि पुरुषों और स्त्रियों पर हुए अध्ययनों के बहुत-से मेटा-विश्लेषण एक ही निष्कर्ष दिखाते हैं: जैविक अंतरों के अलावा औसत पुरुष और औसत स्त्री आश्चर्यजनक रूप से एक जैसे हैं। बहुत-से विद्वान यह निष्कर्ष निकालते हैं कि जब सांस्कृतिक प्रभावों का ध्यान रखा जाए, तो अंतर इतने मामूली हैं कि उन्हें एक सामान्य नियम के रूप में लागू करना उचित नहीं।

657. देखें उत्पत्ति 2:24

658. Alastair Roberts ने हाल ही में सुझाव दिया है कि हम लिंग के अंतरों के बारे में पाठ में अधिक अर्थ पढ़ें: यदि हम उत्पत्ति 2 को उत्पत्ति 1 के प्रकाश में पढ़ें, तो उत्पत्ति 2 में बताई गई पुरुष की बुलाहट मुख्यतः सृष्टि के पहले तीन दिनों के कामों से मेल खाती है: नाम रखना, वश में करना, बाँटना और शासन करना। स्त्री की बुलाहट में मुख्यतः भरना, महिमा देना, उत्पन्न करना, संगति स्थापित करना और नया जीवन लाना शामिल है – ये काम सृष्टि के दूसरे तीन दिनों से जुड़े हैं। इसे पढ़ने का यह तरीका चाहे कितना भी रोमांचक हो, यह एक नया दृष्टिकोण है और कल्पना पर आधारित अर्थारोपण (eisegesis) का उदाहरण हो सकता है। यदि इसे स्वीकार करना ही हो (और मुझे संदेह है कि हमें करना चाहिए), तो मैं Roberts के प्रस्ताव को इस तरह सुधारूँगा कि स्त्रियों की बुलाहट में भी "शासन करना" शामिल करूँ: आख़िरकार, छठा दिन ज़ोर देकर शासन करने और वश में करने के बारे में है।

इससे पहले कि हम इस निष्कर्ष को एक नारीवादी एजेंडा कहकर फेंक देने के प्रलोभन में पड़ें, जो सामाजिक विज्ञानों के परिणामों को तोड़-मरोड़ रहा है, आइए याद रखें कि यह कुछ हद तक उत्पत्ति 1 और 2 की शिक्षा से मेल खाता है: पुरुष और स्त्रियाँ एक ही ग्रह पर बनाए गए हैं (ऐसा नहीं कि एक मंगल ग्रह से है और दूसरा शुक्र से); एक ही सामग्री से बनाए गए हैं ("हड्डी" और "मांस"); और एक ही समानता और स्वरूप में बनाए गए हैं (परमेश्वर के)। उत्पत्ति 1 में पुरुष और स्त्री परमेश्वर के साथ जो "समानता" रखते हैं, उसकी एक तुलना उत्पत्ति 2 में पुरुष और उसकी पत्नी के बीच की "समानता" में मिलती है। साथ ही, kenegdo शब्द शायद अंतर पर उतना ज़ोर नहीं देता जितना समानता पर, इसीलिए उसका अनुवाद "उपयुक्त" किया गया है। पुरुष और स्त्री के बीच एक मेल है, एक मानवीय "एकरूपता", जिसे आदम ने बहुत प्रयास करने पर भी वाटिका के किसी भी पशु में नहीं पाया। यह सब हमें पुरुषों और स्त्रियों के बीच के अंतरों को बढ़ा-चढ़ाकर न देखने में सहायता करता है।

Tikva Frymer-Kensky ने पुराने नियम की स्त्रियों का अध्ययन किया और पाया कि उनमें जिस बात पर ज़ोर दिया गया है वह उनकी मानवता है, उनका स्त्री होना नहीं:

जब हम बाइबल में स्त्रियों के लक्ष्यों और रणनीतियों के विवरण का सर्वेक्षण करते हैं, तो एक चौंकाने वाला तथ्य सामने आता है। बाइबल में स्त्रियों को जिस ढंग से चित्रित किया गया है, उसमें विशिष्ट रूप से "स्त्री-सुलभ" कुछ भी नहीं है; न उनके लक्ष्यों में और न उनकी रणनीतियों में कुछ विशेष रूप से स्त्रियोचित है। स्त्रियों के लक्ष्य वही हैं जो बाइबल के पुरुष पात्रों और इन कहानियों के लेखकों के लक्ष्य हैं।[659]

इतना कहने के बाद, मेरे विचार में इतने अध्ययन हैं जो इस धारणा का समर्थन करते हैं कि पुरुषों और स्त्रियों में औसतन संज्ञानात्मक, मनोवैज्ञानिक और भावनात्मक अंतर होते हैं, चाहे वे कितने भी मामूली क्यों न हों। पूर्व के देशों में सड़क के विक्रेताओं से सुनी एक बात का प्रयोग करूँ, तो पुरुष और स्त्रियाँ "same, same, but different" ("एक जैसे, एक जैसे, पर अलग") हैं।

अंतर

हमारे मस्तिष्क के अंतरों के बारे में सोचिए। हमारा मस्तिष्क इस तरह बना है कि वह अंतर्ज्ञान और रचनात्मकता वाले दाएँ भाग और तथ्यों और विश्लेषण वाले बाएँ भाग के बीच आगे-पीछे काम करता है। पुरुषों के मस्तिष्क में तंत्रिका-संपर्क औसतन हर आधे भाग में आगे से पीछे की ओर चलते हैं, जिससे उन्हें बोध और समन्वित क्रियाओं में लाभ मिलता है। इसके विपरीत, स्त्रियों के मस्तिष्क में दोनों आधे भागों के आर-पार कहीं अधिक मार्ग होते हैं, जिससे वे स्वाभाविक रूप से बातचीत करने और चीज़ों को समझने में अधिक सक्षम होती हैं। लगता है इसी कारण पुरुष अक्सर दिशाएँ समझने और एक समय में एक काम पूरा करने में बेहतर होते हैं, और स्त्रियाँ एक साथ कई काम करने और समूह में समस्याएँ सुलझाने में आगे होती हैं। और इसी कारण औसतन पुरुष अधिक सीधी रेखा में सोचते हैं और स्त्रियाँ अधिक समावेशी ढंग से, दोनों

659. Tikva Frymer-Kensky, In the Wake of the Goddesses: Women, Culture and the Biblical Transformation of Pagan Myth, अध्याय 11

पक्षों को साथ लेकर और संदर्भ के अनुसार।[660] शायद यही उस प्रचलित धारणा का कारण है कि पुरुष औसतन अपने को अलग करके परिपक्व होना चाहते हैं, जबकि स्त्रियाँ दूसरों से जुड़कर।[661]

इसके अलावा, मस्तिष्क के स्कैन ग्रे मैटर (जहाँ सूचना पर प्रक्रिया होती है) और व्हाइट मैटर (जहाँ से सूचना विद्युत रूप से शरीर के दूसरे भागों तक पहुँचाई जाती है) की मात्रा में अंतर दिखाते हैं। अधिक व्हाइट मैटर वाले पुरुष शारीरिक समन्वय में आसानी से आगे रहते हैं, जबकि स्त्रियाँ सूचना पर अधिक तेज़ी से प्रक्रिया करती हैं और सामाजिक संकेतों को पहचानती हैं।[662]

मेरी राय में सबसे रोचक बात यह है कि सामाजिक वैज्ञानिकों ने व्यक्तित्व के प्रकारों में दस पैमानों की पहचान की है – हर पैमाना यह मापता है कि कोई व्यक्ति करुणा, विनम्रता, कल्पनाशीलता, परिश्रमशीलता, उत्साह, मनोदशा की स्थिरता, व्यवस्थितता, मुखरता, विश्लेषणात्मक सोच और शांत रहने की क्षमता में कितना कम या अधिक है – और उन्होंने पाया है कि औसतन पुरुष और स्त्रियाँ इनमें से बहुत-से पैमानों पर अलग-अलग स्थानों पर आते हैं, जैसा कि नीचे दी गई तालिका में दिखाया गया है।[663]

	स्त्रियों का प्रतिशतक	पुरुषों का प्रतिशतक
करुणामय	61	39
विनम्र	59	41
कल्पनाशील	56,5	44,5
उत्साही	55	45
व्यवस्थित	54,5	45,5
परिश्रमी	50	50
मुखर	48	52
विश्लेषणात्मक सोच वाले	45	55
स्थिर मनोदशा	42,5	57,5
शांत रहने वाले	40	60

इस तालिका को समझने के लिए कल्पना कीजिए कि सौ बेतरतीब ढंग से चुने गए पुरुषों और सौ स्त्रियों से पुरुषों और स्त्रियों के सौ जोड़े बनाए गए हैं। परिश्रमशीलता के बारे में सांख्यिकीय संभावना यह है कि आधे जोड़ों में स्त्री पुरुष से अधिक परिश्रमी होगी, और बाकी आधे जोड़ों में पुरुष अधिक परिश्रमी होगा – इससे पता चलता है कि दोनों में परिश्रमी होने की प्रवृत्ति बराबर है। लेकिन करुणा के बारे में, 61 जोड़ों में स्त्री पुरुष से अधिक करुणामय होगी, पर बाकी 39 जोड़ों में इसका उलटा होगा।

660. इस विषय पर दो लेख देखें: www.bit.ly/2ZR6n12 और www.cbsn.ws/2YaJ7L6
661. Carol Gilligan, In a Different Voice. Tim और Kathy Keller द्वारा उद्धृत: “The Meaning of Marriage”, अध्याय 6.
662. Alice Mathews, Gender Roles and the People of God, अध्याय 13
663. स्रोत: www.bit.ly/3pZn7OU

यद्यपि परिश्रमशीलता में दोनों बराबर आते हैं, ध्यान दीजिए कि स्त्रियाँ औसतन करुणा, विनम्रता, कल्पनाशीलता, उत्साह और व्यवस्थितता में थोड़े अधिक अंक पाती हैं, जबकि पुरुष मुखरता, विश्लेषणात्मक सोच, मनोदशा की स्थिरता और शांत रहने की क्षमता में अधिक अंक पाते हैं।[664]

बहुत रोचक! लेकिन फिर भी हमें पूछना चाहिए कि इन औसतों का हम क्या करें? निश्चय ही हमें इन्हें हर व्यक्ति या दंपती पर एक अपेक्षा के रूप में नहीं थोपना चाहिए। माता-पिता के रूप में हो सकता है कि आपकी बेटी अपने भाई से अधिक विश्लेषणात्मक सोच वाली हो, और उसका भाई उससे अधिक करुणामय हो। इसी तरह, काम सौंपते समय हमें उम्मीदवारों को अपने आप लिंग के आधार पर सीमित नहीं कर देना चाहिए। Dorothy Sayers ने कहा,

बहुत कम स्त्रियाँ जन्म से ही मिस्त्री होती हैं; लेकिन यदि कोई ऐसी हो, तो उसे तर्क देकर कुछ और बनाने का प्रयास करना व्यर्थ है। ... यदि [वह] प्रथम श्रेणी की वकील, डॉक्टर, वास्तुकार या इंजीनियर बन सकती है, तो उसे इसमें अपना हाथ आज़माने दिया जाना चाहिए। नियम [यह होना चाहिए] कि काम पहले आए और फिर वह हर उस व्यक्ति के लिए [खोल दिया जाए] – पुरुष हो या स्त्री, मोटा हो या पतला, लंबा हो या नाटा, कुरूप हो या सुंदर – जो उस काम को बाकी संसार से बेहतर कर सकता है।[665]

प्रत्येक लिंग के लिए भूमिकाएँ ठहराने के पूरकतावादी तर्क की यह एक बड़ी समस्या है। यह तर्क देना सही है कि परमेश्वर ने पुरुषों और स्त्रियों को अलग-अलग बनाया है। औसतन, पुरुष अपनी मुखरता के कारण शायद स्वाभाविक रूप से नेतृत्व संभालने में अधिक सक्षम हों, जबकि स्त्रियाँ औसतन अपनी व्यवस्थितता और करुणा के कारण घर को संभालने और छोटे बच्चों की देखभाल करने के लिए शायद अधिक तैयार हों। लेकिन जिन पुरुषों और स्त्रियों के वरदान उन्हें इस औसत से बाहर रखते हैं, उन पर ये भूमिकाएँ थोपना अत्यंत हानिकारक होगा।

सच तो यह है कि मुझे संदेह है कि लिंग से जुड़ी रूढ़ धारणाओं का समर्थन करने के लिए बाइबल का उपयोग करना संभव भी है।

बाइबल के पुरुष जो लिंग की रूढ़ धारणाओं को तोड़ते हैं

बाइबल के पात्रों का अध्ययन कीजिए, और आप पाएँगे कि पुरुषत्व और स्त्रीत्व के बारे में हमारी आज की अधिकांश सांस्कृतिक धारणाएँ कहीं दिखाई नहीं देतीं।

जब परमेश्वर बसलेल और ओहोलीआब नाम के पुरुषों का अभिषेक "पत्थर काटने" और "लकड़ी पर नक्काशी करने" के लिए करते हैं, तो हम सोच सकते हैं कि यह लिंग के अनुसार बँटे काम की पुष्टि करता है, जिसमें भारी काम पुरुष करते हैं। लेकिन हम इस तथ्य का क्या करें कि उन्हें "कलात्मक नमूने" बनाने और

664. देखें www.bit.ly/3q6HGJh। निष्पक्ष रहें तो, सामाजिक विज्ञान अभी तक निश्चित रूप से यह स्थापित नहीं कर पाए हैं कि ये औसत किस हद तक स्वभाव (प्रकृति) का और किस हद तक परवरिश का परिणाम हैं।
665. Dorothy Sayers, Are Women Human? Essays on the Role of Women in Society, पृ. 19, 29. उद्धृत: William Witt, Icons of Christ, अध्याय 17

"बुने हुए वस्त्र" सिलने का वरदान भी दिया गया था?[666] या जब राजा दाऊद युद्ध में धावा बोलता है, या एक दानव के सिर पर अपना पत्थर चलाता है, तो हम इस काम के लिए एक पुरुष को चुनने के परमेश्वर के निर्णय की सराहना कर सकते हैं, पर हम उसके वीणा बजाने और भावनाओं से भरी कविताएँ लिखने का क्या करें? या जब यीशु मंदिर में मेज़ें उलट देते हैं, तो हम उनके पुरुषोचित साहस की चर्चा करना पसंद करते हैं, पर हम उनकी इस इच्छा का क्या अर्थ निकालें कि वे अपने लोगों को अपने पंखों के नीचे वैसे इकट्ठा करें जैसे मुर्गी अपने बच्चों को इकट्ठा करती है?[667] असली पुरुष रोते नहीं? पर यीशु तो रोए। असली पुरुष हथियार चलाते हैं? यीशु ने पतरस से अपना हथियार रख देने को कहा। असली पुरुष स्नेह नहीं दिखाते? यीशु ने यूहन्ना को अपनी छाती पर सिर टिकाने दिया। असली पुरुष घर के काम नहीं करते? यीशु ने अपने चेलों के लिए खाना पकाया और तैयार किया और उनके पाँव धोए।[668]

हम अक्सर यह सोचना पसंद करते हैं कि पौलुस "पुरुषोचित" गुणों का उदाहरण है, जैसे कभी न रुकने वाला धैर्य, कभी न थकने वाली महत्त्वाकांक्षा, और हर तरह के ख़तरे को गले लगाना। फिर भी जब वह उन रूपकों को चुनता है जो उसकी सेवकाई को चलाते और आकार देते हैं, तो वह अक्सर स्त्रियों से जुड़े रूपकों को पकड़ता है। एक कलीसिया से वह कहता है, "हे मेरे प्रिय बालको, जब तक तुम में मसीह का रूप न बन जाए, तब तक मैं तुम्हारे लिए फिर से जच्चा की-सी पीड़ाएँ सहता हूँ।"[669] और दूसरी से वह कहता है, "जैसे दूध पिलाने वाली माता अपने बच्चों की देखभाल करती है, 8 वैसे ही हमने तुम्हारी देखभाल की।"[670]

या विवाह के बारे में इफिसियों 5 में पौलुस के शब्दों को कुछ बार और पढ़िए, और ध्यान दीजिए कि आदर्श पति यीशु अपनी दुल्हन के लिए क्या करते हैं: वे अपनी पत्नी को नहलाते हैं, उसे वस्त्र पहनाते हैं, उसे खिलाते हैं, उसका पालन-पोषण करते हैं और उसके कपड़े धोते हैं – उस संस्कृति में ये घर के काम थे।[671] आइए यह न भूलें कि मसीह/पति और कलीसिया/पत्नी की पौलुस की उपमाओं में हर पुरुष पाठक की तुलना यीशु की दुल्हन से की गई है। पुरुष, जो अपने "पुरुष होने" के स्वभाव के कारण अक्सर स्वतंत्रता और अकेलेपन के पीछे भागते हैं, उन्हें अपने पति मसीह के साथ घनिष्ठता के पीछे चलना सीखना चाहिए, और अपने को खोलकर उनकी देखभाल को ग्रहण करना चाहिए। पुरुषों के बारे में रूढ़ धारणाओं को तोड़ने का इससे बड़ा उदाहरण क्या होगा!

बाइबल की स्त्रियाँ जो लिंग की रूढ़ धारणा को तोड़ती हैं

हम "पारंपरिक" स्त्रीत्व को "बाइबल के" स्त्रीत्व से भी गड़बड़ा देते हैं। ऐसा नहीं है कि केवल पुरुष ही अपने लोगों की रक्षा के लिए दूसरों को मारते हैं। मैंने बच्चों की बहुत-सी बाइबलों में दाऊद और गोलियत की कहानी देखी है, पर किसी में भी याएल और सीसरा की कहानी नहीं है, जिसमें याएल नाम की स्त्री निडर

666. निर्गमन 31:1-10
667. मत्ती 21:12-17; 23:27
668. इन अंतर्दृष्टियों के लिए मेरी मित्र Margo Davies का धन्यवाद, जो उसके ब्लॉग में हैं: www.bit.ly/3mLLnlK
669. गलातियों 4:19
670. 1 थिस्सलुनीकियों 2:7-8
671. पद 27 शायद यह भी बताता है कि वे अपनी पत्नी का विवाह-वस्त्र प्राप्त करते हैं और उसे सँभालकर रखते हैं।

होकर भागते हुए शत्रु सेनापति के सिर में तम्बू की खूँटी ठोक देती है – और इस तरह परमेश्वर के लोगों की विजय को और भी पक्का कर देती है।[672] या उस स्त्री के बारे में क्या, जो अपने घेरे हुए नगर को इस तरह बचाती है कि वह एक पुरुष का सिर कटवाकर शहरपनाह के ऊपर से फेंकवा देती है, और इस तरह डेरा डाले हुए शत्रुओं को शांत कर देती है।[673]

ये स्त्रियाँ Jane Austen के किसी उपन्यास की उन पारंपरिक रूप से "स्त्रियोचित" स्त्रियों से कितनी अलग हैं, जो "लगातार अपनी भावनाओं के बारे में डायरी लिखती रहती है, विवाह की अपनी सबसे अच्छी संभावनाओं के बारे में योजनाएँ बनाती रहती है, लगभग हर भावनात्मक कष्ट पर बेहोश हो जाती है, कपड़ों की परत पर परत पहनती है, जिसमें कसा हुआ कॉर्सेट भी होता है, और जिससे काम करने की अपेक्षा नहीं की जाती।"[674] ये बिल्कुल वैसी स्त्रियाँ नहीं हैं जिनके बारे में Elisabeth Elliot सोच रही थी जब उसने बाइबल के स्त्रीत्व का गलत आदर्श प्रस्तुत किया: "स्त्रियाँ समर्पण करती हैं, सहायता करती हैं और प्रत्युत्तर देती हैं, जबकि पति भरण-पोषण करते हैं, रक्षा करते हैं और पहल करते हैं। बाइबल के अनुसार स्त्री वह है जो अधीन रहती है।"[675]

बेशक, प्राचीन पितृसत्तात्मक संसार में (और आज की पारंपरिक संस्कृतियों में) स्त्रियों से यह अपेक्षा थी कि वे बच्चों की देखभाल करें, अधीन रहकर पुरुषों को अगुवाई करने दें, और उन पुरुषों के लिए भोजन और यौन-संबंध की सुविधाएँ जुटाएँ जिनका जीवन सार्वजनिक क्षेत्र में लगा रहता था। लेकिन यद्यपि बाइबल ऐसे संसार के अनुसार अपने को ढालती है, वह इसे परमेश्वर के सर्वोच्च आदर्श के रूप में उचित नहीं ठहराती – और यह बात उन सब बाइबल की स्त्रियों से और भी पक्की हो जाती है जिन्होंने इन पारंपरिक भूमिकाओं को तोड़ा। कभी-कभी हम इसे स्वीकार नहीं कर पाते। उदाहरण के लिए, स्त्रियों के बारे में तीन खंडों[676] में अनुवाद का एक पूर्वाग्रह दिखाई देता है: हमारी बाइबलें हमें बताती हैं कि रूत "उत्तम चरित्र" की स्त्री थी; कि "उत्तम चरित्र" की पत्नी "अपने पति का मुकुट है"; और कि नीतिवचन 31 की स्त्री उन "उत्तम कामों" से बढ़कर है जो दूसरी स्त्रियाँ करती हैं। लेकिन इन तीनों खंडों में इब्रानी शब्द nayil का अनुवाद "उत्तम" किया गया है, यद्यपि बाइबल में उसके बाकी 95 प्रयोगों में, जब वह पुरुषों के लिए इस्तेमाल होता है, उसका अनुवाद "वीर", "योद्धा" या "बल" किया जाता है।

बाइबल की स्त्रियाँ भी जुझारू हैं! यदि इफिसियों 5 में पौलुस न केवल स्त्रियों को बल्कि पुरुषों को भी मसीह की दुल्हन के साथ अपनी पहचान जोड़ने के लिए बुलाता है (और कलीसिया के अच्छे पति यीशु की तरह घर के काम करने के लिए भी), तो हमें इस बात पर आश्चर्य नहीं होना चाहिए कि इफिसियों 6 में वह न केवल पुरुषों को बल्कि स्त्रियों को भी मसीह की सेना में योद्धा बनने के लिए बुलाता है – अपनी ढालें और तलवारें उठाकर अंधकार को पीछे धकेलने के लिए।

672. न्यायियों 4। इसी तरह अपोक्रिफ़ा में यहूदीत, जिसके नाम का अर्थ बस "यहूदी स्त्री" है, अपनी चतुराई से एक शत्रु सेनापति होलोफर्नीज़ (Holophernes) का सिर काट देती है।
673. 2 शमूएल 2:22
674. मुझे याद नहीं कि यह उद्धरण मुझे पहली बार कहाँ मिला, पर यह मेरा नहीं है।
675. Elisabeth Elliot, Let Me Be A Woman, पृ. 50. उद्धृत: Barr, Introduction
676. रूत 3:11, नीतिवचन 31:29, नीतिवचन 12:4

मैं मसीह में मज़बूत पुरुषों के पूरे पक्ष में हूँ, लेकिन मुझे समझ नहीं आता कि हमें मसीह में मज़बूत स्त्रियों के अलावा कुछ और क्यों चाहिए – ऐसी स्त्रियाँ जो हम पुरुषों के साथ-साथ खड़ी हों। हमारे संसार में अंधकार के प्रभुत्व में जो कुछ है, उसे देखते हुए हमें सेना के दूसरे आधे भाग को मुक्त करने की ज़रूरत है, ताकि वह हम पुरुषों के साथ अन्याय और धोखे के विरुद्ध बदला लेने वालों के रूप में, पीड़ितों और आघात झेल चुके लोगों को छुड़ाने वाले स्वतंत्रता-सेनानियों के रूप में, और मसीह के उद्देश्य के लिए मशालवाहकों और योद्धाओं के रूप में जुड़ सके। मैं यहाँ केवल किसी आशा भरे भविष्य की बात नहीं कर रहा। बार-बार मसीह की स्त्री योद्धाओं ने यीशु के लिए पहले ही बहुत बड़ा प्रभाव डाला है। साल्वेशन आर्मी (Salvation Army, उद्धार सेना) के संस्थापक William Booth कहा करता था कि उसके "सबसे अच्छे पुरुष स्त्रियाँ थीं।" इसी तरह Life and Work on the Mission Field नामक पुस्तक में दर्ज है कि "काम जितना कठिन और ख़तरनाक होता है, पुरुषों की तुलना में स्त्रियों का अनुपात उतना ही अधिक होता है।"[677]

रूढ़ धारणाओं को अनदेखा करना

यह बात कि बाइबल स्त्रीत्व और पुरुषत्व की परिभाषाएँ नहीं देती, मुझे बताती है कि हमने शायद इन विचारों पर ज़रूरत से ज़्यादा ध्यान लगा रखा है। हाँ, मनुष्य नर और नारी हैं, और हमें अपनी देह में मिली लैंगिक पहचान के अनुरूप जीना है, लेकिन स्त्रीत्व या पुरुषत्व के स्वभाव के बारे में बाइबल लगभग कुछ नहीं कहती। Tikva Frymer-Kensky का बाइबल के पात्रों का अध्ययन यह प्रकट करता है:

[पवित्रशास्त्र] मनुष्य के व्यवहार की किसी भी विशेषता को "स्त्री-सुलभ" या "पुरुष-सुलभ" के रूप में प्रस्तुत नहीं करता; 'स्त्रियोचित' और 'पुरुषोचित' के दो छोरों के बीच गुणों का कोई बँटवारा नहीं करता; ऐसे ध्रुवों के भेद का कोई संकेत तक नहीं देता जैसे पुरुष की आक्रामकता – स्त्री की ग्रहणशीलता, पुरुष का नवाचार – स्त्री का संरक्षण, पुरुष का बाहर की ओर बढ़ना – स्त्री का भीतर समेटना ... या ऐसे किसी भी दूसरे ध्रुव का, जिनके द्वारा हम लिंग के भेद के बारे में सोचने के आदी हैं।[678]

जब मैं यह लिख रहा हूँ, मैं Twitter खोलता हूँ और एक बैपटिस्ट सेमिनरी के प्रोफ़ेसर की बात पढ़ता हूँ। अभी कुछ दिन पहले, मदर्स डे की तैयारी में, जब कुछ कलीसियाओं में किसी स्त्री वक्ता को बुलाना आम बात है, वह लिखता है, "मेरी बात साफ़-साफ़ सुनिए। यदि आपकी कलीसिया में कभी-कभार भी कोई स्त्री प्रचार करती है, तो आपको वह कलीसिया छोड़ देनी चाहिए।"[679] फिर ऐसा लगता है कि वह हमारे इस प्रश्न का अनुमान लगा लेता है कि तब स्त्रियों को कौन-से काम करने चाहिए, क्योंकि उसके अगले ट्वीट में उन स्त्रियों की सराहना है जो कपड़े धोती हैं, सिलाई और बुनाई करती हैं, और बच्चों की देखभाल करती हैं – वह कहता है कि ये सब ऐसे काम हैं जिन्हें स्त्रियाँ अच्छी तरह करें तो मसीह उन्हें प्रतिफल देंगे।[680] जब मैं उसका

677. Herbert Kane, Life and Work on the Mission Field, पृ. 143. उद्धृत: Bessey, Jesus Feminist, अध्याय 8.
678. Frymer-Kensky, In the Wake of the Goddesses: Women, Culture and the Biblical Transformation of Pagan Myth, पृ. 141.
679. www.bit.ly/2ZNt9ai
680. www.bit.ly/3nQAwpC

पेज देखता हूँ, तो एक और ट्वीट सामने आता है कि कैसे "प्रधान और अधिकारी सृष्टि की व्यवस्था से घृणा करते हैं, बाइबल के पुरुषत्व और स्त्रीत्व से घृणा करते हैं, परमेश्वर से घृणा करते हैं।"[681] उसके विश्वास भटके हुए हैं: क्या हो यदि शैतान की रणनीति यही रही हो कि सेना का आधा भाग दूसरे आधे भाग को घर की चारदीवारी में बाँध दे? शैतान वास्तव में जिससे घृणा करता है, वह है शक्ति में एक हुए पुरुष और स्त्रियाँ, जो आत्मिक युद्ध और सुसमाचार की घोषणा में कंधे से कंधा मिलाकर खड़े हों।

डैनवर्स वक्तव्य कहता है कि "पुरुषोचित और स्त्रियोचित भूमिकाओं में भेद परमेश्वर द्वारा ठहराए गए हैं और हर मनुष्य के हृदय में उनकी प्रतिध्वनि होनी चाहिए।" लेकिन सोचिए कि यह कथन कितना अनुपयोगी है। क्योंकि उसका लेखक दूसरी जगह "पुरुषोचित" की परिभाषा "शक्ति और अगुवाई" और "स्त्रियोचित" की परिभाषा "पुरुष की शक्ति और अगुवाई को स्वीकार करना" देता है, तो इसका क्या निष्कर्ष निकलता है यदि आप एक पुरुष हैं और फिर भी किसी स्त्री की शक्ति और अगुवाई को स्वीकार कर सकते हैं, या यदि आप एक मज़बूत स्त्री हैं जो अगुवाई करना चाहती है? इसका अर्थ यह निकलता है कि आपके भीतर कोई ऐसी चीज़ काम कर रही है जो परमेश्वर की ओर से नहीं है।

स्त्रियों और पुरुषों दोनों में परमेश्वर के काम का सच्चा चिह्न यह है कि दोनों मसीह के समान बनने के पीछे लगे रहते हैं। यीशु कैसे हैं, यह कोई रहस्य नहीं है। शायद प्रकाशितवाक्य 5 यीशु के उस स्वभाव का सबसे अच्छा सार देता है जो हर बनी-बनाई छवि (स्टीरियोटाइप) को झुठला देता है। उसमें यूहन्ना से कहा जाता है कि वह "यहूदा के गोत्र के उस सिंह" को देखे जिसने जय पाई है, परन्तु जब वह उसे देखने के लिए सिर उठाता है, तो चकित होकर देखता है "मानो वध किया हुआ एक मेम्ना।" यीशु निडर सिंह भी हैं और वध किया हुआ मेम्ना भी। वे अधिकार का राजदण्ड धारण करते हैं, परन्तु क्रूस पर कीलों से ठोंके जाने के घाव भी धारण करते हैं। वे प्रतापी भी हैं और नम्र भी। वे राजा भी हैं और सेवक भी। वे ऊँचे खड़े हैं, स्वर्ग तक महिमान्वित, परन्तु वे झुककर हमें उठाते और अपनी छाती से लगा भी लेते हैं। वे सामर्थी हैं, फिर भी घाव सहने को खुले; अधिकारपूर्ण हैं, फिर भी सुलभ; दृढ़ हैं, फिर भी झुकने को तैयार; गरजते हैं, फिर भी रोते हैं; अटूट हैं, फिर भी तोड़े गए।

उन दृढ़ – यद्यपि कभी-कभी आक्रामक – पुरुषों (और स्त्रियों) के लिए, जिनका स्वाभाविक झुकाव शायद यीशु के सिंह-जैसे गुणों की ओर है, यीशु का यह निमंत्रण है: "मुझ से सीखो; क्योंकि मैं नम्र और मन में दीन हूँ।"[682] उन कोमल, परन्तु जल्दी घबरा जाने वाली स्त्रियों (और पुरुषों) के लिए, जिनका स्वाभाविक झुकाव शायद यीशु के मेम्ने-जैसे गुणों की ओर है, यीशु का यह निमंत्रण है: "स्वर्ग का राज्य बलपूर्वक आगे बढ़ रहा है, और बलवान लोग उसे छीन रहे हैं।"[683] स्पष्ट कर दूँ: बाइबल हमें कभी यह आज्ञा नहीं देती कि हम अधिक पुरुषत्व या अधिक स्त्रीत्व पाने का प्रयास करें। इसके बजाय हमें अधिक से अधिक मसीह के समान बनने के लिए बुलाया गया है। हम यह नहीं पूछते, "क्या मैं 'बाइबलीय' स्त्री या पुरुष बनने का अपना दायित्व पूरा कर रहा/रही हूँ?" बल्कि यह पूछते हैं, "क्या मैं मसीह का अनुकरण कर रहा/रही हूँ?"

681. www.bit.ly/2ZS465M
682. मत्ती 11:29
683. मत्ती 11:12

इसी कारण पौलुस लिखता है, "जब मैं सयाना हो गया, तो बालकों की बातें छोड़ दीं," न कि "स्त्रियों की बातें छोड़ दीं।" जैसा हम अक्सर करते हैं, स्त्रीत्व की तुलना पुरुषत्व से करने के बजाय, शायद हमें दोनों की तुलना बचपन से करनी चाहिए। बच्चे प्रायः निर्देश की प्रतीक्षा करते हैं, वे आत्मकेंद्रित, डरपोक और दूसरों पर अत्यधिक निर्भर होते हैं। इसके विपरीत, हम जानते हैं कि हम स्त्रीत्व और पुरुषत्व में परिपक्व हो गए हैं, जब हमने दूसरों की सेवा करना, एक-दूसरे पर निर्भर रहना, और अधिक पहल तथा ज़िम्मेदारी लेना सीख लिया है।

परन्तु क्या कोई भी ऐसी आज्ञा है जो केवल एक ही लिंग के लिए हो? मेरा सुझाव है कि एक आज्ञा स्त्रियों के लिए है और एक पुरुषों के लिए।

सुंदरता और बल का भण्डारीपन

आइए, स्त्रियों के लिए एक ऐसे निर्देश से आरम्भ करें जो उनकी सुंदरता से संबंधित है: "मैं चाहता हूँ कि स्त्रियाँ संकोच और संयम के साथ सुहावने वस्त्रों से अपने आप को संवारें; न कि बाल गूँथने, और सोने, और मोतियों, और बहुमूल्य कपड़ों से, पर भले कामों से, क्योंकि परमेश्वर की भक्ति का अंगीकार करनेवाली स्त्रियों को यही उचित है।"[684]

ध्यान दीजिए कि पौलुस स्त्री की सुंदर दिखने की इच्छा की आलोचना नहीं करता, बल्कि उसकी पुष्टि करता है। वास्तव में, एक अन्य स्थान पर वह संकेत देता है कि स्त्री की सुंदरता सृष्टि का शिखर है।[685] परन्तु पौलुस की चिन्ता यह है कि बहुत-सी स्त्रियाँ बड़ी आसानी से केवल ऊपरी, दिखावटी सुंदरता से संतुष्ट हो जाती हैं। नीतिवचन 31 की स्त्री की प्रशंसा उसकी ऊपरी सुंदरता के लिए नहीं होती, जो क्षणभंगुर है, बल्कि परमेश्वर के प्रति उसके दीप्तिमान प्रेम के लिए होती है। ऐसा लगता है कि इफिसुस की कलीसिया में कुछ धनी स्त्रियाँ थीं जो अपने भड़कीले गहनों और साज-सज्जा से अपनी ओर ध्यान खींचना चाहती थीं। पौलुस कहता है कि उन्हें इसके बजाय उस एक पर ध्यान लगाना चाहिए जो उन्हें उनके बाहरी रूप से नहीं, बल्कि प्रेम से प्रेरित उनके कामों से परखते हैं। हो सकता है कि पौलुस उन मसीही स्त्रियों को भी चुनौती दे रहा हो जो उत्तेजक वस्त्र पहनकर अपनी सुंदरता का शोषणकारी उपयोग कर रही थीं। मैं कदापि यह नहीं कह रहा कि किसी स्त्री का पहनावा यह तय करे कि पुरुष उसके साथ कैसा व्यवहार करें, या कि स्त्रियों को कभी भी पुरुषों की यौन पवित्रता के लिए स्वयं को ज़िम्मेदार समझना चाहिए। हर स्त्री जैसा चाहे वैसा पहनने के लिए स्वतंत्र है, परन्तु भक्त स्त्रियों को सबसे पहले प्रेम को ओढ़ना चाहिए। और वह प्रेम सबसे पहले उनकी अपनी ओर होना चाहिए। हमारी संस्कृति आत्म-अभिव्यक्ति का कितना भी उत्सव मनाने का दावा करे, स्त्रियाँ और किशोरियाँ शारीरिक आदर्श के अत्याचार से इतनी पीड़ित पहले कभी नहीं रहीं। इसमें सोशल मीडिया के प्रभाव का बहुत बड़ा हाथ है कि युवा लोगों में अवसाद, चिन्ता और खान-पान संबंधी विकार आसमान छू रहे हैं।[686] पूर्णता की कभी न ख़त्म होने वाली खोज में और अधिक से अधिक "लाइक्स" की चाह में, सुंदरता के लिए हमारी स्वाभाविक इच्छा विकृत हो गई है। हमारे शारीरिक रूप को कभी भी हम पर, या दूसरों पर, ऐसी शक्ति चलाने के लिए नहीं बनाया गया था।

684. 1 तीमुथियुस 2:9-10
685. 1 कुरिन्थियों 11:15
686. www.bit.ly/3bIo4mc

अब मुझे इस विषय में एक पुरुष के दृष्टिकोण से कुछ कहने दीजिए। अपने पहाड़ी उपदेश में यीशु पुरुषों को आज्ञा देते हैं कि वे स्त्रियों पर बुरी दृष्टि न डालें – वे स्त्रियों को यह आज्ञा नहीं देते कि वे वासना की वस्तु बनने से बचें। एक पुरुष होने के नाते मैं जानता हूँ कि मैं शालीन कपड़े पहनी हुई स्त्री पर भी बुरी दृष्टि डाल सकता हूँ। और एक मसीही पुरुष के रूप में मैंने यह समझ लिया है कि वासना का समाधान स्त्रियों की ओर देखने से बचना नहीं है। आख़िरकार, यीशु तो हर समय स्त्रियों की ओर देखते थे। बल्कि, पवित्रता की अपनी लड़ाई में सबसे अच्छी रणनीति यह है कि मैं स्त्रियों को सचमुच वैसे देखूँ जैसे परमेश्वर उन्हें देखते हैं – यौन तृप्ति की वस्तु के रूप में नहीं, बल्कि परमेश्वर के स्वरूप को धारण करने वाली अपनी सहभागियों के रूप में।

अब आइए, पुरुषों को दी गई एक ऐसी आज्ञा पर विचार करें जो शायद उनके शारीरिक बल से संबंधित है। पतरस चाहता है कि पुरुष स्त्रियों की उपस्थिति में अपने शारीरिक बल का सही उपयोग करे: "हे पतियो ... तुम भी बुद्धिमानी से पत्नियों के साथ जीवन निर्वाह करो और स्त्री को निर्बल पात्र जानकर उसका आदर करो, यह समझकर कि वह जीवन के अनुग्रहमय वरदान में तुम्हारे साथ वारिस है, जिससे तुम्हारी प्रार्थनाएँ रुक न जाएँ।"[687] स्त्रियाँ यहाँ पतरस के शब्दों पर कितना भी ठिठकें, उनका उद्देश्य अपमान करना नहीं है। वह केवल एक सार्वभौमिक तथ्य की बात करता है: वयस्क पुरुष लगभग हमेशा स्त्रियों से शारीरिक रूप से अधिक बलवान होते हैं। पुरुषों को अपने बल का उपयोग विशेष रूप से रक्षा के लिए करना चाहिए, और कभी चोट पहुँचाने के लिए नहीं।

भयानक बात यह है कि घरेलू हिंसा को पिछली सदी के मध्य में जाकर ही अस्वीकार्य और अपराध माना गया। जैसा कि मैंने पहले अध्याय 2 में ज़ोर देकर कहा था, 1960 के दशक में जाकर ही स्त्रियों को बराबर समझा जाने लगा और परिणामस्वरूप स्त्रियों की अधीनस्थता पर प्रश्न उठने लगे। वास्तव में, मुझे New York Daily Mirror में 1960 के दशक का एक अख़बारी लेख मिला, जिसका शीर्षक था, "If a Woman Needs It, Should She Be Spanked?" ("यदि स्त्री को इसकी ज़रूरत हो, तो क्या उसकी पिटाई होनी चाहिए?")[688] पत्र लिखने वाले चार पुरुषों के उत्तरों के आधार पर सर्वसम्मत जवाब है: हाँ! "इससे उन्हें पता चलता है कि मालिक कौन है," Teddy Gallel नाम का एक व्यक्ति लिखता है। "बहुत-सी स्त्रियाँ यह भूल जाती हैं कि यह पुरुषों की दुनिया है, और बहुत-से पुरुष, जो परिवार के मालिक के पद से हट गए, पछताते हैं कि काश वे न हटते।" मैं एक ऐसे देश में रहता हूँ जहाँ चौंका देने वाली 50% स्त्रियों के साथ उनके जीवनकाल में बलात्कार या यौन दुर्व्यवहार होगा। हर दुखद कहानी इस बात का उदाहरण है कि किसी पुरुष ने अपने बल का उपयोग स्त्रियों की रक्षा करने के बजाय उनका शिकार करने के लिए किया। पुरुष के शारीरिक बल का कैसा दुरुपयोग!

पुराने नियम के युद्धों और लड़ाइयों में, जब कच्चे शारीरिक बल की आवश्यकता होती थी, तो पुरुषों को ही अग्रिम मोर्चे पर भेजा जाता था।[689] जब उनके प्राण संकट में थे, तब मरियम और शिशु यीशु भरोसा कर सकते थे कि यूसुफ उनकी शारीरिक ढाल बनेगा।[690] वास्तव में, पौलुस अपेक्षा करता है कि सभी पति अपनी

687. 1 पतरस 3:7
688. www.bit.ly/3EI1Tcr
689. व्यवस्थाविवरण 20:7-8, यहोशू 1:14
690. मत्ती 2:13-14

पत्नियों के लिए अपना प्राण देने को तैयार रहें।[691] फिर से कहूँ, मैं कोई सामान्य नियम नहीं गढ़ना चाहता। ऐसे अवसर हो सकते हैं जब डूबती नाव पर एक बूढ़ी स्त्री अंतिम लाइफ़ जैकेट किसी युवक को देना बेहतर समझे, या जब शारीरिक रूप से अधिक बलवान पत्नी अपने विकलांग पति को ख़तरे से शारीरिक रूप से बचाए, या जब राहाब जैसी कोई स्त्री निर्दोष पुरुष भगोड़ों को अपने घर में छिपाकर परमेश्वर पर अपना विश्वास प्रकट करे।[692]

बहुत महत्वपूर्ण बात यह है कि पतरस, जैसा बहुत-से पूरकतावादी विद्वान करते हैं, स्त्री की शारीरिक निर्बलता से भावनात्मक या आत्मिक निर्बलता का निष्कर्ष नहीं निकालता – कलीसिया के पूरे इतिहास में स्त्रियों को ग़लत रूप से पुरुषों की तुलना में भावनात्मक, बौद्धिक, नैतिक और आत्मिक रूप से अधिक निर्बल माना गया है। परन्तु पतरस यह नहीं कह रहा, और निश्चय ही इसका उपयोग स्त्रियों को सेवकाई की भूमिकाओं से बाहर रखने के लिए नहीं किया जाना चाहिए। हाल ही में मैंने हज़ारों कलीसियाओं वाले एक पूरकतावादी आंदोलन के प्रमुख धर्मविज्ञानी का एक तर्क पढ़ा, जिसमें वह ठीक ही कहता है कि पुरुषों की बनावट शारीरिक रक्षक होने की है, और फिर ठीक ही कहता है कि पास्टरों के काम का एक मुख्य भाग झुंड की आत्मिक रक्षा करना है। परन्तु फिर वह ग़लत निष्कर्ष निकालता है कि इसलिए पुरुष कलीसियाओं की अगुवाई के काम के लिए अधिक उपयुक्त हैं।[693] सच तो यह है कि जीवन के ग़ैर-शारीरिक पहलुओं में एक स्त्री भी पुरुष जितनी ही दूसरों की – पुरुषों की भी – रक्षा करने में सक्षम है।

पदानुक्रम के बिना पूरकता को फिर से अपनाना

पूरकतावादी सही जगह से आरम्भ करते हैं, जब वे इस तथ्य की पुष्टि करते हैं कि पुरुष और स्त्री अलग-अलग बनाए गए हैं और उन्हें एक-दूसरे की आवश्यकता है। परन्तु फिर वे पाठ से आगे निकल जाते हैं और दावा करते हैं कि "परमेश्वर द्वारा ठहराए गए" भेद मूल रूप से अधिकार–अधीनता तक ही सिमट जाते हैं। उनके लिए पूरकता पदानुक्रमित है, और इसी कारण वह पूरकता को ही खो देती है, क्योंकि वह कलीसिया में केवल पुरुषों के लिए आरक्षित क्षेत्र बना देती है, जैसे कलीसिया का शासन और मंच से प्रचार, जहाँ केवल पुरुष की आवाज़ सुनाई देती है। ऐसा करके वे स्त्री-पुरुष की उस पूरकता को ही कमज़ोर कर देते हैं, जो परमेश्वर के स्वरूप को कहीं अधिक समग्रता से प्रतिबिम्बित करती।

इस अध्याय में मैंने पूरकता को पूरकतावाद के हाथ से वापस छीन लेने, और उसका विवाह पदानुक्रम से नहीं, बल्कि परस्पर साझेदारी से कराने का प्रयास किया है। परमेश्वर की योजना यह नहीं है कि सामान्यतः पुरुष स्त्रियों की अगुवाई करें, बल्कि यह कि सामान्यतः पुरुष स्त्रियों के साथ मिलकर अगुवाई करें। पवित्रशास्त्र में

691. इफिसियों 5:25 और आगे
692. यहोशू 2
693. इसी प्रकार Owen Strachan "The Grand Design" में तर्क देता है कि आत्मिक अंधकार के विरुद्ध खड़े होने के लिए आवश्यक साहस और आक्रामकता ठीक-ठीक पुरुषों के गुण हैं। इसलिए पुरुषों को अगुवाई करनी चाहिए। परन्तु इसके पक्ष में वह जिन पाठों का उपयोग करता है – 1 कुरिन्थियों 16:13-14, यशायाह 19:16, 1 राजाओं 2:2 और यहेजकेल 22:30 – वे उसके दावे का समर्थन नहीं करते। निश्चय ही शारीरिक लड़ाइयों के लिए शारीरिक बल चाहिए, परन्तु आत्मिक लड़ाइयों के लिए शारीरिक बल की आवश्यकता नहीं होती, और इसलिए स्त्रियाँ भी परमेश्वर के काम के अग्रिम मोर्चों पर साहस के साथ सेवा कर सकती हैं।

ऐसा कुछ नहीं है जो बौद्धिक या अगुवाई की क्षमताओं को किसी एक लिंग से जोड़े। अधिक से अधिक हम इतना कह सकते हैं कि औसतन स्त्रियाँ एक तरह से सोचेंगी या अगुवाई करेंगी और पुरुष दूसरी तरह से।

यदि हम पुरुषों और स्त्रियों के मस्तिष्क की भिन्न संरचनाओं को लें, या इस अध्याय में पहले दी गई तालिका के दस बिंदुओं को, जिनमें स्त्रियाँ औसतन अधिक करुणामय और सृजनशील हैं, और पुरुष औसतन अधिक दृढ़ और विश्लेषणात्मक, तो यदि हम अपनी ख़ूबियों को एक साथ ले आएँ, क्या हमारे विवाह, हमारी सेवकाइयाँ और हमारे कार्यस्थल कहीं अधिक समृद्ध नहीं हो जाएँगे? जो कुछ बनने के लिए हमें रचा गया है, वह सब बनने के लिए हमें एक-दूसरे की आवश्यकता है। यदि स्त्रियाँ और पुरुष औसतन अलग ढंग से बने हैं, तो स्त्रियों और पुरुषों की एक अगुवाई-टीम औसतन जिस भी संस्था या समुदाय की अगुवाई करे, उसे कहीं अधिक संतुलित, सर्वांगीण अगुवाई देगी।

यह सचमुच दुख की बात है कि इस विषय में समाज कलीसिया से आगे है, परन्तु अगुवाई के सर्वोच्च स्तरों पर स्त्रियों को शामिल करने का लाभ – यद्यपि बहुत-से देशों में इसे अपनाने में देर हुई है – उल्लेखनीय परिणाम दे रहा है। एक व्यापक अध्ययन में[694] यह दिखाया गया है कि जब कंपनियों की वरिष्ठ प्रबंधन टीमें केवल पुरुषों से बनी होती हैं, तो वे 58% बार अच्छे निर्णय लेती हैं। परन्तु यदि उन टीमों में स्त्रियों को जोड़ दिया जाए, तो अच्छे निर्णय लेने की संभावना उछलकर 73% हो जाती है![695]

जब हम एक टाँग पर प्लास्टर चढ़ाकर दौड़ने का प्रयास करते हैं, तो हम लँगड़ाते और फुदकते हैं। दो स्वस्थ टाँगों के साथ हम कहीं लम्बे डग भर सकते हैं और कहीं अधिक दूरी तय कर सकते हैं। पुरुषों और स्त्रियों के अनूठे, एक-दूसरे को पूरा करने वाले योगदानों के साथ भी ऐसा ही है। परमेश्वर द्वारा अपने स्वरूप को धारण करने वाले नर और नारी की सृष्टि का वर्णन करने के बाद, उत्पत्ति 1 का कथावाचक कहता है कि परमेश्वर ने "जो कुछ बनाया था, सब को देखा, तो क्या देखा, कि वह बहुत ही अच्छा है।" बहुत पहले की बात नहीं, जब पश्चिम में केवल एक टाँग का उपयोग करना शायद समझदारी लगता था (क्योंकि दूसरी टाँग को तो घटिया माना जाता था: अतार्किकता, अस्थिरता और भय की ओर झुकी हुई)। अब जबकि हमारी संस्कृति ने इसके विपरीत जान लिया है, और पवित्रशास्त्र का मूल अर्थ और अभिप्राय फिर से प्राप्त हो गया है, हम अपनी दोनों टाँगों से दौड़ सकते हैं और हमें दौड़ना भी चाहिए।

जैसे-जैसे हम और अधिक साझेदारी में काम करेंगे, हमारे सामने आशा रखने के लिए बहुत कुछ है, परन्तु यह तथ्य कि हम भिन्न हैं, इसका अर्थ है कि राह हमेशा आसान नहीं होगी। विविधता अधिक वृद्धि और उत्पादकता की ओर ले जाती है, परन्तु वह अधिक जटिलता और ग़लतफ़हमी की ओर भी ले जाती है। हमारे पुराने पूर्वाग्रह विशेष रूप से हठीले होते हैं। विवाह इतना कठिन हो सकता है, इसका कम से कम एक कारण यही है। फिर भी, कठिन होना ग़लत होना नहीं है – बहुत बार यह ठीक वही अवसर होता है जिसकी हमें मसीह के समान बनने में बढ़ने के लिए आवश्यकता है।

आख़िरकार, बाइबल द्वारा बताया गया जीवन का लक्ष्य अधिक पुरुषोचित या अधिक स्त्रियोचित बनना नहीं है, बल्कि यीशु के समान बनना है, जो सिंह भी हैं और मेम्ना भी।

694. www.bit.ly/3BKuImw

695. यदि टीम में लिंग, आयु, पालन-पोषण के स्थान और उच्च शिक्षा के स्थान की विविधता हो, तो यह संख्या बढ़कर 87% हो जाती है।



15

हव्वा को चारदीवारी से मुक्त करना

"स्त्रियों के पारम्परिक काम-धंधे छीन लेना और फिर इस बात की शिकायत करना कि वह नए काम ढूँढ़ती है, सरासर मूर्खता है। हर स्त्री एक मनुष्य है – यह बात जितनी बार दोहराई जाए, कम है – और मनुष्य को, चाहे वह पुरुष हो या स्त्री, कोई न कोई काम-धंधा चाहिए, नहीं तो वह संसार के लिए एक मुसीबत बन जाएगा।" Dorothy Sayers[696]

हाल ही में, जब एक प्रमुख बाइबल-शिक्षक से पूछा गया कि वह सबसे लोकप्रिय सदर्न बैपटिस्ट महिला प्रचारक से कौन-से दो शब्द कहेगा, तो उसने उत्तर दिया, "घर जाओ।" इसमें वह केवल Beth Moore का व्यक्तिगत रूप से अपमान नहीं कर रहा था, बल्कि यह उसके पूरकतावादी धर्मविज्ञान के अनुरूप सलाह भी थी।

1998 में, वर्षों की चर्चा के बाद, सदर्न बैपटिस्टों ने स्त्रियों को घर तक सीमित रखने को उनकी परमेश्वर द्वारा ठहराई गई नियति के रूप में औपचारिक स्वीकृति दे दी: "पत्नी ... की परमेश्वर द्वारा दी गई ज़िम्मेदारी है कि वह अपने पति का आदर करे और घर-गृहस्थी के प्रबंध और अगली पीढ़ी के पालन-पोषण में उसकी सहायक के रूप में सेवा करे।"[697] पूरकतावादियों के अनुसार आदम समाज, कलीसिया और घर में अगुवे के रूप में ऊँची उड़ान भर सकता है। परन्तु हव्वा को अपनी पूरी उड़ान घर के भीतर ही भरनी है – और यहाँ भी वह केवल आदम की, "घर के मुखिया" की, सहायता करती है, घर सँभालकर और उसके बच्चों की देखभाल करके। जैसा हम पहले देख चुके हैं, इस प्रकार का पुरुष-अहंकार कोई नई बात नहीं है। पाँचवीं शताब्दी में एक कलीसियाई पिता (चर्च फ़ादर) ने अपने साथी पतियों को यह विचार इस प्रकार समझाया:

पत्नी का केवल एक ही कर्तव्य है: जो कुछ हमने इकट्ठा किया है उसे सुरक्षित रखना, हमारी आय की रक्षा करना, हमारे घराने की देखभाल करना। ... हमारा जीवन कार्य के दो क्षेत्रों से बना है, सार्वजनिक और निजी। जब परमेश्वर ने इन दोनों को बाँटा, तो उन्होंने घराने का प्रबंध स्त्री को सौंपा ... वह सार्वजनिक सभा में अपनी राय नहीं दे सकती, परन्तु घराने में अपनी राय दे सकती है।[698]

696. Dorothy Sayers, Are Women Human? पृ. 32.
697. Barry Hankins, Uneasy in Babylon, पृ. 214–215. उद्धृत: Barr, अध्याय 1.
698. St John Chrysostom, On Marriage and Family Life

इस प्रकार की शिक्षा समाज में, कलीसिया में, और – कुछ कम मात्रा में – घर में भी स्त्री के पूरे योगदान को सिकोड़ देती है। निःसंदेह माताओं (और पिताओं) को अपने बच्चों से पूरे मन से प्रेम करना चाहिए और एक सुरक्षित घर में उनका पालन-पोषण करना चाहिए, परन्तु अविवाहित स्त्रियों का क्या? या उनका जिनके बच्चे नहीं हैं? और एक माँ के जीवन के अनेक दशकों में भी, बच्चों के पालन-पोषण के व्यस्त वर्ष (यदि वह पूरा समय इसी में लगाना चुनती है) सदा नहीं रहते। घरेलू भूमिका का महिमामंडन करके पूरकतावाद स्त्री के जीवन के हर दूसरे चरण की हर दूसरी भूमिका के महत्व को घटा देता है।

Sarah Bessey बताती है कि वह एक ऐसी कलीसिया में बड़ी हुई जहाँ उसे इस बारे में एक विस्तृत धर्मविज्ञान सिखाया गया कि वह किन-किन तरीकों से यीशु की सेवा कर सकती है, और इसलिए वह "छुटकारा लाने वाले मेल-मिलाप और न्याय की खोज से भरे जीवन" की लालसा रखती थी। परन्तु जब वह अमेरिका के दक्षिणी भाग में जाकर बसी, जहाँ स्त्रियों की सेवकाई मुख्य रूप से घर पर रहकर बच्चे पालने पर केंद्रित थी, तो उसने "यीशु के पीछे चलने की ऐसी समझ का अनुभव किया जो दिन-ब-दिन छोटी होती जा रही थी।"[699] वास्तव में, स्त्रियों को घर तक सीमित करने का यह सिद्धांत, जो स्त्री में वह सब नहीं देख पाता जो परमेश्वर उसमें देखते हैं, बहुत-सी स्त्रियों को समय के साथ बड़ा, विस्तृत जीवन नहीं, बल्कि छोटा, बँधा हुआ और अधूरा जीवन जीने पर मजबूर करता है।

माताओं की प्रशंसा में

कृपया मेरी बातों में वह मत सुनिए जो मैं नहीं कह रहा। यह कहकर कि स्त्रियों को एक ऐसे सिद्धांत ने छोटा कर दिया है जो कहता है कि उनका मुख्य योगदान मातृत्व में ही है, मैं निश्चय ही माताओं की भूमिका को भी छोटा नहीं करना चाहता। वे परिवार और स्वस्थ समाजों की नींव हैं। हमें इस भूमिका का सम्मान करना चाहिए और इसे सर्वोच्च आदर देना चाहिए। Julie जिस प्रकार हमारे पाँच बच्चों के लिए अपना जीवन उँडेल देती है, उसके लिए मैं लगातार नम्र और कृतज्ञ होता हूँ। जीवन में उसकी सारी भूमिकाओं में से यही वह भूमिका है जिसे वह सबसे अधिक मूल्यवान मानती है, और हमारे बच्चे और यह संसार इससे अधिक समृद्ध हैं।

फिर भी, डैनवर्स वक्तव्य, जो माताओं को मुख्य रूप से घर और बच्चों पर ध्यान देने के लिए बुलाता है, बाइबल की उपज कम और संस्कृति की उपज अधिक है। बहुत बार और बहुत आसानी से कलीसिया ने पारम्परिक बात – कमाने वाला पिता और घर सँभालने वाली माँ – को बाइबलीय बात समझ लिया है। पारम्परिक परिवार हाल का एक सांस्कृतिक आविष्कार है। केवल औद्योगिक क्रांति के बाद से ही पिता बड़ी संख्या में काम करने के लिए घर से बाहर जाने लगे। यह विशेष रूप से द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद की आर्थिक तेज़ी के समय में प्रचलित हुआ, जब एक पिता किसी कारख़ाने की असेंबली लाइन पर इतना कमा सकता था कि उसके पूरे परिवार का ख़र्च चल जाए। सबसे संपन्न क्षेत्रों को छोड़कर, ऐसा परिवार वैश्विक आर्थिक परिदृश्य से लुप्त हो चुका है। वास्तव में, मेरे अपने देश में, जहाँ 60% बच्चों का पालन-पोषण अकेली माताएँ

699. Sarah Bessey, Jesus Feminist, अध्याय 3.

करती हैं, और जहाँ इससे भी अधिक प्रतिशत बच्चों को ऐसी माताएँ पालती हैं जिन्हें घर के बाहर काम ढूँढ़ना पड़ता है, यह अत्यधिक ज़ोर और अपेक्षा कि भक्त माताओं को आदर्श रूप से पूरी तरह घरेलू भूमिका में ही लगे रहना चाहिए, पुरानी पड़ चुकी है, बल्कि क्रूर भी है। संघर्ष कर रही माताओं को किसी अतिरिक्त अपराध-बोध की सचमुच ज़रूरत नहीं है। इसके अलावा, नीतिवचन 31 की माँ भी "किसी खेत के विषय में सोच विचार करती है और उसे मोल ले लेती है" और इस धन से "अपने घराने को भोजन खिलाती है।"[700]

घर में रहने की आज्ञा?

Köstenberger स्त्रियों को घर तक सीमित रखने के पूरकतावादी विचार का तथाकथित "बाइबलीय आधार" प्रस्तुत करता है:

तीतुस को लिखी पौलुस की पत्री में स्त्रियों को "घर में काम करनेवाली" होने और "अपने पति और बच्चों से प्रीति रखने" के लिए बुलाया गया है। स्त्रियों के जीवन का आनन्द और काम सबसे अच्छी तरह तब जिया जाएगा जब वह स्वयं को मुख्य रूप से अपने परिवार और अपने घर पर केंद्रित करे। साथ ही, पूरकतावाद यह नहीं कहता कि स्त्रियाँ कभी भी घर के बाहर काम न करें। [फिर भी] परमेश्वर ने स्त्रियों को परिवार और घर पर केंद्रित होने के लिए रचा है, और इस योजना से पीछे हटने की कोई आवश्यकता नहीं है, सिवाय विशेष परिस्थितियों के, जैसे पति की बीमारी, आदि।[701]

दूसरे शब्दों में, स्त्रियाँ घर के बाहर काम कर तो सकती हैं, परन्तु यदि संभव हो, तो उन्हें नहीं करना चाहिए। क्या तीतुस 1 सचमुच यह सिखाता है? Köstenberger उस यूनानी-रोमी संदर्भ पर विचार नहीं करता जिसमें यह पत्री उस कलीसिया को लिखी गई थी। पाठ को उसके संदर्भ से अलग करके वह हमें पाठ नहीं, बल्कि एक बहाना थमा देता है।

प्लेटो (Plato) ने कहा था कि पुरुष को "राज्य का प्रबंध करना" चाहिए (अर्थात सार्वजनिक क्षेत्र), और स्त्री को "अपने घर को व्यवस्थित रखना, जो कुछ घर के भीतर है उसे सँभालना, और अपने पति की आज्ञा मानना" चाहिए।[702] फ़िलो (Philo) तो और भी अधिक प्रतिबंध लगाता था:

स्त्री को दूसरों के मामलों में टाँग अड़ाने वाली नहीं होना चाहिए, जो अपने घर की चिन्ताओं के बाहर की बातों में दख़ल दे, बल्कि उसे एकांत जीवन खोजना चाहिए। उसे गलियों में आवारा की तरह दूसरे पुरुषों की आँखों के सामने अपना प्रदर्शन नहीं करना चाहिए, सिवाय तब जब उसे मंदिर जाना हो, और तब भी उसे ध्यान रखना चाहिए कि वह तब न जाए जब बाज़ार भरा हो, बल्कि तब जाए जब अधिकतर लोग घर लौट चुके हों।[703]

700. नीतिवचन 31:15-16
701. www.bit.ly/3SHnecQ
702. Plato, Meno, खंड 71e–f
703. Philo. स्रोत: www.bit.ly/3kquueP

ऐसे ही संसार में पौलुस ने कलीसिया की स्त्रियों से आग्रह किया कि वे "घर में काम करनेवाली" हों।[704] प्रसंगवश, बाइबल में इस प्रकार का यह एकमात्र निर्देश है। पौलुस को क्रेते के लोगों के बीच कलीसिया की साख बनाए रखने की चिन्ता थी, जहाँ "भली" स्त्रियों से घर में रहने की अपेक्षा की जाती थी। पौलुस तुरन्त समझाता है कि ऐसा न करने से उन देखने वालों की दृष्टि में, जो इस नवजात मसीही समूह के बारे में अपनी राय बना रहे थे, "परमेश्वर के वचन की निन्दा" होगी।[705] एक अन्य स्थान पर पौलुस कहता है कि घर पर रहने से यह धारणा नहीं बनेगी कि मसीही स्त्रियाँ "आलसी होकर घर घर फिरती हैं" और "बकबक करती और औरों के काम में हाथ डालती हैं और अनुचित बातें बोलती हैं।"[706] "घर के कामों में व्यस्त रहने" का यह निर्देश कोई सार्वभौमिक आदर्श या आदेश नहीं है। यह सुसमाचार की भलाई के लिए एक विशेष परिस्थिति की बुद्धिमानी है।[707]

दूसरा प्रमाण-पद, जिसे पूरकतावादी स्त्रियों को (पुरुषों को नहीं) घर और बच्चों के पालन-पोषण के इर्द-गिर्द केंद्रित करने के लिए प्रस्तुत करते हैं, 1 तीमुथियुस 5 है। एक बार फिर परिस्थिति के संदर्भ की अनदेखी की जाती है। निःसंदेह उस अध्याय में जिन कंगाल विधवाओं की बात है, जो कलीसिया की दानशीलता पर निर्भर थीं, उन्हें अपना समय और शक्ति अपने बच्चों और नाती-पोतों की देखभाल में लगानी चाहिए।[708] और जो युवा विधवाएँ फिर से विवाह करती हैं, और इसलिए जिनका भरण-पोषण उनका paterfamilias (घर का मुखिया) करता है, उन्हें बदले में अपने घराने का – दासों और बच्चों सहित – प्रबंध करना चाहिए।[709] इसके अतिरिक्त, पूरकतावादी इस संभावना की अनदेखी करते हैं कि कुछ स्त्रियाँ आय कमा सकती हैं: पौलुस हर उस व्यक्ति से, "किसी से भी" (इसमें स्त्रियाँ भी शामिल हैं), जो काम कर सकता है, काम करने को कहता है, ताकि वह "अपनों की चिन्ता" (उनका भरण-पोषण) कर सके।[710]

सारांश में, तीतुस 1 और 1 तीमुथियुस 5 निश्चय ही इतने ज़ोर से कहे गए और सब पर एक-सा लागू किए गए सिद्धांत के लिए पर्याप्त बाइबलीय आधार नहीं हैं। हर जगह की सभी स्त्रियों को यह आदेश नहीं दिया गया है कि वे अपना जीवन मुख्य रूप से घर के इर्द-गिर्द ही केंद्रित करें।

704. तीतुस 2:5। NIV का अनुवाद "busy at home" (घर के कामों में व्यस्त) इस अर्थ को चूक जाता है कि स्त्रियाँ केवल घर के काम और बच्चों के पालन-पोषण से कहीं अधिक कर सकती थीं। यूनानी-रोमी घर ही वह स्थान था जहाँ अधिकांश आर्थिक रूप से उत्पादक काम किया जा सकता था।
705. तीतुस 2:5
706. 1 तीमुथियुस 5:13
707. यह सच है कि उच्च वर्ग की बहुत थोड़ी-सी स्त्रियाँ संरक्षिकाओं, व्यवसाय-स्वामिनियों और सार्वजनिक अधिकारियों के रूप में सार्वजनिक भूमिकाओं में सक्रिय थीं। परन्तु इस प्रकार का व्यवहार केवल कुलीन स्त्रियों के लिए स्वीकार्य था – अधिकांश स्त्रियों की, यदि वे घर के बाहर पुरुषों जैसा व्यवहार करतीं, आलोचना होती। उदाहरण के लिए, आरम्भिक कलीसियाओं में ऐसी धनी स्त्रियाँ इतनी दुर्लभ थीं कि जब उनमें से किसी का मन फिरा, तो लूका ने उसे उल्लेख के योग्य समझा (प्रेरितों के काम 13:50, 17:12, 34)।
708. 1 तीमुथियुस 5:3-4
709. 1 तीमुथियुस 5:14
710. 1 तीमुथियुस 5:8

काम करने वाली स्त्रियाँ

संसार की अधिकांश माताओं को न केवल काम करना पड़ता है, बल्कि बहुत-सी काम करना चाहती भी हैं। औद्योगिक युग से पहले की संस्कृतियों में, जैसे आज भी ग्रामीण अफ़्रीका के बड़े भाग में, स्त्रियाँ कौन-सा काम कर सकती थीं, यह इस बात से सीमित था कि उन्हें श्रमिक पैदा करने के लिए बहुत-से बच्चे जनने होते थे। अपने जीवन के एक बड़े भाग में ये स्त्रियाँ प्रायः गर्भवती होती थीं या छोटे बच्चों को दूध पिला रही होती थीं, जिसका अर्थ था कि वे न तो भारी काम कर सकती थीं, न घर से दूर यात्रा कर सकती थीं। घर के पास वे जो काम कर सकती थीं, उनमें कपड़े बनाना, और छोटे बच्चों, बीमारों और बूढ़ों को भोजन खिलाना और उनकी देखभाल करना शामिल था। पुरुष, अधिक बलवान होने और घर छोड़कर जाने के लिए स्वतंत्र होने के कारण, बाक़ी हर प्रकार का काम कर सकते थे, जिसमें समाज में सार्वजनिक भूमिकाएँ निभाना भी शामिल था।[711]

1971 के अपने प्रसिद्ध निबंध Are Women Human? (क्या स्त्रियाँ मनुष्य हैं?) में Dorothy Sayers उन कमाई वाले कामों का उल्लेख करती है जो औद्योगिक युग से पहले स्त्रियाँ कर सकती थीं, जैसे कताई, रँगाई, बुनाई, भोजन-व्यवस्था, शराब बनाना, खाद्य-संरक्षण, अचार डालना और जागीर का प्रबंध। फिर आती है औद्योगिक क्रांति और ...

यह कहना तो बहुत अच्छा लगता है कि स्त्री का स्थान घर में है – परन्तु आधुनिक सभ्यता ने ये सारे सुखद और लाभदायक काम घर से, जहाँ स्त्रियाँ उन्हें सँभालती थीं, बाहर निकाल लिए हैं और उन्हें बड़े उद्योगों को सौंप दिया है, जिनका संचालन और संगठन बड़े कारख़ानों के शीर्ष पर बैठे पुरुष करते हैं। स्त्रियों के पारम्परिक काम-धंधे छीन लेना और फिर इस बात की शिकायत करना कि वह नए काम ढूँढ़ती है, सरासर मूर्खता है। हर स्त्री एक मनुष्य है – यह बात जितनी बार दोहराई जाए, कम है – और मनुष्य को कोई न कोई काम-धंधा चाहिए। ... काम मुख्य रूप से वह चीज़ नहीं है जिसे कोई जीने के लिए करता है, बल्कि वह चीज़ है जिसे करने के लिए कोई जीता है। ... हर रचने वाला और हर काम करने वाला अपने पेशे या व्यापार में परमेश्वर की सेवा करने के लिए बुलाया गया है – उसके बाहर नहीं।[712]

इस कथन में Sayers उस पूरकतावादी ग़लत व्याख्या को उजागर करती है जिसके अनुसार "घर में रहने" का अर्थ यह था कि प्राचीन क्रेते या इफिसुस की भक्त स्त्री रोज़ी-रोटी नहीं कमाती थी: पहली शताब्दी में "घर" ही वह स्थान था जहाँ स्त्रियाँ आय के लिए काम करती थीं – "कताई, रँगाई, बुनाई, भोजन-व्यवस्था, शराब बनाना, खाद्य-संरक्षण, अचार डालना और जागीर का प्रबंध।" इसके बावजूद, बाइबल के समय में भी कुछ स्त्रियाँ घर से दूर के कामों में लगी थीं: दबोरा एक न्यायी और सैन्य रणनीतिकार थी; एस्तेर एक रानी और क़ानून बनाने वाली।

711. Carrie Miles, The Redemption of Love: Rescuing Marriage and Sexuality from the Economics of a Fallen World, पृ. 43-46. उद्धृत: Witt, Icons of Christ, अध्याय 7.
712. Dorothy Sayers, Are Women Human? पृ. 32; और Dorothy Sayers, Why Work? (स्रोत: www.bit.ly/31wL85K)

नए नियम में हम उद्यमी लुदिया से मिलते हैं, जो थुआतीरा की थी – तुर्की का एक नगर जो बैंजनी रंग के उत्पादन और बिक्री के लिए प्रसिद्ध था। वहाँ वह रंग ख़रीदती थी और उसे यूनान में अपने दूसरे घर तक ले जाती थी, जो संभवतः उसके व्यवसाय का स्थान भी था। एक स्वप्न में पौलुस ने "मकिदुनिया के एक पुरुष" को अपने को पुकारते सुना। कैसा आश्चर्य कि यह "पुरुष" वास्तव में लुदिया निकली, एक स्त्री, और वह भी अविवाहित! और कोई साधारण स्त्री नहीं: यूरोप में पौलुस के द्वारा विश्वास में आने वाली वह पहली व्यक्ति थी। सुसमाचार के लिए अपना हृदय खोलने के बाद उसने अपना घर और अपने व्यवसाय का स्थान भी खोल दिया, जो अब तीसरे काम में भी आने लगा – नगर की नई कलीसिया के मिलने के स्थान के रूप में।[713] हर स्त्री, विशेषकर अविवाहित स्त्रियाँ, लुदिया की कुछ कर दिखाने वाली मनोवृत्ति, पेशेवर सफलता और सेवकाई की फलवन्तता से प्रेरणा पा सकती हैं (और किसी भी ऐसी पूरकतावादी धारणा से दबने से इन्कार कर सकती हैं कि स्त्रियों के लिए सचमुच उत्तम उद्देश्य विवाह ही है)।

फिर प्रेरितों के काम की पुस्तक में हम तबीता, या दोरकास, से मिलते हैं, जो इस काम में निपुण थी कि धन जुटाकर याफा नगर की विधवाओं के लिए कपड़े बना सके। जब पतरस ने उसे मृतकों में से जिलाया, तो इस आश्चर्यकर्म का आनन्द मनाने सबसे पहले वही विधवाएँ आईं जिन्हें उसने कुरते और वस्त्र पहनाए थे।[714] उसके उदाहरण ने – जो भले सामरी के बाद दूसरे स्थान पर ही है – कलीसियाओं को सबसे असहाय लोगों की ज़रूरतें पूरी करने, और साथ ही धर्मार्थ संस्थाएँ, राहत-कार्य और ग़ैर-लाभकारी संगठन आरम्भ करने की प्रेरणा दी है।

इन सभी बाइबलीय स्त्रियों ने अपने घर के बाहर अपने जीवन से बदलाव लाया। और फिर भी, आँकड़ों के अनुसार अमेरिका के सुसमाचारवादी (इवैन्जेलिकल) मसीही स्त्रियों के घर के बाहर काम करने के विषय में "सबसे अधिक हिचकिचाने वाला" समूह हैं[715] और किसी स्त्री के सीईओ या राष्ट्रपति होने से भी सबसे कम सहज हैं। यह व्यापक घबराहट निःसंदेह बहुत-से पूरकतावादियों में फैली उस भावना के कारण है जो मानती है कि पुरुष के अधिकार का कारण यह है कि आदम हव्वा से पहले रचा गया। यदि पुरुष–स्त्री पदानुक्रम सचमुच सृष्टि का सिद्धांत है, तो उसे केवल कलीसिया में लागू करके समाज में लागू न करना संभव नहीं – इसी कारण जीवन के किसी भी क्षेत्र में किसी स्त्री की अगुवाई स्वीकार करने में सुसमाचारवादियों में इतनी व्यापक हिचकिचाहट है।

परन्तु अद्भुत बात यह है कि पौलुस तक मानो यह सूचना पहुँची ही नहीं! यद्यपि इस "सृष्टि की व्यवस्था" का प्रतिपादक उसी को माना जाता है, फिर भी वह इससे बेख़बर दिखाई देता है, जब वह दासों से – जिनमें से आधे पुरुष थे – कहता है कि वे अपने स्वामियों के अधीन रहें,[716] जबकि उनमें से बहुत-से स्वामी स्त्रियाँ थीं, अर्थात materfamilias (घर की स्वामिनी)। विधवाओं के पास पूरा अधिकार होता था, जबकि पत्नियों के पास अपने दासों पर सौंपा हुआ अधिकार होता था। इसी प्रकार, पौलुस को Piper की इस चिन्ता का भी

713. प्रेरितों के काम 16:11-16, 40
714. प्रेरितों के काम 9:32-43
715. 2017 के एक Barna अध्ययन में पाया गया कि घर के बाहर स्त्रियों के काम का समर्थन करने में सुसमाचारवादी (इवैन्जेलिकल) "सबसे अधिक हिचकिचाने वाला" समूह हैं: केवल 52% "भविष्य में कार्यबल में पुरुषों से अधिक स्त्रियों के होने की संभावना से सहज हैं" (सामान्य अमेरिकी जनसंख्या से 20% कम)। स्रोत: www.bit.ly/3CNBtoX
716. इफिसियों 6:9, कुलुस्सियों 4:1

कुछ पता नहीं लगता कि "जब किसी पुरुष पर स्त्री का प्रभाव व्यक्तिगत और निर्देशात्मक हो, तो वह ... परमेश्वर की रची हुई व्यवस्था का उल्लंघन करेगा।" यह बात कि पौलुस अपेक्षा करता था कि एक materfamilias पुरुष दासों पर वैसा ही अधिकार चलाए जैसा पुरुष स्वामी चलाते थे, इस बात का प्रमाण है कि उसे इसमें कोई आपत्ति न होती कि पुरुष अपनी स्त्री मालिकों के अधीन रहें, जैसे बाराक कभी दबोरा के अधीन रहा था।

इन सूक्ष्म परन्तु निर्विवाद बाधाओं के साथ-साथ, काम करने वाली स्त्रियों को लैंगिक वेतन अंतर (Gender Wage Gap) के अपमान और अन्याय का भी सामना करना पड़ा है। यद्यपि औद्योगिक क्रांति बहुत-सी स्त्रियों को बाज़ार में ले आई, जहाँ वे घर के बाहर आय कमा सकती थीं, उसने इन्हीं स्त्रियों के अवमूल्यन को भी पक्का कर दिया, क्योंकि उन्हें उनके पुरुष सहकर्मियों से कम वेतन दिया जाता था। 1833 में एक ब्रिटिश कारख़ाना-आयुक्त James Mitchell ने इसका औचित्य बताया: "उसका कम वेतन उसे अपने बच्चों की देखभाल छोड़ने के लिए नहीं ललचाता। इस प्रकार प्रकृति यह प्रबंध करती है कि उसका उद्देश्य विफल न हो।"[717]

बहुत-सी कलीसियाओं में पूरकतावाद इस अन्याय को एक तरह से उस ढंग के द्वारा बनाए रखता है जिससे सेवकाई के प्रमुख कर्मचारियों की नियुक्ति होती है। पुरुषों को उनके काम के "शासकीय" स्वरूप के लिए आर्थिक रूप से पुरस्कृत किया जाता है, जबकि स्त्रियों को, जिनके ऊपर अगुवाई की उतनी ही भारी ज़िम्मेदारियाँ हो सकती हैं, प्रायः कम वेतन दिया जाता है, क्योंकि धर्मविज्ञानीय विश्वास के कारण उनके काम को अधिकारपूर्ण कम और सहायक अधिक समझा जाता है।

यीशु और पौलुस घरेलू भूमिका की कभी प्रशंसा नहीं करते

दिलचस्प बात यह है कि यीशु और पौलुस ही वे दो बाइबलीय व्यक्ति हैं जो स्त्रियों को घर तक सीमित करने पर आज के पूरकतावादी ज़ोर को सबसे अधिक चुनौती देते हैं। उदाहरण के लिए, देखिए कि यीशु किस प्रकार स्त्री की पहचान को माँ होने तक सीमित करने की धारणा को उलट देते हैं। उस संस्कृति में स्त्री का मुख्य उद्देश्य बच्चे जनना था, और वह भी अधिमानतः बेटे। बाँझ कोख को परमेश्वर की अप्रसन्नता का चिह्न माना जाता था। परन्तु यीशु इससे सहमत नहीं थे। हमें बताया गया है कि एक बार, जब यीशु उपदेश दे रहे थे, "भीड़ में से किसी स्त्री ने ऊँचे शब्द से उस से कहा, 'धन्य है वह गर्भ जिसमें तू रहा और वे स्तन जो तू ने चूसे।'" मरियम की ओर से यह प्रशंसा स्वीकार करने के बजाय उन्होंने उत्तर दिया, "धन्य तो वे हैं जो परमेश्वर का वचन सुनते और मानते हैं।"[718] यीशु की यह प्रतीत होने वाली अशिष्टता क्यों? क्योंकि वे स्त्री के मुख्य मूल्य का केंद्र उसकी घरेलू और बच्चे पालने की भूमिका से हटाकर परमेश्वर के साथ उसके संबंध पर ले जाना चाहते थे। यीशु के अनुसार, किसी व्यक्ति के अस्तित्व का केंद्र न तो जीवनसाथी से उसका संबंध है, न बच्चे से। यीशु का चेला होना ही केंद्र है। सबसे अधिक महत्व संतान उत्पन्न करने का नहीं, बल्कि परमेश्वर के वचन के द्वारा नई सृष्टि बनने का है। बेटा या बेटी पाना नहीं, बल्कि परमेश्वर का बेटा या बेटी होना – यही जीवन का सच्चा पुरस्कार है।

717. Beth Allison Barr, The Making of Biblical Womanhood, पृ. 164
718. लूका 11:27-28

स्वयं एक पारिवारिक व्यक्ति होने के नाते, अपने परिवार के लिए अपना जीवन उँडेलने के विषय में मुझे जितनी भी प्रेरणा मिल सके, मैं उसकी क़द्र करता हूँ – परन्तु हमें मानना होगा कि यीशु बार-बार उस मूर्ति को चुनौती देते थे जिसमें हम अपने जीवन का बहुत बड़ा भाग अपने जैविक परिवारों पर ही केंद्रित कर देते हैं। यद्यपि वे स्वयं प्रिय पुत्र हैं, फिर भी वे कहते हैं, "जो माता या पिता को मुझ से अधिक प्रिय जानता है, वह मेरे योग्य नहीं; और जो बेटा या बेटी को मुझ से अधिक प्रिय जानता है, वह मेरे योग्य नहीं।"[719]

इसी तरह पौलुस कहता है कि विवाहित होना परमेश्वर की सेवा की उससे भी ऊँची प्राथमिकता में बाधा बन सकता है:

अविवाहित स्त्री या कुँवारी प्रभु की बातों की चिन्ता में रहती है: उसका लक्ष्य यह है कि वह देह और आत्मा दोनों में प्रभु को समर्पित रहे। परन्तु विवाहित स्त्री संसार की बातों की चिन्ता में रहती है – कि अपने पति को कैसे प्रसन्न रखे। यह बात मैं तुम्हारे ही लाभ के लिये कहता हूँ, न कि तुम पर रोक लगाने के लिये, वरन् इसलिये कि तुम उचित रीति से, अविभाजित मन से प्रभु की भक्ति में जीवन बिताओ।[720]

पौलुस का यह कथन निरपेक्ष नहीं है, क्योंकि वह उस बात का उल्लेख करता है जिसे वह "वर्तमान संकट" कहता है,[721] परन्तु उसकी भावनाओं को देखते हुए मुझे यह अत्यंत असंभव लगता है कि वह डैनवर्स वक्तव्य पर अपनी स्वीकृति की मुहर लगाता – उतना ही असंभव, जितना यह कि यीशु लगाते। उस वक्तव्य को उसी रूप में देखा जाना चाहिए जो वह है: पवित्रशास्त्र की शिक्षा का हाल ही में गढ़े गए पारम्परिक परिवार की मूर्ति के साथ विवाह कराने का एक मिश्रणवादी प्रयास।

जब मैं पौलुस के विस्तृत लेखों को छानता हूँ, तो मुझे किसी माँ की केवल एक ही सराहना मिलती है। रोमियों 16 में वह रूफुस की माता को नमस्कार कहता है, "जो [उसके लिए] भी माता रही है।" मैं भी परमेश्वर की स्तुति करता हूँ उन माताओं के लिए जिन्होंने कलीसिया में समय-समय पर मुझे अपने पंखों तले ले लिया है! परन्तु यहाँ भी पौलुस उसकी सराहना एक जैविक माँ के रूप में नहीं करता, बल्कि ऐसी स्त्री के रूप में करता है जो परमेश्वर के लोगों की ममतापूर्ण रीति से सेवा करती है।

वे पटकथाएँ जो आत्मा ने कभी नहीं लिखीं

यद्यपि किसी भी संस्कृति का क्रमिक विकास मसीही विश्वास के सामने नई चुनौतियाँ खड़ी कर सकता है, फिर भी समकालीन पश्चिमी समाज की हाल की ये प्रवृत्तियाँ – कि कार्यस्थल पर अधिक स्त्रियाँ दिखाई देती हैं, और अधिक पिता बच्चों के पालन-पोषण में अधिक प्रत्यक्ष रूप से जुड़ते हैं – मेरे विचार में किसी बुरी चीज़ के रूप में ठुकराई नहीं जानी चाहिए।

न तो प्राचीन यूनानी-रोमी घराना, और न ही 1950 के दशक का पारम्परिक परिवार ऐसी पटकथाएँ हैं जिन्हें आत्मा ने सभी स्त्रियों और सभी पुरुषों के लिए लिखा हो। आत्मा जिस प्रकार सभी स्त्रियों को गृहिणी और बच्चे पालने वाली बनने के लिए मार्गदर्शन नहीं देते, उसी प्रकार वे सभी पुरुषों को कमाने वाले और निर्णय लेने वाले बनने के लिए भी मार्गदर्शन नहीं देते। पुरुष और स्त्रियाँ इनमें से कुछ या सभी भूमिकाएँ निभा सकते

719. मत्ती 10:37-38
720. 1 कुरिन्थियों 7:34-35
721. 1 कुरिन्थियों 7:26

हैं, परन्तु आइए, जैसा पूरकतावादी करते हैं, हम पारम्परिक परिवार का आत्मिक बुलाहट से विवाह न कराएँ। इससे केवल स्त्रियों का पूरा योगदान दब जाता है, और साथ ही कलीसिया और समाज में स्त्रियों के योगदान और उनकी आवाज़ के लिए जगह बनाने की पुरुष की इच्छा और क्षमता भी कमज़ोर हो जाती है।

यद्यपि बहुत-सी स्त्रियाँ पारम्परिक भूमिकाओं में फल-फूल सकती हैं और उनमें अपनी बुलाहट पा सकती हैं, फिर भी यह मान लेना कि सभी स्त्रियाँ ऐसा करेंगी या उन्हें ऐसा करना चाहिए, न केवल ग़लत है, बल्कि बाइबल के विरुद्ध भी है। कुछ स्त्रियों के लिए ये पारम्परिक भूमिकाएँ "दासत्व का जूआ" सिद्ध होती हैं, यदि वे यह मान लेती हैं कि परमेश्वर ने वह पटकथा लिखी है जो सिखाती है कि "स्त्री की सर्वोच्च बुलाहट [है] अपने पति और बच्चों के जीवन को समृद्ध करना, ... कि स्त्रियों को निःस्वार्थता और आज्ञाकारिता का अभ्यास करना चाहिए; [और] अपने परिवारों के लिए अपनी व्यक्तिगत इच्छाओं और सपनों को दबा देना चाहिए।"[722]

अपनी पत्नी को बच्चों के पालन-पोषण और सेवकाई में, और साथ ही काम और कमाई में भी, केवल अपनी सहायक नहीं, बल्कि अपनी साझेदार के रूप में देखने का एक रोमांचक पहलू यह है कि इससे हमारी साथ-साथ की यात्रा में भरपूर विविधता की गुंजाइश रहती है। माता-पिता के रूप में अब तक के हमारे अधिकतर वर्षों में हर महीने की आय का बड़ा भाग मैं कमाता था। अब हम ऐसी स्थिति में हैं जहाँ मेरी पत्नी अधिक कमाती है, और जहाँ इससे मुझे पुस्तकें लिखने और एक और डिग्री के लिए पढ़ाई करने का अवसर मिलता है, वहीं मुझे घर और बच्चों से जुड़े अधिक काम सँभालने का सौभाग्य भी मिला है। यह सचमुच एक सौभाग्य रहा है (यद्यपि मेरे बच्चे शायद पूरी तरह सहमत न हों – उनकी माँ का खाना मेरे खाने से हमेशा अधिक पसंद किया जाता है)। फिर भी, दशक-दर-दशक स्थिर भूमिकाओं में बँधे रहने के बजाय मैं निश्चित रूप से यही अधिक गतिशील साझेदारी चुनूँगा।

साथ ही, उन दंपतियों में कुछ भी ग़लत नहीं है जो अधिक पारम्परिक तरीक़ा चुनते हैं। बहुत-से लोग बस एक अधिक रूढ़िवादी पटकथा चुनकर एक प्रकार की प्रसन्नता पाते हैं। परन्तु हमें उस व्यवस्था को हर दंपति के लिए परमेश्वर की सार्वभौमिक इच्छा के रूप में आदर्श नहीं बनाना चाहिए। पूरी बाइबल का धर्मविज्ञान इस निष्कर्ष की अनुमति नहीं देता। जो भी सामान्य प्रवृत्तियाँ हों, उनके इतने अपवाद हैं कि इस विचार को ठुकराया जा सके कि सभी माताएँ रोटी बनाने के लिए अधिक उपयुक्त हैं, जबकि सभी पिता रोटी कमाने के लिए अधिक उपयुक्त हैं। परन्तु बाइबल जो सचमुच सिखाती है, वह यह है कि दंपति का एक टीम के रूप में मिलकर एक-दूसरे की भलाई और दूसरों की अधिक से अधिक सेवा की ओर बढ़ना महत्वपूर्ण है।

जब मैं उन विवाहित दंपतियों के बारे में सोचता हूँ जिन्हें मैं जानता हूँ, तो कुछ पत्नियाँ घर पर रहने की लालसा रखती हैं, जबकि दूसरी इसके विचार से ही घबरा जाती हैं। कुछ अपने बच्चों के साथ अधिक समय बिताने को तरसती हैं, दूसरी घर के बाहर अधिक समय के लिए प्रार्थना करती हैं। कुछ ख़ुशी से अपने करियर की आकांक्षाएँ छोड़ देती हैं; दूसरी अपने काम के क्षेत्र में आगे बढ़ते रहने के लिए दृढ़ हैं। कोई एक आदर्श ढाँचा नहीं है। इतना कहने के बाद, कोई भी ढाँचा अपनाया जाए, पौलुस यह संकेत देता हुआ प्रतीत होता है कि, जब तक कोई अकेला अभिभावक न हो, पत्नियों और पतियों दोनों को घर के जीवन और अपने बच्चों

722. Beth Allison Barr, The Making of Biblical Womanhood, अध्याय 7.

के पालन-पोषण में शामिल होना चाहिए[723] – अगली पीढ़ी को तैयार करना इतना महत्वपूर्ण काम है कि इसमें हमारी सम्मिलित शक्तियाँ और त्याग लगने चाहिए।

723. 1 तीमुथियुस 5:14 उन पत्नियों की बात करता है जो बच्चों का पालन-पोषण करती हैं और अपने घरों का प्रबंध करती हैं, जबकि 1 तीमुथियुस 3:4, 12 उन पतियों की बात करता है जो अपने घरानों का प्रबंध करते और अपने बच्चों का पालन-पोषण करते हैं।

16

कलीसियाओं के लिए व्यावहारिक निहितार्थ

"धर्मविज्ञानीय प्रश्न, यद्यपि महत्वपूर्ण है, वास्तव में वह मुख्य सूचक नहीं है जिससे पता चले कि स्त्रियाँ सेवकाई में अपने अगुवाई के वरदानों और दूसरे वरदानों का पूरा उपयोग कर रही हैं या नहीं। असल बात यह है कि हम कैसी संस्कृति बना रहे हैं। क्या हम ऐसी संस्कृति हैं जो लिंग से ऊपर वरदानों को देखती है? क्या हम हर किसी को अवसरों में आमंत्रित करने को तैयार हैं, या हमने इस बारे में सोचा ही नहीं?" Kadi Cole[724]

जिन बातों ने मुझे मेरी अपनी कलीसिया में लैंगिक पदानुक्रम की सैद्धांतिक भूल के प्रति जगाया, उनमें से एक थी मेरे भीतर बढ़ती हुई संज्ञानात्मक असंगति (यह भीतरी द्वंद्व कि जो मैं मानता था और जो मैं देखता था, वे मेल नहीं खाते थे)। मेरी जान-पहचान की इतनी सारी स्त्रियों में स्पष्ट दिखने वाले बड़े, और कभी-कभी श्रेष्ठ, आत्मिक वरदानों के बावजूद – केवल पुरुषों को ही वरिष्ठ अगुवाई के लिए नियुक्त किया जाता था, और इसलिए केवल उन्हें ही सच्चे आत्मिक अधिकार के साथ योगदान करने दिया जाता था।

जब मैंने इस पूर्ण निषेध के तथाकथित बाइबलीय आधार की गहराई से जाँच की, तो मुझे स्त्रियों को बाहर रखने के बचाव में दिए गए तर्कों की दरारें दिखाई देने लगीं। हर पाठ को ध्यान से छानते हुए मैंने बहुत-से ऐसे अतिरिक्त पाठ और तर्क भी खोजे जिन्हें मेरे पूरकतावादी दायरे ने अपनी सुविधा के अनुसार अनदेखा कर दिया था। पुरुष–स्त्री के अधिकार–अधीनता को पवित्रशास्त्र की सब बातों को जोड़ने वाली व्याख्या के रूप में पढ़ने के बजाय, मैंने कुछ कहीं बेहतर खोज निकाला: कलीसिया की सेवकाई में, विवाहों में, घर में, और समाज में भी, पुरुष–स्त्री की परस्पर साझेदारी की एक सामंजस्यपूर्ण, स्वतंत्र करने वाली व्याख्या-पद्धति।

मेरे अनुभव में, बहुत-सी कलीसियाओं ने स्त्रियों को बाहर रखने वाले अपने धर्मविज्ञान में यही दरारें देखनी शुरू कर दी हैं, परन्तु फिर भी व्यावहारिक परिणामों के कारण वे अपनी स्थिति बदलने में स्वयं को असमर्थ-सा पाती हैं। बहुत बार व्यावहारिकता शुद्ध पाठ-व्याख्या से अधिक शक्तिशाली सिद्ध हुई है।

इसलिए इस अध्याय में आइए, जितना हो सके उतना व्यावहारिक बनें, और उन कम धर्मविज्ञानीय, परन्तु बहुत वास्तविक, व्यावहारिक चिन्ताओं पर बात करें जो कलीसिया की अगुवाई के एक ऐसे धर्मविज्ञान को जीने से जुड़ी हैं जो दोनों लिंगों को अधिक समावेशी रूप से शामिल करता है।

724. www.bit.ly/2ZRzaCO

अपनी पूर्वधारणाएँ छोड़िए

मेरा अनुभव है कि अधिकांश कलीसियाएँ, स्त्रियों की अगुवाई के बारे में उनकी स्थिति चाहे जो हो, पुरुषों तक पहुँचने और उन्हें अगुवाई के लिए खड़ा करने में संघर्ष कर सकती हैं। इसलिए यह समझ में आता है कि कुछ लोगों को डर है कि यदि (अधिक) स्त्रियों को अगुवाई और प्रचार के लिए लगाया गया, तो कलीसिया पुरुषों को आकर्षित करने और उन्हें बनाए रखने की अपनी क्षमता और भी खो देगी।

फिर भी, जैसे बूढ़ी होती अगुवाई-टीमों वाली कलीसियाओं को सारे बुज़ुर्ग अगुवों को हटाए बिना युवा अगुवों को जोड़ने का प्रयास करना चाहिए, वैसे ही केवल पुरुषों की टीमों को भी उतने ही वरदान-प्राप्त पुरुषों को हटाए बिना वरदान-प्राप्त स्त्रियों को जोड़ने का प्रयास करना चाहिए।

इसके अतिरिक्त, स्त्री अगुवों का स्वभाव हमेशा "कोमल और संवेदनशील" होना आवश्यक नहीं – यद्यपि बहुत-सी स्त्रियाँ सौम्य हैं (यीशु के समान), बहुत-सी दूसरी दृढ़ और निर्देश देने वाली हैं (यीशु के समान)। हमें यह नहीं मान लेना चाहिए कि जोड़ी गई कोई भी स्त्री अगुवा कलीसिया के संदेशों और निर्णयों में केवल अधिक भावनात्मक, सहयोगात्मक पहलू ही लाएगी (यद्यपि हो सकता है कि वह ऐसा करे भी)।

साथ ही, हमें पुरुषों को सिखाना होगा कि जब अधिक स्त्रियाँ उनके साथ अगुवाई करने के लिए आगे आती हैं, तो यह उनके लिए पीछे हटने की बुलाहट बिल्कुल नहीं है। जैसा मेरी सह-प्राचीन Jen Pedersen कहती हैं, "जब पुरुष निष्क्रिय होते हैं, तो हम स्त्रियों के लिए आगे बढ़ जाना बहुत आसान होता है – परन्तु परमेश्वर का आदर्श यह है कि दृढ़ पुरुष और दृढ़ स्त्रियाँ एक साथ खड़े हों।"

जब कोई कलीसिया सेवकाई के ऊँचे स्तरों में स्त्रियों को शामिल करने के लिए अपना धर्मविज्ञान बदल भी लेती है, तब भी स्त्रियों को इन नए अवसरों में आगे बढ़ने में कुछ समय लग सकता है। इसे केवल स्त्रियों पर छोड़ देने के बजाय, हम स्त्रियों की अगुवाई के संबंध में कलीसिया की संस्कृति बदलने की दिशा में क़दम उठा सकते हैं।

इस संबंध में हमें लिंगभेदी दोहरे मापदंडों को स्वीकार करना और उन्हें छोड़ना पड़ सकता है। यह केवल कलीसिया में ही नहीं, बल्कि समाज के सभी क्षेत्रों में सच है। मुझे Taylor Swift का अपने क्षेत्र में इसी बात को चुनौती देने का प्रयास याद आता है: "संगीत उद्योग में पुरुषों और स्त्रियों के लिए अलग-अलग शब्दावली है। पुरुष कुछ करता है, तो उसे रणनीति कहा जाता है। स्त्री वही काम करती है, तो उसे चालाकी कहा जाता है। पुरुष को प्रतिक्रिया देने की अनुमति है। स्त्री केवल ज़रूरत से ज़्यादा प्रतिक्रिया दे सकती है।"[725]

Kadi Cole अपनी पुस्तक Developing Female Leaders में बताती है कि जब वह कलीसिया में अगुवाई की भूमिकाओं वाली स्त्रियों से साक्षात्कार करती है, तो उन स्त्रियों ने अपनी कलीसियाओं में यह देखा है कि "पुरुष में जोश, विशेषकर भावनाओं से भरे अगुवाई के मुद्दों पर, दृढ़, सहायक और सकारात्मक समझा जाता है। परन्तु स्त्री का वही जोश क्रोधी, धौंस जमाने वाला, ज़िद्दी और नकारात्मक लग सकता है।

725. www.cbsn.ws/3wNUpSk

इसी प्रकार, जो पुरुष स्पष्ट निर्देश और अपेक्षाएँ देते हैं, उन्हें अच्छे अगुवे समझा जाता है, जबकि जो स्त्रियाँ वही करती हैं, उन्हें प्रायः हुक्म चलाने वाली समझा जाता है।"[726]

शायद अपनी कलीसिया की संस्कृति को सुधारने का पहला तरीक़ा यह पता लगाना है कि वर्तमान संस्कृति वास्तव में क्या है – वरदान-प्राप्त और बुलाई गई स्त्रियों से कुछ गहरे प्रश्न पूछकर, जैसे: इस कलीसिया में एक स्त्री अगुवा होना कैसा लगता है? यदि कोई बात आपको और पूरी तरह से सेवा में लगने से रोकती है, तो वह क्या है? हम यह सब कैसे सुधार सकते हैं? अगुवाई करने वाले पुरुष ग़लती से यह मान सकते हैं कि वे इन प्रश्नों के उत्तर पहले से जानते हैं, परन्तु ठीक यही पहले से मान लेना समस्या का भाग है। यदि हमें टीम के रूप में बेहतर काम करना है और कलीसिया की स्वस्थ संस्कृतियाँ गढ़नी हैं, तो पहला क़दम है कुछ भी पहले से न मानना, बल्कि अधिक कठिन प्रश्न पूछना।[727]

अपने अनुभव में मैंने बार-बार पाया है कि रणनीतिक वरदानों वाली स्त्रियाँ अगुवाई की बैठकों में आश्चर्यजनक रूप से चुप रहती हैं। George Surrat भी ऐसा ही एक अनुभव बताता है। यद्यपि उसका अनुभव शायद आपकी संस्कृति में वैसा न हो, मैं इसे इसलिए बता रहा हूँ क्योंकि यह निश्चय ही मेरे अपने अनुभव से मेल खाता है। जब उसने पूछा कि टीम की नई सदस्या इतनी चुप क्यों है, तो उसने कहा, "पुरुष लगातार एक-दूसरे को टोकते और एक-दूसरे के ऊपर बोलते रहते थे, ऐसे में बीच में एक शब्द भी कह पाना अक्सर कठिन था। 'इसके अलावा,' उसने कहा, 'मुझे पक्का नहीं पता कि मेरी राय की सचमुच ज़रूरत है।'" इसके उत्तर में Surrat ने इस अत्यधिक विनम्र अगुवा के सामने दो बातें रखीं: "पहली, पुरुषों से भरे कमरों में यदि आप पूछे जाने की प्रतीक्षा करेंगी, तो शायद आपसे कभी नहीं पूछा जाएगा। अच्छा हो या बुरा, आपको बोलना ही होगा। और दूसरी, यदि आपकी राय की ज़रूरत न होती, तो आप इस मेज़ पर न बैठी होतीं। कलीसिया को आपके योगदान की आवश्यकता है।"[728] कहने का अर्थ यह है कि जब स्त्रियों को पहली बार मुख्यतः पुरुषों वाली अगुवाई-टीमों में आमंत्रित किया जाता है, तो सचमुच खुलकर बोलना शुरू करने के लिए उन्हें कुछ व्यक्तिगत प्रोत्साहन की आवश्यकता हो सकती है।

पुरुष अगुवों को स्त्रियों के साथ मिलकर अगुवाई करना सिखाइए

आइए, Surrat की और बुद्धिमानी से सीखें। उसकी पत्नी और बेटी दोनों उत्कृष्ट अगुवा हैं, परन्तु वे उस पीड़ा से भी परिचित हैं जो ऐसे पुरुषों के कारण होती है जो अगुवाई की बैठकों में उनकी उपस्थिति स्वीकार नहीं करते; इसलिए Surrat उन पुरुषों को, जिनके लिए स्त्रियों के साथ काम करना नया है, चार सलाहें देता है:[729]

726. Kadi Cole, Developing Female Leaders, अध्याय 3.
727. यह हास्यपूर्ण पैरोडी उस भूल को उजागर करती है जो पुरुष तब करते हैं जब वे स्त्रियों को स्वयं बोलने देने के बजाय उनकी ओर से बोलते हैं: www.bit.ly/3bKamzu
728. George Surrat, Why Women Don't Lead in your Church, www.bit.ly/2YgL4FR
729. www.bit.ly/2YgL4FR

सुनिए: स्त्रियों की बातचीत की शैली प्रायः बहुत-से पुरुषों की तुलना में अधिक बारीक होती है। वे चर्चा में संदर्भ, भावना और संबंधों को शामिल करने की अधिक संभावना रखती हैं। इस अधिक जटिल बुनावट को अनदेखा करना एक भूल है।

बीच में मत टोकिए: पुरुष प्रायः एक-दूसरे को टोकते हैं, विशेषकर जब बातचीत भावनाओं से भर जाती है। यद्यपि यह हमेशा अशिष्टता है, यह बहुत-सी स्त्री अगुवों के लिए चर्चा में भाग लेना विशेष रूप से कठिन बना देता है।

स्पष्टता के लिए प्रश्न पूछिए: समझने के लिए प्रश्न पूछना हमेशा सहायक होता है, परन्तु जब पुरुष और स्त्रियाँ साथ मिलकर अगुवाई करते हैं, तब यह विशेष रूप से सहायक होता है। हम संसार को अलग-अलग ढंग से देखते हैं और अलग-अलग तरीक़ों से निष्कर्षों तक पहुँचते हैं। किसी ऐसी राय को, जिसे आप नहीं समझते, ठुकराने के बजाय उसका संदर्भ पूछिए।

भरोसा कीजिए: आपकी कलीसिया में अगुवाई की मेज़ पर नई आई स्त्रियों को यह पता होना चाहिए कि आप उन पर अगुवाई करने का भरोसा करते हैं। उनके साथ कनिष्ठ साझेदारों या ऐसे बच्चों जैसा व्यवहार मत कीजिए जिन्हें सुरक्षा की आवश्यकता हो। स्त्रियों पर समझदार वयस्कों के रूप में अगुवाई करने का भरोसा कीजिए, और अपने शब्दों और कामों से उस भरोसे को दृढ़ कीजिए।

Surrat चेतावनी देता है कि ऐसे अवसर आ सकते हैं जब पुरुष (और संभवतः स्त्रियाँ भी) पुरुष-अहंकार या स्त्री-द्वेष के दोषी होंगे। इसे सहन नहीं किया जाना चाहिए, बल्कि इसे चुनौती दी जानी चाहिए। यदि वह व्यक्ति इससे मन न फिराए, तो उसे अगुवाई नहीं करनी चाहिए। Surrat कहता है, “यह अतिवादी लग सकता है, परन्तु क्या आप किसी नस्लवादी को अगुवाई में बनाए रखेंगे? क्या आप ऐसे अगुवे को सहन करेंगे जो [दूसरी नस्ल के लोगों] के साथ बाक़ी सब से अलग व्यवहार करता हो और उनकी अगुवाई को कमज़ोर करता हो? यदि किसी नस्ल के साथ भेदभाव करना स्वीकार्य नहीं है, तो किसी लिंग के साथ भेदभाव करना भी स्वीकार्य नहीं है।”

दूसरे अवसरों पर समस्या यह हो सकती है कि पुरुष अगुवों को उस चीज़ को छोड़ना कठिन लगता है जिसके वे आदी हैं। केवल पुरुषों वाली जिन अगुवाई-टीमों से मैंने बात की है, उनकी एक आम आपत्ति यह है कि जब स्त्रियाँ उपस्थित होती हैं, तो “कमरे का माहौल बदल जाता है।” जैसा Surrat लिखता है, इस टिप्पणी में यह छिपा है कि बातचीत “तब अधिक सच्ची और फलदायी होती है जब केवल पुरुष उपस्थित हों।” परन्तु सच यह है कि जब अगुवाई-टीम में विविध प्रकार के लोग होते हैं, तो बातचीत शायद थोड़ी अधिक जटिल हो, परन्तु वह हमेशा कहीं अधिक समृद्ध होगी, और उससे व्यापक दृष्टिकोण और इसलिए बेहतर निर्णय निकलने की संभावना भी अधिक होगी।

कलीसिया को स्त्रियों की सेवकाई ग्रहण करने में मार्गदर्शन दीजिए

कलीसिया में कोई भी परिवर्तन लाने के लिए हमेशा अगुवाई की कुछ सूझबूझ चाहिए। मेरे विचार में, परिवर्तन के बीच से कलीसिया की अगुवाई करने का सबसे महत्वपूर्ण तरीक़ा है उसे पवित्रशास्त्र से सिखाना। यह एक भूल होगी कि केवल अगुवाई-टीम ही पवित्रशास्त्र और धर्मविज्ञान की ऐसी यात्रा करे जिसके परिणामस्वरूप वह स्त्रियों को अगुवाई और प्रचार की सेवा के लिए मुक्त करना शुरू करे, और पूरी कलीसिया को ऐसी ही यात्रा से न ले जाए। मेरी आशा है कि इस पुस्तक की बातें ऐसे उपदेशों और छोटे समूहों की यात्राओं के लिए सामग्री देंगी।

पवित्रशास्त्र, यीशु और आत्मा मिलकर स्त्रियों के अगुवाई करने और शिक्षा देने को जो महत्व देते हैं, उसके विषय में शिक्षा देने के बाद, कलीसिया को – शायद धीरे-धीरे और थोड़ा-थोड़ा करके – ऐसी स्त्रियों से परिचित कराना आरम्भ कीजिए जो अगुवाई करती हैं और प्रचार करती हैं। स्त्रियाँ कितना बड़ा योगदान दे सकती हैं, इसके बारे में लोगों को केवल सिखाना, बिना उन्हें दिखाए, पर्याप्त नहीं है। बहुत-से लोगों के लिए देखना ही विश्वास करना है। जब वे किसी स्त्री को प्रचार करते सुनते हैं या अगुवाई करते देखते हैं, तभी वे इसे बाइबल के अनुसार सामान्य बात के रूप में स्वीकार करने लगते हैं। उदाहरण के लिए, 1800 के दशक की साल्वेशन आर्मी (Salvation Army, उद्धार सेना) स्वयं को स्त्रियों की अगुवाई में अग्रणी मानती थी। 1929 में उसके संस्थापक दंपति के पुत्र Bramwell Booth ने यही बात कही:

इसमें बहुत कम संदेह है कि आर्मी की स्त्रियों ने स्त्रियों की उस व्यापक स्वतंत्रता में भूमिका निभाई है जो हम पश्चिमी राष्ट्रों में होती देख रहे हैं। जो स्त्रियाँ बीते वर्षों में तुच्छ समझे जाने वाले सैल्वेशनिस्टों (उद्धार सेना के सदस्यों) की छोटी टुकड़ियों के आगे-आगे चलती थीं, वे जनता के मन को इस दृश्य का आदी बना रही थीं कि एक स्त्री कमान सँभाले, एक स्त्री सार्वजनिक कर्तव्य में बिना झिझक सक्रिय भाग ले, और परमेश्वर के अनुग्रह से अपनी तथाकथित हीनताओं पर विजय पाए। इस प्रकार हम सच ही कह सकते हैं कि हम एक ऐसा द्वार खोल रहे थे जिससे होकर स्त्रियाँ प्रेम और जीवन का संदेश उन असंख्य लोगों तक ले जा सकें जो उसे एक स्त्री के होंठों [के सिवा] और कहीं से कभी ग्रहण न करते। वह द्वार फिर कभी बंद नहीं होगा।[730]

साल्वेशन आर्मी ने जो काम किए, उनमें से एक यह था कि उसने स्त्रियों को सार्वजनिक रूप से उन्हीं अगुवाई-पदों पर नियुक्त किया जिन पर पुरुष थे। कलीसिया में भी ऐसा ही करने के पक्ष में बहुत कुछ कहा जा सकता है। कुछ अपवाद-स्वरूप पूरकतावादी कलीसियाएँ स्त्रियों को पुरुषों के समान कार्य देने को तैयार हैं – पास्टरीय अगुवाई-टीमों में उनका दृष्टिकोण आमंत्रित करना, या उन्हें प्रचार करने देना – परन्तु फिर भी वे उस बाइबलीय पद या बुलाहट को मान्यता नहीं देतीं जो उन्हीं कार्यों वाले पुरुषों के पास है। परन्तु किसी व्यक्ति को कलीसिया में अगुवाई करने या शिक्षा देने के लिए मुक्त करना, और उसके परमेश्वर-प्रदत्त पद को मान्यता न देना, अनजाने में उसके योगदान को घटा देता है। आख़िरकार, जिन लोगों के द्वारा हमारी सेवा होती है, उनसे अधिक से अधिक अनुग्रह पाने का जो तरीक़ा यीशु हमें सिखाते हैं, उनमें से एक यह है कि हम उस

730. Bramwell Booth, Echoes and Memories, पृ. 172

अनुग्रह और पद दोनों की पुष्टि करें जो परमेश्वर ने उन्हें दिया है: "जो भविष्यद्वक्ता को भविष्यद्वक्ता जानकर ग्रहण करे, वह भविष्यद्वक्ता का प्रतिफल पाएगा।"[731] मेरी पिछली कलीसिया में, यद्यपि वह पूरकतावादी थी, हम स्त्रियों को पास्टरीय भूमिकाएँ निभाने देते थे, परन्तु उनके पास्टरीय पद को औपचारिक मान्यता नहीं देते थे। यद्यपि यह स्त्रियों को पूरी तरह दबा देने से कहीं बेहतर है, फिर भी मैं इस विश्वास पर पहुँचा हूँ कि इसका प्रभाव यह रहा कि बहुत-सी स्त्रियों के जीवन पर जो अनुग्रह था, वह घटकर रह गया।

मुझे उस कलीसिया में, जिसे हमने स्थापित किया, अपनी पत्नी की सेवकाई का एक व्यक्तिगत उदाहरण देने दीजिए। जब मैं एक दशक के दौरान उसके प्रचार और अगुवाई के योगदान पर विचार करता हूँ, तो अब मुझे समझ आता है कि यदि वह स्वयं को अपने आप में परमेश्वर द्वारा नियुक्त पास्टर समझती (और केवल एक पास्टर की पत्नी नहीं), तो संभवतः वह कलीसिया में योगदान के मामले में और ऊँचाई तक पहुँचती। और यदि उसके पीछे चलने वाले और उसे सुनने वाले लोग भी ऐसा ही समझते, तो संभवतः वे उसकी सेवा से और भी अधिक पाते। जैसा हुआ, उसने अपने ऊपर परमेश्वर के अनुग्रह के एक बड़े परन्तु अधूरे भाग का उपयोग किया, और उसकी सेवकाई ग्रहण करने वालों ने भी।[732]

स्त्री अगुवों और प्रचारकों में निवेश कीजिए और उनका मार्गदर्शन कीजिए

यदि हमें भविष्य में उच्च स्तर की अधिक स्त्री अगुवा और प्रचारक देखनी हैं, तो हमें आज ही उन्हें प्रशिक्षित करना आरम्भ करना होगा। दशकों तक स्वयं महान अगुवे और प्रचारक तैयार करने के बाद मैं जानता हूँ कि वे जन्म से नहीं होते, बनाए जाते हैं। जब मेरे जैसे मौजूदा अगुवे संभावित अगुवों को पहचान लेते थे, तो हम उन्हें विकास की एक प्रक्रिया से गुज़ारते थे, जिसमें हम उन्हें क्रमशः प्रशिक्षित करते और सेवा में लगाते थे।

फिर भी, जब मैं पूरकतावादी के रूप में अपने वर्षों पर विचार करता हूँ, तो प्रतिभा खोजने वाली मेरी आँखों पर पट्टी बँधी थी: मैं वरदान-प्राप्त पुरुषों को खोज रहा था, और निःसंदेह मैंने बहुत-सी वरदान-प्राप्त स्त्रियों को अनदेखा कर दिया। इसका कुल परिणाम यह हुआ कि वर्षों बाद हमारी कलीसिया परखे हुए पुरुष अगुवों और प्रचारकों से भरी थी, परन्तु उनकी बराबरी की स्त्रियाँ बहुत कम थीं। इससे पूरकतावादी कलीसिया में पुष्टि-पूर्वाग्रह (केवल वही देखना जो अपनी पहले से बनी धारणा की पुष्टि करे) का एक चक्र चलता रहता है। हम अपने आप से पूछते हैं, "यदि परमेश्वर चाहते कि हम वरदान-प्राप्त स्त्रियों को योगदान के ऊँचे स्तरों के लिए मुक्त करें, तो वे इतनी कम क्यों हैं?" फिर भी हो सकता है कि पवित्र आत्मा ने हमारे बीच किसी स्त्री को अगुवाई और संवाद के वैसे ही (या उससे श्रेष्ठ) वरदान दिए हों, परन्तु केवल उसके भाई को ही पहचाना गया, प्रशिक्षित किया गया, अवसर दिए गए, सिखाया गया और सेवा में लगाया गया। जल्द ही वह उससे कहीं अधिक वरदान-प्राप्त दिखने लगता है। वास्तव में, यह हमारे भेदभाव का परिणाम है, परमेश्वर के भेदभाव का नहीं, और हमारी इस असफलता का कि हम उसमें वह नहीं देख पाए जो परमेश्वर उसमें देखते हैं।

731. मत्ती 10:41

732. मैं यह कहानी उसकी अनुमति से बता रहा हूँ, और मुझे ज़ोर देकर कहना होगा कि मेरे विचार में उसने अपनी नम्रता के कारण और अधिक पाने का प्रयास नहीं किया। परन्तु मुझे ईमानदारी से कहना होगा कि सोचने पर लगता है, उसके पास देने के लिए और भी था।

स्त्रियों की सेवकाई में मेरी एक मित्र है। वह मुझे बताती है कि वर्षों से उसने देखा है कि स्त्रियाँ बारी-बारी से दूसरी स्त्रियों की अगुवाई करती या उन्हें प्रचार करती हैं, परन्तु – जहाँ तक वह देख पाई – कलीसिया के पास्टरों से उन्हें कोई प्रशिक्षण नहीं मिलता। वह मुझसे कहती है, "अनिवार्य रूप से ये स्त्रियाँ अधपके वरदानों के साथ सेवा करती थीं, और उनसे कुछ ख़ास नहीं निकलता था, ठीक इसलिए कि उन्हें प्रशिक्षित नहीं किया गया था। प्रशिक्षित पुरुष अगुवे अप्रशिक्षित स्त्री अगुवों को लँगड़ाते हुए चलने देते थे।"

मुझे एक और मित्र का ध्यान आता है, जो कार्य-जगत में एक असाधारण वक्ता है। फिर भी, प्रचार करने की उसकी दशकों पुरानी इच्छा के बावजूद, पास्टर केवल पुरुषों को, जिनमें उसका पति भी था, "प्रचारकों के प्रशिक्षण" में आमंत्रित करते थे। आमंत्रित न किए जाने से टूटकर उसने अपने पति से कहा कि वह प्रशिक्षण की आवाज़ रिकॉर्ड कर ले, ताकि वह चुपके से स्वयं को प्रशिक्षित कर सके।

अगले स्तर तक पहुँचने के लिए अगुवों को मार्गदर्शन (मेंटरिंग) की आवश्यकता होती है। Kadi Cole ने एक स्त्री अगुवा से साक्षात्कार किया, जिसने कहा, "एक अगुवा के रूप में मुझे विकसित करने के लिए कलीसिया ने सबसे महत्वपूर्ण काम यह किया कि उसने मुझे ऐसे पदों पर रखा जिन्होंने मुझे अपनी सीमाओं से आगे बढ़ाया, और साथ ही पूरे समय मेरा मार्गदर्शन किया। विकास के बड़े समयों में मुझे कभी अकेला नहीं छोड़ा गया।" मार्गदर्शक (मेंटर) को उस व्यक्ति के लिए, जिसका वह मार्गदर्शन करता है, आपसी संबंध में सुलभ होना चाहिए।

अक्सर यहीं बात बिगड़ जाती है – पुरुष मार्गदर्शक स्त्रियों के साथ आमने-सामने समय बिताने से घबराते हैं। बिली ग्राहम नियम (The Billy Graham Rule) के नाम से प्रसिद्ध इस सोच के अनुसार (यह नाम इसके आरम्भिक समर्थकों में से एक के कारण पड़ा), खरे चरित्र वाले मसीही पुरुष अगुवों को कभी किसी स्त्री के साथ अकेले नहीं होना चाहिए। यद्यपि बिली ने शायद इस आदेश का पालन किया हो, यह ध्यान देने योग्य है कि यीशु ने ऐसा कोई नियम नहीं माना।[733] निःसंदेह व्यावहारिक बुद्धिमानी की आवश्यकता अब भी है: मार्गदर्शन के लिए दोपहर का भोजन शायद रात के भोजन से अधिक बुद्धिमानी है; सेवकाई की यात्रा पर दो लोगों को ले जाना केवल एक को ले जाने से बेहतर है; और एक ही समय में दो लोगों का मार्गदर्शन करना केवल एक में समय लगाने से अधिक सुरक्षित हो सकता है। परन्तु आइए, यह भी मान लें कि नियमों का पालन पापमय इच्छा को दबाता नहीं – जो व्यक्ति व्यभिचार करना चाहता है, वह कोई न कोई रास्ता निकाल ही लेगा! अंत में, हमें ऐसे अगुवे तैयार करने चाहिए जिनमें ऐसा चरित्र, बुद्धि, आत्मिक गहराई और संबंधों की उचित सीमाएँ हों जो उन्हें प्रलोभन को घटाने और/या उस पर विजय पाने में सहायता दें। किसी न किसी बिंदु पर व्यक्ति को इतनी परिपक्वता विकसित करनी होगी कि वह पूरी तरह बचे बिना भी प्रलोभनों को बुद्धिमानी से सँभाल सके।[734]

733. उदाहरण के लिए, यूहन्ना 4:8 स्पष्ट करता है कि यीशु और वह सामरी स्त्री अकेले थे। इस स्थिति से बचने के बजाय (जैसा बहुत-से पूरकतावादी पुरुष करते), यीशु ने मानो जान-बूझकर यह अवसर खोजा, और उसके साथ केवल ऊपरी बातचीत ही नहीं की, बल्कि सबसे गहरे स्तर पर उससे जुड़ने का अवसर लिया।

734. इस विषय पर अधिक व्यापक उत्तर के लिए मैं Kadi Cole की पुस्तक "Developing Female Leaders" के अध्याय "Create a safe environment" (सुरक्षित वातावरण बनाइए) की ज़ोरदार सिफ़ारिश करता हूँ। वह कार्यस्थल और कलीसिया में यौन उत्पीड़न और अनुचित संबंधों के विषय पर भी बात करती है।

दंपतियों की सेवकाई पर फिर से विचार कीजिए

पूरकतावाद की कमज़ोरियों में से एक यह है कि सेवकाई में परमेश्वर की सेवा करने वाले विवाहित दंपतियों के लिए उसका एक ही साँचा सब पर लागू होता है। मुख्य ढाँचा, कुछ मामलों में तो एकमात्र ढाँचा, वह है जिसे मैं "पतरस और उसकी पत्नी" का ढाँचा कहता हूँ।[735] इस ढाँचे में पति अगुवा है, और पत्नी सहायक। पुरुष, प्रेरित पतरस की तरह, सामने रहकर अगुवाई करने वाला और/या प्रचारक है, जबकि उसकी पत्नी (जिसका इस मामले में नाम तक नहीं बताया गया) पर्दे के पीछे उसकी सेवकाई में उसका साथ देकर प्रसन्न है। इसमें कुछ भी ग़लत नहीं है! बहुत-से दंपतियों के लिए, शायद अधिकतर के लिए, यह शानदार ढंग से काम करता है। समस्या यह है कि यह सेवकाई में लगे सभी दंपतियों के लिए निश्चय ही काम नहीं करता। मेरा सुझाव है कि तीन और संभावित ढाँचे हैं।

एक है "दबोरा और लप्पीदोत" का ढाँचा।[736] इसमें पत्नी सामने रहकर अगुवाई करती है, जबकि उसका पति उसका सबसे बड़ा सहायक है। पूरकतावादी दायरों में भी बहुत-सी ऐसी स्त्रियाँ हैं जिन्हें दूर-दूर तक फैली सार्वजनिक सेवकाइयों के लिए बुलाया गया है, जबकि उनके पति, जो शायद पर्दे के पीछे के कामों में अधिक वरदान-प्राप्त हैं, परमेश्वर के लिए अपनी पत्नियों के काम में उनका साथ देने पर गर्व करते हैं।

फिर "प्रिस्किल्ला और अक्विला" का ढाँचा भी है। इसमें पत्नी और पति साथ मिलकर काम करते हुए अपने अगुवाई के वरदानों को जोड़ते हैं – ठीक वैसे ही जैसे यह बाइबलीय दंपति व्यवसाय, घर-गृहस्थी के प्रबंध और कलीसिया की अगुवाई में साझेदार था। यही ढाँचा सबसे अच्छी तरह बताता है कि मेरे अपने विवाह में क्या है। मेरा विवाह ऐसी व्यक्ति से हुआ है जो अलग बुलाहट के पीछे जाने के बजाय सेवकाई में मेरे साथ टीम बनाकर काम करना पसंद करती है। वह ख़ुशी से अपने अगुवाई के वरदानों को मेरे वरदानों के साथ जोड़ती है। मैं भी उतने ही आनन्द से उसका साथ देता हूँ।

आइए, "एस्तेर और क्षयर्ष"[737] के ढाँचे को न भूलें। यद्यपि रानी एस्तेर ने शायद अपने पति के अगुवाई के कुछ प्रयासों में उसका साथ दिया हो, उसने अपनी अगुवाई की क्षमता को अलग अवसरों और क्षेत्रों पर केंद्रित किया, और ऐसा करते हुए उसका समर्थन माँगा और पाया। प्रिस्किल्ला और अक्विला की तरह,

735. ऐसा लगता है कि पतरस की पत्नी केवल पतरस को सहयोग देती थी, और उसकी अपनी कोई सामने की सेवकाई नहीं थी। यीशु की सेवकाई के आरम्भ में उन्होंने पतरस के घर में उसकी सास को चंगा किया। (लूका 4:38-40) हम मानते हैं कि दूसरे बहुत-से, यदि सब नहीं, प्रेरित भी विवाहित थे। परन्तु उसका उल्लेख दशकों बाद तक नहीं होता, जब वह पतरस के साथ उसकी सेवकाई की यात्राओं में यूरोप गई (1 कुरिन्थियों 9:5) – शायद अब उनके बच्चे बड़े हो गए थे और वह अधिक यात्रा करने के लिए स्वतंत्र थी।

736. देखें न्यायियों 4:4।

737. यद्यपि क्षयर्ष भक्त पुरुष का आदर्श नहीं है, और उसके विवाह बराबरी के नहीं थे, फिर भी ऐसा लगता है कि उसने एक ऐसा काम किया जिसे आज भक्त विवाहों में दोहराया जा सकता है: उसने अपनी पत्नियों (पहले वशती, फिर एस्तेर) को अपनी-अपनी पहल करने दी, जबकि वह अपनी पहल में लगा रहा – वशती ने स्त्रियों के लिए भोज का आयोजन किया, जबकि एस्तेर ने क़ानून लिखे। प्राचीन संसार में विवाह की यह व्यवस्था इतनी दुर्लभ थी, और केवल सबसे कुलीन लोगों को ही उपलब्ध थी, कि पवित्रशास्त्र में इसका यही एकमात्र उदाहरण है। बहुत-सी आधुनिक संस्कृतियों में, जहाँ स्त्रियाँ बौद्धिक और सामाजिक रूप से लगातार पुरुषों के बराबर होती जा रही हैं, विवाह-साथियों के लिए गतिशील साझेदारी में बने रहते हुए अलग-अलग लक्ष्यों, करियर या सेवकाइयों के पीछे जाना अधिक संभव है।

सेवकाई में इस प्रकार के विवाह में सार्वजनिक अगुवाई के वरदानों वाली एक जोड़ी होती है, केवल इस मामले में वे दो अलग-अलग संस्थाओं की अगुवाई करते हैं।

जैसा हम देख सकते हैं, विवाहित दंपतियों के सेवकाई में शामिल होने के बहुत-से संभावित रूप हैं। दुर्भाग्य से, विवाह का पदानुक्रमित दृष्टिकोण केवल पहले ढाँचे ("पतरस और उसकी पत्नी का ढाँचा") का समर्थन करता है और उन हज़ारों दंपतियों पर संदेह और चिन्ता की छाया डाल देता है जिनकी बनावट अलग है। इसके विपरीत, परस्परता की दृष्टि हर ढाँचे के लिए जगह बनाती है और हर एक का उत्सव मनाती है।

सेवकाई में विवाह के ये विविध ढाँचे कलीसिया की ऐसी अगुवाई-टीमों का आधार भी बन सकते हैं जिनमें दोनों लिंग शामिल हों।

स्त्रियों और पुरुषों की मिली-जुली टीमें

स्त्री-पुरुष परस्परता को मानने वाली कलीसिया में कोई भी दो अगुवाई-टीमें बिल्कुल एक जैसी नहीं होंगी, क्योंकि हर टीम उस कलीसिया में उपलब्ध अगुवाई के वरदानों के अलग मेल से बनेगी। फिर भी, हम उन अलग-अलग प्रकार के लोगों को पहचान सकते हैं जो किसी टीम में सेवा कर सकते हैं:

- उसमें कोई लुदिया या कोई तीमुथियुस हो सकता है – या दो। ये अगुवाई के वरदानों वाली अविवाहित स्त्रियाँ और अविवाहित पुरुष हैं। चूँकि नया नियम अविवाहितों और विवाहितों को समान बुलाहट देता है, इसलिए किसी की वैवाहिक स्थिति उसे अगुवाई के लिए अयोग्य नहीं ठहरानी चाहिए। वास्तव में, पौलुस संकेत देता है कि अविवाहित लोग एक अनोखी एकाग्रता के साथ कलीसिया में अपना समय और शक्ति लगा सकते हैं।[738]
- उसमें प्रिस्किल्ला और अक्विला जैसी कोई जोड़ी हो सकती है – या दो। ये ऐसे दंपति हैं जिनमें दोनों की अगुवाई की एक ही बुलाहट है, और दोनों टीम में हैं।
- उसमें कोई पतरस या क्षयर्ष हो सकता है – या दो। ये अगुवाई के वरदानों वाले विवाहित पुरुष हैं, जिनकी पत्नियाँ अधिक सहायक भूमिकाएँ पसंद करती हैं, या अपने अगुवाई के वरदान पूरी तरह कहीं और लगाए हुए हैं और इसलिए अगुवाई-टीम के लिए उपलब्ध नहीं हैं। मेरे विचार में, इन पत्नियों की स्वैच्छिक सेवा की सीमित क्षमता को घंटों की बैठकों में बिठाकर ख़र्च कर देना, और उन पर ऐसी माँगें रखना जिनके लिए शायद उनमें इच्छा, क्षमता या बनावट न हो, अनुचित होगा, जबकि वे संभवतः कलीसिया में या कलीसिया के बाहर उन तरीक़ों से सेवा करने में अधिक आनन्द पाएँगी जिनके लिए उनमें इच्छा, क्षमता और बनावट सचमुच है।
- इसी प्रकार, उसमें कोई दबोरा या एस्तेर हो सकती है – या दो। ये अगुवाई के वरदानों वाली विवाहित स्त्रियाँ हैं, जिनके पति या तो अधिक सहायक भूमिकाएँ पसंद करते हैं या अपने अगुवाई के वरदान पूरी तरह कहीं और लगाए हुए हैं, और इसलिए अगुवाई-टीम में नहीं हैं।

738. 1 कुरिन्थियों 7:32-34

परस्परता को मानने वाली जो कलीसियाएँ स्त्रियों और पुरुषों की मिली-जुली अगुवाई-टीमें बनाती हैं, वे इन प्रकार के लोगों को जोड़ने के कई तरीक़े आज़मा सकती हैं। दोनों लिंगों को शामिल करने वाले इस अगुवाई ढाँचे में मुझे जो मुख्य चुनौती दिखती है, वह है पतरस की पत्नी और दबोरा के पति की देखभाल और उनका जुड़ाव बनाए रखना। इन जीवनसाथियों को शामिल रखने का एक तरीक़ा, भले ही उनसे अगुवाई की अपेक्षा न की जाए, पास्टरीय टीम के आपसी संबंध गहरे करने वाले अवसरों में है। उन्हें मौज-मस्ती के किसी दिन, किसी विशेष भोज, या कलीसिया के लिए गहन प्रार्थना के किसी समय में साथ बुलाना उन्हें घेरे के बाहर नहीं, भीतर बनाए रखने में बहुत सहायक होगा।

निःसंदेह अगुवाई-टीम की हर संरचना में कुछ ख़ूबियाँ और कुछ संभावित कमज़ोरियाँ होती हैं। किसी सरल परन्तु संभवतः निष्फल ढाँचे को चुनने के बजाय – जैसे केवल "पतरसों" से बना पूरकतावादी ढाँचा – कहीं बेहतर है कि हम विविधता की जटिलताओं को अपनाएँ, और बुद्धि के आत्मा पर भरोसा रखें, जो हर विशेष अगुवाई-टीम को उसके विशेष समय में एक विशेष कार्य-पद्धति खोजने में मार्गदर्शन देंगे।

दूसरी कलीसियाओं से सीखिए

बहुत-सी कलीसियाओं की अगुवाई-टीमों ने अपना सिद्धांत पूरकतावाद से परस्परता की ओर बदल लिया है, या ऐसा करने पर विचार कर रही हैं। परन्तु यह कैसे किया जाना चाहिए? कलीसिया की अगुवाई के अपने वर्षों में मैं दो बार किसी कलीसिया के धर्मविज्ञान में औपचारिक बदलाव लाने में शामिल रहा हूँ। मैंने कठिन अनुभव से जो सीखा, वह यह है कि अपना धर्मविज्ञान सही कर लेना एक बात है; पूरी कलीसिया को साथ लेना दूसरी बात। यहीं उन दूसरी कलीसियाओं से सीखना इतना महत्वपूर्ण हो जाता है जो यह बदलाव पहले ही कर चुकी हैं। मैं Dr. Rob Dixon और April Fiet का आभारी हूँ कि उन्होंने स्त्री-पुरुष परस्परता की ओर बढ़ रही कलीसियाओं के लिए एक मार्ग-चित्र बनाया है, जो उन कलीसियाओं के साथ किए गए केंद्रित साक्षात्कारों पर आधारित है जो यह सुधार पहले ही कर चुकी हैं।[739]

उदाहरण के लिए, हम डैलस, टेक्सस की एक प्रमुख कलीसिया Bent Tree Bible Fellowship से सीख सकते हैं। यद्यपि आरम्भ में वे स्त्री-पुरुष परस्परता का विरोध करते थे, उन्होंने पहचाना कि परमेश्वर ने शायद उन्हें परिवर्तन के दो प्रेरक दिए थे – उनके बीच का एक भरोसेमंद अगुवा-धर्मविज्ञानी, जिसने एक बेहतर धर्मविज्ञान प्रस्तावित किया, और साझा अगुवाई को लंबे समय से दिया जाने वाला महत्व, जो वरिष्ठ अगुवाई-टीम से स्त्रियों को बाहर रखने से लगातार अधिक बेमेल लगने लगा था। Bent Tree की केवल पुरुषों वाली प्राचीनों की टीम ने पूरा एक वर्ष संबंधित पाठों का अध्ययन करने और समय-समय पर इकट्ठे होकर अपने निष्कर्षों की तुलना करने में बिताया। उन्होंने उन पुस्तकों का हवाला दिया जो उन्होंने पढ़ी थीं। जब वे अंततः अपने निष्कर्ष बाँटने के लिए इकट्ठे हुए, तो पवित्रशास्त्र के अपने अध्ययन में और कलीसिया के लिए आत्मा के निर्देश की अपनी समझ में पूरा समूह एकमत था: कलीसिया का कोई भी पद अब स्त्रियों के लिए वर्जित नहीं होना चाहिए।

739. www.bit.ly/3nECNFR

फिर उन्होंने पारदर्शिता के साथ और बिना जल्दबाज़ी किए मंडली को इस सैद्धांतिक बदलाव में शामिल किया। उन्होंने ऐसा कई तरीक़ों से किया: प्राचीनों के वक्तव्यों के द्वारा; एक उपदेश के द्वारा;[740] अपने तैयार किए गए एक धर्मविज्ञानीय लेख के द्वारा; और सबसे महत्वपूर्ण, अनेक अवसरों पर स्वयं को उपलब्ध कराकर, ताकि वे कलीसिया के लोगों के प्रश्नों के उत्तर दे सकें या उनकी चिन्ताओं पर बात कर सकें। उन्होंने सीखा कि असहमत या असुरक्षित महसूस करने वाले कलीसिया-सदस्यों के साथ यह बातचीत सुलभ, प्रेमपूर्ण, धैर्यवान और पास्टरीय ढंग से चलाना कितना आवश्यक है।

बदलाव करने वाली कलीसियाएँ एक ही कहानी बताती हैं: यद्यपि मंडली के अधिकांश लोग यह बदलाव अपना लेते हैं, कुछ लोग इस सैद्धांतिक सुधार को स्वीकार नहीं कर पाते। यह अनिवार्य है, फिर भी हमें, कलीसिया के अगुवों को, प्रार्थना करनी चाहिए कि जो हमारे साथ हैं, वे सब हमारे साथ बने रहें; और हम उनकी सहायता के लिए जो कुछ कर सकते हैं, करें।

यह बदलाव किसी यात्रा का अंत नहीं है। यह एक यात्रा का आरम्भ है। सैद्धांतिक परिवर्तन करने के बाद समय है परमेश्वर को धन्यवाद देने और गहरी साँस लेने का; फिर संरचना और संस्कृति में बदलाव लागू करना आरम्भ करने का, जब हम एक समुदाय के रूप में और अगुवों के रूप में स्त्री और पुरुष होकर सचमुच साझेदारी करने के नए तरीक़े पहचानते हैं – ताकि सुसमाचार हमारी कलीसिया में और उसके द्वारा और अधिक मात्रा में आगे बढ़ सके।

740. नीचे स्क्रॉल करके यह उपदेश यहाँ सुनिए: www.bit.ly/3xbsb4h



17

लोग बनाम पितृसत्ता

"यह कथा कि पुरुष परमेश्वर का अधिकार लिए चलते हैं, डरावनी है, और यह मसीही नहीं है।" Beth Allison Barr[741]

"एक पास्टर के रूप में मेरे चालीस वर्षों का अनुभव यह है कि जब कलीसिया के जीवन में स्त्रियों की अगुवाई को स्वीकार किया जाता है, तो सब कुछ बेहतर हो जाता है।" Kevin Giles[742]

हाल ही में एक सुबह मेरी पत्नी ने मुझे यह देखने में मदद की कि पुरुष स्त्रियों को कैसे देखते हैं (और स्त्रियाँ स्वयं को कैसे देखती हैं) – यही इस पुस्तक का सबसे बड़ा विचार है। बातचीत मैंने शुरू की: "पूरकतावादी कलीसियाएँ बिना यह समझे आगे बढ़ती जा रही हैं कि वे क्या खो रही हैं, क्योंकि उनमें पर्याप्त वरदान-संपन्न पुरुष हैं जिनकी पत्नियाँ उनका भरपूर साथ देती हैं, और जिनके लिए पूरकतावाद हाथ में दस्ताने की तरह बिलकुल ठीक बैठता है। समस्या यह है कि इससे अक्सर वे पत्नियाँ और अविवाहित स्त्रियाँ सीमित हो जाती हैं या बाहर कर दी जाती हैं जो स्वयं अगुवाई की क्षमता रखती हैं, और जिनके पास स्त्रियों, बच्चों, प्रशासन और परामर्श की सेवकाइयों से कहीं आगे देने के लिए बहुत कुछ उमड़ रहा है।"

मेरी पत्नी ने ना में सिर हिलाया। "नहीं, समस्या यह नहीं है। या कहूँ, मुख्य समस्या यह नहीं है," उसने समझाया:

मुख्य समस्या वह ढंग है जिससे पूरकतावादी धर्मविज्ञान और व्यवहार पुरुषों को स्त्रियों को देखना सिखाता है, और – शायद इससे भी अधिक दुख की बात – वह ढंग जिससे वह स्त्रियों को स्वयं को देखना सिखाता है। चाहे कितनी ही सूक्ष्मता से हो, संदेश यह है कि स्त्री किसी न किसी रूप में पुरुष से कम है, और इसलिए उसके पास देने को भी कम है। जब यह अवचेतन मानसिकता बनी रहती है, तो पुरुष स्त्रियों के प्रति चाहे कितने ही दयालु और "सम्मान देने वाले" हों, पुरुषों के स्त्रियों से व्यवहार करने के ढंग में, और स्त्रियों के पुरुषों को अपने साथ वैसा व्यवहार करने देने में, यह निश्चित रूप से एक अंतर्धारा छोड़ जाएगी – अच्छी से अच्छी स्थिति में पितृवत संरक्षणवाद (paternalism) की, और बुरी से बुरी स्थिति में श्रेष्ठता की।

741. The New Yorker में साक्षात्कार, 25 जुलाई 2021। स्रोत: www.bit.ly/2YjaG4Z
742. Kevin Giles, What the Bible Actually Teaches on Women, अध्याय 8

मेरी पत्नी को यह पता होना चाहिए – मसीह के पीछे चलने वाले अपने पूरे जीवन में उसने पूरकतावादी कलीसियाओं में स्वयं को उंडेल दिया है। आश्चर्य की बात है कि उसमें ऐसा स्वभाव, ऐसे अवसर और ऐसा आत्मविश्वास था कि उसने स्वयं को विशेष रूप से अपमानित महसूस नहीं किया। फिर भी वह ठीक निशाने पर चोट करती है: समस्या धर्मविज्ञान है। किसी कलीसिया का धर्मविज्ञान, जैसा हम मान लेते हैं, बाइबल के तर्कों का कोई बिना खोला दस्तावेज़ नहीं है जो कहीं किसी Google Drive में रखा हो। वह इससे कहीं अधिक निकट की चीज़ है: धर्मविज्ञान हमारी समझ, हमारी दृष्टि और वास्तविकता को देखने का हमारा ढंग है। इसलिए स्त्रियों के विषय में धर्मविज्ञान स्त्रियों को देखने का हमारा मूल ढंग है।

सचमुच, मेरे अपने पूरकतावादी धर्मविज्ञान को छोड़ने का मुख्य प्रभाव यह हुआ है कि स्त्रियों के प्रति मेरी दृष्टि सूक्ष्म किंतु निर्विवाद रूप से बदल गई है। सीधे शब्दों में: अब मैं स्त्रियों में पहले से अधिक देखता हूँ। धीरे-धीरे पर निश्चित रूप से, परमेश्वर दया करके मेरी आँखों से लट्ठे निकालते रहे हैं। अब मैं पहले से कहीं अधिक ध्यान देता हूँ कि स्त्रियों के पास घर में, कलीसिया में और समाज में देने के लिए कितना कुछ है – विचार, दृष्टिकोण, विवेक, बातों को शब्द देने की क्षमता, दिशा-निर्देश। और मैं उनमें जितना अधिक देखता हूँ, उतना ही अधिक आदम (और उसके पुत्रों) से कहे गए परमेश्वर के इन वचनों का भार और उनकी दृढ़ता महसूस करता हूँ: "[पुरुषों] का अकेला रहना अच्छा नहीं।"

काँच की छतें और सुनहरे पिंजरे

मैं चकित होता रहा हूँ कि परमेश्वर कितने ही लोगों को मेरे मार्ग में लाते रहते हैं जो मुझे अपनी दिल तोड़ देने वाली कहानियाँ सुनाते हैं। मैं इनमें से किसी को ढूँढ़ने नहीं गया – ऐसा लगता है कि वे ही मुझे ढूँढ़ते हुए आते हैं!

एक परिपक्व और वरदान-संपन्न विश्वासी स्त्री मुझे बताती हैं कि उन्होंने भोलेपन से अपनी कलीसिया के अगुवों को अपने उन आत्मिक अनुभवों के बारे में बताया जिनमें उन्हें लगा कि परमेश्वर उन्हें किसी कलीसिया की अगुवाई करने और प्रचार करने की तैयारी के लिए बुला रहे हैं; पर उन्हें सुनने को मिला कि यदि वे पुरुष होतीं, तो उनकी बुलाहट की इस भावना को वैध मानकर सराहा जाता, पर चूँकि वे पुरुष नहीं हैं, इसलिए उसे कहीं और मोड़ना होगा। तब से वे उस कलीसिया को छोड़ चुकी हैं और सफलतापूर्वक एक नई कलीसिया स्थापित कर चुकी हैं।

एक और स्त्री, जो अब भी पूरी निष्ठा से पूरकतावादी हैं, दशकों तक अपने पति के अधीन रहने का कठिन प्रयास करने के बाद पाती हैं कि उनकी अपनी आवाज़ लगभग खो चुकी है, और परिणामस्वरूप उनका विवाह एक नाज़ुक स्थिति में है। वे सोचती हैं कि उस विवाह में वे अपनी पहचान का बोध फिर कैसे पा सकेंगी।

एक पास्टर मित्र मुझे बताते हैं कि उनकी पत्नी, दशकों तक उनकी कलीसिया की अगुवाई में हाथ बँटाने के बाद, अब पूरे उत्साह से कारोबार की दुनिया में लगी हैं और उनमें कलीसिया की सेवा करने की प्रेरणा बहुत

कम बची है – वे समझाती हैं कि वहाँ बाहर उनके वरदान का सम्मान होता है, और पुरुष उनसे बराबर वाले जैसा व्यवहार करते हैं।

एक और मित्र, जो एक वरदान-संपन्न अगुवा हैं, जीवन भर कलीसियाओं में काम करने के बाद आख़िरकार एक ऐसी कलीसिया से जुड़ीं जो स्त्रियों को बराबर मानती है। वे मुझे बताती हैं कि जीवन में पहली बार उन्हें यह सोचना नहीं पड़ता कि कहीं दूसरे लोग उनके रणनीतिक विचारों को उनके स्त्री होने के कारण अनदेखा तो नहीं कर रहे, और न ही उन्हें यह डर रहता है कि अपने विश्वासों और अपनी दृष्टि की दृढ़ता के कारण उन्हें किसी प्रकार की ईज़ेबेल समझा जाएगा।

कुछ वर्ष पहले, कलीसिया के अगुवों के एक तीन-दिवसीय सम्मेलन के बाद, एक कुशल महिला अगुवा मुझसे अपने मन की बात कहती हैं कि सम्मेलन के हर दिन वे स्वयं को छोटा और छोटा महसूस करती गईं, और परमेश्वर के राज्य के लिए उनकी महत्वाकांक्षा घटती गई। पहले तो मैं अपना बचाव करने लगता हूँ, पर फिर वे मुझे वे सारे सूक्ष्म और कम सूक्ष्म तरीके दिखाती हैं जिनसे उन्हें यह संदेश दिया गया था कि मसीही अगुवाई पुरुषों का काम है। मैं बस सुनने का प्रयास करता हूँ, और आख़िरकार मैं उन्हें सचमुच सुन पाता हूँ – केवल उनके शब्द ही नहीं, बल्कि उनके नीचे छिपी गहरी निराशा और चोट भी।

हाल ही में मैं पास्टरों के एक सम्मेलन में गया, जहाँ मैंने सेवकाई में स्त्रियों के विषय पर एक कार्यशाला में भाग लेना चुना। मैं सुनता रहा, जब एक के बाद एक स्त्री ने पुरुष-प्रधान परिवेश में परमेश्वर की सेवा के लिए अपने वरदानों का उपयोग करने की कोशिश की पीड़ा व्यक्त की। "मुझे परमेश्वर ने बुलाया है – पर मुझे बार-बार उस बुलाहट पर संदेह करने के लिए छोड़ दिया जाता है। जबकि मेरे भाइयों को कभी अपनी बुलाहट पर संदेह करने के लिए प्रेरित नहीं किया जाता।" एक और स्त्री दोहरे मापदंड पर दुख प्रकट करती हैं: "अगुवाई में बहुत से पुरुष वास्तव में आक्रामक होने के दोषी हैं, पर क्योंकि वे पुरुष हैं, इसलिए सब उसे सह लेते हैं। जबकि यदि कोई स्त्री केवल मुखर हो, तो मान लिया जाता है कि वह अवश्य पाप कर रही होगी।"

इनमें उन स्त्रियों की कहानियाँ भी जोड़ लीजिए जो मुझे बताती हैं कि उन्होंने कलीसिया के ऐसे पुरुष अगुवों से बात की जो अपने सारे करिश्मे और सेवकाई की सफलता के बावजूद उनकी चिंताओं को सचमुच सुन ही नहीं पाते। यह बात बहुत कुछ कहती है कि कुछ स्त्रियों ने पाया है कि अपने जीवन के पुरुषों – पतियों, पिताओं, पुत्रों – से अपनी ओर से बोलने को कहना अधिक प्रभावी होता है। और इसी तरह आज एक मित्र मुझे ईमेल करते हैं कि उन्हें अपनी पत्नी और बेटी को अपनी कलीसिया से जोड़े रखने में कठिनाई हो रही है। वरदान-संपन्न स्त्रियाँ होने के नाते, वे उनसे कहती हैं कि उन्हें अपनी कलीसिया में देखा नहीं जाता, और वे उन्हें इसके विपरीत समझा नहीं पा रहे।

ध्यान रखिए: उन साहसी स्त्रियों की ये संयोगवश सुनी कहानियाँ, जिन्होंने इन्हें मुझसे बाँटने का साहस किया, सब की सब नरम पूरकतावादी परिवेश में घटी हैं।

मेरे शहर में दक्षिण-पूर्वी हवा (South Easter) गरजती है, कभी-कभी सप्ताहों तक लगातार। परिणाम यह है कि बहुत से पेड़ स्थायी रूप से उत्तर-पश्चिम दिशा में झुक गए हैं। कलीसियाई जीवन के अपने दशकों में मैंने देखा है कि किसी कलीसिया का "धर्मविज्ञान" – किसी मुख्य विषय पर उसकी विश्वास-व्यवस्था और

पवित्रशास्त्र की व्याख्या का उसका ढंग – किसी भी और चीज़ से अधिक उस कलीसिया के दृष्टिकोणों, मान्यताओं और व्यवहार को आकार देता है। पूरकतावाद ऐसी ही एक हवा है – उसके संपर्क में पर्याप्त समय रहने पर, इस प्रचलित हवा में जीती आई स्त्री के झुक जाने की संभावना अधिक होती है: उसकी सेवकाई की क्षमता दब जाती है और उसका व्यक्तिगत कल्याण संकट में पड़ जाता है। (नहीं, मैं अपनी बात को बढ़ा-चढ़ाकर नहीं कह रहा – इसे दिखाने के लिए ठोस आँकड़े हैं।[743])

पीछे मुड़कर देखूँ तो मैंने कभी नहीं सोचा था कि मैंने कुछ ऐसा किया या कहा जिससे मसीह की सेवा में स्त्रियाँ सीमित हुईं – जब तक कि मैंने स्वयं को अपने बच्चों की सेवकाई के भविष्य के बारे में सोचते हुए नहीं पकड़ा। यद्यपि मैं परमेश्वर पर भरोसा करता था कि वे उन्हें अपनी इच्छा के अनुसार मार्ग दिखाएँगे, फिर भी मैंने पाया कि मैं आशा कर रहा था कि मेरे बेटे एक दिन पास्टर बनें, और दूसरों के साथ मिलकर कलीसियाओं में शिक्षा देने और अगुवाई करने का रोमांच अनुभव करें। फिर मैंने अपनी इकलौती बेटी Ivy को देखा, जो अपने भाइयों के साथ खेल रही थी, और मैंने आशा की कि वह ऐसे किसी पुरुष से विवाह करे।

उसी क्षण मेरे मन में यह बात कौंध गई कि बहुत सी स्त्रियाँ जिन काँच की छतों से टकराती हैं, वे शायद ही कभी पितृसत्ता के षड्यंत्रकारी वास्तुकारों द्वारा बनाई जाती हैं जो स्त्रियों को उनकी जगह पर रखने पर तुले हों। नहीं, ये छतें बड़ी सूक्ष्मता से लिंग के विषय में हमारे धर्मविज्ञान से बनती हैं। यहाँ मैं था, एक वरदान-संपन्न बेटी का स्नेही पिता – जो परमेश्वर के लोगों के बीच उसकी क्षमता और योगदान पर अदृश्य किंतु अभेद्य सीमाएँ थोप रहा था। यह सब इसलिए, क्योंकि मैं मानता था कि केवल सही पुरुष से विवाह करके ही वह अपने भाइयों के समान स्तर का योगदान दे सकेगी।

“इसे रोकिए!”

जब मैं इस पुस्तक के अंतिम अध्याय लिख रहा था, तब मैं अपने शहर की एक कलीसिया की ऐसी अगुवाई टीम से जुड़ा जिसमें स्त्री और पुरुष दोनों हैं। यहाँ मैं उस टीम की स्त्रियों को “देखने” और (उतना ही महत्वपूर्ण) “सुनने” के आत्मिक अनुशासन का अभ्यास करने का प्रयास करता हूँ। हाल की एक अगुवाई सभा में मैं बता रहा था कि इस पुस्तक के अंतिम भाग लिखना ऐसा लग रहा था जैसे कोई ट्रक को चढ़ाई पर खींच रहा हो: “मैं लगा रहता हूँ,” मैंने कहा, “क्योंकि मैं चाहता हूँ कि यह रुक जाए!” “यह” से मेरा अर्थ था पुस्तक लिखने का थका देने वाला, समय खाने वाला और भावनात्मक काम।

इस पर टीम की एक स्त्री ने कहा, “इसे रोकिए!” और इस छोटे से आदेश को भविष्यद्वाणी जैसे भार के साथ दो बार और दोहराया। मैं थोड़ा उलझन में पड़ गया, फिर समझ गया कि वे क्या कहना चाह रही थीं: “मसीहियों और कलीसियाओं के स्त्रियों को देखने और उनसे व्यवहार करने के इस ढंग को रोकिए!” उनकी विनती में ऐसी गंभीरता थी जो लगभग स्वर्ग से भेजी हुई लगी। जब-जब मैंने इस पुस्तक को पूरा करने के

743. पिछले पंद्रह वर्षों के सर्वेक्षणों का उपयोग करते हुए 47 वर्ष की औसत आयु वाली 2,234 स्त्रियों पर किया गया एक अध्ययन पुष्टि करता है कि समावेशी कलीसियाओं की तुलना में पूरकतावादी कलीसियाओं में जाने वाली स्त्रियाँ अधिक स्वास्थ्य समस्याओं से पीड़ित होती हैं। (Patricia Holman और Amy Burdette, “When Religion Hurts: Structural Sexism and Health in Religious Congregations,” American Sociological Review, 2021, Vol. 86 (2): 234–55.)

लिए धीरज की प्रार्थना की है, पवित्र आत्मा मुझे उनके शब्द याद दिलाते रहते हैं: "इसे रोकिए! इसे रोकिए!" यह पुस्तक उस दिशा में मेरी छोटी सी भेंट है।

तो ठीक-ठीक क्या रुकना चाहिए?

भले ही पूरकतावाद इस विषय की पूरी बाइबल पर आधारित ठीक-ठाक व्याख्या के मामले में चूक जाता हो, हम सोच सकते हैं कि क्या वह सचमुच इतना हानिकारक है? क्या हम सब ऐसी पूरकतावादी कलीसियाओं को नहीं जानते जो बहुत से लोगों की सहायता कर रही हैं? शायद हम स्वयं ऐसी किसी कलीसिया में हों। और लंबे समय तक स्वयं एक पूरकतावादी अगुवा रहने के कारण मैं प्रत्यक्ष अनुभव से जानता हूँ कि पूरकतावाद रूपी ख़मीर हर रोटी (हर कलीसिया) में एक ही मात्रा में नहीं फैलता। नरम पूरकतावादी कलीसियाएँ, जैसी वह कलीसिया थी जिसकी अगुवाई में मैंने हाथ बँटाया, अपना पूरा प्रयास करती हैं कि स्त्रियों को बाहर रखने वाले सिद्धांत को स्त्रियों को मुक्त करने वाले सिद्धांत के साथ इस प्रकार जोड़ें कि अधिकतर स्त्रियाँ सचमुच सम्मानित महसूस करें। कोई कलीसिया सिद्ध नहीं है, और परमेश्वर अपूर्ण कलीसियाओं का उपयोग करके भी अद्भुत काम करने में पूरी तरह समर्थ हैं। फिर भी, मैं इतने समय से इस क्षेत्र में हूँ कि मैंने सबसे नरम पूरकतावादी कलीसियाओं में भी इसके दुष्परिणाम सामने आते देखे हैं।

पूरकतावाद लैंगिक भेदभाव वाले दृष्टिकोणों को बड़ी आसानी से छिपा लेता है। लैंगिक भेदभाव (sexism), चाहे वह शत्रुतापूर्ण (और स्त्री-द्वेषी) हो या "उदार" (और इसलिए पितृवत संरक्षणवादी), किसी पुरुष की इस क्षमता को कमज़ोर कर देता है कि वह किसी स्त्री की बात सचमुच सुने। Rachael Denhollander, जो अपने साथ दुर्व्यवहार करने वाले USA Gymnastics के डॉक्टर Larry Nassar के विरुद्ध सार्वजनिक रूप से आरोप लगाने वाली अनेक पीड़िताओं में पहली थी, ने अपने सदर्न बैप्टिस्ट संप्रदाय से यह कहा: "मुझे लगता है कि यह बहुत कुछ कहता है कि मैंने सैकड़ों – शब्दशः सैकड़ों – उपदेश सुने हैं जो इस पर केंद्रित थे कि स्त्री का क्षेत्र शांत और अधीन रहने का होना चाहिए। पर मैंने एक भी उपदेश यह नहीं सुना कि स्त्री की आवाज़ को महत्व कैसे दें।"[744]

दक्षिण अफ्रीका की श्वेत कलीसियाओं ने जब रंगभेद (Apartheid) की झूठी शिक्षा से पश्चाताप किया, तभी वे नस्लवादी दृष्टिकोणों से पश्चाताप करना शुरू करने के योग्य भी हो पाईं। मुझे दुख होता है कि जहाँ मेरी संस्कृति में बहुत से गैर-मसीही पुरुष अपने पापपूर्ण पुरुष-अहंकारी दृष्टिकोणों को स्वीकार कर रहे हैं, वहीं बहुत से मसीही पुरुष बस अपने पूरकतावादी धर्मविज्ञान के पीछे छिप जाते हैं।

पूरकतावाद दिमाग़ के एक ही हिस्से से चलने वाली कलीसिया बनाता है। स्त्रियों को वरिष्ठ अगुवाई टीमों और प्रचार टीमों से बाहर रखकर कलीसिया अपने ही अंधे बिंदुओं को पक्का कर लेती है – यानी अपने निर्णय लेने में, अपनी पास्टरीय पद्धति में, पवित्रशास्त्र की अपनी व्याख्या में, और पुरुषों तथा स्त्रियों दोनों के बीच अपनी सेवकाई में दिमाग़ के दोनों हिस्सों का उपयोग न कर पाना। Alan Hirsch कहता है, "अब समय आ गया है कि कलीसिया की सेवकाई और अगुवाई में पुरुष-प्रधानता को संतुलित किया जाए। यदि हम ऐसा नहीं करते,

744. स्रोत: www.bit.ly/3COpaJc

तो हम उन्हीं (कुछ हद तक दिमाग़ के एक ही हिस्से वाले) परिणामों की अपेक्षा कर सकते हैं जो हम इस समय पा रहे हैं।"[745]

पूरकतावादी कलीसियाओं की यही बड़ी विडंबना है – यद्यपि वे पुरुषों और स्त्रियों की पारस्परिक पूरकता को बढ़ावा देने का दावा करती हैं, वास्तव में वे कलीसिया को दिशा और शिक्षा देने वाली दो मुख्य भूमिकाएँ – प्रचार और पास्टरीय अगुवाई – केवल पुरुषों को सौंपती हैं, और इस प्रकार हमें स्त्रियों की आवाज़ और उनके अत्यंत आवश्यक दृष्टिकोणों से काट देती हैं। नरम पूरकतावादी कलीसियाएँ कम से कम स्त्रियों को अगुवाई सभाओं और प्रचार-मंच पर आमंत्रित करके इसे कम करने का प्रयास करती हैं – पर साथ ही, मेरी समझ में, वे उन्हें इतना अधिकार नहीं देतीं कि वे सचमुच खुलकर बोल सकें।

पूरकतावाद कुछ हाशिये पर धकेली गई, वरदान-संपन्न और बुलाई गई स्त्रियों के लिए भारी पीड़ा उत्पन्न करता है। मैं बार-बार वही कहानी सुनता हूँ: बुलाई गई या वरदान-संपन्न स्त्रियों को अनदेखा किया जाता है, या पुरुषों के पक्ष में बिना किसी लिहाज़ के एक ओर धकेल दिया जाता है। बात और बिगड़ जाती है, क्योंकि पूरकतावाद में गैसलाइटिंग (gaslighting – किसी को उसकी अपनी समझ और भावनाओं पर संदेह करने को मजबूर करना) की एक अंतर्निहित व्यवस्था है: वह उस स्त्री को डाँटता है जो अगुवाई करना या प्रचार करना चाहती है, कि उसके मन में यह ग़लत, बल्कि पापपूर्ण, इच्छा आई ही क्यों। यदि वह यह आरोप स्वीकार कर लेती है, तो फिर वह स्वयं को दोषी ठहराने लगती है। मुझमें अवश्य कुछ गड़बड़ है, जो मैं उस चीज़ की इच्छा भी करती हूँ जिसे परमेश्वर ने प्रत्यक्षतः मना किया है। एक वरदान-संपन्न मित्र मुझसे कहती हैं, "एक युवती के रूप में मैंने परमेश्वर को अपने लोगों की अगुवाई के लिए मुझे बुलाते सुना – पर जब मुझसे कहा गया कि मैंने परमेश्वर की बात ग़लत सुनी, तब से मैं परमेश्वर की आवाज़ पहचानने की अपनी क्षमता पर बिलकुल भरोसा नहीं करती।"

पर जो स्त्रियाँ इस फ़ैसले को अस्वीकार करती हैं और अब अन्याय का वैध बोध रखती हैं, वे क्या करें? क्या वे बस पीड़ा को दबाकर सेवा करती रहें? क्या वे बोलें और संभावित उपहास या और अधिक गैसलाइटिंग का सामना करें? या वे कलीसिया छोड़कर कोई दूसरी ढूँढ़ें? तीनों ही विकल्प अत्यंत पीड़ादायक हैं।

अनदेखी की गई स्त्री की पीड़ा – डर, क्रोध, हताशा – भले ही तीव्रता से महसूस होती हो, पर अधिकतर समय कलीसिया इस बात से पूरी तरह अनजान रहती है कि जब परमेश्वर का दिया हुआ कोई वरदान-संपन्न व्यक्ति केवल अपने लिंग के कारण हाशिये पर कर दिया जाता है, तो स्वयं कलीसिया को कितनी क़ीमत चुकानी पड़ती है। केवल कारोबार की दुनिया में ही नहीं, कलीसिया में भी, जब कम योग्य लोगों को उनके लिंग के कारण दूसरों से ऊपर बढ़ाया जाता है, तो उसकी क़ीमत औसतपन होती है।

पूरकतावाद स्त्री की अगुवाई की क्षमता को दबाने में योगदान देता है। इस विषय पर मैं अगुवाई-सलाहकार Kadi Cole को उद्धृत करता हूँ:

जब आपके पास विश्वासयोग्य, परिपक्व स्त्रियाँ हों जो तैयार हैं और जिन्हें अगुवाई के कुछ पहलू सँभालने चाहिए, चाहे वह जो भी हो – स्वयंसेवकों की टीम चलाना हो, संडे स्कूल की कक्षा पढ़ाना हो, या अगुवाई की कोई औपचारिक भूमिका हो – तो [पुरुषों] को यह जानकर आश्चर्य हो सकता है कि ये मसीही, भक्त स्त्रियाँ

745. Alan Hirsch और Dave Ferguson, On the Verge, अध्याय 3.

यह सोचने में कितनी ऊर्जा और प्रयास लगाती हैं कि कहीं वे अधिकार तो नहीं हड़प रहीं। भक्त स्त्रियाँ इस बात के प्रति बहुत संवेदनशील होती हैं कि शायद कहीं कोई रेखा है जिसके नीचे उन्हें रहना चाहिए। और समस्या यह है कि यदि वह रेखा मान लीजिए सात पर है, [जबकि पुरुषों के लिए वह दस पर है,] तो अधिकतर भक्त स्त्रियाँ लगभग चार पर रहेंगी, ताकि कहीं वे अनजाने में [सीमा लाँघ] न जाएँ।[746]

Cole की यह अंतर्दृष्टि मुझे बहुत कुछ समझाने वाली लगी। जिन नरम पूरकतावादी कलीसियाओं की मैंने अगुवाई की, उनमें मैं सोचता था कि क्यों इतने पुरुष, समझ में आने वाले ढंग से, अगुवों के रूप में ऊँची उड़ान भर रहे थे, जबकि जिन स्त्रियों को किसी विशेष क्षेत्र में अगुवाई के लिए प्रोत्साहित किया गया, वे अक्सर केवल औसत स्तर तक ही पहुँच पाईं। जब काँच की छत होती है – लिंग के आधार पर सीमा की एक रेखा – तो बहुत कम स्त्रियाँ उसके आस-पास भी पहुँचती हैं। समस्या केवल यह नहीं है कि काँच की छत है; समस्या यह है कि काँच की छत एक चिपचिपा फ़र्श बना देती है।

पूरकतावाद स्त्रियों की आवाज़ों को चुप कराने में योगदान देता है। Adam Galinski अपने TED Talk How to Speak Up for Yourself [747] में कहता है कि बोलने के साहस के लिए कई पूर्व-शर्तें आवश्यक हैं: यह नैतिक दृढ़ विश्वास कि बोलना उचित है, समुदाय का समर्थन, ऐसा करने की शक्ति या मंच, और दंड के भय से मुक्ति।

यही कारण है कि पूरकतावादी कलीसियाओं में इतनी स्त्रियाँ स्वयं को इतना चुप कराया हुआ या अनसुना महसूस करती हैं: स्त्री की अधीनता और चुप्पी का सिद्धांत उन्हें इस बात पर ही संदेह करवाता है कि बोलना उचित भी है या नहीं; इसलिए समुदाय ऐसा करने में उनका साथ नहीं देता; उन्हें बोलने के लिए न कोई मंच दिया जाता है, न शक्ति; और जब वे बोलती हैं, तो उन्हें इसके परिणाम भुगतने पड़ते हैं – उन पर अधीन न रहने वाले रवैये का, या अपने लिंग के लिए उचित रेखा लाँघने का आरोप लगाया जाता है।

उन गिनी-चुनी पूरकतावादी कलीसियाओं में, जो स्त्रियों को रविवार को प्रचार करने देती हैं, इन स्त्रियों को निर्देश दिया जाता है कि वे शिक्षा तो दें, पर "अधिकार के साथ शिक्षा" न दें (जो 1 तीमुथियुस 2:12 की उनकी ग़लत व्याख्या पर आधारित है)। पर इससे बहुत सी प्रचारक स्त्रियों के मन में आतंक बैठ जाता है, जो सोचती हैं कि प्रचार करते हुए किसी भी क्षण वे बहुत अधिक दृढ़ विश्वास दिखा बैठेंगी, या शायद अनजाने में किसी प्रकार का सिद्धांत-संबंधी कथन कर बैठेंगी, और इस प्रकार पाप करेंगी।

पूरकतावाद की एक संस्थापक सदस्य, Mary Kassian, ने John Piper की वेबसाइट पर एक लेख लिखा जिसका शीर्षक है Women Teaching Men—How Far Is Too Far?[748] वह कहती है कि स्त्रियाँ अक्सर उससे पूछती हैं कि क्या वे रविवार सुबह, या रविवार या बुधवार की शाम प्रचार कर सकती हैं। और क्या वे अपनी गवाही बाँट सकती हैं। या स्त्री-पुरुष दोनों वाले बाइबल अध्ययन में बोल सकती हैं, या किसी धार्मिक सम्मेलन में मिश्रित श्रोताओं के सामने। या ऐसे सेमिनार में या किसी सेमिनरी में पढ़ा सकती हैं जहाँ पुरुष उपस्थित हों। या प्रार्थना सभा की अगुवाई कर सकती हैं। या निजी तौर पर पुरुषों का मार्गदर्शन कर सकती हैं। या टीवी या रेडियो पर प्रचार कर सकती हैं। या लेखों और पुस्तकों के द्वारा पुरुषों को शिक्षा दे

746. www.bit.ly/3wvNjlD
747. www.bit.ly/3k7dsSF. इस टॉक की ओर मेरा ध्यान दिलाने के लिए मैं William Witt का धन्यवाद करता हूँ।
748. www.bit.ly/3fxTcKC

सकती हैं। उसका उत्तर है: "यह प्रश्न कि मैं – शिक्षा के आत्मिक वरदान वाली एक स्त्री के रूप में – कलीसिया में पुरुष के सिर होने (मुखियापन) का सम्मान कैसे करूँ, इस प्रश्न से बहुत मिलता-जुलता है कि एक युवती [अपने प्रेमी के साथ] [यौन] पवित्रता के सिद्धांत का सम्मान कैसे करे।"

यद्यपि वह स्वीकार करती है कि दोनों ही मामलों में पवित्रशास्त्र में रेखा स्पष्ट रूप से नहीं खींची गई है, फिर भी किसी स्त्री के किसी पुरुष को सिखाने की तुलना उसके साथ यौन पाप करने से करके, और इस प्रकार यह संकेत देकर कि उसे उस रेखा से जितना हो सके उतना दूर रहना चाहिए, उसके इस व्यापक रूप से पढ़े गए लेख ने निःसंदेह बहुत सी स्त्रियों को चुप्पी के फ़र्श से चिपका दिया है। या तो वे Kassian द्वारा बताए गए बोलने के अवसरों से बस बचेंगी, या यदि बोलेंगी भी, तो बहुत सावधान रहेंगी कि कोई ग़लत बात न कह दें – या सही बात भी किसी हद तक स्पष्टता और दृढ़ विश्वास के साथ न कह दें।

पूरकतावाद परमेश्वर द्वारा दिए गए बहुत से फ़सल काटने वालों को बाँधकर रखता है। यीशु ने कहा कि यद्यपि फ़सल बहुत है, पर मज़दूर थोड़े हैं। हमें और मज़दूरों के लिए प्रार्थना करनी चाहिए, और फिर यह सुनिश्चित करना चाहिए कि हम उन मज़दूरों को काम पर लगाएँ। कलीसिया का सुसमाचार सुनाने और चेले बनाने का मिशन इतना महत्वपूर्ण है, और इस मिशन को पूरा करने में स्थानीय कलीसिया और रविवार का प्रचार-मंच इतने निर्णायक हैं, कि हम उसके आधे अगुवाई और प्रचार के वरदानों को अनदेखा करने का जोखिम नहीं उठा सकते। Carolyn Custis James कहती है: "जब आधी कलीसिया पीछे रह जाती है – चाहे अपनी इच्छा से या इसलिए कि हमारे पास कोई विकल्प नहीं – तो सबकी हानि होती है और हमारे मिशन को झटके लगते हैं।"[749]

पूरकतावाद हमें अपने बीच उभरती हुई स्त्री अगुवों के प्रति अंधा कर देता है। जब मैंने पहली बार उस कलीसिया से आगे बढ़ने पर विचार किया जिसकी अगुवाई में मैंने बीस वर्ष हाथ बँटाया था, तो मुझे कलीसिया की इस आवश्यकता का ध्यान था कि उसे और अधिक उत्प्रेरक अगुवाई-वरदानों की ज़रूरत है – वर्षों तक परमेश्वर ने मुझ पर अनुग्रह किया था कि मैं इनमें से एक रहूँ, और मैं प्रार्थना कर रहा था कि मेरे जैसे और वरदान मेरी जगह लें। एक अवसर पर मैं सबसे युवा मंडली के पीछे खड़ा था – बीस-तीस वर्ष की आयु के सैकड़ों लोग – और सोच रहा था कि इस भीड़ के पुरुषों में से कौन मेरी प्रार्थनाओं का उत्तर हो सकता है। अचानक मुझे लगा कि पवित्र आत्मा मुझसे कह रहे हैं, "क्या हो, यदि अगले उत्प्रेरक वरदान स्त्रियाँ हों?" मेरी आँखें अचानक भीड़ के दूसरे आधे हिस्से के लिए खुल गईं। उसी क्षण मैंने समझा कि प्रतिबंधात्मक धर्मविज्ञान में यह शक्ति है कि वह हमें पहले से ऐसा ढाल देता है कि हम अपने ठीक सामने मौजूद बहुत से वरदानों को देख ही न पाएँ।

पूरकतावाद स्त्रियों के राज्य-संबंधी सपनों पर ढक्कन लगा देता है। हर महत्वाकांक्षा बुरी नहीं होती। आत्मा से जन्मी एक महत्वाकांक्षा होती है – परमेश्वर की महिमा करने और उनके लिए बड़े काम करने की – जो हममें से कुछ के भीतर जलती है। बीस-तीस वर्ष की आयु में मैं कलीसिया-स्थापकों के एक आंदोलन का हिस्सा था जो तेज़ी से बढ़ रहा था। एक युवा के रूप में मैं उन बड़े पुरुषों को श्रद्धा से देखता था जो इस आंदोलन में आगे बढ़कर अगुवाई कर रहे थे। मैं मन ही मन सोचता था कि परमेश्वर के लिए वह करने के लिए जो वे कर

749. Carolyn Custis James, Half the Church, पृ. 162. उद्धृत: Bessey, अध्याय 10.

रहे हैं, मुझे न जाने कितना लंबा इंतज़ार करना पड़ेगा। यह तब तक था, जब तक आंदोलन के अगुवे ने यह नहीं समझाया कि अगुवाई के लिए आयु कोई मापदंड नहीं है, केवल व्यक्ति की भक्ति और उसके वरदान। परिस्थितिजन्य कारकों को समीकरण से हटाकर उन्होंने मुझे अपना सब कुछ लगा देने के लिए उभारा, और मैंने वैसा ही किया।

तो, कुछ ऐसा ही तब होता है जब हम युवतियों से कहते हैं कि न उनकी आयु और न उनका लिंग, बल्कि केवल उनकी भक्ति और उनके वरदान ही वे मुख्य कारक हैं जो कलीसिया और संसार में परमेश्वर के लिए उनकी संभावित उपयोगिता तय करते हैं। भले ही वे अंततः प्रचारक और पास्टर न बनें, फिर भी परमेश्वर उन्हें राज्य के जिस भी दूसरे काम के लिए बुलाएँ, उसमें उनके उत्कृष्ट होने की संभावना अधिक होती है।

पूरकतावाद कोमल स्वभाव वाले पुरुषों के प्रति विशेष रूप से कठोर, और स्वभाव से मुखर या आक्रामक पुरुषों की ज़रूरत से ज़्यादा प्रशंसा करने वाला हो सकता है। पूरकतावादी दायरों में मैं ऐसी बहुत सी बातचीतों का साक्षी रहा हूँ जो "कमज़ोर पुरुषों" की समस्या के बारे में थीं, जो "मज़बूत स्त्रियों" की अगुवाई नहीं कर पाते। पर क्या सचमुच यही मुख्य समस्या है? या कहीं हमारी अपनी आँख में इससे कहीं बड़ा लट्ठा तो नहीं:

कुछ पुरुष स्वाभाविक अगुवे होते हैं। पूरकतावादी धर्मविज्ञान के अनुसार, जो पुरुष अच्छी अगुवाई करता है, वह परमेश्वर की इच्छा पूरी कर रहा है। पर यदि कोई पुरुष अच्छी अगुवाई नहीं करता, तो वह अपने पापमय, पतित स्वभाव के आगे झुक रहा है। तो यदि आप पुरुष हैं और घर में अगुवा होना आपको स्वाभाविक और सहज लगता है, तो यह सोचना आसान है कि आप उस दूसरे व्यक्ति से बेहतर मसीही हैं जिसे अगुवा होना बस पसंद नहीं और जो इसमें बहुत अच्छा भी नहीं है। पर क्या यह सचमुच आत्मिकता है – या केवल व्यक्तित्व?[750]

इसके विपरीत, पूरकतावाद मुखर स्त्रियों के प्रति विशेष रूप से निर्दयी, और स्वभाव से अधीन रहने वाली स्त्रियों की ज़रूरत से ज़्यादा प्रशंसा करने वाला हो सकता है। मैंने देखा है कि जिन स्त्रियों को यह सुविधा मिली है कि वे घर पर रहें जबकि उनके पति काम करते हैं, या जो स्त्रियाँ स्वभाव से सहज ही मान जाने वाली हैं, उन्हें अक्सर मौजूदा व्यवस्था से कोई समस्या नहीं होती। प्राचीन पितृसत्तात्मक मान्यताएँ स्वयं ही अपनी पुष्टि करती थीं: जो स्त्रियाँ बच्चों पर केंद्रित थीं और आर्थिक रूप से पूरी तरह अपने पतियों पर निर्भर थीं, वे स्वाभाविक रूप से अपने पतियों के अधीन रहती थीं, और इस बीच पति समाज में भाग लेने के अपने आत्मविश्वास में बढ़ते जाते थे। आज भी कलीसिया में घर पर रहने वाली बहुत सी माताएँ इसी मान्यता को आसानी से अपना लेती हैं। उन्हें पत्नी की अधीनता सही लगती है। उन्हें भक्तिपूर्ण नारीत्व के आदर्श के रूप में सराहा भी जाता है।

अधिक आम यह है कि कामकाजी स्त्रियाँ, विशेषकर वे स्त्रियाँ जिन्हें अपने कार्यस्थल पर अधिकार दिया गया है और जिनके पास अगुवाई के वरदान हैं, इस स्थिति के अन्याय पर तिलमिलाने लगती हैं। यदि वे विरोध में

750. Kristen Rosser, "The Consequences of Complementarianism for Men" में। www.bit.ly/3BNNCsL

आवाज़ उठाती हैं, तो उनकी राय की दृढ़ता और बोलने की उनकी तत्परता, दोनों को झट से अधीन न रहने वाली आत्मा के लक्षण समझ लिया जाता है।

सोचिए कि यह लैंगिक भेदभाव कितना अन्यायपूर्ण है: पूरकतावादी मानसिकता के रहते, जो आत्मविश्वासी पुरुष अपनी बात खुलकर कहने को तैयार है, उसे एक संभावित अगुवा माना जाता है; जबकि जो आत्मविश्वासी स्त्री खुलकर बोलती है, उसे एक संभावित ख़तरा माना जाता है।

पूरकतावाद समाज के विनाशकारी लैंगिक पदानुक्रमों को चुनौती देने की कलीसिया की क्षमता का कुछ हिस्सा गँवा देता है। विचारों के परिणाम होते हैं। स्त्रियों के विरुद्ध हिंसा के वैश्विक अभिशाप के पीछे लैंगिक असमानता का पाप है। कलीसिया को पाप से उजड़े समाज में नमक और ज्योति होना है, और उन अन्यायपूर्ण और पापपूर्ण दृष्टिकोणों और व्यवस्थाओं को चुनौती देनी है जो दुख का कारण बनते हैं। फिर भी स्त्री-मुक्ति आंदोलन के समाजशास्त्रियों ने प्रभावशाली ढंग से दिखाया है कि

जिन समाजों में पुरुषों को प्राथमिकता दी जाती है और स्त्रियों को उनके अधीनस्थ बना दिया जाता है, वहाँ हम पाते हैं: लड़कों को प्राथमिकता, जिसके कारण करोड़ों कन्या भ्रूणों का गर्भपात होता है; स्त्रियों के लिए शिक्षा, स्वास्थ्य, आय, संपत्ति के स्वामित्व और काम में असमानता; स्त्रियों के विरुद्ध व्यापक और स्वीकार की गई हिंसा; [और] स्त्रियों की तस्करी, मुख्यतः वेश्यावृत्ति के लिए।[751]

यद्यपि कोई भी पूरकतावादी इनमें से किसी अन्याय का खुला समर्थन नहीं करेगा, फिर भी लैंगिक परस्परता का सिद्धांत – जो स्त्रियों को पुरुषों के साथ सच्ची समानता के स्थान तक उठाता है – समाज के लिए कहीं बेहतर उपहार है; वह समाज के छुटकारे में योगदान देता है, बजाय इसके कि वह पूर्वाग्रह के ऐसे बीज दे जो संभवतः अन्याय को बनाए रख सकते हैं।

उदाहरण के लिए, अफ्रीका और एशिया में औसत युवा लड़की के जीवन की गुणवत्ता, पितृसत्तात्मक मानसिकताओं के कारण, पूरी तरह उसके पिता, चाचाओं और भाइयों की दयालुता या दुर्भावना पर निर्भर होती है। लैंगिक असमानता वाली संस्कृतियाँ, जहाँ स्त्रियों के पास अपने निर्णय स्वयं लेने की बहुत कम क्षमता होती है, उन्हें पुरुषों की दया पर छोड़ देती हैं। चूँकि ये संस्कृतियाँ प्रायः धार्मिक होती हैं, और स्त्रियों से व्यवहार करने का अपना ढंग अपने धार्मिक समुदायों से लेती हैं, इसलिए ये लड़कियाँ अप्रत्यक्ष रूप से इस बात की दया पर भी होती हैं कि क्या सिखाया जाता है। दुख की बात है कि 50 देशों के एक विश्लेषण में पाया गया कि लैंगिक समानता के स्तर का धार्मिकता के साथ नकारात्मक सहसंबंध है।[752] पहली दुनिया (first world) में लागू की गई पूरकतावादी शिक्षाएँ स्त्रियों को केवल कभी-कभी हानि पहुँचाती हैं, क्योंकि व्यापक समाज उनके प्रभावों को संतुलित कर देता है; पर जब ये शिक्षाएँ दो-तिहाई दुनिया (विकासशील देशों) तक पहुँचती हैं – और वे पहुँचती हैं – तो उनका नकारात्मक प्रभाव कई गुना बढ़ जाता है। अध्ययन दिखाते हैं कि धर्म "स्त्रियों और लड़कियों के लिए समुदायों के मानदंडों और आकांक्षाओं को आकार देने वाला एक महत्वपूर्ण कारक है। वह स्त्रियों के जीवन को बेहतर बनाने के लिए कार्य का उत्प्रेरक हो सकता है,

751. Giles, 549
752. स्रोत: www.bit.ly/3xSsK5k

या संघर्ष का स्रोत और परिवर्तन पर ब्रेक बन सकता है।"[753] तो कितनी दुखद बात है जब यीशु के अनुयायी स्त्री की अधीनस्थता के एक भ्रांत सिद्धांत के कारण लाखों पीड़ित स्त्रियों के लिए लैंगिक समानता के विषय में स्पष्ट पुकार नहीं उठाते।

पूरकतावाद कलीसिया की धर्मवैज्ञानिक और व्याख्यात्मक क्षमताओं को कमज़ोर करता है। जैसा मैंने इस पूरी पुस्तक में दिखाने का प्रयास किया है, यह व्याख्या के ग़लत तरीकों को सामान्य बना देता है। यह धुँधले पाठों पर बड़े सिद्धांत खड़े करता है, और धुँधले पाठों की ऐसी व्याख्याओं की अनुमति देता है जो अधिक स्पष्ट पाठों की शिक्षा का खंडन करती हैं। यह गौण विषयों को लेकर उन्हें मूल सिद्धांत बना देता है – वरना सदर्न बैप्टिस्ट सेमिनरियों के प्रोफ़ेसरों को हर वर्ष डैनवर्स वक्तव्य पर हस्ताक्षर क्यों करने पड़ते, नहीं तो उनकी नौकरी चली जाती? यह उन सोचने-समझने वाले, बाइबल पर विश्वास करने वालों को शैतान जैसा ठहराता है जो चीज़ों को अलग ढंग से देखते हैं, और उन पर आरोप लगाता है कि वे बाइबल को गंभीरता से नहीं लेते और संस्कृति के आगे हथियार डाल देते हैं। समाज से संवाद में यह विवेकपूर्ण सही-शिक्षा (critical orthodoxy) के बजाय आवेगपूर्ण प्रतिक्रियावाद को बढ़ावा देता है। हाल तक तो यह त्रिएकता को भी इस बहस में घसीट लाया, और लैंगिक पदानुक्रम के प्रति अपनी पहले से तय प्रतिबद्धता का समर्थन करने के लिए ईश्वरत्व के भीतर के अनंत संबंधों की नए सिरे से कल्पना करने तक को तैयार दिखा।

पूरकतावाद अगली पीढ़ी की अच्छी सेवा नहीं करता। जब मैं तय कर रहा था कि क्या पूरकतावाद से टकराना सचमुच मेरे प्रयास के योग्य है, तो भविष्य की कलीसिया के लिए मेरी चिंता ने ही मुझे साहस दिया। यद्यपि अधिकतर पूरकतावादी कलीसियाओं या संप्रदायों के भीतर की वर्तमान सत्ता-संरचनाएँ और गठबंधन, समझ में आने वाले कारणों से, उन्हें इस क्षेत्र में अपने धर्मविज्ञान को सुधारने के विरुद्ध झुका सकते हैं – पर जब हम स्वयं को तस्वीर से हटाकर कल्पना करते हैं कि दो दशक बाद हमारे बच्चे उसी कलीसिया की अगुवाई कर रहे हैं, तो चीज़ें अधिक स्पष्ट हो जाती हैं। मैं कल्पना करता हूँ कि एक दिन मेरे अपने बच्चे कलीसियाओं की अगुवाई टीमों में बैठे हैं, और यह दुखद संभावना कि उन्हें इस दिन-प्रतिदिन अधिक असमर्थनीय होते सिद्धांत का बचाव करना पड़े। हमारी कितनी अदूरदर्शिता होगी कि हम अपनी गड़बड़ी सुलझाने का काम उन पर छोड़ दें। यदि हम ऐसा करते हैं, तो मुझे आशंका है कि वे हमारे समय की ओर मुड़कर देखेंगे और इसे अक्षम्य पाएँगे कि हम काफ़ी कमज़ोर तर्कों और अस्पष्ट व्यावहारिक चिंताओं पर आधारित एक पदानुक्रमित धर्मविज्ञान का बचाव करने के लिए इतने तत्पर थे।

मैं और भी गिनाता जा सकता हूँ। पूरकतावाद एक छोटी लड़की के यीशु के लिए संसार को बदलने के सपनों को छोटा कर सकता है। यह गैर-मसीहियों और संदेह करने वाले मसीहियों को मसीही विश्वास को त्याग देने का एक और कारण देता है। यह अविवाहित स्त्रियों को ऐसा महसूस करा सकता है कि जीवनसाथी के न होने से कलीसिया और समाज, दोनों में उनकी आवाज़, उपयोगिता और योगदान घट जाता है। यह इस अन्यायपूर्ण चलन की ओर ले जाता है कि पूरकतावादी कलीसियाओं में पुरुष अगुवों से विवाहित स्त्रियों को उन स्त्रियों से ऊँचे स्तर का योगदान करने दिया जाता है जो शायद अधिक वरदान-संपन्न और अधिक समर्पित हैं, पर अविवाहित हैं या किसी अगुवे से विवाहित नहीं हैं। यह उन स्त्रियों को, जिन्हें शायद सचमुच परमेश्वर ने

753. Berkeley Center for Religion, Peace and World Affairs; Georgetown University (2008). Challenges of Change: Faith, Gender and Development, पृ. 5

अगुवाई करने और शिक्षा देने के लिए बुलाया है (और शायद उनकी कलीसिया ने इसके लिए मुक्त भी किया है), यीशु के दूसरे अनुयायियों द्वारा प्रोत्साहित किए जाने के बजाय दोषी ठहराए जाने की अनावश्यक पीड़ा से गुज़रने पर मजबूर करता है। यह दुर्व्यवहार करने वाले पुरुषों के लिए सुरक्षित पनाहगाह बना सकता है। यह इस संभावना को बढ़ाता है कि पति अपने परिवार की ओर से सीमित, दिमाग़ के एक ही हिस्से वाले निर्णय ले। यह "माता-पिता और बच्चे जैसे" विवाहों को बढ़ावा दे सकता है जो व्यक्तिगत विकास को दबाते हैं, बजाय "वयस्क और वयस्क" वाले विवाहों के, जिनमें बढ़ने की अनंत संभावनाएँ होती हैं। यह एक कामकाजी मसीही माँ पर अपराध-बोध और दबाव को कई गुना बढ़ा सकता है: अपराध-बोध इसलिए कि काम करते हुए उसे लगता है कि उसकी असली जगह घर पर है; और दबाव इसलिए कि पूरे दिन काम करने के बाद भी घर सँभालने और बच्चों की व्यवस्था करने की ज़िम्मेदारी उसके पति से अधिक उसी पर होती है। यह किसी पत्नी को अपने निर्णय स्वयं लेने की क्षमता का कुछ हिस्सा गँवाने पर मजबूर कर सकता है – आख़िरकार, उसका फलना-फूलना मुख्यतः इस पर निर्भर लगता है कि उसका पति उसकी अगुवाई कितनी अच्छी तरह करता है।[754]

यीशु ने कहा, "पेड़ अपने फल ही से पहचाना जाता है।"[755] यद्यपि उनका यह सूत्र मुख्यतः लोगों और उनके कामों पर केंद्रित था, पर इसे सिद्धांतों और उनके प्रभावों पर भी लागू किया जा सकता है। एक स्वस्थ और सच्चे सिद्धांत से कलीसियाओं और मसीहियों में सकारात्मक अनुभव होने चाहिए। फिर भी जब मैं पूरकतावाद के कड़वे फलों को देखता हूँ, तो मुझे उसकी सच्चाई पर दोगुना संदेह होता है। और सोचिए, इस पूरे समय इस "मसीही" पितृसत्ता का एक व्यवहार्य बाइबलीय विकल्प मौजूद रहा है – जिसे संसार के बहुत से शीर्ष बाइबल विद्वान मानते हैं।

अति-वामपंथी विचारधारा या फिसलन भरी ढलान?

बहुत से लोगों को डर हो सकता है कि परस्परता अति-वामपंथी विचारधारा और उसकी पहचान की राजनीति के व्यापक प्रभाव के आगे झुकती है – वह राजनीति, जो विडंबना यह है कि पितृसत्ता के दुर्व्यवहारी रूपों के पहले के शिकारों को लेकर उन्हें नए उत्पीड़कों के स्थान पर बैठाती प्रतीत होती है। "'पुरुष कचरा हैं', इसलिए अगुवाई तो स्त्रियों को ही करने दो!"

पर जो लोग पहले सत्ता से वंचित रहे लोगों के पक्ष में सत्ता-समीकरण को उलटने का प्रयास करते हैं, वे सत्ता के स्त्री-द्वेषी रखवालों के, जितना पहली नज़र में लगता है, उससे कहीं अधिक निकट हैं। कल के प्रभुत्व जमाने वालों पर प्रभुत्व जमाना बुराई का बदला बुराई से चुकाना है – और वास्तव में स्त्री-पुरुष संबंधों के टूटने को और बढ़ाना है।

754. मेरी पत्नी Julie इसे इस प्रकार समझाती है: "पूरकतावाद में मेरे लिए यह बहुत आसान था कि मैं हर बात अपने पति पर छोड़ दूँ और कम पहल करूँ। अक्सर मैं अपने जीवन, अपनी सेवकाई और दोनों की दिशा के लिए सचमुच ज़िम्मेदार महसूस करने से 'किनारा कर लेती' थी – खुलकर कभी नहीं, निश्चय ही, पर हर तरह के छोटे किंतु बहुत दूरगामी निर्णयों में – सिर्फ़ इसलिए कि एक बहुत सूक्ष्म किंतु शक्तिशाली अर्थ में, मैं ऐसा कर सकती थी!"
755. मत्ती 12:33

इसके विपरीत, स्त्री-पुरुष परस्परता को अपनाना इस बाइबलीय दृढ़ विश्वास पर टिका है कि न पुरुषों और न स्त्रियों, न अश्वेतों और न श्वेतों, न पीड़ितों और न अपराधियों, न विशेषाधिकार प्राप्त और न वंचित लोगों को एक-दूसरे पर शासन करने का कोई अंतर्निहित अधिकार है। किसी एक को किसी न किसी रूप में श्रेष्ठ मानने के बजाय, यह परस्पर-निर्भरता चाहती है, जिसकी जड़ दूसरे के सच्चे मूल्य की विनम्र पहचान में, और साथ ही अपनी कमज़ोरियों, अंधे बिंदुओं और पापों के प्रति जागरूकता में है।

इस पुस्तक में परस्परता के पक्ष में दिए गए तर्कों पर अक्सर यह आरोप लगाया जाता है कि वे "फिसलन भरी ढलान" वाले तर्क हैं, जिन्हें हमारी संस्कृति मूल मसीही सही-शिक्षा पर ढीली पकड़ की ओर धकेल रही है। पर नहीं। हो सकता है हमारी समानतावादी संस्कृति ने यह बातचीत मेज़ पर रखी हो, पर संस्कृति नहीं, पवित्रशास्त्र तय करता है कि बातचीत कैसे हो, और वह कहाँ पहुँचे। जैसा मैंने इस पुस्तक में प्रमाणित किया है, वास्तव में पवित्रशास्त्र ही स्त्रियों की गरिमा और योगदान को बहाल करने की उत्प्रेरक ऊर्जा देता है – और जब हम सोचते हैं कि स्त्री-द्वेष और पितृसत्ता ने सहस्राब्दियों से मानव संस्कृतियों पर कैसे प्रभुत्व जमाया है, तो यह कोई छोटी उपलब्धि नहीं। प्रश्न यह है कि अलग-अलग विश्वासी पूरी कलीसिया में होने वाले इस परिवर्तन में कैसे भाग लें?

परिवर्तन के वाहक बनना

यदि आप ऐसी कलीसिया में हैं जो सिद्धांत के स्तर पर परस्परता को स्वीकार करती है, तो यह पुस्तक इस विषय पर आपके दृढ़ विश्वास को और गहरा करने में सहायक हो सकती है।

पर यदि आप किसी पूरकतावादी कलीसिया में हैं, और आपको इस पुस्तक के अधिकतर तर्क विश्वसनीय और सही लगते हैं, तो आप अपनी कलीसिया में स्त्री-पुरुष पदानुक्रम से स्त्री-पुरुष परस्परता की ओर बदलाव को कैसे प्रोत्साहित कर सकते हैं? इसका उत्तर थोड़ा अधिक जटिल है।

बोलिए। यीशु ने प्रचार किया, "धन्य हैं वे, जो मेल करवाने वाले हैं।" कभी-कभी सच्चा मेल करवाने वाला बनने का एकमात्र उपाय यह होता है कि ऊपर से मेल तोड़ने वाला दिखें। बोलने के लिए साहस चाहिए। और इसकी क़ीमत भी चुकानी पड़ सकती है। पर शायद आप गिनती की पुस्तक में छिपी एक कहानी से प्रेरणा ले सकें। यदि लैंगिक असमानता को बनाए रखने वाले नियमों और मानदंडों को चुनौती देने के आत्मिक महत्व के बारे में कोई संदेह हो, तो सलोफाद की बेटियाँ हमें परमेश्वर के समर्थन का भरोसा दिलाती हैं। प्राचीन निकट-पूर्व में व्यक्ति की मुख्य संपत्ति उसकी भूमि होती थी। इस्राएल के उत्तराधिकार के नियमों के अनुसार संपत्ति पिता से पुत्र को जाती थी, बेटियों को कभी नहीं। पर पाँच स्त्रियों ने साहस के साथ मिलकर इस अन्यायपूर्ण व्यवस्था का सामना किया, और यद्यपि उन्होंने उसके पितृसत्तात्मक स्वरूप को समाप्त नहीं किया, फिर भी वे एक अपवाद-धारा लागू करवाने में सफल रहीं।

जब उनके पिता की मृत्यु होती है, तो उसकी पाँचों बेटियाँ मूसा से विनती करती हैं: "हमारे पिता का नाम उसके कुल में से पुत्र न होने के कारण क्यों मिट जाए? हमारे पिता के भाइयों के बीच हमें भी भूमि का भाग

दीजिए।" मूसा दयालुता से यह मामला परमेश्वर के सामने ले जाता है, और परमेश्वर (अद्भुत रूप से) स्त्रियों से सहमत होते हैं। एक अधिक न्यायपूर्ण नियम बनाया जाता है: "यदि कोई मनुष्य निपुत्र मर जाए, तो उसका भाग उसकी बेटी को देना। ... इस्राएलियों के लिये यह न्याय की विधि ठहरे, जैसा कि यहोवा ने मूसा को आज्ञा दी।"[756]

आज भी, जहाँ कलीसियाओं के मानदंड या नीतियाँ, या सरकारों के क़ानून और व्यवसायों की प्रक्रियाएँ स्त्रियों के साथ समान व्यवहार को कमज़ोर करती हैं, वहाँ स्त्रियों का अगुवों के पास जाकर इस अन्याय का विरोध करना उचित है, और अगुवों को, मूसा की तरह, उनकी चिंताओं को गंभीरता से लेना चाहिए।

आज की कलीसियाओं के संदर्भ में, स्त्रियाँ इस बात को चुनौती दे सकती हैं कि कलीसिया के सबसे महत्वपूर्ण सेवा-कार्यों – जैसे अगुवाई और शिक्षा – पर पुरुषों का ही दबदबा रहता है। आख़िरकार, भूमि का उत्तराधिकार पाने का पुराने नियम का विचार बाइबल में आगे चलकर आत्मिक रूप ले लेता है, और व्यक्ति की आत्मिक मीरास, या परमेश्वर के लोगों के बीच उसकी अनोखी सेवकाई को दर्शाता है।[757] यद्यपि अंततः परमेश्वर ही हमें हमारी मीरास तक पहुँचाते हैं, फिर भी यह बहुत संभव है कि हम किसी ऐसी सामाजिक या धार्मिक व्यवस्था में हों जो हमें परमेश्वर की दी हुई अपनी क्षमता तक पहुँचने से इस प्रकार रोकती है कि उससे हमारी अपनी कलीसिया दरिद्र हो जाती है, और परमेश्वर से दूर अधिक लोगों तक पहुँचने की उसकी क्षमता सीमित हो जाती है।[758] यह ठीक नहीं है, और हमें कुछ साहसी लोगों की आवश्यकता है जो मनोहर ढंग से और आदर के साथ आवाज़ उठाएँ।

यथार्थवादी बनिए। कनाडा के धर्मविज्ञानी John Stackhouse इस विषय में बहुत सहायक है:

यीशु ने हमें परमेश्वर से प्रेम करने और अपने पड़ोसियों से प्रेम करने को कहा। पर हमें जितनी हो सके उतनी स्पष्टता से देखना होगा कि किसी विशेष परिस्थिति में परमेश्वर और अपने पड़ोसियों से प्रेम करने का क्या अर्थ है। परिस्थितियों के किसी विशेष समूह में परमेश्वर क्या होते देखना चाहते हैं? प्रत्यक्ष सीमाओं को देखते हुए परमेश्वर की प्राथमिकताएँ क्या हैं? पड़ोसी कौन हैं, यह देखते हुए मैं किन तरीकों से उनसे प्रेम कर सकता हूँ, और वे मुझे किन तरीकों से ऐसा करने देंगे? ऐसा यथार्थवाद हमें आवश्यक कठिन निर्णय लेने में सहायता करेगा – ऐसे संसार में जहाँ हम आम तौर पर अपने हर प्रयास में सफल नहीं हो सकते, ऐसे संसार में जहाँ हमें अक्सर आधी रोटी से संतोष करना पड़ता है, ऐसे संसार में जहाँ हम प्रायः मूल्यों के टकराव का सामना करते हैं और हमें निचले मूल्य की क़ीमत पर ऊँचे मूल्य के लिए काम करना पड़ता है।

756. गिनती 27:4, 8, 11
757. भजन संहिता 2:8 में सारी पृथ्वी, परमेश्वर के सारे लोगों समेत, यीशु की अनोखी मीरास है। भजन संहिता 16:6 में दाऊद प्रतिज्ञा किए हुए देश को बाँटने और चिट्ठी डालकर हर कुल और परिवार को उसकी भूमि का भाग देने की प्रथा का उल्लेख करता है: "मेरे लिये माप की डोरी मनभावने स्थान में पड़ी, और मेरा भाग मनभावना है।" पौलुस प्राचीनों के एक समूह से कहता है कि परमेश्वर उन्हें "सब पवित्र किए गए लोगों के बीच मीरास" देना चाहते हैं। (प्रेरितों के काम 20:3) हममें से हर एक को "उनका अनुकरण करना है, जो विश्वास और धीरज के द्वारा प्रतिज्ञाओं के वारिस होते हैं।" (इब्रानियों 6:12)
758. यह फूट डालने वाले ढंग से नहीं किया जाना चाहिए। किसी बात के बारे में सही होना, पर उसे ग़लत ढंग से करना, संभव है। ये पाँच बेटियाँ आदर्श प्रस्तुत करती हैं कि सीधे अगुवों के पास जाना कितना महत्वपूर्ण है, बजाय इसके कि फूट डालने वाले ढंग से हर उस व्यक्ति के सामने अपनी असंतुष्टि या अन्याय-बोध रखा जाए जो सुनने को तैयार हो।

हमें यह विचार करना होगा कि कोई व्यक्ति, या लोगों का कोई विशेष समूह या वर्ग, किसी विशेष परिस्थिति में ठीक-ठीक क्या प्राप्त कर सकता है। उदाहरण के लिए, किसी विशेष कलीसिया के प्राचीन बहुत से युवाओं की बात नहीं सुनेंगे, चाहे वे कितने ही सही क्यों न हों। बहुत से पुरुष स्त्रियों की बात नहीं सुनेंगे। यह उचित नहीं है, और यह अच्छा नहीं है, पर ऐसा ही है। ऐसे मसीहियों को अपने वास्तविक विकल्पों में से तय करना होगा कि वे कैसे सबसे अच्छी तरह परमेश्वर का आदर करें और उनके राज्य को आगे बढ़ाएँ। जितनी जल्दी हो सके, उन्हें यह भ्रम त्याग देना चाहिए कि उनकी बात केवल उनके तर्कों की योग्यता के आधार पर, और परिस्थिति की सामाजिक वास्तविकताओं की परवाह किए बिना, सुनी जाएगी।

कहीं इस बात पर मुझे ग़लत न समझा जाए, इसलिए मैं अपने इस विश्वास की पुष्टि करता हूँ कि पवित्र आत्मा हृदयों को बदल सकते हैं, और कभी-कभी आश्चर्यजनक ढंग से बदलते भी हैं। पर हमें यथार्थवादी रूप से देखना होगा कि अब जिसकी हम बात कर रहे हैं, वह सामान्य मानवीय संबंधों का स्थगन है – जिसे मैं "समाजशास्त्रीय चमत्कार" कहता हूँ।[759]

मेरी पिछली कलीसिया में, जिसमें दस मंडलियाँ थीं और हज़ारों लोग, मैंने आशा की थी कि मैं अपने साथी निर्णयकर्ताओं – लगभग दस लोगों की वरिष्ठ अगुवाई टीम – के धर्मविज्ञान की ठोस आलोचना करूँ। समझ में आने वाली बात है कि मुझे कलीसिया की एकता के लिए ख़तरा माना गया। क्या होता यदि इनमें से केवल आधे लोग अपना मत बदलते? तब पूरी कलीसिया दो भागों में बँट जाती। और क्या होता यदि इनमें से केवल दो या तीन अपना मत बदलते? शायद उनकी नौकरी चली जाती, और मेज़ पर उनका स्थान भी। मैंने भोलेपन से "एक समाजशास्त्रीय चमत्कार" की आशा की थी। इस बात की क्या संभावना थी कि ये सब या इनमें से अधिकतर लोग न केवल अपना मत बदलें, बल्कि एक साथ बदलें? पता चला कि बहुत कम।[760]

फिर भी, यद्यपि इस विषय ने मेरे बहुत से भाइयों को व्यथा दी है, मैं मानता हूँ कि इस विषय को उठाना सही था। और अगली बात के कारण मैं अब भी आशा से भरा हूँ।

दूर की सोचिए। Stackhouse आगे कहता है,

कुछ परिस्थितियाँ ऐसी हो सकती हैं जिनमें [परस्परता] को बहुत तेज़ी से और बहुत दूर तक धकेलने से किसी विवाह या मंडली में दरार पड़ जाएगी, यहाँ तक कि वह नष्ट हो जाएगी। कम से कम सामान्य रूप से, यह परमेश्वर की इच्छा नहीं लगती। विचारधारा का कट्टर अनुयायी अपनी शुद्धता और उत्साह से व्यक्तिगत संतोष

759. John Stackhouse, Finally Feminist, पृ. 99–100.

760. कुछ लोग सोच सकते हैं कि कुछ कलीसियाएँ पूरकतावाद और परस्परता, दोनों को स्वीकार क्यों नहीं कर लेतीं। पर यह विषय एक विशेष प्रकार के सिद्धांत में आता है, जिसे "परिभाषित करने वाला विश्वास" (defining belief) कहा जाता है। मैं समझाता हूँ। सिद्धांत तीन प्रकार के होते हैं। पहले, अनिवार्य सिद्धांत – ये मसीही सही-शिक्षा की वे बातें हैं जिन पर सचमुच कोई समझौता नहीं हो सकता। प्रेरितों के विश्वास-वचन (Apostle's Creed) के बारे में सोचिए, यीशु के ईश्वरत्व और क्रूस के उद्धार देने वाले कार्य के बारे में सोचिए। फिर विवादास्पद विषय हैं – जैसे शराब का उपयोग और अंत समय की भविष्यद्वाणी के विषय में विश्वास। फिर परिभाषित करने वाले विश्वास हैं – ये पूरे मसीही जगत में विवादित सिद्धांत हैं, जो फिर भी यह परिभाषित करते हैं कि कोई कलीसिया कैसे काम करे। उदाहरण के लिए, किसी कलीसिया को यह तय करना होता है कि क्या वह आत्मा के अलौकिक वरदानों में विश्वास करती है, और क्या वह प्राचीनों के नेतृत्व में चलेगी, और निश्चय ही यह भी कि ये प्राचीन किस लिंग के हों। कलीसिया के अगुवों को इन प्रश्नों के उत्तरों पर एकमत होना चाहिए, क्योंकि ये कलीसिया के व्यवहार को परिभाषित करते हैं।

पा सकता है, पर परमेश्वर अमूर्त सिद्धांतों से कहीं अधिक वास्तविक लोगों की परवाह करते हैं।[761]

कितना सच! सोचिए कि परमेश्वर हममें से हर एक के प्रति कितने धीरजवंत रहे हैं – वे हमें अपनी इच्छा और अपने मार्गों में उतनी तेज़ी से आगे ले चलते हैं जितनी तेज़ी से हम चल सकते हैं, पर शायद ही कभी उससे तेज़, जितना हम सँभाल सकें। इसीलिए किसी कलीसिया को इस विषय पर पुनर्विचार के लिए धीरे-धीरे, लगातार प्रेरित करने के साथ-साथ, उसमें आत्मा जो भी सच्चा काम कर रहे हैं, उसके लिए सराहना भरा समर्थन भी होना चाहिए।

अपने विकल्पों पर विचार कीजिए। "यदि किसी विशेष परिस्थिति में हमारे पास चमत्कार की अपेक्षा करने के ठोस आधार नहीं हैं, तो हमें दूसरे विकल्प चुनने चाहिए – इससे पहले कि हम न केवल अपने साथी कलीसिया-सदस्यों से उनकी हठधर्मिता के कारण, बल्कि परमेश्वर से भी, उस चमत्कार को न करने के कारण जिसकी हमने खोज की थी, कड़वे हो जाएँ।"[762] यदि आप अपनी कलीसिया के पूरकतावादी धर्मविज्ञान से असहमत होने लगे हैं, तो बोलने की तत्परता को उस बात के साथ जोड़िए जिसे Stackhouse "भविष्यद्वक्ता जैसी झिझक" (prophetic hesitation) कहता है।

जब हम कार्य करने से पहले झिझकते हैं, तो हम प्रतीक्षा की प्राथमिकता को पहचानते हैं। हम अपनी सीमितता और पापमयता को याद करते हैं और स्वयं को स्मरण दिलाते हैं कि पहल मनुष्यों की नहीं है। ... कार्य के बीच हम रुकते हैं और दोहराते हैं ... आदर के चिह्न के रूप में – परमेश्वर के प्रति, और उन प्राणियों के प्रति जिनके साथ हम पृथ्वी को बाँटते हैं। और यह विनम्रता प्रकट करता है: ऐसे मूल्य और वास्तविकताएँ हैं जो हमारी समझ और नियंत्रण से परे हैं।[763]

हमें अपने सारे प्रयासों को प्रार्थना में भी डुबो देना चाहिए। और ऐसा करते हुए हमें भरोसा रखना चाहिए कि हमारा परिश्रम, एक गर्भवती स्त्री के धीरज की तरह, अंततः एक बेहतर कलीसिया का फल लाएगा।

यदि आपको इस विषय के आधार पर यह तय करना ही पड़े कि फिर भी कलीसिया में बने रहें या उसे छोड़ दें, तो क्या सबसे अच्छा है?

बने रहना बेहतर हो सकता है। यीशु के प्रतिबद्ध अनुयायी इस बात के लिए स्वतंत्र नहीं हैं कि जब भी वे अपनी कलीसिया के कामकाज के किसी पहलू से असहमत हों, तो कलीसिया छोड़ दें। अपनी आधुनिक व्यक्तिवादी संस्कृतियों में हममें से बहुत से लोग उस वाचा के विचार को खो चुके हैं जो हमारे समुदाय की एकजुटता की जड़ में है। हम अपने मित्र चुन सकते हैं, पर अपना परिवार नहीं चुनते। अधिकतर मामलों में हमें यह मानना चाहिए कि परमेश्वर ने यह कलीसिया-परिवार – उसकी सारी कमियों समेत – हमारे लिए चुना है।

इसके अलावा, यदि हर वह व्यक्ति, जो अपनी कलीसिया के सिद्धांत के लिए बेहतर दिन की आशा रखता है, बस छोड़कर चला जाए, तो इस बात की क्या आशा रहेगी कि वह कलीसिया कभी सोच-समझकर अपना सिद्धांत बदलेगी? इस बीच, जब हम प्रार्थना के साथ परिवर्तन की प्रतीक्षा करते हैं, तो हम जितना हो सके

761. John Stackhouse, Finally Feminist, पृ. 100.
762. John Stackhouse, Finally Feminist, पृ. 100.
763. Glenn Tinder, The Political Meaning of Christianity, पृ. 164. उद्धृत: Stackhouse, पृ. 97.

यीशु की विनम्रता और सहनशीलता का अनुकरण कर सकते हैं, और अपनी कलीसिया में जो कुछ भी आनंद मनाने योग्य है, उसका आनंद मनाने का अनुशासन सीख सकते हैं।

बहुत से विवाहों में पवित्रीकरण की प्रक्रिया अक्सर जीवनसाथी को ऐसी स्थिति में ले आती है जहाँ उसे अपने साथी की कोई बात सचमुच पसंद नहीं होती, फिर भी वह उस विवाह में बने रहने का अनुग्रह और दया पाता है, और उसमें वास्तविक अर्थ और आनंद पाता है। यही सिद्धांत हमारी कलीसिया पर भी लागू हो सकता है।

फिर भी, कुछ लोगों के लिए ऐसी कलीसिया में बने रहना, जो स्त्री-पुरुष परस्परता का समर्थन नहीं करती, असहनीय या अविवेकपूर्ण हो सकता है। जब परस्परतावादियों ने मुझसे पूछा है कि क्या उन्हें अपनी कलीसिया में बने रहना चाहिए या उसे छोड़ देना चाहिए, तो मैं उनसे दो प्रश्न पूछता हूँ। पहला है: "क्या आपके क्षेत्र में परस्परता को मानने वाली कोई ऐसी कलीसिया है जिसमें आप स्वयं को जाते हुए कल्पना कर सकते हैं?" छोटे कस्बों के लोगों के लिए ऐसा हो सकता है कि वहाँ ऐसी कोई कलीसिया हो ही नहीं।

दूसरा प्रश्न जो मैं पूछता हूँ, वह है: "यदि आप ऐसी दस बातों की सूची बनाएँ जो किसी कलीसिया में आपके लिए बहुत महत्वपूर्ण हैं, सबसे ऊँची से सबसे नीची तक, तो आप स्त्री-पुरुष परस्परता को कहाँ रखेंगे: पहली पाँच में, या अंतिम पाँच में?" मेरा अनुभवजन्य नियम – जिसे बिलकुल भी आत्मा की अगुवाई न समझा जाए – यह है कि यदि यह मूल्य आपकी शीर्ष पाँच बातों में है, तो आपके लिए उस कलीसिया में बने रहना शायद लंबे समय तक संभव न हो। पर यदि यह अंतिम पाँच में है, तो शायद यह इतना महत्वपूर्ण नहीं कि किस कलीसिया में जाएँ, इसका निर्णायक कारक बने।

यदि हम बने नहीं रह सकते और हमारे क्षेत्र में जुड़ने के लिए कोई उपयुक्त कलीसिया नहीं है, तो एक और विकल्प यह हो सकता है कि नई कलीसिया शुरू की जाए – निश्चय ही केवल तभी, जब परमेश्वर ऐसा निर्देश दें। कभी-कभी नए दाखरस को नई मशकों में रखना बेहतर हो सकता है, बजाय इसके कि एक पुरानी मशक पर दबाव डाला जाए जो पूरकतावाद के धागे से पूरी तरह सिली हुई है।



उपसंहार: यीशु स्त्रियों को कैसे देखते हैं

यीशु सिद्ध धर्मविज्ञान हैं। वे परमेश्वर का स्वयं-प्रकाशन हैं। यदि हम जानना चाहते हैं कि परमेश्वर स्त्रियों को कैसे देखते हैं, तो हमें इससे आगे जाने की आवश्यकता नहीं कि सुसमाचारों को पढ़कर जानें कि यीशु स्त्रियों को कैसे देखते हैं।

लूका 13 में यीशु सब्त के दिन एक आराधनालय में शिक्षा दे रहे हैं, जब उनका सामना एक ऐसी स्त्री से होता है जिसे शैतान ने अठारह वर्षों से अपंग कर रखा था। हमें बताया गया है, "वह कुबड़ी हो गई थी, और किसी रीति से सीधी नहीं हो सकती थी। यीशु ने उसे देखकर ..."

अब धीरे-धीरे ...

यीशु ने ...

देखा ...

उसे।

लूका के सुसमाचार में इससे पहले हम यीशु को एक पुरुष की यह देखने में मदद करते हुए पाते हैं कि वह एक स्त्री में वह देखे जो यीशु देखते हैं: "[यीशु ने] उस स्त्री की ओर फिरकर [उस पुरुष] से कहा, 'क्या तू इस स्त्री को देखता है?'"[764] उनका यह प्रश्न आज भी हममें से हर एक तक गूँजता है।

झुकी हुई स्त्री के प्रति यीशु की यह दृष्टि हमें उत्पत्ति में हाजिरा के प्रति परमेश्वर की दृष्टि की याद दिलाती है। जैसा परमेश्वर ने हाजिरा के लिए किया, वैसा ही यीशु यहाँ करते हैं। वे उसे केवल देखते ही नहीं। वे उसे मुक्त करते हैं। वे उसकी महानता को पुकारकर सामने लाते हैं। फिर, "उसने उसे बुलाकर कहा, 'हे नारी, तू अपनी दुर्बलता से छूट गई।'"[765] वे उसे छूते हैं; वह तुरंत सीधी हो जाती है – पहले से कहीं ऊँची – और परमेश्वर की स्तुति करती है!

क्या आप देख सकते हैं कि वहाँ उपस्थित लोग उसके साथ आनंद मना रहे हैं?

इतनी जल्दी नहीं: आराधनालय का सरदार क्रोध से भर जाता है कि यीशु ने उसे सब्त के दिन चंगा किया। इससे यीशु क्रोधित हो जाते हैं, और वे उस व्यक्ति पर आरोप लगाते हैं कि उसे इस स्त्री से अधिक अपने पशुओं की चिंता है।

764. लूका 7:44
765. लूका 13:11-13

यहीं रुकिए।

यह एक ऐसी स्त्री है जो लगभग दो दशकों से इस विश्वासी समुदाय में आती रही है – विकृत, और पीड़ा से दोहरी झुकी हुई। आत्मिक अगुवा, जिसका काम अपने समुदाय के लोगों को वैसे देखना है जैसे परमेश्वर उन्हें देखते हैं, उसकी दयनीय दशा से परेशान होता नहीं दिखता।

केवल जब वह सीधी खड़ी होती है, तभी उसे ठेस लगती है।

फिर यीशु उस सभा में और भी हलचल मचा देते हैं, जब वे इस स्त्री को एक ऐसी उपाधि देते हैं जो पहले कभी नहीं दी गई थी: "यह स्त्री, जो इब्राहीम की बेटी है।" Sarah Bessey इस क्षण पर टिप्पणी करती है: "लोगों ने केवल 'इब्राहीम के पुत्रों' के बारे में ही सुना था – बेटियों के बारे में कभी नहीं। पर यीशु के 'इब्राहीम की बेटी' शब्दों की ध्वनि के साथ ही उन्होंने उसे पुत्रों के साथ खड़े होने का स्थान दे दिया – विशेषकर उनके साथ, जो इस सब पर अपने स्वामित्व और विशिष्टता के बोध के साथ गुर्रा रहे थे।"[766]

केवल उसका नया नाम ही परमेश्वर के संसार में उसका स्थान बहाल नहीं करता। उसका नया कद भी ऐसा करता है। यीशु प्रतीकात्मक कार्य के स्वामी हैं। उसके अपमान, उसकी मानसिक वेदना और शारीरिक पीड़ा के बारे में सोचिए। पितृसत्तात्मक संसार में सभी स्त्रियाँ किसी न किसी रूप में झुकी हुई हैं – इस भ्रांत धारणा के बोझ तले कराहती हुई कि वे कभी-कभी पुरुषों से कम हैं, या पुरुषों के नीचे हैं। और यदि वे स्वयं को पुरुषों के सचमुच बराबर देखती भी हैं, तो भी बहुत बार उन्हें अपने पूरे वरदानों और योगदान तक फैलने की स्वतंत्रता महसूस नहीं होती।

नॉर्वे के एक तीसरी पीढ़ी के पास्टर ने हाल ही में मुझे अपने अस्सी वर्षीय दादा के साथ हुई बातचीत के बारे में बताया। "मुझे केवल एक बात का पछतावा है, और काश मैं वापस जाकर उसे बदल पाता," उस रोते हुए, मृत्यु के निकट पहुँचे व्यक्ति ने कहा। "मेरी पत्नी को उसके वरदानों में कभी पूरी तरह मुक्त नहीं किया गया। मैं उसे बदल सकता था। मैं उस कलीसियाई संस्कृति का सामना कर सकता था जिसने उसे छाया में रखा।"

सृष्टि और छुटकारा, दोनों हमें पितृसत्ता के समर्थकों की उन चालों के विरुद्ध खड़े होने के लिए जगाएँ, जो केवल पुरुषों को प्रभुता का अधिकारी बनाती हैं और स्त्रियों को घर तक सीमित करके पालतू बना देती हैं। उत्पत्ति 1 के अनुसार पीटर, सूज़न, एडमंड और लूसी – सब को साथ-साथ शासन करना है। और छुड़ाई गई स्त्रियों में वही स्वभाव है जो यहूदा के जी उठे सिंह का है। यद्यपि हममें से बहुत से लोग यीशु को घर का पालतू पशु बना देने के ख़तरे से सावधान रहते हैं, फिर भी हम उनकी उन राजसी बहनों को दबा देते हैं जिनमें सिंह का लहू बहता है।

जैसा यीशु ने उन सारी सदियों पहले इब्राहीम की इस बेटी के लिए किया, वैसा ही वे आज भी करते हैं: उनका सामना करते हैं जो स्त्रियों को झुका हुआ देखना पसंद करते हैं; कुचले हुए सरकंडों पर चंगाई का मरहम लगाते हैं; और दोहरे झुके पौधों को धार्मिकता के ऊँचे बांजवृक्षों में बदल देते हैं। यह हमारा सौभाग्य और हमारी ज़िम्मेदारी है कि हम इस पवित्र कार्य में उनके साथ जुड़ें – और हर स्त्री को आमंत्रित करें कि वह पुरुषों के साथ-साथ फैलकर और ऊपर उठकर उन सब बातों तक पहुँचे, जो परमेश्वर ने उसके लिए ठहराई हैं।

766. Sarah Bessey, Jesus Feminist, अध्याय 1.

परिशिष्ट 1: क्या परमेश्वर पुरुष हैं?

पवित्रशास्त्र में परमेश्वर स्वयं को मुख्यतः पुरुषवाचक रूपों में प्रकट करते हैं। यदि यीशु परमेश्वर का सर्वोच्च स्वयं-प्रकाशन हैं, तो उनका पुरुष होना इस बोध को और भी उभार देता है। बहुत से नारीवादी केवल इसी आधार पर पवित्रशास्त्र को अस्वीकार करते हैं – वे कहते हैं कि पुरुष परमेश्वर स्पष्ट रूप से पुरुषों की गढ़ी हुई एक पितृसत्तात्मक रचना है, और एक ऐसी कृति है जो स्त्रियों पर पुरुषों की प्रधानता और सत्ता का पक्ष लेती है। यह सच है कि मसीही पुरुषों ने पूरे इतिहास में इसे सत्ता में बने रहने के अपने अधिकार के तर्क के रूप में इस्तेमाल किया है। आख़िरकार, पवित्रशास्त्र को इस निष्कर्ष के समर्थन में आसानी से इस्तेमाल किया जा सकता है (जैसे लगभग हर दूसरे प्रकार के उत्पीड़न के समर्थन में)। क्या बाइबल को परमेश्वर के वचन के रूप में – परमेश्वर के "पुरुषत्व" के उसके चित्रण समेत – स्वीकार करने का कोई ऐसा तरीका है जिससे पितृसत्ता एक आदर्श के रूप में पुष्ट न हो?

बिलकुल है! पर केवल तभी, जब कोई पवित्रशास्त्र को सावधानी से पढ़े।

हर युग के अधिकतर गंभीर धर्मविज्ञानियों ने इस विचार को ख़ारिज किया है कि परमेश्वर के जननांग या मानवीय पुरुषत्व के अन्य लक्षण हैं। एक अर्थ में परमेश्वर न पुरुष हैं न स्त्री, फिर भी जिस ढंग से वे स्वयं को हम पर प्रकट करना चुनते हैं, उसमें वे पुरुष और स्त्री दोनों हैं। इसका सबसे अच्छा प्रमाण बाइबल का पहला अध्याय है: "तब परमेश्वर ने मनुष्य को अपने स्वरूप के अनुसार उत्पन्न किया, अपने ही स्वरूप के अनुसार परमेश्वर ने उनको उत्पन्न किया; नर और नारी करके उसने उनकी सृष्टि की।"[767] ध्यान दीजिए कि नर और नारी मिलकर परमेश्वर के सार के किसी पहलू को सबसे अच्छी तरह मूर्त और व्यक्त करते हैं। ऐसा नहीं है कि पुरुष स्वरूप-धारी परमेश्वर के समान है, जबकि स्त्री स्वरूप-धारी परमेश्वर से भिन्न है। स्त्रियाँ और पुरुष, दोनों अपना सार परमेश्वर से पाते हैं और किसी न किसी रूप में उनकी समानता से जुड़े हैं।

परमेश्वर के स्त्री-रूपी चित्र

अधिकतर कलीसियाई अगुवे और बाइबल के प्रचारक यह मानते हैं कि परमेश्वर पुरुष और स्त्री दोनों हैं, भले ही पवित्रशास्त्र में वे अधिकतर पुरुषवाचक रूपों में प्रकट हुए हैं। फिर भी, जिन कलीसियाई परंपराओं का मैं हिस्सा रहा हूँ, उनमें मैंने देखा है कि हम उन्हें बहुत बार सदा पुरुष और कभी नहीं स्त्री के रूप में प्रस्तुत करते हैं।

इस बीच, बाइबल परमेश्वर के अनेक स्त्री-रूपी चित्र देती है। Margo Houts The IVP Women's Bible Commentary[768] में परमेश्वर के वर्णनों के नमूने देती है, जिनमें परमेश्वर को एक माँ के रूप में

767. उत्पत्ति 1:27
768. Margo G. Houts, "Images of God as Female," The IVP Women's Bible Commentary में, पृ. 356-58. उद्धृत: Peppiatt, अध्याय 1.

प्रस्तुत किया गया है जो इस्राएलियों को जन्म देती है; अपने बच्चों को दूध पिलाती है; अपने दूध पीते बच्चे को नहीं भूलती; अपने बच्चों को शांति देती है; और अपने बच्चों को पुकारती, सिखाती, गोद में उठाती, चंगा करती और खिलाती है।[769] बाइबल की कहानी में विभिन्न स्थानों पर परमेश्वर एक दर्ज़िन हैं जो इस्राएल के पहनने के लिए कपड़े बनाती हैं; जन्म के समय सहायता करने वाली दाई हैं; अधिकार वाली एक स्त्री हैं "जिसकी ओर उसकी दासी दया के लिए देखती है;" रोटी में ख़मीर मिलाती एक स्त्री हैं; और प्रसव-पीड़ा में पड़ी एक स्त्री हैं, जिसकी ज़ोरदार साँसें ईश्वरीय सामर्थ्य का चित्र हैं।[770] जब यीशु उस भीड़ पर दृष्टि डालते हैं जो जल्द ही उन्हें क्रूस पर चढ़ाने वाली है, तो वे पुकार उठते हैं, "हे यरूशलेम, हे यरूशलेम! तू जो भविष्यद्वक्ताओं को मार डालता है, और जो तेरे पास भेजे गए, उन्हें पत्थरवाह करता है; कितनी ही बार मैंने चाहा कि जैसे मुर्गी अपने बच्चों को अपने पंखों के नीचे इकट्ठा करती है, वैसे ही मैं भी तेरे बालकों को इकट्ठा कर लूँ, परन्तु तुमने न चाहा।"[771] ऐसा करके वे अपने लिए परमेश्वर का एक बार-बार आने वाला चित्र अपनाते हैं – एक मादा पक्षी, जो अपने बच्चों को अपने पंखों के नीचे ढाँपकर दिलासा देती है,[772] और जिसे अक्सर उकाब बताया गया है[773]। एक और स्थान पर परमेश्वर के प्रचंड प्रेम की तुलना एक क्रुद्ध रीछनी से की गई है: "बच्चे छीनी हुई रीछनी के समान मैं उन पर टूट पड़ूँगा और उन्हें चीर डालूँगा।"[774]

मैं इन दिनों अपने बच्चों के साथ बाइबल के कुछ चुने हुए अंश पढ़ रहा हूँ। जब मैंने पहली बार नीतिवचन 8 पढ़ा, जिसमें बुद्धि को एक स्त्री के रूप में चित्रित किया गया है, जिसके द्वारा सृष्टि जन्म लेती है, तो मैंने उनसे पूछा कि उन्हें अध्याय का कौन सा भाग सबसे अच्छा लगा – मेरी बेटी ने प्रसन्न होकर कहा कि उसे यह बात अच्छी लगी कि परमेश्वर एक स्त्री हैं। मैंने कोमलता से उसे सुधारा और समझाया कि यह अंश वास्तव में बुद्धि को एक प्रकार की मध्यस्थ आकृति के रूप में बताता है, जो न परमेश्वर है न सृष्टि।

फिर भी और विचार करने पर – स्वयं पौलुस ने, और उसके बाद आरंभिक कलीसिया के बहुत से धर्माचार्यों (Church Fathers) और प्राचीन धर्मविज्ञानियों ने यह ध्यान दिलाया है कि इस अंश में जितना हम मानते हैं, उससे अधिक कुछ हो रहा है। पौलुस स्पष्ट रूप से सिखाता है कि यीशु "परमेश्वर की बुद्धि" हैं, वे जिनमें "बुद्धि के सारे भण्डार छिपे हुए हैं।"[775] मसीह, जो बुद्धि का ही देहधारण हैं, स्वयं परमेश्वर भी हैं और वे भी जिनके द्वारा सृष्टि बनी। इसी प्रकार कलीसिया के धर्माचार्य Irenaeus ने इस रहस्यमयी स्त्री को परमेश्वर के अस्तित्व का एक पहलू समझा, जो या तो पवित्र आत्मा की ओर संकेत करती है या वचन के रूप में यीशु की ओर (यूहन्ना 1:1-3 और इब्रानियों 1:1-2 में यीशु का उल्लेख)। हम निश्चित नहीं हो सकते, पर यह तथ्य कि नए नियम के लेखक और Irenaeus "उसे" पुत्र और आत्मा से जोड़ते हैं, परमेश्वर के उन रहस्यों को मिटाने के हमारे प्रयासों को चुनौती देता है, जिन्हें यहाँ स्त्री-रूप में चित्रित किया गया है।

769. गिनती 11:12; व्यवस्थाविवरण 32:18; यशायाह 49:14-15, 66:12-13; होशे 11:1-4
770. नहेम्याह 9:21; भजन संहिता 22:9-10; 71:6; यशायाह 66:9; भजन संहिता 123:4; लूका 13:20-21; यशायाह 42:14
771. मत्ती 23:37
772. भजन संहिता 17:8; 36:7; 57:1; 91:1, 4; यशायाह 31:5
773. व्यवस्थाविवरण 32:11-12; निर्गमन 19:4; अय्यूब 39:27-30
774. होशे 13:8
775. 1 कुरिन्थियों 1:30 और कुलुस्सियों 2:3

परमेश्वर तुतलाते हैं

सुधारवादी धर्मविज्ञानी John Calvin इस बात से जूझा कि पवित्रशास्त्र परमेश्वर के "मुँह, कान, आँखें, हाथ और पाँव" बताता है। उसने समझाया कि इन्हें शाब्दिक रूप से नहीं लेना चाहिए: "जैसे धाइयाँ शिशुओं के साथ करती हैं, वैसे ही परमेश्वर हमसे बात करते समय 'तुतलाते' हैं। बोलने के ऐसे रूप यह इतना स्पष्ट रूप से व्यक्त नहीं करते कि परमेश्वर कैसे हैं, जितना वे उनके ज्ञान को हमारी छोटी क्षमता के स्तर पर उतार लाते हैं। ऐसा करने के लिए उन्हें अपनी ऊँचाई से बहुत नीचे उतरना पड़ता है।"[776]

परमेश्वर की इस तत्परता के लिए, कि वे स्वयं को हमारे मन के सामने मानवीय रूपों में प्रस्तुत करें, धर्मविज्ञान का शब्द है मानवरूपता (anthropomorphism), जिसका अर्थ है मनुष्य का रूप लेना। "स्तर पर उतार लाना" (accommodate) शब्द से Calvin का अर्थ है कि परमेश्वर अपनी अथाह ऊँचाई से नीचे झुकते हैं और "तुतलाते" हैं, ताकि हम सीमित प्राणी उन्हें और अधिक समझना शुरू कर सकें। परमेश्वर के पास हमें दिखाने को बहुत कुछ है, पर उन्हें हमारी भाषा, हमारे विचार-रूपों और मानवीय अनुभवों की हमारी सीमा से ही काम चलाना पड़ता है। हमारे स्तर पर उतरने के ये रूप, यद्यपि बहुत कुछ प्रकट करते हैं, फिर भी उस अनंत और पवित्र परमेश्वर के बारे में जानने योग्य सब कुछ नहीं समेटते, जो अपनी परिभाषा से ही इतने महान हैं कि सृजित मन की सीमाओं में बंद नहीं किए जा सकते। यह सच है कि परमेश्वर दाख की बारी के स्वामी, शरण देने वाली चट्टान, प्रचंड योद्धा, पति, माँ, पिता, कुम्हार, चरवाहा, निर्माता और राजा हैं – इनमें से हर एक हमें परमेश्वर के बारे में कुछ वास्तविक बताता है, पर उनके बारे में सब कुछ नहीं। और हमें इन रूपकों को बहुत दूर तक नहीं खींचना चाहिए – सबसे अच्छी उपमाएँ भी परमेश्वर के बारे में सब कुछ पूरी तरह व्यक्त नहीं करतीं।

इसी प्रकार, जब परमेश्वर स्वयं को पुरुष के रूप में प्रकट करते हैं, तो वे तुतला रहे होते हैं। उन देवताओं के विपरीत जिन्हें पुरुष और स्त्री के रूप में सोचा जाता है, यहोवा शाब्दिक रूप से पुरुष नहीं हैं। उनका पुरुषत्व एक उपमा है। परमेश्वर जिस भी उपमा का प्रयोग करते हैं, उसकी एक सीमा होती है। उदाहरण के लिए, परमेश्वर की भुजाओं और आँखों का उल्लेख होता है, पर पुरुषत्व की उपमा हमें उनकी कमर के नीचे के भाग की कल्पना करने की ओर नहीं ले जाती। यीशु ने सिखाया कि परमेश्वर आत्मा हैं।[777] इसलिए उनका कोई पुरुष शरीर नहीं है, न उससे जुड़े अंग। मानवीय रूपक अधिक से अधिक एक ऐसे परमेश्वर के किसी भाग का वर्णन करने का प्रयास होंगे जो वास्तव में अवर्णनीय हैं। पवित्रशास्त्र में परमेश्वर के लिए इतनी प्रचलित पुरुष-छवि वास्तव में यह संकेत नहीं देती कि परमेश्वर लिंगधारी, देहधारी या यौन प्राणी हैं – ठीक वैसे ही जैसे वह यह संकेत नहीं देती कि कलीसिया वास्तव में अपने पति की प्रतीक्षा करती एक कुँवारी दुल्हन है। फिर भी, इससे एक प्रश्न उठता है।

776. John Calvin, Institutes of the Christian Religion, 1.13.1. उद्धृत: Peppiatt, अध्याय 1.
777. यूहन्ना 4:24

परमेश्वर का पुरुषत्व इतना प्रचलित क्यों है?

यदि परमेश्वर वास्तव में पुरुष नहीं हैं, तो फिर उन्होंने पवित्रशास्त्र में स्वयं को अधिकतर पुरुष के रूप में प्रकट करना क्यों चुना? परमेश्वर स्वयं को हम पर "himself" (पुल्लिंग रूप) के रूप में क्यों प्रकट करते हैं, "herself" (स्त्रीलिंग रूप) के रूप में नहीं?

बाइबल की हर पुस्तक हमारे लिए लिखी गई, पर ज़रूरी नहीं कि हमें संबोधित करके लिखी गई हो। हर लेखक – मूसा, आमोस, दाऊद, पतरस – ने विशेष लोगों को, विशेष समय पर, विशेष परिस्थिति में लिखा। हम परमेश्वर के वचन को हमारे लिए तभी समझ सकते हैं, जब हम परमेश्वर के वचन को उनके प्रति ठीक से समझ लें। इसीलिए परमेश्वर के वचन को समझने के लिए हमें अपनी संस्कृति की संवेदनाओं और मान्यताओं को एक ओर रखना होगा, और उनकी संस्कृति के ढाँचे में प्रवेश करने का पूरा प्रयास करना होगा। इससे हमें अपने उत्तर का एक भाग मिलता है: पवित्रशास्त्र में अधिकतर स्थानों पर परमेश्वर ने एक प्राचीन पितृसत्तात्मक संस्कृति के स्तर पर पुरुष के रूप में उतरना ही सबसे अच्छा समझा। कनाडा के धर्मविज्ञानी John Stackhouse हमें यह सोचने की चुनौती देता है कि ऐसा क्यों हो सकता है। उसका सुझाव यह है:

पवित्रशास्त्र में परमेश्वर अपने बारे में दो मुख्य बातें मनुष्यों तक पहुँचाना चाहते हैं। पहली यह कि वे सर्वोपरि, सर्वशक्तिमान, स्वयं-अस्तित्ववान हैं; सब वस्तुओं के सृष्टिकर्ता[778] और पालनहार, इतिहास के रचयिता, धार्मिकता के संरक्षक, पृथ्वी के न्यायी, युगों को पूर्णता तक पहुँचाने वाले। पुराने और नए नियम की संस्कृतियों के लोगों तक परमेश्वर यह बात सबसे अच्छी तरह कैसे पहुँचाते? स्वामी, शासक, सम्राट, न्यायी, मालिक की छवि का प्रयोग करके – ऐसे पदों की छवियाँ, जो उन संस्कृतियों में आम तौर पर पुरुषों के पास होते थे।

दूसरी, पूरक बात जो परमेश्वर हम तक पहुँचाना चाहते थे, यह है कि वे मनुष्यों की, और बाकी सृष्टि की भी, गहरी परवाह करते हैं। परमेश्वर ने हमें बनाया, वे हमारी देखभाल करते हैं, हमें अनुशासित करते हैं, और हमें अपने साथ नई संगति में खींचते हैं। विशेष रूप से, परमेश्वर एक प्रजा को चुनते और सँजोते हैं, उनके साथ देखभाल की वाचा बाँधते हैं, और उनके साथ विश्वासयोग्य, परस्पर भक्ति का एक अनंत बंधन गढ़ना चाहते हैं। पुराने और नए नियम की संस्कृतियों के लोगों तक यह बात कैसे पहुँचाई जाए? प्रेमी की छवि का प्रयोग करके – माता-पिता की, हाँ, पर उससे भी अधिक विवाह का प्रस्ताव रखने वाले और जीवनसाथी की। स्वामी और प्रेमी के विचारों को जोड़ने के लिए निश्चय ही अधिकतर पुरुषवाचक छवियों की आवश्यकता होती। उन संस्कृतियों में, जहाँ प्रेम-प्रस्ताव में पहल पुरुष करते थे और उन्हें दुल्हन को रिझाकर जीतना होता था (सामान्यतः उसके माता-पिता की सहमति से), एक पुरुष प्रेमी की छवि सबसे स्वाभाविक रूप से काम करती

778. मुझे परमेश्वर के पुरुष सृष्टिकर्ता होने के विचार को थोड़ा विस्तार देने दीजिए। चूँकि पुराना नियम इस विचार पर बल देता है कि परमेश्वर झूठे देवताओं से भिन्न हैं, और अपनी सृष्टि में सम्मिलित होते हुए भी उससे अलग हैं, इसलिए पुरुष सृष्टिकर्ता के रूप में परमेश्वर का हमारे स्तर पर उतरा हुआ प्रकाशन यह बात उससे बेहतर ढंग से व्यक्त करता है जितना तब होता, यदि परमेश्वर स्त्री सृष्टिकर्ता होते। उदाहरण के लिए, प्रजनन में माताएँ अपने भीतर से जीवन उत्पन्न करती हैं, जिससे इस रूपक में सृष्टिकर्ता और सृष्टि के बीच का मूलभूत भेद खो जाता।

थी। उन संस्कृतियों में, जहाँ पति और पिता अपने घरानों पर शासन करते थे, उनकी भौतिक ज़रूरतें पूरी करते थे और उनकी रक्षा करते थे, पुरुषवाचक छवि सबसे स्वाभाविक रूप से काम करती थी।

"तुतलाने" में ग़लत समझे जाने का जोखिम रहता है। हमारे स्तर पर उतरना वह जोखिम है जो परमेश्वर उठाते हैं। अपने स्वयं-प्रकाशन को हमारे विचार-रूपों और सांस्कृतिक समझ के स्तर पर उतारने का अर्थ यह नहीं कि वे उनका पूरी तरह समर्थन करते हैं। उदाहरण के लिए, परमेश्वर के स्वयं को राजा के रूप में प्रकट करने का अर्थ यह नहीं कि राजतंत्र लोकतंत्र से श्रेष्ठ है। यह केवल दिखाता है कि हम जहाँ हैं, वहाँ हमसे मिलने के लिए परमेश्वर किस हद तक जाते हैं।

यही बात परमेश्वर के – फिर से पुरुषवाचक छवि का प्रयोग करते हुए – पिता और पुत्र के रूप में स्वयं-प्रकाशन के बारे में भी कही जा सकती है। यह पिता–पुत्र संबंध एक शक्तिशाली और समृद्ध रूपक है: उन तरीकों के लिए जिनसे यीशु यहोवा को इतने प्रभावी ढंग से प्रकट करते हैं; उस ढंग के लिए जिससे पुराना नियम इस्राएल को और प्रतिज्ञा किए हुए दाऊदवंशी राजा, दोनों को "परमेश्वर का पुत्र" दर्शाता है; और उस घनिष्ठ संबंध के लिए जो पुत्र और पिता के बीच है (और उस ढंग के लिए जिससे हम, यीशु के गोद लिए हुए भाई-बहनों के रूप में, पिता की देखभाल में स्वागत पाते हैं)। पर यह फिर भी एक उपमा है। रूपक का हर आयाम सत्य नहीं है – पिता किसी यौन प्रजनन से उत्पन्न पुत्र के शाब्दिक पिता नहीं हैं।

"तू एक पुत्र को जन्म देगी"[779]

ये जिब्राईल के वे शब्द हैं जो उसने कुँवारी मरियम से कहे। सहस्राब्दियों बाद, उन शब्दों की पूर्ति – कि यीशु पुत्र थे, पुत्री नहीं – संभवतः इस निष्कर्ष की ओर ले जाती है कि परमेश्वर पितृसत्ता का समर्थन करते हैं। सदा के लिए हमारे एकमात्र उद्धारकर्ता और प्रभु पुरुष हैं।

जब प्रेरित यूहन्ना परमेश्वर के प्रकाशन के सबसे महान कार्य का वर्णन करने का प्रयास करता है, तो वह कहता है, "वचन देहधारी हुआ।"[780] मानव जाति के लिए परमेश्वर का मुख्य उपहार एक व्यक्ति है। पृथ्वी पर उन 33 वर्षों में, नासरत के एक यहूदी के रूप में हमारे साथ यीशु की देहधारी उपस्थिति ने उन सभी तरीकों को पीछे छोड़ दिया जिनसे परमेश्वर ने स्वयं को प्रकट किया था, क्योंकि यीशु परमेश्वर का प्रत्यक्ष, बिना मध्यस्थ का संवाद हैं। यह एक शाब्दिक मानवरूपता है – परमेश्वर ने सचमुच आँखें, हाथ, मुँह और एक पुरुष शरीर धारण किया।

तो फिर यीशु पुरुष क्यों थे?[781]

शायद इसलिए कि एक पितृसत्तात्मक संसार में यह कलीसिया के प्रभु और पति के रूप में उनकी पहचान को, और भरण-पोषण तथा रक्षा करने की उनकी क्षमता को बेहतर ढंग से दर्शाता था। यीशु का पुरुष होना

779. लूका 1:31 में जिब्राईल के वे शब्द जो उसने कुँवारी मरियम से कहे
780. यूहन्ना 1:14
781. इसके बाद आने वाले इस प्रश्न के उत्तर में मेरी सहायता करने के लिए Lucy Peppiatt के "Rediscovering Scripture's Vision of Women" के पहले अध्याय का धन्यवाद।

पुराने नियम के उन विषयों को भी चरम पर पहुँचाता है जो मसीहा को एक नई मानवता के सिर (नया आदम), एक नए निर्गमन (नया मूसा), और एक नए राज्य (नया दाऊद) के रूप में प्रकट करते हैं। उनका पुरुष होना हमारा सेवक बनने के उनके चुनाव के प्रभाव को और दृढ़ करता है। उस आदर–लज्जा वाली संस्कृति में, जिसमें परमेश्वर के पुत्र ने प्रवेश किया, स्त्रियाँ पहले से ही पुरुषों के अधीन कर दी गई थीं। एक पुरुष उद्धारकर्ता उसकी अंतर्निहित सत्ता-संरचनाओं को बेहतर ढंग से पराजित कर सकता था: वे अपने अधिकार को एक ओर रखकर उद्धार करते हैं, और स्वेच्छा से एक सेवक की भूमिका लेते हैं, जो हम सबको बचाने और हमारी सेवा करने के लिए अपनी शक्तियाँ त्याग देता है।

इन बाइबलीय विषयों और संदर्भगत वास्तविकताओं से आगे, हमें यीशु के पुरुष होने के अर्थ को बढ़ा-चढ़ाकर नहीं आँकना चाहिए। दूसरी ओर, हमें उन्हें एक उभयलिंगी प्राणी के रूप में भी नहीं देखना चाहिए। फिर भी, जब परमेश्वर का पुत्र हममें से एक बना, तो उन्होंने पुरुषत्व उतना धारण नहीं किया जितना मानव स्वभाव। धर्मविज्ञान की दृष्टि से कलीसिया ने सदा इस बात पर बल दिया है कि यीशु पुरुष यौनता को उतना धारण नहीं कर रहे थे जितना वे मानव स्वभाव को उसकी संपूर्णता में धारण कर रहे थे – चाहे पुरुष हो या स्त्री। इसीलिए वे अपनी क्रूस पर चढ़ाई गई और जी उठी पार्थिव देह में पुरुषों और स्त्रियों, दोनों का उद्धार कर सकते हैं। और इसीलिए पुरुष और स्त्रियाँ, दोनों उनकी आत्मिक देह, अर्थात् कलीसिया, का भाग हो सकते हैं।

परमेश्वर के पुत्र के अर्थ को उनकी शारीरिकता और पृथ्वी के जीवन तक सीमित कर देना एक भूल है। हम सुसमाचारों को ऊपर-ऊपर से पढ़ सकते हैं, पर फिर भी उनके बारे में बहुत कुछ चूक सकते हैं। यीशु शायद परमेश्वर के बारे में हमारे ज्ञान की सबसे महत्वपूर्ण बात हों, पर परमेश्वर के पुत्र को हम वास्तव में कितना जानते हैं? जो चेले उनके साथ चले और जिन्होंने उनसे बातें कीं, उन्हें भी यह एहसास हुआ कि वे अपने सामने खड़े व्यक्ति की केवल ऊपरी सतह ही छू रहे थे। रूपांतरण को लीजिए: उनकी आँखों के सामने यीशु के रूपांतरित होने से पहले, वे शायद उन्हें चमत्कार करने वाले यहूदिया के एक यहूदी के रूप में जानते रहे हों। पर बाद में वे कहते, “हम उसके प्रताप के प्रत्यक्षदर्शी थे,” और “परमेश्वर को किसी ने कभी नहीं देखा, परन्तु एकलौते पुत्र ने, जो स्वयं परमेश्वर है और पिता के सबसे निकट संबंध में है, उसे प्रगट किया।”[782] Lucy Peppiatt चेलों के अनुभव और हमारे लिए उसके अर्थ पर विचार करती है: “हम कह सकते हैं कि यीशु में जितना आँखों से दिखता है, उससे अधिक है। ... इसलिए हमें ध्यान रखना होगा कि हम यीशु को इस प्रकार प्रस्तुत करें कि देह में आया वचन देह तक सीमित न कर दिया जाए। ... संक्षेप में, हम जानते हैं कि अभी हम केवल अधूरा जानते हैं, और हमें दर्पण में धुँधला सा दिखाई देता है।”[783] यह सच है कि पृथ्वी पर यीशु परमेश्वर का प्राथमिक स्वयं-प्रकाशन हैं, पर यह निश्चय ही सच नहीं कि यीशु की पार्थिव देह परमेश्वर का एकमात्र स्वयं-प्रकाशन है। परमेश्वर के पुत्र में यीशु के पुरुषत्व से कहीं अधिक है – यह एक ऐसा तथ्य है जो कलीसिया में स्त्रियों की अगुवाई के विरुद्ध एक आम आपत्ति पर सावधानी से विचार करने में हमारी सहायता करता है।

782. 2 पतरस 1:16 और यूहन्ना 1:18
783. Lucy Peppiatt, Rediscovering Scripture’s Vision for Women, अध्याय 1.

क्या एक पुरुष अगुवा पुरुष मसीह का बेहतर प्रतिनिधित्व करता है?

कुछ प्रोटेस्टेंट कलीसियाएँ, और अधिकतर कैथोलिक कलीसियाएँ, स्त्रियों को कलीसिया की वरिष्ठ अगुवाई या याजकपद से बाहर रखने के लिए यह तर्क देती हैं: "एक पुरुष, अपने पुरुष होने के कारण, कलीसिया के सामने यीशु का प्रतिनिधित्व बेहतर ढंग से करता है।"

कैथोलिक इस विचार को इसलिए अपनाते हैं क्योंकि उनकी परंपरा में याजक परमेश्वर और मंडली के बीच मध्यस्थ की भूमिका निभाता है। विशेषकर यूखारिस्त (प्रभु भोज) की अध्यक्षता करते समय याजक मसीह का प्रतिनिधित्व करता है।[784]

यदि मैं पास्टर/याजक के यीशु का विशेष रूप से प्रतिनिधित्व करने के इस विचार को मानता भी (जो मैं नहीं मानता, क्योंकि इसका कोई बाइबलीय आधार नहीं है), तो भी यह तर्क टिकता नहीं। कलीसिया के अगुवे में यीशु के पुरुषत्व को ही क्यों दर्शाया जाना चाहिए, और उनके यहूदी होने को क्यों नहीं (जिससे अन्यजाति बाहर हो जाते), उनके शारीरिक रूप से सक्षम होने को क्यों नहीं (जिससे विकलांग लोग बाहर हो जाते), या उनके अविवाहित होने को क्यों नहीं (जिससे विवाहित लोग बाहर हो जाते)? (वैसे, सूची की अंतिम बात कैथोलिक धर्म में याजकों के ब्रह्मचर्य का एक मुख्य तर्क है।[785]) यद्यपि कैथोलिक धर्म अपने सिद्धांत केवल पवित्रशास्त्र से ही नहीं, बल्कि कलीसिया के धर्माचार्यों से भी लेता है, फिर भी यह विचार कलीसिया के धर्माचार्यों के लेखों में भी कहीं नहीं मिलता।[786]

सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि यह दावा, कि एक पुरुष अगुवा पुरुष मसीह का बेहतर प्रतिनिधित्व करता है, याजक/कलीसिया के अगुवे के मसीह का प्रतिनिधि होने और मसीह की प्रतिकृति, यानी शारीरिक समानता, होने के बीच अंतर नहीं करता। यह कहने का कोई बाइबलीय आधार नहीं कि अगुवे या प्रचारक को शारीरिक रूप से यीशु जैसा दिखना चाहिए – जबकि यह कहने के लिए बहुत से बाइबलीय प्रमाण हैं कि कोई भी व्यक्ति यीशु का प्रवक्ता बनकर उनका प्रतिनिधि हो सकता है।[787]

784. इस सिद्धांत को "in persona Christi" (अर्थात् "मसीह के व्यक्तित्व में") कहा जाता है।
785. इस तर्क का श्रेय "Finally Feminist" में John Stackhouse को जाता है।
786. "Cyprian का एक अंश है जिसे विधिवत नियुक्त सेवकाई के in persona Christi धर्मविज्ञान के आरंभिक उदाहरण के रूप में प्रस्तुत किया गया है, पर यह लगभग निश्चित रूप से एक ग़लत पठन है।" "Responsum Ad Propositum Dubiu" में Cardinal Ratzinger का यह दावा कि यह सिद्धांत "परमेश्वर के लिखित वचन पर आधारित है, और आरंभ से ही कलीसिया की परंपरा में निरंतर सुरक्षित रखा और लागू किया गया है", सत्यापन योग्य आधार से रहित है। यह शिक्षा पहली बार मध्य युग में Thomas Aquinas द्वारा लाई गई। (William Witt, Icons of Christ, अध्याय 10.)
787. उदाहरण के लिए 1 पतरस 4:11 देखिए, जो "कोई" (anyone) शब्द का प्रयोग करता है – एक ऐसा शब्द जिसमें स्त्री और पुरुष दोनों शामिल हैं।

परिशिष्ट 2: पतन से पहले आदम और हव्वा (जारी)

जब कोई पाठक पहले से तय कर लेता है कि पवित्रशास्त्र का कोई कथा-भाग कुछ सिखाता है, चाहे वह उसे न सिखाता हो, तो उस पहले से बने निष्कर्ष को सहारा देना संभव है – तरह-तरह के ऐसे अनुमानों पर अटकलें लगाकर, जो उस खंड की स्पष्ट शिक्षा से आगे निकल जाते हैं। अध्याय 4 में मैंने उन पाँच लोकप्रिय अनुमानों को सामने रखा और उनकी समीक्षा की, जिन्हें पूरकतावादी विद्वान उत्पत्ति 2-3 में पढ़ लेते हैं। इस परिशिष्ट में मैं कुछ और आम तर्कों का उत्तर दूँगा।

"परमेश्वर ने 'MAN' (मनुष्य) को अपने स्वरूप में बनाया"

कुछ पूरकतावादी तर्क देते हैं कि चूँकि मानव जाति को (उत्पत्ति 1:27 में) "man" (मनुष्य, पुरुष) कहा गया है, इसलिए परमेश्वर अगुवाई के लिए स्त्रियों को नहीं, पुरुषों को पसंद करते होंगे। Ray Ortlund यही तर्क देता है: "परमेश्वर का मानव जाति को 'man' नाम देना पुरुष के सिर होने की ओर धीमे से संकेत करता है।" लेकिन यह तर्क अपने प्रमाण-पद को उसके संदर्भ में नहीं पढ़ता। पहली बात, यह साहित्यिक संदर्भ को अनदेखा करता है। यह सच है कि उत्पत्ति 1:27 कहता है, "परमेश्वर ने man (या mankind, मानवजाति) को अपने स्वरूप में बनाया।" पर वही पद स्पष्ट करता है कि "man" में नर और नारी दोनों शामिल हैं।[788]

दूसरी बात, यह पुरुष-केंद्रित (androcentric) संदर्भ को अनदेखा करता है। परमेश्वर का वचन हम तक एक सामान्य प्राचीन निकट-पूर्वी संस्कृति के भाषा-रूप में आता है, जिसमें पुल्लिंग संज्ञाएँ अक्सर दोनों लिंगों के लिए प्रयोग होती हैं। पिछले कुछ दशकों में अंग्रेज़ी शब्द "mankind" की जगह अधिक समावेशी शब्द "humankind" (मानवजाति) ने ले ली है। इसका कारण यह है कि हम एक नए युग में जी रहे हैं, जिसमें भाषा की भी पुरुष-केंद्रित प्रवृत्तियों की छँटाई हो रही है। इसके विपरीत, पहले पाठक ऐसी संस्कृति में रहते थे जहाँ पुरुष-केंद्रित भाषा पर कोई प्रश्न नहीं उठता था और वह सामान्य बात थी।

तीसरी बात, इसका तर्क दोषपूर्ण है। उत्पत्ति 1 में इब्रानी शब्द ha'adam (जिसे Adam नाम से या पुरुष के लिए प्रयुक्त शब्द से नहीं मिलाना चाहिए) का अर्थ है मानवजाति, "पुरुषजाति" नहीं। यदि परमेश्वर का अभिप्राय यह होता कि ha'adam का अर्थ "पुरुषजाति" हो (जो उनका अभिप्राय नहीं है), तो स्त्रियाँ केवल बाद में सूझी हुई चीज़, या मनुष्य से कुछ कम ठहरतीं। फिर भी अब कोई पूरकतावादी ऐसा नहीं मानता – 1960 के दशक से पहले माना जाता था कि स्त्रियाँ हीन हैं, पर अब नहीं; और इसी कारण उनका फिर यह तर्क देना अजीब, मनमाना और असंगत है, जैसा Ortlund करता है, कि इससे स्त्री की हीनता नहीं, केवल उसकी अधीनस्थ स्थिति निकलती है।

788. उत्पत्ति 5:2 भी देखें, जहाँ "man" (मनुष्य, या "mankind", मानवजाति) नाम दोनों लिंगों के लिए आता है।

आदम मानव जाति का प्रतिनिधि है

पतन से पहले की वाटिका में एक समय ऐसा है जब आदम अकेला मनुष्य है, और इसलिए उस समय वह आगे आने वाली पूरी मानवता का – उन सबका जो "आदम में" हैं – प्रतिनिधित्व करता है। वास्तव में उत्पत्ति 2 से यह अंतर्दृष्टि भी निकाली जा सकती है कि हव्वा भी "आदम में" थी। उदाहरण के लिए, उसकी देह आदम की देह से निकली (जैसे हमारी भी निकली है)। इसके अलावा, यद्यपि परमेश्वर ने हव्वा के अस्तित्व में आने से पहले पुरुष को आज्ञा दी थी, फिर भी उस आज्ञा का पालन न करने के लिए वह परमेश्वर के प्रति उत्तरदायी थी। और यद्यपि उत्पत्ति 3 में केवल आदम को मृत्यु और फिर निष्कासन का दंड सुनाया गया, हव्वा भी लज्जा के साथ वाटिका से बाहर निकली और मिट्टी में लौट गई – स्पष्ट है कि "आदम में" वह भी मरी।

शायद इसी कारण पौलुस के लेखों में आदम की प्रतिनिधि भूमिका विशेष प्रतीकात्मक महत्त्व पा लेती है, जहाँ वह दो बार इस बात को उभारता है कि आदम अपने चुनावों में पूरी मानवता का प्रतिनिधित्व करता है: "एक मनुष्य के आज्ञा न मानने से बहुत लोग पापी ठहरे," और, "जैसे आदम में सब मरते हैं ..."[789]

क्या इसका अर्थ यह है कि पौलुस आदम को उसकी विफलता में मानव जाति का एकमात्र प्रतिनिधि मानता है? शायद नहीं – हो सकता है वह इस विचार को बाहर न कर रहा हो कि हव्वा भी आगे की मानवता की सह-प्रतिनिधि थी।[790] फिर भी, यदि हम मान लें कि पौलुस आदम को एकमात्र प्रतिनिधि के रूप में ही संकेत करता है, तो इससे क्या समझें? क्या आदम इसलिए – जैसा कुछ पूरकतावादी दावा करते हैं – मानव जाति का और हव्वा का अगुवा है?

नहीं। आदम की प्रतिनिधि भूमिका हव्वा पर किसी कथित कार्यात्मक अधिकार के बारे में कुछ नहीं कहती। यदि उत्पत्ति में आदम की अनोखी भूमिका के कोई संकेत हैं, तो वे यह हैं कि वह सबसे पहला मनुष्य है, हम सबका आदि-रूप – पुरुषों और स्त्रियों दोनों का, जिनमें पहली स्त्री हव्वा भी शामिल है।

सबसे आगे दौड़ने वाला होने का अर्थ यह नहीं कि वह बाद के सब मनुष्यों का, या स्वयं हव्वा का, राजा है। आदम के प्रतिनिधित्व से यह निष्कर्ष निकालना कि वह मानव जाति (या हव्वा) का अगुवा था, धर्मविज्ञान की श्रेणियों को ग़लती से आपस में मिला देना है। प्रतिनिधित्व और अगुवाई बिल्कुल भी एक ही चीज़ नहीं हैं।

आदम हव्वा का प्रतिनिधि हो सकता है, पर वह हव्वा का या हमारा शासक (regent) नहीं है। उदाहरण के लिए, जब युवा दाऊद ने इस्राएल के प्रतिनिधि के रूप में गोलियत से युद्ध किया, तब वह अभी उनका अगुवा नहीं था। अगुवा शाऊल था। (दाऊद तो दशकों बाद ही राजा बनने वाला था।) उसी तरह आदम हव्वा का (या

789. रोमियों 5:9; 1 कुरिन्थियों 15:22

790. शायद पौलुस हव्वा को नहीं बल्कि आदम को इसलिए नहीं चुनता कि वह पूरी मानवता का प्रतिनिधि है, बल्कि इसलिए कि वह उसकी और यीशु की तुलना कर रहा है, और ऐसे व्यक्ति को चुनना अधिक समझ में आता है जो पुरुष भी हो और अपनी तरह का पहला भी। इसके अलावा, हो सकता है पौलुस उस आदम की बात कर रहा हो जो अभी आदम और हव्वा में "बढ़कर" दो नहीं हुआ था – यद्यपि आदम और हव्वा दोनों पाप करते हैं, "आदम" यहाँ "आदम-और-हव्वा" का संक्षिप्त रूप है, जो मानव जाति के संयुक्त माता-पिता हैं।

किसी और का) राज करने वाला शासक नहीं था, भले ही वह हव्वा का (और बाकी सबका) पतित प्रतिनिधि या आदि-रूप था।

सबसे महत्त्वपूर्ण बात यह है कि आदम अब हमारा प्रतिनिधि नहीं है। दोनों खंडों में पौलुस हमारे पतित प्रतिनिधि आदम की तुलना हमारे जी उठे अग्रगामी मसीह से करता है। मृत्यु और पितृसत्ता की शुरुआत भले ही आदम के पतन में हुई हो, पर स्त्री-पुरुष संबंधों के छुटकारे का आरंभ यीशु के मृतकों में से जी उठने में है।

हव्वा पर आदम के अधिकार के पक्ष में अन्य तर्क

यह मानने की धर्मवैज्ञानिक पूर्व-प्रतिबद्धता कि पतन से पहले आदम किसी न किसी रूप में हव्वा का प्रभारी था, चार और तर्कों को जन्म देती है, जो सब अटकलों पर आधारित हैं:

वाटिका में केवल आदम बोलता है। वह घोषणा करता है कि वह उसकी हड्डियों में की हड्डी और उसके मांस में का मांस है, और वह बदले में कुछ नहीं कहती। कुछ पूरकतावादी कहते हैं कि इससे हव्वा पर उसकी अगुवाई का संकेत मिलता है। वह संबंध की पहल करता है, और वह उसकी पहल को ग्रहण करती है। लेकिन यह कथा के उस प्रवाह को धुँधला कर देता है, जिसमें हव्वा के बनाए जाने से पहले आदम अपनी उपयुक्त साथी को खोज रहा है। कोई आश्चर्य नहीं कि जब वह आख़िरकार उसे पाता है तो उसके पास कहने को कुछ है! उसके कथन में ऐसा कुछ नहीं जो अगुवाई या अधिकार का संकेत दे – केवल पहचान और आनंद। उसमें इससे अधिक पढ़ना ठीक वही है – पाठ जितना देता है, उससे अधिक उसमें पढ़ लेना। इसके अलावा, उत्पत्ति 2 में (पतन से पहले) केवल आदम का बोलना स्त्री पर उसकी अगुवाई को उतना ही कम प्रकट करता है, जितना उत्पत्ति 4 में (पतन के बाद) केवल हव्वा का बोलना पुरुष पर उसकी अगुवाई को दर्शाता है।

परमेश्वर आज्ञा आदम को देते हैं, हव्वा को नहीं। पूरकतावादी तर्क देते हैं कि यद्यपि यह स्पष्ट रूप से कहा नहीं गया, फिर भी ऐसा लगता है कि हव्वा के आने के बाद आदम की ज़िम्मेदारी थी कि परमेश्वर से मिली आज्ञा वह अपनी पत्नी को सिखाए – इसलिए वह उसका अगुवा है। यदि यह सच भी होता, तो किसी जानकारी को – यहाँ तक कि अपनी सुनी हुई किसी आज्ञा को भी – आगे पहुँचाने की स्थिति में होना अपने आप में आपको उस व्यक्ति का प्रभारी नहीं बना देता जिसे आप वह बात बताते हैं। इस तर्क के अनुसार तो जो पत्नी अपने पति से पहले सुसमाचार सुनती है, वह उसकी अगुवा है। इस तर्क की सबसे बड़ी समस्या यह है कि यह सच ही नहीं है। यदि हम इब्रानी शब्दों को ध्यान से पढ़ें, तो उत्पत्ति 3:3 संकेत देता है कि परमेश्वर ने वह आज्ञा, जो उन्होंने पहले आदम को दी थी, इस बार हव्वा की उपस्थिति में दोहराई, क्योंकि वह साँप से कहती है, "परमेश्वर ने कहा है, 'तुम [बहुवचन] उसका फल न खाना ... और न तुम [बहुवचन] उसको छूना, नहीं तो तुम [बहुवचन] मर जाओगे।'"

उत्पत्ति 2:24 कहता है कि विवाह के लिए "पुरुष अपने पिता और अपनी माता को छोड़ता है"। कुछ पूरकतावादी कहते हैं कि इसका अर्थ यह है कि वह अधिकार के अधीन से निकलकर नए परिवार का मुखिया बनता है। पर यह कितनी अजीब बात है कि पुरुष अपने माता-पिता को छोड़ता है – प्राचीन पितृसत्तात्मक

संस्कृतियों में तो स्त्रियाँ पति के अधिकार को स्वीकार करते हुए अपना घर छोड़ती थीं। यह पाठ उस व्यवस्था को उलट देता है। जो बात स्पष्ट है, वह यह है कि अपने पिछले परिवार में पुरुष अपने पिता और माता के अधिकार के अधीन था।

पतन का सार लैंगिक भूमिकाओं का उलट जाना था। यह तर्क, जिसे सबसे पहले पूरकतावाद के संस्थापक George Knight ने 1977 में रखा, अध्याय 7 में "हव्वा बहकाई गई, आदम नहीं" शीर्षक के अंतर्गत संबोधित किया गया है। यहाँ मैं इतना कहूँगा कि वाटिका की त्रासदी यह नहीं थी कि हव्वा को आदम के नीचे उसकी अधीनस्थ बनकर खड़ा होना था, पर उसने उसका स्थान ले लिया। सही ढंग से पढ़ें तो विनाशकारी बात यह थी कि उसे आदम के साथ-साथ उसकी साथी-सहायक बनकर खड़ा होना था, पर उसने उसे विष खिला दिया।

जो स्पष्ट कहा गया है, वही तय करे कि क्या अनुमान लगाया जा सकता है

आइए, मैं थोड़ा पीछे हटकर इस परिशिष्ट और अध्याय 4, "स्वर्गलोक में बनी साझेदारी" की सबसे महत्त्वपूर्ण अंतर्दृष्टियों पर दृष्टि डालूँ।

बाइबल की कथाएँ ग़लत व्याख्या की विशेष रूप से शिकार हो जाती हैं। वास्तव में, उत्पत्ति 2 और 3 में हव्वा पर आदम की कथित अगुवाई के पक्ष में सारे पूरकतावादी तर्क एक बहुत संक्षिप्त कथा में पढ़ लिए गए हैं।

धन्यवाद की बात है कि बाइबल की कथाओं के लेखक अक्सर व्याख्या पर कुछ नियंत्रण कथा में ही लिख देते हैं। उत्पत्ति 1-3 के मामले में कहानी में ऐसे कथन बुने गए हैं जो यह सीमा तय करते हैं कि पुरुषों और स्त्रियों के बारे में कहानी से क्या अनुमान लगाया जा सकता है और क्या नहीं लगाया जाना चाहिए।

विचार कीजिए कि उत्पत्ति 1-3 स्त्री-पुरुष संबंधों के बारे में स्पष्ट शब्दों में क्या सिखाता है:

- पुरुष को स्त्री के साथ-साथ पृथ्वी पर राज करने के लिए बनाया गया है (1:26-28)।
- स्त्री पुरुष को अदन/पृथ्वी पर राज करने में उसकी साथी और समकक्ष के रूप में दी गई है (2:18, 23-25)।
- पतन के बाद अब पुरुष स्त्री पर प्रभुता करेगा (3:16)।

इसलिए वे सारे तर्क छोड़ देने चाहिए, जो उत्पत्ति की कथा में कथित संकेतों के आधार पर स्त्रियों को पुरुषों के अधीन करते हैं और इसे सृष्टिकर्ता का किसी प्रकार का आदर्श बताते हैं।

देखा, इसका क्या अर्थ है? Grudem कहता है कि परस्परतावादी शिकायत कर सकते हैं कि "पुरुषों को ... केवल इसलिए अगुवाई की भूमिका देना कि वे पुरुष हैं, उचित नहीं है। पर यदि यह आरंभ से परमेश्वर द्वारा भूमिकाओं के बँटवारे पर आधारित है, तो यह उचित है।"[791]

791. Wayne Grudem, Evangelical Feminism and Biblical Truth, अध्याय 1।

पर यदि परमेश्वर ने अधिकार और अधीनता की ऐसी कोई "भूमिकाएँ आरंभ से" नहीं सौंपीं, तो यह अनुचित ही है। जब कलीसिया, बिना किसी विशेष परिस्थितिजन्य कारण के, स्त्रियों को केवल इसलिए कि वे स्त्रियाँ हैं अगुवाई से बाहर रखती है, तो वह देखती हुई दुनिया के सामने उस परमेश्वर की ख़राब छवि प्रस्तुत करती है जिनकी सेवा करने का हम दावा करते हैं – उस परमेश्वर की, जो "किसी का पक्षपात नहीं करते।"[792]

792. रोमियों 2:11

परिशिष्ट 3: Kephalē का अर्थ क्या है

जब पौलुस यूनानी शब्द kephalē का प्रयोग करता है, तो उसका अर्थ क्या होता है? आधुनिक अंग्रेज़ी में "head" (सिर) जब रूपक के रूप में आता है, तो अक्सर उसका अर्थ अधिकार होता है, जैसे CEO कंपनी का head (प्रमुख) होता है या कमांडिंग ऑफ़िसर पलटन का head होता है। साथ ही, जब हम आधुनिक लोग किसी वास्तविक देह के वास्तविक सिर की कल्पना करते हैं, तो मान लेते हैं कि सिर, जिसमें मस्तिष्क है, इसलिए देह का नियंत्रण-केंद्र है। तंत्रिका-तंत्र के द्वारा वह देह को आदेश भेजता है। हमें यह प्रश्न पूछना है कि जब पौलुस ने kephalē शब्द चुना, तो उसका अर्थ क्या था और उसके मूल पाठक क्या समझते।

जब मैं वर्षों से हर पक्ष के विद्वानों के बीच चली आ रही बहस पर नज़र डालता हूँ, तो Grudem तर्क देता है कि इस शब्द का अर्थ लगभग हमेशा किसी पर अधिकार होता है, जबकि दूसरे विद्वान तर्क देते हैं कि इसका यह अर्थ शायद ही कभी होता है, यदि होता भी है तो। मैं इस निष्कर्ष पर पहुँचता हूँ कि पौलुस के समय में, और निश्चित रूप से पौलुस के प्रयोग में, यह केवल दुर्लभ अवसरों पर अधिकार का संकेत देता था।[793] सभी

793. पहली सदी से पहले और उसके दौरान यूनानी-रोमी संसार में यूनानी शब्द kephale का प्रयोग कैसे होता था? लगभग हमेशा यह शाब्दिक, शारीरिक सिर के लिए आता था, यद्यपि कभी-कभी इसका प्रयोग लाक्षणिक रूप से भी होता था। इस शब्द के लाक्षणिक प्रयोगों पर श्रेष्ठ विद्वान बँटे हुए हैं, मुख्य रूप से इसलिए कि यह रूपक शब्द अनेक अलग-अलग तरीकों से प्रयोग होता प्रतीत होता है: 1) पहली सदी में सबसे आम तौर पर यह उस व्यक्ति के लिए आता था जो सबसे प्रमुख है और प्रतिनिधि भूमिका निभाता है (वैसे ही जैसे किसी व्यक्ति का सिर पूरी देह का सार्वजनिक प्रतिनिधि है)। इस अर्थ में इसका अर्थ है "सबसे प्रमुख"। 2) इससे कम बार यह उस व्यक्ति के लिए आता था जो "अधिकार" में है (वैसे ही जैसे मस्तिष्क देह को निर्देश देता है।) 3) यह भी कम ही बार उस व्यक्ति के लिए आता था जो पोषण या अस्तित्व प्रदान करता है (वैसे ही जैसे मुँह देह को भोजन देता है, या जैसे देह के बिना सिर मर जाता है)। इस अर्थ में इसका अर्थ है "स्रोत"। पर पौलुस ने इसका प्रयोग कैसे किया? 1970 के दशक तक अधिकांश बाइबल विद्वान मान लेते थे कि पौलुस का अर्थ "अधिकार" था – पर इसका कारण यह माना जा सकता है कि 1) लैटिन, जर्मन और अंग्रेज़ी भाषाओं में (जो वे मुख्य भाषाएँ हैं जिनमें ऐतिहासिक धर्मविज्ञान रचा गया) सिर के लिए प्रयुक्त शब्द अधिकार रखने वाले व्यक्ति को दर्शाता है, और 2) कलीसिया, समाज की तरह, 1960 के दशक तक स्त्री की हीनता में विश्वास करती थी, और इसलिए स्त्री की अधीनस्थता बिना किसी प्रश्न के मान ली जाती थी। पिछली सदी की अंतिम चौथाई में विद्वानों की राय में "स्रोत" अर्थ की ओर एक बड़ा बदलाव आया, जिसका सबसे अच्छा उदाहरण 1 कुरिन्थियों पर Gordon Fee की अग्रणी टीका है। पर विद्वानों की राय एक बार फिर "प्रमुख व्यक्ति" अर्थ की ओर मुड़ी है – जिसका प्रमाण 1 कुरिन्थियों पर Anthony Thiselton की उतनी ही प्रतिष्ठित टीका है। फिर भी, यद्यपि Thiselton भी Fee जितना ही आश्वस्त है कि पौलुस का अर्थ "अधिकार" नहीं है, वह "स्रोत" के बजाय "प्रमुख व्यक्ति" चुनता है, पर मानता है कि उसने और उसके सह-शोधकर्ताओं के दल ने यह चुनाव "बहुत मामूली" अंतर से किया। सारे तर्कों का अध्ययन करने के बाद मैं Fee और Thiselton से सहमत हूँ कि इसका अर्थ "अधिकार" नहीं है, और मुझे Thiselton के इस अवलोकन से सहानुभूति है कि पौलुस के लेखों के बाहर, पहली सदी में इसका प्रयोग शायद ही कभी "स्रोत" के अर्थ में होता था। फिर भी, "Paul and Gender" में Cynthia Westfall के हाल के कार्य की सहायता से मैं स्वयं को Fee से सहमत पाता हूँ कि पौलुस का अर्थ "स्रोत" है, अर्थात् "वह जिससे कोई दूसरा अपना अस्तित्व या आपूर्ति पाता है"। पौलुस का इस शब्द का रूपक प्रयोग स्पष्ट रूप से नया था, विशेष रूप से इसलिए कि अन्य सभी प्राचीन यूनानी लेखकों के विपरीत उसने इसे अनोखे ढंग से पुरुषों और स्त्रियों के संबंध पर, और पति और उसकी पत्नी के संबंध पर लागू किया। इसके अलावा, 1 कुरिन्थियों 11:3 और इफिसियों 5:23 दोनों में "स्रोत" अर्थ आगे आने वाले खंडों को सबसे अच्छी तरह समझाता है। 1 कुरिन्थियों 11:3 में "प्रमुख व्यक्ति" की छटा भी शामिल हो सकती है, क्योंकि आगे के पदों में पौलुस उस आदर पर ज़ोर देता है जो किसी के शाब्दिक और लाक्षणिक सिरों को दिया जाना चाहिए। इफिसियों 5:25 में पौलुस प्राचीन यूनानी-रोमी पति को kephale कहता है, और सचमुच ये प्राचीन पति अपनी पत्नियों के प्रभारी थे, पर हमें स्वयं शब्द को उस व्यक्ति से नहीं मिला देना चाहिए जिसकी ओर वह संकेत करता है – इस पर अधिक के लिए अध्याय 8 में "दृष्टिकोण 4: छुड़ाए गए paterfamilias (घर के मुखिया) के रूप में पति" देखें।

रूपकों की तरह, अलग-अलग संदर्भों में इसका अलग-अलग अर्थ हो सकता है, और शायद कुछ संदर्भों में अधिकार का विचार भी शामिल हो। फिर भी, मुझे वे तर्क प्रस्तुत करने दीजिए जो दिखाते हैं कि यह अर्थ बहुत दुर्लभ क्यों होगा।

पौलुस के समय में शारीरिक सिर के लिए यूनानी शब्द का रूपक अर्थ हमारे अंग्रेज़ी शब्द से अलग था। पौलुस के जन्म से पहले की सदियों में सिर को कभी-कभी देह का जीवन-स्रोत समझा जाता था। अरस्तू (Aristotle) सिखाता था कि सिर पूरी देह के लिए एक सोते या आपूर्ति के स्रोत के समान है,[794] और अनेक चिकित्सा-लेखक भी यही मानते थे। उदाहरण के लिए, पाइथागोरस (Pythagoras) सिखाता था कि शारीरिक सिर पुरुष के वीर्य का स्रोत है, जो रीढ़ की हड्डी से होकर नीचे जननांगों तक आता है। यूनानी भाषी यहूदी शिक्षक फ़िलो (Philo) का दावा था कि सिर स्वर्ग से शक्ति ग्रहण करता है और अपनी जीवन-शक्ति पूरी देह में बाँटता है।[795] इसलिए जब प्राचीन यूनानी किसी व्यक्ति को किसी दूसरे का या लोगों के किसी समूह का "सिर" कहते थे, तो वह ज़रूरी नहीं कि उसके अधिकारी होने का संकेत हो; अधिक संभावना यह है कि वह उसके जीवन-स्रोत या पूर्वज होने का संकेत था।

मानव सिर के लिए इब्रानी शब्द rosh है, और अंग्रेज़ी की तरह इब्रानी में भी रूपक के रूप में प्रयोग होने पर इसका अर्थ अधिकार होता था। तब यह बात बहुत रोचक है कि पौलुस के समय से पहले इब्रानी पवित्रशास्त्र का यूनानी भाषा में अनुवाद किया गया (जिसे सेप्टुआजिंट (Septuagint) या LXX कहते हैं)। Cynthia Westfall ने LXX के उन 171 स्थानों का अध्ययन किया है जहाँ rosh का अर्थ भरोसे के साथ अधिकार प्रमाणित होता है, और वह बताती है कि यूनानी अनुवादकों ने केवल चार बार kephalē शब्द का प्रयोग किया और लगभग हमेशा दूसरे यूनानी शब्द चुने, जो अधिकार को अधिक स्पष्ट रूप से दर्शाते हैं।[796]

इस पर विचार कीजिए। यूनानी अनुवादक इब्रानी शब्द rosh पढ़ते हैं, और यदि वह शारीरिक सिर को दर्शाता है, तो वे kephalē चुनते हैं। लेकिन जिन मामलों में rosh रूपक के रूप में किसी अधिकारी व्यक्ति को दर्शाता है, उनमें से 97.7% में वे इसके बजाय दूसरे यूनानी शब्द चुनते हैं।[797] इसका अर्थ यह है कि पौलुस के समय से ठीक पहले यूनानियों के मन में अधिकार kephalē शब्द का कोई आम रूपक अर्थ नहीं था, वरना यही प्रयोग करने के लिए सबसे स्वाभाविक शब्द होता। यह बात व्यापक रूप से ज्ञात है। The LSJ

794. Aristotle, Problems 10 867a

795. "सद्गुणी व्यक्ति मानव जाति का kephale होगा, और बाकी सब उन अंगों के समान होंगे जो सिर की शक्तियों से अपना जीवन पाते हैं।" (Philo Det. Pol. Ins. 85)

796. Grudem की सबसे नई गिनती 14 स्थानों की है। लेकिन Westfall ने मेरे साथ पत्र-व्यवहार में यह कहा: "Grudem तर्क देता है कि पौलुस LXX के उन खंडों से प्रभावित है जहाँ rosh का अनुवाद kephalē से किया गया और जहाँ उसका अर्थ अधिकार था। इब्रानी बाइबल में जिन 171 स्थानों पर rosh 'अधिकार' को दर्शाता प्रतीत होता है, उनमें केवल चार ऐसे खंड थे जिनमें उसका अनुवाद kephalē किया गया और जिनमें पाठांतर नहीं थे (2 शमूएल 22:44; भजन संहिता 18:43 [LXX में 17:44]; यिर्मयाह 31:7 [LXX 38:7]; विलापगीत 1:5)। ये प्रयोग सेप्टुआजिंट के अनुवादकों के कमज़ोर अनुवाद-चुनाव (इब्रानीवाद) हो सकते हैं, या कुछ प्रयोग किसी प्राचीन राजा और उसकी प्रजा या उसके क्षेत्र के बीच के परस्पर-निर्भर संबंध को दर्शा सकते हैं। इन चार खंडों का पौलुस के kephalē प्रयोग से कोई अंतर्पाठीय या अर्थगत संबंध नहीं है, इसलिए Grudem का यह तर्क कि LXX के खंड पौलुस के kephalē प्रयोग का कारण हैं, विश्वसनीय नहीं है।" R.S. Cervin का लेख Westfall के निष्कर्ष का समर्थन करता है: "इस बात के प्रमाण के रूप में कि kephalē का अर्थ अगुवा या अधिकार होता है, LXX को बढ़ा-चढ़ाकर आँका गया है।" देखें www.bit.ly/3GOWjqB

797. यह इसके बावजूद है कि सेप्टुआजिंट के अनुवादकों में शाब्दिक अनुवादों को प्राथमिकता देने और इब्रानी पाठ के निकट रहने के लिए यूनानी शब्दों को उनके सामान्य अर्थों से आगे तक खींचने की प्रबल प्रवृत्ति दिखती है।

Greek–English Lexicon, जो हमारे पास उपलब्ध प्राचीन यूनानी का सबसे विस्तृत शब्दकोश है, इसके 48 संभावित रूपक अर्थ गिनाता है – और उनमें से एक भी अधिकार नहीं है। हाल का Cambridge Greek Lexicon भी यही करता है।[798]

जब हम इस शब्द के पौलुस के अनेक रूपक प्रयोगों का अध्ययन करते हैं, तो स्पष्ट दिखता है कि वह यह बात जानता है। आसिया माइनर में प्रवासी (डायस्पोरा) यहूदी के रूप में पले-बढ़े होने के कारण वह यूनानी मुहावरों और सोच से भली-भाँति परिचित रहा होगा। वह अपनी पत्रियाँ भी यूनानी भाषी लोगों को लिखता है। इस शब्द को रूपक के रूप में प्रयोग करने वाले एकमात्र बाइबल लेखक के रूप में वह इसे अधिकतर सिर-देह की उपमा के हिस्से के रूप में प्रयोग करता है, जिसमें यीशु को उस जीवन-स्रोत के रूप में बताया गया है जिससे कलीसिया उद्धार और आत्मा के द्वारा जीवंत रूप से जुड़ी है। सुनिए, वह इफिसियों 4:15-16 में इसे कैसे कहता है: "[हम] सब बातों में बढ़कर उसकी परिपक्व देह बन जाएँगे, जो सिर है, अर्थात् मसीह। उसी से सारी देह ... प्रेम में बढ़ती और अपनी उन्नति करती है।" फिर कुलुस्सियों 2:19 में पौलुस कहता है कि हमारा "उस सिर से संबंध" है, "जिससे सारी देह जोड़ों और पट्ठों के द्वारा पालन-पोषण पाकर और एक साथ गठकर परमेश्वर की ओर से बढ़ती जाती है।" दूसरे शब्दों में, जब पौलुस अपने सिर-देह रूपक को खोलकर समझाता है, तो सिर अर्थात् यीशु विशेष रूप से अपनी देह, कलीसिया, को बढ़ोतरी और जुड़ाव, प्रेम और जीवन, पोषण और सामर्थ्य प्रदान करते हैं। हम आधुनिक लोग, मस्तिष्क के कार्यकारी काम की अपनी समझ के कारण, मान लेते हैं कि पौलुस भी यीशु द्वारा अगुवाई और दिशा दिए जाने का कुछ उल्लेख करेगा। लेकिन पौलुस, सिर की अपनी समझ के अनुसार, ऐसा नहीं करता।

Grudem, यद्यपि मानता है कि सिर-देह रूपक में "स्रोत" का विचार हो सकता है,[799] इस विचार का विरोध करता है कि kephalē का अर्थ शायद ही कभी अधिकार होता था, और साहित्य से ऐसे उदाहरणों की प्रभावशाली सूची जुटाता है जिनमें सेनापतियों और राजाओं को सेना या प्रजा का kephalē कहा गया है। लेकिन इसके लिए वह मुख्य रूप से बाद के साहित्य की ओर जाता है। इसके अलावा, प्राचीन यूनानी शायद अपने अगुवे को अपना जीवन-स्रोत भी समझते थे। किसी पशु या मनुष्य का सिर काट दीजिए, और वह मर जाता है। सेना या राष्ट्र के साथ भी ऐसा ही है: सेनापति या राजा को मार दीजिए, और लोग नष्ट हो जाते हैं। राजा और सेनापति इस अर्थ में सिर हैं कि उनका राज्य उनके अधीन एक साथ बना रहता है। ऐसा लगता है कि पौलुस इफिसियों 1:10 में kephalē से संबंधित एक शब्द का प्रयोग यीशु के लिए इसी अर्थ में करता है, जहाँ वह कहता है कि परमेश्वर की योजना सब बातों को (जैसे यहूदियों और अन्यजातियों को) एक साथ लाने की है, उन्हें एक सिर में समेटने की, अर्थात् यीशु मसीह में। निश्चय ही यीशु अधिकार रखने वाले प्रभु हैं, पर यहाँ पौलुस सिर के रूपक का प्रयोग उनके अधिकार को नहीं, बल्कि अपने लोगों के एकता देने वाले जीवन-

798. Philip Payne, Man and Woman, One in Christ, पृ. 121। इसके अलावा, बारहवीं सदी से शास्त्रीय धर्मनिरपेक्ष यूनानी के शब्दकोश आमतौर पर kephalē ("सिर") का एक अर्थ "स्रोत" बताते हैं, पर "अधिकार" अर्थ के लिए नए नियम से पहले का कोई उदाहरण नहीं देते।

799. "यह जीवन का एक प्रारंभिक तथ्य है कि हम अपने मुँह से, और इस प्रकार एक अर्थ में अपने सिर से, पोषण पाते हैं, और यह विचार प्राचीन संसार के लिए भी स्पष्ट था; इसलिए यह विचार असंभव नहीं कि कोई ऐसा रूपक हो जिसमें 'सिर' का अर्थ 'स्रोत' हो," Grudem Evangelical Feminism and Biblical Truth (पृ. 567) में लिखता है।

स्रोत के रूप में उनकी भूमिका को उभारने के लिए करता प्रतीत होता है।[800] इसी तरह जब पौलुस कुलुस्सियों 1:16-17 में कहता है कि यीशु "सब वस्तुओं में प्रथम हैं; सब वस्तुओं को सँभाले हुए हैं; देह अर्थात् कलीसिया के सिर हैं, और आदि हैं।" ये विशेषण उनके प्रभुत्व पर केंद्रित नहीं हैं; वे यीशु की सेवकाई के उन पहलुओं का वर्णन करते हैं जो उनके राज करने से अलग हैं – फिर भी हर एक पहलू उनकी प्रभारी होने की योग्यता और पात्रता का समर्थन करता है, और यही पौलुस की बात है जब वह कहता है, "ताकि सब बातों में वही प्रधान ठहरें।" यद्यपि यहाँ पौलुस पालनहार, जीवन-स्रोत और मूल-कर्ता के रूप में यीशु के विचारों को उनकी प्रधानता के कथन के साथ-साथ रखता है, हमें इन अर्थों को यों ही आपस में मिला नहीं देना चाहिए। कलीसिया के, और उन वस्तुओं के जो उनमें उत्पन्न हुईं और उनमें स्थिर रहती हैं, सिर के रूप में यीशु ठीक-ठीक वही बात नहीं है जो अपने लोगों के, और उन वस्तुओं के जो उनके द्वारा बनाई गईं और उन्हीं से सँभाली जाती हैं, प्रभु के रूप में यीशु।

उन दो स्थानों के बारे में क्या, जहाँ पौलुस इन अर्थों को सचमुच मिलाता हुआ प्रतीत होता है – इफिसियों 1:22 और कुलुस्सियों 2:10? इन खंडों में भी पौलुस यीशु के अधिकार रखने के विचार को यीशु के kephalē होने के विचार के बिल्कुल पास-पास रख सकता है, पर ज़रूरी नहीं कि वह उन्हें एक कर दे।[801]

इफिसियों 1:22 में वाक्यांश है "सब वस्तुओं के ऊपर kephalē"। "ऊपर" के लिए यूनानी शब्द (hyper) का अर्थ आमतौर पर के भले के लिए होता है, जैसे, "मसीह ने अपने आप को हमारे लिए (hyper) भेंट के रूप में दे दिया" (इफिसियों 5:2)। लेकिन इफिसियों 1:22 में इसका अर्थ ऊपर है, पर का नहीं – यह सब वस्तुओं के ऊपर सिंहासन पर विराजमान यीशु का एक स्थानिक चित्र प्रस्तुत करता है। जब हम इस पद को 1:18-2:6 के संदर्भ में पढ़ते हैं, तो आश्चर्य की बात यह है कि सिंहासन पर केवल सिर-रूपी यीशु नहीं, बल्कि यीशु-और-कलीसिया, या सिर-और-देह विराजमान हैं। पौलुस कहता है कि सब वस्तुओं के ऊपर kephalē के रूप में यीशु "कलीसिया के लिए हैं, जो उसकी देह है।" सब वस्तुएँ "उसके पाँवों तले" हैं – पर उसके पाँव हम हैं। कहने का तात्पर्य यह कि यहाँ यीशु के kephalē होने का विशेष अर्थ यह नहीं है कि उनका हम पर, या सब वस्तुओं पर भी, अधिकार है (जो निस्संदेह है) – बल्कि यह समझाता है कि यीशु, जो सब वस्तुओं के उचित प्रभु हैं, वह अधिकार हमारे साथ कैसे बाँटते हैं; आख़िरकार, राजा का केवल सिर नहीं, उसकी पूरी देह राज करती है।

कुलुस्सियों 2:10 कहता है कि यीशु हर प्रधानता और अधिकार "का" (न कि, जैसा कुछ अनुवाद रखते हैं, उनके "ऊपर") kephalē हैं। यह उन दो खंडों में से एक है जो यीशु को कलीसिया के अलावा किसी और चीज़ का kephalē बताते हैं। 1 कुरिन्थियों 11:3 में उन्हें "हर पुरुष" का kephalē कहा गया है – जिसका अर्थ है कि परमेश्वर ने मसीह के द्वारा आदम को (और, उसी से निकले हुए, उसके पुत्रों को) रचा। इसी तरह कुलुस्सियों 2:10 में यीशु का सब प्रधानताओं और अधिकारों का सिर होना 1:16 के बाद आता है, जो

800. जिसे धर्मविज्ञानी पौलुस की "संघीय सिर होने" (federal headship) की शिक्षा कहते हैं, उसमें मानवता के दो संभावित "सिर" हैं: आदम या यीशु। पहले पापी के रूप में आदम हमारा अगुवा नहीं है, पर दुर्भाग्य से वह हमारा स्रोत है: हम उससे उसकी पाप की दासता वाली स्थिति और भ्रष्ट स्वभाव विरासत में पाते हैं। धन्यवाद हो कि यीशु छुड़ाई गई मानव जाति के नए सिर बनते हैं: उनसे हम उनकी ऊँची की गई स्थिति और उनकी समानता विरासत में पाते हैं।

801. यहाँ मैंने Cynthia Westfall से सहायता ली है, जिसने इफिसियों 1:22 और कुलुस्सियों 2:10 में kephalē के अर्थ के बारे में मेरे प्रश्न का उत्तर मेरे साथ पत्र-व्यवहार में अपने उस निबंध के अंश भेजकर दिया, जो उसने "The IVP Dictionary of Paul and his Letters" के दूसरे संस्करण के लिए लिखा है।

कहता है कि यही प्रधानताएँ और अधिकार मसीह के द्वारा रचे गए और इसलिए उन्हीं में स्थिर रहते हैं। उनके सिर के रूप में यीशु इस प्रकार हर आत्मिक शक्ति के सृष्टिकर्ता-स्रोत हैं – इसी कारण पौलुस कहता है कि कुलुस्से के विश्वासियों को अपनी परिपूर्णता के लिए स्वर्गदूतों की ओर नहीं, यीशु की ओर देखना चाहिए, क्योंकि सृष्टिकर्ता मसीह हमारे लिए वह कर सकते हैं जो स्वर्गदूत जैसे प्राणी भी नहीं कर सकते।

हर अनोखा खंड अपने संदर्भ के अनुसार kephalē शब्द का एक सूक्ष्म अर्थ उभारता है। उदाहरण के लिए, Alan Johnson ने kephalē शब्द पर हर पक्ष के 17 प्रमुख अध्ययनों का एक मेटा-अध्ययन किया है और निष्कर्ष निकाला है, "ऐसा लगता है कि इस बात पर सहमति बढ़ रही है कि रूपक के रूप में kephalē का अलग संदर्भ में अलग अर्थ हो सकता है।"[802] यह हमें Grudem के उन उदाहरणों की समस्या तक लाता है, जिनमें सेनापति और राजा दूसरों के kephalē हैं: पौलुस जब kephalē को मानवीय संबंधों पर लागू करता है, तो वह ऐसा केवल एक पुरुष और एक स्त्री के संबंध पर करता है – न राजा और उसकी प्रजा पर, न सेनापति और उसकी सेना पर, न माता-पिता और उनके बच्चों पर, न स्वामी और उसके दासों पर। ये बिल्कुल अलग-अलग क्षेत्र हैं, और हर क्षेत्र अर्थ की एक अलग छटा उभारेगा। वास्तव में, उसके समय तक के सभी प्राचीन लेखकों में पौलुस ही अकेला ऐसा लेखक है जिसके बारे में हम जानते हैं कि उसने यह रूपक एक पुरुष और एक स्त्री पर लागू किया – 1 कुरिन्थियों 11:3 में आदम को हव्वा का kephalē कहा गया है, और इफिसियों 5:25 में पति को उसकी पत्नी का kephalē कहा गया है।

लेकिन इन दो मामलों में भी पौलुस शब्द का प्रयोग ठीक एक ही तरह से नहीं करता। 1 कुरिन्थियों 11:3 में वह उस ढंग की ओर संकेत करता है जिससे हव्वा आदम की देह से बनाई गई, और इसलिए आदम (और उसके पुत्रों) को हव्वा में अपनी ही छवि का आदर करना चाहिए, जबकि हव्वा (और उसकी पुत्रियों) को आदम का आदर उस व्यक्ति के रूप में करना चाहिए जिसमें उसका मूल है। इस प्रकार यहाँ इसका अर्थ अधिकार नहीं, बल्कि आदर के योग्य जीवन-स्रोत प्रतीत होता है। (इस पर अधिक के लिए अध्याय 6 देखें।)

और इफिसियों 5:25 में पौलुस अपनी देह के सिर या जीवन-स्रोत के रूप में यीशु और अपनी पत्नी के जीवन-स्रोत के रूप में पति के बीच समानता दिखाता है, और इसलिए पतियों को अपनी पत्नियों से, जिनके साथ वे "एक तन" हैं, ठीक उसी तरह प्रेम करना और उनकी देखभाल करनी चाहिए जैसे सिर उचित रूप से अपनी देह का पोषण और देखभाल करता है। John Piper भी (अनजाने में) मानता है कि यहाँ kephalē में यह अर्थ भी हो सकता है।[803] इस प्रकार यहाँ इसका अर्थ अधिकार नहीं, बल्कि देखभाल और सेवा का वह स्रोत, जो जीवंत और घनिष्ठ रूप से जुड़ा है प्रतीत होता है। (इस पर अधिक के लिए अध्याय 8 देखें।)

802. देखें www.bit.ly/3GJ9Vnc

803. "Recovering Biblical Manhood and Womanhood" के पहले अध्याय की फ़ुटनोट 15 में, असंगति के एक क्षण में, John Piper अपने इस बाइबल-से-बाहर के दावे के लिए बाइबल का आधार देने की कोशिश करता है कि पत्नियों का आर्थिक भरण-पोषण मुख्य रूप से पुरुषों को करना है। वह उस बात का हवाला देता है कि परमेश्वर इफिसियों 5:25 में पुरुष को "सिर" कहते हैं, और इसलिए उसे पत्नी का वैसे ही भरण-पोषण करना है जैसे यीशु कलीसिया का करते हैं। वह लिखता है, "सिर की छवि का अर्थ है कि मसीह भरण-पोषण करने वाले हैं ... " विडंबना यह है कि Piper, निस्संदेह अनजाने में, मान लेता है कि kephale का अर्थ, अन्य बातों के साथ, आख़िरकार स्रोत या आपूर्ति करने वाला भी हो सकता है – भले ही जिस पूरकतावाद की ओर से वह बोलता है, वह इसका दृढ़ता से खंडन करता है।

परिशिष्ट 4: क्या स्त्रियाँ शिक्षा दे सकती हैं?

1 तीमुथियुस 2:12 की पूरकतावादी व्याख्या को कड़ाई से लागू करने पर स्त्रियों को कलीसिया में पुरुषों को शिक्षा देने की अनुमति नहीं मिलती। दुख की बात है कि The Gospel Coalition यही दृष्टिकोण रखता है।[804] अनेक कलीसियाएँ स्त्रियों को छोटे समूहों में या प्रार्थना-सभाओं में शिक्षा देने की अनुमति नहीं देतीं, और साप्ताहिक आराधना-सभाओं में तो बिल्कुल नहीं। कुछ तो स्त्रियों को आराधना-सभा में बाइबल पढ़ने तक की अनुमति नहीं देतीं।[805] John Piper सेवकाई और धर्मविज्ञान के प्रशिक्षण में स्त्रियों के पुरुषों को व्याख्यान देने का समर्थन नहीं करता (यद्यपि वह स्त्री धर्मविज्ञानियों के लिखने का समर्थन करता है, क्योंकि यह "लेखिका के रूप में स्त्री को पाठक की दृष्टि से हटा देता है और एक अर्थ में उसके स्त्री-व्यक्तित्व के आयाम को हटा देता है।"[806])।[807]

फिर भी, कुछ नरम पूरकतावादी विद्वान कलीसिया में स्त्रियों को शिक्षा देने की अनुमति देने का कोई रास्ता खोजने का प्रयास करते हैं। वे ऐसा तीन तरीकों से करते हैं: पहला, कुछ लोग स्त्रियों को आराधना-सभाओं के बाहर पुरुषों को शिक्षा देने की अनुमति देते हैं। विशेष कक्षाओं और पाठ्यक्रमों में स्त्रियाँ पुरुषों को सिखा सकती हैं, पर रविवार की मुख्य सभा में नहीं। इसे उचित ठहराने के लिए वे तर्क देते हैं कि 1 तीमुथियुस 2 में पौलुस विशेष रूप से कलीसिया की सभा की बात करता है, और इसलिए उसका निषेध उसी परिस्थिति तक सीमित है।

दूसरा, कुछ लोग स्त्रियों को प्राचीनों या पास्टरों के अधिकार के अधीन, और उनके द्वारा तय की गई सैद्धांतिक सीमाओं के भीतर, शिक्षा देने की अनुमति देते हैं। एक उपमा से समझें: एक संचालक (कंडक्टर) और एक वायलिन-वादक दोनों बीथोवन (Beethoven) की "व्याख्या" करते हैं। वायलिन-वादक केवल व्याख्या को प्रस्तुत करता है, पर किसी और की निगरानी और निर्देशन में। उसी तरह वरिष्ठ पास्टरीय अगुवे सिद्धांत को परिभाषित करते हैं, जबकि दूसरे लोग, जिनमें स्त्रियाँ भी शामिल हैं, उस सिद्धांत को प्रस्तुत कर सकते हैं।

तीसरा, कुछ लोग स्त्रियों को प्रवचन में "भविष्यद्वाणी करने" और "उपदेश देने" (exhort, उभारने और प्रोत्साहित करने) की अनुमति देते हैं, पर "शिक्षा देने" की नहीं। वे "शिक्षा देने" की परिभाषा "मूल प्रेरितिक सिद्धांतों को स्थापित करना" देते हैं। वे कहते हैं कि आज के सभी प्रवचन इस अर्थ में "शिक्षा" नहीं हैं। पौलुस स्वयं "उपदेश देने", "भविष्यद्वाणी करने" और "शिक्षा देने" में अंतर करता है। पौलुस अपेक्षा करता

804. इसके वरिष्ठ लेखक Kevin De Young इवैन्जेलिकल संसार में स्त्रियों के प्रचार करने के पक्ष में उठने वाली हर चुनौती को अलग से निशाना बनाता रहता है और उसे सुधारने का प्रयास करता है। देखें www.bit.ly/3BHFz0N।
805. देखें www.bit.ly/3ENSkc4।
806. देखें www.bit.ly/3wqsGXW।
807. सोचिए कि Piper का यह व्यापक रूप से प्रसारित विश्वास कितनी चोट पहुँचाता है – सुनिए कि एक विश्व-स्तरीय स्त्री शिक्षिका इसके प्रभाव के बारे में क्या बताती है: "मैं जितनी दुखी और निराश हुई, उसे शब्दों में नहीं कह सकती। जब भी मैं ऐसी राय छपी हुई देखती हूँ, तो कुछ क्षण के लिए अवाक् रह जाती हूँ। मैं एक धर्मवैज्ञानिक शिक्षिका हूँ और एक धर्मवैज्ञानिक कॉलेज की प्रधानाचार्य हूँ (जो जीवन, अगुवाई और सेवकाई के लिए आत्मिक गठन में विशेषज्ञता रखता है)। बीस वर्षों से अधिक समय से कलीसिया में मेरी शिक्षा और प्रचार की सेवकाई रही है।" www.bit.ly/31xWCWF

है कि स्त्रियाँ मण्डली में "भविष्यद्वाणी करें", और उसने स्त्रियों को मण्डली को "उपदेश देने" से कभी मना नहीं किया।

यद्यपि मैं स्त्रियों के पुरुषों को शिक्षा देने को उचित ठहराने के इन तीन नेक इरादे वाले प्रयासों की सराहना करता हूँ, वे 1 तीमुथियुस 2:12 की अपनी ही ग़लत व्याख्या से कतराकर निकलने के तोड़े-मरोड़े प्रयास हैं।[808] इसी कारण पूरकतावादी विद्वान उनका खंडन करते रहते हैं।[809] लेकिन जैसा मैं अध्याय 7 में समझाता हूँ, एक बार जब हम 1 तीमुथियुस 2:12 की पूरकतावादी व्याख्या को छोड़ देते हैं, तो हम इस विषय को कहीं बेहतर ढंग से सँभाल सकते हैं। तब हम पूछ सकते हैं: पास्टरीय पत्रियों के अनुसार किसे शिक्षा नहीं देनी चाहिए? और स्त्रियों के शिक्षा देने के बारे में पवित्रशास्त्र के कौन-से स्पष्ट खंड 1 तीमुथियुस 2:12 के धुँधले खंड की बेहतर व्याख्या करने में हमारी सहायता कर सकते हैं?

वे लोग जिन्हें शिक्षा नहीं देनी चाहिए

जहाँ तक पहले प्रश्न की बात है, तीन प्रकार के लोग हैं जिन्हें शिक्षा नहीं देनी चाहिए। पहला, झूठे शिक्षकों को शिक्षा नहीं देनी चाहिए। पौलुस तीतुस से कहता है कि "इनका मुँह बन्द करना चाहिए, क्योंकि वे ... जो बातें नहीं सिखानी चाहिए, उन्हें सिखाते हैं।"[810] दूसरा, जो लोग सीखने को तैयार नहीं और मसीह के समान नहीं हैं, उन्हें शिक्षा नहीं देनी चाहिए। जैसा मैंने अध्याय 7 में तर्क दिया है, हमें 1 तीमुथियुस 2:12 को इस रूप में समझना चाहिए कि वह विकृत शिक्षा से प्रभावित लोगों के समूहों को दूसरों के प्रति घमंडी, स्वच्छंद, अपने को आगे रखने वाला या दबंग रवैया रखने से मना करता है। ऐसे लोगों को जिस बात की आवश्यकता है, वह है फिर से नम्रतापूर्वक परमेश्वर के वचन के नीचे बैठना और शिक्षा पाना।

तीसरा, जिन्हें स्वयं शिक्षा नहीं मिली, उन्हें शिक्षा नहीं देनी चाहिए। पौलुस तीमुथियुस से कहता है, "[जो] बातें तू ने बहुत से गवाहों के सामने मुझ से सुनी हैं, उन्हें विश्वासयोग्य लोगों को सौंप दे, जो दूसरों को भी सिखाने के योग्य हों।"[811] तीमुथियुस को प्रेरितिक सिद्धांत सिखाने के बाद पौलुस उससे कहता है कि वह उन्हें दूसरों को सिखाए, ताकि वे बदले में और भी लोगों को सिखा सकें। ध्यान दीजिए कि ये प्रशिक्षु-शिक्षक

808. पहली स्थिति ग़लत है, क्योंकि 1 तीमुथियुस 2 केवल इकट्ठी हुई आराधना की बात नहीं करता, और नया नियम उन विभिन्न प्रकार की सभाओं में कोई तीखा अंतर नहीं करता जो किसी कलीसिया की किसी भी सप्ताह हो सकती हैं। दूसरी इसलिए ग़लत है कि यदि (जैसा वे मानते हैं) परमेश्वर कलीसियाओं से कहते हैं कि स्त्रियाँ शिक्षा न दें, तो प्राचीन इसके विपरीत की अनुमति नहीं दे सकते। तीसरी, जिसकी शुरुआत John Dickson ने अपनी अन्यथा शानदार पुस्तक "Hearing Her Voice" में की, उसकी कमी यह है कि पास्टरीय पत्रियों में भी "सिखाना" शब्द प्रेरितिक सिद्धांत को आगे पहुँचाने के लिए आता है, न कि – जैसा Dickson कहता है – अधिकार के साथ "[सिद्धांत को] स्थापित करने" के लिए; और व्यावहारिक रूप से, मैं कल्पना नहीं कर सकता कि कोई तीस मिनट का प्रवचन, चाहे वह कितना भी भविष्यद्वाणी-भरा या उपदेशात्मक हो, प्रेरितिक सिद्धांत को आगे पहुँचाए बिना कैसे दे सकता है।

809. De Young John Dickson के दृष्टिकोण का सामना करता है: www.bit.ly/3wqsXtW इसी तरह Schreiner, Andrew Wilson का खंडन करने का प्रयास करता है: www.bit.ly/2ZTCIoH

810. तीतुस 1:11

811. 2 तीमुथियुस 2:2। NIV इन व्यक्तियों का सही अनुवाद 'people' (लोग) करता है, न कि 'men' (पुरुष) (ESV), क्योंकि यूनानी शब्द 'anthropos' रूप में पुल्लिंग होते हुए भी स्त्रियों को शामिल करके प्रयोग होता है। उदाहरण के लिए, जब यीशु हमसे उन दूसरों को क्षमा करने को कहते हैं जिन्होंने हमारे विरुद्ध पाप किया है, तो वे दूसरों के लिए 'anthropos' का प्रयोग करते हैं (मत्ती 6:14)।

"लोग" हैं, पुरुष नहीं – पौलुस सामान्य शब्द anthrōpois का प्रयोग करता है, और इस प्रकार पुरुषों और स्त्रियों दोनों को शामिल करता है।[812] यद्यपि पौलुस की कल्पना में शिक्षा का बड़ा भाग प्राचीन ही देते हैं, फिर भी वह शिक्षा की सेवकाई को कभी केवल उन्हीं तक सीमित नहीं करता।[813] इसी तरह इब्रानियों का लेखक चाहता है कि पूरा समुदाय, पुरुष और स्त्रियाँ, अपने अच्छे सिद्धांत और आत्मिक परिपक्वता के आधार पर शिक्षा की सेवकाई के योग्य हो, जब वह कहता है, "समय के विचार से तो तुम्हें शिक्षक हो जाना चाहिए था, फिर भी तुम्हें आवश्यकता है कि कोई तुम्हें आरंभिक सच्चाइयाँ ... फिर से सिखाए।"[814] (वैसे, इससे हमें आशा मिलती है कि इफिसुस की स्त्रियाँ भी भविष्य में फिर से शिक्षा देने के योग्य बन सकती हैं।)

स्त्रियों के शिक्षा देने के उदाहरण

स्त्रियों के शिक्षा देने के बारे में पवित्रशास्त्र के कौन-से स्पष्ट खंड 1 तीमुथियुस 2:12 के धुँधले खंड की बेहतर व्याख्या करने में हमारी सहायता कर सकते हैं? ऐसे अनेक खंड हैं: पौलुस पुरुषों और स्त्रियों दोनों को आज्ञा देता है कि वे अपने शिक्षा देने के वरदानों का प्रयोग करें;[815] आराधना के लिए इकट्ठा होने पर एक दूसरे को सिखाएँ और चिताएँ;[816] और कलीसिया की सभाओं में शिक्षा का कोई वचन लाएँ।[817] ये सब खंड यूनानी शब्द didaskein का प्रयोग करते हैं, जो 1 तीमुथियुस 2:12 में भी आता है। उदाहरण के लिए, यह सब इस बात से मेल खाता है कि सामरी स्त्री ने पुरुषों में सुसमाचार सुनाया,[818] कि पवित्रशास्त्र के सिद्धांत से भरपूर अनेक खंड स्त्रियों ने रचे,[819] और प्रिस्किल्ला और अक्विला के उस विवरण से भी, जिन्होंने अपुल्लोस को अपने घर बुलाने के बाद "परमेश्वर का मार्ग उसे और भी ठीक-ठीक समझाया।"[820]

812. उदाहरण के लिए, 1 पतरस 3:4 में यह शब्द स्पष्ट रूप से स्त्रियों के लिए प्रयोग हुआ है।
813. मैंने कई पूरकतावादी विद्वानों को पढ़ा है जो तर्क देते हैं कि पत्रियाँ कहती हैं कि केवल प्राचीनों को शिक्षा देनी है। यह कुछ संप्रदायों में नियम हो सकता है, पर पवित्रशास्त्र में यह नियम नहीं है। ये विद्वान अपने कथन के समर्थन में आमतौर पर ये संदर्भ एक के ऊपर एक रख देते हैं: 1 तीमुथियुस 2:12; 3:2; 4:11-13; 5:17; 2:24-26; 4:1-5; तीतुस 1:5-6;15, और याकूब 3:1। पर ये संदर्भ प्राचीनों के अलावा दूसरों को शिक्षा देने से बाहर रखने का समर्थन नहीं करते। इस तथ्य के अलावा कि 2 तीमुथियुस 2:2 सुझाता है कि कोई भी शिक्षा पाया हुआ व्यक्ति संभवतः शिक्षा दे सकता है, "प्रमाण" पदों की इस लंबी सूची को ध्यान से पढ़ने पर पता चलता है कि उनमें से केवल तीन विशेष रूप से प्राचीनों के शिक्षा देने की बात करते हैं (1 तीमुथियुस 3:2, 5:17 और तीतुस 1:5-6)। उनमें से चार प्राचीनों की नहीं, बल्कि तीमुथियुस और तीतुस जैसे प्रेरितिक प्रतिनिधियों के शिक्षा देने की बात करते हैं (2 तीमुथियुस 4:11-13, 2 तीमुथियुस 2:2, 4:1-5, तीतुस 2:1-6,15)। और क्या यह संभव नहीं कि कोई स्त्री प्रेरितिक प्रतिनिधि हो? उदाहरण के लिए फीबे के बारे में सोचिए, जो पौलुस की ओर से रोमियों की पत्री स्वयं लेकर गई (रोमियों 16:1-2)। और भी स्पष्ट रूप से यूनिया के बारे में सोचिए, जो (अपने पति के साथ) एक प्रेरित थी (प्रेरितिक प्रतिनिधि से एक स्तर ऊपर)। अंत में, याकूब 3:1 (जिसमें 'भाइयो' का अर्थ 'भाइयो और बहनो' है) संभवतः किसी के लिए भी, केवल पुरुषों या प्राचीनों के लिए नहीं, शिक्षक बनने का द्वार खुला रखता है।
814. इब्रानियों 5:14
815. रोमियों 12:7, 1 कुरिन्थियों 12:28-30
816. कुलुस्सियों 3:16
817. 1 कुरिन्थियों 14:26
818. यूहन्ना 4:39
819. उदाहरण के लिए देखें न्यायियों 5:2-31; 1 शमूएल 2:1-10; 25:24-31; लूका 1:25, 42-45, 46-55।
820. प्रेरितों के काम 18:26

जहाँ तक प्रिस्किल्ला की शिक्षा-सेवकाई की बात है, "समझाया" शब्द (यूनानी: exethento) "सिखाना" शब्द का समानार्थी है[821] और इसका प्रयोग रोम में पौलुस की सेवकाई का वर्णन करने के लिए हुआ है, जहाँ वह "भोर से साँझ तक" "परमेश्वर के राज्य के विषय में समझाता रहा।"[822] फिर भी पूरकतावादी विद्वान प्रिस्किल्ला द्वारा अपुल्लोस को दी गई शिक्षा के सीधे-सादे अर्थ को धुँधला कर देते हैं, ताकि वह 1 तीमुथियुस 2:12 की उनकी ग़लत व्याख्या की प्रोक्रस्टीज़ की खाट (Procrustean bed – जिस पर हर किसी को काट-छाँटकर या खींचकर फ़िट किया जाता है) में समा जाए; उनका मानना है कि यह पद स्त्री को कलीसिया में पुरुष को अधिकार के साथ शिक्षा देने से रोकता है। उनका दावा है कि उसकी शिक्षा निजी और अनौपचारिक थी, सार्वजनिक और औपचारिक नहीं। यह दावा इस बात को नहीं पहचानता कि इफिसुस की कलीसिया की सभाएँ संभवतः उसी घर में होती थीं, और (जब तक हम बहुत बाद की कलीसियाई प्रथाओं को पहली सदी के मध्य में वापस लाने का प्रयास न करें) वे आत्मीय और अनौपचारिक थीं।[823]

जहाँ तक इस तर्क की बात है कि उसकी शिक्षा का उस "आधिकारिक" या "अधिकारपूर्ण" शिक्षा से कोई संबंध नहीं जिसका उल्लेख पौलुस तीमुथियुस और तीतुस को लिखी अपनी पास्टरीय पत्रियों में करता है, वास्तव में प्रिस्किल्ला ठीक उसी शिक्षा-सेवकाई का उत्तम उदाहरण है जिसे पौलुस तीमुथियुस से "विश्वासयोग्य लोगों" में बढ़ाने को कहता है, "जो दूसरों को भी सिखाने के योग्य [हों]।"[824] प्रिस्किल्ला केवल भक्ति के विचार नहीं बाँट रही थी – पौलुस से शिक्षा पाकर वह एक प्रभावशाली प्रकार की शिक्षा में लगी थी: अपुल्लोस को सिद्धांत की शिक्षा देना और उसके दोषपूर्ण और अधूरे विचारों को सुधारना। और उसकी शिक्षा का फल देखिए: अपुल्लोस, उसकी शिक्षा-सेवकाई पाने के बाद, आगे चलकर पूरी तरह तैयार होकर भेजा गया, ताकि वह आरंभिक कलीसिया के युग के महान शिक्षकों में से एक बने।[825]

सारांश में: पूरी बाइबल को ध्यान में रखकर की गई पवित्रशास्त्र की व्याख्या के अनुसार, क्या आज स्त्रियों को कलीसियाओं में शिक्षा देने और प्रचार करने की अनुमति होनी चाहिए? हाँ, बिल्कुल। पर तीन शर्तों पर, जो पुरुषों पर भी लागू होती हैं: वे ऐसे विश्वासयोग्य लोग हों जो शिक्षा पाकर अब दूसरों को सिखाने के योग्य हैं; उनके पास शिक्षा देने का वरदान हो; और (इस सावधानी से खोदकर निकाली गई अंतर्दृष्टि के लिए हम 1 तीमुथियुस 2:12 का धन्यवाद करते हैं) वे ऐसे ढंग से सिखाएँ जिसमें कलीसिया के कुछ लोगों के प्रति घमंड या पापपूर्ण शत्रुता न झलके। इस निष्कर्ष को कि स्त्रियाँ पुरुषों को प्रचार कर सकती हैं, यह तथ्य और भी बल देता है कि नया नियम कलीसिया में भविष्यद्वक्तिनों का आनंद के साथ उल्लेख करता है – यह घोषणा की एक ऐसी सेवकाई थी जो शिक्षा देने के कार्य से आंशिक रूप से मेल खाती थी, और जिसे शिक्षा से भी

821. www.bit.ly/3q7sZpi
822. प्रेरितों के काम 28:23
823. Kevin Giles "What the Bible Actually Teaches about Women" (अध्याय 6) में ध्यान दिलाता है कि पूरकतावादी विद्वान इस तथ्य को अनदेखा कर देते हैं कि "आरंभिक मसीही छोटी संख्या में घरों में मिलते थे। क्योंकि वे इन तथ्यों को स्वीकार नहीं करते, इसलिए वे नए नियम में कलीसिया और कलीसियाई अगुवाई के बारे में अपनी आधुनिक सांस्कृतिक समझ पढ़ लेते हैं, और फिर आज के कलीसियाई जीवन के लिए क्या निर्धारित होना चाहिए, इस पर अपने निष्कर्षों के समर्थन में इसी का सहारा लेते हैं।"
824. 2 तीमुथियुस 2:2
825. इफिसुस में प्रिस्किल्ला की सेवकाई और अपुल्लोस के प्रति उसकी शिक्षा-सेवकाई के विस्तृत अध्ययन के लिए देखें www.rb.gy/ttr2do।

अधिक रणनीतिक महत्त्व दिया गया था।[826] इसलिए आज स्त्रियों को प्रचार-मंच (पुलपिट) से दूर रखने का कोई अर्थ नहीं है।

826. इस पर अधिक के लिए अध्याय 12, “स्त्री भविष्यद्वक्ता” देखें।

परिशिष्ट 5: 1 तीमुथियुस 3 से दो और तर्क

अध्याय 12 में मैं उस पूरकतावादी तर्क पर विचार करता हूँ जो इस बात पर आधारित है कि पौलुस 1 तीमुथियुस 3 में अध्यक्ष को ऐसा व्यक्ति बताता है जो "अपनी पत्नी के प्रति विश्वासयोग्य" हो। इस परिशिष्ट में मैं दो और तर्कों पर विचार करता हूँ, जो 1 तीमुथियुस 3 पर ही आधारित हैं और जिन्हें पूरकतावादी स्त्रियों को कलीसिया की अगुवाई से बाहर रखने के लिए प्रस्तुत करते हैं।

1 तीमुथियुस 3:11 में "स्त्रियों" का रहस्य

प्राचीनों की योग्यताएँ गिनाने के बाद पौलुस सेवकों (डीकनों) के लिए भी कुछ ऐसा ही करता है। "स्त्रियों" के उल्लेख पर नज़र रखिए:

इसी प्रकार सेवकों को भी आदर के योग्य होना चाहिए, निष्कपट, बहुत दाखरस पीने वाले नहीं, और बेईमानी की कमाई के पीछे न भागने वाले। वे विश्वास के गहरे सत्यों को शुद्ध विवेक से थामे रहें। पहले उन्हें परखा जाए; और फिर यदि उनके विरुद्ध कुछ न निकले, तो वे सेवक का काम करें।

इसी प्रकार **स्त्रियों** को भी आदर के योग्य होना चाहिए, दूसरों की निंदा करने वाली नहीं, बल्कि संयमी और सब बातों में विश्वासयोग्य।

सेवक अपनी पत्नी के प्रति विश्वासयोग्य हो और अपने बच्चों और अपने घराने का अच्छा प्रबंध करे। जिन्होंने अच्छी तरह सेवा की है, वे अच्छा स्थान और मसीह यीशु पर विश्वास में बड़ा भरोसा प्राप्त करते हैं।[827]

1 तीमुथियुस 2:12-15 के बाद इस पत्री में यह दूसरा सबसे अधिक विवादित खंड है। विद्वानों के बीच मतभेद इस बात पर है कि ये "स्त्रियाँ" कौन थीं। क्या यह सेवकों की पत्नियों की ओर संकेत करता है या डीकनेस ('डीकन' शब्द का स्त्रीलिंग रूप) की ओर? किसी भी कारण से, पौलुस इसे स्पष्ट नहीं करता। यह अस्पष्टता अनुवादकों के काम में दिखती है – 28 अंग्रेज़ी संस्करणों में से 18 "सेवकों की पत्नियाँ" (deacon's wives) चुनते हैं; 2 "डीकनेस" (deaconesses); और बाकी 8 इसे "स्त्रियाँ" (women) ही रहने देते हैं (ताकि पाठक स्वयं निर्णय करे)। व्यक्तिगत रूप से मुझे लगता है कि अधिकांश अनुवादक "पत्नियाँ" शब्द का प्रयोग करके सही करते हैं, क्योंकि पौलुस ठीक यही शब्द gunaikas "पत्नी" के अर्थ में "अपनी पत्नी के प्रति विश्वासयोग्य" वाक्यांश में प्रयोग करता है, जो कुछ पद पहले (पद 2) आता है, और ठीक अगले पद (पद 12) में भी। इन दूसरे प्रयोगों के बीच इतनी निकटता से घिरे होने पर यहाँ इसका कोई और अर्थ होने की संभावना कम है।

पूरकतावादी विद्वान तर्क देते हैं कि चाहे इसे सेवकों की पत्नियाँ समझा जाए या डीकनेस, इससे यह दिखता है कि पौलुस ने स्त्री प्राचीनों की अनुमति नहीं दी। यदि यह सेवकों की पत्नियों की ओर संकेत करता है, तो वे

827. 1 तीमुथियुस 3:8-13

कहते हैं कि इसका अर्थ है कि पौलुस की कल्पना में दो समूह थे: पुरुष प्राचीन, और पुरुष सेवक-और-उनकी-पत्नियाँ। दूसरी ओर, यदि यह डीकनेस की ओर संकेत करता है, तो कुछ पूरकतावादी विद्वान कहते हैं कि इसका अर्थ है कि पौलुस की कल्पना में तीन समूह थे: पुरुष प्राचीन, पुरुष सेवक, और सेविकाएँ (डीकन) (पर कोई स्त्री प्राचीन नहीं)। दोनों में से कोई भी व्याख्या स्त्री प्राचीनों की संभावना को बाहर कर देती है।

शुरुआत में ही, यदि हम दूसरी संभावना को मान भी लें, तो प्रश्न बना रहता है: क्या पौलुस फिर यह निर्धारित करता है कि हर एक स्थानीय कलीसिया में तीन पद होने चाहिए, अर्थात् पुरुष प्राचीन, पुरुष सेवक और सेविकाएँ? या वह मानकर चलता है या जानता है कि उसके लिखने के समय इफिसुस की कलीसिया में यही पद मौजूद थे, और 1 तीमुथियुस 3 में केवल यह निर्धारित करता है कि इन पदों के लिए किस प्रकार के लोग सबसे उपयुक्त हैं? मेरे विचार में यह एक पूर्वधारणा है, कोई निर्धारित नियम नहीं। इसके अलावा, यदि पौलुस सेविकाओं की ओर संकेत करता है, तो इसका अर्थ है कि ठीक अगले पद में, जब पौलुस कहता है कि सेवक (सेविकाओं सहित) "अपनी पत्नी के प्रति विश्वासयोग्य" हों (पद 12), तो यह केवल उस मुहावरेदार वाक्यांश के दोनों लिंगों को शामिल करने वाले प्रयोग की पुष्टि करता है, जो हमें उदाहरण के लिए तीतुस 1 में प्राचीनों की योग्यताओं में मिलता है, जहाँ पौलुस क्रेते की कलीसियाओं में केवल प्राचीनों को नियुक्त पद के रूप में देखता है, सेवकों को नहीं।[828] इसका अर्थ है कि तीतुस 1 में प्राचीनों के लिए दी गई योग्यताएँ, जो हर प्रकार के केवल पुरुषों को सूचित करने वाले सर्वनामों या मुहावरों से मुक्त हैं, स्त्री प्राचीनों की नियुक्ति की अनुमति देंगी।

लेकिन बहुमत का दृष्टिकोण यह है कि पौलुस के अनुसार ये स्त्रियाँ सेविकाएँ नहीं, बल्कि सेवकों की पत्नियाँ हैं। उस स्थिति में ऐसा लगता है कि वह केवल पुरुष प्राचीनों और पुरुष सेवकों की कल्पना करता है। पर इस दृष्टिकोण की कमज़ोरी यह है कि तब हमारे पास इस बात का और भी प्रमाण है कि हमें 1 तीमुथियुस 3 की इन सूचियों को सब कलीसियाओं के लिए विधिक मानदंड नहीं मानना चाहिए, क्योंकि रोमियों 16:2, जो लगभग इसी पत्री के समय लिखा गया, फीबे नाम की एक स्त्री का उल्लेख करता है, जिसकी सराहना पौलुस किंख्रिया की कलीसिया की सेविका (डीकन) के रूप में करता है।[829]

दूसरे शब्दों में, इन स्त्रियों के बारे में कोई भी दृष्टिकोण पूरकतावादियों के इस विश्वास की जड़ काट देता है कि 1 तीमुथियुस 3 में पौलुस का यह खंड सब कलीसियाओं में स्त्री पास्टरों की संभावना को बाहर कर देता है।

क्या पद 11 की "स्त्रियों" को समझने का कोई और तरीका है? मुझे वह दृष्टिकोण अधिक विश्वसनीय लगता है जिसके अनुसार इन स्त्रियों में वास्तव में केवल सेवकों की पत्नियाँ या डीकनेस (आप इसे जिस भी तरह समझें) ही नहीं, बल्कि प्राचीनों की पत्नियाँ या स्त्री प्राचीन भी शामिल हैं। मुझे समझाने दीजिए। जैसा Michael Eaton 1 तीमुथियुस पर अपनी टीका में समझाता है, और जैसा प्राचीन लेखन में आम था, पौलुस दो मिलती-जुलती सूचियाँ बनाता है (एक प्राचीनों के लिए और एक सेवकों के लिए), पर अत्यधिक दोहराव से बचने के लिए कुछ ऐसी सामग्री दोनों भागों में बाँट देता है जिसे दोनों पर लागू समझा जाना

828. यूहन्ना क्रिसोस्टम (John Chrysostom) ने यह देखा था। 1 तीमुथियुस 3 पर अपने ग्यारहवें प्रवचन (Homily 11) में वह लिखता है: "एक स्त्री के पुरुष ... यह बात स्त्री सेवकों (डीकनों) के बारे में भी कहना उचित है।"
829. फीबे के सेविका (डीकन) होने के प्रमाण के लिए अध्याय 12 में "रोमियों 16 के सहकर्मी" शीर्षक के अंतर्गत फीबे से संबंधित फ़ुटनोट देखें।

है।[830] उसकी बात ठोस है, विशेष रूप से इस खंड में। उदाहरण के लिए, ध्यान दीजिए कि प्राचीनों वाले भाग में पद 1 यह काम करने की इच्छा की बात करता है, और पद 7 बाहर वालों में अच्छे नाम की आवश्यकता की। फिर सेवकों वाले भाग में पद 9 विश्वास के गहरे सत्यों को थामे रहने की आवश्यकता की बात करता है, पद 10 इस भूमिका में भेजे जाने से पहले परखे जाने की आवश्यकता की, और पद 13 उन लोगों के लिए परमेश्वर के प्रतिफल की, जो अच्छी तरह सेवा करते हैं। फिर भी ये पाँचों बातें प्राचीनों और सेवकों दोनों पर लागू होती हैं। प्राचीन पाठक इसे हम आधुनिक लोगों से कहीं जल्दी समझ लेते। दशकों तक प्राचीनों और सेवकों को प्रशिक्षित करने में इस खंड का प्रयोग करते हुए, मैंने इसे खोलकर समझाते समय सहज रूप से इसी तरह व्यवस्थित किया। क्या सेवकों को भी, केवल प्राचीनों को नहीं, इस प्रकार परमेश्वर की सेवा करने की इच्छा रखनी चाहिए और बाहर वालों में उनका अच्छा नाम होना चाहिए? और क्या प्राचीनों को भी, केवल सेवकों को नहीं, पवित्रशास्त्र पर गहराई से मनन करना चाहिए, नियुक्त किए जाने से पहले परखा जाना चाहिए, और अच्छी अगुवाई के लिए परमेश्वर से प्रतिफल की आशा रखनी चाहिए?[831]

पर देखिए, कुछ योग्यताओं को दोनों समूहों पर लागू समझने का यह तरीका शायद इस बात का एकमात्र स्पष्टीकरण है कि पौलुस केवल "पत्नियाँ/स्त्रियाँ" क्यों लिखता है, "सेवकों की पत्नियाँ" या "स्त्री सेवक" क्यों नहीं – वह इसका प्रयोग केवल सेवकों तक सीमित नहीं करना चाहता।

इसलिए, यदि पद 11 में पौलुस का अर्थ पत्नियाँ है, तो वह सेवकों और प्राचीनों दोनों की पत्नियों से अपेक्षित चरित्र-गुणों की बात करता है। यदि हम सेविका फीबे के अस्तित्व को ध्यान में रखें, तो इस खंड से निकलने वाला कालातीत सत्य यह है कि प्राचीनों और सेवकों के जीवनसाथियों की (केवल पत्नियों की नहीं) भक्ति महत्त्वपूर्ण है।

और यदि पद 11 में पौलुस का अर्थ इस सेवा-पद (डीकन के पद) का स्त्री रूप है, तो वह सेविकाओं और स्त्री प्राचीनों दोनों से अपेक्षित चरित्र-गुणों की बात करता है। यह व्याख्या इस तथ्य से और भी विश्वसनीय बनती है कि प्रिस्किल्ला और उसके पति ने एक समय इसी कलीसिया की स्थापना की थी और उसकी अगुवाई की थी।

इसे जिस भी तरह लिया जाए, हम इस खंड पर जितना अधिक मनन करते हैं, उतने ही कम निश्चित होते जाते हैं कि ये रहस्यमयी स्त्रियाँ कौन थीं, और उतने ही अधिक निश्चित होते जाते हैं कि पद 11 या तो इतना अस्पष्ट है या अपने संदर्भ से इतना बँधा है कि किसी भी समझदार व्याख्या-पद्धति के अनुसार यह हमेशा और हर जगह स्त्रियों की नियुक्ति पर प्रतिबंध लगाने के लिए शायद ही पर्याप्त आधार है।

830. "कुछ बातें जो प्राचीनों पर लागू होती हैं, वे सेवकों पर भी लागू होती हैं, और इसके विपरीत भी। इब्रानी लेखन-शैली में यह आम है कि जब कोई दो विषयों के बारे में मिलती-जुलती बातें कहना चाहता है, तो वह विषय को दो अनुच्छेदों में बाँटता है और एक भाग के बारे में एक बात और दूसरे भाग के बारे में दूसरी बात कहता है। पर इब्रानी शैली चाहती है कि हम उसे दोनों भागों पर लागू करें।" (Michael Eaton, Preaching Through the Bible: Timothy)
831. फिर भी हम पूछ सकते हैं कि पौलुस दोनों समूहों के लिए बहुत-सी सामग्री दोहराने को क्यों तैयार है। उत्तर यह है कि वह ऐसा विशेष रूप से चरित्र के गुणों के बारे में करता है, जो अतिरिक्त ज़ोर के योग्य हैं।

क्या प्राचीन पिता हैं?

एक आंदोलन के पूर्व अगुवे P. J. Smyth ने हाल ही में केवल पुरुषों के प्राचीन होने के पक्ष में एक नया तर्क प्रकाशित किया है, जो मेरे विचार में समीक्षा के योग्य है। मैं इसे तीन भागों में उद्धृत करता हूँ और एक-एक करके हर भाग का मूल्यांकन करता हूँ।

हमारे आधुनिक, तकनीक से गढ़े संसार में हम लोगों के बारे में यांत्रिक ढंग से सोचने के आदी हो जाते हैं। इसका अर्थ है कि हम "प्राचीन" शब्द को वैसे ही पढ़ते हैं जैसे व्यवसाय, राजनीति या उद्योग में "अगुवा" शब्द को। उन क्षेत्रों में यह उचित है कि जो व्यक्ति सबसे सक्षम हो – उसका लिंग चाहे जो भी हो – उसे CEO, प्रेसिडेंट या मैनेजर का पद दिया जाए। पर जब बाइबल प्राचीनों की भूमिका का वर्णन करती है, तो उसकी दृष्टि में वास्तव में हमारे समकालीन कॉर्पोरेट अगुवाई के मॉडल नहीं होते। बल्कि चित्र कहीं अधिक यह है कि कलीसिया एक परिवार है, जिसकी देखरेख और रक्षा पिता करते हैं।

Smyth तर्क देता है कि परिवार में हमेशा पिता अगुवाई करता है। चूँकि कलीसिया एक परिवार है, इसलिए एक बार फिर लिंग को वरदान पर भारी पड़ना चाहिए, ताकि पुरुषों का एक दल ही अगुवाई करे, चाहे कुछ स्त्रियाँ ऐसा करने के लिए उतना ही वरदान क्यों न रखती हों। पर Smyth का तर्क दो दोषपूर्ण मान्यताओं पर आधारित है।

पहली, पिता और माता दोनों को बच्चों की अगुवाई करनी है। नए नियम में पिताओं के अपने परिवार की अगुवाई करने का कोई भी उल्लेख यूनानी-रोमी संसार का वर्णन है, जिसमें, जब तक उसकी मृत्यु न हो गई हो, हर घराने की अगुवाई एक paterfamilias (घर का मुखिया) करता था। लेकिन जब हम यह खोजते हैं कि बच्चों की अगुवाई कौन करे, इस बारे में बाइबल क्या निर्धारित करती है (और केवल क्या वर्णन करती है, वह नहीं), तो स्पष्ट है कि माता और पिता मिलकर अपने परिवार के अगुवे हैं। आज की अनेक कलीसियाई धाराओं में हमने इतना सुना है कि "पिता को घर का सिर होना है" और इसका इतने व्यापक रूप से पालन किया है कि हम यह समझ ही नहीं पाए कि वास्तव में इसके पक्ष में पवित्रशास्त्र का कोई आधार नहीं है।

पति पत्नी का सिर हो सकता है (यद्यपि हम अध्याय 8 में देख चुके हैं कि संभवतः इसका अर्थ वैसे भी अधिकार नहीं है), पर घर की अगुवाई उसे केवल अपनी पत्नी के साथ मिलकर करनी है: "हे बालको, प्रभु में अपने माता-पिता की आज्ञा मानो, क्योंकि यह उचित है। अपने पिता और माता का आदर कर।"[832] इसी तरह, कम से कम चार स्थानों पर पवित्रशास्त्र इस सूत्र के द्वारा माता और पिता की दोहरी अगुवाई की पुष्टि करता है: "इस कारण पुरुष अपने पिता और माता को छोड़कर अपनी पत्नी से मिला रहेगा।"[833] यह सूत्र दिखाता है कि एक पुत्र दोनों माता-पिता की अगुवाई वाले परिवार को छोड़कर (संभवतः) एक नया परिवार

832. इफिसियों 6:1
833. देखें उत्पत्ति 2, मरकुस 10, मत्ती 19, इफिसियों 5

शुरू करता है, जिसकी अगुवाई फिर से दोनों माता-पिता करते हैं।[834] माता को दूसरे दर्जे की अगुवा के रूप में दिखाने के बजाय, जो अधिकार के ढाँचे में पिता और बच्चों के बीच आधी ऊँचाई पर बैठी हो, बाइबल यह निर्धारित करती है कि माता और पिता "एक तन" होकर मिलकर घर की अगुवाई करें। मेरा व्यक्तिगत अनुभव इस अंतर्दृष्टि को और पुष्ट करता है: अपने बच्चों की अगुवाई करते पिता से भी बेहतर एक बात है – पिता और माता का मिलकर अपने बच्चों की अगुवाई करना।[835]

यद्यपि बहुत-से लोग इस विचार से कि पति पत्नी का सिर है, ग़लती से इस विचार पर छलाँग लगा देते हैं कि पति परिवार का सिर है, नए नियम के किसी भी लेखक ने ऐसा नहीं किया। जिस पहले स्थान का हमारे पास अभिलेख है जहाँ यह ग़लती हुई, वह दूसरी सदी में हरमास (Hermas) की तीसरी पुस्तक है।[836]

दूसरी, Smyth कलीसिया के एक रूपक (परिवार) का प्रयोग इस तरह करता है कि वह दूसरे रूपक (देह के रूप में कलीसिया) को रद्द कर देता है। फिर भी नया नियम हमें दो प्रमुख रूपक देता है, जो इस बात की नींव हैं कि हमें कलीसियाओं की संरचना कैसे करनी है। Smyth वरदान के विचार को ही किसी निगम या राष्ट्र से जोड़कर कलीसिया के अनेक कार्यों वाली देह होने को कम करके आँकता है। यह सच है कि कलीसिया, जैसा वह कहता है, अपनेपन पर आधारित एक परिवार है, पर यह भी सच है कि कलीसिया वरदानों पर आधारित एक जीवित देह है (केवल एक संगठन नहीं)। यद्यपि वरदानों की ओर यह झुकाव किसी धर्मनिरपेक्ष व्यवसाय या संगठन में पाई जाने वाली किसी भी चीज़ से कहीं अधिक जीवंत और आत्मा द्वारा निर्देशित है, फिर भी कम से कम एक बात में कलीसिया एक आधुनिक कंपनी जैसी है: दोनों में वरदानों की पहचान का किसी के लिंग से कोई संबंध नहीं है।

तीमुथियुस को लिखी पत्री में चित्र वैसा नहीं है जैसा Smyth आगे कहे गए अपने शब्दों में सुझाएगा, कि यह "कहीं अधिक परिवार के रूप में कलीसिया का" चित्र है – वास्तव में इस पत्री में केवल एक पद कलीसिया को सीधे परिवार के बराबर ठहराता है।[837] बल्कि पौलुस की पत्री मुख्य रूप से इफिसुस की कलीसिया को यूनानी-रोमी घरानों के एक समूह के रूप में देखती है। तीमुथियुस को निर्देश दिया गया है कि वह इन प्राचीन घरानों के लोगों की विभिन्न स्थितियों के अनुसार बुद्धिमानी से उनकी सेवा करे – बूढ़े और जवान, दास और स्वतंत्र, धनी और निर्धन, पुरुष और स्त्रियाँ, विधवाएँ और विवाहित।

Smyth अपने तर्क में एक और परत जोड़ता है:

834. इसी तरह नीतिवचन में माताएँ और पिता दोनों अपने बच्चों को शिक्षा और मार्गदर्शन देते हैं: "हे मेरे पुत्र, अपने पिता की शिक्षा पर कान लगा, और अपनी माता की शिक्षा को न तज" (नीतिवचन 1:8)। "अपने पिता और माता की सुन, जिन्होंने तुझे जीवन दिया, और अपनी माता को तुच्छ न जान।" (नीतिवचन 23:22)। और भी बहुत-से पदों में माताएँ और पिता अपने बच्चों के पालन-पोषण, प्रशिक्षण, अनुशासन और शिक्षा में अगुवाई करने के लिए मिलकर काम करते हैं (निर्गमन 20:12; लैव्यव्यवस्था 19:3; व्यवस्थाविवरण 6:6-9, 21:18-21, 27:16; इफिसियों 6:1-4; कुलुस्सियों 3:20; 2 तीमुथियुस 1:5; लूका 2:51 भी देखें)।
835. इसके अलावा, यदि यह परमेश्वर की इच्छा हो भी कि पिता "घर का सिर" हो, तो इस तथ्य के आधार पर कि पौलुस अनेक अगुवों की कल्पना करता है, यह कहना एक अजीब छलाँग है कि कई पिता मिलकर कलीसिया का "सिर" हों।
836. Hermas, Similitudes 7.3 में पुरुष से कहा गया है कि उसके "परिवार को किसी और तरह से दंड नहीं दिया जा सकता, सिवाय इसके कि तुम, घर के सिर, दुख उठाओ।"
837. 1 तीमुथियुस 3:1

[कलीसिया] एक परिवार [है] जिसकी देखरेख और रक्षा पिता करते हैं, [जिनकी] प्राथमिक योग्यता पिता के रूप में उनका भक्तिपूर्ण चरित्र है। तीमुथियुस को लिखी पौलुस की पहली पत्री में यह विशेष रूप से स्पष्ट है कि किसी पुरुष को तभी प्राचीन माना जाए जब वह अपने जैविक परिवार का अच्छा पिता हो। इस बात पर जितना ज़ोर दिया जाए, कम है: प्राचीनों को पिता होना चाहिए।[838]

उसके तर्क का यह पहलू भी एक बार फिर दो दोषपूर्ण आधार-वाक्यों पर खड़ा है। पहला, पौलुस प्राचीनों को केवल पिताओं के रूप में नहीं, बल्कि घराने के अगुवों के रूप में देखता है। इस पत्री के मूल पाठकों के प्राचीन संदर्भ को ग़लत समझते हुए Smyth इन अगुवों के घर की कल्पना केवल एक "जैविक परिवार" के रूप में करता है – शायद दो या तीन बच्चे। लेकिन 1 तीमुथियुस 3 में पौलुस कहता है कि पास्टर "अपने घर का अच्छा प्रबंध करे"। इस खंड में यूनानी शब्द (oikos) का बेहतर अनुवाद "परिवार" नहीं, बल्कि "घराना" है – जिसमें संभवतः दास, किरायेदार और दूसरे संबंधी भी शामिल होते थे। पर यदि हम Smyth से सहमत हों कि चूँकि पास्टर बच्चों के पिता थे, इसलिए उन्हें कलीसिया के पिता बनना चाहिए, तो हमें संगत रहकर यह भी कहना होगा कि पास्टरों को कलीसिया के पति, कलीसिया के स्वामी और कलीसिया के मकान-मालिक भी बनना चाहिए – क्योंकि घराने का प्रबंध करने में ये भूमिकाएँ भी शामिल हैं।[839]

दूसरा, एक बात जो पहले अध्याय 12 में कही जा चुकी है: materfamilias (घर की स्वामिनी) भी योग्य ठहरेंगी! घराने का प्रबंध करने के लिए आवश्यक अगुवाई की क्षमता, प्राचीन संसार में भी, केवल पुरुषों का काम नहीं थी। पौलुस इसी पत्री में आगे एक विवाहित स्त्री की बात करता है जो अपने घर का प्रबंध करती है;[840] और हम यह भी जानते हैं कि पौलुस ने यूरोप में विश्वासियों का जो पहला समुदाय स्थापित किया, वह लुदिया द्वारा संचालित घर में था।[841]

फिर Smyth अपने तर्क का समापन करता है: "इसका अर्थ यह होना चाहिए कि वे कलीसिया के पिता बन सकते हैं। स्त्रियों को प्राचीन नहीं होना चाहिए, क्योंकि स्त्रियाँ पिता नहीं हो सकतीं।"[842]

घराने के प्रबंध को घटाकर केवल पिता होने तक सीमित कर देने के बाद, Smyth फिर उसी घटाई हुई समझ से पास्टर की सेवा के लिए एक बिल्कुल नया रूपक गढ़ता है: पिता होना। फिर भी इसी पत्री में हम देखते हैं कि पौलुस प्राचीन घराने के पदानुक्रम के सांस्कृतिक नियम से हटकर एक जवान पुरुष, तीमुथियुस, को बड़े-बूढ़े पुरुषों का प्रभारी बनाता है – ऐसा ही स्वयं यीशु ने किया था, जब उन्होंने जवान पुरुषों को प्रेरित चुना।

838. Alan Frow भी यही चक्रीय तर्क देता है: "प्राचीन एक पिता के समान है, और प्राचीन की पत्नी एक माता के समान। यद्यपि वे मिलकर कलीसिया का पालन-पोषण करते हैं, फिर भी, जैसे बाइबल के परिवार में माताएँ नहीं बल्कि पिता अगुवाई करते हैं, वैसे ही कलीसिया की अगुवाई प्राचीन करते हैं। जैसे मैं माताओं के पिता होने की अपेक्षा नहीं करता, वैसे ही प्राचीनों के स्त्री होने की अपेक्षा भी नहीं करूँगा।" www.bit.ly/2ZPRZGH

839. इससे हमें यह समझने में सहायता मिलती है कि प्राचीन घर की स्थिति हमारे आधुनिक एकल परिवारों से कितनी अलग है। निश्चय ही उस संस्कृति में "घराने का प्रबंध करने" का एक प्रमुख पहलू यह देखना था कि "उसके बच्चे उसकी आज्ञा मानें," पर इसमें यह भी शामिल था कि वह अपनी पत्नी की अच्छी अगुवाई करे, और उन दूसरों की भी जो उसके घराने में रहते हों, जैसे दास, संबंधी और किरायेदार। इसी कारण पद 12 में पौलुस दोनों श्रेणियों को स्पष्ट रूप से अलग करता है, जिसमें सेवकों को एक ओर अपने बच्चों का अच्छा प्रबंध करना है, और दूसरी ओर अपने घराने का भी अच्छा प्रबंध करना है। इसके अलावा, पौलुस सेवकों के बारे में भी यही बात कहता है – तो क्या सेवकों को भी "कलीसिया का पिता बनना" है?

840. 1 तीमुथियुस 5:14

841. प्रेरितों के काम 16:14-15;40

842. P.J. Smyth, Elders, अध्याय 12।

Smyth की मान्यता के विपरीत, तीमुथियुस से स्पष्ट रूप से कहा गया है कि वह आत्मिक अगुवाई पिता के रूप में नहीं, बल्कि अपने से बड़े लोगों के प्रति पुत्र के रूप में, और अपने हमउम्र लोगों के प्रति भाई के रूप में करे।[843] आख़िरकार, पास्टर होने के लिए बाइबल का प्रमुख रूपक माता-पिता होना नहीं, बल्कि चरवाहा होना है। यीशु प्रधान चरवाहा हैं, और पास्टर "उप-चरवाहे" हैं।[844] पर पवित्रशास्त्र में कहीं भी यह नहीं कहा गया कि चूँकि परमेश्वर कलीसिया के पिता हैं, इसलिए पास्टरों को "उप-पिता" होना चाहिए।[845] वास्तव में, जब यीशु इसके ठीक उलट मूल नियम की आज्ञा देते हैं, तो हमें पुरुष प्राचीनों को कलीसिया के पिता के रूप में उभारने में विशेष रूप से सावधान रहना चाहिए: "पृथ्वी पर किसी को अपना पिता न कहना, क्योंकि तुम्हारा एक ही पिता है, जो स्वर्ग में है।"[846] धर्मविज्ञान की दृष्टि से, परिवार के रूप में कलीसिया का बाइबल का रूपक, सही ढंग से लागू करने पर, किसी पृथ्वी के पास्टर को नहीं, बल्कि परमेश्वर को हमारे एकमात्र सच्चे पिता के रूप में रखता है, और हमारे अगुवों को मसीह में (अक्सर बड़े) भाइयों और बहनों के रूप में।

इसके अलावा, यदि हम Smyth के इस दृष्टिकोण को मान लें कि कलीसिया मुख्य रूप से पिताओं की अगुवाई वाला परिवार है (और मुझे सम्मानपूर्वक संदेह है कि हमें ऐसा मानना चाहिए), तो अधिक तर्कसंगत यह होगा कि हमारे पास "माता-पिता" का एक दल हो – पुरुष और स्त्री दोनों पास्टर – जो मिलकर अगुवाई करें, जैसा किसी भी स्वस्थ परिवार में होता है।

843. 1 तीमुथियुस 5:1-2
844. 1 पतरस 5:1-4
845. बाइबल केवल दुर्लभ अवसरों पर किसी आत्मिक अगुवे को दूसरों का "पिता" कहती है: उन मामलों में जब संबंध 1) प्रेरितिक उत्तराधिकारियों से हो (2 तीमुथियुस 1:2), 2) किसी ऐसी कलीसिया से हो जिसे उन्होंने शून्य से स्थापित किया (1 कुरिन्थियों 4:14-15), या 3) किसी ऐसी कलीसिया से हो जो उनकी प्रेरितिक देखरेख में है, विशेष रूप से यदि प्रेरित अब बूढ़ा हो चुका हो (1 यूहन्ना 2:1)।
846. मत्ती 23:9

परिशिष्ट 6: तथ्य शायद हमारा मन क्यों न बदलें

"अधिकांश लोग सही जानकारी नहीं चाहते, वे ऐसी जानकारी चाहते हैं जो उन्हें सही ठहराए। बढ़ने के लिए आवश्यक है कि आप उन विचारों को भुलाने के लिए खुले रहें जो पहले आपके काम आते थे।" James Clear

जब मैं मसीही बना, और सुसमाचार को – जैसा अंग्रेज़ी में कहते हैं – "gospel truth", यानी पक्का सत्य मानकर स्वीकार किया, तो मुझे याद है कि मैंने सोचा था, "बस, जब मैं अपने ग़ैर-मसीही मित्रों को बताऊँगा कि मैंने क्या खोजा है, तब देखना! वे सब भी विश्वास करेंगे।" अद्भुत बात है कि कुछ ने विश्वास किया। पर मुझे आश्चर्य हुआ कि अधिकांश ने नहीं किया।

मुझे मानना होगा कि लैंगिक पदानुक्रम के बारे में अपना मन बदलने (और फिर दूसरों का मन बदलने का प्रयास करने) के अपने आरंभिक तरीके में भी मैं ऐसा ही भोला था।

मेरे मामले में यह जागृति पीड़ादायक थी। जहाँ तक मैं देख सकता था, जिस बात पर मैं दशकों से विश्वास करता आया था, वह कहानी के राजा के उन कपड़ों से अधिक कुछ नहीं थी, जो थे ही नहीं। तो फिर, मैं सोचता था, महान लोग अब भी उन अदृश्य कपड़ों को क्यों देखते हैं, जबकि वे वहाँ हैं ही नहीं? इस बात ने मुझे बहुत उलझन में डाला, पर अंततः मुझे एक संभावित स्पष्टीकरण मिल गया: संज्ञानात्मक पूर्वाग्रह (cognitive bias)।

पता चलता है कि अनेक कलीसियाएँ जिस प्रकार की धर्मवैज्ञानिक बातचीत करती हैं, वह हर प्रकार के पूर्वाग्रह के काम करने के लिए आदर्श परिस्थितियाँ उपलब्ध कराती है। हम में से कोई भी – मैं भी – उतना निष्पक्ष नहीं है जितना हम सोचते हैं।

हमारी "तर्कशीलता" भी भावना से प्रेरित होती है

हम अपने आप से कह सकते हैं कि हमने केवल तथ्यों के आधार पर अपना मन बनाया है, पर हमारे सबसे निष्पक्ष चुनावों को भी वास्तव में भावना का सहारा होता है। हो सकता है हम इस व्यक्तिपरकता को शब्दों में न कहें, या इसके प्रति सजग भी न हों, फिर भी वह वहाँ होती है।

The Righteous Mind में Jonathan Haidt भावनात्मक सोच को "अंतर्ज्ञान" (intuition) कहता है। वह लिखता है, "मनुष्यों में अंतर्ज्ञान और तर्कशीलता की सापेक्ष भूमिकाओं को सबसे अच्छी तरह हाथी और उसके सवार के बीच के संबंध के समान समझा जा सकता है। अंतर्ज्ञान नैतिक हाथी है; तर्कशीलता उसकी सवार। सवार ग़लती से सोचती है कि वह हाथी को चलाती है, जबकि वास्तव में वह उसकी सेवा

करती है, आमतौर पर व्यक्ति के अंतर्ज्ञान से निकले निर्णयों के लिए बाद में गढ़े गए औचित्य प्रस्तुत करके।"[847]

दूसरे शब्दों में, सारा तर्क भावना से प्रेरित होता है। कुछ विचार और कुछ प्रकार की जानकारी हमें आकर्षित करती है। अन्य हमें भयभीत करते हैं। इसी कारण ज़रूरी नहीं कि हम वह मानें जो सच है। अधिकतर हम वह मानते हैं जो हम मानना पसंद करते हैं। आमतौर पर बिना जाने हम पहले किसी विश्वास के प्रति प्रतिबद्ध हो जाते हैं, फिर "चतुर औचित्य" गढ़ लेते हैं या उन्हें पकड़ लेते हैं। Stackhouse यह सिद्धांत विशेष रूप से लिंग के बारे में हमारे धर्मविज्ञान पर लागू करता है:

आइए, अपने साथ ईमानदार रहें कि ऐसे निर्णायक प्रश्नों के समूह के बारे में कोई भी केवल धर्मवैज्ञानिक तर्क के आधार पर अपना मन नहीं बनाता। हम अपने आप को यह झूठी शाबाशी देने का साहस न करें कि हम किसी बौद्धिक ऊँचाई पर बैठे हैं और अपनी बारीकी से साधी गई बुद्धि और पूरी तरह पवित्र की गई आत्मा के तराज़ू में हर बात को शांति से तौल रहे हैं। हम सबने लिंग के बारे में मान्यताओं के किसी विशेष समूह में – वह चाहे जो भी हो – असहाय रूप से और पूरी तरह अपना दाँव लगा रखा है। हम सब ऐसी सामाजिक संरचनाओं में जकड़े हुए हैं जो हमारे विचारों के कारण हमें पुरस्कृत या दंडित करती हैं। जब हम प्रश्नों के इस विशाल, और अत्यंत महत्त्वपूर्ण, समूह के बारे में निर्णय करते हैं, तो हम बस निष्पक्ष नहीं रह सकते। इसलिए ... आइए, अपने आप से पूछें: लिंग के बारे में मैं वास्तव में क्या मानना चाहता हूँ?

पुष्टि-पूर्वाग्रह

पुष्टि-पूर्वाग्रह (confirmation bias) ऐसे प्रमाणों की अचेतन रूप से चुनिंदा खोज है जो हमारे वर्तमान विश्वासों की पुष्टि करें, बजाय ऐसी जानकारी खोजने के जो हमारे विश्वासों को चुनौती दे। अवचेतन स्तर पर हम पुष्टि करने वाले प्रमाणों को बढ़ा-चढ़ाकर देखते हैं, और विरोधी जानकारी से बचते हैं, उसे फेंक देते हैं या उसे कम करके आँकते हैं। हम अपने पक्ष के तर्कों को पूरे मन से अपना लेते हैं, चाहे वे कमज़ोर तर्क ही क्यों न हों – वास्तव में हम इस संभावना के प्रति अंधे होते हैं कि वे कमज़ोर हो सकते हैं। जब वे मज़बूत नहीं होते, तब भी हम मन ही मन उन्हें मज़बूत "मान लेते" हैं।

जैसा अर्थशास्त्री J.K. Galbraith कहता है, "जब अपना मन बदलने और यह सिद्ध करने के बीच चुनाव करना हो कि ऐसा करने की कोई आवश्यकता नहीं, तो लगभग हर कोई सबूत जुटाने में लग जाता है।"[848]

यही पुष्टि-पूर्वाग्रह कारण है कि हम अधूरी जानकारी से अत्यधिक सरल कहानियाँ गढ़ लेते हैं। फिर जब तक वह कहानी हमारे अपने मन में सुसंगत बनी रहती है, हम उस पर विश्वास करते रहते हैं। समस्या तब आती है जब हम थोड़े-से, और शायद असंबंधित, आँकड़ों के बिंदुओं को जोड़कर एक बड़ा चित्र बना लेते हैं, जो वास्तव में उन थोड़े-से बिंदुओं के सहारे टिक नहीं पाता। निस्संदेह, जो जानकारी हमारे पास है उसी के साथ काम करना आवश्यक है, पर हम उस जानकारी को ही जानने योग्य सब कुछ मान लेने की ग़लती करते हैं।

847. Jonathan Haidt, The Righteous Mind, पृ. 32।
848. John Galbraith, Economics, Peace and Laughter

ठीक इसी कारण कभी एक कहानी के रूप में पूरकतावाद मुझे समझ में आता था। संशोधित लैंगिक पदानुक्रम के संस्थापक George Knight की 1977 की पुस्तक के मार्ग पर चलते हुए, मैंने पवित्रशास्त्र के मुट्ठी भर पदों को – या अधिक सही कहें तो, उन पदों के बारे में अटकल भरे अनुमानों को – जोड़कर एक कहानी बना ली थी। पर जब मैंने उन आँकड़ों के बिंदुओं की अधिक गहराई से जाँच की, तो मुझे यह बात चौंका गई कि वे कितने थोड़े थे, और एक दूसरे से कितने असंबंधित थे। पूरकतावाद काफ़ी हद तक आकाश के किसी तारामंडल की तरह काम करता है: कोई व्यक्ति जगमगाते रात के आकाश को निहारता है और कुछ तारों को जोड़ देता है, उनके बीच संबंध की कल्पना करता है (और रास्ते में कुछ छूटे हुए बिंदु भी भर देता है), फिर उसे कन्या (Virgo) या धनु (Sagittarius) कहता है। तारामंडल, पूरकतावाद की तरह, देखने वाले की आँख में होते हैं।

एक बार जब हम बिंदुओं को एक ख़ास तरीके से जोड़ लेते हैं, तो उस तारामंडल को "न देखना" लगभग असंभव हो जाता है। लियो टॉल्स्टॉय (Leo Tolstoy) ने एक बार लिखा: "सबसे कठिन विषय भी सबसे मंदबुद्धि व्यक्ति को समझाए जा सकते हैं, यदि उसने उनके बारे में पहले से कोई धारणा न बना ली हो; पर सबसे सरल बात भी सबसे बुद्धिमान व्यक्ति को स्पष्ट नहीं की जा सकती, यदि वह दृढ़ता से आश्वस्त हो कि जो उसके सामने रखा गया है, उसे वह बिना किसी संदेह के पहले से जानता है।" सचमुच, जो वहाँ नहीं है उसे देखना एक अनोखे प्रकार का अंधापन है। उदाहरण के लिए, जब हम एक बार उत्पत्ति 2 के पतन से पहले के आदम और हव्वा में अगुवाई-और-अधीनता "देख" लेते हैं, तो हम उनकी समानता और परस्परता की सच्ची सुंदरता के प्रति अंधे हो जाते हैं।

पुष्टि-पूर्वाग्रह के फलने-फूलने का एक कारण केवल यह नहीं कि हम उसका प्रयोग अपने पहले से माने हुए विश्वास का समर्थन करने के लिए करते हैं, बल्कि यह भी कि हमें अपने आप पर संदेह करना अच्छा नहीं लगता। अपने व्यक्तित्व के प्रकार के अनुसार, हम में से बहुतों को निष्कर्ष तक पहुँचने – किसी विषय पर अंतिम निर्णय लेने – की अधिक आवश्यकता होती है। ऐसी बनावट होने के कारण हमें अस्पष्टता अच्छी नहीं लगती, और न ही अपने पिछले निष्कर्षों पर दोबारा संदेह करना। किसी विषय पर बातचीत की लंबी प्रक्रियाओं से हम अधीर हो जाते हैं। हम काले और सफ़ेद में सोचते हैं, और बात का केवल एक पक्ष सुनकर संतुष्ट रहते हैं। यदि वह हमें विश्वसनीय लगता है, तो हम (निष्कर्ष की अपनी आवश्यकता के कारण) ख़ुशी से उस पक्ष के प्रति प्रतिबद्ध हो जाते हैं।

कुछ खोने का डर हमारी सोच को सबसे अधिक बिगाड़ता है

Haidt जिस भावना से चलने वाले हाथी की बात करता है, वह मूल रूप से ख़तरों से बचता है और अवसरों के पीछे जाता है। फिर भी इन दो भावनात्मक प्रेरणाओं में ख़तरे का डर, पुरस्कार की संभावना से बड़ा होता है। हम बदलाव से उतना नहीं डरते, जितना कुछ खो देने से डरते हैं। नकारात्मकता पूर्वाग्रह (negativity bias) (या यथास्थिति पूर्वाग्रह, status quo bias) नामक घटना में हमारे मस्तिष्क की बनावट ऐसी है कि हम जो पा सकते हैं, उससे अधिक महत्त्व उसे देते हैं जो हम खो सकते हैं।

उदाहरण के लिए, जब किसी कलीसिया में, या किसी विवाह में, स्त्री-पुरुष पदानुक्रम की जगह स्त्री-पुरुष परस्परता ले लेती है, तो पाने को बहुत कुछ है। पर औसत व्यक्ति इस पर ध्यान नहीं देता कि क्या पाया जा सकता है। इसके बजाय, वे इस पर अटक जाते हैं कि क्या खोया जा सकता है। किसी नई धर्मवैज्ञानिक स्थिति की जाँच करते समय वे मुख्य रूप से यह नहीं पूछते, "क्या यह सच है?" बल्कि अवचेतन रूप से पूछते हैं, "यदि मैं इस पर विश्वास करूँ, तो मैं क्या खो सकता हूँ?" भले ही मन बदलने से लंबे समय में बहुत सकारात्मक फल मिल सकते हों, वे लाभ थोड़े समय की हानि की संभावना के सामने छोटे पड़ जाते हैं, और अधिकांश लोगों का बड़े बदलाव से बचने का स्वाभाविक झुकाव इस बात को और भी तीखा बना देता है।[849]

शायद अपने कबीले में अपना स्थान खोने के डर से बड़ा कोई डर नहीं। जैसा Stackhouse ने देखा: "हम सब ऐसी सामाजिक संरचनाओं में जकड़े हुए हैं जो ... लिंग के बारे में हमारे विचारों के कारण हमें पुरस्कृत या दंडित करती हैं।"[850] अधिकतर हम वही मानते हैं जिसे हमारा कबीला, हमारे संबंधों का प्राथमिक दायरा, सही और सच मानता है। किसी ऐसे अगुवे को निराश करने का डर, जिसकी स्वीकृति हमें प्रिय है, या अपने साथियों के दायरे से बेमेल हो जाने का आतंक, एक ऐसा प्रेरक डर है जो हमारी सारी सोच में व्याप्त है। जब तक हम इसे स्वीकार नहीं करते, हम सही ढंग से सोचने के कभी निकट नहीं पहुँच पाएँगे, और तथ्य कभी हमारा मन नहीं बदलेंगे।

हार्वर्ड के एक मनोवैज्ञानिक ने इसे इस तरह कहा: "लोगों को उनके विश्वासों के अनुसार अपनाया या ठुकराया जाता है, इसलिए मन का एक कार्य यह हो सकता है कि वह ऐसे विश्वास रखे जो विश्वास रखने वाले को सबसे अधिक संख्या में साथी, रक्षक या शिष्य दिलाएँ, न कि ऐसे विश्वास जिनके सच होने की संभावना सबसे अधिक हो।"[851] इसी कारण लोग पहचान-चिह्न वाले विश्वासों के प्रति इतने संवेदनशील होते हैं – ये वही विश्वास हैं जो संबंधों के किसी दायरे में हमारे शामिल होने के लिए आवश्यक हैं। इसी कारण किसी का मन बदलने का प्रयास वास्तव में उसे अपना कबीला बदलने के लिए मनाने की प्रक्रिया है। अपने मौजूदा विश्वासों पर पुनर्विचार के पहले ही क्षण में वे यह आँकते हैं कि क्या अपना विश्वास बदलने से उनके सामाजिक संबंध छूट जाएँगे। Stackhouse अनेक पूरकतावादी समूहों में काम कर रही इसी तरह की एक रोचक गतिशीलता की ओर संकेत करता है:

कुछ मसीही समूहों के लिए लिंग से जुड़े प्रश्न "सीमा" और "पहचान" के चिह्न बन गए हैं, जो धार्मिक अधिकार, धर्मवैज्ञानिक पद्धति और सांसारिकता के विरोध जैसे और भी मूलभूत विषयों से जुड़े हैं। इस रूप में लिंग से जुड़े प्रश्न इतने बड़े हो जाते हैं कि उन्हें गंभीर पुनर्परीक्षण के लिए प्रस्तुत करना लगभग असंभव हो जाता है – और इसलिए उन्हें प्रस्तुत किया ही नहीं जाता।[852]

यह पहले से तय कर लेने के बाद कि उनके समूह के विश्वास सही हैं, उन्हें केवल इतना करना होता है कि अपने विश्वास के लिए समुदाय के बचाव-दस्तावेज़ों की ओर लौट जाएँ, या आंदोलन या संप्रदाय के "प्रमुख

849. अपनी और दूसरों की बनावट को समझने का एक तरीका मुझे "Roger's Bell Curve" (रोजर्स का घंटी-वक्र) से मिला है – जहाँ मैं उन 16% लोगों में हूँ जो, जब तर्क मुझे ठोस लगता है, नवप्रवर्तक और जल्दी अपनाने वाले होते हैं, वहीं अधिकांश लोगों को कहीं अधिक समय तक हिचकने और सोच-विचार करने की आवश्यकता होती है।
850. John Stackhouse, Finally Feminist, पृ. 102।
851. Steven Pinker, Language, Cognition and Human Nature
852. John Stackhouse, Finally Feminist, पृ. 103, फ़ुटनोट 35।

विद्वानों" से इस नए ख़तरे का उत्तर देने को कहें – जो वे निश्चित रूप से देते हैं। समस्या यह है कि किसी समूह में उन "विशेषज्ञों" से अधिक गहराई से कोई नहीं जमा होता जो पेशेवर रूप से उसके विश्वासों को परिभाषित करते और उनका बचाव करते हैं, और इसलिए यदि वे अपनी सोच की कमियाँ स्वीकार करें, तो उनसे अधिक खोने को किसी के पास नहीं है। किसी चमत्कार के बिना, मुझे संदेह है कि इन विद्वानों में से बहुत कम अपना मन बदल भी पाएँगे। कीमत – अपने दायरे में सम्मान खोना, और संभवतः अपनी नौकरी खोना – बहुत बड़ी है।

केवल पूरकतावादी आंदोलनों के विद्वान या पूरकतावादी कलीसियाओं में सिद्धांत को शब्द देने वाले ही इस सिद्धांत के बचाव में खड़े नहीं होंगे; बहुत-सी स्त्रियाँ – विशेष रूप से पुरुष अगुवों की पत्नियाँ – भी इसके बचाव में खड़ी होंगी। जबकि इनमें से कुछ स्त्रियाँ केवल तथ्यों से (जैसा वे उन्हें देखती हैं) आश्वस्त होती हैं – मुझे संदेह है कि बहुत-से मामलों में कुछ और अधिक अवचेतन बात चल रही होती है। जैसा Kevin Giles कहता है:

किसी भी शासक विचारधारा में शक्तिहीन किए गए लोगों का एक हिस्सा हमेशा यथास्थिति का समर्थन करता है। उदाहरण के लिए, हिंदू जाति-व्यवस्था में और पारंपरिक अभिजात-तंत्रों में, प्रचलित पदानुक्रमित सामाजिक व्यवस्था के कुछ सबसे प्रबल समर्थक वे होते हैं जो सबसे नीचे हैं। होता यह है कि वे इस व्यवस्था को अपने भीतर उतार लेते हैं; वे मानते हैं कि उनके ऊपर वाले उचित रूप से उन पर शासन करते हैं और उनकी निचली स्थिति परमेश्वर की दी हुई है।[853]

सोचने पर लगता है कि उनके पदानुक्रम का बचाव करने का एक बहुत समझ में आने वाला कारण हो सकता है: पूरकतावादी पत्नियों के रूप में उन्होंने बहुत पहले अपने पतियों की सेवकाई (और विचारों) का समर्थन करने का वचन दिया है। उसे चुनौती देने के लिए बहुत साहस चाहिए, और इससे शायद उनके प्राथमिक समुदाय, उनके अपने विवाह, का सामंजस्य भी ख़तरे में पड़ जाए।

सैनिक की तरह सोचना

जब हमारी पहचान से जुड़े विश्वास प्रश्न के घेरे में होते हैं, तो हम आसानी से सैनिक वाली मुद्रा में लौट जाते हैं। असुविधाजनक तथ्यों के सामने हम सब यह मानने के बजाय कि हम ग़लत हो सकते हैं, अपनी वर्तमान स्थिति पर और भी अड़ जाते हैं। क्योंकि लिंग के धर्मविज्ञान के बारे में यह चर्चा इतने सारे लोगों के लिए इतनी ख़तरनाक है (यदि वे अपना मन बदलें तो अपनी नौकरी खो सकते हैं), इसलिए यह समझ में आता है (और फिर भी दुखद है) कि इसे इतनी जल्दी मार गिराया जाता है।

सचमुच, बहुत-से लोग जो इस बातचीत को अपनी कलीसियाओं में लाने का प्रयास करते हैं, उनके पास इसके घाव हैं। इसका कारण यह है कि ख़तरनाक लगने वाला विचार लाने वाले व्यक्ति को उस विचार से अलग करना बहुत कठिन है। अपने सबसे बुरे क्षणों में हम संदेशवाहक को केवल गोली ही नहीं मारते, बल्कि उसे गैसलाइट भी करते हैं (उसे अपनी ही समझ पर संदेह करने को विवश करते हैं): हम अपने आप से कहते

853. Kevin Giles, What the Bible Actually Teaches on Women, पृ. 225।

हैं कि उसका दर्द इस कारण नहीं हो सकता कि हम ग़लत थे। अधिक संभावना यह है कि यह इस कारण था कि उसने हमारे साथ ग़लत किया। या ऐसा हम सोचते हैं।

फिर भी, पूरकतावादी सिद्धांत के इतना विवादास्पद होने के कारण, अधिकांश अनुभवी पूरकतावादी अगुवों के पास अब अपनी कलीसियाओं के उन लोगों की लंबी सूची है जिन्होंने इस विषय पर अपना मन बदला, और परिणामस्वरूप उन्हें छोड़कर चले गए। इतने सारे हताहतों के रहते, कोई सोचता है कि ये अगुवे अपने धर्मविज्ञान की सावधानी से समीक्षा करने के लिए अधिक बार क्यों नहीं रुकते। उत्तर एक बार फिर एक संज्ञानात्मक पूर्वाग्रह के रूप में आता है, जो युद्ध में सबसे अधिक स्पष्ट दिखता है: किसी मोर्चे की रक्षा के लिए हम जितनी अधिक कीमत चुका चुके होते हैं, उतनी ही अधिक संभावना है कि हम वही कीमत चुकाते रहेंगे। 1916 में वर्ष भर चली वर्दन (Verdun) की लड़ाई में फ्रांसीसियों और जर्मनों ने एक ऐसा मोर्चा चुना जिस पर लगभग दस लाख लोग मारे गए या गंभीर रूप से घायल हुए। यद्यपि एक या दोनों पक्षों के लिए यह बेहतर होता कि वे बस अपनी खाइयाँ छोड़ देते, फिर भी जितनी अधिक जानें गईं, उतनी ही अधिक जानें खोते रहने को वे तैयार रहे।

इसके अलावा, जब समूह के रूप में हमें समूह के बाहर के उन लोगों से ख़तरा महसूस होता है जो भिन्न दृष्टिकोण रख सकते हैं, तो हम अधिक आसानी से समूह-सोच (groupthink) के शिकार हो जाते हैं – एक सामूहिक पूर्वाग्रह, जो हमारे अंधे बिंदुओं को अभेद्य बना देता है। जब हम अपने सामूहिक दृष्टिकोण की रक्षा करते हैं और वैकल्पिक दृष्टिकोणों को समय से पहले ख़ारिज कर देते हैं, तो हम बुरे निर्णय लेते हैं। चेतावनी के रूप में काम करने के लिए इसके पर्याप्त सार्वजनिक उदाहरण हैं: चाहे बुश प्रशासन का इराक पर आक्रमण करने का निर्णय हो, जो इराक के सामूहिक संहार के हथियारों के बारे में एक ऐसे ग़लत विश्वास पर आधारित था जिसे किसी ने चुनौती नहीं दी, या वित्तीय खिलाड़ियों के वे दायरे जिन्होंने मॉर्गेज डेरिवेटिव के पतन को बढ़ावा दिया। समूह-सोच के इन दोनों विनाशकारी उदाहरणों में निर्णय लेने वालों के ऐसे अलग-थलग समूह शामिल थे जिन्होंने "आत्म-पुष्टि के नीचे की ओर जाते चक्र में खंडन करने वाले आँकड़ों" की अनदेखी की।[854]

धन्यवाद की बात है कि सैनिक वाली मुद्रा में लौट जाने से कहीं बेहतर एक मार्ग है:

द्वारपाल और गुप्तचर

निस्संदेह, हम जो कलीसियाओं की अगुवाई करते हैं, जो फाटकों पर खड़े हैं, हमें अपनी कलीसिया के सिद्धांत की रक्षा करनी है। पर हम ऐसे सैनिक बनने के लिए नहीं बुलाए गए जो नगर की शहरपनाह के पास आने वाले हर व्यक्ति को गोली मार दें। नगर के फाटक पर बैठे अच्छे प्राचीनों के रूप में हम पहले से यह प्रतिबद्धता नहीं करते कि कुछ भी भीतर न आने दें: बल्कि हम हर आगंतुक और उसके माल को परखते हैं, यह देखते हुए कि कहीं उसमें कुछ ऐसा तो नहीं जिसकी हमें आवश्यकता हो। हम यरीहो की शहरपनाह नहीं हैं, जो हमारे पहले से माने हुए विश्वास को भीतर बंद रखे और जो हम नहीं मानते उसे बाहर रखे। बल्कि हमें

854. Daniel Goleman, Focus: The Hidden Driver of Excellence, अध्याय 7।

दोनों बातें दिखानी चाहिए – इस संभावना के प्रति खुला मन कि हम कुछ बातों में ग़लत हैं, और विषय का आलोचनात्मक मूल्यांकन भी।

मसीही धर्मविज्ञान का इतिहास निरंतर बदलती संस्कृति के साथ उसके संवाद का इतिहास है। एक छोर पर वे कलीसियाएँ हैं जो मानती हैं कि संस्कृति हमेशा ग़लत है। दूसरे छोर पर कुछ लोग मानते प्रतीत होते हैं कि संस्कृति हमेशा सही है। हम में से अधिकांश कहीं बीच में हैं, जिसका अर्थ है कि हम, कम से कम सिद्धांत रूप में, नए विचारों के लिए खुले हैं। इसी कारण, यद्यपि सैनिक होने का भी एक समय हो सकता है, हमें हमेशा बचाव की मुद्रा में नहीं जीना चाहिए; Julia Galef एक Ted Talk में तर्क देती है कि हमें गुप्तचर (स्काउट) की मुद्रा में जीना और सोचना भी सीखना चाहिए: "गुप्तचर का काम आक्रमण या बचाव करना नहीं है। गुप्तचर का काम समझना है। गुप्तचर जानना चाहता है कि वहाँ वास्तव में क्या है, यथासंभव सही-सही। और एक असली, वास्तविक सेना में सैनिक और गुप्तचर दोनों आवश्यक हैं।"[855]

Galef कहती है कि जब हमारा मन सैनिक की मुद्रा में होता है, तो हम बचाव की भावना और कबीलाई सोच से चलाए जाते हैं, जबकि,

गुप्तचर जिज्ञासु होते हैं। इस बात की अधिक संभावना होती है कि वे कहें कि नई जानकारी सीखने पर उन्हें आनंद मिलता है, या किसी पहेली को सुलझाने की बेचैनी होती है। जब उनका सामना किसी ऐसी चीज़ से होता है जो उनकी अपेक्षाओं के विपरीत हो, तो उनमें कौतूहल जागने की अधिक संभावना होती है, [और] इस बात की भी अधिक संभावना होती है कि वे कहें कि अपने विश्वासों को परखना एक सद्गुण है, और इस बात की कम संभावना होती है कि वे कहें कि जो व्यक्ति अपना मन बदलता है, वह कमज़ोर लगता है।

दूसरे शब्दों में, गुप्तचर की तरह सोचना पूर्वाग्रह-विरोधी रणनीति है। इसके मूल में यह नम्र विश्वास है कि हमारे पिछले निष्कर्ष ग़लत हो सकते हैं, और हो सकता है हम कुछ अनदेखा कर रहे हों – शायद यही वह है जिसे पतरस "नम्र मन" रखना कहता है।[856]

प्रतिमान-परिवर्तन

विज्ञान, दर्शन और धर्मविज्ञान के इतिहास में मुख्य सफलताएँ और प्रतिमान-परिवर्तन (paradigm shifts) इसी प्रकार के खुले मन के कारण आए हैं। सदियों तक कोई क्षेत्र किसी सुस्थापित प्रतिमान से संचालित हो सकता है, जो सबकी मान्यताओं पर हावी रहता है। फिर कुछ लोग कुछ गंभीर विसंगतियाँ देखने लगते हैं। मिशन-विज्ञानी Alan Hirsch इसे अच्छी तरह समझाता है:

प्रतिमान के भीतर से ही विसंगति का एक बढ़ता हुआ बोध विकसित होता है, एक भावना कि कुछ ग़लत है। या, कम से कम, प्रचलित सोच-पद्धति उन सब समस्याओं को सुलझा नहीं पाती जिनका सामना स्वयं प्रतिमान करता है। विरोधाभासी रूप से, अक्सर वही लोग जिन्होंने प्रचलित प्रतिमान में महारत हासिल की है, आम सहमति से अलग होने वाले पहले लोग होते हैं – उदाहरण के लिए, विज्ञान में आइंस्टाइन (Einstein)

855. www.bit.ly/3BKjApP
856. 1 पतरस 3:8

और हाइज़ेनबर्ग (Heisenberg), या धर्मविज्ञान में कैल्विन (Calvin) और बार्थ (Barth)। असली विशेषज्ञ ही वे हैं जो यह पहचानने में सबसे सक्षम हैं, और जिनसे इसकी सबसे अधिक संभावना है, कि कब बातें ग़लत हैं! इस प्रकार वह शुरू होता है जिसे Kuhn "मन का विचरण" कहता है – पूर्वनिर्धारित मान्यताओं और समाधानों के समूह का सहारा लिए बिना विसंगतियों से जूझने की स्वतंत्रता का एक नया बोध।[857]

पदानुक्रमवाद के प्रतिमान में से परस्परता के उदय के साथ ठीक यही हुआ है। यह स्त्री और पुरुष की अधिक पूर्ण साझेदारी की ओर मेरी अपनी यात्रा का भी कुछ वर्णन करता है – जब मैं पूरकतावाद को सिद्ध करने के लिए उसके अनेक समर्थक तर्कों में अधिक गहराई से उतरने निकला, तो मुझे कुछ-कुछ Neo जैसा लगा, जिसका सामना – अपनी इच्छा से नहीं – मैट्रिक्स में अधिक से अधिक गड़बड़ियों (glitches) से होता है। एक पूरकतावादी के रूप में मैं जितनी अच्छी तरह समझा पाता कि मैं वैसा क्यों मानता था, उतना ही कम मैं उस पर विश्वास कर पाता।

इस प्रक्रिया का एक हिस्सा यह था कि मैंने पवित्रशास्त्र को सैनिक की तरह नहीं, गुप्तचर की तरह पढ़ना सीखा। अपनी पुस्तक Models for Interpretation of Scripture में John Goldingay बाइबल को हमारे मौजूदा विश्वासों को सहारा देने वाले बचाव-दस्तावेज़ की तरह बरतने के विरुद्ध चेतावनी देता है: "यह ऐसा है या नहीं, इसकी एक परख यह पूछना है कि पिछली बार कब किसी ने पवित्रशास्त्र में कुछ पढ़कर अपना मन (या, इससे भी अच्छा, अपना व्यवहार) बदला था। आमतौर पर हम सब पवित्रशास्त्र का प्रयोग [अपने विश्वासों का] सामना करने के बजाय उनकी पुष्टि करने के लिए करते हैं, केवल 'अपनी ही प्रतिलिपि बनाने' के लिए।"

आत्मविश्वास और निश्चितता की भावनाओं को उस विचलित करने वाली और नम्र करने वाली भावना से अधिक पसंद करना स्वाभाविक है, जो यह समझने पर आती है कि हम किसी बात में ग़लत थे। वास्तव में, जब हमारे सामने इस बात के मज़बूत प्रमाण आते हैं कि अपने विश्वासों पर हमारा आत्मविश्वास भटका हुआ हो सकता है, तब भी हम इस भावना को झटक नहीं पाते कि हमारा विश्वास अब भी सही है। संज्ञानात्मक पूर्वाग्रह के अध्येता इस प्रकार के पूर्वाग्रह को वैधता का भ्रम (illusion of validity) कहते हैं।

Hirsch समझाता है कि पुराना प्रतिमान, जिसका कभी हर कोई इतनी दृढ़ता से बचाव करता था, कैसे बिखरने लगता है। "धीरे-धीरे अधिक से अधिक लोग पहचानते हैं कि चीज़ों की प्रचलित धारणा में कुछ ग़लत है; अंततः एक निर्णायक बिंदु (tipping point) आ जाता है।"[858]

लेकिन आमतौर पर, जब नया प्रतिमान उदय होता है, तो पुराना प्रबल विरोध के साथ फिर से अपना ज़ोर दिखाता है। केवल सही होना राय में तेज़ बदलाव की गारंटी के लिए पर्याप्त नहीं है। (उदाहरण के लिए, गैलीलियो ने सूर्य-केंद्रित वास्तविकता के "विधर्म" से मुकरकर ही अपनी गर्दन बचाई।) Hirsch समझाता है कि ऐसा इसलिए है "क्योंकि कुछ लोगों ने अपनी आत्म-पहचान उस प्रतिमान में लगा दी है और इसलिए उन्हें अपनी वैधता उसी से मिलती है।"[859]

857. Alan Hirsch, On the Verge, अध्याय 2।
858. Alan Hirsch, On the Verge, अध्याय 2।
859. Alan Hirsch, On the Verge, अध्याय 2।

फिर भी, पर्याप्त समय मिलने पर नया प्रतिमान अंततः पुराने की जगह ले लेता है। जैसा उन्नीसवीं सदी के जर्मन दार्शनिक आर्थर शोपेनहावर (Arthur Schopenhauer) ने कहा: "हर सत्य तीन चरणों से गुज़रता है: पहले, उसका उपहास किया जाता है। दूसरे, उसका विरोध किया जाता है। तीसरे, उसे स्वयंसिद्ध मानकर स्वीकार कर लिया जाता है।" जब दशकों पहले पहली बार मेरा सामना पवित्रशास्त्र की परस्परतावादी व्याख्या से हुआ, तो उस समय मुझे लगा कि वह उपहास और विरोध के बीच की रेखा पर खड़ी है। आज जब मैं चारों ओर देखता हूँ, तो वह विरोध और स्वयंसिद्ध होने के बीच डोल रही है। अमेरिका की इवैन्जेलिकल कलीसिया के उदारवाद के उस डर के बावजूद, जो उसे हर बात की सबसे रूढ़िवादी व्याख्या की ओर झुकाता है, अमेरिका की सबसे बड़ी कलीसियाओं में से एक चौथाई पहले ही स्त्री पास्टरों और प्रचारकों की अनुमति देती हैं।[860] निर्णायक बिंदु पार हो चुका है, पतली धारा बाढ़ बन चुकी है, और मुझे लगता है कि अब पीछे लौटना नहीं है।

पूर्वाग्रह के बारे में एक और बात, जो विशेष रूप से हम पर लागू होती है जो पदानुक्रमवाद से परस्परता की ओर आए हैं: पश्चदृष्टि पूर्वाग्रह (hindsight bias) से सावधान रहिए। यह वह प्रवृत्ति है जिसके कारण, एक बार मन बदल लेने के बाद, हम उन लोगों के प्रति इतनी जल्दी सहानुभूति खो देते हैं जो वैसा ही मानते हैं जैसा हम पहले मानते थे। जब लोग नई जानकारी के प्रकाश में अपने विश्वास बदलते हैं (जो एक दुर्लभ उपलब्धि है!), तो उन्हें अपने पुराने विश्वासों की विषय-वस्तु याद करने में कठिनाई होती है, जिससे वे सोचने लगते हैं कि उनका झुकाव तो हमेशा से सही दृष्टिकोण की ओर था। इस पूर्वाग्रह के काम करने से हमारे विश्वासों के इतिहास की स्मृति विकृत हो जाती है। वास्तव में, क्या पश्चदृष्टि पूर्वाग्रह ही उस दोष लगाने की प्रवृत्ति का कारण नहीं है जो पिछले अनेक वर्षों में बहुत-से सामाजिक आंदोलनों में अक्सर दिखाई देती है? एक वर्ष से भी कम पहले कोई व्यक्ति कुछ और मानता रहा होगा, अब उसने अपना मन बदल लिया है, और वह उन "कट्टरपंथियों" की कड़ी निंदा करने को तैयार है जो अब भी वही मानते हैं जो वह पिछले वर्ष मानता था! इसी कारण यह बहुत महत्त्वपूर्ण है कि आपकी नम्र सोच के कारण आपका मन बदल जाने के बाद भी आप नम्र बने रहें।

इसी बात के साथ मैं अपनी पुस्तक समाप्त करता हूँ और एक ऐसे विश्वास का सार प्रस्तुत करता हूँ जो मेरे सेवकाई-जीवन के अधिकांश समय मेरे पास नहीं था, पर अब, जितनी अच्छी तरह मैं कर सका उतनी गहराई से पवित्रशास्त्र की थाह लेने के बाद, मेरे पास है – एक ऐसा दृष्टिकोण जिसे मैं आपके विचार के लिए आपके सामने रखता हूँ:

स्त्री-पुरुष परस्परता वह धर्मवैज्ञानिक स्थिति है, जो पवित्रशास्त्र से प्रेरित है, कि पुरुष और स्त्रियाँ भिन्न होते हुए भी समान हैं, और जीवन के हर क्षेत्र में एक दूसरे के साथ-साथ सेवा करने और साझेदारी करने के लिए रचे गए हैं। हर व्यक्ति के परमेश्वर-प्रदत्त अधिकार, वरदानों और विशेषज्ञता को, उसके लिंग की परवाह किए बिना, पहचाना और सराहा जा सकता है, और ऐसा किया भी जाना चाहिए।

860. www.bit.ly/3COXZxW

बहुत-बहुत धन्यवाद

मेरा सबसे बड़ा धन्यवाद मेरे सबसे निकट के परिवार और दल को – Julie, Eli, Fynn, Ivy, Charlie और Sam – तुम सबने एक ऐसे पति और पिता को सहा जिसने इस पुस्तक में अपने दिमाग़, दिल और समय का बहुत ज़्यादा हिस्सा लगा दिया। इससे जो भी भलाई होगी, वह हमने मिलकर की है।

मेरे सास-ससुर, Joy और Keith, और Nest Deli में मेरे दूसरे परिवार का धन्यवाद। हाथ में सबसे बढ़िया कॉफ़ी, पहाड़ों के शानदार दृश्य और मेरे चारों ओर दयालु लोग – इन सबने मुझे वह सुरक्षित, खुला स्थान दिया जिसकी मुझे यह पुस्तक लिखने के लिए आवश्यकता थी।

जिन्होंने मेरे लिए प्रार्थना की – विशेष रूप से Shae Walton और Edwina Hanslo – आपका धन्यवाद, बहुत-बहुत धन्यवाद। मैं वह दिन कभी नहीं भूलूँगा जब मैं टाइप करते हुए बिल्कुल अकेला महसूस कर रहा था, और तभी आपका वॉयस मैसेज आया: "प्रभु ने आपको हमारे दिल पर रखा है, Terran। आप इस समय जिस भी काम पर लगे हैं, उसे जारी रखिए! जब आप उसे कर रहे हैं, वह आपके साथ हैं और आपका उत्साह बढ़ा रहे हैं।"

उन अनगिनत बाइबल विद्वानों का, जिन्होंने मेरे लिए पवित्रशास्त्र की बेहतर समझ तराशी – उदाहरण के लिए, डॉ. Lucy Peppiatt, Jamin Hübner, William Witt, Alice Mathews, Derek Morphew, Katia Adams – मैं सदा आभारी हूँ। मेरी विनम्र राय में, चार बाइबल विद्वान विशेष रूप से इतने लंबे समय तक अकेली भविष्यद्वाणी-भरी आवाज़ें बने रहने के लिए आजीवन उपलब्धि पुरस्कार के योग्य हैं: डॉ. Cynthia Westfall, Craig Keener, Philip Payne और Kevin Giles। सत्य के लिए खड़े होने के कारण कभी-कभी आपके साथ विधर्मियों जैसा व्यवहार किया गया, पर आप सचमुच कलीसिया के नायक हैं। एक दिन बहुत-से और लोग कलीसिया के प्रति आपके प्रेम, बुद्धि और विवेक के आपके वरदानों, आपके गहरे साहस और उन सब आँसुओं के लिए परमेश्वर का धन्यवाद करेंगे जो आपने शायद बोए हैं। आपके प्रयास व्यर्थ नहीं गए।

Ryan Botha, इस पुस्तक के आवरण और प्रतीक-चिह्न के लिए अपनी असाधारण, परमेश्वर-प्रदत्त डिज़ाइन प्रतिभा देने के लिए धन्यवाद। मेरी पत्नी Julie, Christine Van Wyk और Craig McKellar का, आपके संपादन और प्रूफ़रीडिंग कौशल के लिए – मैं बहुत आभारी हूँ। और अंत में, उन मित्रों को जिन्होंने मेरा उत्साह बढ़ाया और मेरे लिए प्रार्थना की – Paul Van Coller, Sarah और Steve Binos, David Child, Jen Pedersen, Gareth और Angela Marillier, Julian और Katia Adams, Kelly और Guy Chennells, Sue और Ant Ryan, Mike Day, Tom और Jess Basson, और मेरे भाई-बहन Mandy और Richard – आपके बिना मैं इस परियोजना को बहुत पहले छोड़ चुका होता।

चुनी हुई ग्रंथ-सूची

Barr, Beth Allison, 2021, “The Making of Biblical Womanhood: How the Subjugation of Women Became Gospel Truth.” Brazos Press

Bartlett, Andrew, 2020: “Men and Women in Christ: Fresh Light from the Biblical Texts.” Intervarsity Press.

Beck, James R. (ed), 2005: “Two Views on Women in Ministry (Counterpoints: Bible and Theology).” Zondervan

Bessey, Sarah, 2013: ”Jesus Manifesto: An Invitation to Revisit the Bible's View of Women.” Howard Books

Davidson, Richard, 2012, “Flame of Yahweh: Sexuality in the Old Testament.” Baker Academic

Frymer-Kensky, Tikva, 1992, “In the Wake of the Goddesses: Women, Culture and the Biblical Transformation of Pagan Myth.” Ballantine Books

Giles, Kevin, 2019: “What the Bible Actually Teaches on Women.” Cascade Books

Gregoire, Sheila; Lindenbach, Rebecca; Sawatsky, Joanna, 2021: “The Great Sex Rescue.” Baker Books

Grudem, Wayne, 2012: “Evangelical Feminism and Biblical Truth: An Analysis of More Than 100 Disputed Questions.” Crossway

Hübner, Jamin, 2013: “A New Case For Female Elders: An Analytical Reformed-Evangelical Approach.” PhD Thesis www.bit.ly/3BNaSY8

Hübner, Jamin, 2015: “Translating Authentein in 1 Timothy 2:12a.” www.bit.ly/3EKqWM8

Keller, Kathy, 2012: “Jesus, Justice and Gender Roles: A Case for Gender Roles in Ministry.” Zondervan

Keller, Timothy and Kathy, 2016: “The Meaning of Marriage.” Penguin Group

Knight III, George, 1977: “The New Testament Teaching on the Role Relationship of Men and Women.” Baker Books

Köstenberger, Andreas: Köstenberger, Margaret, 2014: “God's Design for Man and Woman: A Biblical-Theological Survey.” Crossway

Köstenberger, Andreas; Schreiner, Thomas, 2016: “Women in the Church: An Analysis and Application of 1 Timothy 2:9-15.” Baker Academic

Mathews, Alice, 2017: “Gender Roles and the People of God.” Zondervan

Payne, Philip, 2015: “Man and Woman, One in Christ: An Exegetical and Theological Study of Paul's Letters.” Zondervan Academic

Peppiatt, Lucy, 2019: “Rediscovering Scripture’s Vision for Women.” IVP Academic

Pierce, Ronald; Groothuis, Rebecca; Fee, Gordon (eds), 2005: “Discovering Biblical Equality: Complementarity without Hierarchy.” IVP Academic

Piper, John; Grudem, Wayne (eds), 2021: “Recovering Biblical Manhood and Womanhood: A Response to Evangelical Feminism.” Crossway

Stackhouse, John, 2005 “Finally Feminist: A Pragmatic Christian Understanding of Gender.” Baker Academic

Storkey, Elaine, 2018: “Scars Against Humanity: Understanding and Overcoming Violence against Women.” IVP Academic

Westfall, Cynthia, 2016: “Paul and Gender: Reclaiming the Apostle's Vision for Men and Women in Christ.” Baker Publishing Group

Westfall, Cynthia, 2014: “The Meaning of Authentein in 1 Timothy 2:12.” www.bit.ly/3EL7OgM

Witt, William, 2020: “Icons of Christ: A Biblical and Systematic Theology for Women’s Ordination.” Baylor University Press

Wojtyła, Karol, 2002: “Mulieris Dignitatem: On the Dignity and Vocation of Women.” Catholic Truth Society

कलीसियाओं के लिए अगले कदम: अनुशंसित संसाधन

Cole, Kadi, 2019: “Developing Female Leaders: Navigate the Minefields and Release the Potential of Women in Your Church.” Thomas Nelson

Dixon, Rob, 2021: “Together in Ministry: Women and Men in Flourishing Partnerships.” IVP Academic

Williams, Terran, 2022: “How God Sees Women: End of Patriarchy, 10 Session Group Study Guide.” दूसरों के साथ मिलकर इस पुस्तक के 10 सत्रों की यात्रा कीजिए; यह निःशुल्क Study Guide (अध्ययन-मार्गदर्शिका) www.bit.ly/37FBBfQ से डाउनलोड कीजिए

Terran Williams की अन्य पुस्तकें

What's So Amazing About Scripture? How To Read It Right And Tap Into Its Power

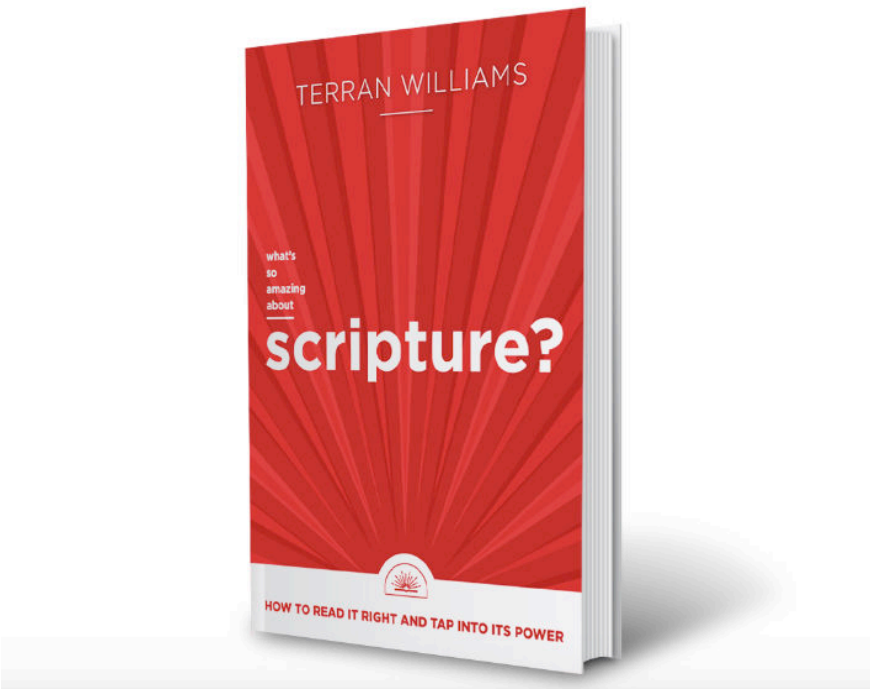

Terran Williams सरलता के नीचे छिपी गहराई के साथ लिखता है। पुस्तक सरल और सुलभ है, फिर भी इसके पीछे सबसे महत्त्वपूर्ण धर्मवैज्ञानिक साहित्य की अद्यतन समझ है। वह जोश के साथ भी लिखता है। हर अध्याय में महसूस होता है कि उसे अपने विषय से बस प्रेम है। उसे बाइबल से प्रेम है, उसे बाइबल की महान कहानी से प्रेम है, और उसे उसके केंद्रीय नायक से प्रेम है। मेरी प्रार्थना है कि पढ़ते हुए पवित्रशास्त्र के लिए उसका जोश आपको भी "लग" जाए।

—डॉ. Derek Morphew, Breakthrough और The Kingdom Reformation के लेखक, और अंतरराष्ट्रीय Vineyard Bible Institute के संस्थापक

एक पास्टर के रूप में, जो लोगों को पवित्रशास्त्र से जोड़ने का प्रयास कर रहा था, मैं ऐसी पुस्तक खोजता रहा जो स्पष्ट रूप से बताए कि बाइबल क्या है और किस बारे में है, वह आज भी हमसे क्यों और कैसे बोलती है,

वह कैसे अस्तित्व में आई, उसे कैसे पढ़ें और लागू करें, और उसके द्वारा परमेश्वर के और निकट कैसे आएँ। एक ऐसी पुस्तक जो मेरे जैसे अनुभवी बाइबल-पाठकों और पास्टरों के लिए लिखी गई हो, पर नए लोगों और संदेह करने वालों के लिए भी। यह बहुत बड़ी माँग थी, पर आख़िरकार मुझे वह मिल गई!

—Grant Clark, One Harbour के पास्टर

Terran Williams बाइबल विद्वानों के जटिल कार्यों का सजीव और सुलभ सार प्रस्तुत करके कमाल का काम करता है। अपने जीवन की सबसे रोमांचक यात्रा के लिए तैयार हो जाइए, क्योंकि आप पवित्रशास्त्र में गहराई से उतरने की प्रेरणा पाएँगे और स्वयं बाइबल को खोजने के लिए सुसज्जित होंगे।

—Minah Koela, पास्टर और Beautiful Gates के CEO

बाइबल के बारे में अधिकांश पुस्तकें या तो सरल और रोचक होती हैं, पर बाइबल की अधिक जटिल गतिशीलताओं से नहीं जूझतीं; या जटिल और अकादमिक होती हैं, पर साधारण पाठक की सहायता नहीं करतीं। यह दुर्लभ और उल्लेखनीय पुस्तक दोनों काम करती है।

—Stephen Pohlman, The Reason For Everything के लेखक

मुझे विश्वास है कि Terran के रूप में हम एक बहुत महत्त्वपूर्ण विचारक, वक्ता और लेखक का उदय देख रहे हैं। उसमें परमेश्वर के सत्य को बहुत रोचक और भविष्यद्वाणी-भरी शैली में सही-सही व्यक्त करने की अद्भुत क्षमता है, जिसकी हमारी 'सत्य-के-बाद' (post truth) की संस्कृति में बहुत आवश्यकता है।

—Craig Botha, पास्टरों के प्रशिक्षक

"What's So Amazing About Scripture? How to Read it Right and Tap Into Its Power" Amazon पर पेपरबैक और Kindle ई-पुस्तक के रूप में उपलब्ध है।

www.terranwilliams.com